हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य को देन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की

हिन्दी विषयान्तर्गत पी-एच०डी० उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

मई १९९८
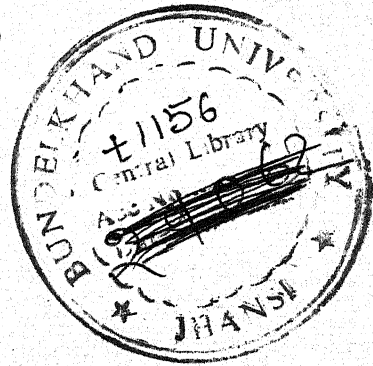
शोध केन्द्र

दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई

जनपद जालौन (उत्तर प्रदेश)

शोध पर्यवेक्षक

(डा० रामस्वरुप खरे)

एम० ए०, पी-एच०डी०, 'साहित्यरत्न'

पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य

शोधकर्ता

(सत्यनारायण सिंह)

एम० ए०

मु०-अतरौलिया, राठ

जनपद-हमीरपुर (उ०प्र०)

अनुक्रमणिका

प्रमाण-पत्र

मुझे यह प्रमाणित करते हुये अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि श्री सत्यनारायण सिंह ने हिन्दी विषयान्तर्गत ' **हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य को देन** ' नामक पी-एच0डी0 परीक्षा हेतु शोध प्रबंध मेरे निर्देशन में पूर्ण किया है।

शोधार्थी ने हमीरपुर जनपद की विलुप्त एवं अप्रकाशित काव्य सामग्री का संकलन करने में जिस शोधवृत्ति का परिचय दिया, उससे मैं भली भांति संतुष्ट हूं परिणामस्वरूप अनुसंधित्सु ने अनेकानेक अप्रकाशित काव्य प्रतिभाओं को हिन्दी साहित्य जगत के समक्ष उजागर करके उनका सम्यक मूल्यांकन किया है।

जनपदीय साहित्य को अभिनव दिशा देने के लिये यह शोध प्रबंध स्मरणीय रहेगा।

शोधार्थी ने नियमानुसार 200 दिन उपस्थिति देकर मुझसे सम्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया है।

अतएव मैं उक्त शोध प्रबंध को परीक्षणार्थ संस्तुत करता हूं।

रा. स्व. खरे

दिनांक: 30.4.98

(डा0 रामस्वरूप खरे)
एम0ए0, पी-एच0डी, 'साहित्यरत्न'
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य
पर्यवेक्षक

समर्पण

यह शोध ग्रन्थ मैं अपनी वात्सल्यमयी पूज्या मां **श्रीमती दुर्गा देवी** के चरणों में समर्पित करता हूं, जिनके स्नेह, आशीष एवं ममता भरे आंचल की छांव की शक्ति पाकर मैं इस कठिन कार्य को पूर्ण करने में समर्थ हो सका।

शोधार्थी

(सत्यनारायण सिंह)

प्रस्तावना

एम0ए0 करने के उपरान्त बराबर मेरा मन इस दिशा में लगा रहा कि मैं अपने जनपद विशेष की साहित्यिक प्रतिभाओं को हिन्दी जगत के सामने उजागर करूं। इसके लिये मैंने अनेकानेक मनीषियों से सुभाशीष एवं उचित मार्गदर्शन प्राप्त किया अन्त में स्व0 डा0 हरगोविन्द सिंह हिन्दी विभागाध्यक्ष ब्रह्मानन्द महाविद्यालय राठ ने मुझे सलाह दी कि मैं दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्राचार्य डा0 रामस्वरूप खरे से संपर्क स्थापित करूं और पी-एच0डी0 का मार्ग प्रशस्त करूं।

पूज्य डा0 हरगोविन्द सिंह की सलाह मुझे अच्छी लगी और मैं एक दिन जनवरी सन् 1991 को राठ से चलकर स्वनामधन्य युग कवि डा0 खरे के 5प्राध्यापक निवास राठ रोड उरई जा पहुंचा।

उदारमना डाक्टर साहब ने अत्यधिक स्नेह से मेरी संपूर्ण चर्चा सुनी और कहा- 'क्यों न तब हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य को देन' विषय पर पी-एच0डी0 कर डालो तुम्हारा जन्म भी बुन्देलखण्ड के इसी भू भाग में हुआ है इस प्रकार सामग्री संकलन में बहुत कुछ सहायता प्राप्त हो जायेगी और एक विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति संभव हो जायेगी।' यह सुझाव मुझे मुंह मांगा वरदान मिल गया। डाक्टर साहब ने लगभग 50-60 ग्रन्थों के नाम लेखकों सहित बताये। मैंने उन्हें एकत्र करके उनका अध्ययन प्रारंभ कर दिया। पुनश्च एक वर्ष बाद मैंने लगभग एक सौ काव्य प्रतिभाओं की सूची तैयार कर ली जिनके काव्यानन्द से मैं प्रभावित हुआ था।

अगले चरण में मैंने संपूर्ण जनपद हमीरपुर का साहित्यिक परिभ्रमण किया। स्थान-स्थान पर जाकर वहां की साहित्यिक काव्य गोष्ठियों में सम्मिलित होता, काव्य प्रतिभाओं का संक्षिप्त परिचय और रचनाओं का विवरण अंकित करता तथा स्थानीय विद्वानों से साक्षात्कार करता जिससे वहां की समूची काव्य प्रतिभायें मेरे शोध का विषय बन सकें। वास्तव में न केवल बुन्देलखण्ड अपितु देश प्रत्येक जनपद विशेष के ग्रामीण क्षेत्र न जाने कितनी साहित्यिक सामग्री अपने में छिपाये मौन है। यदि शोधार्थी स्वतंत्र रूप से यह सब सामग्री एकत्र करके प्रकाशित करा सकें तो हिन्दी साहित्य जगत का बहुत बड़ा उपकार होगा।

असावधानी और उपेक्षा के कारण आज बहुत सा जनपदीय साहित्य विलुप्त होता जा रहा है। धीरे-धीरे अनेक कवि स्वर्गवासी होते चले जा रहे हैं उनके द्वारा सृजित साहित्य या तो रद्दी की टोकरी निर्माण के कार्य में आ रहा है अथवा उसे व्यर्थ समझ रद्दी के भाव बेच दिया जा रहा है। इस प्रकार देश का बहुमूल्य साहित्य नष्ट होता जा रहा है। न आज इसकी शासन को चिन्ता है और न स्वयंसेवी साहित्यिक संस्थाओं को। सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक जनपद में वहां के साहित्यकार, समीक्षक, सम्पादक अपने अपने जनपद विशेष के साहित्य और साहित्यकारों के कृतित्व को न केवल सुरक्षित ही रखें अपितु उसका सहकारिता के आधार पर प्रकाशन भी करायें। प्रशासकीय कार्यो को पूर्ण करते हुये प्रत्येक जनपद के जिलाधीश एवं जिला सूचना अधिकारी के सक्रिय सहयोग से इस दिशा में अभूतपूर्व सफलता अर्जित की जा सकती है। उपलब्ध श्रेष्ठ सामग्री को प्रकाशित कराने हेतु साहित्यप्रेमी दानदाताओं को प्रेरित किया जा सकता है। इस प्रकार जार्ज ग्रियर्सन द्वारा चलाई गई परम्परा को पुनर्जीवित करके साहित्य क्षेत्र में अनूठा दीपदान प्रस्तुत किया जा सकता है

जनपदीय संगोष्ठियों, साहित्यिक एवं जनपदीय कवि सम्मेलनों के आयोजन इस उद्देश्य की पूर्ति में और अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

इस संपूर्ण कार्य को पूरा करने में मुझे कहीं कहीं स्नेह, सम्मान और प्रेरक मार्गदर्शन सुलभ हुआ तो कहीं कहीं बड़ी उपेक्षा का विषघूंट भी पीना पड़ा परन्तु मैं हताश और निराश कभी नहीं हुआ। यही कारण है कि मेरे परिश्रम ने अन्ततोगत्वा मुझे सफलता के शिखर पर पहुंचा ही दिया। माननीय डाक्टर साहब ने मेरी लगन और कार्यप्रणाली से पूर्णरूपेण संतुष्ट होकर उत्तम विषय पर संक्षिप्त रूपरेखा तैयार करके स्वीकृतार्थ विश्वविद्यालय भेज दिया। दिनांक 4.6.93 को विश्वविद्यालय ने मेरे मनोनुकूल विषय को स्वीकृत कर दिया। बस फिर क्या था, मैं पूरे मनोयोग से शोध प्रबंध को तैयार करने में जुट गया। सुविधा की दृष्टि से मैंने समूचे शोध प्रबंध को 9 अध्यायों में विभक्त किया है।

यहां मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि इस शोध ग्रन्थ में जनपद हमीरपुर के उन्हीं कवियों को स्थान दिया गया है जिनका जन्म इसी जनपद में हुआ है। इस जनपद में जन्म लेने वाले जिन

कवि बंधुओं ने अपना कार्यक्षेत्र अथवा निवास कहीं अन्यत्र बना लिया है उन्हें भी मैंने अपने शोध क्षेत्र में सम्मिलित किया है। जनपद में कुछ ऐसी काव्य विभूतियां भी हुई हैं जिनका जन्म तो किसी अन्य जनपद का है किन्तु उनका सारा जीवन इसी जनपद को समर्पित रहा। जनपद के विद्वान साहित्यकारों की सलाह पर अपवाद स्वरूप कुछ ऐसे कवियों को भी इस शोध ग्रन्थ के द्वितीय अध्याय में सम्मिलित किया गया है इनमें डा0 श्यामसुन्दर बादल-राठ तथा स्व0 लक्ष्मीनारायण सक्सेना 'कमलेश' मौदहा जैसे विद्वान साहित्यकार हैं जिन्होंने संपूर्ण जीवन इसी जनपद की साहित्यिक सेवा करते हुये मृत्यु का वरण किया।

प्रथम अध्याय में हमीरपुर जनपद का परिचय दिया गया है। इसके अंतर्गत इसे भौगोलिक तथा ऐतिहासिक दो भागों में विभक्त किया गया है पुनः दोनों भागों को प्राचीन कालीन तथा अर्वाचीन दो उपभागों में विभक्त किया गया है। इस अध्याय में जनपद की समस्त भौगोलिक तथा ऐतिहासिक सामग्री सप्रमाण प्रस्तुत की गई है।

द्वितीय अध्याय में हमीरपुर जनपद की युगीन परिस्थितियों का वर्णन है । इस अध्याय को भी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक 4 उपभागों में विभक्त किया गया है।

तृतीय अध्याय में हमीरपुर जनपद की काव्य परम्परा का विस्तृत वर्णन किया गया है। इस अध्याय को भी पुराकालीन काव्य प्रवृत्तियां तथा आधुनिक काव्य प्रवृत्तियां दो उपभागों में विभक्त किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत प्राचीनकाल के कवि और उनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इस अध्याय में उन दिवंगत कवियों का जीवन परिचय, काव्य कृतियां तथा सम्यक मूल्यांकन दिया गया है जो 15 अगस्त सन् 1947 को देश की आजादी प्राप्त होने अथवा इसके पूर्व तक जीवित थे।

पंचम अध्याय के अंतर्गत वर्तमान काल के कवि और उनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इस अध्याय में जनपद के उन कवियों को स्थान दिया गया है जिनकी मृत्यु या तो 15 अगस्त सन् 1947 के बाद हुई अथवा जो अभी जीवित हैं।

षष्ठ अध्याय के अंतर्गत काव्य की विकसित धारा में योगदान करने वाले उन अन्य स्फुट कवियों का विवेचन किया गया है जिनका काव्य क्षेत्र में सीमित किन्तु महत्वपूर्ण योगदान है।

सप्तम अध्याय के अंतर्गत 'काव्य का अनुभूति पक्ष' लिया गया है इस अध्याय को 4 उपभागों - विभाव, अनुभाव, संचारी भाव एवं रस में विभक्त कर उनका सम्यक विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

अष्टम अध्याय में काव्य के अभिव्यक्ति पक्ष को स्थान दिया गया है। इस अध्याय को 5 उपभागों - भाषा, शैली, छन्द, अलंकार एवं गुण में विभक्त कर उनका विवेचन किया गया है।

नवम् अध्याय में उपसंहार को स्थान मिला है। इसमें संदर्भ ग्रन्थों की सूची तथा हमीरपुर जनपद के विभिन्न मानचित्रों को भी समाविष्ट किया गया है।

अन्त में मैं जनपद के उन समस्त विद्वानों, कवियों तथा साहित्य प्रेमी महानुभावों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना नैतिक दायित्व समझता हूं जिनके सद्परामर्श, सहयोग एवं मार्गदर्शन से मैं अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सका। विशेष रूप से अपर जिला बचत अधिकारी हमीरपुर श्री स्वयंवर सिंह, श्री नन्दराम यादव, व्यायाम शिक्षक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय श्रीनगर (महोबा) तथा श्री सुरेन्द्रकुमार माहेश्वरी जीवन बीमा अभिकर्ता - महोबा के प्रति मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे इस शोध कार्य को पूर्ण करने में भरपूर सहायता की एवं मेरा उत्साहवर्द्धन किया। मैं महोबा के लोकप्रिय कवि श्री भारतेन्दु अड़जरिया 'इन्दु' , चरखारी के वरिष्ठ कवि श्री राजाराम सिंह परिहार, सुमेरपुर के उदीयमान कवि श्री गणेश सिंह 'विद्यार्थी' ग्राम इंगोहटा के कवि श्री गया सिंह परिहार एवं श्री भूपत सिंह परिहार तथा ग्राम इचौली (मौदहा) के वरिष्ठ कवि श्री सुधाकर प्रसाद त्रिपाठी एवं श्री रामदास गुप्त मौदहा के उदार हृदय कवि श्री कामताप्रसाद गुप्त व श्री प्रहलाद गुप्त के स्नेह एवं सहयोग को भला कैसे भूल सकता हूं जिनका प्रोत्साहन मेरी सफलता का सम्बल बना। राठ नगर के प्रसिद्ध शायर/कवि डा0 जमीलउद्दीन 'जमील' के सहयोग का भी मैं ऋणी हूं। मैं इस शोधग्रन्थ को अल्प समय में पूर्ण कलात्मकता एवं शुद्धता के साथ अपने इलैक्ट्रानिक टाइपराइटर से टाइप करने वाले श्री चन्द्रप्रकाश चौरसिया, मियांपुरा-राठ का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिनके सहयोग से मैं समय पर शोध कार्य प्रस्तुत कर सका। मैं इस शोध ग्रन्थ के

पर्यवेक्षक साहित्य मनीषी युग कवि डा० रामस्वरूप खारे के चरणों में नतमस्तक हूं, जिनका वात्सल्यपूर्ण स्नेह, सहयोग एवं मार्गदर्शन मुझे शोध कार्य की पूर्णता के शिखर तक पहुंचा सका।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह शोध ग्रन्थ जनपद की काव्य विभूतियों को साहित्य जगत में सम्मानजनक स्थान दिला पाने में समर्थ होगा। यदि मेरे इस उद्देश्य की पूर्ति हो सकी तो मैं इसे अपना परम सौभाग्य समझूंगा।

सत्यनारायण सिंह

दिनांक: 30-4-98

(सत्यनारायण सिंह)
शोधार्थी
मु०-अतरौलिया, राठ
जनपद-हमीरपुर (उ०प्र०)

****

प्रथम अध्याय

हमीरपुर जनपद का परिचय

(1) भौगोलिक

(अ) प्राचीन कालीन

(आ) अर्वाचीन

(2) ऐतिहासिक

(अ) प्राचीन

(आ) अर्वाचीन

****

(1) भौगोलिक

(अ) प्राचीनकालीन:

1. स्थिति व सीमायें:

' हमीरपुर जनपद ' बुन्देलखण्ड का एक महत्वपूर्ण जनपद है। बुन्देलखण्ड उत्तरी अक्षांश 23° - 24° अंश तथा 26° - 50° अंश और पूर्वी देशान्तर 77° - 52° अंश तथा 82° अंश के मध्य उन्नतोदर सम चतुर्भुज के रूप में स्थित है इसके उत्तर में यमुना नदी तथा उत्तर पश्चिम में चम्बल नदी इसकी सीमा का निर्माण करती है। दक्षिण की ओर इसमें मध्य प्रदेश की जबलपुर तथा सागर कमिश्नरियां तथा दक्षिण पूर्व में बघेलखण्ड तथा मिर्जापुर की पहाड़ियां सम्मिलित हैं ।[1] यमुना सिंचित इस प्रदेश में उत्तर प्रदेश के झांसी, जालौन, बांदा तथा हमीरपुर जनपद सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त इस प्रदेश में अनेक छोटी बड़ी रियासतें[2] सम्मिलित थीं जो अब मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश की अंग बन गई हैं।

उत्तर प्रदेश के दक्षिण में स्थित हमीरपुर जनपद बुन्देलखण्ड का ही एक महत्वपूर्ण भू-भाग है जो अपनी शूरवीरता एवं पराक्रम के लिये प्रसिद्ध रहा है इसे बुन्देलखण्ड का प्रवेश द्वार भी कहते हैं, इसे पूर्व में ब्रिटिश बुन्देलखण्ड के रूप में जाना जाता था[3]। यह जनपद अक्षांशीय विस्तार 25°7' से 26°7' उत्तर एवं देशान्तरी विस्तार 79°17' से 80°21' पूर्व के बीच स्थित है।[4] प्राचीन कालीन सीमाओं में इसके पश्चिम और उत्तर पश्चिम में झांसी व जालौन जनपद तथा स्वतंत्र राज्य बावनी व बेरी थे,

---

1. स्टेटिस्टिकल डिस्क्रिप्टिव एण्ड हिस्टारिकल एकाउण्ट्स आफ नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज आफ इण्डिया, वाल्यूम - 9 बुन्देलखण्ड पृष्ठ-1।
2. वही ओरछा (या टिहरी) दतिया, समथर, अजयगढ़, अलीपुर, अष्टगढ़ी (अथवा हस्तिवाय जागीर), घुरवही तोड़ी फतेहपुर, विजन, पहाड़ी बांका, बरौदा, बावनी अथवा बौनी, बेनी बीहड़ बिजावर, चरखारी, चौबियाना कालिंजर, भैसुण्डा, कामता रजौला, नयागांव, पालदेव, पहरा तोरन, छतरपुर, गरौली, गौरिहार, जसो जिगनी, खनियाधान, लुगासी, रिबही, पन्ना तथा सरीला।
3. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ-1।
4. वही

जिसकी सीमायें धसान व बेतवा नदियों के द्वारा निर्मित थीं। उत्तर में फतेहपुर व कानपुर जनपदों को हमीरपुर जनपद से अलग करती हुई यमुना नदी बहती थी, पूर्व में केन नदी थी जिसके द्वारा मौदहा तहसील में लगभग अठारह मील की सीमा निर्मित थी[1]। दक्षिण और दक्षिण पूर्व में कई स्वतंत्र राज्यों की सीमायें थीं जिनमें से मुख्य रूप से चरखारी, छतरपुर और दक्षिण पश्चिमी कोने में लुघासी राज्य का अनाधिकृत प्रवेश वाला कुछ क्षेत्र था। इस दिशा में स्वतंत्र राज्य से घिरे हुये जनपद के कई बिखरे हुये ग्राम थे। इसके उत्तर व पश्चिम दिशा में जिगनी बेहट और बेरी राज्यों के कई बड़े भू क्षेत्र थे इनके अतिरिक्त महोबा के उत्तर में चरखारी राज्य से संबंधित एक विस्तृत और एक छोटा भू क्षेत्र था और इसके उत्तर व पश्चिम में राठ, जलालपुर एवं कुलपहाड़ परगना में बिखरे हुये भू क्षेत्र थे जो सरीला व दूसरे स्वतंत्र राज्यों का भाग बनाते थे। यह सब जनपद से संबंधित भूमि क्षेत्र से पूरी तरह घिरे थे[2] ।

2.क्षेत्रफल व विस्तार:

यदि हमीरपुर परगना का ध्यान न दें तो संपूर्ण जनपद का आकार असम समान्तर चतुर्भुज के समान था, जिसकी औसत लंबाई दक्षिण से उत्तर 56 मील एवं पूर्व से पश्चिम तक औसतचौड़ाई 48 मील थी। जनपद का संपूर्ण क्षेत्रफल 1448314 एकड़ या 2263 वर्गमील था।[3] ।

3.पहाड़ियां:

ऊंची चट्टानों की चोटियां प्राय: एक विशेष धातु की मिलावट युक्त हैं और पंक्तिबद्ध नीले भूरे या सफेद गुलाबी रंग को प्रकट करती हैं। प्राय: जमीन के अंदर डूबी हुई और एक से तीन मील के अन्तर से पुन: उभरी ये पहाड़ियां उत्तर के पूर्व व दक्षिण के पश्चिम में संकीर्ण श्रंखलाओं में फैली

1.हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ-1

2.वही पृष्ठ- 1

3.वही पृष्ठ-1

हुई हैं। इन श्रंखलाओं में नौगांव से महोबा तथा अजनर से कुलपहाड़ की पहाड़ियां मुख्य हैं इनमें सबसे अधिक ऊंची, उत्कृष्ट चोटी कुलपहाड़ परगना से घिरे गरौली राज्य के सालट ग्राम में थी। छोटी छोटी पहाड़ियों में ग्रेनाइट के मटमैले एवं काले रंग का पत्थर मिलता है।[1]

4.मिट्टी:

सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड क्षेत्र के समान ही जनपद में चार प्रकार की मिट्टी पाई जाती है- 1.मार, 2.काबर, 3.पड़ुवा और 4.राकर[2] । इसके अतिरिक्त कुछ अधिक अच्छे ग्रामों के चारों तरफ अत्यधिक खाद युक्त एवं सिंचित क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टी कछवारा या कछियाना के नाम से जानी जाती है। इसमें काछी लोग प्रायः सब्जियां पैदा करते हैं। कुछ गांवों के किनारे पाये जाने वाले हल्की मिट्टी के क्षेत्र खेरा, खिरवा या गोहन के नाम से जाने जाते हैं[3] ।

5.समुद्र तल से ऊंचाई:

जनपद के विभिन्न स्थानों की समुद्र तल से ऊंचाई भिन्न-भिन्न है। सबसे अधिक समुद्र तल से ऊंचाई कुलपहाड़ के दक्षिण में अजनर की 730 फीट है यह ऊंचाई घटकर जैतपुर में 684 फीट पनवाड़ी में 561 फीट, राठ में 526 फीट होकर उत्तर की ओर तेजी से कम हुई है। यह ऊंचाई गोहाण्ड में 496 फीट, जलालपुर में 426 फीट और कुरारा में केवल 406 फीट है। महोबा तहसील के श्रीनगर में 728 फीट है जो अजनर से मात्र 2 फीट कम है। महोबा नगर में 643 फीट, कबरई में 525 फीट और महोबा तहसील के उत्तर में सुरहा नामक स्थान पर 450 फीट है और मौदहा में 399 फीट, सुमेरपुर में 379 फीट है।[4]

1.हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ-2

2. वही पृष्ठ-3

3. वही पृष्ठ-5

4. वही पृष्ठ-6

6. **नदियां :**

जनपद में मुख्य रूप से यमुना, बेतवा, धसान व केन नदियां हैं इसके अतिरिक्त कई छोटे छोटे नाले हैं जो बरसात के मौसम में पानी से भरे हुये एवं अन्य मौसमों में बहुत कम मात्रा में पानी रखने वाले छोटे नालों के रूप में रहते हैं[1]।

(1) यमुना नदी :

यमुना नदी, जालौन जनपद की ओर से आकर हमीरपुर जनपद में सर्वप्रथम मिश्रीपुर गांव के पास प्रवेश करती है। वहां से पूर्व की ओर बहती हुई यह जमरही तीर, और फिर दक्षिण में सिकरोरही की ओर मुड़ जाती है, और फिर दक्षिण पूर्व की ओर बहती हुई हमीरपुर नगर से होती हुई बड़ागांव की ओर जाती है, जहां इससे बेतवा मिल जाती है। जनपद में इसकी कुल लम्बाई 35 मील है जनपद की सीमा में इस नदी में कोई पुल न होने से प्रायः इसे नावों द्वारा पार किया जाता था[2]

(2) बेतवा व उसकी सहायक नदियां :

बेतवा उस स्थान से जनपद की उत्तरी पूर्वी सीमा के साथ साथ बहती है जहां राठ तहसील के बहदिना नामक ग्राम में इससे धसान मिलती है इसकी लम्बाई 40 मील से अधिक नहीं है जो बहुत से मोड़ों के कारण लगभग दो गुनी हो गई है। यमुना से मिलने के बाद इसका स्त्रोत पहले उत्तर फिर दक्षिण की ओर मुड़ता है। जलालपुर नगर के उत्तर में राठ तहसील के छः गांव इसके किनारे पडते थे जो पूरी तरह से बावनी व बेरी राज्यों से घिरे थे। जनपद की सीमा में उस समय इस पर कोई पुल नहीं थे[3]।

जैतपुर नगर के पश्चिम के पहाड़ी क्षेत्र से बर्मा नदी निकलकर कुलपहाड़ में इटौरा के

---

1. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ-6

2. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ-7

3. वही पृष्ठ-8

गुन्ची से होती हुई यह धीरे धीरे चौड़ी होती जाती है और राठ के दक्षिण पश्चिम में 8 मील दूर कैंथा नामक स्थान पर अर्जुन नदी से मिलती है और वहां से बहती हुई कुपरा ग्राम के पास बेतवा से मिल जाती है और आगे चलकर यह मुस्करा व जलालपुर परगना की विभाजक रेखा बनाती थी। बर्मा के पश्चिम में जलालपुर व राठ परगना के भागों से परवहा नदी बहती है बर्मा नदी वर्ष भर बहने वाली नदी है जबकि परवहा नदी बरसात के बाद पूरी तरह सूख जाती है[1]।

(3) धसान नदी :

जनपद हमीरपुर में धसान नदी सर्वप्रथम कुरारा खुर्द गांव के पास प्रवेश करती है जो गरौली राज्य से घिरा हुआ था। आगे बहती हुई यह चौका तथा लहचूरा घाट से होती हुई झांसी जनपद की 33 मील सीमा बनाती है बेहट व जिगनी राज्यों से होती हुई यह चरखारी के पास बेतवा से मिलती है[2]।

(4) केन नदी व इसकी सहायक नदियां :

जनपद को छूने वाली अन्य बड़ी नदी केन है जो तहसील मौदहा व बांदा जनपद की लगभग 18 मील की सीमा बनाती है। हमीरपुर जनपद के लिये यह बहुत कम महत्व की है किन्तु अपनी सहायक नदियों के प्रभाव के कारण इसका महत्व है उनमें से प्रमुख चन्द्रावल नदी है जो महोबा के उत्तर-पश्चिम से निकलकर बांदा तहसील के उत्तर पश्चिमी कोने को काटती हुई मौदहा को जाती है तथा पैलानी ग्राम के पास केन नदी से मिलती है। रास्ते में बायीं ओर अपनी सहायक नदियों सिहू व करोनम और दायीं ओर श्याम नदी के साथ यह अधिक हसित होकर उर्मल नदी से मिलती है। पश्चिम से पूर्व की ओर जंगलों से होकर बहती व छतरपुर से जनपद की सीमा बनाती हुई यह छोटी नदी अंत में स्वतंत्र राज्य से होकर केन नदी में मिल जाती है[3]।

---

1. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ- 9

2. वही पृष्ठ-8

3. वही पृष्ठ- 9

(5) झीलें व तालाब :

- - - - - - - - - - - - -

प्राकृतिक रूप से पानी के निकास से निर्मित जनपद में कोई झील या तालाब नहीं है किन्तु तहसील कुलपहाड़ और महोबा और कुछ दूसरे स्थानों जैसे चरखारी में पहाड़ियों व नीची चट्टानों की स्थिति इस प्रकार की है कि कृत्रिम झीलें व तालाब निर्मित हो सकते हैं जिसके लिये हमीरपुर जनपद प्रसिद्ध है उनकी संख्या 41 है जिनमें बीस बड़े तालाब व इक्कीस छोटे हैं। बड़े तालाब हैं बीजानगर, थन्ना, किरारी, कीरत सागर, मदर सागर, बेला ताल, दसरापुर, नयागांव, टीकामऊ, कल्याण सागर, रहिलिया, पहरा, तेली पहाड़ी, ढिकहरा, पवा, बिलखी, उरवारा, कबरई, पसनहाबाद व सिजहरी। छोटे तालाब - पठारी कदीम, छतरवारा, नरेरी, अनरवारा, रावतपुर खुर्द, सेला मोकी, सारंगपुरा, बौरा, भंडरा, दमोरा, मीरतला, श्रीनगर, कुलपहाड़ (2) दिदवारा, गौरहरी (2), मनकी, नरवारा, मझगवां व पिपरा में स्थित हैं।

प्रमुख रूप से जिन तालाबों को प्रसिद्धि प्राप्त है उनमें महोबा के समीप बीजानगर ताल तथा मदन सागर, कीरत सागर व जैतपुर का बेलाताल हैं जो पूरे भराव के समय आठ व नौ मील परिधि में होते हैं। ये तालाब 9वीं व 12वीं शताब्दी के मध्य चन्देल शासकों द्वारा निर्मित बताये जाते हैं।

8. परती भूमि :

- - - - - - - - - -

जनपद में कुल बंजर भूमि 230668 एकड़ या 15.7 प्रतिशत थी इसमें 50771 एकड़ पानी से ढका क्षेत्र तथा 34576 एकड़ सडकों , भवनों आदि से घिरा क्षेत्र भी सम्मिलित था शेष 145321 एकड़ क्षेत्र बंजर या पहाडियों से ढका क्षेत्र या नदियों के किनारे का ऊसर क्षेत्र था। परती भूमि का परगना मौदहा में 8.5% क्षेत्र, मौदहा में 10.8% व सुमेरपुर में 11.6% कुलपहाड़ में 15.3% राठ में 17.9% व जलालपुर में 28.7% क्षेत्र था। जबकि हमीरपुर व जलालपुर को मिलाकर कुल 27% क्षेत्र परती भूमि के रूप में था[1] ।

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ -13

9. **जंगल :**

जनपद के आधे उत्तरी भाग में बहुत कम वृक्ष थे, मुश्किल से कहीं कहीं बबूल उगे थे या नदी के किनारों के क्षेत्र में छोटे आकार के विभिन्न प्रकार के पौधों के जंगल थे। दूसरे पेड़, खैर, इंगोट करौंदा व करील थे। जनपद के दक्षिणी भाग की स्थिति भिन्न थी। महोबा व कुलपहाड़ की कई पहाड़ियां बुन्देलखण्ड में मिलने वाले जंगलों से आच्छादित थीं। इसके अतिरिक्त इधर-उधर भी कई जंगल थे इन जंगलों में तेंदू, आबनूस, महुआ, सेंमल, कपूर, करधई, सेज, गुरजा, ढाक, रयोंज, व खैर के वृक्ष मुख्य रूप से पाये जाते थे सबसे अच्छे जंगल बिलखी, सिजहरी और अजनर में थे[2] ।

10. **वृक्ष वाटिकायें :**

जनपद में वृक्ष वाटिकाओं का क्षेत्र 8234 एकड़ था सबसे अधिक महुआ के वृक्ष थे इसके अतिरिक्त आम, इमली, नीम, शीशम, जामुन व आंवला एवं बेल के वृक्ष भी मिलते थे। इमारती लकड़ी फूल व बीज के कारण महुआ अधिक महत्वपूर्ण वृक्ष था। इसके अतिरिक्त झीलों व तालाबों के किनारे पीपल गूलर व बरगद के वृक्ष भी काफी संख्या में मिलते थे[2] ।

11. **खनिज :**

जनपद में कहीं भी खानें नहीं हैं किन्तु ग्रेनाइट पत्थर को राजगीरी के लिये भवनों के आधारों, दीवारों व पुलों के लिये प्रत्येक पहाड़ी से 3 रूपया प्रति 100 क्यूबिक फीट की दर से निकाला जाता था। गाड़ी भाड़ा बारह आने प्रति मील प्राप्त किया जाता था। तहसील कुलपहाड़ से ग्राम गौरहरी में जमींदारों के स्वामित्व में पत्थर खुदाई का काम होता था जो पत्थर पर राज्याधिकार कर लगाते थे जिसका उपयोग खिलौने, फूलदान, तश्तरी व कई अन्य प्रकार की वस्तुयें बनाने में होता था। सड़कों को पक्का करने के लिये कंकड़ का उपयोग किया जाता था जिसे जनपद के उत्तरी भाग में नदियों के किनारे से

---

1. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-2 पृष्ठ- 13 व 14

2. वही - पृष्ठ - 15

खोदा जाता था। जनपद के दूसरे भागों में कंकड़, ग्रेनाइट को तोड़कर प्राप्त किया जाता था जिसे गिट्टी कहते थे[1] ।

12. पशु वर्ग :

जनपद के जंगलों में चीता बहुत दुर्लभ प्राणी था। अंतिम चीता शायद अजनर के पास सन् 1895 में मारा गया था महोबा व कुलपहाड़ की पथरीली पहाड़ियों व जंगलों में तेंदुआ आम प्राणी था। भालू भी चीते के समान ही दुर्लभ जन्तु थे यद्यपि पहले इनकी संख्या काफी थी। पहाड़ियों एवं नदियों के किनारे भेड़िया व लकड़बग्घा पाये जाते थे। लोमड़ी व सियार सभी जगह मिलते थे, नीलगाय व बारहसिंहा भी सभी स्थानों पर थे , सांभर हिरण व चित्तीदार हिरण मुश्किल से मिलते थे, जनपद के दक्षिण में खरगोश मिलते थे। बंदर कम प्राप्य थे किंतु महोबा व कुछ दूसरे स्थानों में लंगूर काफी संख्या में थे। बड़ी नदियों में दोनों प्रजातियों के मगरमच्छ थे[2] ।

13. पक्षी वर्ग :

मोर-मोरनी, धूसर, तीतर और बटेर संपूर्ण जनपद में मिलते थे। रंगीन तीतर पहाड़ी क्षेत्रों में काफी संख्या में प्राप्य थे। बुलबुल जैसी चिड़ियां व हरे कबूतर अधिकांश स्थानों पर मिलते थे। ठंडे मौसम में जनपद में जलपक्षी विभिन्न प्रजातियों के कलहंस व बतखें मिलती थीं। तालाबों व अन्य पानी के स्थानों पर चाहा पक्षी व विभिन्न प्रजातियों के सारस भी देखने को मिलते थे। श्राइक चिड़िया तोते व गौरैया चिड़ियां भी काफी संख्या में जनपद में मिलती थीं[3]।

---

1. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ- 15
2. वही - पृष्ठ -16
3. वही - पृष्ठ -16

14. जलवायु :

जनपद हमीरपुर की जलवायु अत्यधिक गर्म व शुष्क है। गर्मी का मौसम मार्च के प्रारंभ में आ जाता है मानसून आने तक अत्यधिक गर्मी पड़ती है । अप्रैल व मई की तेज पश्चिमी हवायें प्रातः 9 बजे से प्रारंभ होकर रात तक चलती हैं। जनपद के दक्षिण में अनगिनत पथरीली पहाड़ियों में गर्मी दिन में संचित हो जाती है और रात में गर्मी बाहर निकलती है जिस प्रकार गर्मी का मौसम जल्दी प्रारंभ हो जाता है सर्दी का मौसम उतना ही विलंब से प्रारंभ होता है और नवंबर के मध्य तक गर्मी महसूस की जाती है। जंगल कम हैं किंतु सर्दी के मौसम की रातें अत्यधिक ठण्डी होती हैं बरसात का मौसम मलेरिया फैलाने वाला है और अस्वास्थ्यकर मौसम के रूप में प्रसिद्ध है यद्यपि हमीरपुर नगर को अच्छी नालियों की व्यवस्था के कारण स्वास्थ्यकर समझा जाता है[1] ।

15. जनसंख्या :

जनपद की सर्वप्रथम जनगणना सन् 1842 में उस समय हुई जब महोबा व जैतपुर जनपद में सम्मिलित नहीं थे। उस समय परगना मौदहा, सुमेरपुर, पनवाड़ी, राठ, खरेला, जलालपुर एवं हमीरपुर की कुल जनसंख्या 226245 थी सन् 1865 में की गई जनगणना को जनपद की सर्वप्रथम सही जनगणना माना जा सकता है क्योंकि उस समय कुंच व कालपी के बदले महोबा व जैतपुर परगना को जनपद में सम्मिलित कर लिया गया था। उस समय कुल जनसंख्या 520941 व कुल क्षेत्रफल 228850 वर्गमील था। जनसंख्या घनत्व 228 प्रति वर्गमील था[2] वर्ष 1872 की जनगणना में कुल जनसंख्या 529137 व क्षेत्रफल 2286 वर्गमील था तथा जनसंख्या घनत्व 231 व्यक्ति प्रति वर्गमील था। छः तहसीलें आठ परगना में बंटी थीं एवं कुल गांव व नगरों की संख्या 744 थी।

---

1. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग 22 पृष्ठ-21

2. वही पृष्ठ - 63

सन् 1881 में की गई जनपद की जनगणना में कुल जनसंख्या 507337 तथा जनसंख्या घनत्व 222 प्रति वर्गमील था। जनपद में कुल गांवों व नगरों की संख्या 755 थी। सन् 1891 की जनगणना में जनपद की कुल जनसंख्या 513720 थी। नगरों व गांवों की कुल जनसंख्या 764 थी[1] ।

वर्ष 1901 में जो जनगणना जनपद में की गई उसमें जनसंख्या घटकर 458542 हो गई तथा जनसंख्या घनत्व 201 व्यक्ति प्रति वर्गमील था। कुल गांवों व कस्बों की जनसंख्या 763 थी। कुल आबादी का 91.7 प्रतिशत गांवों में व 8.3 प्रतिशत नगरों में था। कुल जनसंख्या का 230204 पुरूष एवं 228338 महिलायें थीं। धर्म के अनुसार एकत्र किये गये आंकड़ों में 428117 हिंदू, 30057 मुसलमान, 272 ईसाई, 59 जैन, 25 आर्य, 8 फारसी और 4 सिख थे[2] ।

(आ) अर्वाचीनः

----

1. स्थिति व सीमायें :

मध्य प्रदेश की उत्तरी सीमा से सटा जनपद हमीरपुर उत्तर प्रदेश के झांसी मण्डल के मध्य पठारी जनपद है। बुन्देलखण्ड के प्रवेश द्वार हमीरपुर जनपद का अक्षांशीय विस्तार 25°5' से 26° 7' उत्तर एवं देशान्तरी विस्तार 79° 17' से 80° 5' पूर्व है[3] इसके उत्तर में कानपुर देहात व फतेहपुर जनपद, उत्तर पश्चिम में जालौन, पश्चिम में झांसी एवं पूर्व में बांदा जनपद स्थित हैं। दक्षिणमें मध्य प्रदेश के द्वारा जनपद की सीमा का निर्धारण होता है। जनपद की उत्तरी सीमा में यमुना नदी, दक्षिण में उर्मिल नदी, पूर्व में केन नदी व पश्चिम में धसान नदी प्रवाहित होकर सीमाओं का निर्धारण करती है[4] ।

जनपद का दक्षिणी भू भाग मुख्य रूप से पठारी एवं विन्ध्य क्रम की चट्टानों द्वारा निर्मित है छोटी-छोटी पहाड़ियों में ग्रेनाइट के मटमैले एवं काले रंग का पत्थर मिलता है जनपद का अधिकांश भाग रेतीला एवं पथरीला है जनपद का काफी क्षेत्र ऊंचा नीचा तथा भूक्षरण से प्रभावित है।

---

1. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ-64

2. वही पृष्ठ -65

3. जिला सूचना पत्रिका हमीरपुर वर्ष 1987 पृष्ठ-10

4. वही

2.विस्तार व क्षेत्रफल

जनपद हमीरपुर वर्तमान रूप में उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम तक 136 किमी0 लम्बा है तथा दक्षिण पूर्व से उत्तर पश्चिम तक 80 किमी0 चौड़ा है इस प्रकार जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7165 वर्ग किमी0 है[1] ।

3.तहसील एवं विकास खण्डः

जनपद में कुल छः तहसीलें एवं ग्यारह विकास खण्ड हैं जो निम्नांकित हैं[2]

तहसील	विकास खण्ड
1. हमीरपुर	1.सुमेरपुर
	2.कुरारा
2. मौदहा	3.मुस्करा
	4.मौदहा
3. राठ	5.सरीला
	6.राठ
	7.गोहाण्ड
4. महोबा *	8.कबरई
5. चरखारी	9.पनवाड़ी
6. कुलपहाड़	10.चरखारी
	11.जैतपुर

विषय : श्री मुलायम सिंह यादव के मुख्य मंत्रित्व काल में दिनांक 11.2.95 को हमीरपुर जनपद को दो भागों, महोबा जनपद व हमीरपुर जनपद में विभाजित कर दिया गया। इस प्रकार नवसृजित

1.महोबा व हमीरपुर जिले का आदर्श भूगोल, पृष्ठ-12

2. वही पृष्ठ - 34

महोबा जनपद के अंतर्गत महोबा,चरखारी व कुलपहाड़ तहसीलें तथा हमीरपुर जनपद में हमीरपुर, राठ व मौदहा तहसीलें सम्मिलित की गई हैं।

4. जनसंख्या एवं क्षेत्र का वितरण :

वर्ष 1991 में की गई जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 1465707 है जिनमें 795666 पुरूष एवं 670041 महिलायें हैं जनपद की ग्रामीण जनसंख्या 1221576 तथा नगरीय जनसंख्या 244131 है कुल जनसंख्या का 53.5% किसान व 28.3% मजदूर है, जनपद के लगभग 81.8% लोग कृषि पर निर्भर हैं जनपद में साक्षरता का प्रतिशत 32.14% है। जनपद में हिन्दी बोलने वालों की जनसंख्या 1396936, उर्दू बोलने वालों की जनसंख्या 59342 , पंजाबी बोलने वालों की संख्या 227 बंगाली बोलने वालों की संख्या 110 व अन्य भाषा बोलने वालों की संख्या 9093 है।

जनपद में 1346917 हिन्दू, 91304 मुसलमान, 190 ईसाई, 210 सिख एवं अन्य जातियों के लोग 27086 हैं[1] ।

जनपद के गांवों में 12.12 लाख लोग एवं शहरी क्षेत्र में 2.54 लाख लोग रहते हैं। जनसंख्या घनत्व प्रति व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 205 है। जनपद में कुल नगरों की संख्या 12 ग्राम सभायें 693, नगरपालिका - 5 टाउन एरिया - 7 तहसील - 6, विकास खण्ड - 11 एवं पंचायतों की संख्या 98 है।

जनपद में औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान -4, महाविद्यालय-4, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय-49, जूनियर बेसिक विद्यालय - 1191, सीनियर बेसिक विद्यालय- 28 पालीटेक्निक -1 चिकित्सालय-11 पुलिस स्टेशन ग्रामीण-13 व नगरीय-10 रेलवे स्टेशन-13, बस स्टाप-160, डाकघर ग्रामीण-219 व नगरीय 19, राष्ट्रीयकृत बैंक-42, ग्रामीण बैंक शाखायें- सहकारी बैंक-18 व भूमिविकास बैंक-4 हैं[2] ।

1.महोबा व हमीरपुर का आदर्श भूगोल पृष्ठ-33

2.स्मारिका, हमीरपुर महोत्सव-94 पृष्ठ-64

जनपद की तहसीलों की क्रमवार जनसंख्या निम्न प्रकार है-

तहसील	पुरूष	महिला	योग
हमीरपुर	140748	117032	257780
राठ	145758	148028	323786
कुलपहाड़	131855	111526	243381
चरखारी	66293	56452	122745
महोबा	116259	98963	215222
मौदहा	164753	138040	302793
योग	795666	670041	1465707

5. वन

जनपद के कुल क्षेत्रफल के 38742 38 हैक्टेअर क्षेत्र पर वन हैं ये वन मुख्य रूप से बेतवा ,यमुना, धसान एवं चन्द्रावल नदियों के बीहड़ों तथा महोबा, कुलपहाड एवं चरखारी तहसील के पहाड़ी क्षेत्र में स्थित हैं[1] ।

6. कृषि

कृषि के क्षेत्र में जनपद हमीरपुर प्रदेश के अन्य जनपदों से बहुत पिछड़ा है इसका कारण वर्षा की अनियमितता सिंचाई साधनों की कमी एवं भू-जलवायु तथा प्राकृतिक विषमतायें हैं। जनपद

1.जिला सूचना पत्रिका 1987 पृष्ठ-14

का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 7.16 लाख हैक्टेयर है जिसमें 5.24 लाख हैक्टेयर भूमि में खेती की जाती है दो फसली क्षेत्रफल केवल 0.29 लाख हैक्टेयर है खरीफ में 1.24 लाख हैक्टेयर, रबी में 4.29 लाख हैक्टेयर तथा जायद में लगभग 500 हैक्टेयर क्षेत्रफल में खेती की जाती है। खरीफ में लगभग 3.05 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल खाली पड़ा रहता है । जनपद की फसल सघनता मात्र 105.05% है[1] ।

7.मिट्टी के प्रकार :

जनपद में चार प्रकार की मिट्टी पाई जाती है 1.राकर, 2.काबर, 3.पडुवा तथा 4.मार । क्षेत्रफल की दृष्टि से राकर का क्षेत्रफल 36.4 हजार हैक्टेयर, काबर का क्षेत्रफल 52.02 हजार हैक्टेयर, मार का क्षेत्रफल 230.5 हजार हैक्टेयर, पडुवा का क्षेत्रफल 201.25 हजार हैक्टेयर तथा अन्य प्रकार की मिट्टी का क्षेत्रफल लगभग 15 हजार हैक्टेयर है[2] ।

जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त है पहला पठारी क्षेत्र जिसमें महोबा, चरखारी, कुलपहाड़ तथा राठ तहसील का कुछ भाग सम्मिलित है। इस क्षेत्र में लाल भूरे रंग की मिट्टियां पायी जाती हैं जिन्हें राकर एवं पडुवा कहते हैं। दूसरा ऊंचा एवं मैदानी क्षेत्रों का उपजाऊ भाग जिसमें मार मिट्टी तथा निचले क्षेत्रों में काबर मिट्टी पाई जाती है। जनपद का संपूर्ण क्षेत्रफल समतल न होकर ऊंचा नीचा तथा ढालू है, इस कारण छोटे-छोटे क्षेत्रों में भी विभिन्न प्रकार की मिट्टियां पाई जाती हैं[3] ।

8. सिंचाई के साधन:

विभिन्न सिंचाई के साधनों से जनपद का कुल 1.30 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल सिंचित हो

---

1. स्मारिका हमीरपुर महोत्सव 94, पृष्ठ-30
2. वही पृष्ठ - 30
3. वही पृष्ठ -30

पाता है जो कृषि योग्य क्षेत्रफल का केवल 25 प्रतिशत है शेष 75 प्रतिशत क्षेत्रफल में कृषि वर्षा पर निर्भर है। जनपद में सिंचाई के प्रमुख स्त्रोत बेतवा जलाशय, उर्मिल जलाशय एवं अर्जुन जलाशय से निकली हुई नहरें हैं जिनकी लंबाई लगभग 208 किमी0 हैं ये नहरें भी पूरी तरह वर्षा पर ही निर्भर है। इन नहरों के द्वारा संपूर्ण सिंचित क्षेत्रफल का लगभग 66 प्रतिशत क्षेत्रफल सिंचित होता है। जनपद में विद्युत आपूर्ति पर आश्रित डाल सिंचाई (लिफट) नहरें भी हैं इन नहरों से लगभग 6500 हैक्टेयर क्षेत्रफल सिंचित हो पाता है।

जनपद में सिंचाई हेतु 490 ऊर्जाकृत राजकीय नलकूप हैं जिनसे लगभग 12384 हजार हैक्टेयर क्षेत्रफल सिंचित होता है जो संपूर्ण सिंचित क्षेत्रफल का लगभग 12.20 प्रतिशत है इसके अतिरिक्त अन्य सिंचाई साधनों जैसे तालाब, निजी नलकूप, पम्प सेट, झील आदि स्त्रोतों से भी लगभग 22190 हजार हैक्टेयर क्षेत्रफल सिंचित होता है जो संपूर्ण सिंचित क्षेत्रफल का लगभग 21 प्रतिशत है[1] ।

9. फसलें :

जनपद में खरीफ की फसलों में लगभग 68 हजार हैक्टेयर में ज्वार, 24 हजार हैक्टेयर में अरहर, 17 हजार हैक्टेयर में उड़द, 8 हजार हैक्टेयर में तिल, 10 हजार हैक्टेयर में सोयाबीन उगाया जाता है इसके अतिरिक्त कुछ क्षेत्रफल में मूंग, मूंगफली, धान व सनई की खेती भी होती है।

रबी की फसलों में लगभग 1.58 लाख हैक्टेयर में गेहूं, 1.40 लाख हैक्टेयर में चना, 68 हजार हैक्टेयर में मटर, 52 हजार हैक्टेयर में मसूर तथा 29 हजार हैक्टेयर क्षेत्रफल में अलसी उगाई जाती है । इसके अतिरिक्त राई / सरसों व जौ की खेती भी काफी बड़े क्षेत्रफल में की जाती है[2] ।

---

1. स्मारिका, हमीरपुर महोत्सव 94 पृष्ठ 31 व 32

2. वही पृष्ठ - 32

(2) ऐतिहासिक

(अ) प्राचीनः

----

1. नामकरणः

किसी भी देश के नामकरण में अनेक तथ्य सहायक होते हैं। कभी शासकों के नाम पर तो कभी वहां के निवासियों के नाम पर देश का नामकरण होता है और कभी कभी उस देश की प्राकृतिक दशा भी नामकरण में सहायक होता है। जनपद हमीरपुर का नामकरण भी कुछ इसी प्रकार ही है।

सुप्रसिद्ध अंग्रेज विद्वान डी0 एल0 ड्रेक ब्रांकमैन के अनुसार हमीरपुर जिले की स्थापना ग्यारहवीं शताब्दी में हम्मीरदेव द्वारा की गई थी। वह एक करचुलि राजपूत थे और उन्होंने मुसलमानों से पराजित होकर बदना नामक एक अहीर के साथ यहां शरण ली थी जिसके नाम पर समीप के गांव का नाम बदनपुरा पड़ा[1] कुछ विद्वान हमीरपुर को चन्देल शासक हम्मीरवर्मन (1289-1309 ई0) द्वारा बसाया मानते हैं[2] किन्तु इसके पूर्व हमीरपुर जनपद बुन्देलखण्ड प्रदेश का ही एक भू भाग रहा है।

बुन्देलखण्ड प्रदेश को भी पूर्व में विभिन्न नामों से जाना गया कभी यह धसान अथवा दशार्ण नदी के कारण, धसान या दशार्ण कहलाया तो कभी जुझौतिया ब्राह्मणों की बहुलता के कारण इसे जुझौति अथवा यजुर्होत्र कहा जाता रहा।

इसके अतिरिक्त जेजा अथवा जयशक्ति नरेश के नाम पर महा जेजामुक्ति अथवा जेजाक मुक्ति के नाम से भी प्रसिद्ध रहा है। इस प्रकार बुन्देलखण्ड के अनेक नाम बदले[3] जिनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ-17
2. स्मारिका हमीरपुर महोत्सव 94, पृष्ठ -1
3. चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास-डा0 अयोध्याप्रसाद पाण्डेय, पृष्ठ-4

1. चेदि देशः

चेदि नरेशों के शासन काल में यह चेदि देश कहलाया। शिशुपाल इस देश का महान शासक था[1] जिसकी राजधानी वर्तमान चन्देरी बतायी जाती है।

2. दशार्ण देशः

बुन्देलखण्ड का पश्चिमी भाग जहां धसान अथवा दशार्ण नदी बहती है , दशार्ण देश के नाम से जाना जाता था। राजकुमार शिखण्डी के साथ यहां के राजा हिरण्यवर्मा की पुत्री का विवाह हुआ था।[2]

3. चन्द्रावतीः

जनरल कनिंघम के अनुसार सन्द्रावतीज (चन्द्रावती) देश का नामकरण चर्मण्यवती अथवा चम्बल नदी के नाम पर हुआ और चम्बल तथा टौंस के मध्य का समस्त भू भाग इसमें सम्मिलित था[3] टौलमी ने तमसिस, करपोर्निया इमलथ्रो तथा नन्दुवग्दुर नामक चारों नगरों का उल्लेख किया है जिन्हें क्रमशः कालिंजर, खजुराहो, महोबा तथा नलपुर अथवा नरवर से जोड़ा जाता है।

4. जुझौतीः

जुझौती का राज्य के रूप में उल्लेख स्कन्द पुराण में भी मिलता है[4] इसमें 42000 गांव थे और कान्तिपुर (कुटवर) चेदि देश तथा मालवा इस राज्य की सीमायें थीं।

इस देश का उल्लेख ह्वेनसांग द्वारा चि-चि-टो के नाम से किया गया है उसके अनुसार यह देश उज्जैन से उत्तर पूर्व की ओर 1000 ली अथवा 167 मील की दूरी पर था[5] कनिंघम के अनुसार यह चि-चि-टो जुझौती ही है[6] जुझौतिया ब्राह्मणों की बहुतायत तथा जुझौती में सुरश्मिचन्द्र के

1. महाभारत, शान्ति पर्व, अ0 29, श्लोक 12-13
2. महाभारत उद्योग पर्व, अ0-189 श्लोक 8-10
3. आ0 सर्वे रिपोर्टस भाग-21 पृष्ठ- 91-92
4. एनश्येन्ट इण्डिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टालमी पृष्ठ-135
5. स्कन्द पुराण अध्याय-30
6. बाटर्स भाग-2 पृष्ठ-251

उत्तराधिकारियों के ब्राह्मण राज्य की संभावना[1] कनिंघम के इस मत की पुष्टि करती है कि चि-चि-टो जुझौती ही था।

5. जेजाक भुक्तिः

चन्देलों के समय में इस देश का नाम जेजाक भुवित अथवा जेजा भुक्ति था। चन्देल वंश के तृतीय नरेश जेजा अथवा जय शवित के नाम पर यह नाम पड़ा[2] । पृथ्वीराज चौहान के मदनपुर शिलालेख के अनुसार 12वीं शताब्दी तक यह देश जेजाक भुक्ति के नाम से ही जाना जाता था[3] ।

6. बुन्देलखण्ड :

बुन्देलखण्ड के नामकरण के संबंध में कई मत हैं। छत्रप्रकाश तथा वीरसिंह देव चरित के आधार पर यह कथा है[4] कि एक राजा ने विन्ध्यवासिनी देवी को प्रसन्न करने के उद्देश्य से तपस्या की किन्तु देवी के प्रसन्न न होने के कारण निराश होकर उसने अपने जीवन का अन्त करने का निश्चय किया। ज्यों ही उसने अपनी तलवार अपनी गर्दन पर मारी, देवी ने प्रकट होकर कहा कि उसके रक्त बिन्दुओं से पैदा हुआ पुत्र शक्तिशाली विजेता बनेगा और बुन्देलवंश का प्रादुर्भाव करेगा। 'इतिहासे बुन्देलखण्ड[5] नामक पुस्तक में महराज सिंह ने भी कुछ इसी प्रकार की कथा का उल्लेख किया है। 'हकीकत-उल-आलिमा' के अनुसार गहरवार वंश के राजा हरदेव ने एक सेविका (बांदी) को रख लिया और उससे उत्पन्न सन्तानें बन्देला या बुन्देला कहलायीं। इलियट व स्मिथ ने भी इस मत का समर्थन किया है।[6]

किन्तु इस प्रदेश के बुन्देलखण्ड कहलाने का कारण यहां की भौगोलिक स्थिति ही

----

1. क्रा० इन्स०इण्डि०, भाग-3, नं०-19 पृष्ठ 83-90, नं०-36 पृष्ठ 158-61

2. जेजाख्यया अथ नृपतिः सबभूव जेजाक भुक्तिः

3. आ० सर्वे० रिपोर्ट्स, भाग-2 पृष्ठ-98.

4. बुन्देलों का इतिहास-ब्रजरत्न दास -ना०प्र० सभा पत्रिका, भाग-3, पृष्ठ-420

5. इतिहासे बुन्देलखण्ड- भाग-2 पृष्ठ-2

6. नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज गजेटियर, भाग-1, पृष्ठ-20, इलियट एण्ड डाटसन, भाग-3 पृष्ठ-45

अधिक उचित प्रतीत होती है। इस प्रदेश में विन्ध्य पर्वत की श्रेणियां हैं और संभवतः इसी कारण यह प्रदेश विन्ध्य खण्ड अथवा विन्ध्येलखण्ड कहलाया और कालान्तर में इसका नाम बुन्देलखण्ड हो गया।

(2) प्रारम्भिक इतिहासः

जनपद के प्रारम्भिक इतिहास की बहुत कम प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। जनपद के प्राचीन कालीन इतिहास पर दृष्टिपात करें तो पता चलता है कि जनपद का अधिकांश भाग जंगलों से आच्छादित था जहां गोंड, कोल और भील जैसी जंगली जातियां रहती थीं। यह मानने के पर्याप्त प्रमाण हैं कि ईसवी काल के प्रथम तीन सौ वर्षो के अधिकांश समय हमीरपुर जनपद सहित बुन्देलखण्ड गुप्त राजवंश के अधीन रहा[1] ।

(3) जेजाक भुक्तिः

सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा 641 ई0 से 642 ई0 में बुन्देलखण्ड क्षेत्र का भ्रमण किया गया था। उसके वृत्तान्त से जनपद के एतिहासिक प्रमाण प्राप्त होते हैं। ह्वेनसांग ने बुन्देलखण्ड के नाम से जाने जाने वाले इस क्षेत्र को 'चि-चि-टो' के नाम से संबोधित किया है चीनी यात्री ह्वेनसांग के समय यहां ब्राह्मण शासक जझौती का शासन था, जिसके लिये कहीं जेजाक भुक्ति या जेजाक सुक्ति नाम भी आया है।

जझौती ब्राह्मण शासक संभवतः थानेश्वर के शक्तिशाली राजा हर्षवर्द्धन के आश्रित थे जिसका शासन निःसन्देह संपूर्ण जनपद पर भी फैला हुआ था[2] ।

(4) गहरवारः

परम्परागत कथा यह प्रमाणित करती है कि प्रसिद्ध चन्देल राजवंश के उद्भव के

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 123

2. वही , पृष्ठ- 123-124

पूर्व यहां गहरवार राजपूतों का आधिपत्य हुआ। संभवतः हर्षवर्द्धन की मृत्यु के बाद उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाकर उन्होंने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया। संभवतः गहरवार राजपूत कन्नौज राजकुल से संबंधित थे। गहरवार विशाल तालाबों के निर्माता थे उनके द्वारा बीजानगर झील, कन्डौरा ताल व परगना महोबा एवं कुलपहाड़ में नौ अन्य तालाब बनवाये गये[1] ।

(5) परिहार :

गहरवारों के पतन के पश्चात यहां परिहारों का आधिपत्य हो गया जिनको प्रथम चन्देल राजा चन्द्रवर्मा द्वारा संवत 677 में पराजित किया गया। बिलहारी की विशाल झील जो लक्ष्मण सागर कहलाती थी, का निर्माण लक्ष्मण सेन परिहार द्वारा कराया गया था और सिंगोरगढ़ के विशाल किले के एक स्तम्भ में अब भी परिहार राज्य का नाम अंकित है। सन् 903 ई0 में परिहार राजपूत राजा पाण्डु ने पनवाड़ी की स्थापना की, माना जाता है कि परिहारों का राज्य यमुना से नर्मदा तक फैल गया था। पनवाड़ी का पूर्व नाम परहारपुर होने से भी इस परम्परागत कथा को बल मिलता है। महोबा नगर का कुछ भाग आज भी परिहार क्वार्टर के रूप में जाना जाता है जबकि वहां अब परिहार राजपूत नहीं रहते हैं। स्थानीय कथायें बतातीं हैं कि नौगांव के पास मऊ संहानिया और जैतपुर के पास मौजा मुरहारी की स्थापना संवत 1137 में राजा उदयकरण परिहार द्वारा की गई थी[2] ।

(6) चन्देल काल :

----

1. उत्पत्तिः

अन्य राजपूत वंशों के समान ही चन्देलों की उत्पत्ति भी विवादग्रस्त है। डा0स्मिथ के अनुसार चन्देलों की उत्पत्ति भर, गोंड आदि जातियों से हुई परन्तु श्री चिन्तामणि विनायक वैध प्रभृति

---

1. हमीरपुर गजेटियर - 1909 भाग-22 पृष्ठ- 124 व 125

2. वही पृष्ठ- 125

भारतीय विद्वानों के अनुसार चन्देल विशुद्ध आर्य क्षत्रिय सन्तान हैं,चन्देलों की उत्पत्ति की उनकी एक अपनी भी कथा है[1] जिसके अनुसार चन्देल वंश के संस्थापक चन्द्रवर्मा की उत्पत्ति बनारस के गहरवा राजा इन्द्रजीत के ब्राह्मण पुरोहित हेमराज की कन्या हेमवती से हुई थी । इस कथा के अनुसार एक बार जब हेमवती रति तालाब में स्नानार्थ गई हुई थी तब भगवान चन्द्र उसके रूप से आकर्षित होकर वहां प्रकट हुये और उसे आशीर्वाद दिया कि उसका पुत्र बड़ा ही महान तथा समस्त भू-मण्डल का स्वामी होगा। भगवान चन्द्र ने उसे कालिंजर के निकट 'आस' नामक स्थान में जाने तथा पुत्र की उत्पत्ति के पश्चात केन पार करके चिन्तामणि वैन्य[2] के साथ रहने का आदेश दिया।

भगवान चन्द्र के आदेशानुसार हेमवती काशी से कालिंजर चली गई और वहां पवित्र नदियों में स्नान करती हुई तथा अपने पुत्र के हित की कामना से अनेक देवी-देवताओं का पूजन करती हुई वहां चार माह रही। अन्त में प्रसवकाल समाप्त होने पर वैशाख कृष्ण एकादशी सोमवार संवत 204[3] को केन नदी के तट पर उसने पुत्र को जन्म दिया। भगवान चन्द्र तथा दूसरे देवताओं द्वारा इस महोत्सव को संपन्न किया गया। वृहस्पति ने जन्मांक बनाकर शिशु का नाम चन्द्रवर्मा रखा[4] । सोलह वर्ष की अवस्था में चन्द्रवर्मा ने एक सिंह का वध कर दिया उस समय भगवान चन्द्र ने प्रकट होकर उसे पारस पत्थर दिया तथा राजनीति की शिक्षा दी। इसके बाद चन्द्रवर्मा ने कालिंजर के किले का निर्माण कराया। अपनी मां के कलंक को मिटाने के लिये [5] उसने खजुराहो में एक यज्ञ किया तथा 85 मन्दिरों का निर्माण कराया। अन्त में वह महोबा गया और वहीं अपनी राजधानी बनाई। कई युद्ध करके चन्द्रवर्मा ने अपने राज्य को सुदृढ़ किया। ऐसी जनश्रुति है[6] कि भगवान चन्द्र ने हेमवती को वरदान दिया था कि जब तक

1.इण्डि0 एण्टी0,फरवरी 1873, पृष्ठ-33, आर्क्यो0 सर्वे रिपोर्टस, भाग-2 पृष्ठ-445-46

2.चिन्तामणि वैन्य के वंश बहुत दिनों तक चन्देल नरेशों के दीवान रहे।
 इण्डि0 एण्टी0 फरवरी सन 1873 पृष्ठ-33 ,

3.जनश्रुतियों के आधार पर अन्य संवत 225, 661 व 682 हैं।

4.पर्शियन वंशावली के अनुसार उस शिशु का नाम चन्द्रदेव रखा गया था।

5.आर्क्यो0सर्वे रिपोर्टस भाग-2 पृष्ठ- 446

6.हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ-126

चन्द्रवर्मा के वंशज अपने नाम के साथ ब्रह्म अथवा वर्मन शब्द प्रयुक्त करेंगे, अपवित्रता से बचेंगे, नीच, एकाक्ष तथा कोढ़ी से दूर रहेंगे तथा ब्रह्म वध व शराब का सेवन नहीं करेंगे तब तक उनका राज्य सुदृढ़ रहेगा। कहा जाता है कि उपरोक्त प्रतिबंधों का पालन होने तक यह वंश उत्तरोत्तर प्रगति करता रहा। किन्तु महाराज परमर्दिदेव द्वारा इनका पालन न करने पर चन्देल वंश का पतन हो गया।

डा0 स्मिथ इस कथा को अधिक महत्व नहीं देते उनके अनुसार इस कथा से इस वंश को चन्द्रवंशी राजपूतों में सम्मिलित होने का एक प्रश्रय मिल गया तथा ब्राह्मण पूर्वजा होने के कारण इस वंश के सम्मान में वृद्धि हुई। उनकी राय है कि चन्देलों की उत्पत्ति भर तथा गोंडों से है। चन्देलों तथा गोंडों की कुलदेवी मनियादेवी इन दोनों जातियों में आपस में निकटतम संबंध स्थापित करती हैं मनिया देवी का मन्दिर केन नदी के तट पर प्राचीन मनियागढ़ के भग्न किले में है तथा दूसरा मन्दिर हमीरपुर जनपद के भारेल नामक ग्राम में है। संभवतः यह भारेल भर नरेशों की राजधानी था । इस प्रकार मनिया देवी की उपासना से चन्देल गोंड तथा भरों के सन्निकट आ जाते हैं।

चन्देल तथा गोंडों के वैवाहिक संबंध 16वीं शताब्दी तक पाये गये हैं, चन्देल राजकुमारी दुर्गावती का विवाह गढ़ा मण्डला के गोंड सरदार के साथ हुआ था। श्री चिन्तामणि विनायक वैध के अनुसार चन्देल विशुद्ध चन्द्रवंशी क्षत्रिय हैं[2] उनके अनुसार हूण व कुशाण के आक्रमण के समय चन्देल पंजाब तथा गंगा की घाटी से आकर मनियागढ़ के गोंड देश में आकर बसे व वहां से महोबा गये तथा अपने साथ मनिया देवी की आराधना भी लेते गये[3] किन्तु इस मत को मानने से हेमवती की कथा महत्वहीन हो जाती है।

---

1. इण्डियन एण्टी 1908 पृष्ठ- 136
2. हिस्ट्री आफ मेडीकल इण्डिया भाग-2 पृष्ठ- 131
3. वही

चन्देल काल :

चन्देल शासन काल कब से प्रारंभ हुआ, इस पर निश्चित रूप से कुछ कहना मुश्किल है किन्तु इस वंश के कुछ नरेशों के तिथि युक्त लेखों से इस राज्य के प्रारंभ काल का अनुमान लगाया जा सकता है। खजुराहो जैन शिलालेख से पता चलता है किसन् 954 में धंगदेव राज्य करते थे[1] । धंगदेव 1002 ई0[2] तक जीवित रहे। इस प्रकार उनका राज्यारोहण 950 ई0 के बाद का ही रहा होगा। जनरल कनिंघम के अनुसार भारतीय पीढ़ी लगभग 25 वर्ष की होती है[3] इस प्रकार नन्नुक द्वारा चन्देल शासन का सूत्रपात तथा महोबा नगर की स्थापना लगभग 800ई0 में हुई होगी क्योंकि धंगदेव नन्नुक से 6 पीढ़ियों बाद हुये थे। इस प्रकार अनुमान है कि नन्नुक ने ही चन्देल वंश की स्थापना लगभग सन् 831 में की। हेमवती कथा के अनुसार इस वंश के प्रवर्तक भगवान चन्द के पुत्र चन्द्रवर्मा थे किन्तु किसी भी चन्देल शिलालेख अथवा ताम्रपत्र में उसका उल्लेख न होने से चन्द्रवर्मा की एतिहासिकता संदिग्ध प्रतीत होती है। डा0 हेमचन्द रे ने चन्द्रवर्मा को महाराज नन्नुक का विरूद्ध सूचक शब्द माना है[4] जो चन्देल अभिलेखों के आधार पर उचित लगता है। खजुराहो शिलालेख में वर्णित है कि नन्नुक ने दिग्वधू आननों को अपने पराक्रम रूपी चन्दन से विभूषित किया और इसके सभी शत्रु उसके अभूतपूर्व पराक्रम के समक्ष नतमस्तक थे[5]

1.नन्नुक (सन् 831 - 850 ई0 :

नन्नुक कन्नौज के प्रतिहार नरेश नाभगट्ट द्वितीय का सामन्त था। नागभट्ट की मृत्यु के बाद उसके पुत्र रामभद्र के निर्बल शासन काल में नन्नुक ने विद्रोह का झण्डा गाड़ कर बुन्देलखण्ड का शासन अपने हाथ में लेकर एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। उसका राज्य काल लगभग 831 ई0 से

---

1. इपी0 इण्डि0 भाग-1, पृष्ठ-135-36
2. वही पृष्ठ- 137-147
3. आर्क्यो0 सर्वे रिपोर्ट्स पृष्ठ-446
4. डा0 हिस्ट्री आफ नार्दर्न इण्डिया भाग-2 पृष्ठ- 640
5. इपी0 इण्डि0 भाग-1, पृष्ठ-141 श्लोक-151

850 ई0 तक रहा। उसका राज्य खजुराहो महोबा और इनके निकटवर्ती प्रदेश तक ही सीमित था और बुन्देलखण्ड[1] का अधिकांश भाग कलचुरि राज्य में सम्मिलित था।

2. वाक्पति [लगभग 850-70 ई0] :

नन्नुक की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र व उत्तराधिकारी[2] वाक्पति सन् 850 ई0 के लगभग चन्देल राज्य सिंहासन पर आसीन हुये। उसका राज्यकाल सन् 870 ई0 तक माना जाता है।

3-4. जयशक्ति तथा विजयशक्ति [लगभग 870-90 ई0] :

वाक्पति के पश्चात उसका पुत्र जयशक्ति गद्दी पर बैठा। उसने अपने छोटे भाई विजयशक्ति के साथ चन्देलों के उत्कर्ष में वृद्धि की। चन्देलवंशीय लेखों में इन दोनों भाईयों के वीरतापूर्ण कार्यो का उल्लेख कर उन्हें 'वीर' की उपाधि से सम्मानित किया गया है। इन दोनों भाईयों के अभ्युदयकाल के प्रारंभ होने के पूर्व उनके पिता वाक्पति तथा पितामह नन्नुक की ख्याति लगभग समाप्त हो चली थी। इस कारण खजुराहो के दो शिलालेखों के अतिरिक्त अन्य अभिलेखों में यही दोनों भाई चन्देलवंश के आदि पुरूष माने जाते हैं। शिलालेखों में जयशक्ति, जेजा अथवा जेजाक का उल्लेख नहीं मिलता। यद्यपि उनके नाम पर ही बुन्देलखण्ड प्रदेश पहले जेजा भुक्ति अथवा जेजाक भुक्ति कहलाया। जयशक्ति के नाम का उल्लेख न होने का कारण संभवतः उसका राजनीति से विश्राम लेना रहा हो अथवा अनेक प्रतिहार युद्धों में भाग लेने के कारण उसकी अकाल में ही मृत्यु हो गयी हो। शायद इसी कारण से हमीरपुर जनपद सहित बुन्देलखण्ड का समस्त भूभाग पहले जेजाभुक्ति[3] अथवा जेजाक भुक्ति कहलाया। जय शक्ति के अकाल मृत्यु होने की संभावना इस तथ्य से भी प्रमाणित होती है कि उसके पश्चात उसका पुत्र नहीं बल्कि उसका भाई चन्देल नरेश बना।

---

1. डा0 हिस्ट्री आफ नार्दर्न इण्डिया भाग-2 पृष्ठ-740
2. इपी0 इण्डि0 भाग-1 पृष्ठ 137 श्लोक 16-17
3. जेजा-इपी0इण्डि0 भाग-1 पृष्ठ-221,श्लोक-10 जेजाक-वही, पृष्ठ-122 पंक्ति6, जेजा भुक्ति-वही पृष्ठ- 221, श्लोक-18, जेजाक भुक्ति-आ0स0 सर्वे0 रिपोर्ट्स,भाग-10 पंक्ति 2,3

5. राहिल : (लगभग 890-910 ई0)

विजयशक्ति के पुत्र व उत्तराधिकारी राहिल के शासन से चन्देल राज्य की नींव पड़ती है यद्यपि वह प्रतिहारों का सामन्त था किन्तु उसे कुछ ऐसी सुविधायें उपलब्ध थीं जो उसके पूर्वजों को सुलभ न थीं। वह वीर था जिसकी वीरता का उल्लेख शिलालेखों में है उसने अपने पुत्र हर्ष का विवाह शाकम्भरी की चौहान राजकुमारी कंचुका से व पुत्री भट्ट देवी (नन्दा देवी) का विवाह कलचुरि नरेश काकल्ल प्रथम[1] से किया।

अपनी स्थिति को मजबूत करके राहिल[2] ने अपने अधिनायक प्रतिहार नरेशों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया किन्तु उसे जीत के स्थान पर अपने द्वारा बनवाये गये अजयगढ़ दुर्ग से भी हाथ धोना पड़ा क्योंकि वह प्रतिहार सेना का सामना न कर सका। अन्त में उसके संबंधी कलचुरि नरेश कोकल्ल प्रथम ने उसके भय का निवारण किया[3] इसके पश्चात राहिल द्वारा नगरों की स्थापना, दुर्ग, मंदिर व तालाबों का निर्माण कराने[4] जैसे जनोपयोगी कार्य किये गये। उसने राहिल नगर तथा रसिन की स्थापना की। राहिल नगर महोबा के पास बसाया गया था जिसके आजकल केवल ध्वंशावशेष हैं। रसिन, कालिंजर से लगभग 20 मील दूर बांदा जिले में है जो उन दिनों संस्कृत विद्या का केन्द्र व अनेक मंदिरों व तालाबों से सुसज्जित परकोटायुक्त प्रसिद्ध नगर था महाकवि चन्द ने इस नगर की प्रशंसा करते हुये राहिल को ही इसका संस्थापक माना है[5].

6. हर्षदेव (लगभग 910-30 ई0):

अपने पिता राहिल की भांति ही हर्षदेव एक कुशल शासक था। उसके सिंहासनारूढ़ होने

---

1. इपी0 इण्डि0,भाग-2 पृष्ठ-300 श्लोक 8 आ0स0वि0 भाग-9, पृष्ठ-83
2. इपी0इण्डि0 भाग-1 पृष्ठ-126 श्लोक-22
3. वही भाग-2 पृष्ठ 300 - 306 श्लोक-7
4. आर्क्यो0 सर्वे रिपोर्टस भाग-7 पृष्ठ 226 भाग-21 पृष्ठ 15-17
5. वही

से चन्देल इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। खजुराहो शिलालेख में उसका वर्णन कूटनीतिज्ञ विजेता के रूप में है[1] इस शिलालेख के 25वें से 28वें श्लोक में यह निर्देश है कि उसने अपने शत्रुओं को क्रमशः नष्ट करके[2] समुद्र परिखा पृथ्वी का विजय किया था[3] । धंगदेव के खजुराहो शिलालेख से भी स्पष्ट है कि वह अपनी शक्ति का उपयोग जनहित के कार्यो में करता था वह सत्यवादी तथा धार्मिक था। दुष्टों को दण्ड देना तथा उन्हें सद्मार्ग पर लाना उसका नियम था। ननमौरा लेख में उसे आश्रितों का कल्पवृक्ष सज्जनों का आनन्द कन्द तथा मित्रों का अमृत कहा गया है[4] ।

7. यशोवर्मन (लगभग 930-50 ई0):

सातवां चन्देल राजा यशोवर्मन, लक्षवर्मन भी कहलाता था[5] जिसने लगभग 930 से 950 ई0 तक राज्य किया। यशोवर्मन ने गौड, खस, कश्मीर, कौशल, मिथला,मालवा, चेंदि व गुर्जरों से युद्ध कर सफलता प्राप्त की उसने कालिंजर के किले को भी जीता। विक्रमीय संवत 1011 के खजुराहो शिलालेख के अनुसार यशोवर्मन का राज्य हिमालय से मालवा तथा कश्मीर से बंगाल तक फैला हुआ था। यह पराक्रमी नरेश बड़ा धर्मात्मा था। उसने मंदिर तथा तालाबों का निर्माण कराया[6] ।

8. धंगदेव (लगभग 950-1002 ई0):

यशोवर्मा के पुत्र व उत्तराधिकारी धंगदेव सन् 954 ई0 के कुछ ही पूर्व सिंहासन पर बैठे उसके राज्यकाल की सर्वप्रथम तिथि संवत 1011 वि0[7] है जिसका उल्लेख खजुराहो के लक्षमणनाथ मंदिर के

---

1. इपी0 इण्डि0 भाग-1 पृष्ठ 121 श्लोक 17
2. वही
3. वही श्लोक-27
4. इण्डि0 एण्टी0, 1887 पृष्ट 203
5. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ 128
6. इपी0 इण्डि0 भाग-2 पृष्ठ 134 व 139 श्लोक 451
7. इण्डि0 एण्टी0 भाग-28 पृष्ठ- 236-237

शिलालेख में है खजुराहो के विश्वनाथ मंदिर के शिलालेख के अनुसार उसके शासन की अंतिम तिथि सम्वत 1059 ई0 अथवा 1001-2 ई0 है[1] । इस शिलालेख में प्रयाग संगम पर धंगदेव की जल समाधि का उल्लेख किया गया है। इस शिलालेख के अनुसार धंगदेव ने अपने पराक्रम से कौतुक में ही कालिंजर से मालव नदी तटवर्ती भास्वत तक राज्य विस्तार किया वहां से कालिन्दी नदी तक और फिर वहां से चेदि देश की सीमा पर्यन्त तथा उत्कृष्ट संगमरमर के प्राप्ति स्थान गोप पर्वत तक राज्य विस्तार किया[2] धंगदेव केवल वीर ही नहीं था धार्मिक कार्यो के सुसम्पादन में भी निपुण था सं0 1055 वि0 के उसके ताम्रपत्र में उल्लेख है कि उसने चन्द्रग्रहण के अवसर पर वाराणसी में ग्रामदान किया था[3] ।

9. गण्डदेव (सन् 1003 से 1025 ई0तक):

लगभग आधी शताब्दी तक धंग के राज्य करने व प्रयाग में जलसमाधि के पश्चात उसका पुत्र गण्डदेव लगभग 1003ई0 में सिंहासन पर बैठा उसने लगभग 1003 ई0 से 1025 ई0 तक राज्य किया[4] इस नरेश के कोई शिलालेख प्राप्त नहीं हैं किंतुउसके परवती नरेशों के प्राप्त शिलालेख उसके गौरव पर प्रकाश डालते हैं। सन 1097 ई0 के ध्वस्त शिलालेख में गण्ड को एक अद्वितीय वीर कहा गया है जिसने अपने बाहुबल से समस्त भूमण्डल को अपने वश में कर लिया था[5] मदनवर्मन के मऊ शिलालेख के अनुसार 'वही पृथ्वी का शासक तथा शत्रुदलन में दक्ष था। शत्रुओं के मद को चूर्ण करने के लिये उसके बाहुयुगल अति भयंकर थे'[6] ।

1.इपी0 इण्डि0 भाग-1 पृष्ठ- 137 पंक्ति 32-33
2. वही, पृष्ठ- 134 श्लोक- 45
3. वही , पृष्ठ - 137 श्लोक 48-54
4.ब्रिग्स : अनुवाद 56 टी0रा0 भाग-1 पृष्ठ-65
5.इपी0 इण्डि0 भाग -1 पृष्ठ-219 ,221, 222 श्लोक-19
6.वही पृष्ठ- 197, 203 श्लोक-4

10. विद्याधर (लगभगसन् 1025-1035 ई0):

विद्याधरनेअपने पिता गण्डदेव से उत्तराधिकार में राज्य प्राप्त किया एवं लगभग 1025 ई0 के आस पास सिंहासन पर बैठा और लगभग 1035 ई0 में उसकी मृत्यु हुई वह एक महान योद्धा तथा कुशल शासक था। अनेक नरेश उसके युगल चरणों में नतमस्तक होते थे[1] उसके राज्य नें चन्देल राज्य की महत्ता उन्नति के शिखर पर पहुंच गयी।

11. विजयपाल (लगभग सन् 1035-1045 ई0):

विद्याधर की मृत्यु के बाद सन् 1035 ई0 के लगभग विजयपाल चन्देल राज सिंहासन पर बैठा। लगभग 10 वर्ष तक शासन करने के पश्चात लगभग 1045 ई0 मे उसकी मृत्यु हुई। उसका शासनकाल महत्वपूर्ण नहीं रहा। उसके दो पुत्र थे और शिलालेखों के अनुसार उसकी महारानी भुवनदेवीथी।[2]

12. देववर्मन (लगभग 1045-1060 ई0):

इस नरेश का अस्तित्व हमीरपुर जनपद के पनवाडी जैतपुर परगने से प्राप्त उसके ननपौरा ताम्रलेख से ज्ञात होता है । इस लेख में देववर्मन का उल्लेख किया गया है[3] इसे सं0 1107 वि0 में राजमाता भुवनदेवी के साम्वत्सरिक श्राद्ध के अवसर पर सुहावस राज्यावास से प्रसारित किया गया था। चन्देल राज वंशावली में देववर्मन के नाम का उल्लेख नहीं है इसका कारण संभवतः यह था कि देववर्मन की मृत्यु के पश्चात उसके पुत्र ने नहीं बल्कि उसके छोटे भाई कीर्तिवर्मन ने उत्तराधिकार प्राप्त किया। बाद में कीर्तिवर्मन के पुत्र एवं उत्तराधिकारियों द्वारा चन्देल राज वंशावली में उसका उल्लेख नहीं किया गया[4] ।

1.इण्डि0 एण्टी0 भाग-18 पृष्ठ-237 श्लोक-1

2. वही , भाग-18 पृष्ठ 210

3. वही

4.डा0 हि0 आफ ना0 इ0 भाग-2 पृष्ठ-695

13. कीर्तिवर्मन देव (लगभग सन् 1060-1100 ई0):

कालिंजर शिलालेख में एक अज्ञात नाम चन्देल युवराज का उल्लेख हुआ है जिसने कलचुरि नरेश लक्ष्मीकर्ण के असंख्य सैन्यबल को पराजित किया[1] यह राजकुमार देववर्मन का पुत्र था। शायद कलचुरियों के युद्ध में उसकी मृत्यु हो जाने तथा देववर्मन के कोई योग्य उत्तराधिकारी न होने से उसके अनुज कीर्तिवर्मन ने राज्य की सत्ता अपने हाथ मे ले ली थी। चन्देल राज्य लक्ष्मी को सकल सामन्त चक्र चूडामणि गोपाल के सहयोग से प्रतिष्ठित करने के पश्चात उसने लम्बे समय तक शान्तिपूर्ण राज्य किया। उसने अनेक निर्माण कार्य कराये जिनमें महोबा का कीर्तिसागर विशेष उल्लेखनीय है[2] उसने चन्देरी नामक नगर की भी स्थापना की[3] जनरल कनिंघम के अनुसार महोबा में जिस शैव मंदिर का ध्वंशावशेष मिला है उसका निर्माण कीर्तिवर्मन के शासनकाल मे ही हुआ था[4] । देवगढ शिलालेख भी कीर्तिगिरि (देवगढ का किला) के निर्माण का उल्लेख करता है[5] इस दुर्ग का निर्माण उसके मंत्री वत्सराज की देखरेख में संपन्न हुआ था। डा0 स्मिथ के अनुसार कीर्तिवर्मन द्वारा कालिंजर तथा अजयगढ़ में अनेक भवनों का निर्माण कराया गया[6] ।

14. सलक्षण वर्मन (लगभम सन् 1100 से 1110 ई0):

कीर्तिवर्मनकी मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी सलक्षणवर्मन सिंहासन पर बैठा। उसके द्वारा सोने व तांबे के सिक्के चलवाये गये जिन्हें 'ड्रम्म' कहते हैं। सोने के ड्रम्म में एक ओर चतुर्भुजी

---

1. जे0 ए0 एस0 बी0, 1848 पृष्ठ- 317-319 पंक्ति-7

2. आर्क्यो0 सर्वे0 रि0 भाग-2 पृष्ठ-453

3. वही

4. वही पृष्ठ- 441

5. इण्डि0 एण्टी0 भाग- 18 पृष्ठ 237

6. वही 1908, पृष्ठ-134

देवी की मूर्ति है जबकि तांबे के ड्रम्म में छत्रधारी हनुमान जी की मूर्ति है[1] सिक्कों में इस नरेश का नाम हलक्षणवर्मन लिखा है[2] जबकि शिलालेखों में इसे सलक्षणवर्मन कहा गया है[3] इसने अपने पिता से प्राप्त राज्य को और विस्तृत किया। उसने चेदि , मालव और कन्नौज को विजय करके चन्देल प्रतिष्ठा को बढ़ाया ।

15. जयवर्मन (लगभग सन् 1100-1120 ई0):

सलक्षणवर्मन के पश्चात उसका पुत्र जयवर्मन राज्य सिंहासन पर बैठा। इसका अस्तित्व उसके सिक्कों व शिलालेखों से पता चलता है। वीरवर्मन के काल के अजयगढ़ शिलालेख से पता चलता है कि सलक्षणवर्मन के पश्चात जयवर्मन ने शासन किया[4] । उसके द्वारा सन् 1116 में धंगदेव के खजुराहो शिलालेख का मरम्मत करवाई गई तथा पूर्वजों द्वारा बनवाये गये अनेक मंदिरों व तालाबों का जीर्णोद्धार कराया गया।

16. पृथ्वीवर्मन (लगभग सन् 1120-28 ई0):

सम्भवतः जयवर्मन के कोई पुत्र नहीं था[5] वह शासन के शुद्ध वातावरण से भी विचलित था। इस कारण जयवर्मन ने राज्य त्याग दिया और अपने पितृव्य पृथ्वीवर्मन को राजा बनाया। वह धार्मिक विचारधारा का था और शान्ति की खोज के लिये उसने राजकाज से विश्राम ले लिया था।

17. मदनवर्मन (लगभग 1128-1164 ई0):

पृथ्वीवर्मन के पश्चात उसका पुत्र व उत्तराधिकारी मदनवर्मन सिंहासन पर बैठा सन् 1129 ई0 में उत्कीर्ण किया गया कालिंजर स्तम्भ लेख उसके राज्यकाल का प्रथम अभिलेख है इसके शासन की

---

1. जी0एम0आई0 पृष्ठ-79 संख्या-14-16, प्लेट-8 आर्क्यो0सर्वे0रि0 भाग-2 पृष्ठ-458-9, भज्ञग-10 पृष्ठ-26 प्लेट 10 नं0 6 जी0 7 जी0 8 जी0
2. वही
3. आर्क्यो0 सर्वे0 रि0 भाग-21 पृष्ठ- 185
4. इपी0 इण्डि0 भाग-1 पृष्ठ-327 श्लोक-4
5. जे0 ए0 एस0 बी0 1848 भाग-1 पृष्ठ- 318-19 श्लोक-8

अंतिम तिथि वि0 1230 या 1163ई0 के महोबा जैन मूर्ति में अभिलेख उपलब्ध है इसके आधार पर इसका शासन सन् 1128 ई0 से 1164 ई0 तक का माना गया है। मदन वर्मन को चन्देल वंश का एक शानदार नरेश माना जाता है। चन्देल वंश के अनेक शिलालेखों में इसकी प्रशंसा की गई है। औगसी दानलेख में भी इसकी बहुत प्रशंसा की गई है। औगसी दानलेख में यह निर्देश है 'इस संपन्न वंश में अनेक योद्धा हुये जिन्होंने अपने पराक्रम व विजयों से पराजित शत्रुओं के गौरव से अपनी श्री वृद्धि की। इसी वंश में महाराजाधिराज परम माहेश्वर कालिंजराधिपति मदनवर्मन हुये। वह एक महान विजेता था जिसने अपने पराक्रम से अपने शत्रुओं के दिल दहला दिये थे। वह दुर्जेय था। उसने पृथ्वी को कंटक रहित करके कुलवधू की भांति उसकी रक्षा की।'

18. यशोवर्मन द्वितीय (लगभग सन् 1164-65 ई0):

मदनवर्मन के उत्तराधिकारी के संबंध में बहुत मतभेद हैं किंतु वघरी लेख[1] से स्पष्ट है कि यशोवर्मन मदनवर्मन का पुत्र व परमर्दिदेव का पिता था तथा उसने राज्य भी किया था। वघरी लेख में उल्लेख है 'जिस भांति माहेश्वरचन्द्र का प्रादुर्भाव सागर से हुआ वैसे ही मदनवर्मन से यशोवर्मन का जन्म हुआ। वह नृपकुल भूषण तथा सर्वजनरंजन था। उसकी कीर्ति त्रिलोक में व्याप्त थी[2] ।

19. परमर्दिदेव (लगभग सन् 1165-1203 ई0):

मदनवर्मन के पश्चात उसका पुत्र परमर्दिदेव राज सिंहासन पर बैठा । सेमरा लेख के अनुसार उसने विक्रमाब्द 1223 अथवा सन् 1166[3] के पूर्व तथा विक्रमाब्द 1220 अथवा सन् 1163 ई0[4] के पश्चात शासन सूत्र सम्हाला तथा सन् 599हि0 अर्थात 1202-3 ई0 तक राज्य किया।

---

1. इपी0 इण्डि0 भाग-1 पृष्ठ-207-214 यह लेख वटेश्वर लेख के नाम से भी प्रसिद्ध है।

2. वही पृष्ठ-212 श्लोक 8-9

3. इपी0 इण्डि0 भाग-4 पृष्ठ- 153-70

4. आर्क्यो0 स0रि0 भाग-2 पृष्ठ-448 संख्या-25

जनश्रुतियों तथा शिलालेखों में परमर्दिदेव की बहुत प्रशंसा की गई है उसने अपने राज्य का विस्तार किया और चन्देल वंश की प्रतिष्ठा को बढ़ाया। किन्तु उसे उस समय की दो महान शक्तियों चह्वानों तथा तुर्कों से युद्ध करना पड़ा लगभग सन् 1182 ई0 के आसपास उरई से 14 मील पश्चिम में अकोरी ग्राम के निकट चन्देल - चह्वान युद्ध हुआ जिसमें चन्देलों के कई किले छिन गये एवं आल्हा ऊदल जैसे महारथियों को युद्ध में मुंह की खानी पड़ी। ऊदल मारा गया तथा आल्हा युद्ध से परामुख होकर जंगलों में चला गया। इस विजय का वर्णन सन् 1182 ई0 के मदनपुर लेख में है[1] परमर्दिदेव ने कालिंजर के किले में शरण ली उसे भी अंत में चह्चानों द्वारा घेर लिया गया जिससे परमर्दिदेव को बाध्य होकर संधि करनी पड़ी। उसके राज्य का कुछ भाग दिल्ली राज्य में चला गया। चन्देल राज्य की सीमा सिमटकर पश्चिम में धसान नदी तथा दक्षिण में बिजावर व पन्ना की पहाड़ियों तक रह गई[2] पुनः संवत 569 हि0 अर्थात 1202 ई0 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने आक्रमण किया। इस युद्ध में अपनी पराजय देखकर परमर्दिदेव ने अधीनता स्वीकार कर संधि कर ली किंतु संधि की शर्तो के पालन के पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गयी। इस युद्ध से चन्देल राज्य छिन्न भिन्न हो गया। हसन निजामी (सन् 1205-10 ई0) में अपने अपने ताज उल मर्दार में परमर्दिदेव परकुतुबुद्दीन के आक्रमण का विस्तृत वर्णन किया है।

कार्य : रासो में यह उल्लेख किया गया है कि पृथ्वीराज द्वारा अपनी पराजय होने के कारण लज्जा से भरे परमर्दिदेव ने रानी मल्हना देवी की सलाह पर गया में अपना शरीर त्याग दिया। किंतु यह वर्णन सत्य प्रतीत नहीं होता । कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा अपनी अंतिम पराजय तक परमर्दिदेव अपने पूर्ण वैभव से शासन करता रहा। विक्रमाब्द 1258 अथवा 1201 ई0 के खजुराहो लेख में परमर्दिदेव जिसे परमाल के नाम से भी जाना जाता है की बड़ी प्रशंसा की गई है उसके अनुसार 'वह एक महान राजा था। उसने मधु तथा दधि के घूंट की भांति शत्रु राजाओं के धवल यश का पान कर उन्हें अपना करद बना लिया और बिना

---

1. आर्क्यो0 स0रि0 भाग-10 पृष्ठ-98

2. वही भाग -21 पृष्ठ - 86

प्रतिरोध के उसने पृथ्वी का वरण किया।'[1] विक्रमाब्द 1352 अर्थात 1195 ई0 के वटेश्वर लेख में भी परमर्दिदेव की प्रशंसा की गई है।

परमर्दिदेव के राज्य काल में स्थापत्यकला तथा ललितकलाओं की पर्याप्त उन्नति हुई। इस युग में अनेक तालाब, मंदिर, बैठक तथा चबूतरों का निर्माण हुआ। अजयगढ़ दुर्ग के दक्षिणी किनारे में परमाल ताल बना हुआ है तथा एक मंदिर भी है जिसे परमर्दिदेव द्वारा बनवाया हुआ ही बताया जाता है।[2]

20. त्रैलोक्य वर्मन (लगभग सन् 1204-42 ई0):

लगभग सन् 1204 ई0 में त्रैलोक्यवर्मन के हाथ में सत्ता आई। गर्रा लेख[3] में उल्लेख है कि कालिंजर युद्ध के पश्चात त्रैलोक्यवर्मन ने शीघ्र ही अपनी शक्ति संगठित की। पश्चिमी बुन्देलखण्ड तक उसने मुस्लिम आक्रमणकारियों का पीछा कर उन्हे पराजित किया तथा अपने मूल राज्य के पश्चिमी व अन्य भागों में चन्देल सत्ता स्थापित की। उसने कालिंजर दुर्ग भी जीत लिया और कालिंजराधिपति की उपाधि धारण की।[4]

21. वीरवर्मन (लगभग सन् 1242-86 ई0):

त्रैलोक्यवर्मन के पश्चात उसका पुत्र वीरवर्मन लगभग 1242 ई0 में सिंहासन पर बैठा। उसके राज्यकाल की अंतिम तिथि गुढ़ा सती शिलालेख[5] में विक्रमाब्द 1342 अथवासन् 1286 ई0 की है। वह बड़ा सुशिक्षित तथा वेदों में पारंगत था[6] कालिंजर शिलालेख के अनुसार वह विद्वानों के हृदय में अपनी विद्वत्ता से प्रसन्नता का उद्रेक करता था[7]

----

1. आर्क्यो0स0रि0 भाग-21 पृष्ठ-37 श्लोक-25

2. चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास डा0 अयोध्याप्रसाद, पृष्ठ-103

3. इपी0 इण्डि0 भाग-16 पृष्ठ-272

4. वही पृष्ठ 172

5. गुढ़ा सती शिलालेख इपी0 इण्डि0 भाग-5 परिशिष्ट पृष्ठ-35 संख्या 242

6. आर्क्यो0 स0 रि0 भाग-21 पृष्ठ-74

7. वही पृष्ठ - 39

उसने अनेक मंदिर , उद्यान, तड़ाग तथा बावड़ियों का निर्माण कराया। वीरवर्मन के समान ही उसकी रानी कल्याण देवी भी बड़ी धर्मात्मा थी। कालिंजर शिलालेख के अनुसार उसने ब्राह्मणों के लिये अमृतकूप (जिसे अब गंगा-जमुना तालाब कहते हैं) का निर्माण कराया एवं अनेक मंदिर बनवाये[1] ।

22. भोजवर्मन (लगभग सन् 1286-1290 ई0):

विक्रमाब्द 1345 अथवा सन् 1288 ई0 के लगभग भोजवर्मन के सिंहासन पर बैठने का वर्णन उसके उसी वर्ष के प्रथम तिथि युक्त लेख से प्राप्त होता है। इस शासक की बहुत कम ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त है।

23. हम्मीरवर्मन (लगभग सन् 1290-1315 ई0)

बम्हनी में प्राप्त हुये सती स्तम्भ के लेख में उल्लेख है कि दमोह व जबलपुर जनपदों के कुछ भागों में महाराज पुत्र बाघदेव का राज्य था और वह हम्मीरदेव का करद था। यह लेख निम्न प्रकार है- 'परम भट्टार केनाधिराज वलिप्रोपेता कालिंजराधिपति श्रीमन हम्मीरवर्मन देव विजय राज्य सम्वत 1665 समये महाराज पुत्र श्री बाघदेव भुजयमामे. . .।[2]

24. शशांक भूप (लगभग सन् 1315-1351 ई0):

विक्रमाब्द 1408 या सन् 1351 ई0 का एक लेख कालिंजर से 24 मील दक्षिण पूर्व रायपुर नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जिसमें शशांक भूप का उल्लेख है इस शिलालेख[3] को शशांक भूप ने उत्कीर्ण कराया था।

25. भीमदेव (लगभग सन् 1351-1376ई0):

अजयगढ़ के निकट बचांव नामक स्थान में में विक्रमाब्द 1433 अथवा सन् 1376 ई0 के

---

1. आर्क्यो0 स0रि0 भाग-21 पृष्ठ-51
2. इपी0इण्डि0 भाग-16 पृष्ठ-10 टिप्पणी - 4
3. आर्क्यो0 स0 रि0 भाग-21 पृष्ठ-88

प्राप्त शिलालेख[1] में भीमदेव के नाम का उल्लेख किया गया है। जनरल कनिंघम के अनुसार वह चन्देलवंशीय है।

26. परमर्दि अथवा परमाल द्वितीय (लगभग सन् 1376-1428 ई0)

बांदा जनपद के अंतर्गत रसिन नामक स्थान में विक्रमाब्द 1466 अथवा सन् 1409 ई0 के प्राप्त लेख में परमर्दि राजा का उल्लेख किया गया है[2] जनरल कनिंघम के अनुसार वह चन्देलवंशीय था।[3]

27. कीरतपाल :

परमर्दि द्वितीय के पश्चात से सन् 1445ई0 के शेरशाह के आक्रमण तक चन्देल वंश के किसी राजा का कोई लेख प्राप्त नहीं है शेरशाह के आक्रमण के समय कालिंजर में कीरतपाल राज्य करता था। कीरतपाल ने शेरशाह से बड़ा मुकाबला किया किन्तु पराजित हो गया और अन्त में शेरशाह ने उसका वध कर दिया। शेरशाह ने कालिंजर पर विजय तो प्राप्त की किंतु वह भी शासन न कर सका। कालिंजर के किले में बारूदखाने में लगी आग से उसकी मृत्यु हो गयी। इस अव्यवस्था का लाभ उठाकर कीरतपाल के उत्तराधिकारी ने पुनः कालिंजर को मुगलों से छीन लिया। इसका कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है किन्तु सन् 1569 ई0 में अकबर की कालिंजर विजय से इस मत की पुष्टि होती है। अकबर की कालिंजर विजय से ही चन्देल राज्य हमेशा के लिये समाप्त हो गया[4] ।

किन्तु हमीरपुर गजेटियर 1909 के अनुसार सन् 1203 ई0 में परमाल की मृत्यु तथा महोबा व कालिंजर में मुगलों के अधिकार के साथ ही उत्तर भारत की शक्ति चन्देल राज्य का अन्त हो गया। यद्यपि कुछ समय बाद चन्देल राज्य के उत्तराधिकारी द्वारा पुनः कालिंजर के किले पर अधिकार कर लिया किंतु वे खजुराहो के आसपास के क्षेत्र के शासक बनकर ही रह गये। अन्ति रोमांचक इतिहास

---

1. आर्क्यो0 स0 रि0 भाग-21 पृष्ठ-55
2. वही पृष्ठ-18
3. वही पृष्ठ-89
4. चन्देलकालीन बुन्देखण्ड का इतिहास- डा0 अयोध्याप्रसाद पृष्ठ-126

राजकुमारी दुर्गावती का मिलता है जिसे महोबा के चन्देल राजा की पुत्री कहा जाता है किन्तु अधिक संभावना यह है कि वह कालिंजर के अंतिम राजा कीरतराय की पुत्री थी जिसका शेरशाह द्वारा सन् 1545 ई0 मे वध कर दिया गया। दुर्गावती का विवाह मण्डला के गोंड राजा दलपत शाह के साथ हुआ था जिसकी मृत्यु सन् 1564 ई0 में आसफ खान के साथ युद्ध करते हुये हुई।[1]

जनपद का 13वीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं व 16वीं शताब्दी का इतिहास स्पष्ट नहीं है किन्तु स्थानीय परम्परागत कथा के अनुसार शहबुद्दीन ने महोबा को समरजीत से छीनकर तोरासुबा को सौंप दिया जिसने 50 वर्ष तक शासन किया। उसका शासन सफल न था। उसने इसे मेवातियों को सौंप दिया जिन्होंने 40 वर्ष तक शासन किया। मेवातियों को गोंड शासकों द्वारा खदेड़कर 14 वर्ष तक शासन किया गया। तत्पश्चात बनारस के मन्मथ गहरवार द्वारा 100 वर्ष तक शासन किया गया। इसके पश्चात उज्जैन के राजा अजयपाल और भर तथा अन्य जो एक से बढ़कर एक जोगी व जादूगर थे, इस जनपद में आये। अजयपाल ने अजमेर को जीता तथा राजा भर ने महोबा पर शासन किया। भर राजा जिसका कीरतसिंह जू या कीरत पाल के नाम से उल्लेख है,उसने इस जनपद व कालपी पर शासन किया। इस शासक का मलिक हसन शाह नामक मुसलमान संत द्वारा वध किया गया जिसे अरब के राजा द्वारा भेजा गया था। तत्पश्चात गढ़ कुड़ार के खंगार शासकों का भी शासन हुआ। किन्तु यह अधिक समय तक न रह सका और अर्जुनपाल या सोहनपाल बुन्देला के विश्वासघात से इसका लगभग 1340 ई0 में अन्त हो गया।[2]

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 134-135

2. वही पृष्ठ - 136-137

चन्देल वंशावली

नन्नुक (लगभग सन् 830-850 ई0)

|

वाक्पति (लगभग 850-870 ई0)

|

- जयशक्ति (जैजा)
- विजयशक्ति (लगभग सन् 870-890 ई0)
  - राहिल (लगभग सन् 890-910 ई0)
  - हर्ष (लगभग सन् 910-930 ई0) = कंचुका
  - यशोवर्मन (लगभग सन् 930-950ई0) = पूपा अथवा पुष्पा तथा नगदिवी
  - धंगदेव (लगभग सन् 950-1003 ई0)
  - गंडदेव (लगभग सन् 1003-1025 ई0)
  - विद्याधर (लगभग सन् 1025-1035 ई0)
  - विजयपाल (लगभग सन् 1035-1045 ई0)
    - देववर्मा (लगभग सन् 1045-1060ई0)
    - कीर्तिवर्मा (लगभग सन् 1060-1110ई0)
      - सलक्षणवर्मा (लगभग सन् 1100-1110ई0)
        - जयवर्मा (लगभगसन् 1110-1120ई0)
      - पृथ्वीवर्मा (लगभग सन् 1120-1128 ई0)
        - मदनवर्मा (लगभग सन् 1128-1164 ई0)
        - यशोवर्मा द्वितीय (लगभग सन् 1164-1165ई0)
        - परमर्दिदेव (लगभग सन् 1165-1203ई0)
        - त्रैलोक्यवर्मा (लगभग सन् 1203-1242 ई0)
        - वीरवर्मा (लगभग 1242-1268ई0) = कल्याणीदेवी
        - भोजवर्मा (लगभग सन् 1286 ई0)
        - हरिवर्मा (लगभग सन् 1286-1315 ई0)
        - शशांक(लगभग सन् 1315-1351ई0)
        - भीमदेव (लगभग सन् 1351-1376ई0)
        - परगाल (लगभग सन् 1376ई0)
        - कीरतपाल (सन् 1545 ई0)

बुन्देलों का आगमनः

सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ के पूर्व बुन्देला देश की महत्वपूर्ण शक्ति नहीं बन सके थे। जिस समय दिल्ली के शासक सिंहासन के लिये आपस में लड़ रहे थे, बुन्देलों ने देश भर में अपनी शक्ति बढ़ाने में उस समय का उपयोग किया। सन् 1531 ई0 में सोहनपाल बुन्देला से सातवें उत्तराधिकारी रूद्रप्रताप ने ओरछा नगर की स्थाना की। इस समय बुन्देला शक्ति का वास्तविक प्रसार ज्ञात नहीं है किन्तु कहा जाता है कि या तो रूद्रप्रताप के जीवनकाल मे ही या उसके बाद उसके तीसरे पुत्र उदयजीत ने महोबा पर अधिकार किया। परिणामस्परूप इस जनपद का दक्षिणी भाग बुन्देला शासन के अधीन हो गया। बेतवा व धसान नदियों के पश्चिम में बुन्देला व राज्य की सेनाओं में युद्ध हुये किन्तु राजा रामचन्द्र बघेल द्वारा सन् 1560ई0 में कालिंजर के किले के समर्पण के साथ बांदा तथा जालोन के समान संपूर्ण हमीरपुर जनपद बुन्देलों के शासनान्तर्गत आ गया। [1]

अकबर कालीन राज्य व्यवस्थाः

अकबर के शासन काल में राज्य व्यवस्था के अंतर्गत हमीरपुर जनपद को दो सूत्रों में विभाजित किया गया था। जनपद का पश्चिमी भाग महोबा, मुस्करा, मौदहा तथा सुमेरपुर परगना तथा कुछ स्वतंत्र राज्यों का क्षेत्र तीन महाल मौदहा, खरेला (खण्डेह) तथा महोबा में बंटे थे जो कालिंजर सरकार तथा इलाहाबाद सूबा में थे। जनपद का शेष बचा हुआ भाग राठ, खण्डौत, खरेला और हमीरपुर महाल के अंतर्गत था जो आगरा सूबा के कालपी सरकार से संबंधित था। दोनों सूबा सामान्य रूप से बर्मा नदी द्वारा बंटे थे। सबसे बड़ा महाल राठ था जिसका क्षेत्रफल 510970 बीघा था तथा मालगुजारी 9270894 दाम थी[2]

---

1. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ- 138

2. वही पृष्ठ - 139

बुन्देलों का उद्‌भवः

बुन्देलों ने हमीरपुर के दक्षिणी भाग पर अपनी शक्ति कब व कैसे सुदृढ़ की यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। बुन्देलों की शक्ति का प्रधान केन्द्र ओरछा था। महोबा में मुसलमानों का शासन था और परम्परागत कथा के अनुसार रूद्रप्रताप के तृतीय पुत्र उदयजीत ने स्वयं को महोबा में स्थापित किया। उदयजीत और उसके पुत्र व उत्तराधिकारी प्रेमचन्द्र ने मुसलमानों व अपने समीपवर्ती राज्यों के विरूद्ध आक्रमणों में महोबा को अपना मुख्यालय बनाया। प्रेमचन्द्र के तीन पुत्र हुये। कौर सेन जिसे सिमरोहा का संस्थापक माना जाता है, मान साह जो साहपुर में रहा तथा भगवन्त साह जो महेबा मे ही रहा। भगवन्तसाह का पुत्र कुलनन्दन अपनी दया व दान के लिये प्रसिद्ध हुआ जो चम्पतराय का पिता था।[1] चम्पतराय का राज्य विस्तार अज्ञात है। चम्पतराय के पुत्र रतनशाह, अंगदराय व छत्रसाल थे। छत्रसाल ने औरंगजेब की लम्बी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर सन् 1675 ई0 में स्वयं को बुन्देलों के नायक के रूप में स्थापित कर अपनी शक्ति का विस्तार किया। सन् 1680 ई0 में उसने कालिंजर के किले पर अधिाकर किया। जनपद की सीमा के बाहर दूसरे स्थानों के अतिरिक्त उसने जलालपुर मुस्करा और मौदहा को लूटा और बेतवा व कालपी से रीवा तक की सीमा उसके अधिकार में आ गयी। छत्रसाल ने अपने जीवनकाल मे कई महत्वपूर्ण युद्ध जीते।

छत्रसाल के राज्य का विभाजनः

छत्रसाल ने अपनी मृत्यु के पूर्व सन् 1731 ई0 में एक वसीयत की जिसके अनुसार उसने अपने राज्य का एक तिहाई भाग पेशवा बाजीराव को दिया जिसने बंगरू नवाब से बुन्देलों के युद्ध में उसकी सहायता की थी। इसके अनसुार पेशवा को कालपी, हट्टा, सागर, झांसी, सिरोंज कुना, गढ़ाकोटा, हरदीनगर और इस जनपद में महोवा का एक बड़ा परगना मिला। इन क्षेत्रों की मालगुजारी प्रतिवर्ष लगभग

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 141

31 लाख रूपये आंकी गई। शेष राज्य को दो राज्यों में बांट दिया गया। छत्रसाल के सबसे बड़े पुत्र हरदीशाह को कालिंजर एरच व दूसरे स्थानों सहित पन्ना का राज्य मिला और बांदा जनपद का अधिकांश क्षेत्र अजयगढ़ चरखारी और कई अन्य क्षेत्र सहित जैतपुर राज्य 31 लाख की मालगुजारी सहित उसके दूसरे पुत्र जगतराज को दिया गया[1] ।

छत्रसाल के उत्तराधिकारीः

छत्रसाल के द्वितीय पुत्र जगतराज की मृत्यु 1758 ई0 में हुई। तत्पश्चात उसके परिवार में कलह प्रारंभ हो गयी। जगतराज के द्वितीय पुत्र पहाड़सिंह ने स्वयं को राजा घोषित कर दिया। जगत-राज के सबसे बड़े पुत्र कीरत सिंह के पुत्र गुमान सिंह तथा खुमान सिंह अपने पिता की जागीर के अधिकारी थे। किंतु पहाड़ सिंह ने सूपा में उनकी सेनाओं को हराकर यमुना की ओर खदेड़ दिया और उसके बाद जब उन्होने नजफ खान की सहायता प्राप्त की तो पहाड़ सिंह ने पुनः उन्हें खरेला में पराजित किया। यह संघर्ष जैतपुर राज्य के लिये था और अपने पिता की जागीर वे छोड़ना नहीं चाहते थे सन् 1765 ई0 में अपनी मृत्यु के कुछ समय पूर्व्र अपने दादा के राज्य का कुछ भाग अपने भतीजों को देने के लिये तैयार हुआ।
गुमान सिंह बांदा के राजा बने जबकि खुमान सिंह चरखारी के राजा हुये तथा पहाड़ सिंह जैतपुर का शासक रहा जबकि दूसरे पुत्र भान सिंह ने सरीला की जागीर प्राप्त की।[2]

बांदा के राजा गुमान सिंह की मृत्यु सन् 1781 में हुई और वे अपने पीछे एक छोटा पुत्र मधुकर सिंह तथा भतीजे बख्तबली को छोड़ गये जो गुमान सिंह की फौज के सेनापति नौने अर्जुन सिंह के संरक्षण में बड़े हुये। महत्वाकांक्षी नौनेसिंह ने बाद में मौदहा के पास राजा खुमान सिंह पर आक्रमण किया। चन्द्रावल नदी के किनारे पन्डोरी या पडौरी ग्राम पर हुये भयानक युद्ध में राजा खुमान सिंह मारे गये। खुमान सिंह का पुत्र विजयबहादुर दौलतराव सिंधिया के दरबार में भाग गया।

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 147

2. वही पृष्ठ- 148

नवाब अली बहादुर व राजा हिम्मत बहादुर का बुन्देलखण्ड पर आक्रमणः

निरन्तर विनाशकारी संघर्ष ने बुन्देला राज्यों को केवल कमजोर ही नहीं किया बल्कि उनकी एकता भी खण्डित होने लगी जो कुछ वर्षो पहले शुजाउद्दौला के लिये एक अवरोध के रूप में सामने आयी थी और सारा राज्य जो कि बहुत कमजोर व टूट चुका था आसानी से नये आक्रमणकर्ता हिम्मतबहादुर और नवाब अली बहादुर के आक्रमण का शिकार हो गया। हिम्मत बहादुर, राजा इन्दरगिर गोसाईं का चेला और प्रतिनिधि था। नवाब अली बहादुर पेशवा बाजीराव का नाती था। ऐसा विश्वास किया जाता है कि हिम्मतबहादुर ने स्वतंत्र रूप से बुन्देलखण्ड पर आक्रमणकिया और नवाब अली बहादुर के आने के पूर्व स्वयं को स्थापित कर लिया। नवाब अली बहादुर व मराठा सेनाओं की संयुक्त शक्ति ने नौगांव व अजयगढ़ के बीच सन् 1791 ई0 में नौने अर्जुन सिंह को पराजित किया और मार डाला।

हिम्मत बहादुर के नेतृत्व में एक छोटी सेना ने चरखारी के लिये प्रस्थान किया जहां इस पर बिजावर के राजा वीर सिंह देव व उसके चचेरे भाई खुमान सिंह द्वारा आक्रमण किया गया जिसकी इस युद्ध में मृत्यु हो गयी और मराठा सेनापति सुंगाराम ने मौदहा के पास कुनवार सोनीसाह के पुत्र पूरनमल के नेतृत्व में एकत्र हुई सेना को पराजित किया। इससे संपूर्ण चरखारी राज्य मराठों के अधिकार में आ गया। इसके बाद इस जनपद का क्षेत्र हिम्मतबहादुर व नवाब के बीच बंट गया। सन् 1799 ई0 मे नवाव द्वारा अजयगढ़ व जैतपुर में अधिकार किया गया। सन् 1802 ई0 में कालिंजर में अली बहादुर की मृत्यु हो गयी।[1]

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 150

अर्वाचीन

मुगलों का शासन कमजोर होने के साथ ही महोबा में बुन्देलों का धीरे धीरे आधिपत्य हो गया एवं कई शासकों द्वारा शासन किया गया। कुछ समय तक महोबा एवं तत्संबंधित अन्य क्षेत्रों पर मराठों का भी शासन रहा फिर करीब दो सौ वर्षो तक अनेक शासकों द्वारा शासन किया गया। अंग्रेजों के शासन काल में भी कई शासकों द्वारा संधि करके जागीरें प्राप्त की गईं एवं किसी प्रकार सत्ता बनाये रखी गई।

बेसिन संधि:

ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत हमीरपुर का अधिकांश भू भाग 31 दिसंबर सन् 1802 को सम्पन्न हुई बेसिन संधि के फलस्वरूप ईस्ट इण्डिया कंपनी के आधिपत्य में आया था। इस संधि के अनुसार पेशवा ब्रिटिश सेना के रखरखाव के लिये प्रतिवर्ष 27 लाख रूपया राजस्व पर सहमत हो गये[1] एक वर्ष बाद हुई एक और संधि के कारण पेशवा द्वारा 16 दिसंबर सन् 1803 को बुन्देलखण्ड राज्य का अन्य क्षेत्र भी ईस्ट इण्डिया कंपनी को प्रतिवर्ष 36 लाख 16 हजार रूपया राजस्व के बदले में दिया गया[2] सत्तालोलुप राजा हिम्मत बहादुर गोसाई ने इलाहाबाद से 64 किमी0 पश्चिम स्थित शाहपुर नामक स्थान पर ब्रिटिश शासकों से एक गुप्त संधि के अंतर्गत हमीरपुर की पनवाड़ी, राठ, मौदहा व सुमेरपुर की रियासतें प्राप्त की थीं[3] । जनपद का शेष भाग एक आयोग की देखरेख में रहा जिसमें मिस्टर बूक अध्यक्ष और कैप्टन बेली गवर्नर जनरल के प्रतिनिधि थे[4] सारा राज्य अत्यधिक अव्यवस्थित स्थिति में था। नवंबर सन् 1804 में जब कैप्टन बेली ब्रिटिश सेना के हैड क्वार्टर्स से जुड़ गया तो उसने हिम्मत बहादुर को सौंपी गयी रियासतों में से एक में यमुना किनारे पड़ाव डाल दिया। जनपद के दक्षिण में लुटेरों के दल फैले हुये थे जिनके मुख्य नेता

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 152
2. वही
3. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 153
4. वही

गोपाल सिंह, लक्ष्मन सिंह व राजा राम थे। अंग्रेज शासकों द्वारा बुन्देलखण्ड के भीतरी क्षेत्रों में कुछ सैन्य दल भेजे गये और राठ जलालपुर और खरका के कुछ भाग तेज सिंह बुन्देला से जीत लिये गये [1] । पनवाड़ी और सूपा का छोटा परगना ब्रिटिश शासकों के अधिकार में था जबकि शेख कुल अली खान के नेतृत्व में सेना ने जैतपुर का किला ले लिया। अगले वर्ष जैतपुर के राजा गज सिंह के पुत्र केशरी सिंह के राज्य को बावनी (बावन गांव) तक सीमित कर दिया गया और 1805 की संधि के अनुसार महोबा परगना जालौन के सूबेदार के अधिकार में हो गया[2] ।

जनपद का सीमांकन :

वर्ष 1819 तक हमीरपुर नवसृजित बुन्देलखण्ड जिले का एक भाग बना रहा किंतु मार्च 1819 में इस क्षेत्र को दो जनपदों में बांट दिया गया। केन नदी के पश्चिम का भाग उत्तरी बुन्देलखण्ड या कालपी कहलाया और इसके पूर्व का भाग दक्षिणी बुन्देलखण्ड या बांदा कहलाया[3] कालपी जनपद के प्रथम कलेक्टर मिस्टर फोर्ड थे। पहले उन्होंने अपना मुख्यालय कालपी में बनाया जिसको सन् 1821 में हमीरपुर कर दिया गया एक ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलेक्टर तब भी कालपी में ही रहते थे। सन् 1849 में कालपी का अलग कार्यभार हटाकर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट को हमीरपुर में नियुक्त कर दिया गया। सन् 1853 में महोवा व जैतपुर राज्य को नवसृजित जनपद जालौन से अलग करके हमीरपुर से जोड़ दिया गया। जालौन को इसके बदले कोंच व कालपी परगना दिये गये। सन् 1858 में जनपद हमीरपुर को नवसृजित झांसी डिवीजन से जोड़ दिया गया[4] ।

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 153
2. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ-154
3. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ-97
4. वही

स्वतंत्रता आन्दोलन का उद्वेग (विस्फोट):

सन् 1857 के जून माह में जब स्वतंत्रता संघर्ष देश में चरम सीमा पर था, उन दिनों हमीरपुर में अंग्रेज कलेक्टर टी0 के0 लायड का प्रशासन था। हमीरपुर क्षेत्राधिकार वाली 56वीं नेटिव इन्फेन्ट्री फोर्स का मुख्यालय कानपुर भी सैनिक असंतोष से नहीं बच सका था। हमीरपुर की 56वीं नेटिव इन्फेन्ट्री में कुछ 66 व्यक्ति थे। चारों तरफ असंतोष व विद्रोह की खबरें यहां भी पहुंच रही थीं। मिस्टर लायड ने चरखारी, बावनी और बेरी के नायकों से सहायता मांगी और प्रत्येक से एक सौ व्यक्ति तथा एक तोप प्राप्त की और अपनी सेना को मजबूत बनाया जिससे मुख्यालय की रक्षा की जा सके[1] ।

जून के प्रारंभ में मौजा रमेड़ी के ग्रामीणों व स्वतंत्रता सेनानियों ने एक गुप्त सभा करके संघर्ष करने का निर्णय लिया। हमीरपुर जनपद में वास्तविक संघर्ष 13 जून 1857 को प्रारंभ हुआ। उस दिन ट्रेजरी में तैनात सरकारी गार्ड ने विद्रोह कर दिया। कुछ स्वतंत्रता सेनानियों व विद्रोही सिपाहियों ने जेल से कैदी मुक्त कर दिये[2] योरोपीय जो भाग सके, भाग गये जबकि कुछ मार दिये गये । कलेक्टर लायड व ज्वाइण्ट मजिस्ट्रेट डोनाल्ड ग्राण्ट सरसों के खेत में छुप गये। बाद में यमुना की धारा में तैरकर 5 किमी0 दूर बेतवा व यमुना के संगम के पास पहुंच गये। लगभग 5 दिनों तक वे दिन के समय नदी के दलदली कटान में छुपते रहे और रात में किनारे की तरफ आ जाते थे। 13 जून की शाम को कुछ मछुआरों ने लायड व ग्राण्ट के छुपने की जगह खोजकर स्वतंत्रता सेनानियों को बता दिया। स्वतंत्रता सेनानियों की एक टुकड़ी ने वहां पहुंचकर दोनों को पकड़ा और उन्हें हमीरपुर कचेहरी में लाया गया फिर दोनों को कचहरी परिसर में ही गोली मार दी गयी।[3]

इसके पश्चात नगर में बड़े पैमाने पर लूटपाट की गई । सुदूर ग्रामों में भी स्थिति सामान्य से बहुत बाहर हो गयी। सभी तरफ से लोग हमीरपुर पहुंचने लगे। साहूकारों, धनी लोगों व नीलामी ठेकेदारों

1.1.हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ-155

2.वही

3.स्मारिका हमीरपुर महोत्सव 94 पृष्ठ-36

पर हमला बोल दिया गया। 20जून 1857 को नाना साहब की फौज की एक टुकड़ी यहां आ गयी। 21जून 1857 को स्वतंत्रता सेनानियों ने कानपुर की ओर कूच किया। भारतीय डिप्टी कलेक्टर वाहिद उज जमान ने कुछ स्थिति संभालने का प्रयास किया किंतु शीघ्र ही नाना साहब का सन्देश उन्हें मिला कि उनकी तरफ से वह प्रशासन की देखरेख करें। एक जुलाई 1857 को पेशवा राज्य घोषित कर दिया गया और सभी जमींदारों को 4 जुलाई 1857 को आज्ञा दी गई कि वे राजस्व को नाना के स्वीकृत प्रतिनिधियों के पास जमा करें[1]। अधिकांश ग्रामों में नाना साहब का झण्डा फहरा दिया गया इसी बीच 21 व 22 जुलाई को ब्रिटिश सेनाओं ने कानपुर पर पुनः अधिकार कर लिया। इसकी सूचना मिलते ही वाहिद उज जमान मुख्यालय से फरार हो गये। पूरे जनपद में संघर्ष चलता रहा। विदोखर थोक पुरई नामक गांव के जमींदार ने गिरधारी नामक नीलामी ठेकेदार की हत्या कर दी। सुरौली बुजुर्ग के गौर राजपूतों ने यमुना नदी पार कर अंग्रेजों की बंदूकों से भरी एक नाव को लूट लिया। इस जुर्म के कारण अंग्रेजों ने पूरा गांव उजाड़ दिया।[2]

दक्षिण की घटनायें :

महोबा के अंग्रेज प्रभारी अधिकारी कार्ने ने स्थिति की गंभीरता को देखकर चरखारी रियासत में शरण ली तत्कालीन चरखारी राजा द्वारा कार्ने को आदर पूर्वक रखा गया जबकि अंग्रेजों के विरूद्ध व्यापक जन असंतोष था। उसे बाद में राठ, जैतपुर व पनवाड़ी का प्रबंध मिला। मौदहा, बांदा के नवाब के हाथों में था। गुरसराय के राजा जो पुराने जालौन राज्यके दावेदार थे, को परगना महोबा सौंपा गया। मराठों ने परगना जलालपुर हथिया लिया। हमीरपुर परगना बावनी के राजा को सौंपा गया। सुमेरपुर को लूटने के लिये ये सब एक साथ मिल गये थे[3]।

---

1. हमीरपुर गजेटियर वर्ष 1909 भाग-22 पृष्ठ-137
2. स्मारिका हमीरपुर महोत्सव 94 पृष्ठ- 37
3. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग 22 पृष्ठ- 158

महाराजा छत्रसाल के पुत्र परीक्षत जो पहले जैतपुर के राजा थे, की विधवा जो ब्रिटिश सरकार से 1200/-रू0 पेंशन पाती थीं ने देशपत के सहयोग से तहसील ट्रेजरी पर कब्जा करके स्वत्वाधिकार की घोषणा कर दी। चरखारी की सेना उसके प्रतिरोध के लिये भेजी गयी किंतु वह सफल नहीं हो पायी।

कार्न ने व्यक्तिगत प्रभाव डालकर चरखारी के राजा को अंग्रेजों के पक्ष में मिला लिया था इन सभी कारणों से जनवरी 1858 के अंत में नाना साहब ने तात्या टोपे को चरखारी पर आक्रमण करने के लिये भेजा। तात्या टोपे 900 सिपाहियों 200 घुडसवारों और चार तोपों के साथ चरखारी की ओर बढ़ा । तात्या टोपे ने देशपत, दोलत सिंह व बानपुर तथा शाहगढ़ के राजाओं के साथ मिलकर बड़ी सेनाओं के साथ चरखारी के किले को घेर लिया[1] ।

इसी बीच जनरल हिटलाक की फौज 5 मार्च को दमोह पहुंची। ह्यूरोज शीघ्र झांसी पहुंच रहा था। 28मार्च को दोनों अधिकारियों को तुरंत राजा की सहायता को पहुंचने का आदेश मिला। आदेश पाते ही हिटलाक दमोह से चल पड़ा। लगभग ग्यारह दिनों के घेरे व संघर्ष के बाद चरखारी पर तात्या टोपे ने अधिकार कर लिया। जनरल हिटलाक 9 अप्रैल 1857 को छतरपुर होते हुये महोबा की ओर बढ़ा किन्तु चरखारी की हार की सूचना गुप्त रूप से प्राप्त हो जाने के कारण वह बांदा की ओर चल दिया[2] ।

इसी बीच बांदा के नवाब ने फौज की कुछ टुकड़ियां ब्रिटिश सेना को रोकने के लिये महोबा की ओर रवाना कर दीं। तब तक जनरल हिटलाक इधर आ चुका था। इसलिये नवाब ने कबरई में फौज लगाकर मोर्चा लगा दिया। हिटलाक 17 अप्रैल 1858 को कबरई पहुंचा। वह नवाब की फौजों की उपस्थिति से पूर्णतया अनभिज्ञ था। नवाब की सेना ने सुबह के समय हमला बोल दिया किंतु अंत में पराजित होना पड़ा। 19 अप्रैल को उसे नवाब की प्रमुख सेना से बांदा से कुछ मील दूर गोरा मुगली में संघर्ष करना पडा। हिटलाक ने उसे पराजित कर 20 अप्रैल 1857 को बांदा में कब्जा कर लिया। नवाब बचने के लिये

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 158

2. वही पृष्ठ- 159

कालपी के लिये चला गया[1] श्रीनगर में स्वतंत्रता सेनानियों के नेता देशपत को खोजने के लिये जनरल हिटलाक ने बुन्देल राजा मोहन सिंह द्वारा बनवाये गये एक किले को ध्वस्त कर उजाड़ दिया जिसके अवशेष अभी भी हैं।

अंग्रेज कार्ने ने बांदा से वापिस आकर पुनः शासन प्रबंध संभाल लिया। 10मई सन् 1858 को हमीरपुर जनपद झांसी मण्डल में मिला दिया गया। कालपी की पराजय के पश्चात फ्रीलिंग ने 24मई 1858 को पुनः जिला मुख्यालय पर कब्जा कर लिया[2] ।

सन् 1857 ई0 के पश्चात सरीला व चरखारी देशी रियासतों के रूप में यहां के स्थानीय राजाओं के शासन में था जबकि शेष जनपद पर अंग्रेजी शासन था। जनपद के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों को पकड़कर कारावास का दण्ड दिया गया। उनकी संपत्ति जब्त कर ली गई। हमीरपुर मुख्यालय पर पेशवाओं की कोठी नारायण राव भी जब्त कर ली गई थी जिसमें वर्तमान समय में जिलाधिकारी का आवास है। सन् 1858 के पश्चात भी जनपद के दक्षिणी भाग में काफी उथल पुथल रही। 1 अगस्त 1858 को छतर सिंह ने झांसी से जनपद पर आक्रमण किया उसने राठ को लूटा और कई स्थानीय सरकारी कर्मचारियों को मार डाला[3] अंत में कैप्टन थामसन ने झांसी में गरौठा के पास छतरसिंह की सेना को पराजित किया। इस प्रकार विद्रोहियों के दल जंगलों में शरण लेने की अपेक्षा तब तक लड़ते रहे जब तक कि सन् 1869 में इनके नेता रघुनाथ को मार नहीं दिया गया।

बीसवीं सदी में स्वतंत्रता आन्दोलन :

बीसवीं सदी का प्रारंभ ही राष्ट्रीय भावनाओं के प्रादुर्भाव के साथ ही पूरे भारत मे हुआ। वर्ष 1905 में विभाजन के विरूद्ध हुये आन्दोलन में पूरे जनपद में विदेशियों एवं विदेशी सामानों के विरूद्ध व्यापक रूप से भावनायें भड़क उठीं। ग्रामीण क्षेत्र भी पीछे नहीं थे। स्वदेशी अपनाओ विदेशी भगाओ की

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ-159

2. वही पृष्ठ- 160

3. वही

धारणा प्रबल हो उठी। जालियां वाला काण्ड व रोलर एक्ट के विरोध स्वरूप प्रदर्शन विरोध व गिरफतारी कार्यक्रम चलाये गये। जनपद से जन आन्दोलन के प्रथम प्रेरणा स्त्रोत राठ तहसील के सिकरौधा ग्राम के निवासी पं0 परमानन्द थे जिनका क्रान्तिकारी संगठनों में राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख स्थान था[1] लाहौर षडयंत्र केस के प्रमुख अभियुक्त होने के आरोप में 13 सितंबर 1915 को उन्हें प्राणदण्ड की सजा सुनाई गई। बाद में इस सजा को आजन्म कालापानी में बदल दिया गया। तत्पश्चात दीवान शत्रुघ्न सिंह एवं स्वामी ब्रह्मानन्द ने जनपद के स्वतंत्रता संग्राम की बागडोर संभाली। क्रान्तिवीर पं0 परमानन्द 1 अगस्त 1937 को प्रथम भारतीय सरकार बनने पर मुक्त हो सके[2] ।

सन् 1920 में राष्ट्रीय असहयोग आन्दोलन का जनपद में व्यापक असर पड़ा। खादी अपनाने,सरकारी नौकरी छोड़ने, विदेशी सामान के बहिष्कार, अंग्रेजी विद्यालयों को छोड़ने तथा अदालतों के बहिष्कार की होड़ लग गई। 'बुन्देलखण्ड केसरी' व 'पुकार' नामक स्थानीय पत्रों ने जनपद में राष्ट्रीयता व क्रान्ति की भावना पैदा करने में अग्रणी भूमिका निभायी। जिला प्रशासन ने खादी बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया। विदेशी कपड़ों तथा सामानों को कचहरी परिसर में जलाया गया[3] ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समर्थन में 21 नवंबर 1929 की शाम को महात्मा गांधी महोबा पहुंचे। महोबा में लगभग 4000 लोगों ने उनका स्वागत किया तथा 2603 रू0 की थैली भेंट की। महोबा से महात्मा गांधी कुलपहाड़ व राठ गये। राठ में 6000 लोगों के समुदाय ने उनका जोरदार स्वागत किया तथा 1514 रू0 की थैली भेंट की। उन्होनें गांधी आश्रम में रात्रि विश्राम किया। सन् 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान भी संपूर्ण जनपद में नमक कानून का उल्लंघन किया गया। 372 लोग दण्डित हुये[4] ।

सन् 1932 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का दूसरा चरण जब राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभ किया गया तो उसकी संपूर्ण जनपद में व्यापक प्रतिक्रिया हुई। सभाओं पर रोक लगा दी गई तथा सरकार के

1.स्मारिका हमीरपुर महोत्सव 94 पृष्ठ- 38

2.वही पृष्ठ- 39

3.वही

4.वही

विरूद्ध पर्चे छापे गये। यह आंदालन मई 1934 तक चलता रहा।

सन् 1937 में राठ तहसील के जराखर ग्राम में कांग्रेस सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिये पं0 जवाहर लाल नेहरू, पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त एवं श्री सम्पूर्णानन्द जैसे राष्ट्रीय नेता जराखर आये थे[1] उसी वर्ष प्रथम चुनाव के समय पं0 जवाहर लाल नेहरू तथा मौलाना आजाद कांग्रेस के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने मौदहा पहुंचे थे सन् 1941 में द्वितीय विश्व युद्ध के समय सैनिकों की भर्ती व युद्धकोष में जोर देने के कारण कांग्रेस द्वारा प्रबल विरोध किया गया। उक्त अवसर पर भी संपूर्ण जनपद में स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सत्याग्रह शुरू कर गिरफतारियां दी गई थीं।

वर्ष 1942 में जब अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन की घोषणा की गई तथा हमीरपुर के 41 स्थानीय कांग्रेसियों ने गिरफतारी दी थी[2] ।

19 अगस्त 1942 को क्रान्तिकारी वीर पं0 परमानन्द पुनः गिरफतार कर लिये गये। उन्हें सुल्तानपुर की जेल में रखा गया तथा 10 मई 1946 को मुक्त किया गया। जनपद के स्वतंत्रता आन्दोलन में पं0 परमानन्द के अतिरिक्त जिन वीर पुरूषों ने प्रमुख भूमिका निभायी उनमें दीवान शत्रुघ्न सिंह, रानी राजेन्द्रकुमारी व स्वामी ब्रह्मानन्द के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त उस समय के प्रमुख सेनानियों में रामगोपाल गुप्ता, उदित नारायण शर्मा, मन्नूलाल शर्मा, बद्रीप्रसाद बजाज, श्रीपत सहाय रावत, मन्नीलाल गुरूदेव, मातादीन बुधौलिया, राधेश्याम मिश्र, रामानुज सिंह, भगवानदास बालेन्दु, दुलीचन्द्र शास्त्री जगदेव प्रसाद विद्यार्थी आदि के नाम विशेष आदर से लिये जाते हैं[3] । बुन्देलखण्ड केसरी की उपाधि से विभूषित दीवान शत्रुघ्न सिंह ने तो अपना सर्वस्व भारत मां के चरणों में अर्पित कर जनपद के स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व किया। उनका नाम संपूर्ण जनपद में आज भी अत्यन्त श्रद्धाभाव एवं आदर के साथ लिया जाता है।

1.जिला सूचना पत्रिका हमीरपुर 1997 पृष्ठ-10

2.स्मारिका हमीरपुर महोत्सव-94 पृष्ठ- 39

3.वही पृष्ठ-40

अन्त में 15 अगस्त 1947 को देश को पूर्ण आजादी मिलने के पश्चात सरीला एवं चरखारी का हमीरपुर जनपद में विलीनीकरण हो गया। सन् 1973 में स्वतंत्रता की रजत जयन्ती के अवसर पर जनपद के 323 स्वतंत्रता सेनानियों व उनके आश्रितों को ताम्रपत्र भेंट कर सरकार द्वारा सम्मानित किया गया था।

****

द्वितीय अध्याय

हमीरपुर जनपद की युगीन परिस्थितियां

(1) आर्थिक

(2) सामाजिक

(3) राजनीतिक

(4) साहित्यिक

****

हमीरपुर जनपद की युगीन परिस्थितियां

(1) आर्थिक :

कृषि: हमीरपुर जनपद के निवासियों का मुख्य धन्धा कृषि है यहां लगभग 81.8% लोग कृषि पर निर्भर हैं[1] यहां लगभग 533050 हैक्टेअर क्षेत्र में कृषि का कार्य होता है[2] कुल जनसंख्या का 53.5% किसान एवं 28.3% किसान मजदूर है[3] यहां पर बोई जाने वाली मुख्य फसल गेहूं, चना, जौ, अलसी व मसूर हैं जो रबी की मुख्य उपज हैं। सिंचाई सुविधायें पर्याप्त न होने के कारण खरीफ की खेती कम क्षेत्र में होती है। खरीफ की फसल में मुख्य रूप से ज्वार, बाजरा, मूंग, उड़द तथा सन आदि पैदा किया जाता है। यह फसल जनपद के दक्षिणी भाग में अधिक पैदा होती हैं। जनपद में केवल 28% सिंचित क्षेत्रफल है शेष 75% क्षेत्रफल में खेती वर्षा पर निर्भर रहती है[4] जनपद में मौदहा बांध का निर्माण कार्य प्रगति पर है जिसके पूर्ण होने पर लगभग 41100 हैक्टेअर क्षेत्रफल सिंचित हो जायेगा[5] जो कृषि उपज बढ़ाने में सहायक होगा। जनपद में लगभग 1.24 लाख हैक्टेअर खरीफ में, 4.29 लाख हैक्टेअर रबी में तथा लगभग 500 हैक्टेअर क्षेत्रफल में जायद फसलों की खेती की जाती है। जनपद में औसत वर्षा 854.62 मिम0 है[6]

उद्योग : औद्योगिक दृष्टि से हमीरपुर जनपद काफी पिछड़ा क्षेत्र है। परिवहन के समुचित साधनों की कमी तथा विषम भौगोलिक स्थितियों के कारण अभी तक जनपद का पर्याप्त विकास नहीं हो सका है।

---

1. हमीरपुर जनपद का आदर्श भूगोल पृष्ठ सं0- 16
2. जिला सूचना पत्रिका 1987 पृष्ठ -12
3. जनपद हमीरपुर का आदर्श भूगोल पृष्ठ सं0-16
4. हमीरपुर महोत्सव स्मारिका 94 पृष्ठ -34
5. जिला सूचना पत्रिका 1987 पृष्ठ- 13
6. हमीरपुर महोत्सव स्मारिका 94 पृष्ट- 30

परन्तु सरकार द्वारा इस ओर अब विशेष प्रयास प्रारंभ हो गये हैं । हमीरपुर तहसील के सुमेरपुर को औद्योगिक नगर घोषित किया गया है। सुमेरपुर के पन्धरी रोड में कागज (गत्ता) बनाने की एक फैक्टरी चल रही है। गायत्री तपोभूमि की ओर भी कई फैक्ट्रियां चल रही हैं इनमें हिन्दुस्तान लीवर, क्षीर सागर केमिकल, सुशीला पेपर मिल, वन्दना स्टील फैक्टरी, हंस कास्टिंग फैक्टरी, शिवा सीमेन्ट फैक्टरी, सन्त वाक्सेस मिल, जुबली पेपर मिल प्रमुख हैं।[1]

महोबा नगर में पान की खेती व्यापक रूप से की जाती है महोबा का पान देश-विदेश में प्रसिद्ध है। पान की खेती को बढ़ावा देने के लिये सरकार ने महोबा में पान अनुसन्धान केन्द्र की भी स्थापना की है।

मिट्टी के बर्तन :

जनपद के कई गांवों में कुम्हार घड़ा, मटका, सुराही आदि मिट्टी के बर्तन बनाकर दूर दूर तक ले जाकर बेचते हैं। मिट्टी के खिलौनों को भी बनाकर बेचते हैं जो उनके आर्थिक पोषण में काफी हद तक सहायक सिद्ध होता है।

पशु पालन :

जनपद के निवासी पशु पालन का धन्धा भी करते हैं। दूर-दूर तक पशुओं को ले जाकर बेचते हैं। जनपद के नगर राठ में रविवार के दिन एवं भरूआ सुमेरपुर में बुधवार के दिन पशु मेला लगता है जहां दूर-दूर से लोग पशुओं को खरीदने व बेचने आते हैं।

पत्थर का काम व अन्य उद्योग :

महोबा तहसील के कबरई नगर एवं अन्य कई पहाड़ों पर पत्थर तोड़ने का काम होता है पत्थर व मिट्टी भवनों व सड़कों के निर्माण हेतु दूर दूर तक ले जाया जाता है। बेतवा व यमुना नदी से

---

1. हमीरपुर जनपद का आदर्श भूगोल पृष्ठ - 27

बालू दूर दूर तक जाती है। कुलपहाड़ तहसील के गौरहारी में पाया जाने वाला विशिष्ट प्रकार का पत्थर बर्तन, खिलौने इत्यादि के निर्माण में प्रयुक्त होता है। श्रीनगर - महोबा में विभिन्न धातुओं की मूर्तियां बनाने का कार्य अत्यन्त कलात्मक ढंग से किया जाता है। मौदहा, महोबा व जैतपुर में खादी उद्योग का कार्य होता है[1] भरूआ सुमेरपुर में चमड़े की जूती सबसे अधिक बनायी जाती है जो काफी दूर दूर तक प्रसिद्ध है। राठ नगर में भी चमड़े के जूते व चप्पलें बनती हैं।

(2) सामाजिक

जनपद में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, जैन, आर्य , पारसी एवं सिक्ख सभी जातियों के लोग रहते हैं जिनमें सर्वाधिक संख्या हिन्दुओं की है। जनपद में सबसे अधिक मुसलमान मौदहा में हैं। राठ नगर में भी काफी संख्या मुसलमानों की है। जनपद के निवासी अधिकतर कृषि का कार्य करते हैं इस कारण ग्रामीण अंचलों में अशिक्षितों की संख्या बहुत है। जनपद में साक्षरता का प्रतिशत 31.79 है जिनमें पुरूष 44.59% तथा महिलायें 16.58% साक्षर हैं। [2] महोबा व राठ के अतिरिक्त जनपद के निवासियों की वेश-भूषा लगभग एक समान है। यहां ग्रामीण अंचलों में पुरूष सिर पर साफा बांधते हैं तथा पूरी बांह का कुर्ता व आधी बांह की बण्डी पहनते हैं, घुटनों तक धोती पहनने का प्रचलन है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियां पूरी बांह का सलूका पहिनती हैं पैरों में भारी वजनदार पैजनी, पैरों की अंगुलियों में बिछिया तथा हाथों में पछिलवा व हरैया पहनती हैं[3]

भाषा :

जनपद की अधिकांश आबादी द्वारा बोली जाने वाली भाषा बुन्देली या बुन्देलखण्डी है। कुछ दूसरी प्रान्तीय भाषायें भी प्रयोग की जाती हैं। बांदा, जालौन व फतेहपुर जनपदों के समीप के यमुना के

---

1. जिला सूचना पत्रिका 1987 पृष्ठ- 14
2. हमीरपुर महोत्सव स्मारिका 94 पृष्ठ-64
3. हमीरपुर जनपद का आदर्श भूगोल पृष्ठ-28

किनारे के क्षेत्रों में बोली जाने वाली प्रान्तीय भाषा तिरहारी कहलाती है। हमीरपुर में बुन्देली मिश्रित बघेली का प्रयोग होता है तथा जनपद के दक्षिण पूर्व क्षेत्र में जहां बनाफर राजपूत रहते हैं, बनाफरी या बनापरी का प्रयोग होता है। जनपद के पश्चिमी क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा लुधियांती या लोधियों की बोली कहलाती है[1]।

जीवन स्तर :

ऊबड़ खाबड़, असिंचित कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण जनपद के निवासियों का जीवन स्तर सामान्य है। चना ज्वार, बाजरा व जौ की पैदावार अधिक होती है। सिंचित क्षेत्र कम होने के कारण गेहूं की फसल कम है। इस कारण ग्रामीण क्षेत्रों में जौ, ज्वार, बाजरा व चने का उपयोग अधिक किया जाता है। चारागाह के लिये विस्तृत क्षेत्र होने से लोग भैंस, गाय व बकरियां काफी संख्या में पालते हैं ईधन की कोई कमी नहीं रहती क्योंकि जनपद का काफी क्षेत्रफल वनों से आच्छादित है[2]।

धार्मिक स्थान व मेले :

जनपद के विभिन्न स्थानों में कई छोटे बड़े मेले प्रतिवर्ष आयोजित किये जाते हैं जिन्हें सभी धर्मो के लोग मिलकर मनाते हैं। आयोजित किये जाने वाले मेले प्रायः किसी न किसी धार्मिक स्थान से जुड़े हुये हैं।

1. हमीरपुर :

इस नगर में पातालेश्वर महादेव मन्दिर, संगमेश्वर महादेव तथा हनुमान जी के प्राचीन मन्दिर एवं मुसलमानों की दरगाहें भी हैं किन्तु कोई उल्लेखनीय मेले का आयोजननहीं होता है।

2. सुमेरपुर :

इस नगर का सबसे प्रसिद्ध मेला तीज का मेला है जो प्रत्येक वर्ष भादों महीने की तीज को आयोजित होता है। बसंत पंचमी के दिन बहुत बड़ा दंगल भी लगता है यहां तपोभूमि नामक प्रसिद्ध धार्मिक स्थान है।

---

1 हमीरपुर गजेटियर 1902 भाग-22 पृष्ठ- 30

2. वही पृष्ठ - 92

3. **चन्दपुरवा** :

सुमेरपुर से लगभग 4 कि.मी0 दूर चन्दपुरवा नामक ग्राम में प्रसिद्ध हनुमान जी का मन्दिर है जिसे 'एटरा के महाबीरन' के नाम से पुकारा जाता है यहां अगहन माह के प्रथम मंगलवार को बहुत बड़ा मेला लगता है।

4. **कुन्डोरा** :

कुन्डोरा नामक ग्राम में अगहन महीने में अमावस्या की द्वितीया को खेरापति देवी का बड़ा मेला लगता है।

5. **छानी बुजुर्ग** :

यहां पर सिहरख बाबा का मन्दिर है जहां पौष माह की पूर्णिमा को मेला लगता है[1] यह मेला एक माह तक चलता है जिसमें दूर दूर से लोग आते हैं।

6. **बिदोखर** :

यहां पर ब्रह्मदेव का प्रसिद्ध मन्दिर है जहां पर माघ बदी 8 को मेला लगता है।

7. **मौदहा** :

यहां चिलमन नामक स्थान पर च्यवन ऋषि का आश्रम है यहां सावन माह में कंस मेला लगता है। सिसोलर नामक गांव में महाराजा बाबा का मेला कार्तिक माह की पूर्णिमा को लगता है।

8. **कम्हरिया** :

यहां पर मुसलमानों की एक दरगाह है जिसका उर्स (मेला) प्रतिवर्ष बड़ी धूम-धाम से होता है।

9. **महोबा** :

यह एक ऐतिहासिक नगर है जहां पर मनिया देव, छोटी चन्द्रिका, बड़ी चन्द्रिका तथा हनुमान जी का प्रसिद्ध स्थान है यहां भादों बदी 1 व 2 को मेला लगता है सावन माह में कजलियों का मेला लगता है। सावन माह में कजलियों का वर्ष भर का सबसे बड़ा मेला लगता है। ग्योंडी नामक ग्राम में

---

1. हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग-22 पृष्ठ- 57

चार दिन तक चलने वाला मेला अगहन की पूर्णिमा को लगता है।

10. चरखारी :

चरखारी एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान है जहां एक माह तक चलने वाला गोवर्द्धन जी का प्रसिद्ध मेला लगता है।

11. राठ :

यहां कार्तिक माह में विजयादशमी के बाद प्रसिद्ध मेला लगता है जो लगभग 15 दिन तक चलता है। रामलीला का भी मंचन होता है दूर दूर से लोग यहां आते हैं। इसके अतिरिक्त एक दिन का प्रसिद्ध मेला बड़े पीर में भी लगता है।

भेड़ी ग्राम में भी जबारा का मेला बड़ी धूम धाम से लगता है यहां बेतवा नदी के किनारे देवी जी का प्रसिद्ध मन्दिर है[1]

---

1. हमीरपुर जनपद का आदर्श भूगोल , पृष्ठ-32

(3)
राजनैतिक

जनपद हमीरपुर का राजनैतिक इतिहास भी अत्यन्त प्रेरणादायी है। स्वतंत्रता आन्दोलन में इस जनपद के सैकड़ों स्त्री पुरूषों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सन् 1757 में प्लासी युद्ध की विजय के साथ ही भारत वर्ष में अंग्रेजी साम्राज्य की नींव पड़ी थी। लगभग एक सौ वर्ष तक अंग्रेजों के अत्याचार एवं अमानवीय कार्यो को सहने के बाद सन् 1857 में भारतवर्ष में अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्ति हुई। जनपद हमीरपुर के वीरों ने भी इसमें अपना सक्रिय योगदान दिया था। सन् 1857 से ही हम जनपद के राजनैतिक इतिहास का संक्षिप्त विवेचन करेंगे।

सन् 1857 की क्रान्ति में जनपद का योगदान:

13 जून सन् 1857 को हमीरपुर में क्रान्ति का प्रारम्भ हुआ। जून के प्रथम सप्ताह में हमीरपुर में रमेड़ी के ग्रामीणों ने गुप्त बैठक कर क्रान्ति की योजना को अंतिम रूप दिया था। उस समय हमीरपुर में टी0के0 लायड अंग्रेज कलेक्टर थे। क्रान्तिकारियों ने जेल पर आक्रमण कर कैदियों को मुक्त कराया। कलेक्टर लायड तथा संुक्त न्यायाधीश डोनाल्ड भागकर छिप गये जिन्हें 18 जून को पकड़कर गोली मार दी गई। बड़े पैमाने पर लूटपाट हुई। सन् 1857 के इस महान संग्राम में अनेक वीरों ने अपनी प्राणाहुतियां दीं। कुछ प्रमुख वीरों के योगदान की चर्चा यहां की जा रही है।

राजा सुमेरसिंह:

अंग्रजों की फौजें जब झांसी पर आक्रमण करने जा रही थीं उस समय राठ के राजा सुमेर सिंह ने शत्रुओं को सीमा पर करने से रोका तथा लोंगमैन व पीटासन अंग्रेज अधिकारियों को कैद कर लिया। इस पर बूमफील्ड तथा स्टीफन जॉन के नेतृत्व में राजा सुमेर सिंह पर आक्रमण हुआ[1] । भयानक युद्ध

1.समर गाथा, सन्दर्भ हमीरपुर, सम्पादक डा0 भवानीदीन पृष्ठ-18

हुआ। राजा सुमेर सिंह ने अन्त में अपने प्राणों की बलि दे दी।

भगवानदास चौधरी:

राठ के ही भगवानदास चौधरी ने अंग्रेजों के अत्याचारों का प्रबल विरोध कर जनता को प्रोत्साहित किया। अंग्रजों ने उन्हें पुरानी गढ़ी के पास क्वांर बदी अष्टमी के दिन नीम के पेड़ पर लटका कर फांसी दे दी थी। बाद में उनके बड़े पुत्र लीलाधर चौधरी को काले पानी की सजा हुई जहां उनकी मृत्यु हुई।

राव महीपक्ष सिंह पँवार:

सुगरा के वीर नौने अर्जुन सिंह के वंशज राव महीपक्ष सिंह ने भी तात्याँ टोपे के साथ चरखारी पर आक्रमण किया तथा विजय प्राप्त की क्योंकि चरखारी नरेश राजा रतन सिंह अंग्रेजों के पक्ष में थे बाद में धोखे से अंग्रेजों ने उन्हें बन्दी बनाकर भूरागढ़ के किले में सन् 1858 में फांसी दे दी थी।

स्वदेशी आन्दोलन में जनपद हमीरपुर की भूमिका:

सन् 1905 में लार्ड कर्जन द्वारा बंगाल विभाजन के समय जब देश में स्वतंत्रता आन्दोलन उग्र हुआ तो हमीरपुर भी उससे अछूता नहीं रहा। जनपद की तहसील राठ में तो मानो भूचाल सा आ गया। जराखर ग्राम के कई वीरों ने इसमें सक्रिय योगदान किया। ग्राम सिकरौधा के महान क्रान्तिकारी वीर पं0 परमानन्द के पितामह मनराखन जी ने इसमें सक्रिय भाग लिया, इस कारण 20 वर्षो की कैद की सजा देकर उन्हें चरखारी रियासत के कारागार में डाल दिया गया जहां असहनीय यातनायें सहते हुये उनकी मृत्यु हुई। इसी कायस्थ परिवार में 6 जून सन् 1892 को हमीरपुर जनपद के महान क्रान्तिकारी तथा बुन्देलखण्ड के सुभाष पं0 परमानन्द का जन्म हुआ था।

1.समर गाथा, सन्दर्भ हमीरपुर पृष्ठ-20 व 21

क्रान्ति पुत्र परमानन्दः

21 फरवरी सन् 1915 को गदर पार्टी द्वारा सारे भारत में एक साथ विद्रोह की योजना बनायी गयी थी जिसमें तहसील राठ के सिकरौधा ग्राम के निवासी क्रान्तिकारी पं0 परमानन्द का प्रमुख योगदान था। यह विद्रोह भेदियों व भितरघातियों के कारण विफल हो गया । लाहौर षडयंत्र केस के नाम से अभियोग चलाया गया। पं0 परमानन्द को इसमें फांसी की सजा मिली जो बाद में काले पानी की सजा में बदल गयी। पं0 परमानन्द को अण्डमान निकोबार द्वीप समूह की जेल में भेज दिया गया 24 वर्ष तक जेल में रहने के पश्चात 1 अगस्त सन् 1937 को वे मुक्त हुये।

बुन्देलखण्ड के गांधी दीवान शत्रुघ्न सिंहः

स्वतंत्रता आन्दोलन में दीवान शत्रुघ्न सिंह का सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्हें बुन्देलखण्ड केसरी तथा बुन्देलखण्ड के गांधी के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा था। सन् 1916 में उन्होंने क्रान्तिकारी के रूप में संगठन का कार्य प्रारंभ किया और सम्पूर्ण जनपद में छा गये। उनकी पत्नी रानी राजेन्द्रकुमारी ने उनके इस कार्य में कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया। श्रीपति सहॉय रावत, पं0 हरीदास लाल सिंह, बाबू बैजनाथ, मातादीन बुधौलिया, मूलचन्द्र शर्मा, सेठ गजाधर, सेठ गरीबदास, कालीचरण अग्रवाल, देवी दाऊ, हरप्रसाद सेठ व ग्यासीलाल उस समय के प्रमुख सहयोगी कार्यकर्ता थे।

सन् 1919 में अंग्रेजी सरकार ने चन्दा वसूलने के लिये राठ के भीतरी मैदान में एक बैठक बुलाई जिसमे रईसों, जमीन्दारों व किसानों को बुलाया गया। अंग्रेजों के इस शाही दरबार में **दीवान** शत्रुघ्न सिंह ने खड़े होकर घोषणा की कि मैं अंग्रेजों को चन्दा नहीं दूंगा। उनकी इस साहसिक घोषणा से जनता ने उनका अपार स्वागत किया।[1]

1.समर गाथा, सन्दर्भ हमीरपुर, पृष्ठ 36 व 37

असहयोग के दिनों में हमीरपुर का योगदानः

महात्मा गांधी ने जब पूरे देश में असहयोग आन्दोलन के द्वारा अंग्रेजों के विरूद्ध बगावत का बिगुल बजाया तो हमीरपुर भी उससे अछूता नहीं रहा। दीवान शत्रुघ्न सिंह ने प्रमुख सहयोगियों के साथ । जुलाई सन् 1921 को राठ में तहसील के सामने सत्याग्रह सभा की तथा धारा 144 को भंग किया। इस कारण दीवान साहब, मूलचन्द्र शर्मा, मातादीन बुधौलिया के साथ कई प्रमुख सेनानियों को जेल में बन्द कर दिया गया व उन पर राजनैतिक अभियोग चलाया गया। दीवान साहब और मूलचन्द्र शर्मा को डेढ़-डेढ़ वर्ष की सजा सुनाकर आगरा जेल भेज दिया गया। इनकी अनुपस्थिति में रानी राजेन्द्रकुमारी ने पं0 हरीदास, लाल सिंह व श्रीपति सहांय रावत के साथ संगठन व आन्दोलन के प्रचार हेतु पूरे जनपद का भ्रमण कर जन सभायें कीं। दृढ़ता व साहस की मूर्ति रानी राजेन्द्र कुमारी ने एक अच्छे सेनापति की भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। इस प्रकार असहयोग आन्दोलन का हमीरपुर जनपद में सर्वप्रथम झण्डा उठाने वाले दीवान शत्रुघ्न सिंह तथा मूलचन्द्र शर्मा ने सन् 1921 में हमीरपुर जनपद का गौरव बढ़ाया। उन्होंने राठ क्षेत्र को संगठित कर बाद में सारे जनपद को संगठित किया।[1]

असहयोग आन्दोलन के पश्चात सन् 1925 में कानपुर कांग्रेस अधिवेशन तथा सन् 1927 में करांची कांग्रेस अधिवेशन में भी जनपद के विभिन्न स्थानों से सैकड़ों कार्यकर्ता सहभागी हुये।

माण्टेग्यु चेम्स फोर्ड सुधार के नाम पर अंग्रेजी शासन द्वारा प्रान्तीय कौंसिलों, जिला परिषदों एवं नगरपालिकाओं को अधिकार दिये गये। इस प्रकार जिला परिषद के हुये प्रथम चुनाव में हमीरपुर जनपद में कांग्रेस के सभी प्रत्याशी विजयी हुये। दीवान शत्रुघ्न सिंह प्रथम अध्यक्ष चुने गये[2]। उस समय शिक्षा विभाग जिला परिषद अध्यक्ष के ही अधीन था। दीवान साहब ने अध्यक्ष पद पर रहते हुये शिक्षा में महत्वपूर्ण सुधार किये।

---

1. समर गाथा सन्दर्भ हमीरपुर पृष्ठ 43 व 44

2. वही पृष्ठ-56

गहरौली का जिला राजनैतिक सम्मेलन:

सन् 1937 में कांग्रेस का जिला राजनैतिक सम्मेलन हुआ। इसे पं0 मन्नीलाल गुरूदेव की प्रेरणा से मौदहा तहसील के ग्राम गहरौली में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में पं0 जवाहरलाल नेहरू भी उपस्थित हुये। पं0 नेहरू के भाषण से जनता अत्यन्त प्रभावित हुई।

जराखर का जिला राजनैतिक सम्मेलन:

फरवरी 1938 में जनपद का वार्षिक सम्मेलन राठ तहसील के ग्राम जराखर में आयोजित हुआ। दीवान शत्रुघ्न सिंह 1938 में हमीरपुर जनपद के विधायक थे उन्होंने पड़ोसी देशों , राज्यों और हमीरपुर जनपद के बड़े जमींदारों को जराखर सम्मेलन में सहयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया। उस समय स्वामी ब्रह्मानन्द हमीरपुर कांग्रेस समिति के अध्यक्ष थे।[1] तत्कालीन जिला कांग्रेस समिति के मंत्री रामगोपाल गुप्त, रामसेवक खरे, मझगवां के जमींदार दीवान उदितनारायण सिंह, चुरूवा गांव के सुदर्शन भाई, बाबू रामप्रसाद नौरंगा तथा जराखर के प्रताप सिंह तोमर ने अपने सहयोगियों के साथ सम्मेलन को सफल बनाने के प्रयास किये। उस समय अंग्रेजी सरकार के कलेक्टर के रूप में हमीरपुर में सिद्दीकी हसन तैनात थे। इस सम्मेलन में 7 फरवरी सन् 1938 को उ0 प्र0 के मुख्य मंत्री पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त तथा 8 फरवरी 1938 को पं0 जवाहरलाल नेहरू आये, उनके ओजस्ववी विचारों को सुनकर जनता में एक नये उत्साह का संचार हुआ।

व्यक्तिगत सत्याग्रह में हमीरपुर का योगदान:

सन् 1940 एवं 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में गांधी जी ने विनोबा भावे को प्रथम सत्याग्रही के रूप में चुना था। विनोबा भावे ने जनता के सामने युद्ध विरोधी नारे लगाते हुये कहा कि युद्ध में सहयोग देना पाप है । इस पर सरकार द्वारा उन्हें गिरफतार कर जेल भेज दिया गया। प्रतिक्रियास्वरूप

1.समर गाथा सन्दर्भ हमीरपुर पृष्ठ 59-60

सारे देश में व्यक्तिगत सत्याग्रह आरंभ हो गया। हमीरपुर जनपद ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। जनपद के सैकड़ों कार्यकर्ता जेल गये। पूरी जेल भर जाने के बाद दीवान शत्रुघ्न सिंह और रामगोपाल गुप्त सहित सैकड़ों कार्यकर्ताओं को चुनार के किले में भेजकर बन्द कर दिया गया।

नमक सत्याग्रह में हमीरपुर का योगदान:

गांधी जी द्वारा नमक सत्याग्रह चलाये जाने का प्रभाव भी जनपद में पड़ा। अंग्रेजी सरकार द्वारा आदेश जारी किया गया कि जो भी व्यक्ति कहीं नमक बनाये तो उसे गिरफतार कर लिया जाये। परिणामस्वरूप मगरौठ जराखर, नौरंगा, अटगांव, सिकरौधा, धगवां, बीरा, गोहाण्ड , इटैलिया, मलेहटा, मझगवां, चण्डौत, करगवां, सैदपुर, नौहाई, रावतपुरा एवं अन्य कई गांवों के क्रान्तिकारियों ने नमक कानून भंग कर गिरफतारियां दीं। श्री बैजनाथ तिवारी महोबा, दीवान शत्रुघ्न सिंह, स्वामी ब्रह्मानन्द, श्रीपति सहांय रावत, श्री भगवानदास बालेन्दु, लाला परमानन्द जी पुरैनी इत्यादि सैकड़ों वीरों ने अपनी गिरफतारियां देकर अंग्रेजी सरकार का विरोध किया। इस प्रकार सन् 1930 के जून जुलाई माह में पूरे जनपद में आंदोलन का ज्वालामुखी फूट पड़ा था। पूरे जनपद के स्वतंत्रता संग्राम का संचालन दीवान शत्रुघ्न सिंह करते थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जनपद का योगदान:

इस प्रकार सन् 1857 की प्रथम क्रान्ति से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक जनपद के अगणित शूरवीरों ने अपना तन मन धन न्यौछावर कर जनपद के गौरव को बढ़ाया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी जनपद के राजनीतिज्ञों का अविस्मरणीय योगदान राष्ट्र को समृद्धिशाली एवं गौरवशाली बनाने में रहा है।

आजादी के पश्चात सन् 1952 में जब लोकसभा के प्रथम चुनाव हुये तो कांग्रेस के वरिष्ठ सदस्य एवं पं0 जवाहरलाल नेहरू के निकटस्थ मित्र मन्नूलाल द्विवेदी ने जनपद का प्रथम सांसद बनकर लोकसभा में प्रवेश किया। श्री द्विवेदी चरखारी तहसील के निवासी थे। सन् 1957 में जब लोकसभा के दूसरी बार चुनाव हुये तो दूसरी बार भी श्री मन्नूलाल द्विवेदी ही सांसद बने। सन् 1962 में तीसरे लोकसभा चुनावों में मन्नूलाल द्विवेदी ही पुनः सांसद चुने गये। आजादी के बाद देश का सर्वमान्य दल कांग्रेस ही था

इस कारण तीन बार लगातार श्री द्विवेदी को ही विजयश्री मिलती रही। इसके बाद जनपद में कई अन्य समाज सुधारक राजनीतिज्ञों का अभ्युदय हुआ इनमें स्वामी ब्रह्मानन्द प्रमुख थे। इस कारण राजनीतिक परिस्थितियां धीरे धीरे बदलने लगीं। जनपद में जनसंघ की भी राजनैतिक पहचान बन चुकी थी। सन् 1967 में कांग्रेस की ओर से मन्नूलाल द्विवेदी को ही चौथी बार पुनः प्रत्याशी बनाया गया। उनकी टक्कर जनसंघ के लोकप्रिय प्रत्याशी स्वामी ब्रह्मानन्द से हुई। इस चुनाव में जनसंघ के स्वामी ब्रह्मानन्द विजयी हुये। संत प्रवृत्ति के स्वामी ब्रह्मानन्द ने संसद में पहुंचकर जनपद की समस्याओं को प्रमुखता के साथ उठाया जिससे स्वामी ब्रह्मानन्द का राजनैतिक कद बहुत बढ़ गया। बाद में श्रीमती इन्दिरा गांधी स्वामी जी को कांग्रेस में ले आयीं। सन् 1971 के लोकसभा चुनाव में स्वामी ब्रह्मानन्द कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जीते। आपात काल की अवधि में जब कांग्रेस काफी अलोकप्रिय हो गयी तब सन् 1977 की छठीं लोकसभा के चुनाव में हमीरपुर संसदीय क्षेत्र से जनता पार्टी के प्रत्याशी के रूप में कुंवर तेजप्रताप सिंह (बच्चा जी) ने विजय प्राप्त की। आपसी विग्रह के कारण जनता पार्टी का शीघ्र ही पतन हुआ और सन् 1980 में सातवीं लोकसभा में जनपद से सांसद के रूप में डूंगर सिंह लोधी निर्वाचित हुये। सन् 1984 के आठवें लोकसभा के चुनाव में बाबू स्वामीप्रसाद सिंह कांग्रेस की ओर से प्रत्याशी बने एवं विजय प्राप्त की। सन् 1984 के पश्चात राजनीति के पुराने दिग्गज अलोकप्रिय होकर किनारे होने लगे तभी छात्र राजनीति से सीधे दिल्ली की राजनीति में आये उरई निवासी गंगाचरण राजपूत जनता दल उम्मीदवार के रूप में सन् 1989 में लोकसभा का चुनाव लड़कर विजयी हुये। इस प्रकार नवीं लोकसभा को जनपद हमीरपुर ने सबसे कम उम्र का सांसद देकर एक कीर्तिमान बनाया। सन् 1991 में जब पुनः लोकसभा के चुनाव हुये तो दसवीं लोकसभा में भाजपा के उम्मीदवार झांसी निवासी पं0 विश्वनाथ शर्मा सांसद बनकर जनपद हमीरपुर का प्रतिनिधित्व करने पहुंचे किन्तु जनपद की जनता से कोई सरोकार न रखने वाले पं0 विश्वनाथ शर्मा बाद में बहुत ही अलोकप्रिय हो गये। सन् 1996 के ग्यारहवीं लोकसभा के चुनाव में गंगाचरण राजपूत भाजपा के प्रत्याशी बनकर पुनः चुनाव में उतरे और विजय प्राप्त की। इस प्रकार आजादी के बाद ग्यारह लोकसभा

चुनावों में 6 माह लोधी जाति के उम्मीदवार, चार बार ब्राह्मण जाति के उम्मीदवार तथा एक बार ठाकुर जाति का उम्मीदवार विजयी हुआ है। दलगत गणित के अनुसार यदि देखें तो छः बार कांग्रेस का प्रत्याशी, तीन बार भाजपा प्रत्याशी , एक-एक बार जनता पार्टी व जनता दल के प्रत्याशी ने सफलता प्राप्त की है। राज्य सभा सदस्य के रूप में जनपद के राजनैतिक इतिहास में सन् 1978 में पहली बार बाबू शिवनन्दन सिंह निर्वाचित हुये थे। प्रख्यात अधिवक्ता बाबू शिवनन्दन सिंह लोकदल के नेता चौधरी चरण सिंह के निकटस्थ लोगों में से थे। इस प्रकार बाबू शिवनन्दन सिंह राज्य सभा सदस्य के रूप में चुने जाने वाले जनपद के प्रथम व अंतिम व्यक्ति थे। इनके बाद कोई नेता जनपद से अब तक राज्यसभा के लिये नहीं चुना गया।

×

(4) साहित्यिक :

पत्र-पत्रिकायें :

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व हमीरपुर जनपद की पत्रकारिता का मूल उद्देश्य जनता की भावनाओं को अभिव्यक्ति देना था। जनपद की जनता को राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत कर उन्हें स्वतंत्रता आन्दोलन के लिये सर्वस्व न्यौछावर करने हेतु प्रेरित करना था। इस उददेश्य की पूर्ति हेतु जनपद हमीरपुर का पहला समाचार पत्र 'सुधा' सन् 1918 में प्रकाशित हुआ जिसके सम्पादक श्री मधुर प्रसाद शर्मा थे। समाचार पत्र का वार्षिक मूल्य था केवल तीन रूपये[1]

सन् 1924 में ग्राम पौथिया में एक स्वतंत्र भारत समिति गठित की गई। इस समिति ने 'क्रान्तिकारी' नाम के एक समाचार पत्र का प्रकाशन हाथ से लिखकर किया। इसके सम्पादक थे पं0 राधेश्यान मिश्र। समाचार पत्र के मुख्य पृष्ठ पर निम्न चार पंक्तियां लिखी रहती थीं[2]

दु:खी हो रही जन्म भू है तुम्हारी,
लुटी जा रही आज सम्पत्ति सारी ।
लगी एक आशा कुमारो तुम्हारी,
उठो बाल वीरो बनो क्रान्तिकारी ।।

पौथिया में गठित स्वतंत्र भारत समिति के अध्यक्ष थे क्रान्तिकारी दीवान शत्रुघ्न सिंह। समिति के कमाण्डर इन चीफ (कप्तान) थे बिवांर निवासी राधेश्याम मिश्र। प्रेमनारायण तिवारी तथा हीरानन्द दीक्षित सदस्य थे। इस पत्र की प्रतियां जिलाधिकारी तथा पुलिस अधीक्षक के घर पहुंचाने का कार्य शोभाराम अग्रवाल करते थे।

गृहस्थ जीवन (झांसी 1923) के सम्पादक वैद्य नाथूराम शर्मा ने कुलपहाड़ से सन् 1925 में एक समाचार पत्र निकाला जिसका नाम रखा गया 'वैद्य कल्पद्रुम' जनपद में कांग्रेस आंदोलन प्रारंभ होने के साथ ही 'खबरदार' समाचार पत्र प्रकाशित हुआ।

---

1. स्मारिका हमीरपुर महोत्सव 94 पृष्ठ-40
2. वही

महात्मा गांधी ने जब सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ किया उन दिनों जनपद के निवासियों के मन में स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रति जाग्रति पैदा करने के उद्देश्य से रामगोपाल गुप्त ने सन् 1932 में **'बुन्देलखण्ड केसरी' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन** किया **सन्** 1936 तक **इसके कुल** 53 अंक प्रकाशित किये गये। अंग्रेजों की पकड़ से बचने के लिये रामगोपाल गुप्त ने इस पत्र का प्रकाशन रणधीर के नाम से किया। ब्रिटिश सरकार को भ्रमित करने के लिये इसे गहरौली, मौदहा, राठ, मुस्करा, गोहाण्डा, बड़ा, मगरौठ जराखर, करगवां, पनवाड़ी तथा कानपुर के तिलक हाल जैसे विभिन्न स्थानों से प्रकाशित किया गया।[1]

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी भगवानदास बालेन्दु (कुलपहाड़) तथा श्रीपत सहाय रावत (जराखर-राठ) ने भी इस पत्र के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस पत्र के मुख्य पृष्ठ पर लिखा होता था-

अभय और मतवाला होकर,
निभर्य गायन गाऊंगा ।
मार मार कर अन्यायी को,
सबको मजा चखाऊंगा ।।

इस पत्र के प्रकाशन में हमीरपुर निवासी दुलीचन्द शास्त्री तथा मौदहा के द्वारिकाप्रसाद अवस्थी का भी विशेष योगदान रहा। स्वतंत्रता के पश्चात मौदहा के लक्ष्मी नारायण आनन्द ने कुछ दिनों तक हाथ से लिखकर इस पत्र को निकाला।[2]

सन् 1937 में हमीरपुर से सज्जाद हुसैन के सम्पादन में एक पत्र निकाला गया जिसका नाम था 'ग्राम सुधार' यह पत्र उन्नाव की ताजदार प्रेस में मुद्रित होता था। आठ पृष्ठों के इस पत्र के 4 पृष्ठ हिन्दी में व 4 पृष्ठ उर्दू में होते थे। यह पत्र हमीरपुर जनपद का पहला उर्दू पत्र था जो प्रत्येक माह की पहली व सोलह तारीख को प्रकाशित होता था।

---

1. स्मारिका, हमीरपुर महोत्सव 94 पृष्ठ- 4।
2. वही

सन् 1939 में एक साप्ताहिक पत्र 'पुकार' का प्रकाशन हुआ[1] जिसके सम्पादक थे साम्यवादी विचारधारा के समर्थक परमेश्वरी दयाल निगम। इस पत्र के प्रभाव से जनपद हमीरपुर के निवासियों में स्वतंत्रता के प्रति एक नयी लहर का संचार हुआ। यह पत्र सन् 1954 के जून माह तक प्रकाशित हुआ। बड़े बड़े अधिकारियों व नेताओं के भ्रष्टाचार को इस पत्र द्वारा प्रकट किया गया। यह पत्र 1954 के बाद 'मेहेर पुकार' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका के रूप में अभी भी प्रकाशित हो रहा है जिसमें अब अवतार मेहेर बाबा से संबंधित सामग्री का प्रकाशन होता है। वर्तमान समय में इसके प्रधान सम्पादक हैं शालिगराम शर्मा तथा श्यामलाल वर्मा व प्रहलाद सिंह सम्पादक हैं।[2]

सन् 1956 में जिला नियोजन कार्यालय हमीरपुर से एक मासिक पत्र प्रकाशित हुआ जिसका नाम था 'हमीरपुर पंच' और सम्पादक थे मेवाराम। इसी क्रम में सन् 1957 में दुलीचन्द्र शास्त्री ने 'साप्ताहिक युगवाणी' का प्रकाशन किया जो 3 वर्ष तक प्रकाशित हुआ। रामसहाय गोस्वामी द्वारा सन् 1958 में 'साप्ताहिक सन्देश' का प्रकाशन महोबा से किया। लक्ष्मी नारायण ने मौदहा से सन् 1960 में मासिक आध्यात्मिक पत्रिका 'युगवाणी' का प्रकाशन किया[3] ।

सन् 1960 में जगत बन्धु ने हमीरपुर मुख्यालय से साप्ताहिक 'देश बन्धु' का प्रकाशन किया। इस साप्ताहिक का सम्पादन 1970 में मुहम्मद अहमद एडवोकेट ने किया। महोबा से गिरधारीलाल विद्यार्थी के सम्पादन में 'मेहतर' नामक मासिक पत्र का भी सम्पादन किया गया। सन् 1964 में रतनलाल विद्यार्थी द्वारा राठ से 'हमीरपुर समाचार पत्र' का सम्पादन किया गया। डा0 श्रीदयाल सक्सेना ने जनवरी 1965 में महोबा से साप्ताहिक 'नया समाज' का प्रकाशन किया। इसी प्रकार साप्ताहिक 'आकर्षण' का प्रकाशन 1969 में किया गया[4] ।

---

1. स्मारिका, हमीरपुर महोत्सव 94 पृष्ठ-42
2. वही पृष्ठ - 42
3. वही
4. हमीरपुर गजेटियर 1980

रामदत्त तिवारी द्वारा सन् 1967 में 'सफलता सन्देश' साप्ताहिक का प्रकाशन चरखारी से तथा 16 सितम्बर 1971 से साप्ताहिक दीनोदय का प्रकाशन महोबा से किया गया जो आज भी प्रकाशित होता है। शिवलाल त्रिपाठी ने सन् 1971 में साप्ताहिक 'बुन्देल बन्धु' का प्रकाशन मौदहा से किया। महेश कुमार शर्मा ने सन् 1971 में हमीरपुर मुख्यालय से 'हमीरवाणी' का प्रकाशन किया[1] मौदहा से साप्ताहिक 'जय श्रमवान' का प्रकाशन भी सन् 1972 में किया गया जिसके सम्पादक थे देवीलाल गुप्त । सन् 1971 में महोबा से 'बहार' मासिक का भी प्रकाशन हुआ और इसके सम्पादक थे कुंवर बहादुर चौरसिया 8 जनवरी 1974 में मौदहा से 'हरदौल' साप्ताहिक का प्रकाशन किया गया जिसके सम्पादक रामशंकर गुप्त थे[2] ।

सितम्बर 1979 में 'महोबा दर्शन' के नाम से एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन हुआ और सम्पादक थे राधेश्याम चतुर्वेदी, सन् 1976 में ज्ञान विज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन महोबा से प्रारंभ हुआ इसके सम्पादक थे मनोज पटैरिया। 21 फरवरी 1977 को हमीरपुर मुख्यालय से साप्ताहिक 'देहाती क्रान्ति' का प्रकाशन हुआ इसके सम्पादक अनन्त कुमार अग्रवाल थे। सन् 1978 में इनके भाई राजकुमार ने 'बुन्देलखण्ड दूत' साप्ताहिक का प्रकाशन प्रारंभ किया। सन् 1978 मे ही मौदहा से 'चित्रकूट' साप्ताहिक का प्रकाशन सम्पादक आनन्द द्वारा किया गया[3]

सितम्बर 1979 में जनपद का पहला दैनिक समाचार पत्र महोबा से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक विपिन ओमर थे। यह दैनिक 9 माह तक लगातार घाटे के कारण बन्द हो गया। जुलाई 79 में चरखारी से रवीन्द्र कुमार अड़जरिया द्वारा 'बुन्देलखण्ड वाणी' का भी प्रकाशन हुआ। सितम्बर 1979 में श्याम किशोर गोस्वामी द्वारा महोबा से पाक्षिक 'धर्म संकट' का प्रकाशन हुआ। 'विशाल गर्जन' साप्ताहिक का प्रकाशन अब्दुल हमीद द्वारा किया गया। रामपाल सिंह द्वारा साप्ताहिक विश्व प्रभाकर का प्रकाशन हुआ। प्रताप सिंह परमार द्वारा जगत जनवाणी का प्रकाशन चरखारी से किया गया। राठ में हरप्रसाद श्रीवास्तव ने

---

1. स्मारिका हमीरपुर महोत्सव 94 पृष्ठ- 60
2. वही पृष्ठ- 43
3. वही

'अखण्ड-राठ' का सम्पादन किया तथा चन्द्रिका प्रसाद मिश्र ने चरखारी से युग निर्देशक का प्रकाशन किया। मई 1980 में चरखारी से ही अनूप कुमार अग्रवाल द्वारा साप्ताहिक 'मंगलगढ़' प्रकाशित हुये थे। दिनांक 14 अगस्त 1980 में गुलजार अली ने हमीरपुर से साप्ताहिक 'सूखी धरती' का प्रकाशन किया। सन् 1981 में साप्ताहिक 'प्राचीन ज्योति' का प्रकाशन बेलाताल से डा0रामकुमार वर्मा ने किया। गणेश सिंह विद्यार्थी हमीरपुर ने जून 1985 में मासिक 'शासन और समस्यायें' का प्रकाशन कराया। 21 अक्टूबर 1985 में राठ से दैनिक स्वप्नों का भारत प्रकाशित हुआ जिसके सम्पादक थे हरीमोहन चंसौरिया तथा वी0पी0 मलिक। राठ से ही विमल सक्सेना ने साप्ताहिक 'राष्ट्र भ्रमण' का प्रकाशन कराया। साप्ताहिक शोध शांति मई 1986 में मौदहा से प्रकाशित हुआ[1] भरूआ सुमेरपुर से 28 नवंबर 1988 को साप्ताहिक 'रुद्राक्ष' रामशरण दीक्षित द्वारा प्रकाशित कराया गया तथा 23 अक्टूबर 1993 से साध्य दैनिक रुद्राक्ष भी प्रकाशित हुआ।

मुख्यालय हमीरपुर से पहला दैनिक कृष्णबल्लभ दुबे द्वारा 13 जनवरी 1989 से प्रकाशित कराया गया जिसका नाम था दैनिक रेडिकल टाइम्स 2 जुलाई 1990 में साप्ताहिक 'हम्मीर जाग्रति' का प्रकाशन गणेशदत्त द्विवेदी ने किया। गीता द्विवेदी ने 27 जुलाई 90 में साप्ताहिक हम्मीर ताण्डव का प्रकाशन किया। कृष्ण कुमार तिवारी ने महोबा से 1991 में साप्ताहिक चारों ओर का प्रकाशन किया। 15 अगस्त 1991 को साप्ताहिक नव बुन्देलखण्ड गौरव का प्रकाशन तुफैल अहमद हमीरपुर ने किया। डा0 अयोध्या प्रसाद सचान ने 9 अगस्त 1991 से नई बहुजन राहत प्रारंभ किया हमीरपुर से 24 अगस्त 1991 से घनश्याम शर्मा द्वारा दैनिक हमीरदूत का प्रकाशन किया गया जो 15 अगस्त 93 तक प्रकाशित हुआ। कृष्णकुमार तिवारी महोबा से 1 जून 1992 को दैनिक बुन्देलों की आवाज को प्रारंभ किया जो 3 जनवरी 93 को बन्द हो गया। पी0आर0 देशबन्धु द्वारा 29 जून 93 को कबरई से साप्ताहिक पत्थरों की आवाज का प्रकाशन किया गया[2] ।

इस प्रकार जनपद में स्वतंत्रता के पूर्व से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अनेकों पत्र/पत्रिकायें प्रकाशित हुये जनपद के साहसी पत्रकारों ने अदम्य उत्साह का परिचय देते हुये जनपद के

---

1. स्मारिका हमीरपुर महोत्सव 94 पृष्ठ- 43

2. वही पृष्ठ - 44

निवासियों में अपनी लेखनी द्वारा एक नवस्फूर्ति का संचार स्वतंत्रता आन्दोलन के समय किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी मुद्रण की समस्याओं एवं आर्थिक धनाभाव से जूझते हुये भी कलम के इन सिपाहियों ने पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन कार्य अनवरत जारी रखा। किन्तु आज जब मुद्रण व्यवस्था उन्नत शिखर पर है कानपुर तथा लखनऊ से प्रकाशित होने वाले रंगीन पृष्ठों से युक्त आकर्षक सामग्री देने वाले अमर उजाला, दैनिक जागरण, आज, स्वतंत्र भारत तथा नवभारत टाइम्स जैसे समाचार पत्र लोगों तक पहुंच रहे हैं तब इस जनपद में एक भी आफसेट प्रन्टिंग प्रेस नहीं है। ऐसी स्थिति में ट्रेडिल प्रेस से छापे गये अनाकर्षक जनपद के साप्ताहिक व दैनिक पत्रों को जनता के बीच अपना स्थान बनाने में कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

स्वतंत्रता आन्दोलन के समय जन जागरण में अग्रणी भूमिका निभाने वाले 18 जून सन् 1939 को प्रारंभ हुये साप्ताहिक पत्र ' बुन्देलखण्ड केसरी ' के पत्र का नमूना नीचे प्रस्तुत है।

वन्दे मातरम्

बुन्देलखण्ड - केसरी

विशेषांक

साप्ताहिक पत्र

वीर भूमि की सन्तानें क्या होकर निर्बल और अनाथ
अत्याचारी अन्यायी के सन्मुख टेकेंगी निज माथ।
वर्ष-एक, महोबा, शनिवार 24 जून (1939, अंक-2)

हुंकार

मानतवा के सर्वनाश पर वैभव की दीवारें
आज न्याय का गला काटतीं सत्ता की तलवारें
चांदी के टुकड़ो पर पटता है जीवन का सौदा
जग का मर्मच्छेद कर रहीं सतत स्वार्थ की मारें
थिरक रहे हैं मंदिर मस्जिद वैभव के इंगित पर।
और इधर शोषण की चोटें पड़ें हमारे सर पर।

है परलोक तुम्हारा कैसा मीठा सा आश्वासन
यह सन्तोष सुरा क्यों पीकर सोते रहे निरंतर
हमें न बांध सकेंगी पर अब वे लोहे की कड़ियां
हम जीवन में गूंथ रहे हैं सर्वनाश की लड़ियां
आंसू बनकर अब न बहेगा इन आंखों का पानी
सावधान जग निकट आ रही हुंकारों की घड़ियां

आमंत्रण

जीवन के सुखमय स्वप्नों से जिसे मृत्यु हो प्यारी
जलती हो जिसके अंतर में विप्लव की चिनगारी
बलिवेदी पर हँस हँसकर जो अपना शीश चढ़ाये
मेरे साथ साहसी कोई हो ऐसा तो आये।

' बुन्देलखाण्ड केसरी ' साप्ताहिक पत्र

हमारी कलम से

बुन्देलखाण्ड केसरी का यह छोटा सा विशेषांक हम उन व्यक्तियों को सहर्ष समर्पित करते हैं जो कि बुन्देलखाण्डी हैं, बुन्देलखाण्ड से प्रेम करते हैं और जो बुन्देलखाण्ड से थोड़ा सा परिचित हैं। खासकर यह विशेषांक हम उन नवयुवकों के हाथ में देना चाहते हैं जो कि अपनी मां के लिये अपनी जननी जन्मभूमि के प्रति अपना कुछ कर्तव्य समझते हैं। इस अंक में क्या खास बात है इसे तो पढ़कर ही जाना जा सकता है पर यदि सचमुच कोई इसे पढ़ेगा और वह मनुष्य होगा तो वह चार आंसू बहाये बिना न रहेगा। इस अंक में पूर्णतया राष्ट्रीय लेख कवितायें और चित्र हैं। इसे पाठक पढ़ें और पढ़ायें। इसे कई बार पढ़ें। संभव है इसमें भाषा संबंधी गलतियां हों, हमारे पास बहुत कम समय था तब भी हमको तीन दिन की देर हो गयी। पत्र साईक्लोस्टाइल से छाया गया है। इसमें कुछ कमी तो जरूर हो सकता है और उस समय जबकि हम एक बड़ी संख्या में प्रकाशन कर रहे हैं।

हमको फिर भी बहुत संतोष है कि हमारा बुन्देलखाण्ड केसरी इतनी सज-धज के साथ पाठकों के सामने उपस्थित हुआ है फिर ऐसी विकट परिस्थिति में जबकि इसके विरूद्ध एक सुसंगठित सरकार हो और उसके सैकड़ों जासूस इसके पता लगाने में दत्तचित्त हों पर यह हमारा सौभाग्य है कि हमने अभी तक उस सरकार के दांत खट्टे किये हैं और आगे उसमें टाटरी का प्रयोग करेंगे। हम उन लोगों का हृदय से धन्यवाद देते हैं जिन्हें केसरी के संबंध में कष्ट उठाने पड़े हैं।

साहित्यकार

जनपद हमीरपुर बुन्देलखण्ड का एक ऐसा भू-भाग है जहां न केवल शूरवीरों ने जन्म लिया अपितु श्रेष्ठ साहित्यकार भी हुये। ऐसे विद्वान साहित्यकारों की जनपद में एक लम्बी श्रंखला है जिन्हें हिन्दी साहित्य के मील का पत्थर कहा जा सकता है। जनपद का यह दुर्भाग्य रहा है कि कतिपय कारणों से उन्हें समुचित स्थान हिंदी जगत में अभी तक नहीं मिल सका है। इनमें कवि एवं गद्य लेखक दोनों ही सम्मिलित हैं। जनपद के कवियों का सम्यक विवेचन इस शोधग्रन्थ के अध्याय चतुर्थ, पंचम एवं षष्ठ में किया गया है किन्तु ऐसे साहित्यकारों को इस अध्याय के अंतर्गत स्थान दिया जा रहा है जिनकी या तो गद्य लेखन में ही विशेष रूचि थी अथवा गद्य व काव्य दोनों ही क्षेत्रों में जो समान अधिकार रखते थे। जनपद के दो ऐसे श्रेष्ठ साहित्यकारों डा0 श्यामसुन्दर बादल तथा श्री लक्ष्मीनरायण गुप्त 'कमलेश' को भी यहां स्थान दिया जा रहा है जिन्होंने इस जनपद के बाहर जन्म लिया किन्तु सारा जीवन साहित्य साधना में रत रहते हुये इस जनपद को समर्पित किया।

{1} डा0 गनेशीलाल बुधौलिया:

डा0 गनेशीलाल बुधौलिया जनपद के श्रेष्ठ साहित्यकारों में से थे। इनका जन्म 5 मार्च सन् 1920 को राठ नगर में हुआ था। इनके पिता स्व0 श्री मातादीन बुधौलिया एक प्रख्यात समाजसेवी एवं सम्मानित व्यक्ति थे। डा0 बुधौलिया ने एम0ए0 तक शिक्षा प्राप्त की एवं बी0एन0वी0 इण्टर कालेज राठ में हिन्दी के अध्यापक रहे। सन् 1964 में आगरा विश्वविद्यालय से 'बुन्देलखण्डी फड़ साहित्य' नामक शोध ग्रन्थ पर इन्हें पी-एच0डी0 की उपाधि से विभूषित किया गया। सन् 1970 में इन्हें आदर्श अध्यापक होने का राज्य पुरूस्कार प्राप्त हुआ। ये एक कुशल वक्ता थे। आकाशवाणी छतरपुर से ये वर्षो तक संबद्ध रहे। प्रायः आकाशवाणी से प्रसारित होने वाली सभी महत्वपूर्ण परिचर्चाओं /वार्ताओं में इनकी सहभागिता होती थी। इन्होंने 'पयस्विनी' तथा 'बेतवा वाणी' का सफल सम्पादन किया। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की। सेवानिवृत्ति के पश्चात ये राठ नगरपालिका के अध्यक्ष पद पर आसीन रहे। आप बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

झांसी के सम्मानित सदस्य भी थे। मृदुभाषी, सरल हृदय तथा स्नेहपूर्ण व्यवहार से सबका हृदय जीतने वाले हिन्दी के इस लब्ध प्रतिष्ठ वरिष्ठ साहित्यकार का एक लंबी बीमारी के बाद 18 सितंबर सन् 1994 को निधन हो गया।

(2) स्व0 बद्रीप्रसाद तिवारी 'धवल' :

स्व0 बद्रीप्रसाद तिवारी 'धवल' जनपद हमीरपुर के एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे। इनका जन्म सन् 1900 में खरेला (हमीरपुर) में हुआ था बाद में ये महोबा में रहने लगे। इनके पिता का नाम श्री मंगल प्रसाद तिवारी तथा माताजी का नाम श्रीमती राजरानी था। इनकी लिखी हुई कई लघु पुस्तकें प्रकाशित हैं। इनका लिखा एक ऐतिहासिक उपन्यास 'आल्हा ऊदल के बाद ' सन् 1959 में प्रकाशित हुई। 70 पृष्ठों की इस पुस्तक के प्रारंभ में 'समर्पण' शीर्षक के अंतर्गत दी गई कवि की निम्नांकित पंक्तियां उसके एक अच्छे कवि होने का प्रमाण हैं।

कफन बांध लिये सिर जिन स्वराज्य हितु, किये सार्थक निज बलिदान।

स्वार्थ अनीति ताप से व्याकुल मांग रहे हैं वह जलदान।

परस्वारथ सर पैठ हाथ ले, समता पुंगी फल है।
सेवा त्याग प्रेम का लेकर कुश अक्षत अरू जल है।
अमर शहीदों का श्रद्धा से करते जो तर्पण है।
उन्हीं समाजवाद भक्तों को, यह पुस्तक अर्पण है।

श्री तिवारी जी की एक अन्य पुस्तक 'श्री रामपुराण' अथवा 'कलियुग कल्याण' के नाम से है इस पुस्तक के प्रारंभ में मां सरस्वती तथा श्री गणेश जी की सुन्दर वन्दनायें दी गई हैं तत्पश्चात श्री रामचरित मानस की चौपाइयों के आधार पर रामनाम के महत्व का विस्तृत विवेचन किया गया है। इनकी लिखी एक अन्य पुस्तक वीर भूमि महोबा का संक्षिप्त इतिहास है। इसके अतिरिक्त 'सती राजरानी' व 'अमर आल्हा' नामक दो नाटकों की रचना भी इन्होंने की। कुछ अन्य महत्वपूर्ण साहित्य भी इनके द्वारा लिखा गया जो अप्रकाशित रूप में है। इस प्रकार स्व0 बद्रीप्रसादतिवारी 'धवल' के द्वारा भी जनपद की महत्वपूर्ण साहित्यिक सेवा की गई है।

(3) श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त 'कमलेश':

श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त 'कमलेश' भी जनपद के एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे। जैसा कि पूर्व में ही इंगित किया जा चुका है। इनका जन्म घाटमपुर (कानपुर) में सन् 1915 को दीपावली के दिन हुआ था। इनके पिता का नाम श्री सरजू प्रसाद तथा माताजी का नाम श्रीमती शिवदुलारी था। इनके जन्म के 6 माह बाद ही इनके पिता का स्वर्गवास हो गया जिससे इनके नाना मौदहा निवासी श्री मथुराप्रसाद जी ने इन्हें गोद ले लिया और इस प्रकार बचपन में ही मौदहा (हमीरपुर) में आ गये। ये श्री रामचरितमानस के प्रकाण्ड विद्वान थे। ये कवि एवं श्रेष्ठ कोटि के लेखक थे। इन्होंने सर्वप्रथम हस्तलिखित मधुप नामक पत्रिका लिखकर ओमर वैश्य महासभा से स्वर्ण पदक एवं मूल्यवान वस्तुयें शाल आदि उपहार में प्राप्त की। ये 'दिव्य वाणी' पत्रिका मौदहा के सम्पादक भी रहे। 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन जब प्रारंभ हुआ तो कुछ वर्षो तक उसके समस्त लेख स्व0 कमलेश जी द्वारा ही लिखे जाते थे। 'ओमर वैश्य हितैषी' पत्रिका का सम्पादन भी इन्होंने किया। इन्होंने उमा देवी रामायणी को देश की प्रख्यात कथावाचिका बनाया। ये बहुत अच्छे कवि भी थे। इनके द्वारा रचित आरती, प्रार्थनायें तथा अन्य कविताओं का संग्रह कथावाचिका उमादेवी के पास उपलब्ध है। इनकी दो रचनायें अवलोकनार्थ नीचे प्रस्तुत हैं-

(1)

तीर्थ रूप मानस

'अवधपुरी', 'रामजन्म', 'काशी' बाल लीला बनी
'वृन्दावन' ब्याह का अनूठा राम रंग है।
'बद्रीनाथ धाम' कर याचना उतंग पथ,
'चित्रकूट' चारू बनलीला का प्रसंग है।
जगन्नाथ धाम अति पतित उद्धार कथा,
'रामेश्वरधाम' रण क्रीड़ा की उमंग है।
पावन 'त्रिवेणी' राम राज्य का सुरम्य काल,
तीर्थ रूप मानस का एक एक अंग है।

(2)

मानस में सप्तपुरी

प्रथम बालकाण्ड है 'अयोध्यापुरी' सदृश्य,
दूसरा अवधकाण्ड 'मथुरा' समान है।
तीसरा अरण्यकाण्ड 'मायापुरी' मायारूप,
चौथे किष्किन्धा मध्य 'काशी' मूर्तिमान है।
सुन्दरकाण्ड 'कांची' सी पांचवी पुरी पुनीत,
छठा युद्धकाण्ड सी 'अवन्तिका' महान है।
'दारावती' सातवीं पुरी प्रसिद्ध उत्तर की,
सातों काण्ड मध्य 'सप्तपुरी' का विधान है।

इस प्रकार हिन्दी साहित्य के एक कुशल लेखक एवं कवि की भूमिका का निर्वाह सफलता पूर्वक करते हुये जनपद के इस प्रसिद्ध साहित्यकार का 3 फरवरी सन् 1977 को निधन हो गया।

(4) डा0 श्यामसुन्दर बादलः

बुन्देलखाण्ड के आचार्य परम्परा के कवि तथा साहित्यकार श्री बादल जी का जन्म सं0 1964 वि0 चैत्रकृष्ण भृगुवार 10 को ग्राम घाट कोटरा (झांसी) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गजाधर प्रसाद था। इनके प्राथमिक शिक्षा मऊरानीपुर में हुई तत्पश्चात अपने स्वाध्याय से संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी की अनेकों परीक्षायें उत्तीर्ण कीं तथा हिन्दी विश्वविद्यालय साहित्य सम्मेलन प्रयाग से बुन्देली के फाग साहित्य पर मौलिक शोध प्रबंध प्रस्तुत कर 'साहित्य महोपाध्याय' की उपाधि प्राप्त की।

श्री बादल जी पहले राठ में ब्रह्मानन्द इण्टर कालेज में संस्कृत के आचार्य रहे तत्पश्चात गांधी राष्ट्रीय विद्यालय इण्टर कालेज राठ में हिंदी व संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे। ये बुन्देलखाण्ड साहित्य परिषद द्वारा संचालित परीक्षाओं के परीक्षा मंत्री भी रहे।

इनकी चार काव्य कृतियां प्रकाशित हुई हैं (1) शिशु (2) मंगल प्रभात (3) सन्तमाला के सुमेरू तुलसी (4) सप्तपदी , इसके अतिरिक्त इनका अप्रकाशित काव्य साहित्य भी है जिनमें खाण्ड काव्य 'बैजूबावरा' विशेष उल्लेखनीय है। इनके बहुत से लेख और कवितायें 'मधुकर' 'जागरण' 'हिन्दुस्तान' और

'अमृत पत्रिका' आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं। इन्होंने ब्रह्मानन्द तरंगिणी' तथा बुन्देलखण्ड केशरी दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ का सफल सम्पादन भी किया है।

ज्योतिष शास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान डा0 बादल जी बड़े शान्त, सौम्य, गंभीर एवं साधु प्रकृति के साहित्यकार थे। इन्होंने कुछ कहानियां तथा लेख भी लिखे थे। ये कितने श्रेष्ठ कवि थे इसके प्रमाण हेतु सन् 1966 में प्रकाशित 'कुहरे की कलियां' में दी गई इनकी एक कविता अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहा हूं।

वैषम्य

उधर मखमली शैया पर , है मनुज व्यजन डुलाती।
नग्न भूमि पर यहां, क्लांति की तपन नींद बन जाती।
महलों के मणिदीप वहां, नभ तारों से इठलाते।
कितने यहां तमिस्र कुटी में, जीवन दीप जलाते।
सप्त स्वरों की साधें, झुक झुक वहां सलाम बजातीं।
यहां वेदना की भीड़ें, घुट पिस यों ही मर जातीं।
उधर उठ रही नूपुर ध्वनि है इधर कलेजा फटता।
वहां वर्ष पल बना यहां पर पल पल युग सा कटता।
प्रमदाओं के हार टूट कर मुक्ता वहां बिखरते।
यहां नयन सीपी से ढलकर मानस मुक्ता झरते।
वहां परोसा गया स्वान के सम्मुखं षटरस भोजन।
कब से मचला हुआ यहां पर टुकड़े को जीवन धन।
जिन पर वहां लुटाये जाते हैं असंख्य पाटाम्बर।
पंचतत्व के वे ही पुतले, प्रायः यहां दिगंबर।
क्यों वैषम्य अरे इतना मानव मानव में धाता।
अगर कर्म तो जगन्नियन्ता, उसका कौन विधाता।
हम कपूत हो सकते हैं पर पिता न कुपिता होता।
तेरे सम्मुख एक हंस रहा एक अरे क्यों रोता।
यदि है कहीं बहाई सृष्टः समाजवाद की धारा।
हम भी आप्लावित हों उसमें धोकर संचित सारा।

इस प्रकार जनपद झांसी में जन्म लेकर सारा जीवन जनपद हमीरपुर में रहकर साहित्यिक ज्योति प्रज्जवलित करने वाले महान कवि व साहित्यकार डा0 श्यामसुन्दर बादल की जीवन ज्योति 4 जुलाई सन् 1987 को सदा के लिये बुझ गई।

(5) श्री उद्धवप्रसाद सिंह यादवः

इनका जन्म 1 मई सन् 1922 को ग्राम कुन्हैटा (जालौन) में अपने ननिहाल में हुआ था। वैसे ये मूल निवासी ग्राम औड़ेरा-राठ के हैं। इनके पिता का नाम श्री खलक सिंह था। इन्होंने एम0ए0 तक शिक्षा प्राप्त की तथा 30 जून सन् 1982 तक बी0एन0वी0 इण्टर कालेज राठ के प्रधानाचार्य पद के दायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वहन किया। ये एक ओजस्वी कुशल वक्ता हैं। इन्होंने कई लेख लिखे हैं। इनके लेख प्रायः बी0एन0वी0 इण्टर कालेज राठ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'पयस्विनी' में प्रकाशित होतेरहे हैं। इनके लेख वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाओं एवं राजनैतिक विसंगतियों पर आधारित रहे हैं। इनकी लिखी हुई दो पुस्तकें (1) मेरी जीवन सरिता , एवं (2) भारत में प्रजातंत्र अभी अप्रकाशित हैं। इन्होंने कुछ कवितायें भी लिखी हैं। ये स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रहे तथा एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हैं। सन् 1946 में रियासतों के विरूद्ध चलाये गये आंदोलन 'प्रजामण्डल' के आप सचिव रहे। इस प्रकार श्री उद्धवप्रसाद सिंह यादव द्वारा जहां एक ओर सामाजिक आन्दोलनों में रचनात्मक भूमिका का निर्वहन किया जा रहा है वहीं अपनी सशक्त लेखानी के माध्यम से साहित्य की भी महत्वपूर्ण सेवा की जा रही है।

(6) स्व0 बिहारी लाल विश्वकर्मा:

स्व0 बिहारीलाल विश्वकर्मा का जन्म सन् 1901 में सरीला राज्य में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामयहाय विश्वकर्मा था। इनके पिता निधर्न थे। ये निर्धनता के कारण केवल मिडिल तक ही शिक्षा प्राप्त कर सके। इनकी शादी श्रीमती कस्तूरी देवी के साथ हुई। प्रारंभ में ये रियासत में पी0डब्ल्यू0डी0 के सर्वे में पटवारी बने किंतु बाद में ये स्वतंत्रता संग्राम के एक कर्मठ सेनानी बन गये। इनकी पत्नी भी स्वतंत्रतासंग्राम सेनानी रहीं। कई बार स्वतंत्रता संग्राम की लडाई में जेल गये। ये एक अच्छे लेखक भी थे और स्वयं ही कृतियां प्रकाशित कराकर उन्हें बेचते थे इनकी मुख्य प्रकाशित कृतियां निम्न हैं- (1) कर्मयोग (2) उज्जवल भविष्य (3) कुछ मानव धर्म कर्म (4) कुछ भारतीय पर्व (5) मेरे विचार (6) पन्द्रह अगस्त (7) जीवन परिचय (8) भारतीय संस्कृति के अंश (9) युग सन्धि (10) सन्देह (11) कष्टों की जननी जनसंख्या बढ़ोत्तरी। लेखक की सभी कृतियों में आध्यात्मिकता के प्रति गहरी आस्था एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना व्यक्त हुई है। हिन्दी के एक अच्छे साहित्यकार एवं प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी स्व0 बिहारीलाल विश्वकर्मा की मृत्तु दिनांक 6 फरवरी सन् 1997 को हुई।

उपर्युक्त साहित्यकारों के अतिरिक्त जनपद में अन्य कई साहित्यकार ऐसे हुये हैं जो अच्छे कवि भी हैं, जैसे श्री चन्द्रिकाप्रसाद सक्सेना 'कीर्ति', डा0 गणेश दत्त शुक्ला, श्री कालकाप्रसाद सक्सेना 'मकरंद', डा0 अजिर चौबे, श्रीपत सहांय रावत , डा0 जमील उद्दीन 'जमील', श्री उमाशंकर नगायच , श्री भारतेन्दु अड़जरिया, श्री रामदत्त अजेय तथा स्व0 लक्ष्मीप्रसाद वियोगी। किंतु इन साहित्यकारों का पूर्ण परिचय अध्याय चतुर्य एवं पंचम में कराया गया है इस कारण यहां केवल नामोल्लेख ही किया जा रहा है। इस प्रकार साहित्यिक दृष्टि से भी जनपद हमीरपुर द्वारा राष्ट्र की अतुलनीय सेवा की गयी है।

****

तृतीय अध्याय

हमीरपुर जनपद की काव्य-परम्परा

(1) तत्कालीन काव्य प्रवृत्तियां

(2) आधुनिक काव्य प्रवृत्तियां

****

हमीरपुर जनपद की काव्य परम्परा

﴾1﴿ पुराकालीन काव्य प्रवृत्तियां:

हमीरपुर जनपद की पुराकालीन काव्य प्रवृत्तियों से तात्पर्य उन कवियों की रचनाओं से है जो स्वतंत्रता प्राप्ति ﴾ 15अगस्त सन् 1947ई0 ﴿ तक अथवा उसके पूर्व विद्यमान थे। जनपद के प्राचीन कालीन कवियों का जो विवरण प्राप्त हो सका है उसके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उस काल में वीर रस, श्रंगार रस तथा भक्ति रस प्रधान काव्य का सृजन हुआ। इस प्रकार के काव्यों की सामान्य विशेषतायें इस प्रकार हैं:-

1. युद्ध वर्णन :

जनपद का चन्देलकालीन युग आर्थिक एवं साहित्यिक दृष्टि से समृद्धिशाली रहा है। चन्देल वंशावली के अनुसार नन्नुक ﴾लगभग सन् 830 ई0 से 850 ई0 तक﴿ से चन्देल युग का सूत्रपात हुआ जो अन्तिम शासक कीरतपाल ﴾सन् 1545 ई0﴿ तक चला। इस पूरे काल में युद्ध होते रहे। चन्देलों के उपरान्त बुन्देलों मराठों व अन्य जिन मुगल शासकों का शासन रहा, युद्ध उनके लिये अनिवार्य आवश्यकता बनी रही। इसका स्पष्ट प्रभाव कवियों पर पड़ना स्वाभाविक ही था। कई कवि तो केवल कवि ही नहीं बल्कि योद्धा भी थे इस कारण वे युद्ध में तलवार से दुश्मन का सामना करते थे और कवितायें भी रचते थे। इस कारण जो रचनायें कवियों द्वारा की जातीं थीं वे केवल कोरी कल्पना नहीं बल्कि यथार्थ पर आधारित होती थीं। यहां यह भी उल्लेखानीय है कि जो कवि जिस राजा के यहां आश्रित होता था उसकी प्रशंसा में आकाश -पाताल एक किये रहता था। छोटे - छोटे सामन्तों के यहां भी उनके गुणानुवादक रहते थे। इस प्रकार जो कवि इस समय हुए उन्होंने युद्ध के वर्णन तो किये ही अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में भी आतिशयोक्ति के साथ रचनायें कीं। उसके बाद भी काफी समय तक कविगण अपने पूर्व में हुए युद्धों के वर्णन को अपनी रचनाओं का विषय बनाते रहे। इस प्रकार वीर रस प्रधान काव्य का सृजन प्रचुर मात्रा में हुआ। जैसे संवत्

1798 में तहसील राठ अंतर्गत ग्राम जलालपुर के कवि ज्ञानी जू ने ' वीर विलास ' काव्य कृति की रचना की जिसमें उन्होंने चौहान से चन्देलों के होने वाले युद्ध का सविस्तार वर्णन किया है।

सत्रह सै अठ्ठानवे ज्ञानी कर्यो प्रकास।
सावन बदी तिथि दुहज रवि प्रगट्यो वीर विलास ।

तथा

गाये गुन गन्नेश के, ज्ञानी पाई बुद्धि।
चौहानन चन्देल को बरन बतावत जुद्धि ।

अन्यत्र एक स्थान पर रणभूमि में लाखान के घिर जाने पर आल्हा की माता देवलदे अपने वीरों से कहती है-

पहनहु पलट्टौ फौज पै सम्मुख ह्वै कीजै समर ।
यह पूतो सनौ न चूकिये सदा नहीं कोउ अमर ।

इनके अतिरिक्त उस काल के ख्यातिलब्ध कवि मण्डन, गुमान मिश्र, कवि खुमान, कवि बैताल व प्रताप साहि आदि ने भी विभिन्न युद्धों का वर्णन अपनी काव्य कृतियों में किया है।

2. श्रंगार रस की बहुलता:

जनपद हमीरपुर के प्राचीन कालीन कवियों के काव्य साहित्य पर दृष्टिपात करें तो एक बात की समानता प्रायः सभी कवियों में है और वह है श्रंगार रस से परिपूर्ण काव्य सृजन। लगभग सभी कवि श्रंगार रस की ओर उन्मुख रहे। उदाहरण के लिये कुछ कवियों की रचनायें प्रस्तुत हैं:-

तहसील राठ के प्रसिद्ध कवि जहां भक्ति पूर्ण रचनायें करने में सिद्धहस्त थे वहीं श्रंगार रस पर भी सुन्दर रचनायें लिखी हैं , प्रसिद्ध कवि रावत खूबचंद्र की एक रचना देखिये -

मोरी मान कही गैलारे, सांझ भई न जा रे।
आंगू गॉव नजीक नहीं है, चोर लगत बटमारे।
आवे रात रतोंध सास को, पति परदेश हमारे।
खूबचंद्र मनमानी हूहै, दैहों पलंग बिछा रे।

तथा

तेरे मोह लियो मृदु बोलन, मुख ऊपर दुर डोलन।

आंख लगत नहिं छिन छिन कांखत, लख तिल मजु कपोलन।

कंचुक भुजन घांघरी कट बिच, चूनर नील निचोलन।

चंचल द्रग मृग शावक लाजत, राजत खंज कपोलन।

खूबचंद्र मुसक्यान माधुरी, लखात विकत बिन मोलन।

इसी प्रकार ग्राम कुल्हैण्डा-राठ के भरतू दीक्षित की भी एक सुंदर रचना देखिये -

तोरे मधुर पैजना बाजैं, गोरे पग में राजैं।

प्रातकाल उठ चलीं जरूरी आई तला सें भाजैं।

लुड़क जात टकनन के खालैं, छांड़ कड़ी आवाजें।

भरतू परैं काऊ के ऊपर भादों कैसी गाजैं।

सरीला के लाला शिवदयाल की एक सुंदर रचना देखिये जिसमे उन्होंने सुंदर राधा का वर्णन किया है जो पानी भरने यमुना तट पर जा रहीं हैं :-

जाती भरन नीर जमुना के, देकें कजरा बांके।

पैजनियां अरु पायजेब के पारें जात छमाके।

आगें जौन गली हो कड़ गईं तहं खिंच रहे सनाके।

शिवदयाल मोहन राधा को बैठे बांधें नाके।

इसी प्रकार कुलपहाड़ के लोकप्रिय कवि पद्मसिंह जो रामप्रसाद उपनाम से लिखाते थे, की एक रचना देखिये-

ठाढ़ी बांध गैल में नाके, देव गमन रमना के,

बिन हथयार बिना फौजन के पार लेत हैं डांके।

इक तो वार जात न खाली दूजे होत न ठांके,

'रामप्रसाद' भला मनसई में, लगन चहत हैं टांके।

जैतपुर (कुलपहाड़) के मुंशी वल्देव प्रसाद भट्ट तो इससे भी आगे हैं :-

भर गई ज्वानी के मद मैंया, अब का रजउ करैंयां,

हँसत बतात जात सखियन संग डार गरे में बहियां।

ढूंढ़न लगी छैल गलियन में, लेन लगी एड़ैंयां।

दृष्टिपात घायल भये वल्देव अब का रजउ करैंयां।

श्रीनगर (महोबा) के प्रसिद्ध कवि पं0 परशुराम पटैरिया अपनी बात कुछ इस प्रकार कहते हैं :-

चलियो इन नैनन सें डरकें, जे लग जात अभर कें।
चितवन चकित चतुर चौगिरदां, तिरछी भौहें करकें।
सब हथयार मात कर डारे, राखे सूरन धर कें
बिना जख्म की पीर जिगर में उबले कईयक मर कें।
परशुराम बींधत सब कोऊ, बाजे बाजे बरकें।

श्रीनगर (महोबा) के ही पं0 हरदयाल शर्मा बूंदा लगाये हुए एक स्त्री का कितना कलात्मक चित्रण करते हैं, इसे निम्न रचना में देखिये :-

बूंदा दओ बेंदी के नीचें, सोहे भौंह दुबीचें,
जगमग होत अंग गोरे में, देखो जाय नगीचें।
चमचमात घूंघट पट भीतर, जैसें बुध ससि बीचें।
द्विज हरदयाल' दिखैयन केरो लेत चित्त सो खीचें।

बृज की बालायें यमुना तट पर स्नान करने जाती हैं उस समय का कितना सजीव व सुंदर चित्रण कवि करता है इसे ग्राम भरवारा (महोबा) के द्विज महेश की इस रचना में देखिये :-

जातीं जमना तीर सपरतीं, बृज बाला मन हरतीं।
चरन कमल सुंदर मुख धोतीं, चन्द्र कालिमा हरतीं।
कनक बदन पै किरन भानु दामिन प्रभा पसरतीं।
'द्विज महेश' रवितनया के तट, कोटिन रतीं विचरतीं।

एक सुंदर स्त्री के गाल पर एक तिल है इसका वर्णन छिकहरा (महोबा) के कवि मूलचंद ने कितने रोचक ढंग से किया है, निम्न रचना में देखिये :-

जे तिल लगत गाल को प्यारो, गोरी भौजी त्वारो।
घरी दोक देखन दे हमखां, घूंघट को पट टारौ।
देर रात हरयाई हरदम गोरो बदन तुम्हारौ।
'मूलचन्द' कयें हंस हेरन में, मन भर गओ हमारो।

श्रंगार रस से ओत प्रोत हास्य व्यंग की यह रचना भी कम रोचक नहीं है जिसे तहसील हमीरपुर के अंतर्गत ग्राम महेरा के मातादीन दीक्षित ने लिखा है -

जुबना उठे जोर मस्ती में, भये शोर बस्ती में,
अंगिया केर तनी टो डारीं, बड़ी जबरदस्ती में।
बलम इन्हें नादान मिले हैं, जीतें न कुस्ती में,
'मातादीन' इन्हें वर ढूंढ़ो, सावन की सस्ती में।

ग्राम अकटौंहां (चरखारी) के ख्यातिप्राप्त लोकप्रिय कवि ख्यालीराम का श्रंगार वर्णन तो बेजोड़ है एक सुंदर स्त्री के केशों के वर्णन में नयी उपमायें देखिये -

पटियां गोला मुख पै पारें, सेंदुर मांग संवारें,
मानो चन्द्रग्रहा के ऊपर, कागा पंख पसारें।
तिरबेनी बेनी खां देखें, रह गई सिमिट किनारें।
ख्यालीराम दरस के होतन, कलिमल सब धो डारें।

इस प्रकार उपर्युक्त सुंदर रचनायें इस बात का प्रमाण हैं कि जनपद के प्राचीन कालीन कवियों ने श्रंगार रस में काव्य साहित्य का सृजन प्रमुखता से किया है। उन दिनों के प्राय: सभी कवियों ने श्रंगार रस में एक से एक बढ़कर सुंदर रचनायें की हैं।

3. भक्ति पूर्ण काव्य का सृजन :

प्राचीन कालीन कवियों ने जहां एक ओर युद्धों का सजीव चित्रण किया, श्रंगार रस में अपनी लेखनी चलाई वहीं भक्ति पूर्ण रचनायें भी बहुत संख्या में लिखी गईं। उन दिनों के लगभग सभी कवियों ने भक्ति भाव पूर्ण उत्कृष्ट रचनायें कीं। प्राचीन कालीन कवियों ने प्रचुर मात्रा में उपलब्ध भक्ति काव्य के आधार पर इस काल को भक्ति काल कहा जाना पूर्णतया न्यायोचित है। तत्कालीन कवियों में से कुछ की रचनाओं का वर्णन नीचे किया जा रहा है -

प्रसिद्ध कवि खूबचंद रावत की प्रकाशित काव्य कृतियों में एक काव्य कृति ' कृष्ण कुसुमाकर ' भी है जो श्रंगार - वियोग एवं भक्ति काव्य की एक अनूठी कृति है। उसकी एक सुंदर रचना देखिये-

छप्पय

जे पद सेवत नेम सहित, चतुरानन सारद।

जे पद सेवत सम्भु सदा सनकादिक नारद।

जे पद सिद्ध मुनीस सेव्य चारण विद्याधर।

मिल वृन्दारक वृन्द इन्द्र सेवै निसि बासर।

कहत रसीले जुग जोरकर जे पद जन संकट हरण।

ते पद पंकज घनस्याम के कुसुमाकर मंगलकरण। ॥1॥

× × × × × ×

जे पद घर घर करत फिरत दधि माखन चोरी।

जे पद कानन बीच रोक राखत बृज गोरी।

द्रुपद सुतायत हेत तुर्त धाये हैं जे पद।

जे पद हन चानूर मार तीरे हैं गजरद।

कहत रसीले जुग जोरकर जे पद जग पोषक भरन।

ते पद पंकज घनस्याम के कुसुमाकर मंगलकरण। ॥5॥

तांतीलाल देवपुरिया भगवान शिव की वन्दना अपने इन भाव प्रसूनों से करते हैं :-

बन्दौं शिवशंकर अविनासी घटवासी,

वासी रहत सभी के उर में, उर में करत प्रकाशी।

काशी ब्राजत श्री महेश हैं, है गंगा सिर खासी।

खासी विपत दास की काटत, काटत जन्म की फांसी।

फांसी तांती काट देत हैं, हैं तीसें विश्वासी।

हनुमान के अनन्य भक्त ख्यातिलब्ध कवि मुनिलाल रोग निवारण हेतु अपने आराध्य का स्मरण इस प्रकार करते हैं :-

कालज्वर वाय वायु विषमत ज्वर मेटे और,

गुल्म अरू जलंदर भगंदर को जारे तूँ,

नित्त ज्वर मीसे और पीसे सो पित्त ज्वर,

चौथिया तिजारी ताप परहा पछारे तूँ।

किंचित विध्वंश अंस राखो उपदंश नाह,

शूल वायु शूल कुष्ठ मूल से उखारे तूँ,

वायु के लाल हो कृपाल मुनिलाल आल,

नासै सविध रोग दास को उबारे तूँ।

श्री सूरश्याम तिवारी अपने आराध्य राधा-कृष्ण का स्मरण कुछ इस प्रकार करते हैं :-

सुमरो कृष्ण राधिका माई, तज देव मन कुटिलाई।

जिन-जिन सुमरन करो हरि को, जग में होत बड़ाई।

अजामील सों री गज, गनिका, हर सुमरें गति पाई।

ध्रुव प्रहलाद भरत भये ऐसे, जिन की जस रओ छाई।

सूर श्याम कयें सुमरन कर लेव, तुमखां राम धुआई।

श्री महीपत द्विज अपने इष्ट श्रीराम के नाम की महत्ता का वर्णन इस प्रकार करते हैं :-

दोहा : राम नाम के लेत ही, होत पाप को नास।

जैसे तिनगी आग की, परत पुराने घास।

टेक : जग में राम नाम सुखदाई, कभी न भूलो भाई।

छन्द : ऐसा है नाम, सुख केर धाम, भज आठ याम हिरदै माहीं।

दुख दूर जात पातक वहात है सत्त बात कहें तुम पाहीं।

उड़ान : नर तन मुसकिल मां मिलत, कहें तुमें समुझाई।

सीतापति के नाम को, भूल न जैये भाई।

× × × × × × × × ×

और मुंशी बल्देव प्रसाद भट्ट की कामना है कि भगवान श्रीकृष्ण उनकी जीवन नैया पार कर दें -

नैया कर देव पार हमारी, नट नागर गिरधारी।

भादों भरन भरी है नदिया, पोंन चलत बैठारी।

डोलत फिरत बिना करिया की, भीर परी मंझधारी।

बल्देव कहत दोऊ कर जोरें, मैं हों सरन तुम्हारी।

पं0 परशुराम पटैरिया तो स्वयं को अवगुणों की खान बताते हुये भी ईश्वर की कृपा दृष्टि चाहते हैं क्योंकि ईश्वर कृपालु हैं -

रघुबर राखो लाज हमारी, आये शरन तुम्हारी।

औगुन अमित भरे अघ तन में, कपटी कुटिल अनारी।

सौ औगुन प्रभु लेत न जनकें, ऐसे हैं हितकारी।

समदरसी है नाम तुम्हारो, आरत हरन खरारी।

भालु सुकण्ठ, विभीषण उबरे, गौतम की तिय तारी।

परसुराम निज दरसन दीजे, अपनो जान भिखारी।

चरखारी नरेश महाराजा जुझार सिंह जू देव भी श्री गणेश के चरणों में नतमस्तक हैं -

ध्याइये गणपति शिवनंदन,

विघ्न हरण इक दन्द गजानन गिरजा सुवन,

हरहु जग क्रन्दन,

अष्ट सिद्धि नव निद्धि बढ़ावन,

बुद्धि राशि मेटन दुख दंदन।

× × × × × × × × × ×

उपर्युक्त कवियों की रचनायें इस बात का प्रमाण हैं कि प्राचीन कालीन कवि ईश्वर के अस्तित्व मे गहरी आस्था रखते थे इसी कारण उस काल में भक्ति-काव्य प्रमुखता से सृजित किया गया।

भाषा

प्राचीन कालीन कवियों ने मुख्य रूप से अपने क्षेत्र में बोली जाने वाली बुन्देली का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। क्षेत्र के अनुसार बुन्देली के रूप भी बदले हैं जैसे हमीरपुर जनपद के मध्य भाग में बुन्देली का शुद्ध रूप बोला जाता है जबकि हमीरपुर जिले के पश्चिमोत्तर भाग राठ तहसील में बुन्देली के लोधान्ती रूप का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार जनपद के चरखारी क्षेत्र महोबा तथा जनपद के दक्षिण पूर्वी भाग में बनाफरी का प्रयोग होता है इस क्षेत्र की बनाफरी में बघेली का अधिक मिश्रण है[1] ।

इसी प्रकार हमीरपुर जनपद की उत्तर पूर्वी सीमा पर केन नदी प्रवाहित होती है जो

---

1. बुन्देली व उसके क्षेत्रीय रूप - डा0 कृष्ण लाल हंस, पृष्ठ-398 से 415 तक।

हमीरपुर व बांदा जिले की सीमा का निर्धारण करती है। इस नदी के दोनों ओर की तटवर्ती सॅंकरी पट्टी में बोली जाने वाली बोली कुन्द्री कहलाती है। डा0 गियर्सन ने अपने भारतीय भाषा सर्वेक्षण में इसे यह नाम दिया है और उसने हमीरपुर जनपद में ' कुन्द्री ' बोलने वालों की संख्या ग्यारह हजार बताई है[2] ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जो कवि जिस क्षेत्र का निवासी था उसकी रचनाओं में बुन्देली का वही रूप परिलक्षित होता है।

विविध छन्द

इस काल के कवियों ने अपनी रचनाओं में विविध छन्दों का प्रयोग किया है उनमें तोमर, उल्लाला, चौपाई, दोहा, कुण्डलिया, छप्पय, सुंदरी, कवित्त या मनहर तथा धनाक्षरी प्रमुख हैं।

(2) आधुनिक काव्य प्रवृत्तियां

आधुनिक काव्य प्रवृत्तियों का तात्पर्य उस काल के कवियों की रचनाओं से है जो या तो सन् 1947 के बाद दिवंगत हुए अथवा वर्तमान समय में अभी विद्यमान हैं। ऐसे कवियों की रचनाओं का गहन अध्ययन करने के पश्चात उनमें जो मुख्य काव्यगत विशेषतायें पाई गयीं उनका विवरण निम्न प्रकार है-

1. वीर रस एवं श्रंगार रस की कमी

आधुनिक काल के कवियों में विशेष परिवर्तन देखने को यह मिला कि वीर रस एवं श्रंगार रस से ओत-प्रोत रचनाओं में बहुत कमी आ गयी। इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि उक्त रसों में रचनायें लिखना बन्द कर दिया गया किन्तु उसमें प्राचीन कालीन कवियों के समान बहुलता का अभाव हो गया। जनपद के जिन कुछ कवियों ने इस पर अपनी लेखनी चलाई उनमें मुस्करा (मौदहा) के श्री रामगोपाल दीक्षित का नाम विशेष उल्लेखनीय है। वीर रस में जिस प्रकार के ओज पूर्ण काव्य का सृजन कवि द्वारा किया गया है वह हिन्दी काव्य साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

---

2. लिंग्विस्टि सर्वे आफ इण्डिया खण्ड - 9 भाग - 1 पृष्ठ - 132

उदाहरण के लिये 'पद्मिनी का बलिदान' अप्रकाशित खण्ड काव्य में अलाउद्दीन के प्रथम आक्रमण का एक सजीव चित्रण देखिये -

धाँ धाँ कर तोपें छूट चलीं,
लोगों में हा-हा कार मचा।
कँप उठीं दुर्ग की दीवारें,
गढ़ बीच प्रलय संहार मचा।

होती थी धरती डगर-मगर,
सेना के क्रिया कलापों से।
रणभूमि धंसी सी जाती थी,
खुद कर घोड़ों की टापों में।

× × × × × × × ×

जब जोश ज्वार में दल पयोधि,
बढ़कर गढ़ से टकराता था।
तब लघुतम तरिणी सदृश दुर्ग,
चित्तौर डगमगा जाता था।

और इसी कवि ने जब अपनी लेखनी से श्रृंगार रस के शब्दों को गढ़ा तो कुछ इस प्रकार बन गया -

आंखों में पावस बन छाये, अधरों के मधुमास रंगीले
घिरे गगन में बादर कारे
बरस पड़े नैना कजरारे
सह न सके खारी बूँदों को, मन चातक के पंख चुटीले।

× × × × × × ×

इसी प्रकार इंगोहटा (हमीरपुर) के कवि श्री विजयचन्द सिंह चौहान की प्रकाशित पुस्तक ' रणनिनाद ' से ली गयीं निम्न पंक्तियां पठनीय हैं।

उठ प्रिये भवानी बन कराल।
युग युग से सिमटी लपट ज्वाल।
कब तक केशों में रखोगी
ढककर फूलों में प्रलय ज्वाल

और जब इसी कवि ने श्रृंगार को अपनी कविता में समेटा तो गीत के रूप में कह उठा -

मैं गगन का गीत हूं तुम वन्दना हो धरा की,
मैं सपन का स्वाग हूं, तुम हो जनम की आरसी।
मैं तुम्हारे बिम्ब को अमरत्व देना चाहता हूं।
तुम इसे स्वीकार कर लो।

वीर रस में कविता करने वाले एक अन्य कवि राठ निवासी श्री रामखिलावन निरंजन का भी जनपद में विशेश स्थान है हिन्दी काव्य साहित्य के लिये महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार कु0 अम्बे मिश्रा श्रृंगार रस में लिखने वाली नवोदित कवियित्री हैं। अन्य कवियों का भी इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान है किन्तु प्राचीन कालीन कवियों की तुलना में वीर एवं श्रृंगार रस में कविता सृजन आधुनिक काल के कवियों द्वारा कम ही किया जा रहा है।

2. प्रकृति चित्रण :

इस काल में कई कवि ऐसे हुये हैं जिन्होंने प्रकृति चित्रण के माध्यम से मानव समाज को महत्वपूर्ण संदेश दिये हैं। कुछ कवियों द्वारा प्रकृति का उपदेशात्मक रूप, कुछ के द्वारा उद्दीपक और गौणतः अलंकृत रूप और कुछ के द्वारा प्रकृति का आलम्बनात्मक रूप प्रस्तुत किया गया। कुछ उदाहरण देखिये -

राठ के वरिष्ठ कवि श्री मोहनलाल बुधौलिया द्वारा किया गया प्रकृति का श्रृंगार परक चित्रण देखिये -

मुतियन वाल चूनर रात हुई मैली,
बदल लिया नीला अम्बर कुछ शर्मा कर
बिखरे काले केश सम्भाले ऊषा ने,
अपने महदीले हाथों रोली भर भर कर।
फिर उठा लिया धीरे से सिर पर स्वर्ण कलश,
जो डूबा था अब तक कालिन्दी के तट पर।

इसी प्रकार ग्राम लरौंद (हमीरपुर) के प्रसिद्ध कवि श्री चन्द्रिका प्रसाद की प्रकाशित पुस्तक ' पार्वती ' प्रकृति के मानवीकरण की अनुपम कृति है । ऐसा प्रकृति चित्रण हिन्दी के कवियों के लिये अनुकरणीय है।

दोनों ओर पहाड़ कगारे,

श्यामल गोल चीड़ के वृक्षों की हरीतिमा से शोभित हैं।

और बीच की गहरी घाटी,

में बहती तन्वंगी सलिला।

× × × × × × × ×

और जनपद के गौरव हमीरपुर के प्रख्यात कवि श्री मंजुल मयंक के गीत तो अनूठे हैं :-

रहने दो प्रिये नींद के ये झूठे बहाने,

देखो तो अभी चांद सितारे नहीं सोये।

है चांदनी का पालना किरनों की है डोरी,

तारे मचल रहे हैं गगन गा रहा लोरी।

रूक रूक पवन झुला रहा दे दे के थपकियां,

रजनी के मगर राजदुलारे नहीं सोये।

इसी प्रकार जनपद के अन्य कई कवियों ने प्रकृति का चित्रण अपने अपने ढंग से किया है -

3. सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं पर आक्रोश :

आधुनिक काल के कवियों की यह एक मुख्य विशेषता है आज के लगभग सभी कवियों ने समाज में व्याप्त सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं एवं अन्य कुरीतियों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है एवं ऐसे महत्वपूर्ण विषयों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है।

जनपद के प्रख्यात कवि स्व0 डा0 हरगोविन्द सिंह की मृतक भोज के प्रति आक्रोश व्यक्त करती एक मार्मिक बुन्देली रचना देखिये -

बिलखात महतारी छाइ जहाँ अंधयारी,

घर करै भाँय भाँय जैसें खांय जात है।

लुटगौ सुहाग-सोम, कौंरी कली मुरझानी,

विधवा जवान गऊ ऐसी डिड़यात है।

बड़े-बड़े बैठे उतै खात पुरी मालपुआ,

नाँव, दिन-तेरहईं जुरत बरात है।

एक-एक दानो अरे अंसुवन सानो जहाँ,

ऐसे की रसोई हाय कैसें कें रिहात है।

दहेज व कानून की समस्या से आक्रोशित श्री सीताराम सिंह विद्रोही की ये रचना देखिये -

ऐसा कानून लचर काहू न आवै काम,

खोले अदालत मानों दफा की दुकान है।

कीमत दो नम्बर की दफा ही खरीद लेत,

बिना रकम दफा होउ ऐसा विधान है।

या ही सों या दहेज दानव विकराल बनो,

दम्भ दरसावै दौड़ देख के धसान है।

नर है न्यायालय तब नारी की सुनै नाहिं,

गुप्त है विधान या सों लुप्त समाधान है।

लोकप्रिय गीतकार नाथूराम पथिक कहते हैं -

सूरज अंधेरी बस्तियों में खो नहीं सकता,

सच है नदी का जल कभी भी सो नहीं सकता।

आदमी जो आदमी संग हँस नहीं सकता।

रो नहीं सकता,

सच मानिये वो आदमी, आदमी तो हो नहीं सकता।

ग्राम सैना (राठ) के श्री हरी सिंह की धर्म परिवर्तन पर यह व्यंग रचना देखिये -

यह छूत अछूत की बात हरी, हमको न रूची नहिंआगे रूचेगी।

मतभेद अनेक समाज में डाल के स्वांग अनेक रचे व रचेगी।

थिगरी अपमानित मान को पाकर, अन्य किसी कथरी में टंकेगी।

क्रम श्वास का ये चलता ही रहा, तो न धर्म न वर्ग न जाति रहेगी।

श्री गिरजा दयाल सक्सेना अमीर व गरीब के बीच की खाई का चित्रण एक गीत में इस प्रकार करते हैं -

क्या ख्याल है ?

बड़े पेट भर रहे ठसाठस,

छोटों पर भीषण अकाल है।

× × × × × × ×

संसार की मौलिकता नष्ट होने का कारण राठ के प्रसिद्ध कवि स्व0 उमाशंकर नगायच ने यह बताया है -

मानव-मानव की दूरी अब होती जाती है।

इसीलिये मौलिकता जग की खोती जाती है।

आज एकता का अलाप हम सभी यहां करते हैं।

सद्भावों का है अभाव सब दुराभाव रखते हैं।

× × × × × × ×

उपर्युक्त कुछ रचनायें ये सिद्ध करती हैं कि सामाजिक एवं आर्थिक विषमतायें समाज में जो व्याप्त हैं उनके उन्मूलन के प्रति वर्तमान काल के कवि प्रयत्नशील हैं। समाज में व्याप्त अन्य सभी कुरीतियों से समाज मुक्त हो सके कविगण निरंतर अपनी लेखनी से इस हेतु प्रयासरत हैं।

3. राष्ट्रीय चेतना :

वर्तमान काल के प्रायः सभी कवि राष्ट्रीय चेतना के प्रति समर्पित रचनायें कर रहे हैं। प्राचीन कालीन कवियों में यह विषय लगभग नगण्य रहा है आज का कवि अपने राष्ट्र के उत्थान एवं सामाजिक उत्थान के प्रति सजग है अपनी लेखनी से वह राष्ट्र के नागरिकों को निरंतर जाग्रत करता है। इसके लिये चाहे उसने व्यंग रचनायें की हों या ओज पूर्ण गीतों का सृजन किया हो, उसका मुख्य उद्देश्य अपने राष्ट्र को प्रगति पथ पर बढ़ता देखना ही है। कुछ कवियों की रचनाओं के नमूने देखिये -

वरिष्ठ कवि श्री मंजुल मंक की लेखनी तो इस पर अपना जादुई प्रभाव रखती है।

गाते हैं अम्बर के तारे, धरती की कंकड़ियां रे,

आपस में जंजीर न खींचो, टूट न जायें कड़ियां रे।

× × × × × × ×

अब तो कुछ ऐसा लगता है अपने हिन्दुस्तान में।
जैसे कोई दीपक जलता हो आंधी तूफान में।

× × × × × × ×

मौदहा के हरीराम गुप्त का कहना है कि -

शस्य श्यामला भूमि हमारी प्यारा देश हमारा है,
गर्व है हमको हम भारत के भारतवर्ष हमारा है।

× × × × × × ×

राष्ट्र एवं मानव के उत्थान के प्रति धर्म व विज्ञान के प्रति मिलन को आवश्यक बताने वाले स्व0 डा0 हरगोविन्द सिंह के गीत की ये पंक्तियां पठनीय हैं -

सही रूप उभरेगा उस दिन मानव के उत्थान का,
जिस दिन होगा मिलन विश्व में धर्म और विज्ञान का।

× × × × × × ×

और कवि का यह गीत तो जन जन की जुबान पर है -

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
हर नारी देवी की प्रतिमा बच्चा बच्चा राम है।

× × × × × × × × × ×

राष्ट्र के विकास में साक्षरता अभियान की सार्थकता बताता श्री कैलाश प्रसाद सोनी के गीत की पंक्तियां देखिये-

करें समर्पित नयी चेतना, शिक्षा ज्ञान महान की।
आओ हम भी ज्योति जगा दें, साक्षरता अभियान की।

हमीरपुर तहसील के प्रसिद्ध गीतकार श्री नाथूराम पथिक तो कवियों को ही सावधान करते हैं -

कवि रे लिखा मत आसमान की बातें
धरती में कुछ बहुत शेष है।
तेरी कलम अपरिचित अब तक
अब भी कुछ ऐसा प्रदेश है।

× × × × × × × × ×

वीर रस के वरिष्ठ कवि श्री रामखिलावन निरंजन की माँ से कामना है कि -

देश का कोई भाग सूखा न रहे।

देश का कोई पौधा रूखा न रहे।

झोली में भिक्षा माँ डाल दो मेरी,

देश का कोई शिशु भूखा न रहे।

हमारे राष्ट्र के नागरिक आपस में छोटे-छोटे मुद्‌दों को लेकर जिस प्रकार झगड़ते हैं, लोकप्रिय शायर/कवि डा० जमीलउद्‌दीन 'जमील' इसे राष्ट्र की प्रगति में बाधक मानते हैं -

भाषा और सूबे को लेकर उलझे हैं नादान।

बनेगा कैसे हिन्दुस्तान, हमारा भावी हिन्दुस्तान।

× × × × × × ×

महोबा के प्रसिद्ध कवि श्री उमाशंकर नगायच का संकल्प है कि -

हिमगिरि का मस्तक कभी नहीं झुकने देंगे।

गंगा की धारा मन्द. नहीं हो पायेगी।

भारत की जय का केतु सदा ऊंचा होगा

माता की स्मृति म्लान न होने पायेगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जनपद के कवियों में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी है। अपने राष्ट्र की प्रगति देखने की लालसा दिलों में संजोये माँ सरस्वती के ये वरद् पुत्र अपनी लेखनी के माध्यम से राष्ट्र की प्रगति में संलग्न हैं ।

4· राजैनीति मूल्यों के ह्रस के प्रति सजगता:

किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिये आवश्यक है कि राष्ट्रीय नेता ईमानदार एवं नैतिक मूल्यों के प्रति सजग हों , राजनैतिक अव्यवस्थायें भ्रष्टाचार एवं कुशासन को बढ़ावा देती हैं। कवि राष्ट्र का एक सजग प्रहरी होता है इसलिये जब वह शासन/प्रशासन मे व्याप्त दोषों को देखता है तो अपनी लेखनी से राष्ट्र के नागरिकों को आगाह करता है। यह पुनीत कार्य आज का लगभग प्रत्येक कवि करने का अपने ढंग से प्रयास करता है।

नवोदित कवि श्री गणेश सिंह 'विद्यार्थी' का भ्रष्टाचार के प्रति दृष्टिकोण देखिये -

अरे, भले आदमी,

भ्रष्टाचार को समूल नष्ट करने की मांग

भ्रष्टाचार शासकों से मत करो

उन्होने तो उसका

राष्ट्रीयकरण कर दिया है

ठीक, ब्रिटेन के अलिखित

संविधान की तरह।

राठ नगर के वरिष्ठ कवि श्री मातादीन भारती का राजनीति पर सुंदर व्यंग देखिये -

यह भारत देश स्वतंत्र नहीं यह तौ परतंत्र भयौ दुगना है

अब ना विसवास बिजूकिन कौ बन खेत के हेतु गये सुगना हैं

अधिकार जमा सुक बैठ गये, यह खेत इन्हें नित ही चुगना है।

अब तो इनके बस बाप का है इस खेत में जो कुछ भी उगना है।

हास्य व्यंग के राठ के कवि जगदीश अड़जरिया का तो कहना है कि -

भाषण से बोलचाल से भगवान हो गये,

जनता की आन बान और शान हो गये

नेता था पहले आम गुरू क्या गजब हुआ

कातिल हुये तो गांव के प्रधान हो गये।

कुलपहाड़ के कवि श्री रफीक 'नीर' का एक नेता के प्रति व्यंग देखिये -

एक नेता जी बड़े ही क्रुद्ध थे

भ्रष्टाचार से कर रहे युद्ध थे

बोले पकड़ माइक, यों कुछ जोश में

भ्रष्टाचार मिटाना है अगर

एक रास्ता आता नजर

रिश्वतों की सब रकम

आ जाये मेरे कोष में।

और महोबा के श्री संतोष पटैरिया का नजरिया दल-बदल के प्रति देखिये -

> गिरगिट अब,
> अपना मुख नहीं दिखाने काबिल
> क्योंकि आज के नेता ने
> उसे मात दे दी है
> क्षण क्षण में बदल कर दल

मौदहा के कवि श्री ब्रजेश सक्सेना के भाव राजनीतिज्ञों के प्रति इस प्रकार हैं -

> मछुवारे हैं जाल बिखेरे,
> संसद में बस गये लुटेरे
> कौवों की बकवास हमारे देश में
> सारा जीवन संत्रास हमारे देश में।
> × × × × × ×

मौदहा के ख्यातिलब्ध कवि स्व0 लक्ष्मीनारायण आनंद तो हमें बाह्य व आन्तरिक खतरों से सावधान कर गये हैं -

> पंछी सुबक सुबक कर मत रो, अभी बहुत है रात रे,
> सावधान रह कर जगना है कहीं न होवे घात रे।

इस प्रकार उपर्युक्त कुछ कवियों की रचनाओं के अंश इस बात के साक्षी हैं कि वर्तमान काल के कवियों ने सजग रहकर अपनी लेखानी का प्रयोग समाज को एक नयी दिशा देने में किया है।

5. प्रयोगवादी नयी कविता को बढ़ावा :

आधुनिक काल के कई कवियों की प्रवृत्ति प्रयोगवादी नयी कविता की ओर हुई है और इस ओर सशक्त काव्य सृजन भी हुआ है।

जनपद के गौरव डा0 नर्मदा प्रसाद गुप्त का नाम इसमें विशेष उल्लेखनीयहै। डा0 गुप्त जी ने हिन्दी काव्य को एक नयी दिशा दी है उनकी एक रचना देखिये -

दोषी कौन ?

अधर में लटके हुए
अस्तित्वों के मकड़जाले
और उन में फंसा हुआ
मक्खी सा मन
बार-बार भिन्नाता है,
दूर से रेंगता
बड़प्पन का मकड़ा
अपनी टाँगफैलाए
चोरी-चोरी आता है।
× × × × × × ×

महोबा की उदीयमान नवोदित कवियित्री वन्दना सोनी की एक रचना के कुछ अंश देखिये -

प्रत्येक स्वप्न
रात्रि के उपरान्त
पिस गया काल यन्त्र में
कल्पनायें स्निग्ध जीवन
यथार्थ की कसौटी पर
कस गयी जिन्दगी।
× × × × × × ×

कु0 वन्दना सोनी की छोटी बहिन कु0 रागिनी सोनी भी इस दिशा में प्रयासरत हैं -

हाँ !
कहाँ पाऊं तुझे
सामाजिक चौराहे से
जाते हैं अनेक मार्ग
हर मार्ग पर लिखा है
यह सत्य दूसरा असत्य।
× × × × × ×

चरखारी के श्री राहुल गुप्ता भी इस विधा के एक नवोदित कवि हैं -

प्यार एक शब्द नहीं,

भावना है

जो मरने के लिये जन्म नहीं लेती

एक भरोसा है प्यार

जो टूटने के लिये नहीं जुड़ता।

× × × × × × ×

श्री चन्द्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति', डा0 अजिर चौबे, श्री गणेश सिंह ' विद्यार्थी ' श्री नाथूराम पथिक, श्री प्रहलाद गुप्त, श्री पीयूष नगायच, श्री रामदत्त अजेय जैसे विद्वान कविगण भी इस विधा को अपना कर काव्य सृजन में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं । डा0 अजिर चौबे की रचना देखिये -

मेरे सिरहाने

तकिये सी

तुम्हारी याद !

जैसे

रुई के के साथ

रह गया हो

धुनकर का

बांट !

6. अलंकारों की उपेक्षा :

वर्तमान काल के कवियों में अलंकारों के प्रति अधिक आकर्षण नहीं प्रतीत होता है। कविगण अपनी रचनाओं में भावों को अलंकारों की तुलना में अधिक महत्व दे रहे हैं। प्राचीन कालीन कवियों के समान अलंकारों के अधिक प्रयोग की ओर उनकी कोई रूचि नहीं दिखायी देती। वैसे यत्र-तत्र अलंकारों का प्रयोग हुआ है किन्तु ऐसा स्वाभाविक रूप से ही हुआ है।

प्राचीन काल के कवि और उनका संक्षिप्त परिचय

जैसा कि शोध ग्रन्थ के प्रारंभ में बताया जा चुका है इस अध्याय के अंतर्गत मैंने जनपद हमीरपुर में पैद हुये उन कवियों को स्थान दिया है जो 15 अगस्त सन् 1947 तक या उसके पूर्व में विद्यमान थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भी 17वीं व 18वीं शती में जनपद में कई विद्वान कवि रहे जिन्होंने प्रचुर मात्रा में उच्च कोटि का काव्य सृजन किया उनमें से बहुत सा साहित्य तो अब लुप्तप्राय हो गया है फिर भी अपने यथासंभव प्रयासों से जिन कवियों की जानकारी जिस रूप में मुझे प्राप्त हो सकी उसे अलग अलग तहसीलों के अंतर्गत विभाजित करके यहां दिया जा रहा है।

तहसील - राठ

---

(1) ज्ञानी जू :

जीवन परिचयः

ज्ञानी जू का जन्म तहसील राठ के अंतर्गत ग्राम जलालपुर में हुआ था। ये एक ख्यातिप्राप्त कवि थे तथा जैतपुर नरेश के आश्रय में रहते थे ये 19वीं शती के उत्तरार्द्ध के कवि बताये जाते हैं।

काव्य कृतियांः

ज्ञानी जू एक अच्छे कवि थे 'वीर विलास' इनकी काव्य कृति है। इस कृति का लेखन काल संवत् 1798 का है जैसा कि कवि ने स्वयं स्पष्ट किया है।

'सत्रह सै अट्ठानवे ज्ञानी कर्यो प्रकास।
सावन बदी तिथि दुहज रवि प्रगट्यो वीर विलास।

कवि की इस काव्य कृति 'वीर विलास' की आरंभ की कुछ पंक्तियां निम्न प्रकार हैं:-

ज्ञानी श्री गोपाल के गुन गावत हैं नित्त।

बरने सरस विलासमय, रस श्रंगार कवित्त।

रच्यो तमासो आप ही, धरि-धरि कीनो बास।

तातैं ज्ञानी जानिकै, बरन्यो वीर विलास।

तब सब मिलिकैं मो कई, अब बरनो कुछु वीर।

भगो दरैरो कौन गिर, नदी बेतवे तीर।

गाये गुन गनेश के, ज्ञानी पाई बुद्धि।

चौहानन चंदेल को बरन बतावत जुद्धि।

इस प्रकार अंतिम पंक्ति से स्पष्ट पता चलता है कि ज्ञानी जू ने अपने इस ग्रन्थ में चौहान से चन्देलों के होने वाले युद्ध का सविस्तार वर्णन किया है। निम्नांकित पंक्तियों में रणभूमि में लाखन के घिर जाने पर आल्हा की माता देवलदे अपने वीरों से कहती है-

चमू चहूँ दिस आन चॉप चौहानन लीनी।

दुहू बधिलवा फिरो हांक दैवे ने दीनी।

फिर कौड़ी नहिं लहत, गओ मोती को पानी।

लेहु बिजुरिया ढाल घाल सम्भर रजधानी।

पहनहु पलट्टो फौज पै सम्मुख हू वै कीजै सगर।

यह पूतौ समौ न चूकिये,सदा नहीं कोऊ अमर।

मूल्यांकनः

कवि की काव्य-कृति 'वीर विलास' से उद्धृत उपर्युक्त पंक्तियां इस बात का प्रमाण हैं कि ज्ञानी जू एक अच्छे कवि थे। इनकी रचनायें सरस एवं प्रवाह युक्त प्रतीत होती हैं जिनमें माधुर्य का गुण

विद्यमान है। कवि की रचनाओं में बुन्देली भाषा के तत्कालीन प्रचलित शब्दों का समावेश है।

(2) श्री खूबचन्द्र रावत :

जीवन परिचय

इनका जन्म लगभग संवत 1908 में ग्राम जराखर, तहसील राठ (जिला हमीरपुर) में लोध राजपूत कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री राखन रावत तथा इनकी पत्नी का नाम श्रीमती मोनीबाई था। आप प्राचीन कालीन उच्च कोटि के कवियों में थे। इनके पुत्र श्रीपति सहाय रावत भी बहुत अच्छे कवि व प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। लगभग संवत 1972 को इनकी मृत्यु हुई। श्री पं0 नारायण दास इनके दीक्षा गुरू तथा श्री रामदीनं सक्सेना इनके विद्या गुरू थे। इन्होंने इनका उपनाम 'रसेस' रखा था।

काव्य कृतियां:

ये बहुत ही उच्चकोटि के कवि थे। इनकी अप्रकाशित रचनायें तो अब उपलब्ध नहीं हैं किन्तु चार पुस्तकें जो प्रकाशित हुईं, वे उपलब्ध हैं। इनके नाम हैं 1-प्रेम पत्रिका, 2-अंग चन्द्रिका (श्रंगार रस में) 3-होली पंकज (फाग साहित्य) तथा 4-कृष्ण कुसुमाकर (राग रागिनी)।

अंग चन्द्रिका तथा प्रेम पत्रिका दो पुस्तकों का प्रकाशन वि0 1946 में हुआ था। अंग चँद्रिका में कवि ने अपना परिचय निम्न प्रकार दिया है-

तीन कोस है राठ सौं पश्चिम दिशि की ओर,
ग्राम जराखर अल्प इक, जन्मभूमि है मोर ।
फते सिंह रावत भये, जिनके राजाराम,
तासु तनय राखन भये, तिन आराधे श्याम ।
जुगल पुत्र जिनके भये, जेठ कन्हैयालाल,
खूबचन्द्र लघु पुत्र हैं, ग्रन्थ रच्यों तिनहाल ।

श्री नारायण दास जू, नारायण सम लेख,

कृष्ण-मंत्र मोकों दयो, करके कृपा विशेष।

सक्सेना कायस्थ कुल, रामदीन अस नाम,

विद्या देकर मोहि कों, आप गये सुर-धाम।

ऐसे गुरु कृपालु कों, नावत सीस हमेश,

अधिक प्यार मोपर कियो, दियो सुनाम 'रसेस' ।

इसी ग्रन्थ में दी गई स्वरचित ग्रन्थों की छन्दबद्ध सूची से पता चलता है कि इनको संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य का अच्छा ज्ञान था। इस पुस्तक में नख शिख वर्णन के अतिरिक्त बड़े ही रोचक ढंग से ग्रामीण महिलाओं द्वारा धारण किये जाने वाले आभूषणों का अत्यंत रोचक वर्णन है। जैसे ढार (कर्ण भूषण) तथा बकरी (हस्त भूषण) पर उनके सुन्दर दोहे निम्न प्रकार हैं:-

अली अली नहीं भली अस, चली जुतैं नन्द द्वार ।

कान ढार है काम कुल, जब लखि है तुव ढार ।।

तथा

बकरी पहरें देख तुअ, नकरी ह्वे गओ गात।

चकरी लों झुमके अरी, तुम बखरी ह्वे जात ।।

इसी प्रकार होली पंकज पुस्तक में अनूठी फागें दी गई हैं कुछ फागों का नमूना निम्न है-

(1)

मोरी मान कही गैलारे, सांझ भई न जारे,

आंगू गांव नजीक नहीं है, चोर लगत बटमारे ।

आवे रात रतोंध सास कों, पति परदेश हमारे,

खूबचन्द्र मनमानी हूहै, देहों पलंग बिछा रे।

दोहा : भावत नहीं कछु एक चित, देख दृगन सों तोय,

[illegible]

फाग : तेरे मोह लियो मृदु बोलन, मुख ऊपर दुर डोलन,

आंख लगत नहिं छिन छिन कांखत, लख तिल मंजू कपोलन।

कंचुक भुजन घांघरी कट विच, चूनर नील निचोलन,

चंचल द्रग मृग शावक लाजत,राजत खंज कपोलन

खूबचंद्र मुसक्यान माधुरी, लखत विकत बिन मोलन।

इसी प्रकार 'कृष्ण कुसुमाकर' पुस्तक कवि की अत्यंत उच्च कोटि का ग्रन्थ है, इस ग्रन्थ में कुल 43 पृष्ट हैं जिनमें विभिन्न रागों पर आधारित पद दिये गये हैं जैसे राग ध्रुपद, राग भैरों, राग विभास, राग ईमन, राग दीपक, राग कुकुम, राग जंगला, राग हिंडोल, राग मल्हार, राग कल्याण इत्यादि। पुस्तक में श्री कृष्ण व गोपिकाओं के वार्तालाप, दिये जा रहे उलाहनों अथवा श्री कृष्ण वन्दना के पद विभिन्न रागों पर आधारित दिये गये हैं। पुस्तक के कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं।

राग ध्रुपद

कहत नन्दलाल सो नरक में परे नाह,

कहत माधौ सो त्रास नासैं जम थोक की

रसेस कवि कहत कृष्ण नासै दरिद्र को,

कहत केसौ संग राखै ना अघ ओक की।

कहत ब्रजराज सो तपै नहीं तीन ताप,

कहत मुकुन्द मूल मेटै सब सोक की,

कहत बनवारी सो बैतरनी पार होत,

कहत गुपाल गैल गहत गो लोक की।

राग भैरो

इक दिन श्याम जमुनतर आये ।।टेक।।

वृषवत कन्ध ठवन मृग पतिवत, मृगवत नैन जगत चित भाये।

भृंग अवलिवत अलक बिराजै, मोर पच्छ सिर अधिक सुहाये।

कुण्डल मौन मच्छवत डोलत बदन चन्द्रवत मृदु मुसकाये।

नील कंजवत लसत श्याम तन सुभग पीत पट कटि लपटाये।

विधुत्वत दमकत रदअवली बिनगुन धनुवत भृकुटि चढ़ाये।

खूबचन्द कन्दुक कर लीन्हें सो छबि लखि रतिनाथ लजाये।

राग बिभास

राधा लखि मोहे घनश्याम ।।टेक।।

या समरती भारती नाहीं, होय सकै किम प्रकृत बाम ।

प्रकट करन हित निज चतुराई बिरचि विधाता छबि की धाम ।

मृदु मुसक्याय कहत मनमोहन भवन तिहारौ है किहि ठाम ।

को तुम पिता मातु को कहिये, बेग बताइय अपनो नाम ।

खूंबचन्द ससिबदनी आतुर कहो इतै आई किहि काम ।

राग ईमन

भवन हमारो है बरसानो ।।टेक।।

मो पितु हैं वृषभान विदित जग, मेरो नाम राधिका जानो।

सुनत रहत नँद सुवन एक बृज चोर चोर दधि खात बिरानो।

तुम्हरो कछु चुराय न लैहें हंसि मोहन अस बचन बखानो ।

खूबचन्द नित आवहु खेलन हमरौ है जू याह ठिकानौ।

राग कुकुभ

गई राधिका धेनु दुहावन ।।टेक।।

नद के साथ डगर में आवत, निज नैनन देखे मनभावन।

पुलकि गात सीकर प्रकटानी, हरषत हिय चोली दरकावन ।

खरक बीच प्रिय द्रगन लखी जब, लगे श्याम तब निकट बुलावन ।

खूबचन्द मिलि खेलन लागे जुगुल परस्पर प्रीति बढ़ावन ।

राग मलार

पनघट रोक्यौ कुंवर कन्हाई ।।टेक।।

पीन पयोधरि छीन लंक अति सलिल हेत सुन्दरि इक आई ।

पट कों झटक झपट नटनागर तटघट पटक लिपट कटि जाई ।

हरषि नन्दसुत चूम चन्द्रमुख उर कर परस करी मनभाई ।

खूबचन्द चित चोर लयौ हंसि छोड दयौ ताकों जदुराई।

राग कल्यान

\- - - - - - -

बृज भई प्रकट बात अस घर घर ।।टेक।।

नन्दलाल जल भरन देत नहिं, तियमुख देखत अँचल धर धर ।

जात नहीं कोई बाग बाट यह लखि अनरीत भगत हिय डर डर

नागरनट घट छीन लेत झट, सिर ढरकावत जल सों भर भर ।

खूबचन्द उतजाय करात जो सो तिय छूटत छाहा कर कर ।

ठुमरी

\- - -

मग रोकत हमरो आली यो गिरधारी रे ।।टेक।।

नागर नवल छैल नन्दलाला दीरघ दृग तन श्यामत भाला ।

बरबस आय गरे लिपटतु है ऐंचत सारी रे ।

ठीठ बड़ो री है बलबीरा ठाढ़ो रहत जमुन के तीरा

हटकौ तौ हटकी नहीं मानै देवै गारी रे ।

नीर भरन जुवती उत जाती ताको धाय लगावत छाती

बाके डर घर सों नहिं निकरत बृज पनिहारी रे

डोलत रहत जमुन की छांही उत सों नेक टरत है नाहीं ।

खूबचन्द कंकर कुच मारत कुंजबिहारी रे।

मूल्यांकनः

\- - - - -

कवि की प्रकाशित चार पुस्तकों प्रेम पत्रिका, अंग चन्द्रिका, होली पंकज तथा कृष्ण कुसुमाकर की रचनाओं के अध्ययन से पता चलता है कि ये संस्कृत तथा हिन्दी के अच्छे ज्ञाता व उच्च कोटि के कवि थे। ऐसे कवि को हिन्दी साहित्य में स्थान मिलना चाहिये था परन्तु जनपद का दुर्भाग्य है कि हिन्दी साहित्य में अब तक ये अनजान ही हैं। श्री खूबचन्द द्वारा रचित कृष्ण कुसुमाकर की प्रशंसा में श्री महाराजाधिराज बहादुर चरखारी नरेश के कविराज माफीदार मौजा खढ़गांव रियासत चरखारी के श्री राव बलदेव प्रसाद जी ने एक कवित्त प्रदान किया जो इसी पुस्तक के अन्त में मुद्रित है उक्त कवित्त निम्न प्रकार है-

साजी है मधुर प्रसाद गुन औखे जुट,

अरण्य अनन्त भाव भूषन अपारा सी ।

कहैं बलदेव घटराग अनुराग भरी,

रागनी अखण्ड सप्त सुरन बिचारा सी ।।

परम नरम संग साधु को सरम दैनी,

भक्त की नसैनी ज्ञान गुनन सम्हारा सी,

भक्त बृजचन्द कुलचन्द श्री खूबचन्द जू,

कविता तिहारी है दुचन्द गंग धारा सी।

इस प्रकार इनकी रचनाओं में भक्ति रस, श्रंगार रस का अनूठा समन्वय है जो प्राचीन कालीन कवियों की एक विशेषता रही है।

(3) तांतीलाल देवपुरिया:

परिचय:

इनका जन्म राठ (हमीरपुर) नगर के चौबट्टा मुहल्ले के ब्राह्मण परिवार में संवत 1906 के लगभग हुआ । इनके पौत्र अपने ममाने बिवांर (हमीरपुर) में हलवाईगिरी की दुकान किये हैं। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं कर्मठ नेता श्री लक्ष्मीप्रसाद पाठक के ये नाना थे। इनके मण्डल में कई कवि थे जिनमें काशीप्रसाद लखेरे, ईसुरी भाट व उनके छोटे भाई मुनिलाल उपनाम नन्दलाल आदि प्रमुख थे। इनकी मृत्यु वि0सं0-1979 के लगभग हुई।

काव्य कृतियां:

ये मुख्य रूप से फागकार थे इन्होंने दोनों पुकार की फागें (चौकड़िया व छन्दयाऊ) लिखी हैं। इनकी फागों के कुछ नमूने निम्नलिखित हैं:-

(1)

देखे मन्दिर जात तुम्हारे, टारत दोऊ किवारे।

गुलचा मार पकर कर दोऊ, ऐसे वचन उचारे ।

पर गये दॉव आज मिल पाये, खातन छांह पियारे।
तांती कऔ कीनें लालन खां अपने हात बिगारे।

﴾2﴿

दधि ले काम खां जातीं आली, नन्दलाल है चाली ।
छीन लेत ऐशौ कर करसौं करत दहाड़िया खाली ।
का जौ करौ अकेली रे जैव, कर हौ टाली टाली ।
'तांतीलाल' रंग के लानें तासों अधर निकारी ।

﴾3﴿

सिंहावलोकन

बन्दौं शिवशंकर अविनासी घटवासी ,
वासी रहत सभी के उर में, उर में करत प्रकाशी ।
काशी ब्राजत श्री महेश हैं, है गंगा सिर खासी ।
खासी विपत दास की काटत, काटत जन्म की फांसी।
फांसी तांती काट देत हैं, है तीसें विश्वासी ।

﴾4﴿

राधे आस लगी दरशन की, हरि जू के चरनन की।
चाहत नैन लैन को झांकी, गिरधर नन्द नंदन की ।
नख सिख सौ श्रंगार देख लो, कैसी जटा जटन की ।
तांतीलाल चरन हर के गह नई चाल अधरन की ।

﴾5﴿

निस दिन मरौं विरह की मारी बिन देखें गिरधारी ।
जब से गये सुभाव बदल गये, भये बेदरद बिहारी ।
हमें मैन दिन रैत सतावे, जान उगरिया ब्रारी ।
तांतीलाल श्यामली सूरत, गौरी नहीं निहारी ।

फाग अधर

﴾6﴿

रेजा संग के लाल हरीरे, ले दे छैल छबीले ।
एक सियन दरजी ने डारी, अंग से अंग गही रे।
हीरन केरी लगी किनारी, हरें लेत है जी रे ।
तांतीलाल रंग के लाने, तासें अधर कही रे।

(7)

देखो अंगरेजन चतुराई, कर सें रेल चलाई ।

सननन सननन चली जात है, फिर नहीं छिड़त छिड़ाई ।

देशन देशन ठिकत जात है, झण्डी लाल दिखाई ।

तांतीलाल रंग के लागें तारों अधर दिखाई ।

मूल्यांकन:

श्री तांतीलाल देवपुरिया द्वारा लिखी गई फागों के अवलोकन से पता चलता है कि ये अच्छे फागकार थे। इनकी भाषा मधुर और प्रासादिक है। चौकड़िया व छन्दयाऊ दोनों प्रकार की फागें इन्होंने बुन्देली में लिखी हैं जो रोचक एवं साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

(4) मुनिलाल या नन्दलाल:

परिचय:

इनका जन्म संवत 1910 में राठ (हमीरपुर के चौबट्टा मुहल्ले में हुआ था। इनके बड़े भाई ईसुरी भाट भी अच्छे कवि थे। मुनिलाल जब अधर फाग लिखते थे उस समय नन्दलाल की छाप डालते थे। हनुमान जी के ये अनन्य भक्त थे। इनकी मृत्यु वि0 सं0 1973 के लगभग हुई।

काव्य कृतियां:

ये अच्छे कवि थे। इन्होंने चौकड़िया व छन्दयाऊ दोनों प्रकार की फागें भी लिखी हैं उनकी एक चौकड़िया फाग निम्नलिखित है:-

गृह सौं दध लैकें न जाई, चाहत दान कन्हाई ।

तकत रहत है जहं तहं नारिन, लख चालत है धाई ।

डारत आन सीस घट धरनी, करनी कहत लजाई ।

कैहें जाय कंस राजा सें, देस देंय निकराई ,

कह नन्दलाल इसी रंग कह ना, अधर रंग दरसाई ।

श्री मुनिलाल कवि की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना 'हनुमान पचीसी' है। इन्होंने पच्चीस छन्दों की रचना 'हनुमान भक्ति' पर की थी। जो बहुत खोजने पर भी प्राप्त नहीं हो सकी। किन्तु दुर्लभ 5 छन्द प्राप्त हो गये जो प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री लोटन सिंह वर्मा को आज भी कंठस्थ हैं उन्हीं से निम्नलिखित 5 छन्द प्राप्त करके उद्धृत किये जा रहे हैं। ये 5 छन्द ही कवि की विद्वत्ता के परिचायक हैं ।

॥1॥

सारी लंक जारी करी अति ही दुखारी भारी,
खल बल अपारी भो नेक न डरो कहीं ।
कुंभकर्ण वीर, मेघनाथ रणधीर छीर ,
रावण अमीर देख धीर न धरो कहीं ,
भाखे मुनिलाल ग्राम भीतर जलाई ज्वाल,
छाई विकलाई बचो एक हू डरो नहीं।
छोड़ो प्रभुदास जान बाहर से अन्दर लो,
सुन्दर विभीषण को मन्दिर जरो नहीं।

॥2॥

कालज्वर वाय वायु विषमत ज्वर मेटे और,
गुल्म अरू जलंदर भगंदर को जारे तूँ,
नित्त ज्वर मीसे और पीसे सो पित्त ज्वर,
चौथिया तिजारी ताप परहा पछारे तूँ,
किंचित विध्वंश अंस राखो उपदेश नाह,
शूल वायु शूल कुष्ठ मूल से उखारे तूँ।
वायु के लाल हो कृपाल मुनिलाल आल,
नासै सविध रोग दास को उबारे तूँ ।

॥3॥

पाजी जे मिजाजी इतराजी को करावे जोन,
करके इतराजी तुझ राजी मीन मारिये ।
अति बदमाश गांस मेटे उपहॉस तोन,
करके विनास खास दास को संवारिये ।

चुगलई चबाई अन्यायी बहु कसाई चोर

नारी जे पराई इठल्याई सर्व गारिये।

पाजी परद्रोही परपंचन को डारो चीर,

भाखे मुनिलाल हाल शत्रु को संघारिये।

(4)

भूत प्रेम जिन्द देव दानव कर देव दूर,

संखिनी शहीद वीर डंकिनी निकारे तूँ ।

डायन चुड़ैल जन्त्र मंत्र तंत्र दीठ मूठ,

वीर ओ पिसाचन मेहमारी को मारे तूँ।

टोटक और टोना, ब्रह्मराक्षस और पुरश्चरण,

जोगिनी अनुष्ठान सोधिनी विडारे तूँ ,

वायु के लाल हो कृपाल मुनिलाल आल,

नासे सवधि व्याधि दास को उबारे तूँ ।

(5)

धर्म धुर धारी धुन्धरा धर धरनि धीर,

धारन धरम धन धाम में बढ़ा दे तूँ ।

चातुरी चलाकी चैन, चौज चित्त चाही चारू,

चरण सरोज चापे चित्त में चढ़ा दे तूँ।

प्यारे मुनिलाल भिंग लोचन प्रतीत प्रीत,

पूरन पुनीत प्रेम पूरन पढ़ा दे तूँ।

जीत के अजीतन को कुजन कुमीतन को,

सुजन सुमीतन को मंगल मढ़ा दे तूँ ।

मूल्यांकन:

इस प्रकार मुनिलाल कवि द्वारा रचित फाग एवं हनुमान पचीसी के दुर्लभ पांच छन्दों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ये उच्च कोटि के कवि थे जिनको हिन्दी साहित्य का अच्छा ज्ञान था। छन्दों में अलंकारों का अनूठा प्रयोग कवि के काव्य कौशल का परिचायक है।

(5) श्री सूरश्याम तिवारीः

जीवन परिचयः

इनका जन्म राठ (हमीरपुर) के पुरानागंज पठानपुरा मुहल्ले में वि0 1914 को हुआ था। इनके दो पुत्र थे वच्छन और पं0 हरप्रसाद तिवारी। इनके पिता का नाम पं0 कुंजबिहारी तिवारी था। श्री सूर श्याम तिवारी संस्कृत के पंडित थे और नगर के अच्छे ज्योतिषी तथा पुराण कथावाचक थे। वि0सं0 1973 में इनकी मृत्यु हुई। ये राधा कृष्ण के उपासक थे। काष्ठ कला का भी इन्हें अच्छा ज्ञान था।

काव्य कृतियांः

इनकी तीन पुस्तकें वि0 1960 में प्रकाशित हुई हैं 1-मन आनन्द करन फाग, 2-अधर फाग, 3-प्रीत विलास । कवि ने अपना परिचय प्रीत विलास पुस्तक में निम्न प्रकार से दिया है।

राठ परगना सहर है, जहां भये चेतनदास ,

पुरा पुराने गंज में, जहां हमारा वास ।

कुंजबिहारी के सुवन, सूरस्याम है नाम,

विप्र वंश है जन्म नित, सुमरत राधा-श्याम ।

इनकी 'मन आनन्द करन फाग' पुस्तक में जो फागें संकलित हैं वे सूर श्याम, चन्द्रसखी तथा जमुनादास के नाम से हैं परन्तु वे सब इन्हीं की रचनायें हैं। अश्लील फागें जो इनके द्वारा लिखी गईं वे सब अपने मित्र जमुनाप्रसाद उपाध्याय के नाम से लिखी हैं जो कि इनकी फागें गाने वाले इनके एक मित्र थे। राधा कृष्ण के भक्त होने के कारण भगवान श्रीकृष्ण की ब्रज लीला संबंधी फागें इन्होंने चन्द्रसखी के नाम से लिखी हैं तथा शेष फागें अपने ही नाम की छाप डालकर लिखी गयी हैं। इनकी तीनों नामों की रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

(1)

ब्रज में प्रकटे कुंवर कन्हैया, अरू बलदाऊ भैया

देवकी गर्भ जन्म हर लीनों, फिर भई जसुदा मैया ।

जसुदा जबै नन्द गुहरायो, लागे लेंन बलैया,

दुजन बुलाय दान बहु दीनों, मनसों लक्षक गैया,

कीजे कृपा सूर पै निस दिन, भू के भार हरैया ।

§2§

सुमरो कृष्ण राधिका माई, तज देव मन कुटिलाई,

जिन जिन सुमरन करो हरी को, जग में होत बड़ाई ।

अजामील सों री, गज, गनिका, हर सुमरें गति पाई,

ध्रुव प्रहलाद भरत, भये ऐसे, जिनकी जस रओ छाई ,

सूर स्याम कयें सुमरन कर लेव तुम खां राम धुआई ।

§3§

सजनी हर बिन फागुन फीकें, हमें लगें न नीके।

लिख राखीं बिरहा की पातीं, हाथ भेजिये की के।

उन बिन बाहर काटिये कैसें रंज आपने जी के,

चन्द्रसखीं आवें मन मोहन, स्याम लगनियां जी के।

§4§

राधे संग निरतत गिरधारी, थेई थेई कर दै तारीं,

ले गत चलत नागरिन के संग, ऋतु सम सरद निहारी।

रये थिर सकल जगत के जे चर, ऐसी तान निकारी,

अधर तान मुरली से काढ़त, सखीं करें जै कारी।

'चन्द्रसखी' लख दरस कृस्न के, इकटक दृग ना टारी।

§5§

काना कही हमारी मानो,गैल न झगड़ो ठानो,

हरे कुसुम की चूनर मोरी, फट जैहे न तानों।

दूरई रहो हाथ न धरियौ पास कंस को थानो,

'चन्द्रसखी' कयें गोरस लै लेव, जौ रस आय बिरानो।

§6§

रंग से रंग डारी गिरधारी, श्री राधा की सारी,

कंचन कलश लिये कर गिरधर, लागे करन तयारी।

केसर रंग डारत नारिन के, नाचत दे दे तारी
राधानाथ रसिक, निधि रस की, देत सखिन के डारी।
'चन्द्रसखी' राधा लालन की झांसी जाय निहारी।

।7।

मोरी जा कहियो गिरधर सें, सखी दरस बिन तरसें,
का ना बनी बिगर गई हमसें, हरी निकर गये घर सें।
दिये पठाय को जाय दुअरके, को ले आवे कर सें,
'चन्द्रसखी' राधे के अंसुवा चौमासे से बरसें।

।8।

ललता आउन भई उन हर की, सिर की सारी सरकी,
जिन गलियन में धूल उड़त तो आवे बास अतर की।
तन की तनी मुरक गई मोरी, खबर बिसर गई घर की।
'चन्द्रसखी' छबि बिसरत नैयां, मूरत मुरलीधर की।

श्री सूरश्याम द्वारा रचित एक झूलना फाग का नमूना देखिये-

।9।

कहूं राधे जी के संग, ऊधौ नचत कन्हैया गोपिन में,
ताथा थेई नचत ग्वालिनी, संग नर्चे गोविन्द । ऊधौ 0
टप बाजे मिरदंग खंजड़ी, मनमोहन मौचंग,
वेद पढ़ते ब्रह्मा आये, इन्द्रासन तें इन्द्र। ऊधौ0
छत्तिस कुरी छत्तीसऊ देवता, संग राजा हरिश्चन्द्र,
'चन्द्रसखी' भज बालकृस्न छवि, उठे छत्तीसऊ रंग । ऊधौ0

श्री सूरश्याम तिवारी द्वारा रचित एक सुन्दर खड़ी फाग का नमूना देखिये-

।10।

आये ना श्याम सखी दौरें, में ठाड़ी रई केसर घोरे,
कुमकुम वीर अबीर धरें रई, लाल गुलाबी रज जोरें।
तरसत रई उन तकबे कों, नेह भरी दोऊ दृग कोरें।
करतीं भेंट गरे लग-लग के, जेई लालसा रई मोरें,
चन्द्रसखी मोहन सें कैयो, प्रीति लगा कें ना टोरें।

इनके द्वारा रचित सुन्दर छन्ददार फागों के कुछ सुन्दर नमूने निम्नलिखित हैं:-

॥1॥

आये ऋतुराजा सज आली, छाई जरदी लाली।

छन्द : तरू करें झार, निस घटनहार, दिन को निहार ठहरन लागे।

चेरी के संग हर करें रंग, तन से अनंग जागन लागे।

उड़ान: सो देकें कड़ गये चाली।

टेक: कहयत कठिन कंस की दासी, नंदलाला घर घाली।

छन्द: घर लओ घाल श्री नन्दलाला,

करकें निहाल आये आली।

तज दई नार घट दस हजार,.

चेरी के साथ रह गये हाली।

उड़ान: सो हर की राह निराली।

टेक: जागत जात सखी री रजनी सेज डरी है खाली।

छन्द: खाली है आज करे किन के साथ,

आनन्द के काज, हर ना आये।

छा रहे अन्त, दिन रहीं गिन्त,

ना चले अन्त हर तरसाये।

उड़ान: सो डार गये हैं जाली।

टेक: चन्द्रसखी आशा चरनन की अधर की चाल निराली।

छन्द: जा कई राय, जै अधर गाय, ख्यालन जगाय जे दरसाई।

जे अधर तान, गाते हैं आन, ना रही सान हारी खाई।

टेक: रंग से रंग डारी गिरधारी, श्री राधा की सारी।

छन्द: हर सखन संग, दिल किये दंग, रहे डार रंग झिर सी भारी।

कर रहे तंग रंग डार अंग, ऐसे निहंग दे रये गारी।

उड़ान: लागत लाज इहांरी

कंचन कलस लिये कर गिरधर लागे करन तयारी।

छन्द: करके तयार,रहे रंग डार, केसर की धार, सिर सें ढारें।

ललता कों टेर, लये सखिन घेर, कीनी न देर धाई नारें।

× × × × × × ×

मूल्यांकनः

श्री सूरश्याम तिवारी की उपरोक्त रचनाओं को पढ़कर स्पष्ट है कि ये अच्छे फागकार थे। इनकी सभी फागें प्रायः श्रंगार, भक्ति और शान्त रस से ओत प्रोत हैं। इनकी भाषा सरल, सुबोध माधुर्य और प्रसाद गुण पूर्ण प्रचलित बुन्देली में है, सुन्दर शैली में लिखी गईं इनकी फागें मन को छू लेती हैं हिन्दी साहित्य में इन्हें स्थान मिलना चाहिये।

(6) श्री भरतू दीक्षितः

परिचय :

श्री भरतू दीक्षित का जन्म वि0 1931 में ग्राम कुलहैण्डा (राठ, जिला हमीरपुर) में एक जुझौतिया ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये अपना जीवन यापन साधारण किसानी और ब्राह्मण वृत्ति से करते थे। इनके पुत्र पं0राजाराम जी दीक्षित पुराण वक्ता कुशल पंडित रहे हैं। इनकी मृत्यु वि0 1991 में हुई।

काव्य कृतियांः

श्री भरतू मुख्य रूप से अच्छे फागकार थे। इनकी फागों में बुन्देली का निखरा हुआ रूप दिखाई देता है। इनकी फागों के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं:-

(1)

तोरे मधुर पैजना बाजैं, गोरे पग में राजैं,
प्रातकाल उठ चलीं जरूरी आईं तला सें मार्जैं।
लुड़क जात टकनन के खालैं, छांड़ कड़ी आवाजैं,
भरतू परैं काऊ के ऊपर भादों कैसी गाजैं।

(2)

ले आये वीर कहां से मुन्दरी, कछू लाल कछू धुन्दरी,
हैं अजीत कोऊ जीत न सकहै, मैं जानत हौं खुदरी।
माया तें गड़ सकत न कोऊ, ऐसी नग-नग सुन्दरी,
भरतू, कात रात सीता खां, एइ सोच में गुजरी।

{3}

मुन्दरी मैंने पाइ मसाकें, रामें हंसा हंसा कें,
हम अंगद सुग्रीव सुमत में, लखनें गंसा गंसा कें।
दसकंधर के मार पारूआ, समुदै घंसा घंसा कें।
भरतू कात मात प्रन जो है जैहों लंक नसाकें।

{4}

रे मन सूजै तोय हरीरो, धरत पांव ना धीरो,
जोरत धरत पुरातन लौ खां, काल पौंचगो, नीरो।
चले जैव जमलोक अकेले, संग न जैहे जीरो,
भरतू कात चले गये अपना लगो हात न हीरो।

श्री भरतू द्वारा फड़ में गायी गयी एक सुन्दर फाग निम्नलिखित है-

{5}

डारी कितनी बेरा जाकैं, हमें बता दो गाकें,
कितनी बेरा दास विभीषन भेंटे शीश नवा कैं।
मुंदरी जनक सुता कें सौंपी, जारी लंक रिसा कैं,
जार लंक ले चले चिनारी, दई राम खां आकें।
फड़ में फाग छेड़ दई भरतू, रै गओ तें मौं बाकें।

{6}

मुंदरी कौन दिना कपि डारी, ऊतर कहौ बिचारी,
कितनी बेरा कौन लगन में, सीता कर में धारी।
कौन नक्षत्र कौन तिथि अन्तर गये रावन दरबारी।
द्विज भरतू' कयें भेद फाग कौ बता, बोल कै हारी।

मूल्यांकनः

श्री भरतू दीक्षित की उपरोक्त फागों को पढ़कर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि इनकी फागों में बुन्देली का निखरा हुआ रूप है। इनकी भाषा में माधुर्य और प्रसाद का गुण मिलता है।

यद्यपि इन्होंने सरस श्रंगार रस पर अधिक लिखा है किन्तु कहीं कहीं अश्लीलता भी दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार बुन्देली के विशुद्ध रूप में प्राप्त श्री भरतू की फागें हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

(7) श्री महीपति द्विज :

परिचय:

इनका जन्म वि0 सं0 1933 को तहसील राठ के थाना जरियान्तर्गत ग्राम धगवां में हुआ था ये शरीर से मोटे किन्तु एक आंख से हीन थे। बड़ी मूंछ धारण करना इनका शौक था। स्वयं को ब्राह्मण कुल में उपमन्यु गोत्र का होना इन्होंने अपनी रचनाओं में बताया है। ये हनुमान जी के भक्त थे। इनकी मृत्यु वि0 सं0 1993 को लगभग 70 वर्ष की उम्र में हुई।

काव्य कृतियां:

इनकी लिखी एक पुस्तक 'फाग सिरोमणि' भार्गव पुस्तकालय बनारस द्वारा प्रकाशित की गई है। इस पुस्तक के प्रारंभ में कवि ने अपना परिचय निम्न प्रकार से दिया है।

दोहा: जन्म भूमि के पता को बरनों सबरो हाल।
विप्र वंश उत्पन्न भये, सुन्दर जिनकी चाल ।

टेक: मोरी जन्म भूमि पहिचानो जहं जरिया को थानो।

छन्द: है हमीरपुर, जिला जान दूर, पन्द्रा जरूर कोसन गायो।
जलालपुर सार, परगना यार करके विचार हम समझायो।

दोहा: सनझ लेव तुम चतुर नर ये ही उरधर मानो।
जहां डाकखानो बनो है जरिया को थानो।

टेक: अतरौली के पास नगर है धगवां ग्राम बखानों।

छन्द: महिपत है नाम, जाहिर तमाम, काव्द को काम जिनके भाई,
मोटा शरीर, बाहन में धीर, हर लेत पीर कर चतुराई।

दोहा: बड़ी-बड़ी दो मूंछ हैं एक आंख में कानों,
अतरौली के पास है धगवां ग्राम बखानो।

टेक: दुबे कहत जयराम मऊ के ये ही या ठिकानो।

छन्द: उपमन्यु खास, है गौत्र तास, करकें प्रकाश तुमसें कहिये।

मन्दिर के पास मेरो है वास, नहिं जम की त्रास अति सुख लहिये।

दोहा: पुरा मुहल्ला चौखटा, हरदम रहत समानो,

पूंछो सबसे आन के, ये ही यार ठिकानो।

टेक: महावीर के रहत उपासक, रंग अनकेन छानो।

छन्द: गाते हैं छन्द, सेरा अनन्द, वैदक प्रबंध में चतुराई,

कहते हैं नित्य, कथ केकवित्त, ख्यालों में मित्र आनंद पाई।

दोहा: रहत सदा आनन्द में, है शुभ गुन को गानो,

पवन तनय की कृपा से, रंग अनेकन छानो

इस प्रकार उपरोक्त फाग में स्वयं को एक आंख से काना लिखने से प्रतीत होता है कि ये बहुत स्पष्टवादी थे। इन्होंने मुख्य रूप से छन्ददार फागें ही लिखी हैं। ख्याल भी ये लिखते थे। राम नाम के महत्व पर प्रकाश डालते हुये इनकी एक फाग निम्नलिखित है:-

दोहा: राम नाम के लेत ही, होत पाप को नास,

जैसे तिनगी आग की,परत पुराने घास।

टेक: जग में राम नाम सुखदाई, कभी न भूलो भाई,

छन्द: ऐसा है नाम, सुख केर धाम, भज आठ जाम हिरदै माहीं,

दुख दूर जात, पातक बहात, है सत्त बात, कहें तुम पाहीं।

उड़ान: नर तन मुसकिल मां मिलत, कहें तुमें समुझाई,

सीतापति के नाम को, भूल न जैये भाई।

टेक: है सुख बहुत लोक के माहीं, है परलोक भलाई।

छन्द: झूठी है तात, सब पिता मांत, ना संग जात कोऊ तेरे।

सुत नारी जौन, सुख करें मौन, दुख देंय तीन भयो का चेरे।

दोहा: बीच संग तेरो भयो, बीचे मां छुट जाई।

नाम सार है जगत मां, है परलोक भलाई।

टेक: नाम जपो ध्रुव सुरत लगाकें, कैसी पदवी पाई।

छन्द: पद अटल पाय, सुख रहो छाय, बसे सुरग जाय आनन्द मन में।

प्रह्लाद भगत, भये जाने जगत, श्री राम सकल व्यापी तिनमें।

दोहा: अजामील गज्ज गीध से, तरे नाम को ध्याय।

अधम जात सौरी हटी, कैसी पदवी पाय।

टेक: महावीर ने राम जपे सें कर लये बस रघुराई ।

छन्द: रघुपत धर ध्यान, धरो ह्दय आन, वेदन प्रमान कही विस्तारी।

छोड़ो न यार, देखो विचार, प्रभु नाम सार, सब दुख हारी।

दोहा: दुःख सकल हर लेत हैं पाप समूह बिलाई।

महिपत दुज पै अब कृपा, करो आन रघुराई।

(3)

उन बिन जाड़ो सहो न जावे, नाम बालम घर आवे।

करे उपाव अनेकन मैंने, तापर काम सतावै।

रेशम वस्त्र ऊन के पहिरे, तऊ शरीर दुख पावै।

महिपत दुज धगवां के वासी नित नई फाग बनावे।

नशीली वस्तुओं का सेवन एक बहुत बड़ी सामाजिक बुराई है जो शरीर एवं धन दोनों को नष्ट कर देती है। भांग, अफीम, चरस, शराब सभी नशीली वस्तुओं के सेवन की बुराई के प्रति कवि कितना जागरूक है इसका एक चित्रण प्रस्तुत फाग के द्वारा देखिये।

दोहा: सखी सात घर सें चलीं, जुरीं कुआं पै आय।

अपने अपने पतिन के, लच्छन रहीं सुनाय ।

टेक: सखि सब कहें हकीकत आई, अपन अपन समझाई।

छन्द: मेरे पिया जू भांग बनाकर लोटा भर पी जाते हैं।

बोलें न चालें खटिया पै पड़े पड़े ऐंड़ाते हैं।

जब खाना कों खांय सखी री, सेर दोक खा जाते हैं।

जो मैं बोलों सखी उन्हें तो आंखें लाल दिखाते हैं।

उड़ान: जौ दुःख सहो न जाई।

छन्द: पियें चरस डोलें बखरी में, पिया हमारे के ये ढंग।

लाली आंख बदन में आली, जौलों नशा की रहे उमंग।

मोरी तरफ को हेर सखी री, बिना काम के करते जंग।

एई सोच में अरी सखी री बन बन कें हम हो गई तंग।

उड़ान: ना कछु और सुहाई।

दोहा: सखी कहत सुन दूसरी पिया को आवै झींम।

बारा आना भर सखी, खाते रोज अफीम ।

टेक: खा अफीम रये ऐंड़ सेज पर कैसो करिये माई।

छन्द: सूख गई सब देह पिया की, रकत माझ न रओ शरीर।

दिन भर खांसत रहें पौर में, बड़ी कठिन है इनकी पीर।

कहें मिठाई दूध मंगावै आँखिन मां बरसत है नीर।

पउवा भर अब खान लगे हैं देख उन्हें हो गई अधीर।

उड़ान: सो मजा न हमने पाई।

दोहा: हम कैसी करिये सखी, सुनौ हमारे हाल।

गांजा पीना कठिन है बन बन करौ बिहाल।

टेक: परे बंग बर रहे जंग मुंह तन छाई पीराई।

छन्द: बड़े भोर सें आग चिलम की ये तदवीर लगाते हैं

भुन्सारे सें खांसत हैं ये पड़े पड़े चिल्लाते हैं

सूख गया सब बदन रंग रहे उठा हमें तरसाते हैं।

कैसौ करिये सखी सेज पर कभी नहीं वे जाते हैं।

उड़ान: ऐसैं उमर गंवाई।

दोहा: पिया हमारे की सुनों का का कहिये बात।

आठ आना की रोज जे, बोतल भर पी जात।

टेक: पी प्याला बोतल कर खाली, चपटौ दयौं उड़ाई।

छन्द: गिरत परत लेव फिरत खोर में कछू कहत कछु कह आवै।

बरजावै जौ नशा सखी री हमें नहीं देखो जावै।

तीन रोज लौ सुनों सखी री , ना उनको भोजन भावै।

बिल बोले सें रोज गालियां, देत हमें दुख दिखलावै।

उड़ानः ई मां रंज उठाई।

दोहाः पिया हमारे की सखी, बहुत बुरी है चाल।

मदक पिये सें धन गयौ, कर दओ हमें बिहाल।

टेकः हाल चाल का कहिये उनकी, गई सब देह सुखाई।

छन्दः बिलियां घोबें बड़े भोर सें चिपरन की करते तदबीर।

अफीम घोरी, चड़ाई, फूंकत मां कंप रहो शरीर।

किमाम करके जाझु डार दयौ, चुट्टा देखत गई पीर।

उड़ाते छींटा रहें हमेशा मंगावैं खाने को वे खीर।

दोहाः कैसो करिये ये सखी, लगे दिखत में लाज।

कयें रंजदारी बड़ी, सैंया चण्डूबाज।

टेकः चाण्डू पी गाफिल बन बैठे, कालों इन्हें सिखाई।

छन्दः चांडू कर तैयार बनाकें, गदिया तकिया लगवाई।

सरकें पर कर पौर में दिया लयो उन लगवाई।

मुंह बाकें रह गये लगा कैं, चरचरात चर चर माई।

जो कुछ बोलों मैं उन खां, हमें जाम रहे बतलाई।

उड़ानः सो नफा न उनमें पाई।

दोहाः चतुर सखी बोली बचन, तुम तो पर गई फंद।

पिनक नशा में पिया मगन, हमें बड़ा आनन्द।

टेकः कह दुज सखुन 'महीपत' गाकें सब की दसा सुनाई।

मूल्यांकनः

उपरोक्त रचनाओं के अध्ययन से पता चलता है कि श्री महीपत द्विज अच्छे फागकार थे। मुख्य रूप से इन्होंने छन्ददार फागें लिखीं हैं। सरल शैली में इनमें माधुर्य का गुण विद्यमान है सामाजिक कुरीतियों के प्रति सजग कवि स्पष्टवादी एवं स्वाभाविक चित्रण करने की कला में दक्ष है।

{8} पं0 बैजनाथ व्यास

परिचयः

पं0 बैजनाथ व्यास का जन्म वि0सं0 1935 में राठ {हमीरपुर} के पठानपुरा मुहल्ले में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री नन्हें लाल व्यास था। ये मुख्य रूप से फागकार थे इनकी मृत्यु वि0 1994 में लगभग 59 वर्ष की उम्र में हुई।

काव्य कृतियां:

इनकी लिखी एक पुस्तक "फाग मनहरन मनोहर", प्रकाशित हुई है इस पुस्तक में कवि ने अपना परिचय निम्न प्रकार दिया है।

(1)

सुन्दर ग्राम राठ है जानों, बैजनाथ ममनाम बखानों।
नन्हें लाल व्यास के बालक, उमानाथ मेरे प्रतपालक।
कवित फाग जो छन्द बनाऊं, पुरा पठान पतौ सो बताऊं।
जिला हमीरपुर इत लागे, रामचरन चित निस दिन पागे।

इन्होंने चौकड़िया और छन्ददार दोनों प्रकार की फागें लिखी हैं इनकी कुछ फागें नीचे दी जा रही हैं।

(2)

मनुआ पायक रघुबर के रे, निश वासर रट ले रे।
दूर होत दुख दारिद तन के, पवन तनय के हेरे।
जाकें चरन नित्य टेकें तिन, सुखी भये बहुतेरे।
मंगल भवन सदन सुत उपजे, जिन जिन ध्यान धरे रे।
बैजनाथ कवि व्यास कहत कर सिद्ध मनोरथ मेरे।

इनके द्वारा उर्दू में लिखी गयीं फागों का एक उदाहरण देखिये-

(3)

जब से मारा चश्म निशाना, दिल कीन्हां दीवाना।
मुर्ग नीम बिसमिल सा तड़पूं, तेरे गम में जाना।
शहर शहर कूंचे कूंचे सब, बियावान तक छाना।
ये बाबू को दिखा दीद जब, दिल को लगे ठिकाना।

इनकी सुन्दर फागों का एक उदाहरण और दिया जा रहा है।

(4)

हम खां रति पति पितु बन आली, लगे भुवन सब खाली।
सूनों जान छाय रहो वपु बिन, आन जमाई पाली।
किले कठिन जुग रजधानी के, छोड गये हैं चाली।
तिनखें टोरत चहत रूपवर मारत ताक दुबाली।
प्रेमी कवि कब मिलें आयकें, दूर होय उरसाली।

मूल्यांकनः

पं0 बैजनाथ व्यास की उपर्युक्त फागें यह सिद्ध करती हैं कि इन्हें हिन्दी व उर्दू दोनों का अच्छा ज्ञान था। इनकी काव्य शैली सरल एवं सरस है एवं इसमें माधुर्य का गुण विद्यमान है।

(9) लाला शिवदयालः

परिचयः

इनका जन्म वि0 1943 के लगभग सरीला, राठ(हमीरपुर) में हुआ था। इनके पिता का नाम लाला घासीराम था। लाला घासीराम सरीला नरेश के कामदार थे। पिता के मरने के बाद लाला शिवदयाल उनके स्थान पर काम करते रहे। इनकी मृत्यु वि0 2003 के लगभग हुई। नौगांव छावनी में भी इन्होंने नौकरी की थी। इस कारण ईसुरी व गंगाधर जैसे कवियों का प्रभाव इनकी रचनाओं पर पड़ा।

काव्य कृतियांः

लाला शिवदयाल एक फागकार थे। इनकी लिखी एक पुस्तक 'फाग मनोहर' प्रकाशित हुई थी। इसमें प्रकाशित अधिकांश फागें श्रंगार रस की हैं। कुछ फागों के संबंध में कहा जाता है कि अन्य कवियों की फागों में हेर फेर करके इन्होंने बना ली हैं। पुस्तक के आरम्भ में एंक दोहे के द्वारा उन्होंने स्वयं भी इस ओर संकेत किया है।

अपर कविन के छन्द कछु, अरू कुछ कहे नवीन।
क्षमा करो अपराध सब, जान मोहि अति दीन ।

कुछ फागों के नमूने नीचे दिये जा रहे हैं:-

(1)

आली नहिं आये वनमाली, सौतिन संग रति पाली।
छाई नभ लाली चार्ला निस, कीनी धुन चटकाली।
भई बेहाल कुंज खाली लख, सखी मैंन मोहि साली।
शिवदयाल कब श्याम सेज में, आय न अंक लगा ली।

(2)

आली हो गये निठुर कन्हाई, मेरी सुध बिसराई।
जानत ते अपने ना हूहैं, पर पिय वेदन गाई।
जान बूझ के प्रति करी हम, जग की सही हंसाई।
कहं शिवदयाल दूध की माछी, आंखिन देखत खाई।

(3)

अपनी सूरत सनम दिखा जा, दिल की जलन बुझा जा,
एक बेर पलकों के ऊपर, कण्ठ से कण्ठ लगा जा।
निश दिन रहत हमारे तन में बजत मदन को बाजा।
कहं शिवदयाल लगन वारे की ओर से छोर निभा जा।

प्रसिद्ध फागकार स्व0 गंगाधर की फाग से मिलती हुई इनकी एक फाग देखिये।

(4)

जाती भरन नीर जमुना के, देकें कजरा बांके।
पैजनियां अरू पायजेब के पारें जात छमाके।
आगें जौन गली हो कड़ गईं, तहं खिंच रहे सनाके।
शिवदयाल मोहन राधा को, बैठे बांधे नाके।

मूल्यांकन:

लाला शिवदयाल की उपरोक्त फागें पढ़ने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि अन्य कवियों की फागों की इनकी रचनाओं पर गहरी छाप थी। वैसे फागों में कहीं कहीं मुहावरों का प्रयोग इनके द्वारा बड़े ही सुन्दर ढंग से किया गया है। बुन्देली के साथ साथ खड़ी बोली का प्रभाव भी इनकी फागों में परिलक्षित होता है।

(10) पं0 टीकाराम तिवारी:

परिचय:

इनका जन्म वि0 1957 में तहसील राठ स्थित ग्राम उमरिया में हुआ था। इनके पिता का

नाम श्री बृजलाल वैद्य तथा मां का नाम श्रीमती पूना बाई था। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। श्री बृजलाल वैद्य के तीन पुत्र थे श्री दयाराम, श्री टीकाराम एवं श्री रामचरन। इस प्रकार पं0 टीकाराम मंझले पुत्र थे। पं0 गौरीशंकर जो नदीगांव के निवासी थे, इनके गुरू थे। इन्हीं से पं0 टीकाराम ने व्याकरण शास्त्र संस्कृत व ज्योतिश का गहन अध्ययन किया। ये संस्कृत व हिन्दी के प्रकाण्ड पंडित थे। इनके चार पुत्र हैं ज्येष्ठ पुत्र पं0 चन्दशेखर शास्त्री ब्रह्मानन्द इण्टर कालेज में संस्कृत अध्यापक रहे हैं। पं0 टीकाराम तिवारी की मृत्यु सं0 2002 (सन् 1945) में हुई।

काव्य कृतियां:

ये संस्कृत व हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनका संपूर्ण अप्रकाशित साहित्य इनके ज्येष्ठ पुत्र पं0 चन्द्रशेखर शास्त्री जो राठ नगर में रहते हैं , के पास उपलब्ध है। ये फागें भी लिखते थे। बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी दीवान शत्रुघ्न सिंह जी की प्रशंसा में इन्होंने कई सुन्दर धनाक्षरियां लिखी हैं इसके अतिरिक्त कई धार्मिक विषयों पर भक्तिभाव पूर्ण आपकी सुन्दर रचनायें अभी भी अप्रकाशित रूप में उपलब्ध हैं। कुछ रचनाओं के नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

बुन्देलखण्ड केसरी प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी दीवान शत्रुघ्न सिंह जी के प्रति लिखे गये कवि के छन्द नीचे दिये जा रहे हैं:-

(1)

सुन्दर समुदार शान्त, शूर सामन्त महा,
महा शक्तिशाली बलशाली सयानो है।
भारतीय दीनों की दलितों की दशा देख,
दया से द्रवीभूत अति ही अकुलानो है।
कर में विकराल महाशान्ति करवाल लीन्हीं,
दैके हुंकार रण सम्मुख समुहानो है।
शत्रु को छकायो, झुकायो रण खेत माहिं,
शत्रुघ्न दीवान महाराजा मर्दानो है।

(2)

जन्म भूमि भारत को, सुन्यो जब आर्तनाद,

जाग्यो अकुलानो देह-गेह को भुलानो है।

शत्रुदल घोर चहुं ओर घोर जोर देख्यो,

देखत न सकानो बंक वीर मरदानो है।

गर्ज्यो परिहार, क्रुद्ध केसरी सौ युद्ध माहिं,

सुनत ही सकानो शत्रु साहस सिरानो है।

वीर प्रण पालने को शत्रु उर सालने को,

शत्रुघ्न दिवान छत्रसाल सो दिखानो है।

(3)

भारत आजादी की देख बरबादी बड़ी,

उठ्यो दीन दुःखी देख संतत बिलखानो है।

शान्ति मय करारा कर धार्यो दुधारा महा,

जगी उर उमंग जंग आन अरझानो है।

जाहिर दुरंगी फिरंगी के छक्के छूटे,

सुवन जब सुदर्शन को रण में मचलानो है।

रिपुबल बहायो धरषायो औ खपायो खेत,

शत्रुघ्न दिवान मानो मर्द मलखानो है।

(1)

कवित्त (गांधी वर्णन)

फूंकता है स्वराज्य शंख चरखे का चक्र लिये,

सत्याग्रह गदा पद्म प्रेम भुज पाती में।

शस्त्र न उठाता रथ भारत का हांकता है,

जीतता है युद्ध है कर में करामाती में।

गांधी जी से दैवी गुण नरों में तो होते नहीं,

बात क्या है देखते जो एक गुजराती में।

लेकर अवतार भगवान कृष्ण आये नहीं,

देखना है तो नहीं चरण चिन्ह छाती में।

﴾2﴿

﴾ भक्तवर कूवा ﴿

सुन के पुकार गजराज की कृपागार,

छोड़ के वाहन उपाहन बिन धाये हो।

भक्त प्रहलाद हू के प्रण के प्रति पालने को,

नर हरि सुरूप धार खम्भ में समाये हो।

द्रोपदी की लाज काज छोड़े सब साज टेक,

आज ब्रज राज आय चीर को बढ़ाये हो।

कूवा की बार कैसी कूवत घटी है नाथ,

जान के अनाथ मोहिं तुमहू बिसराये हो।

राजस्थान प्रदेश के प्रसिद्ध भक्त सन्त श्री कूवा कुम्हार पर लघु खण्ड काव्य जैसी रचना आपने लिखी है उसकी कुछ पंक्तियां अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

दोहा : राजस्थान प्रदेश में था छोटा सा ग्राम ।

सब वर्गो का वास था था विशेष अभिराम।

रहता था उस ग्राम में परम चरित आगार।

सन्त शिरोमणि भक्तवर कूवा नाम कुम्हार।

दयनीय दशा तो थी उसकी वह तो उदार चित वाला था।

पी लिया भक्त रस प्याला था, दृढ़ मत वाला मतवाला था।

﴾4﴿

सब के मन भायो, सुहायो सुभाव जाको,

जनता उर मध्य जो जनार्दन सो सयानो है।

दीन दुख दारिद दवांर के दवायवे को,

आशु बरसानो मानो मेघ घहरानो है।

कठिन कुटेकियों की कूटियों की कूटनीति,

पदमिनी बिदाखे को हिरद मस्तानो।

सादर समर्प्यो सर्वस्य बलि वेदी बीच,

शत्रुघ्न दिवान देश प्रेम को दिवानो है।

(5)

सरल सुचि सुभाव जासु शील संकोच सनो,

जिसे देश भाषा का स्वयं स्वाभिमान है।

भूर भटनागर उजागर बुद्धि आगर यहां,

जाहिर जवाहर को पायक बलवान है।

कर में महान शान्ति सज्जित किरपान लैकें,

जंग आजादी माह कीन्हों घमसान है।

मार रिपु मान अरू राखी बीर आन बाग,

शत्रुघ्न दिवान हिन्द सूबा की शान है।

(6)

सुन्दर सुपीनो नवीनो है अंग जासु,

सोने में सुगंध जैसो पायो आरोग है।

जाग्यो सो जाग्यो बस त्याग्यो घर बार सबै,

हारयो परिहार देख भारी भव योग है।

भाल है विशाल जैसो बुधि बल विशाल तैसो,

दीरघ भुज दण्डन को दीरघ उद्योग है।

शत्रुबल धरसन को तेज है सुदर्शन को,

सुवन श्री सुदर्शन को दर्शन के योग हैं।

बाहर दरिद्र था देखने में, भीतर तो भक्ति धन वाला था।

काला था बाहर देखने में, पर भीतर से उजयाला था।

गुण हीन था बाहर देखने में, भीतर से सदगुण धारी था।

था निराधार यों देखने में, भीतर तो रामाधारी था।

कुछ फागों के सुन्दर नमूने देखियेः-

(1)

उर में उठी काम की ज्वाला, भई वियोग बेहाला।

लिखकें शेष महेश हुताशन, लिखो शेन तत्काला।

रजनी मुख को समय सोच कैं, लिखत राहु विकराला।

द्विज पंडित कहें भेद बतावे, ताकी बुद्धि विशाला।

(2)

तन की बात कही न जाई, कहतन खां कठिनाई।
अंग अंग आगी सी लागी, उर में जगी उंचाई।
कहँ गई पावन की चंचलता लखा नयनन में छाई।
द्विज पंडित कहैं कौन नायका, हम कहुँ देव बताई।

(3)

वन में मृगन बनाई शाला, तजे ग्राम तत्काला।
चन्दा जाय आकाश उड़ानो, धंसो शेष पाताला।
कंज कीच में करें तपस्या, गृहे भृगन की माला।
अम्बक मुखा बेनी कर लचकें,द्विज पंडित कयें हाला।

(4)

सुबरन धंसो अगिन के माहीं, धनपति विपिन पराहीं।
छिपे जलधि बिच मीन दीन हो, दाड़िम कल बिलगाहीं।
कान्त कटी अम्बक मुखा लखाकें, लज्जित मान रखाहीं।
द्विज पंडित कहें अर्थ लगावें ताकी बुद्धि अथाहीं।

मूल्यांकनः

संस्कृत व हिन्दी के प्रख्यात विद्वान व जनपद के ख्यातिलब्ध कवि पं0 टीकाराम तिवारी का काव्य साहित्य उच्च कोटि का है। इनकी रचनायें बोधगम्य एवं लालित्य के गुणों से युक्त हैं। कवि को भाषा का गहरा ज्ञान था। सुंदर शब्दों के चयन से रचनायें प्रभावपूर्ण हो गयी हैं। कवि द्वारा रचित भक्तिपूर्ण लघु खाण्ड काव्य 'भक्त सन्त कूवा' एक सुन्दर कृति है। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बुन्देलखाण्ड केसरी दीवान शत्रुघ्न सिंह पर लिखो गये कवि के सुन्दर छन्द उसके काव्य कौशल का प्रमाण हैं। जनपद के श्रेष्ठ कवियों की कोटि में कवि को रखा जाना उचित है।

(11) श्री प्रताप सिंह:

जीवन परिचय:

स्व0 कुंवर महेन्द्रपाल सिंह ' हमीरपुर और उसके कुछ अज्ञात कवि ' मधुकर , 1 मई सन् 1949 पृष्ठ-17 के अनुसार कवि प्रताप सिंह भी एक अच्छे कवि हैं। इनके पिता का नाम श्री रत्नेश था। ये बलभद्र कृत नख सिख के टीकाकार थे। इनकी टीका की आरंभिक पंक्तियां निम्न प्रकार हैं-

सिष निष कृत बलभद्र अति,
अर्थ गंभीर निहार
ताको टीका होई जो,
समझे सब संसार।
हुक्म दियो विक्रम नृपति,
सब कवि निकट बुलाइ।
सिष निष की टीका करहु
निज बुधि बल दरसाइ
सो सुनि सुकवि प्रताप सिंह
अरू नृप आयसु राषि
सिष निष टीका सुगम,
बरनत भाषा भाषि।
संवत ससि बसु बसु बहर,
ता ऊपर षट जानि।
शुक्ल पक्ष त्रितिया सुतिथि,
माधव भाष बखानि।

मूल्यांकन:

श्री प्रताप सिंह की उपर्युक्त रचनायें प्रमाणित करती है कि उस काल के ये एक अच्छे कवि थे। इनका भाषा ज्ञान अच्छा था साथ ही पिंगल के भी ये ज्ञाता थे।

तहसील कुलपहाड़ के प्राचीन कालीन कवि

¦1¦ मंडन कवि:

जीवन परिचय:

रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में पृष्ठ सं0 243 पर इनका उल्लेख आया है। उनके अनुसार मंडन कवि जैतपुर - कुलपहाड़ ¦महोबा¦ के रहने वाले थे और संवत 1716 में राजा मंगद सिंह के दरबार में थे। ये अच्छे दरबारी कवि थे।

काव्य कृतियां:

इनके द्वारा लिखित पांच पुस्तकें बताई जाती हैं - 1.रस रत्नावली, 2.रस विलास, 3.जनक पचीसी, 4.जानकी जू को ब्याह, 5.नैन पचासा। पुस्तकों के नाम से ही स्पष्ट है कि प्रथम दो ग्रन्थ रस निरूपण पर हैं। संग्रह ग्रन्थों में इनके कवित्त सवैये मिलते हैं।

इनका एक सवैया नीचे दिया जा रहा है।

अलि हौं तौ गई जमुना जल को, सो कहा कहौं बीर, विपत्ति परी।
घहराय के कारी घटा उनई, इतनेई में गागरि सीस धरी।
रपट्यो पग, घाट चढ़यो न गयो, कवि मंडन है कै विहाल गिरी।
चिर जीवहु नंद के बारो, अरी, गहि बाहे गरीब ने ठाढ़ी करी।

मूल्यांकन:

इनके जो पद्य प्राप्त हैं उनसे पता चलता है कि ये बड़ी ही सरस कल्पना के भावुक कवि थे। इनकी भाषा सरल, स्वाभाविक और व्यंजनापूर्ण थी।

(2) पद्म सिंह :

जीवन परिचय:

पद्म सिंह का जन्म कुलपहाड़ (महोबा) में वि0 1910 में हुआ था। ये क्षत्रिय कुल के थे ये मुख्य रूप से फागें लिखते थे। रईस घराने के होने के कारण अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान रखकर ये रामप्रसाद उपनाम से फागें लिखा करते थे। इनकी मृत्यु वि0 1970 में हुई।

काव्य कृतियां:

इनकी कोई प्रकाशित पुस्तक नहीं है अप्रकाशित रूप में इनका साहित्य कुलपहाड़ के ही एक फाग गायक के पास है। इनकी कुछ फागें अवलोकनार्थ दी जा रही हैं:-

(1)

सजनी जलचर हेतु सतावै, उन बिन भवन न भावै।
हरि अहार की अवधि बदी ती, सो अब बीती जावै।
शैल-सुता पति ता-सुत-वाहन, गिरचर गिरा सुनावै।
रामप्रसाद पिया प्यारे को, कौन संदेशो ल्यावै।

(2)

हमखां दरद होत बिछरन को, रजऊ तुम्हारे तन कौ,
हाल घरीं कोऊ ऐसो नइयां, तनक भरैया मन कौ।
भाई बन्द अरू कुटुम्ब कबीला, का करिए ई धन कौ,
रामप्रसाद तुम्हारे पीछूं, भओ फिरत रन बन कौ।

(3)

ठाढ़ी बांध गैल में नाके, देव गमन रमना के,
बिन हथयार बिना फौजन के पार लेत हैं डॉकें।

इक तो वार जात न खाली, दूजे होत न ठांके
रामप्रसाद भला मनसई में , लगन चहत हैं टांके।

मूल्यांकन:

उपर्युक्त दो फागों के अवलोकन से पता चलता है कि पद्म सिंह एक अच्छे फागकार थे। ईसुरी द्वारा फाग साहित्य को जो दिशा दी गई थी उस पर आगे बढ़ने का सार्थक प्रयास कवि ने किया है। भाषा दोष से मुक्त कवि की रचनायें मन को छूने वाली हैं।

(3) मुंशी बल्देव प्रसाद भट्ट:

जीवन परिचय:

मुंशी बल्देव प्रसाद का जन्म जैतपुर (कुलपहाड़) में वि0 1927 के लगभग हुआ था। ये अध्यापक थे। धनौरी में अध्यापन कार्य करने जब ये आये तो वहीं के बाद में निवासी बन गये।इनकी दो लड़कियां थीं। बड़ी लड़की के पुत्र देवकीनन्दन भी कवि हैं। इनकी मृत्यु वि0 2007 में हुई।

काव्य कृतियां:

मुंशी बल्देवप्रसाद मुख्य रूप से फागें ही लिखते थे। इनकी कुछ फागों के नमूने दिये जा रहे हैं। इनकी 'उपदेश गीतावली' नामक पुस्तक प्रकाशित भी है। स्वामी दयानन्द से प्रभावित कवि पर उनके मत का पूर्ण प्रभाव था। अपनी एक फाग में उन्होंने इसे व्यक्त भी किया है।

(1)

जग में दयानन्द न होते, कईयक फिरते रोते
हिन्दू से ईसाई बनते, मुसलमान के पोते।
आर्य धर्म जिन केर चलायो, जगा दियो जग सोते
करो भजन बल्देव ओम् कर, खाव न जग में गोते।

(2)

का मिल जात पथरिया पूजें, तुम्हें कछू न सूजे
पूजन करत सदा जड़ कैसे, जड़ बुद्धी बन गूंजे।
पूजो सदा आत्मा भूखी, साधू सज्जन पूजे
बल्देव सदा असीसे तुमको, मुडा सों जीवन मूजे।

(3)

जब से गड़ो आर्यमत झण्डा, रोवे पोपरू पण्डा
लूटत रहे दुनिया कों ढंग में, बांध गरे में गण्डा
सकल कामना दायक बनकें, पुत्र देन को सण्डा
बलदेव वचन न पावे ठगिया, मार भगा देव डण्डा

इनकी प्रकाशित पुसतक 'उपदेश गीतावली' में विनय तथा चेतावनी की फागें की गई हैं। एक विनय की फाग नीचे दी जा रही है:-

(1)

नैया कर देव पार हमारी, नट नागर गिरधारी।
भादों भरन भरी है नदिया पोंन चलत बैठारी
डोलत फिरत बिना करिया की, भीर परी मंझधारी
बल्देव कहदोऊ कर जोरें, मैं हों सरन तुम्हारी

सामाजिक कुरीतियों पर लिखी गई कवि की निम्न फाग पठनीय हैं:-

(5)

कैसी छाई हिये नादानी, करत सदा मनमानी।
खीर खांड को पिण्ड खांय को देत वनाकर सानी।
ढोर समान मान पित्रन को देत तलैया पानी।
जियें पिता की बात न पूंछी मरें भये वरदानी।
बल्देव तजो पोप लीला को तुम सों कहत बखानी।

श्रंगार की सुन्दर फागें भी कवि द्वारा लिखी गई हैं। कुछ फागें अवलोकनार्थ दी जा रही हैं:-

भर गई ज्वानी के मद मैयां, अब का रजउ करेंया
हसंत बतात जात सखियन संग, डार गरे में बहियां

ढूंढ़न लगी छैल गलियन में, लेन लगी एड़ेयां।

दृष्टिपात घायल भये बल्देव, अब का रजऊ करेयां।

(7)

जब सें चढ़ी रजऊ खां ज्वानी, सूधें कढ़त न बानी।

खान पान की सुरत करत ना, फिरत रहत बेहानी

जौंन खोर की जी में आवें, हुर्द खां जात उतानी।

बल्देव देखत बने तमासो, कहिये कौन कहानी।

मूल्यांकन:

मुंशी बल्देव प्रसाद की उपर्युक्त फागें इस बात का प्रमाण हैं कि वे बुन्देली के अच्छे कवि थे। धार्मिक, सामाजिक व श्रंगार सभी पर इन्होंने लेखनी चलाई है भाषा में सरलता तथा रोचकता है। साहित्यिक दृष्टि से इनकी रचनायें हिन्दी साहित्य के लिये महत्वपूर्ण धरोहर हैं।

(4) पं0 चतुर्भुज पाराशर 'चतुरेश' :

जीवन परिचय:

इनका जन्म संवत 1946 में कुलपहाड़ (महोबा) में ब्राह्मण कुल में हुआ था। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बाद भी इन्होंने प्रयाग जाकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित 'विशारद' परीक्षा दी तथा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। इनकी कवितायें उन दिनों के प्रसिद्ध समाचार पत्र 'प्रताप' में प्रकाशित होने लगीं। गणेश शंकर विद्यार्थी के पत्रों से उत्साहित होकर ये साहित्य सेवा के कार्य में लग गये। कुछ दिनों तक इन्दौर में हाई स्कूल में भाषा अध्यापक के रूप में कार्य करते रहे। उन दिनों के हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वानों- माखन लाल चतुर्वेदी, बनारसी दास चतुर्वेदी, माधवराव सप्रे तथा हरिभाऊ उपाध्याय से इनका संपर्क रहा। कुछ समय बाद पारिवारिक समस्याओं के कारण पुनः कुलपहाड़ आ गये तथा नार्मल ट्रेनिंग करके अध्यापक बन गये और जीवन पर्यन्त अध्यापन कार्य ही करते रहे। अपनी मृत्यु के एक दिन पूर्व इन्होंने जिला बोर्ड की अध्यापकी से त्याग पत्र दे दिया था। चतुरेश जी अनूठी काव्य

प्रतिभा के धनी थे। विभिन्न साहित्यिक समारोहों में ये निरन्तर भाग लेते रहे। ओरछा नरेश महाराज वीर सिंह जू देव द्वारा आयोजित साहित्यिक समारोह में टीकमगढ़ प्रतिवर्ष जाते थे। ये जनपद के प्रसिद्व कवि थे।

काव्य कृतियां:

चतुरेश जी का हिन्दी भाषा पर पूर्ण अधिकार था। इन्होंने खड़ी बोली तथा बृजभाषा तथा बुन्देलखण्डी में सुन्दर रचनायें की हैं। राष्ट्रीयता की भावनाओं से भरी इनकी रचनायें स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रान्तिकारियों में नव चेतना का संचार करती थीं। ईश्वर में गहरी आस्था रखने वाले चतुरेश जी ने अपनी मृत्यु के पूर्व निम्न सुन्दर छन्द की रचना की थी।

(1)

त्राहिमाम मेरे भगवान पिता माता बन्धु, रक्षा करो शीघ्र प्रभो आरत दुखारी हूं।
पाकर मनुष्य तन लोक परलोक नहीं पायो है, सुधार रह्यो निपट अनारी हूं।
वृद्ध भयो रोगन ने घेर लियो, ज्ञान ध्यान सब भूल गयो, अर्थ चिन्तित भी भारी हूं,
हरी श्याम सुन्दर, हूँ लज्जित उपायहीन, चाहे जैसो करो अब शरण तुम्हारी हूं।

कवि का अप्रकाशित काव्य संग्रह 'जंगल के फूल' है। इससे कुछ रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं- दुर्गा स्तुतति को सवा सवैया छन्द में कवि द्वारा अत्यन्त सुन्दर तरीके से वर्णित किया गया है।

(1)

जय मातेश्वरी, महिमामयी माँ, क्षमता, क्षमा, प्रेम प्रसारिनी जै, सुखकारिनी जै।
'चतुरेश' दशा की सुधारिनी जै, अघगारिनी, दोष विदारिनी जै, दुख टारिनी जै।
जय शक्ति संहारिनी, तेजोमयी, जगजीवन जाग्रति कारिनी जै, धृति धारिनी जै।
जग अंत्र, सुमंत्र प्रचारिनी जै, सतयंत्र,सुतंत्र विहारिनी जै, जग तारिनी जै।

हास्य व्यंग की रचनायें भी कवि ने की हैं। बुन्देलखण्डी में एक अनमेल विवाह का सुन्दर चित्रण देखिये-

(3)

दोऊ ओर दांत नहीं, देख लोग दांत काढ़ें,
बहै लार इतै उतै थूंक सब जमे रये।
चार आंखें होंय नहीं, गड़े जॉय धरती में,
घूर घूर अन्य उन्हें देख सामने रये।

ओर छोर उमर के बांध गठजोरा करें,

मूंछ कल्प कजरा के ठाठ पै ठने रये।

देखन के जोग रऔ ब्याव 'चतुरेश'

जामें बनी, बनी बिन्नू, बना बब्बा जू बने रये।

समस्या पूर्तियां करने में भी चतुरेश जी अत्यंत निपुण थे। कुछ समस्या पूर्तियां नीचे दी जा रही हैं।

(4)

समस्या पूर्ति 'छाती में' (सन 1929)

फूंकता स्वराज्य शंख चरखे का चक्र लिये,

सत्याग्रह गदा, प्रेम पद्म भुज भाती में

शस्त्र न उठाता 'रथ' भारत का हांकता है,

जीतता है युद्ध हैं करिश्मे करामाती में।

ऐसे ऐसे दैवी गुण नरों में तो हाते नहीं,

बात क्या है, देखते जो एक गुजराती में।

लेके अवतार, भगवान कृष्ण आये न हों,

देखना है, है तो नहीं चरण-चिन्ह छाती में।

(5)

समस्या पूर्ति -'काले हैं' (असहयोग आन्दोलन पर)

पूर्व की चलावें हम, आय सुतें पश्चिम की,

आप भरे पूरे यहां पेट ही के लाले हैं।

हमें हाथ ही का बल, यंत्रों का तुम्हें है,

त्यों ही हैं हम निहत्थे, साजे आपके रिसाले हैं।

यहां सादगी है वहां ठाट बाट साहिबी है,

सुनें सुचितादि के भी नियम निराले हैं।

कैसा सहयोग, होवे कैसे न असहयोग,

पूरा अनमेल, आप गोरे हम काले हैं।

मूल्यांकन:

उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि 'चतुरेश' जी हिन्दी काव्य के अनूठे कवि थे। आपने

बुन्देली, खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा सभी पर रचनायें की हैं और सभी पर आपका अच्छा अधिकार था। जहां एक ओर स्वतंत्रता आन्दोलन से प्रभावित काव्य सृजन कवि ने किया है तो दूसरी तरफ भक्ति रस से ओत प्रोत सुन्दर रचनायें भी की हैं। स्थान-स्थान पर अलंकारों के प्रयोग से रचनायें अधिक सरस एवं सुन्दर हो गयी हैं। हिन्दी साहित्य के विद्वान साहित्यकारों के सत्संग का प्रभाव कवि के काव्य सृजन पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। संक्षेप में पं0 चतुर्भुज पाराशर का स्थान जनपद के अच्छे साहित्यकारों में रखा जाना उचित ही प्रतीत होता है।

(5) श्री भुजबल सिंह ठाकुर:

जीवन परिचय:

श्री भुजबल सिंह ठाकुर का जन्म पनवाड़ी (महोबा) में संवत 1945 में हुआ था। इनके पिता का नाम फूल सिंह परिहार था। इनकी शिक्षा कक्षा 4 तक थी। कक्षा 4 उत्तीर्ण करने के बाद ये अपने बहनोई कुंवर बहादुर सिंह जी रईस के यहां थुरट- जैतपुर चले गये थे। वहीं पर इन्होंने कविता लिखना प्रारंभ किया। इनका हस्तलिखित साहित्य इनके छोटे भाई वृन्दावन सिंह के पास उपलब्ध है। ये छन्दनदार फाग लिखने में अत्यन्त निपुण थे। जिस प्रकार चौकड़िया फाग में ईसुरी प्रसिद्ध थे वही स्थान छन्दनदार फाग में भुजगल सिंह जी को प्राप्त था। ये अच्छे फड़बाज फागकार थे।

काव्य कृतियां:

भुजबल सिंह जी की एक पुस्तक 'फाग रसायन' प्रकाशित है जिसमें लोक जीवन की सुन्दर झांकियों के कई मनोरम स्थल हैं। कई सुन्दर अप्रकाशित फागें इनके परिवार वालों के पास अभी संग्रहीत हैं। इनकी कुछ सुन्दर छन्दनदार फागें नीचे दी जा रही हैं-

(1) फाग अटका की

सकल बुद्ध अरू ज्ञान का, अरू विद्या का मूल,
चार बरंडा कौ बनौ सुनो एक स्कूल।
एक-एक हर बरामदा में लड़का हैं चार
बैठे अपने मिसल में, पुस्तक पढ़त उचार

टेक: लड़का बैठे पढ़त किताबें, गुरू खां सबद सुनावें

सांगीत: बैठे मुंशी जी उस्ताद, लड़कन की सुनते फरियाद।
उनकी करते तहकीकात, जो चाल करें
लड़का पढ़ने में हुस्यार, पोथी लीन्हे चार चार
तिनकी गाथा रहे उचार सब निकट धरें
भूल जात जहां, मास्टर लड़कन कौ समझावें- लाल
नम्बर अपने से सकल गुरू को सबक सुनावें
चार चार पोथी लिये, बांच लगावें सीस
एक एक हर ग्रन्थ में, पन्ना हैं चालीस।

टेक: पॉंच गिरह के लम्बे चौड़े, कागज सेत सहावें।

छन्द: पढ़ रहे बाल, हे खुशी हाल, पोथन पै लाल पूठा लागे।
रहे एक संग, दिल हो उमंग, सीं दये तंग नीचूर धागे।

उड़ान: नीचट डोरा सें सियें, मैले होन न पावें।
तिन पूठन के भीतरें, कागज सेत सुहावें।

दोहा: एक-एक हर पत्र में सतरें हैं चालीस
एक एक हर सतर में अक्षर पैंतालीस

टेक: ना छोटे न मोटे दसकत बड़े मजे के रावें।

छन्द: सुर व्यंजन के लिखे सरूप, जिनके न्यारे न्यारे रूप
देखात नौनें लगत हरूप स्याही केरैं।
जामें भांति भांति का ज्ञान मानी मतलब से सब जान
समझै क्या मूरख नादान, उनमें गूरे।

दोहा: कुपढ़ लोग जानें कहा, उनको को समझावे
जानै पंडित सायरा तिमें अटक न रावैं - लाल
कओ कितने दसकत हते, दीजे जल्द बताय
जोड़ लगा के सामने, कहौ अर्थ समुझाय।

टेक: जो कोई जौड़ लगावै इसका चतुरा सोई कहावै।

छन्द: जो दे बताय, हमको सुनाय, सो जीत जाय दंगल माहीं।
नहिं मान हार सब बानें डार कीजै विचार कहौ तुम पाहीं।

(2)

भुजबल जी का सामान्य ज्ञान बहुत अच्छा था। धार्मिक व ऐतिहासिक प्रसंगों को इन्होंने अपनी फागों में अत्यंत सरस एवं सरल ढंग से चित्रित किया है उनके अप्रकाशित काव्य संग्रह से एक फाग नीचे दी जा रही है जो श्रवण कुमार की मातृ - पितृ भक्ति से संबंधित है।

टेकः सरमन नार करकसा पाई, भई बहुत दुखदाई।

सैरः सुन बात एक दिन की, तिय भेद बनाओ।
जाके मकान कुम्हरा के हाल सुनाओ।
दो पट एक छड़ी गढ़ हमें गहाओ।
लै लेव दाम जितने मन अपने चाओ।

सांगीतः तिरेया परपंचन परवीन, तार्ने ऐसी अक्कल कीन
हंडी कुम्हरा ने गढ़ दीन, ल्याई निज धर,
खटी महेरी ड ीर बनावे, अपने पति खां खीर ड ावावे
खट्टी खा नित सूखत जावें, दोइ सास ससुर।

दोहाः एक दिना दोउ जेवन बैठे, अंध पुत्र स्ु ापाई
इक में खीर, महेरी इक में थार परस के ल्याई।

टेकः सरमन थार गहा दओ आपन तिनको लओ सरकाई।

सैरः एक कौर सरमन ने जबहीं खाया,
जान गये भेद सकल, गुस्सा आया।
हाथ धोय भीतर गये सरमन राया।
हंडी को देख एक लट्ठ लगाया।

सांगीतः तुरतई गदा एक मंगवाय, सरमन नारी को चढ़वाय
पश्चत कंडा मारे ताय, छुटका दये केश
फिर उन कारीगर बुलवाय, कांवर चन्दन की बनवाय
अन्धी अन्धा को बैठाय, निकले परदेश।

दोहाः तीरथ कीनें जायकें, हरि सें ध्यान लगाई।
पहुंचे जाय बीच बनका में, कहत अंध समुझाई।

टेक : हमखां प्यास लगी है बेटा, पानी प्यादेव भाई।

सैर: काटिन उपाय कीन्हें ना मिट्‌ट कर्मफल

कांवरको टांग तरवर से गये लेन जल।

उस वन में था सरवर इक पानी निरमल।

लिये एक हाथ तूमा फिर आये जहां चल।

सांगीत: सरमन पौंचे ताल किनारे बैठे नृप दशरथ रखवारे।

कर में धनुष बान संभार, मिरगा लानें

सरमन तूमा में जल नायो, तूमा भक भक शब्द सुनायो

दशरथ धोखा मृग को खायो, सर संधाने।

दोहा: बान आन छाती लगो हिरदे गओ समाई।

राम राम हा राम पुकारे, धरनि गिरे मुरझाई।

टेक: बचन सुनत दशरथ उठ धाये तुरत पहुंच गये आई।

सैर: सब कहा हाल सरमन, सुन राजा कम्पत।

लै जाओ नीर वन में तुम मानों भूपत।

मम माता पिता दोऊ राजा प्यासे तलफत

तन त्याग दिया सरमन भज राम रमापत।

सांगीत: पहुंचे बन में लैके पानी, अंधी अंधा दोई प्रानी।

तासें राजा बोले बानी पी लीजै नीर।

इतनोकह राजा भये मौन, बोले अंधी अंधा दौन।

आय भेष बदल तुम कौन, सांची कऔ वीर।

दोहा: को हो तुम आये यहां,अन्धी अन्ध सुनाई।

एकल कथा राजा कही माता पिता घबराई।

टेक : पटकन लागे सीस दुखित भये भये व्याकुल अधिकाई।

सैर: अंधी अरू अंध हात सिर से मारें।

सरमन से पूत हाय कहां गये हमारे।

हाय हायकरकर दोई जीव पुकारें।

छोड़ गये बीच धार प्रान हमारे।

सांगीत: जो न लगती बन में प्यास, तो ना होते आज निरास।

टेरत बेटा सरमन दास, बेटा सरमन

दीनी जब राजा को श्राप जैसे हम करत विलाप।

तैसई तुमहूं करौ विलाप सुत को बिछुरन

दोहा: गंगा जी में बहा देव कह गये बैकुण्ठ सिधाई।

भुजबल सिंह करम की गति मत बा नहिं मिटत मिटाई।

(3)

हिन्दी भाषा में अच्छा अधिकार रखने वाले भुजबल सिंह जी की राधा कृष्ण पर आधारित एक सुन्दर फाग देखिये: -

फाग श्याम विह्वल की

दोहा: नयन चपल चंचल अनी, समसर ना तलवार।

राधारमन मुसक्याय कें, दई मोहनी डार।

टेक: राधे तिरछे नैन करे हैं, विह्वल श्याम परे हैं।

छन्द: चल चपल चाल, मुसकायबाल

दई सैंन घाल, जैसे गांसी।

गिरे नन्दलाल, गये बिसर ख्याल

पर गये जाल, तन में आंसी।

दोहा: ई नैनन में जब्से जादू, जादूगरिनि भरे हैं

उठा लेव इन धाय कोउ री, विह्वल श्याम परे हैं।

टेक: क्रीट मुकुट, बंशी अरू लकुटी, कुण्डल कहूं डरे हैं।

छन्द: बंशी की पीक, ना रई ठीक, गई टूट नीक जो बाजत री।

उर पाग घाट, ना रही डाट, गई छूट हाट, सिर राजत री।

दोहा: पीत पिछौरी कहूं खो गई, जैसे जुद्ध लरे हैं।

मनमोहन के श्रवण के कुण्डल कहूं डरे हैं।

टेक: रही कान्ह बिन प्यारी गैयां , चारे नहीं चरे हैं।

छन्द: लगा दृगन हूल, हर सुख के मूल,

गैंयन की भूल गये श्याम खबर।

राधा री तोय, ता तनक मोय,

लख तोरी सौंय, व्याकुल गिरधर।

दोहा: अरी बावरी राधिका, कौनी धरे धरे हैं।
रहीं श्याम बिन भूखी , गैयां चारे नहीं चरे हैं।

टेक: मन के काम करा लये तुमने सारे काज सरे हैं।

छन्द: राधा जू बाम, बस करे श्याम
जौ कठिन काम, कीन्हा प्यारी।
बड़ पुण्य कीन, जस बहुत लीन
लये कान चीन, नेहा भारी।

दोहा: धन्य धन्य तोय राधिका, तेरे जनम खरे हैं।
भुजबल सिंह दास गिरधर के सारे काज सरे हैं।

मूल्यांकन:

श्री भुजबल सिंह ठाकुर की प्रकाशित पुसतक 'फाग रसायन' में दी गई फागें इस बात का प्रमाण हैं कि वे छन्दनदार फागों के सिरमौर थे। उनका अप्रकाशित साहित्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर है जिसे समाज सेवी संस्थाओं अथवा राज्य सरकार को प्रकाशित कराना चाहिये। भाषा का अच्छा ज्ञान, सरल शैली में किया गया काव्य सृजन कवि की विद्वत्ता का परिचायक है। बुन्देली में प्रायः रचित उनकी फागें मन को छू लेने वाली हैं। ये केवल अच्छे कवि ही नहीं अच्छे गायक भी थे। फड़ों पर जाकर फागें गाने में भी निपुण थे। कवि की छन्दनदार फागों को विलुप्त होने से पूर्व संग्रहीत कर उनका प्रकाशन कराया जाना अत्यन्त आवयश्यक है। कवि की रचनायें भाषा दोष रहित हैं। भुजबल सिंह जी को छन्दनदार फाग का बेताज बादशाह कहा जाये तो आतिशयोक्ति न होगी।

(d) हीरालाल तिवारी:

जीवन परिचय:

हीरालाल तिवारी का जन्म ग्राम तेइया थाना महोबकण्ठ (महोबा) में संवत 1945 में ब्राह्मण कुल में हुआ था। ये अच्छे कवि थे। ये प्रायः सभी प्रचलित छन्दों में कविता करते थे। फागें भी इन्होंने बहुत सुन्दर लिखी हैं। इनके द्वारा छप्पय छन्दों में लिखा गया सगुन दुलैया और दुरकन नामक एक

जोशी दम्पत्ति का वार्तालाप हास्य रस का एक उत्कृष्ट नमूना है। इनकी मृत्यु संवत 1995 के लगभग हुई।

काव्य कृतियां:

बहुत खोजने के बाद भी कवि का साहित्य प्रचुर मात्रा में प्राप्त नहीं हो सका है किन्तु उनकी जो कुछ फागें प्राप्त हुई हैं उनके अवलोकन से कवि की विद्वत्ता का पता चलता है ऐसी ही कुछ फागें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

कवि की एक मात्राहीन सुन्दर फाग देखियेः-

॥1॥

झगड़त नद नन्दन दध परघर, रसतन धड़लन धर धर।
गगर फटक झट चलत जनम लख, तकत डरत अत थर थर।
ललन चहत छल करत सखन संग, डगरन छटकत लर लर
हरलल कहत रहत हर हर जस, सदर अधर रंग कर कर।

राम व लक्ष्मण द्वारा जनकपुर देखने जाने की अभिलाषा होना तथा जनकपुर में उनको देखकर नर नारियों का मोहित होने का सुन्दर चित्रण देखियेः-

॥2॥

देखो लखन जनकपुर चावें, प्रभु सम प्रकट न कावें।
रामचन्द्र मन की गति जानी, मुनि सम विनय सुनावें।
आय सुपाय चले अवलोकन, नर नारी उठ धावें।
हीरालाल श्री रामचन्द्र पै, कोटिन काम लजावें।

॥3॥

दरसन करे सखिन ने आकें, कोउ झरोखन झांकें।
कोउ फिरैं खिरकिन में हिरकीं, कोउ छाजन पै हांकें।
स्यामल सुवन जानकी लायक, कोउ कये नृप सों जाकें।
हीरालाल पुरी के बालक, आंगूं चले लुआकें।

राधाकृष्ण विरह से संबंधित एक सुन्दर फाग देखियेः-

(4)

कैसी करी कृष्ण ने कै कैं, कारी के संग रै कैं।
कर गये दाह सखिन के हिरदैं, कीरत कला सिखै कैं।
करे करार काम ने कैयक, कालिन्दी जल लैकें।
का की हीरालाल कथत हैं, अधर रंग खां लैकें।

मूल्यांकनः

श्री हीरालाल तिवारी की उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि वे एक अच्छे कवि थे। इन्होंने भी प्रायः बुन्देली में ही कविता की है खड़ी बोली में भी इनकी रचनायें उत्कृष्ट बतायी जाती हैं। इनकी रचनाओं से पता चलता है कि इन्हें भाषा का अच्छा ज्ञान था। रचनायें सरस एवं सुन्दर शैली में लिखी गई हैं। संक्षेप में इन्हें जनपद के अच्छे कवियों की पंक्ति का कवि माना जा सकता है।

(7) पं० खुमान प्रसाद पाराशरः

जीवन परिचयः

पं० खुमान प्रसाद पाराशर का जन्म कुलपहाड़ (महोबा) में लगभग संवत 1959 में हुआ था। ये सनाढ्य ब्राह्मण कुल के थे। जनपद के प्रसिद्ध कवि स्व० चतुर्भुज पाराशर 'चतुरेश' के ये छोटे भाई थे। ये अच्छे कवि बताये जाते हैं।

काव्य कृतियांः

कवि के परिवार का कोई व्यक्ति अब कुलपहाड़ में नहीं रहता है इस कारण इनका साहित्य प्राप्त नहीं हो सका। किन्तु कुलपहाड़ निवासी जनपद के प्रसिद्ध कवि भारतेन्दु अड़जरिया जो अब महोबा में रहते हैं, के पास से कवि की कुछ फागें हमें प्राप्त हुई हैं जो नीचे दी जा रही हैंः-

(1)

भैया अब सुराज के लानें, तन मन सें लग जानें।
करो फैसला घर अपने में, ना जैयो कोउ थानें।

बिस्कुट और बरण्डी छोड़ो, समां लठारा खानें
द्विज खुमान अब पराधीनता, सें नातो ना रानें।

(2)

सब कोउ गाढ़ा पैरो भाई, जासों होय भलाई।
घर घर रांटा चरखी धर लेव, बनवा लेव नटाई।
छोड़ देव, इजलास तसीली, उर दीमानी भाई।
शौकत अली गांधी जी ने, सबखां दओ जमाई।
द्विज खुमान अब अपनी ऊअत किस्मत देत दिखाई।

बुन्देलखण्ड की गरीबी का चित्रण करती हुई कवि की एक सुन्दर फाग देखिये। इस फाग में एक स्त्री अपने पति से निवेदन कर रही है कि दरवाजे पर पैंजना बिकने के लिये आये हैं उसे पुराने पैजना बदलवाकर नये पैजना दिला दो। पैजना भी चांदी के नहीं बल्कि गिलट के हैं।

(3)

लै देव बिकत पैजना दोरें, पिया धना कर जोरें।
पहरें रहो अब नौने हैं, ऊसई डारत फोरें।
भये दिन बहुत पुराने हो गये, पीरी पर गई कोरें।
ई नें का अख्तयार हमारो , सास ससुर हैं तोरें।
नई कोउ और गौर करबे खां, तीसें कात निहोरें।
द्विज खुमान तब कही पेर ले, कछु इंकार न मोरें।

मूल्यांकन:

पं0 खुमान प्रसाद पाराशर की प्राप्त उपर्युक्त रचनायें उनके एक अच्छे कवि होने का प्रमाण हैं। अपने ज्येष्ठ भ्राता स्व0 चतुर्भुज पाराशर के समान ही ये भी अच्छे साहित्यकार थे। देशभक्ति से ओत प्रोत उनकी रचनायें सरल व सुन्दर शैली में लिखी गई हैं बुन्देली पर भी उनका अच्छा अधिकार था

(8) श्री वृन्दावन दास :

जीवन परिचय:

श्री वृन्दावन दास का जन्म लगभग 150 वर्ष पूर्व पनवाड़ी (महोबा) में हुआ था। ये कायस्थ परिवार में पैदा हुये। बताते हैं कि लगभग 50 वर्ष की आयु में वृन्दावन जी ने गृहस्थ जीवन त्याग कर भक्ति साहित्य की साधना में स्वयं को लगा दिया था। इनकी मृत्यु लगभग 75 वर्ष की उम्र में हुई थी।

काव्य कृतियां:

इनके प्रमुख ग्रन्थों में रामचरितावली (महाकाव्य), कृष्ण चरितावली (महाकाव्य) दोहावली, प्रदीपिका, प्रेम दोहावली, भक्त विलास, विनय विलास आदि प्रमुख हैं। वैसे कलिकाल पचीसी, विनय पचीसी, दुग्रष्टिक, सुगत विलास, राम चौपदा, गीता भाषा, पतिव्रता महामत्य, विष्णु स्तुति, नारायण स्तुति रामजस, बारहमासी आदि ग्रंथों की रचना भी इन्होंने की। इनके ग्रंथों में लगभग 10 से 15 हजार तक छंद प्रयोग किये गये हैं। भक्ति,धर्म,नीति, समाज आदि उनके प्रमुख विषय हैं जिसमें अनेक प्रकार के पदों व छंदों का प्रयोग हुआ है। रामचरितावली व कृष्ण चरितावली लगभग तीन-तीन सौ पृष्ठों के ग्रंथ हैं। वृन्दावनदास जी ने अपने ग्रंथों के बीच में कुछ परिचय सूत्र भी दिये हैं जैसे प्रदीपिका में वे लिखते हैं -

> जक्ष पुरन्दर ऊपरै, नौ सत अधिक पचास।
> संवत में यह विनय रच, वृन्दावन हरिदास।
> तारई पूरब नांव है, झांसी जिला बखान।
> विदित गरौठा परगनो, रहबो जन स्थान।

वृन्दावनदास जी ने अपना सारा काव्य साहित्य वैराग्य धारण करने के पश्चात ही लिखा था।

मूल्यांकन:

श्री वृन्दावन दास भक्ति रस के बहुत श्रेष्ठ कवि बताये जाते हैं। कवि द्वारा सृजित काव्य ग्रंथों की संख्या इस बात का प्रमाण है कि उनके अंदर पर्याप्त काव्य कौशल था। भक्ति रस में किया गया इनका काव्य सृजन हिंदी काव्य साहित्य की अमूल्य निधि है।

तहसील-महोबा

(1) पं0 परशुराम पटैरिया:

जीवन परिचय: इनका जन्म लगभग वि0सं0 1904 में श्रीनगर(महोबा) में जुझौतिया ब्राह्मण कुल में हुआ था। नार्मल स्कूल आगरा से नार्मल उत्तीर्ण करके ये शिक्षण कार्य करने लगे। दस वर्ष बाद ये लुगासी रियासत में राजगुरू बन गये और अंत तक वहीं रहे। पं0 परशुराम पटैरिया का मृत्यु वि0सं0 1979 के लगभग हुई।

काव्य कृतियां:

ये सभी प्रकार के छन्द लिखते थे किन्तु विशेष रूप से इनकी रूचि ख्याल, फाग तथा लावनी बनाने में रहती थी इस कारण मुख्य रूप से इन्हीं की रचना इन्होंने की। इनकी प्रकाशित पुस्तकें ' भरत मिलाप ', ' नाजुकपन ' तथा ' कागपचासा ' हैं। अप्रकाशित पुस्तकों के नाम हैं - आनन्द लहरी, दिलतरंग तथा बाल विनोद । ये चौकड़िया तथा छन्ददार दोनों प्रकार की फागें लिखते थे। इनकी कुछ रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

फाग मात्राहीन

(1)

लचकत नरम कमर जल भरतन, झटपट पग मग परतन।
अखत गगर नवत सब तन भर, पनघट पर पग धरतन।
भटकत चटक मटक कर अटपट, द्रग सर लगत नजरतन।
कथन फरस घर नर कस ललकत, पर धन पर मन करतन।

फाग अधर

(2)

ललता झनकारी हरि मुरली, आली अधरन धर ली।
लाल कलिन्द्री तीर खड़े हैं, देतन तान नजर ली।
लागी लगन सखिन के हियरें, जैसें खींच जकड़ली।
लाला जी के अधर रंग ने अधर रागिनि कर ली।

फाग सिंहावलोकन

(3)

चलियो इन नैनन सें डरकें, जे लग जात अभर कें।
चितवन चकित चतुर चौगिरदां, तिरछी भौहें करकें।

सब हथयार मात कर डारे, राखे सूरन घर कें।
बिना जखम कीपीर जिगर में, उबले कईयक मर कें।
परशुराम बीधत सब कोऊ, बाजे बाजे बरकें।

(4)

राधा कृष्ण की होली का एक सुन्दर चित्रण इस फाग में देखिये :-

मारी रंग से भर पिचकारी, पिचकारी गिरधारी।
गिरधारी ले केसर झोरी, रोरी ऊपर डारी।
डारी भिंजै जरद जरतारी, राधा जू की सारी।
सारी भींज, भींज गई चोली, भगी सखी दै तारी।
तारी दै दुज परशुराम कहं, हंसन लगे बनमाली।

(5)

एक अटका की फाग का सुन्दर नमूना नीचे दिया जा रहा है:-

जैयो जो अटका सुरझायें, लेव हम तुम्हें बतायें।
क्वांरी कन्या रमी पिता ने, सुत कीरत जग गायें।
हर कर तार और धर चारउ, चीज नाम इक आयें।
उरद कपास कुसुम औ ककरी, नकरी एक बतायें।
गुर अरू तेल भटा औ जीरे, एक बीज में पायें।
परशुराम चन्दा सूरज की दूरी जाव बतायें।

(6)

जिननें राम भजन कर लीन्हा, बड़ा मजा उन कीना।
पूरे पगे लगा तन तन धन, सब अरपन कर दीना।
राखो गोय कपट तज मन में, निर्गुन नाम नगीना।
भव गंभीर जलधि उतरन कों, नौं नौं नाम अधीना।
परसराम भजले हरि नामें, नहीं जगत में जीना।

(7)

मिल लो सब सें नेह लगा कें, नर देही तुम पाकें
दिन दस की है पाहुन दिहियां, मौका मिले मसाकें।

करत बने कर लेव भलाई, ई दुनिया में आकें।
खालो पीलो लै लो दै लो, कहत तुमें समझाकें।
परसराम कह उन्हें न मारौ, अपनी बांह बसाकें।

(8)

काया नइयां अपने बस की करत बनें कर जस की।
राखो धोय पोंछ बहुतेरो, लगा वासना खस की।
इतनी यार समझ हिरदै मां, पाहुन जा दिन दस की।
कौनउँ काम तरें न आवै, बनै पनहियां पस की।
परसराम कयें चलती बेरां, रोम रोम मां कस की।

(9)

जनके जो औगुन चित धरते, पापी कैसे तरते।
गौतम रिषि की नार तास ढिंग, भूल न इन्द्र उतरते।
कह सुग्रीव विभीषन तमचर, लंका राज न करते।
गनका, खग, गज, व्याध, अजामिल, कैसें कें निस्तरते।
तुम्हरो नाम दरस अघनासन, लै लै पापी तरते।
परसराम से अधम उघारन, प्रभु से विनती करते।

(10)

रघुबर राखो लाज हमारी, आये शरन तुम्हारी।
औगुन अमित भरे अघ तन में, कपटी कुटिल अनारी।
सौ औगुन प्रभु लेत न जनकें, ऐसे हैं हितकारी।
समदरसी है नाम तुम्हारो, आरत हरन खरारी।
भालु, सुकण्ठ, विभीषण उबरे, गौतम की तिय तारी।
परसराम निज दरसन दीजे, अपनो जान भिकारी।

मूल्यांकन:

पं0 परसुराम पटेरिया काव्य कला के आचार्य थे। जनपद के लब्ध प्रतिष्ठित कवियों में इनका स्थान था। सभी प्रकार के छन्दों की रचना करने में ये निपुण थे। इनकी रचनाये सरल व बोधगम्य शैली में हैं। भाषा मधुर है तथा अलंकारिक होने पर भी प्रसाद गुण पूर्ण है। इन्होंने विशेष रूप से चौकड़िया तथा छन्ददार फागें ही लिखीं हैं बुन्देली में सुन्दर शब्दों का चयन इनकी रचनाओं में सरसता पैदा करता है।

(2) पं0 हरदयाल शर्मा :

जीवन परिचय :

इनका जन्म श्रीनगर (महोबा) में संवत 1947 के लगभग जुझौतिया ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 परशुराम पटेरिया था जो जनपद के प्रसिद्ध कवियों में से एक थे। पं0 हरदयाल शर्मा के अग्रज पं0 शिवराम शर्मा भी जनपद के प्रसिद्ध कवि थे। पं0 हरदयाल पर भी कवि कुल का होने की स्पष्ट छाप पड़ी। इनकी मृत्यु वि० 1997 के लगभग हुई।

काव्य कृतियां :

इनकी प्रकाशित पुस्तकों की कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी किन्तु अप्राप्त अप्रकाशित रचनाओं के अवलोकन से पता चलता है कि ये एक अच्छे फागकार थे। चौकड़िया तथा छन्ददार दोनों ही प्रकार की फागों के रचना करने में ये निपुण थे। इनकी कुछ फागें नीचे दी जा रही हैं:-

(1)

बालम उजरत बाग तुम्हारो, बिगरो जात संभारो।
कदली कुन्द दारमा श्रीफल, गदरे एंन निहारो।
खंजन, कीर, कबूतर, कोयल, मिलत न इनको चारो।
गज के हरि, नागिन के ऊपर, भौंरा करत पसारो।
दुज हरदयाल बाग अपने पे, रखआरो बैठारो।

(2)

बूंदा लगाये हुये एक स्त्री का सुन्दर चित्रण देखिये:-

बूंदा दओ बेंदी के नीचे, सोहे भौंह दुबीचें।
जगमग होत अंग गोरे में, देखो जाय नगीचें।
चमचमात घूंघट पट भीतर, जैसें बुध ससि बीचे।
द्विज हरदयाल दिखैयन केरो, लेत चित्त सो खींचे।

कवि द्वारा रचित एक अटका की सुन्दर फाग देखिये-

(3)

देखो एक फल हम यारो, सोचो और विचारो।
फूलो रहे गगन मण्डल में , डार-पात सें न्यारो।
बोवें और न जोतें सींचें, रहे एक रस सारो।
टोर-टोर गूंथत है मालिन, लगै सबइ खां प्यारो।
दुज हरदयाल बताव हमें जो, जानो होय तुम्हारो।

मूल्यांकन:

कवि की उपर्युक्त रचनायें ही यह सिद्ध करने के लिये पर्याप्त प्रमाण हैं कि ये एक अच्छे कवि थे। बुन्देली के शब्दों को सरल व बोधगम्य शैली में अपनी कविताओं में प्रस्तुत करने का कवि का प्रयास सराहनीय है। कवि को हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान था। रचनायें सरस एवं भावपूर्ण हैं।

(3) द्विज महेश :

जीवन परिचय:

इनका जन्म ग्राम भरवारा (महोबा) में वि0 1946 के लगभग ब्राह्मण कुल में हुआ था। ये अध्यापन कार्य करते थे। जू0हा0 स्कूल में कार्य करते हुये ये प्रधानाध्यापक के पद से सेवानिवृत्त हुये। अवकाश प्राप्ति के बाद ये महोबा में जाकर रहने लगे थे।

काव्य कृतियां:

ये फागकार थे। इनकी प्रकाशित पुस्तकों की कोई जानकारी नहीं मिल सकी है। इनकी अप्रकाशित रचनाओं में से कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

ब्रज की बालायें यमुना तट पर स्नान करने के लिये जाती हैं। उस समय का सुन्दर चित्रण कवि ने अपनी निम्न रचना में किया है।

॥1॥

जातीं जमना तीर सपरतीं, ब्रज बाला मन हरतीं।

चरन कमल सुन्दर मुख धोतीं, चन्द्र कालिमा हरतीं।

कनक बदन पै किरन भानु की, दामिन प्रभा पसरतीं।

द्विज महेश रवितनया के तट, कोटिन रतीं विचरतीं।

॥2॥

महात्मा गांधी के स्वतंत्रता आन्दोलन में दिये गये अविस्मरणीय योगदान को कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया है।

गान्धी तुम हो गुरू गुसैंया,परूं तुम्हारी पैंया।

जगा दिये भारत के वासी, दे दई सत्य धनैंया।

तारे छूत अछूत अधरमी, उड़ी छूत की छैंयां।

कहत महेश कलेश नसाकें, पाली दीन चिरैंयां।

मूल्यांकन:

कवि की उपर्युक्त रचनाओं से पता चलता है कि जहां श्रंगार वर्णन में ये निपुण थे वहीं राष्ट्रीयता की भावना भी कूट कूट कर भरी थी। बुन्देली शब्दों को अत्यन्त रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। कवि का साहित्य सृजन स्तरीय प्रतीत होता है। इन्हें एक अच्छा कवि कहा जा सकता है।

॥4॥ जवाहिर भाट:

जीवन परिचय:

इनका जन्म श्रीनगर ॥महोबा॥ में सं0 1915 में हुआ था। ये एक अच्छे कवि थे। इनका कविताकाल सं0 1940 वि0 के लगभग बताया जाता है।

काव्य कृतियां:

कवि का कोई प्रकाशित ग्रन्थ प्राप्त नहीं हो सका है किन्तु जो रचनायें अवलोकनार्थ मिल

सकीं उनके आधार पर कहा जा सकता है कि ये एक अच्छे कवि थे। इनकी दो रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

ऍ1ऍ

चंचल तुरंग मन रथ अभिलास चढ़ि,
चलहु सुधीर गज सजि सब साज सों।
कहत जवाहिर सनेह को कवच कसि,
सोच पोच नाखि हठ रोपौ पग लाज सौं।
नूपुर नगारे प्रानि पहरैं निसान भान,
उदे लौ भिरौहौ कुच भटन दराज सों।
धारि पल ढाल करवाल कै कटाच्छन को,
रतिरन जीतौ आज फेर बृजराज सों।

ऍ2ऍ

कंचन भूमि के बीच विराजत,
मानो अभूत जराय जरो है।
स्याम समूल कलिंदजा कूल,
सुपत्र सुपेद जु फूल हरो है।
आजु लौं ऐसो न देख्यो सुन्यो,
बृज में जिहि आनि प्रकास करो है।
कोतुक एक बिलोकिये आनि,
कै अंब कदंब की डार फरो है।

मूल्यांकन:

कवि की उपर्युक्त रचनायें इस बात का प्रमाण हैं कि ये हिन्दी काव्य के एक सशक्त हस्ताक्षर थे। त्रुटिहीन तथा लालित्यपूर्ण छन्दों की रचना करना एक अच्छे कवि के द्वारा ही संभव है स्व0 जाहिर भाट को भी इसी श्रेणी में रखा जा सकता है।

॥5॥ मूलचन्द :

जीवन परिचय:

इनका जन्म ग्राम छिकहरा ॥महोबा॥ में सं0 1941 में लोध कुल में हुआ था। ये ईसुरी के शिष्य बताये जाते हैं। हिन्दी फागों के सम्राट ईसुरी ग्राम बघौरा में रहते थे। बघौरा से दो मील की दूरी पर स्थित ग्राम सगुनियां मूलचन्द जी का ननिहाल था। वहां आने जाने के कारण दोनों में निकटता थी। इनकी मृत्यु सं0 २०१० के लगभग हुई।

काव्य कतियां:

जैसा कि कवि के परिचय में बताया गया है कि ये आचार्य ईसुरी के शिष्य थे इस कारण ये भी मुख्य रूप से फागें ही लिखते थे। इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

॥1॥

एक प्रेमिका की अपने प्रेमी के प्रति बेरूखाई का सजीव चित्रण देखिये :-

हमखां बरकाकें कड़ जातीं, बुरो सो मानें रातीं।
सूधौ नहीं तुम्हारो हिरदौ, कपटिन सोउ दिखातीं।
जैसो दिल है हाल दिनन में, ऐसी आगें नातीं।
मूलचन्द कयें ऐसो लागो, कबै लगालें छातीं।

॥2॥

इसी प्रकार एक स्त्री के गाल के तिल का वर्णन कवि ने कितने रोचक ढंग से किया है इसे नीचे देखिये-

जो तिल लगत गाल को प्यारो, गोरी भौजी त्वारो।

घरी दोक देखन दे हमखां, घूंघट को पट टारो।

देर रात हरयाई हरदम, गोरौ बदन तुम्हारो।

मूलचन्द कयें हंस हेरन में, मन भर गओ हमारो।

(3)

अपने ग्राम के कुछ घरों का बेईमानों का अड्डा बनना कवि को खटकता है इसे वह इस प्रकार फाग के रूप में व्यक्त करता है:-

छः घर करन लगे बेईमानी, इनकी सुनों कहानी।

नन्दा केरी बखरी यारो, गांव भरे की जानी।

जगन्नाथ प्रहलाद गवाही, गुजर आये दीवानी।

मूलचन्द कयें सब कोउ संभारो, इनकी बुद्धि नसानी।

मूल्यांकन:

स्व0 मूलचन्द जी की उक्त रचनायें ये बताती हैं कि ये बुन्देली के अच्छे जानकार थे। श्रंगार रस पर इन्होंने काफी फागें लिखीं हैं। कवि की रचनाओं में सरलता व रोचकता है। जन सामान्य की समझ में आने वाली शैली का प्रयोग कवि की विशेशता है।

(6) **बोधन** :

जीवन परिचय:

इनका जन्म ग्राम भटेवरा (महोबा) में हुआ था। ये जुझौतिया ब्राह्मण थे। इनका रचनाकाल सं0 वि0 1975 के लगभग का बताया जाता है क्योंकि उस समय फैली महामारी का वर्णन इन्होंने अपनी फाग में किया है।

काव्य कृतियां:

- - - - - - - -

ये चौकड़िया फाग के प्रवर्तकों में से एक माने जाते हैं। कहा जाता है कि इन्होंने शालोत्तर अश्वविज्ञान की फागें भी लिखी थीं। इनकी कुछ फागें नीचे दी जा रही हैं, 1975 की महामारी के समय का एक दोहा देखिये जिससे उस समय इनके विद्यमान होने का पता चलता है।

मरे मरे मर जायेंगे, जियत मरे ना एक ।
द्विज मनबोधन कहत हैं, या हुलकी की टेक ।

(2)

है विस्वास राधिका वर को, कहा होत अब डर को।
राजा प्रजा जाति जन रूटें, रूठै मालिक घर को।
शत्रु मित्र सब जग के रूटें, नाम न छोड़ो हर को।
बोधन चार भुज के आगे, डर है का दोकर को।

शीतल चन्द्रमा भी एक विरहिणी को किस प्रकार जलाता है इसका एक चित्रण देखियेः -

(3)

निरदई सिन्धुसुत के भाई, तुम्हें लाज न आई।
तारन ईस गिरन्ति सीस पर, तुअ कुल भये कन्हाई।
मम पर्यन्क बंक हो हेरत, दीनों अंग जराई।
बोधन कवि द्विजराज कहै जग हम तौ कहत कसाई।

(4)

महाभारत के युद्ध के समय जब चक्रव्यूह के भेदन की समस्या पाण्डवों के समक्ष आ खड़ी हुई तो अभिमन्यु जाने को तैयार होता है इस पर युधिष्ठिर किस प्रकार मना करते हैं इसका एक सुन्दर चित्रण देखियेः -

बेटा प्रान तजे किम जायक, करों तोय का नायक।
छोटी वयस समर नहीं देख्यौ, लीन कबहुं नहिं सायक।
भीषम द्रोण, करण कृतवर्मा, दुर्योधन के पायक।
बोधन कहां व्यूह को भेदन कहां सुत गोदी लायक।

महाभारत के समय की कुछ अन्य प्रसंगों की झलक देती हुई कवि की फागें नीचे दी जा रही हैं।

(5)

गंगा सुत रथ कीन अंगारे, धनुष हाथ में धारे।
पारथ निज दल रक्षा कीजे, भीषम वचन उचारे।
जब लग उनने धनुष संभारो, दस हजार नृप मारे।
बोधन भनत शंख धुन करकें, कुरूपति भवन सिधारे।

(6)

अपने सिर पे मुकुट धराऊँ, चाचा देर न लाऊँ।
द्रोण, कर्ण की कौन चलावै, जीते ना सुर राऊ।
ठानौ समर कमर कस रन में, कायरपन न दिखाऊँ।
'बोधन' व्यूह भेद कें सांचो, पारथ पूत कहाउँ।

(7)

कवि द्वारा रौद्र रस के प्रयोग का सुन्दर चित्रण देखिये, इसमें अभिमन्यु द्वारा चक्रव्यूह का भेदन किया जा रहा है:-

अभिमन् कृपाचार्य दल कटटत, लुत्थन वसुधा पट्टत।
छुट्टत सरन सिरन कर कुट्टत, नभ पथ गिद्ध चपट्टत।
लुट्टत भुवि हय रथ्थत कचरत, मर्द बपुक्खन कुट्टत।
'बोधन' द्वार विजय कर पंचम, षष्ठम सप्त दपट्टत।

मूल्यांकन:

कवि की प्राप्त उपर्युक्त रचनायें उनके एक अच्छे फागकार होने का प्रमाण हैं। श्रंगार, वीभत्स, रौद्र व वीर रस सभी पर कवि द्वारा कुशलता के साथ लेखनी चलाई गई है। बुन्देली के सरल बोधगम्य शब्दों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया जाना कवि की विद्वत्ता का परिचायक है। हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाले कवि का हिन्दी काव्य को किया गया योगदान प्रशंसनीय है।

तहसील चरखारी के प्राचीन कालीन कवि

॥॥ रसिक लालः

जीवन परिचयः

इनका जन्म ग्राम अकठौंहा ॥चरखारी॥ में वि0सं0 1930 में हुआ था। ये लोध राजपूत थे। इनके चार पुत्र हैं श्री गनेशीलाल सिंह, मदनपाल सिंह, नृपत सिंह तथा अरजुन सिंह। ये जनपद के एक अच्छे कवि बताये जाते हैं। इनकी मृत्यु वि0सं0 1985 में हुई।

काव्य कृतियांः

इनकी किसी प्रकाशित काव्य कृति की जानकारी तो नहीं प्राप्त हुई है किन्तु उनके द्वारा लिखित अप्रकाशित रचनायें अवश्य उपलब्ध हैं। इन्होंने कवित्त, छप्पय तया फागें लिखी हैं। इनकी एक रचना नीचे दी जा रही है। प्रातःकाल होने को है ऐसे में एक दुल्हन अपने पति को उठने के लिये कहती है इसका एक सुन्दर चित्रण देखिये।

प्रीतम अपनी पाग संभारो, हो आयो भुनसारो।

ननदी अपने घर सें निकरी, आहट देत किवारो।

दधि सुत की फीकी भई छैंया, पंछी देत इशारो।

रसिकलाल प्यारी संग जावे, है पीरे पटवारो।

मूल्यांकनः

रसिकलाल की उपर्युक्त रचना उनके एक अच्छे कवि होने का आभास देती है मुख्य रूप से बुन्देली में सृजित उनका काव्य सरस एवं मन को छूने वाला है।

(2) ख्यालीरामः

जीवन परिचयः

इनका जन्म ग्राम अकठौंहा (चरखारी) में वि0सं0 1906 में हुआ था। लोध कुल में पैदा हुये कविवर ख्यालीराम के पिता का नाम रामसहांय था। शिक्षा प्राप्त करके ये बिजावर स्टेट में थानेदार के पद पर नियुक्त हुये। चरखारी नरेश के यहां इनकी जमींदारी रहन थी जिसे अपनी काव्य कला के प्रभाव से इन्होंने वापिस प्राप्त कर लिया था। ये कठोर आलोचक के रूप में विख्यात थे। शिकार खेलने का इन्हें बड़ा शौक था। इनकी मृत्यु वि0सं0 1961 में हुई।

काव्य कृतियां:

ये मुख्य रूप से फागकार थे । ये बुन्देली के प्रसिद्ध कवि ईसुरी के समकालीन थे। इन्होंने सुन्दर धनाक्षरियां लिखे हैं किन्तु इनकी फागें विशेष रूप से लोकप्रिय हैं तथा जनपद के निवासियों की जबान पर हैं। इन्होंने श्रृंगार, भक्ति तथा सम-सामयिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

(1)

नहिं वियोग ना सौत घर, नहीं ग्रहा बलवन्त।
बढ़ू होत कस दूसरी, लागे ललित बसन्त।
आली नहिं वियोग तिय केरौ, मलिन भयौ तन तेरौ।
सुख सम्पति नव ग्रहा बली है, नहीं विधाता डेरौ।
ऐसी ललित बसन्त अवाई, स्रवत समीर छरेरौ।
ख्यालीराम नायिका कौ दुख, कवि जन करो निवेरौ।

प्रस्तुत रचना में नायिका के तिल का सौन्दर्य वर्णन कवि द्वारा कितने सुन्दर ढंग से किया गया है:-

तिल की परन तिलन सें हल्की, बायें गाल में झलकी।
कै गोविन्द गुराई ऊपर निकर गये कर छल की।
मानों चुई चन्द के ऊप्र, बुन्दी जमुना जल की।
लेंन पराग गुलाब फूल पै उड़ बैठन भई अलि की।
दोऊ रहे नैन हेरत से, झरप टरी नहिं पल की।
ख्यालीराम हो गई पूरन दिल पै, दाब कतल की।

{3}

राधिका जी के सुन्दर अंगों की शोभा का वर्णन कवि ने कितने रोचक व सजीव ढंग से किया है इसकी एक झलक देखिये:-

अंग नग नग नीको बनो, रंगनी कौ गोपाल।
कवि ख्याली देखौं सु-चल, बलिहारी ब्रजलाल।
नीकौ अंग नग नग रंगनी को, दिये रमा रमनी कौ।
मृगी मीन मधुकर भय मोचन, लोचन लोच अमी को।
नासा कीर, कपोत कण्ठ सुर कोकिल कल कमनी को।
कटि भृगपति लख रहत परागन, सुन्दरि गजगमनी को।
कवि ख्याली निसदिन गुन गावें, स्यामलिया संगनी को।

जब बिजावर नरेश ने इनको थानेदार पद पर नियुक्त करने से पूर्व इनका परिचय जानना चाहा तो इन्होंने यह कवित्त पढ़ा था:-

{4}

जात महालोधी हों, अबोधी सब भांतन सों,
ठाकुर खिताबी जगतराजी के कहावें जू,
आपके सिपाही खैर ख्वाही साख साखन की।
विकट वंश राम को प्रशंस का बतावें जू।
ख्यालीराम नाम जो सनाम भाई वन्दन में,
सोई नाम आपउ की सनद में लिखावें जू।
जौन हुक्म होय भूप भानुप्रताप जू को,
सो तुव कृपा सों सर्व पूरी कर लावें जू।

स्व0 ख्यालीराम शिकारी प्रवृत्ति की थे इन्होंने शिकार करने के गुण दोष पर भी प्रकाश डाला है, इस पर दो छप्पय देखिये:-

(5)

शिकार के गुण

प्रथम जंघ बल होय, दुतिय अभ्यास अस्त्र कर।
तृतीय रैन दिन भ्रमें, करे शंका न शत्रु कर।
पाचें सब छल जान, छठें घर दिशा न भुल्ले।
रात खबर दिन-रैन, आठवें समर न डुल्ले।
नवें नेम निस दिन रहे, मन जीतै रन रार में।
घामों तुषार एक सम गिनें, इ दस गुन हैं शिकार में।

शिकार के दोष

प्रथम जंघबल होय, दुतिय निर्दय कठोर मन।
तृतिय ज्ञान पुन घटै, कटै वन विपिन वस्त्र तन।
रामचरण रति छांड़, दुष्ट संगत मन भावत।
छांड़ सकल सतसंग, करन वध वन वन धंवत।
बनिता विलास रस हास तज, सुख सब डारे भार में।
तस्कर समान वन वन फिरै, ई दस औगुन शिकार में।

ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति की परिचायक कवि की एक सुन्दर देखिये:-

(6)

केवट को तारो कौन गुन अधिकारौ हतो,
विदुर विचारो, ताहि निज के सुधारो है।
ख्पच बड़ाई दई, करूना निदाव कान।
डूबत गयन्द एक पल में उबारो है,
ख्यालीराम भीलनी, कुलीचनी कुबुद्धि बुद्धि,
ताहि कर शुद्ध निज बुद्ध अनुसारो है।
बिन्द्रावन चन्द्र श्री अनन्द कन्द, दीनबन्धु,
मेरो काज करबौ बृजराज क्यों बिसारो है।

ख्यालीराम श्री सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के धनी थे। सभी प्रकार की रचनायें इन्होंने कीं किन्तु ईसुरी व गंगाधर के समकालीन कवि की प्रवृत्ति बाद में फागों की ओर ही अधिक रही और भक्ति ज्ञान व श्रंगार सभी प्रकार के विषयों पर इन्होंने अपनी लेखनी चलाई। एक स्त्री के नेत्रों की सुन्दरता का वर्णन करती हुई दो रचनायें देखियेः-

(7)

नैना अलबेली आली के, हंस हेरन वाली के।
छरकत जात छरा से छूटत, छोंना कटसाली के।
लै कै जाम बोर दये रंग में, कंज पत्र लाली के।
ख्यालीराम परे दृग दोऊ, पीछें वन माली के।

(8)

ऐसे अलबेली के नैंना, कवि सों कहत बनें ना।
मधुकर मीन कंज की लाली, कटसाली के हैं ना।
औसर पाय पुराने खंजन, डर सों डगर बसें ना।
कवि ख्याली आली नेंनन सों, वनमाली उतरे ना।

कवि ने एक कवित्त में एक स्त्री के नेत्रों की तुलना तुरंग से की है इसका एक सुन्दर मनोहारी चित्रण देखियेः-

(9)

सोहत सजीले सित, असित सुरंग अंग,
जीन सुचि अंजन अनूप रूचि हेरे हैं।
सील भरे लसत असील गुन साज देकें,
लाज की लगाम काम कारीगर फेरे हैं।
घूंघट फरस तानें, फिरत कवित फूले,
लोक कवि ग्वाल अवलोक भये चेरे हैं।
मोर वारे मन के, त्यों पन के भरोर वारे,
जोर वारे तरूनी, तुरंग दृग तेरे हैं।

नेत्रों के वर्णन में ही क्यों केशों के वर्णन में भी कवि ने नयी नयी उपमायें देकर अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया है। एक रचना देखियेः-

(10)

पटियाँ गोला मुख पै पारें, सेंदुर मांग संवारें।
मानों चन्द्र ग्रहा के ऊपर, कागा पंख पसारें।
तिरबेनी बेनी खां देखें, रह गई समिति किनारें।
ख्यालीराम दरस के होतन, कलिमल सब धो डारें।

और केश ही क्यों राधिका जी की पीठ का वर्णन कवि ने कितनी सुन्दरता से किया है जो देखियेः-

(11)

काउ ने वरनी नासिका, काउ नें वरनी दीठ।
कवि ख्याली वरनन करी, कदलिपत्र सम पीठ।
कवि ने कदलिपत्र सम वरनी पीठ सुरन मन हरनी।
जोड़ी जुग कुन्दन की पटरी, वहीं बीच वेतरनी।
अमी अगाह पियें के लानें, चढ़ी नागिनी तरूनी।
कवि ख्याली की जीवनदाता, नन्द नन्दन की धरनी।

केवल रूप श्रंगार ही नहीं भक्ति व ज्ञान पर भी कवि ने उतनी ही कुशलता से लेखनी चलाई है। पूर्व संचित कर्मो का फल भोगना ही पड़ता है, इसके समर्थन में निम्न रचना देखियेः-

(12)

कहा दोष करतार को, कर्म कुटिल गइ बांह।
करम हीन कलपत फिरें, कलप वृक्ष की छांह।
कलमें कलप लता के नीचे, दोषी दोइ दृग मीचें।
मैले चीर नीर मैले में, उज्जवल होत न फीचें।
करे उपाय दाव कोउ कितनउ फलती करम रंगीचें।
ऊंच नीच करतब कर काया, रह गई दाह दुबीचें।
इमली आम होय न ख्याली चाय दूध सों सीचें।

मानव शरीर रूपी घर इतना महत्वपूर्ण है कि इसमें सुर-नर मुनि सभी रहने को लालायित रहते हैं ऐसे ही भावों को प्रकट करती ये रचना देखियेः-

(13)

कीर्नें दया धरम के पाखे, सील सपीलन राखे।
अतरारी प्यारी ममता की करम करे दो साखे।
मन मजबूत माया की म्यारी, माल मौज के सूखे।
छाये सील क्षमा के छप्पर, खप्पर खैर नवाके
कविख्याली ऐसे घर कार्जें, सुर-नर-मुनि अभिलाखे।

प्रकृति वर्णन में भी कवि पीछे नहीं है बसन्त का वर्णन करती एक सुन्दर रचना देखिये:-

(14)

अब लसगर ऋतुराज के दृग, दृग छाये दौर
बिगुल बजावै कोकिला, कलमी अंबन भौंर।
लसगर ऋतुराजा के छाये, मदन महीपत आये।
दीरघ दृगन वीरबर बांके, ऊधम अधिक मचाये।
सुमन कली पै कली लहर दै, अलिगन भाव बताये।
कवि ख्याली प्रीतम प्यारे नें, अन्त बसन्त मनाये।

मूल्यांकन:

स्व0 ख्यालीराम जी जनपद के ख्यातिप्राप्त कवि थे। श्रृंगार, वियोग, भक्ति व ज्ञान सभी पर इन्होंने लेखनी चलाई है। सुन्दर अलंकारों का प्रयोग कवि की प्रतिभा का परिचायक है। हिन्दी भाषा का गहरा ज्ञान कवि को था। कविताओं में सरसता कोमलता एवं माधुर्य का गुण विद्यमान है। दोहा, सभी प्रकार के छन्द एवं फागें सभी कवि ने लिखे हैं। इनकी रचनाओं में मिलने वाली नवीन उपमायें कवि की विद्वत्ता को प्रदर्शित करती हैं। जनपद में जन जन की जबान पर आज भी इनकी फागें इनकी लोकप्रियता का प्रमाण हैं। संक्षेप में इन्हें हिन्दी काव्य का सशक्त हस्ताक्षर माना जा सकता है। अपनी कविताओं के द्वारा इन्होंने हिन्दी काव्य की जो सेवा की है उसके लिये जनपद सदैव इनका ऋणी रहेगा।

(3) बसन्तराम शास्त्री :

जीवन परिचय:

इनका जन्म चरखारी नगर में वि0 सं0 1931 के लगभग हुआ था। ये संस्कृत के विद्वान बताये जाते हैं। चरखारी स्टेट की ओर से इन्हें दानाध्यक्ष, दानाधिकारी तथा राज पण्डित नियुक्त किया गया था। इनकी मृत्यु वि0सं0 1998 के लगभग हुई। ये हिन्दी के अच्छे कवि थे।

काव्य कृतियां:

हिन्दी व संस्कृत के ज्ञाता पं0 बसन्तराम शास्त्री जनपद के श्रेष्ठ कवियों में से बताये जाते हैं। इन्होंने कवित्त, चौकड़िया व छन्ददार फागें लिखी हैं। कोई प्रकाशित ग्रन्थ इनका प्राप्त नहीं है। इनकी अप्रकाशित रचनाओं में से कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

दोहा: ऋतु बसन्त में देख कें, मोरे आम अनन्त।
सुमर सुमर श्री कन्त कों, हिय गोपी हुलसन्त।

फाग : आली विचरत हैं वनमाली, बालापन के चाली।
इन कुंजन में नृत्य करें हम, हरि सन दै दै ताली।
आपन आय द्वारिका छाये, हमें छोड़ गोपाली।
वरनत विप्र बसन्तराम द्विज, हिरदै होत निहाली।

दोहा : उत्तर हमरे प्रश्न को, दीजै हृदय विचार।
रचना रच सांगीत धुन, अति अनूप सुखसार।

टेक: देखत एक अयन हैं तबसें, वृक्ष भयो है जबसें।

सैर : दो फल लटक रहे हैं, शोभा विशाल है।
हैं मूल तीन भारी, इक तो रसाल है।
रस चार चार उसमें, चख नित निहाल है।
है पांच उसकी डालें, कैसी उछाल हैं।

उड़ान : हैं बांके सुभाव छः विध के मुदित होत वा छवि से।
यह अनूप तरवर या विधि को प्रकट भयो है जबसे।

टेक : या को अर्थ लखत है सोई, करत प्रेम जो रब से।

सैर : हैं उसमें सात बलकल शोभा है पियारी।
हैं आठ पतली डालें, छब उसकी न्यारी।
नौं खोंग देख लीजे, उस वृक्ष मंझारी।
कुल दसइ उसमें पटते, दुत उसकी न्यारी।

उड़ान : दो खग करत किलोल वृक्ष में, नेह लगायें सबसें।
सीखो चांय द्विविध विद्या को काशी और अरब सें।

टेक : मन वच करम लगाय निस दिवस करत प्रेम सो रब से।

सैर : दरखत में दश जो बातें, सुनकर प्रमोद छाओ।
हैं कहां कौन होतीं, कह कर सभी रिझाओ।
इसका सबूत करिये, ना हंसी कराओ।
मनमानी बातें करके, झगड़ा न मचाओ।

उड़ान : देवी ज्वाब सोचकर मन सें, रहबो खूब अदब सें।
बिन गुरू कृपा ज्ञान ना हुइयै, काशी और अरब सें।

टेक : जानों चहौ अर्थ जो याको कर संगम संजब सें।

सैर : है चक्रपुर निवासी ऋतुराज नाम मेरा।
सब देख भागवत को जब होगा ये निबेरा।
समझोगे इसका मतलब होगा हृदय उजेरा।
बतलाय जल्द दीजै होती है अब कुबेरा।

उड़ान : जो नहिं समझ परत है प्यारे, पूंछो कोऊ कव से।
सज्जन जन संगत सें उपजत ज्ञान हियें संजब से।

मूल्यांकन:

स्व0 बसन्तराम शास्त्री चौकड़िया व छन्ददार फागें लिखने में निपुण बताये जाते हैं। उपर्युक्त रचना से भी इसकी पुष्टि होती है। धार्मिक ग्रन्थों का इन्हें अच्छा ज्ञान था। हिन्दी भाषा व संस्कृत में पूर्ण अधिकार रखने वाले कवि की रचनाओं में काव्य दोष नहीं है। सरल व बोधगम्य शैली में किया गया काव्य सृजन कवि की विद्वत्ता का परिचायक है।

§4§ महाराजा जुझार सिंह जू देव :

महाराजा जुझार सिंह जू देव चरखारी नरेश का जन्म काल संवत 1900 के लगभग माना जाता है। इनके एक और भाई गंगा सिंह जू देव भी कवि थे। दोनों भाई अच्छे कवि के रूप में विख्यात थे। इनकी मृत्यु वि0 सं0 1930 के लगभग हुई।

काव्य कृतियां:

इनकी अप्रकाशित रचनाओं का संग्रह तो नहीं मिल सका किन्तु संवत 1967 में राजकीय प्रेस में छापी गई इनकी स्वरचित एक पुस्तक प्राप्त हो सकी। इस पुस्तक का नाम है 'भजन चन्द्रिका' इस पुस्तक के प्रथम प्रष्ठ में निम्न विवरण अंकित है:-

' श्रीमन्महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री सिपह दारूलमुल्क महाराजा साहित जुझार सिंह जू देव बहादुर सी0 आई0 ई0 चरखारी नरेश ने श्री मद्भग्वतगुणानुवाद रसिक जनों के आनन्दनार्थ अति परिश्रम से बनाई व संवत 1967 में राजकीय प्रेस में छापी गई ' ।

तीसरी बार प्रकाशित पुस्तक की 200 प्रतियां छापे जाने का उल्लेख है।

इस पुस्तक में 374 भजन हैं जिनमें §1§ श्री गणेश जी के भजन, §2§ श्री कृष्ण चंद्र जी §3§ श्री राधाकृष्ण जी §4§ श्री राधिका जी §5§ श्री रामचन्द्र जी §6§ श्री सूर्यनारायण के भजन §7§ श्री देवी जी के भजन §8§ श्री महादेव जी के भजन तथा अन्य कई देवी देवताओं के भजन संग्रहीत हैं। इस पुस्तक की कुछ रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

§1§

श्री गणेश जी के भजन

ध्वनि खंभाच ताल धीमा तिताला ।

ध्याइये गणपति शिवनंदन।

विघ्न हरण इक दन्त गजानन, गिरजा सुवन

हरहु जग क्रंदन,

अष्ट सिदि नव निद्धि बढ़ावन

बुद्धि राशि मेटन दुख दंदन।

x x x x x x x x x x x

(2)

(राधा कृष्ण)

ध्वनि झंझौटी ताल धीमा

श्याम सुत श्यामा की बलिहारी
कोटि काम अभिराम श्याम धुति।
लाजति चंद निरखि मुख प्यारी।
बैठि निकुंज, विहंसि वत रावति।
सुख पावति जा कौनहि वारी।
सिंह जुझार उपमा कह दीजे
जिहि वनरनति सकुचति त्रिपुरारी।

मूल्यांकनः

महाराजा जुझार सिंह जू देव की अवलोकनार्थ ' भजन चन्द्रिका' नाम की जो प्रकाशित पुस्तक प्राप्त हुई उसके अवलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये एक अच्छे कवि थे। कवि की भक्ति भाव पूर्ण रचनायें इस बात का प्रमाण हैं कि इनकी ईश्वर में गहरी आस्था थी। कवि को हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान था। स्थान स्थान पर अनुप्रास, उपमा व रूपक जैसे अलंकारों के प्रयोग से इनकी रचनाओं में सरसता एवं रोचकता आ गयी है। इन्हें एक अच्छा कवि कहा जा सकता है।

(5) महाराजा साहब बहादुर गंगा सिंह जू देव :

जीवन परिचयः

महाराजा साहब बहादुर गंगा सिंह जू देव का जन्म संवत 1920 के लगभग चरखारी में हुआ था। ये महाराजा जुझार सिंह जूदेव के सगे भाई थे जो कि स्वयं एक अच्छे कवि थे। गंगा सिंह जू देव भी अपने अग्रज के समान ही अच्छे कवि थे।

काव्य कृतियांः

महाराजा गंगा सिंह जू देव की एक पुस्तक अवलोकनार्थ प्राप्त हुई जिसमें लिखा था 'वालिए रियासत मुल्क बुन्देलखण्ड द्वारा रचित व प्रकाशित यह पुस्तक इण्डियन प्रेस इलाहाबाद की छपी है। इस पुस्तक में सत्यदेव पूजा व्रत विधि और कथा का हिन्दी पद्यानुवाद बहुत रोचक व सरल ढंग से किया गया है। पुस्तक के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

नंद नंदन मंगल सदन, कोटि मदन शुभ रूप।
भक्त वदन सरसिज रबी, जन सुख देन अनूप।
विनवत गंगा सिंह नृप, बृजपति चरण सरोज।
कृपा कोर कर देव प्रभु, भक्ति बुद्धि प्रतिरोज।

कवि ने विभिन्न संस्कृत में दिये हुये मंत्रों का हिन्दी पद्यानुवाद अत्यन्त सरल एवं बोधगम्य शैली में किया है कुछ उदाहरण देखियेः-

(1) शुद्धिकरण मंत्र ' ओम अपवित्रो पवित्र '

नर अपवित्र, पवित्र वा सकल अवस्था प्राप्त।
सुमिर पुण्डरीकाक्ष कों, होत शुद्ध पर्याप्त ।

(2) ' आसनार्थे अक्षतान समर्पयामि '

आसन हित अक्षत सुभग, करौं समर्पण सोय।
ग्रहण करौ करकें कृपा, दया सिन्धु मुदमोय।

(3) ' पाद्यं समर्पयामि '

निर्मल जलचंदन सहित, चरण पखारन हेतु।
नाथ समर्पण करत हों, लीजे प्रेम समेत।

(4) ' हस्तयोः अर्घ्य समर्पयामि '

चन्दन पुष्प समेत यह, निर्मल सीतल तोय।
ग्रहण करौ यह अर्घ्य प्रभु, हाथन में मुदमोय।

(5) ' पंचामृत स्नानम सर्मपयामि ' ।

दूध दही घृत गाय को, मधु शक्कर युत ऐन।
पंचामृत में कीजिये, स्नान नाथ सुख दैन।

इनके द्वारा सभी प्रकार के छन्दों व पदों की रचना भी की गई है, किन्तु बहुत प्रयास करने पर भी वे अवलोकनार्थ प्राप्त नहीं हो सके।

मूल्यांकन:

महाराजा गंगा सिंह जू देव का प्राप्त साहित्य इस बात का प्रमाण है कि वे हिन्दी काव्याकाश के एक चमकते हुये सितारे थे। भक्तिभाव प्रधान काव्य सृजन तत्कालीन युगानुसार ही था। रचनायें सरल व जन-जन की समझ में आ जाने वाली शैली में लिखी गयी हैं। रचनायें काव्य दोष से मुक्त हैं। कवि का प्रयास प्रशंसनीय है।

(6) महाराजा मलखान सिंह :

जीवन परिचय:

चरखारी नरेश महाराजा मलखान सिंह जू देव का जन्म चरखारी में वि0 सं0 1927 के लगभग का है। इनका कविताकाल वि0 सं0 1950 है। ये बड़े ही साहित्यप्रेमी थे एवं कवियों का बहुत सम्मान करते थे।

काव्य कृतियां:

इन्होंने सुन्दर छन्दों एवं पदों की रचना की है। गीता का सुन्दर पद्यानुवाद इन्होंने किया था। सन् 1909 में इण्डियन प्रेस प्रयाग से गीता पद्यानुवाद की इनकी यह पुस्तक प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

धर्मक्षेत्र, कुरूक्षेत्र भूमि में, मिले युद्ध के काजा।

हे संजय तहं कहा करति भे, कुरू पाण्डव सब राजा।

पाण्डव सेना व्यूह निरखि के, दुर्योधन नृप आई।

द्रोणाचार्य के ढिंग आकर, बोल्यौ बचन सुनाई।

(1-2) अध्याय-1

(2)

मैं प्रेरित माया को, जय हों, उपजावत संसारा।

यह कारण तें, अर्जुन सब जग, होति जू बारंबारा।

मेरा मनुज रूप लखि के जग मूढ़ आदरति नाहीं।

मेरे परम भाव के ते नर कबहूं जान न पाहीं।

(10-11) अध्याय-9

(3)

अति दुर्लभ दर्शन यह रूपा, जो तुम देखो मित्ता।

ता स्वरूप कों सकल देवता, देख्यो चाहत नित्ता।

(52) अध्याय - 11

गीता पद्यानुवाद के पूर्ण होने की तिथि भी कवि ने इन पंक्तियों द्वारा बताई हैं:-

संवत सर रस नंद शशि, शुभ सित माधव तीज।

गीता टीका पूर्ण भौ, तदिन ज्ञान कौ बीच।

(संवत 1965 वैशाख शुक्ल तीज)

मूल्यांकन:

महाराजा मलखान सिंह जू देव के बारे में बताया जाता है कि ये एक अच्छे कवि थे। उपर्युक्त रचनायें भी इस बात को प्रमाणित करती हैं। हिन्दी भाषा का इन्हें अच्छा ज्ञान था। रचनाओं में सरसता एवं माधुर्य का गुण विद्यमान है।

(7) प्रहलाद बंदीजन :

जीवन परिचयः

प्रहलाद बंदीजन का जन्म चरखारी में संवत 1840 में हुआ था। ये चरखारी नरेश राजा जगत सिंह के आश्रित और दरबारी कवि थे। इनका कविता काल वि0 संवत 1867 के लगभग का है।

काव्य कृतियां:

इनके प्रकाशित साहित्य के बारे में तो कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है किन्तु इनकी अप्रकाशित रचनाओं के अवलोकन से प्रतीत होता है कि ये एक अच्छे कवि थे। अवलोकनार्थ एक रचना नीचे दी जा रही है।

आजु आली माथे ते सु बेंदी गिरे बार बार,
मुख पर मोतिन की लरी लरकति है।
धरत ही पग कील चूरे की निकसि जात,
जब तब गाँठि जूरे हू की टरकति है।
जानि न परत प्रहलाद परदेश पिय,
उससि उरोजन सों आगी दरकति है।
तनी तरकति कर चूरी चरकति अंग,
सारी सरकति आंखि बाईं फरकति है।

मूल्यांकन:

उपर्युक्त रचना प्रहलाद बंदीजन को एक अच्छा कवि प्रमाणित करती है। सरस एवं भावपूर्ण सुन्दर शब्दों का प्रयोग कविता में रोचकता पैदा करता है। कविता में लालित्य का गुण विद्यमान है इस कारण इनको एक अच्छे कवि की श्रेणी में रखा जा सकता है।

(8) पं0 अवधेश :

जीवन परिचय:

इनका जन्म ग्राम सूपा (चरखारी) में वि0 सं0 1876 के लगभग हुआ था। ब्राह्मण कुल में पैदा हुये पं0 अवधेश अच्छे कवि बताये जाते हैं। इनका कविता काल वि0सं0 1900 के लगभग का है। इनकी मृत्यु वि0 सं0 1950 के लगभग हुई। ये चरखारी नरेश रतन सिंह के आश्रित और दरबारी कवि थे।

काव्य कृतियां:

इनका कोई प्रकाशित काव्य साहित्य नहीं है। इनकी अप्रकाशित रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं:-

(1)

कैसे तम नास तो, को भ्रम को विनास तो।
पिसाच को उदास तो, निसाचर को वास तो.
कैसे वर्ष मास तो, प्रमोद को हुलास तो,
पताल भू प्रकास तो, विपत्ति को निवास तो।
अवधेश दास तो को देस विसवास तो न,
नेकहू उजास तो दुनी को काउ कास तो।
कैसे वेद भास तो प्रकास को प्रकास तो,
कदाचि तेजरास जौ न भासकर भास तो।

(2)

लै गई मोहिं कलिन्दी के कूल,
दुकूल दिखाइ ठगौरी सी कै गई।
कै गई आज विथा तन में,
मन ही मन मैन मरोरनि दै गई।

दै गई दाग दगा करि कैं,

अवधेश कहैं तन तापन तै गई।

तै गई नेक न लाई कछू सुधि,

गोरी गुवारिनि मो मन लै गई।

मूल्यांकन:

कवि की उपर्युक्त रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट है कि ये एक अच्छे कवि थे। इनकी रचनायें ओजपूर्ण एवं अलंकारों से ओत प्रोत हैं। सुन्दर सरस एवं भावपूर्ण भाषा का प्रयोग कवि की विद्वत्ता का परिचायक है। रचनाओं में काव्य दोष नहीं है। संक्षेप में इन्हें एक अच्छा कवि माना जा सकता है।

(9) प्रताप साहि :

जीवन परिचय:

प्रताप साहि बंदीजन का जन्म चरखारी में वि0 सं0 [illegible] में हुआ था। इनके पिता का नाम रतनेस जी था। कई ग्रन्थों की रचना करने वाले कविवर प्रताप साहि एक अच्छे कवि बताये जाते हैं। इनकी मृत्यु वि0 सं0 1920 के लगभग हुई।

काव्य कृतियां:

इनके द्वारा कई श्रेष्ठ ग्रन्थों की रचना की गई, इनमें प्रमुख हैं- (1)श्री रामचंद्र का शिख नख (2) व्यंग्यार्थ कौमुदी (3) काव्य विलास (4) भाषा भूषण तिलक (5) बलभद्र के शिखनख का तिलक (6) जयसिंह प्रकाश (7) श्रंगार मंजरी (8) श्रंगार और शिरोमणि (9) अलंकार चिंतामणि (10) काव्य विनोद (11) रसराज टीका तथा (12) रस चन्द्रका आदि।

इनका सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ व्यंग्यार्थ कौमुदी है। इसमें 13[illegible] छन्दों में अनेक प्रकार से व्यंगों का वर्णन किया गया है। यह छोटा सा ग्रन्थ ही कवि को अमरता प्रदान करने के लिये पर्याप्त है।

इनकी रचनाओं के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

चांदनी महल फैली, चांदनी फरस सेज,

चांदनी बिछाय छवि चांदनी रितै रही।

बैठी साज सुन्दरी सहेलिन, समाज बीच,

बदन पै चारूता, चिराग की बितै रही।

कहै ' परताप ' आये मोहन रंगीले श्याम,

नख शिख हेर कर, आनन हितै रही।

सुघर बिचारी कलानिधि को निहार,

मनुहारि कर फेर मुख प्रीतम चितै रही।

(2)

तड़के तड़िता चक्षु कोरन ते, छिपि छाई सपोरन की लहरें।

मदमाते कहा गिरि श्रृंगन पे, मन मंजू मयूरन के कहरें।

इनकी करनी वरनी न परै, मगरूर गुमानन सों गहरें।

घन से नभ मण्डल में छहरें, धहरें कहुं जांय कहूं ठहरें।

मूल्यांकन:

कविवर प्रताप साहि की रचनायें सरस एवं भावपूर्ण हैं। अलंकारों का सुन्दर प्रयोग कविताओं में रोचकता पैदा करता है कविता में माधुर्य एवं लालित्य का गुण विद्यमान है। सुन्दर शब्दों का प्रयोग कवि के काव्य कौशल को प्रकट करता है। कवि को हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान प्रतीत होता है। हिन्दी काव्य साहित्य को कवि का किया गया योगदान अविस्मरणीय रहेगा।

(10) कवि मान :

जीवन परिचय:

इनका जन्म संवत् 1808 वि0 माना जाता है इनके वास्तविक नाम का पता नहीं है परंतु ये चरखारी नरेश महाराज खुमान सिंह के आश्रित कवि थे और ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने अपने आश्रय दाता ' खुमान सिंह ' के नाम का प्रथम अक्षर छोड़कर अपना कवि नाम ' मान ' रख लिया था। ये हनुमान और दुर्गा के भक्त थे। इनका कविता काल 1830 से 1880 वि0 तक माना जाता है।

काव्य कृतियां:

ये एक धार्मिक प्रवृत्ति के कवि थे तथा हनुमान के अनन्य उपासक थे इनके द्वारा रचित ग्यारह ग्रन्थ बताये जाते हैं। नीति निदान,मान पच्चीसी,मान पचासा, मान पंचक, लक्ष्मण शतक, चित्रकूट महात्म्य, अष्टजाम, नरसिंह चरित्र आदि इनकी प्रमुख काव्य कृतियां हैं।इनके द्वारा रचित लक्ष्मण शतक के दो सुंदर कावेत्त देखिये-

(1)

भूप दशरथ कौ नवेलौ अलबेलौ रन,
रेलौ रोप झेलौ दल निश्चर निकट कौ।
मान कवि कीरत उमंडी खल खण्डी चण्डी,
पति सौ घमंडी कुल मंडी दिनकर कौ।
इन्द्र मद भंजन कौ भंजन प्रभंजन तन,
ताकौ मन रंजन निरंजन उभर कौ।
राम गुन ग्याता मन वांछित कौ दाता,
हरि भक्तन को त्राता धन्य भ्राता रघुबर कौ।

(2)

आयो इन्द्रजीत दसकंध को निबंध बंध,
बोल्यो रामबंधु सों प्रबंध किरवान को।
को है अंसुमाल , को है काल विकराल,
मेरे सामुहें भये न रहै मान महिसान को।
तू तो सुकुमार यार लखनकुमार! मेरी
मार बेसुमार को सहैया घमासान को।
वीर न चितैया रन मण्डल रितैया काल,
कहर बितैया हों जितैया मघवान को।

मूल्यांकन: कवि की उपर्युक्त रचनायें एक अच्छे कवि होने का प्रमाण हैं।इनकी भाषा ब्रज प्रभावित बुन्देली कही जा सकती है इनकी रचनायें प्रवाह एवं लालित्य के गुणों से युक्त हैं।

तहसील-मौदहा

(1) लाला कीरतलाल शहजादे:

जीवन परिचय: इनका जन्म ग्राम गहरौली (मौदहा) में हुआ था ये वि0 1932 से 1978 के बीच विद्यमान रहे। ये प्रज्ञाचक्षु तथा आशुकवि थे। फड़ों पर जाकर प्रतियोगिताओं में प्रायः भाग लेते रहते थे।

काव्य कृतियां: लाला कीरतलाल का कोई प्रकाशित काव्य संग्रह उपलब्ध नहीं है। इनकी अप्रकाशित रचनायें इनके परिवार के सदस्यों के पास हैं। ये आशु कवि बताये जाते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

गुइयां सब लोकन से न्यारो, जहां प्रिय बसत हमारो।
हमरे देश चन्द्र ना सूरज, ना रजनी उजयारो।
सुख दुख हानि लाभ त्यां नाहीं, इक रस सदा निहारो।
कीरतलाल ब्रह्म गुण गायें, होत नहीं भुनसारो।

महाभारत के युद्ध में श्री कृष्ण का शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा तोड़ने का सुन्दर चित्रण देखियेः-

(2)

जा पर पीताम्बर फहरावन, भीषम के मनभावन
रथ सें उतर निगन आतुर ह्वै, कच रज की लिपटावन।
मानहुं सिंह शैल से उतरो, जान मत्त गज आवन।
कीरतलाल दास के कारन, मेटो निज पन पावन।

फड़ में गायी जाने वाली इनकी अटका की एक सुन्दर फाग देखियेः-

(3)

गुदना कैसें बनें गुदायें, जइये भेद बतायें
पांच नारि इक नरखां पकरें, इक नारी मुंह बायें।
ता नगरी के भीतर इक नर, नारी का रंग पायें
कीरतलाल जातना रैये, आरो सो मों बायें।

मूल्यांकन:

उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि लाला कीरतलाल जी एक श्रेष्ठ कवि थे। बुन्देली में ही प्रायः ये रचनायें लिखते थे। बुन्देली के साहित्यिक रूप का प्रयोग कवि की विद्वत्ता का परिचायक है। काव्य दोष रहित रचनाओं मे सरसता तथा माधुर्य का गुण विद्यमान है।

तहसील हमीरपुर के प्राचीन कालीन कवि

॥1॥ मातादीन दीक्षित :

जीवन परिचय:

इनका जन्म तहसील हमीरपुर के अंतर्गत ग्राम महेरा में वि0सं0 1922 में हुआ था। ये प्रसिद्ध फड़बाज कवि थे। विभिन्न स्थानों पर ये साथियों सहित फड़ों पर जाकर प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे। वि0 सं0 1975 में इनकी मृत्यु हुई।

काव्य कृतियां:

इनकी कोई प्रकाशित काव्य कृति उपलब्ध नहीं है। अप्रकाशित रचना संग्रह इनके पुत्र पं0 रामायण प्रसाद जी के पास उपलब्ध है। ये मुख्य रूप से फागकार थे। इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

॥1॥

गिरजा हो प्रसन्न मोये वर दे, सफल मनोरथ कर दे।
दशरथ ससुर सास कौशल्या, अवधनगर सो घर दे।
भरत शत्रुघ्न लखन से देवर, मुख सुहाग सो भर दे।
' मातादीन ' मनोहर मुन्दरी, श्याम नगीना धर दे।

सच्चे प्यार के प्रति कवि के विचार प्रशंसनीय हैं। निम्नांकित रचना में इसका सुन्दर चित्रण देखिये:-

॥2॥

कोउ की होत न प्रीति पुरानी, जिनने करकें जानीं।
चकमक कबहुं तजत न आगी, रहत जुगन भर पानी।
जो सूजें गड़ जात अंग में, मिटत न जनम निशानी।
' मातादीन ' यार अपने कों, सोंप चुके जिन्दगानी।

ब्रज की संकीण गलियों में श्री कृष्ण व राधा के साथ-साथ घूमने का कवि ने कितना मनोहारी वर्णन किया है, निम्न रचना में देखिये-

विचरत फिरत सांकरी खोरी, नन्दनन्दन संग गोरी।
लटकन मुकुट अटक चित चरचत, खरचत अकल थकोरी।
वारिद निरख शिखर मरकत पै, नचत मयूर छकोरी।
जनु विधु शीश ईश नत धरकें, हर हित द्वुति प्रगटोरी।
' मातादीन ' जुगल सिर शोभा, हरि आनंद विकसोरी।

और श्रंगार रस से ओत-प्रोत यह हास्य व्यंग कवि के काव्य कौशल का परिचायक है:-

(4)

जुबना उठे जोर मस्ती में, भये शोर बस्ती में।
अंगिया केर तनी टो डारीं, बड़ी जबरदस्ती में।
बलम इन्हें नादान मिले हैं, जीतें न कुस्ती में।
'मातादीन' इन्हें वर ढूंढ़ो, सावन की सस्ती में।

मूल्यांकन:

कवि की उपर्युक्त रचनायें कवि की विद्वत्ता की परिचायक हैं। श्रंगार,हास्य, भक्ति एवं विरह सभी रसों में कवि ने कुशलतापूर्वक लेखनी चलाकर काव्य सृजन किया है। रचनाओं में सरसता एवं प्रवाह है इनमें लालित्य का गुण विद्यमान है। कवि को हिन्दी भाषा का गहरा ज्ञान प्रतीत होता है। कवि द्वारा किया गया काव्य सृजन प्रशंसनीय है।

वर्तमान काल के कवि और उनका संक्षिप्त परिचय

जनपद हमीरपुर में हिन्दी के श्रेष्ठ कवियों की एक लम्बी श्रंखला है उच्च कोटि के काव्य का सृजन होने के बाद भी जनपद के किसी कवि को उचित स्थान हिंदी जगत ने अब तक नहीं दिया। इस अध्याय के अंतर्गत ऐसे सभी कवियों को स्थान दिया गया है जो 15 अगस्त सन् 1947 के बाद दिवंगत हुय अथवा वर्तमान समय में विद्यमान हैं। इस प्रकार के कवियों की संख्या अधिक होने के कारण उन्हें अलग अलग तहसीलों में विभाजित किया गया है। कवियों या उनके परिवारीजनों से प्रकाशित, अप्रकाशित जो साहित्य प्राप्त हुआ है उस सबका विवरण नीचे देते हुये उनका सम्यक मूल्यांकन करने का प्रयास मेरे द्वारा किया गया है। कवियों का विवरण देते समय उनके वरिष्ठता के क्रम का ध्यान नहीं रखा गया है। जिन कवियों का विशेष योगदान हिंदी काव्य के क्षेत्र में रहा है उनको उचित स्थान देने का प्रयास मेरे द्वारा किया गया है। कुछ कवियों की रचनाओं में कहीं-कहीं काव्य दोष भी मिला है किन्तु बिना कोई संशोधन किये मेरे द्वारा उनकी रचनाओं को मूल रूप में प्रस्तुत किया गया है। मैंने प्रयास किया है कि जो कवि जिन विधाओं का प्रयोग अपने काव्य सृजन में करता है अथवा जिन विषयों को अपने काव्य सृजन का आधार बनाता है , उन सब पर प्रकाश डाला जा सके।

कवियों की योग्यता व उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के अनुरूप उनके मूल्यांकन में यथाशक्ति न्याय करने का प्रयास मेरे द्वारा किया गया है।

तहसील - राठ

﴾1﴿ मातादीन भारतीः

जीवन परिचयः

श्री मातादीन भारती का जन्म सन् 1923 में मुहाल मुगलपुरा राठ में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री देवीदीन तथा माता का नाम श्रीमती प्रिया था। मां का स्वर्गवास इनके बचपन में ही हो गया था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला राठ-दक्षिण में हुई। आपने विद्यालय में मात्र कक्षा 4 तक शिक्षा प्राप्त की है इसके उपरान्त आपने घर पर ही स्वाध्याय द्वारा ज्ञान अर्जन किया। आपको हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, उर्दू व गुरूमुखी का भी ज्ञान है।

काव्य कृतियां:

प्रकाशित : आपकी रचनाओं का कोई संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं है किन्तु विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनायें प्रकाशित होती रहती हैं जिनमें वातायन ﴾नैनीताल﴿; प्रतिबन्ध ﴾बण्डा, म0प्र0﴿, सुकवि विनोद ﴾लखनऊ﴿, बुन्देला ﴾उरई﴿, सूरसेन ﴾झांसी﴿, मामुलिया ﴾छतरपुर﴿ प्रमुख हैं।

अप्रकाशितः श्री भारती जी के अधिकांश काव्य संग्रह अर्थाभाव के कारण अप्रकाशित ही हैं। आपकी विशेष उल्लेखनीय सेवा 'गीता ज्ञान पीयूष' है । इस ग्रन्थ में श्री मद्भागवत गीता के अठारह अध्याय अनुवादित एवं पद्यबद्ध किये गये हैं जो अपने आप में एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है।

दूसरा अनुपम ग्रन्थ ' रामायण की शंकाओं का समाधान ' है इसमें श्री रामचरित मानस के विभिन्न स्थलों पर आयी शंकाओं का समाधान रोचक एवं भावपूर्ण शैली में किया गया है तथा विभिन्न ग्रन्थों का अध्ययन कर कुछ ऐसी नवीन सामग्री यत्र तत्र दी गई है जो श्रीरामचरित मान्स में नहीं है।

अध्यात्म की पृष्ठभूमि पर कवि की एक पद्य कृति 'बिखरे मुक्ता' भी है इसमें अध्यात्म विषय है। अध्यात्म के गूढ़ विषय को भी कवि ने अपनी लेखनी से अत्यन्त सरल व रोचक बना दिया है।

उपर्युक्त तीनों जनोपयोगी एवं साहित्यिक कृतियां अभी तक अप्रकाशित हैं। शासन तथा प्रकाशकों को ऐसी अमूल्य रचनाओं का प्रकाशन सगर्व कराना चाहिये। श्री भारती जी ने काव्य की प्रत्येक विधा को स्पर्श किया है और जीवन के हर पहलू का सफल चित्रण किया है। आप गीत छन्द, सवैया, दोहा, सोरठा, लोकगीत सभी लिखते हैं। अवलोकनार्थ प्रत्येक विषय से संबंधित रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

॥1॥
गीता का पद्यानुवाद

अध्याय-2

श्लोक-1:दोहा: शोकयुक्त करूणा किये लखि अर्जुन का हाल।
व्याकुल अर्जुन से तभी बोले दीनदयाल।

श्लोक-2:भग0-30: कीर्ति विनाशक मोह पार्थ क्यों हुआ तुझे विषम स्थल में।
जो स्वर्ग न औ श्रेष्ठ पुरूष आचरत नहीं जगती तल में।

श्लोक-3: ' छोड़ नपुंसकता अर्जुन, मत कायरता को धारण कर।
दुरबलता मोह त्याग करके, मम वचन मान उठ तू रण कर।

अध्याय-6

श्लोक-1:भ0उ0 दोहा: सन्यासी योगी वही, करे कर्म फल त्याग।
वह सन्यासी है नहीं, तजै क्रिया औ आग।

श्लोक-2: ' है पाण्डव जो सन्यास अहै, उसको तू योग समझ मन में।
जब तक नहिं संकल्प तजै नर, तब तक न मनो योगी जन में।

श्लोक-3: ' समबुद्धि योग आरूण पुरूष वह प्रथम कर्म निष्काम करे।
इस योग अटल हो जाने पर, संकल्प कभी चित में न धरे।

अध्याय-12

श्लोक-1:अ0उ0 दोहा: समुण उपासक भक्त इक, दूजा निर्गुण आइ।
इन दोउ भक्तन में प्रभू, उत्तम कौन कहाइ।

श्लोक-2:भ0उ0 दोहा: जो सगुण रूप को श्रद्धा से, एकाग्र चित्त में भजते हैं।
वे योगी जन में हे अर्जुन, अति उत्तम मुझको लगते हैं।

श्लोक-3: ' जो सदा एक रस अचल चित्त, अरू अविनाशी अज मानते हैं।
मन बुद्धि परे औ निराकार सब व्यापी मान उपासते हैं।

अध्याय-18

श्लोक-1:अ0उ0 दोहा: तत्व त्याग सन्यस् के, कहव कृष्ण भगवान।
प्रथक प्रथक जानो चहत, कहिये नाथ बखान।

श्लोक-2:भ0उ0 दोहा: काम्य कर्म के तजने को कोई कवि कोविद सन्यास कहें।
कोई पुरूष विचार कुशल कर्मो के, फल तजने को त्याग कहें।

श्लोक-3: ' कोई दोष युक्त सब कर्म कहें, इसलिये त्यागने योग्य अहइ।
कोइ दान,यज्ञ,तप,रूप,कर्म को, नहीं त्यागने योग्य कहइ।

(2)

चेतावनी

मन की अभिलाष रही मन में (सिंहावलोकन)

मन में बहु लौकिक चाह लगी, अरू प्रीत लगी चहुँधा धन में
धन में कोई शांति कभी न लही, अति व्यापत है चिन्ता तन में।
तन में कहु मार दिखात नहीं, हरि नाम भजौ विनसै छन में,
छन में यम प्रान निकार चलें, मन की अभिलाष रही मन में।

तब तौ जग जंगल कैसे जलै ना (सवैया)

पूरब से रवि जन्म हुआ, तब पच्छिम मृत्यु में कैसे ढलै ना
फूलो जबै प्रारब्ध को पेड़, तौ मौसम पै फल कैसे फलै ना।
जान लियो निज रूप जबै, तब तो भ्रम बंधन कैसे खुलै ना,
सान की आग लगी चित में, तब तो जग जंगल कैसे जलै ना।

(3)

व्यंग (राजनीति पर) (सुन्दरी)

यह भारत देश स्वतंत्र नहीं, यह तौ परतंत्र भयौ दुगना है,
अब ना विसवास बिजूकिन कौ, बन खेत के हेतु गये सुगना हैं

अधिकार जमा सुक बैठ गये, यह खेत इन्हें नित ही चुगना है,

अब तो इनके बस बाप का है, इस खेत में जो कुछ भी उगना है।

(4)

राष्ट्रीय गीत

वीर भूमि के आधुनिक कवि (प्रकाशित 'प्रतिबंध' पत्रिका, सितं0 83 अंक में)

वीर भूमि के कवि हो लिखते गीत भरे सिंगारों से,

सिंहों को ये बना रहे हैं, कायर आज सियारों से।

विषम समस्या आज देश की, कवि सिंगार सुनाते

वाह-वाह के लिये मंच पर विमल विमल कवि गाते।

जनता घिरी परिस्थितियों में इन्हें विनोद सुहाता,

करै नारि सिंगार कहां से, कवि कागज पर गाता।

विथित विवश जन-जन कर जीवन महंगाई की झारों से,

सिंहों को . . . .

समय समय पर होती आई, समय समय की बातें,

कभी समय पर दिवस पड़ा तो कभी समय पर रातें,

इसी तरह से समय देख कवि, अपनी कलम उठाते।

जब भी देश सशंकित होता, कवि गण अभय बनाते।

भर देते उद्‌गार युद्ध का लिखे शब्द अंगारों से,

सिंहों को ये . . . .

(5)

होली (राधा कृष्ण की) श्रंगार रस पर आधारित

(मनहर) (राधा)

नैनूँ कैसी देह दाग दीने हैं लगाय श्याम रंग माहि अंग अंग सारे रंग डारे हैं,

नाकी नॉय लागी तोहि होली की ठिठोली तोर, आवै नॉय नेकु लाज बड़े फगुवारे हैं।

अपनी ई सूरत को मुकुर बिलौकौ जाइ, टोरो चाहौ धरती पै रेकें नभ तारे हैं,

जैसे चाहें क्रीड़ा काग हंसिनी के संग माहिं, सोई हमें जान परे लच्छन तुम्हारे हैं।

(कृष्ण)

बढ़ बढ़ बातें वृष भानुजा न बोलौ अब, तुम हुने व्यंग बाण मोरे तन मारे हैं
हमको बनायो काग हंसिनी बनी है आप, जान परो जियरा में खटकत कारे हैं।
कारे सें जो बैर कारे काये को सम्हारौ केश, कजरा सों काये नैन कीनें कजरारे हैं,
मंजुल मयंक मुख मुकुर बिलोकौ जाय, कारे कारे प्यारे तिल गाल पे तुम्हारे हैं।

सवैया (चकोर) (राधा)

तुम्हे रंग में रंग सारी गई, भरके पिचकारी न मारौ लला,
रंग काचे सभी मन राजे नहीं, इन सों मत सारी बिगारौ लला
रंग कारी हमारी है सारी रंगी, रंग दूजो चढ़ै न विचारौ लला,
नहिं धोयें कढ़ै रंग ऐसौ चढ़ो, यदि होइ तुम्हारे तो डारौ लला।

इसके अतिरिक्त ' कृष्ण को बांसुरी बजाने से राधा का रोकना ' पर 5 छन्द ' मुरली और गोपियों की नोंक झोंक ' पर 12 छन्द, ' नारी की नयन प्रतिभा ' पर 15 छन्द आपने लिखे हैं। ' राधा कृष्ण की अनुपम छटा ' पर चौकड़िया ' कृष्ण के वियोग में राधिका के भाव ' व ' उद्धव व गोपियों के संवाद ' पर अनेक छन्द सवैया लिखे हैं।

(6) अध्यात्म

(1)

नर तन पाइ नेह विषयों से करै मूढ़, जा में सुख लेश नहीं अंत दुखदाई है
जैसे स्वान सूख हाड़ चूसे निज तृप्ति हेतु, नीरस में रस कहां फिर भी चबाइ है।
स्वान और नर में न भेद कछू जान परै, दौहुन की गती एक हमको लखाई है,
नर तन पाने कौ है पायो फल सोई नर, अपने को जानो सोई महानिधि पाई है।

(2)

कीनें हैं कंठस्थ वेद नाश्यो नहीं द्वेत भेद, गीता औ पुरान ज्ञान खूबई बखानौ है,
जब तप पूजा वृत तीरथ अनेक कीन, फिर भी न सुख चैन मन में घिरानो है।
कीनो है विज्ञान ज्ञान धरती आकाश छान, सुख का पता निशान कहूं न दिखानो है,
सब कुछ जानो किंतु कुछ भी न जानो मूढ़, तन पहिचानो पर निज को न जानौ है।

(3) सवैया (सुन्दरी)

विषयों में मती निज ही भ्रमती, कुमती जगती सों नहीं जगती है,
जगती जो कहीं लखती निज को, जगती की नहीं रहती असती है

रमती निज में भजती निज को, निज का सुख ही बस मोक्ष गती है,

पर मूढ़ मती यह मूढ़ गती, समझी न कहीं विषों में मती है।

(4)

जग के जग को जिन जान लियो, तिन को तग से नहिं प्रीत रहेगी,

जग से वह छत्तिस भाँति रहे, इन दौहुल मध्य पछीत रहेगी

हरि जान लियो हरि होत वही, तिहि पै नहिं मृत्यु की जीत रहेगी,

मृतिका बस मृत्यु के हाथ लगे, नहिं हाथ लगै वह कीर्ति रहेगी।

इस प्रकार अध्यात्म विषय पर बहुत से छन्द आपने लिखे हैं जिसमें सरस व सरल भाषा में अध्यात्मक जैसे गूढ़ विषय को रोचक शैली में समझाया गया है।

(6) विभीषण खण्ड काव्य (अपूर्ण)

(1)

श्री भारती जी विभीषण पर खण्ड काव्य भी लिख रहे हैं जिसमें लगभग 25 छन्द लिखे जा चुके हैं उसकी एक झलक देखियेः -

(1)

अति शोक विभीषण के हिय में, किहि भाँति सों भ्रात सुमारग आवै,

यदि बीत सुनीति की कोई कहै, अति क्रोधित है तिहि मारन धावै।

कछु जायें प्रयत्न करों यदि जो, लघु भ्रात को जान हियौ द्रव जावै,

यह सोच विभीषण जात भयो, हित को प्रिय भ्रात के ईश मनावे।

(7) श्री रामचरित मानस के किष्किन्धाकाण्ड एवं सुन्दर काण्ड का पद्यानुवाद

श्री भारती जी द्वारा श्री रामचरित मानस के किष्किन्धाकाण्ड एवं सुन्दर काण्ड का छन्द, सवेया, घनाक्षरी, हरिगीतिका एवं कुण्डलियों में रोचक संक्षिप्त अनुवाद किया गयाहै जिसकी एक झलक निम्नांकित हैः -

(1)

खोजत रोदति राम फिरें, रघुवंश वधू मियलेशकुमारी,

मारग में हनुमान मिले, धरि के वट रूप मनों त्रिपुरारी।

माथ नवाय कह्यो प्रभु सों, तुम श्यामलगौर को हौ धनुधारी,

कारण कौन सहौ वन में, पद त्राण बिना अति आतप भारी।

मूल्यांकनः

मां भारती के वरद पुत्र श्री भारती जी का उपर्युक्त काव्य संग्रह अवलोकित कर यह स्पष्ट है कि आप हिन्दी काव्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। पेशे से आप एक घड़ीसाज हैं। आपकी शिक्षा मात्र कक्षा 4 तक है किन्तु आपने घर पर स्वाध्याय द्वारा जो ज्ञान अर्जित किा एवं अपनी लेखनी को संवारते हुये जिस आयाम तक स्थापित किया वह सराहनीय है। अध्यात्म जैसे गूढ़ विषय का घर पर ही गहन अध्ययन कर विद्वानों की संगति कर आपने अपनी बुद्धि से जो काव्य सृजित किया वह उदीयमान कवियों के लिये एक आदर्श बन सकता है।

मात्र अध्यात्म जैसा विषय ही नहीं , राधा-कृष्ण के वियोग श्रंगार को, उद्धव - गोपियों की निर्गुण ईश्वर की उपासना पर नोंक झोंक, राष्ट्रीय गीत एवं राजनीति व वर्तमान समाज की कुरीतियों पर जो व्यंग रचनायें उन्होंने दी हैं वे हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। आवश्यकता है कि सरकार ऐसे कवियों का महत्व समझे, उनका मूल्यांकन कर उन्हें प्रोत्साहित करे एवं उन्हें आवश्यक सहयोग प्रदान करे।

श्री भारती जी द्वारा रचित ' गीता का पद्यानुवाद ' , ' रामायण की शंका समाधान ' एवं अध्यात्म पृष्ठ भूमि पर आधारित ' बिखरे मुक्ता ' हिन्दी जगत की अनमोल धरोहर हैं जिन्हें जनहित में अवश्य प्रकाशित होना चाहिये जिससे उनका लाभ हिन्दी प्रेमियों को प्राप्त हो सके।

हिन्दी काव्य दोष से पूर्णतया मुक्त श्री भारती जी की रचनाओं में सरलता एवं माधुर्य का गुण विद्यमान है। बुन्देली एवं खड़ी बोली में समान रूप से काव्यसृजन करने की विशेषता कवि में विद्यमान है।

{2} श्री जगदीश चन्द्र कौशल :

जीवन परिचयः

श्री जगदीशचन्द्र कौशल का जन्म दिनांक 14.1.1934 को मुहाल मुगलपुरा राठ में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री घनश्यामनारायण स्वर्णकार तथा माता जी का नाम श्रीमती यमुना देवी था।

इनके पिता जी की सराफे की दुकान था। श्री कौशल जी की प्रारंभिक शिक्षा राठ में ही संपन्न हुई। आपने हाई स्कूल की परीक्षा विज्ञान वर्ग बी0एन0वी0 इण्टर कालेज राठ से उत्तीर्ण की और फिर उसी विद्यालय में ही शिक्षक हो गये। शिक्षक बनने के पूर्व लगभग 6 माह तक आप तहसील राठ में अमीन के पद पर कार्यरत रहे। आपने व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में इण्टरमीडियेट व बी0ए0 परीक्षा उत्तीर्ण की तत्पश्चात एम0 ए0 (हिन्दी, संस्कृत) किया। शिक्षण कार्यावधि में ही आपने एल0टी0 किया। सन् 1985 में आप पदोन्नत होकर संस्कृत प्रवक्ता बने और वर्तमान समय में उपर्युक्त पद से अवकाश प्राप्त कर समाज सेवा में संलग्न हैं।

आपको कविता की रुचि बाल्यकाल से ही रही है जबकि आप कक्षा 4 में पढ़ते थे। कक्षा 8 में आपने एक कविता ' [illegible] ' लिखी थी। कवि सम्मेलनों में आपकी रुचि बाल्यकाल से ही थी एवं ये नगर में आयोजित होने वाले कवि सम्मेलनो को सुनने अवश्य पहुंचते थे।

काव्य कृतियां:

प्रकाशित रचनायें:

आपका कोई काव्य ग्रन्थ प्रकाशित नहीं है, आपकी रचनायें अनेक पत्र पत्रिकाओं में अवश्य प्रकाशित होती रही हैं जिनमें [illegible]नायन (नैनीताल), बृजभारती (मथुरा), युवक (आगरा), दैनिक जागरण (झांसी) प्रमुख हैं।

बी0एन0वी0 इण्टर कालेज राठ की वार्षिक पत्रिका ' पयस्विनी ' का एक वर्ष आपने सम्पादन भी किया है।

अप्रकाशित रचनायें:

आपकी अप्रकाशित रचनाओं में ' गीता का पद्यानुवाद ' प्रमुख है जिसे आपने वर्ष 1972 में सृजित किया था। इसके अतिरिक्त [illegible] विषयों पर फुटकर रचनायें हैं। आपकी रचनाओं के कुछ उदाहरण अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं।

गीता का पद्यानुवाद

(क) प्रथम अध्याय

श्लोक (1) धृतराष्ट्र: इस धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्र मध्य,

रण की इच्छा से एकत्रित

संजय क्या किया पाण्डवों ने,

मम सकल सुतों से हो सम्मिलित

श्लोक (1) संजय : देखी पाण्डवों की सजी सैन्य,

राजा दुर्योधन ने जाकर

आचार्य समीप उपस्थित हो,

ये वचन कहे उस अवसर पर।

(ख) अध्याय-3

श्लोक (1) अर्जुन : हे कृष्ण कर्म से बुद्धि श्रेष्ठ,

ऐसा यदि आप मानते हैं।

तब बोलो केशव आप मुझे,

क्यों घोर कर्म में डालते हैं।

श्लोक (2) अर्जुन : मिश्रित वचनों से हे! केशव,

मम प्रज्ञा मोह रहे केवल।

निश्चित ही एक बात कहिए,

जिससे हो मेरी सुगति कुशल।

(ग) षष्ठम अध्याय (ध्यान योग)

श्लोक (1) श्री कृष्ण: जो मनुज कर्म फल आश्रय तज,

करता है केवल कर्म विहित।

वह ही सन्यासी योगी है,

औ मनुज न जो बिन कर्म निहित।

श्लोक (2) श्रीकृष्ण: सन्यास जिसे ऐसा कहते,

उसको हे! अर्जुन योग जान,

क्योंकि संकल्प तजे बिन मन,

योगी न बने यह सत्य मान।

अध्याय - 9

श्लोक ॥1॥ श्रीकृष्णः अर्जुन तेरे हित गुप्त ज्ञान,
विज्ञान समेत बताऊँगा।
जिसको बतलाकर भली भांति,
पापों से तुझे छुड़ाउँगा।

श्लोक ॥2॥ श्रीकृष्णः यह विद्या परम गूढ़ मय अति,
पावन उत्तम है और सरल।
धार्मिक सुखदायक राजयोग,
अविनाशी है कर इसे अमल।

पंचदश अध्याय

श्लोक ॥1॥ ऊपर जड़ नीचे शाखायें,
पत्ते हैं इसके सभी छन्द।
अव्यय अश्वत्थ जानता जो,
वह वेद जानता है अमंद।

श्लोक ॥2॥ शाखायें ऊपर नीचे हैं,
गुण से प्रबुद्ध विषयों पुष्पित।
है कर्म पाश नीचे की जड़,
करती मानव को जग बंधित।

अष्टदश अध्याय

श्लोक ॥1॥ अर्जुनः हे महाबाहु! हे हृषीकेश,
हे केशिनिषूदन बतलाओ।
सन्यास त्याग का अलग अलग,
मुझको रहस्य यह समझाओ।

श्लोक ॥2॥ श्रीकृष्णः कोई पंडित है, काम्य कर्म,
सन्यास बताते हैं तजना।
कोई विद्वान बताते हैं,
इच्छा न कर्म फल की रखना।

(2) ' गायत्री रहस्य ' के अंश

श्री कौशल जी द्वारा लिखी गई एक लघु पुस्तिका 'गायत्री रहस्य' है जिसमें गायत्री, गीता एवं गायत्री स्मृति का पद्यानुवाद है, इसे श्री कौशल जी द्वारा 1972 में लिखा गया। कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

गायत्री मंत्र : ऊँ भू. . . . . प्रचोदयात् ।

अर्थ : प्राणों का रक्षक दुःख हर्ता,

सुख का स्वरूप है दिव्य सदा।

तेजस्वी दुरितों का नाशक,

जो देव रूप में रहे तदा।

हम अन्तस में उसको धारें,

होवे निज धी सन्मार्ग प्रदा।

जिससे जीवन उज्जवल होवे,

जपती रसना यह मंत्र सदा।

इसके पश्चात गायत्री मंत्र में आये प्रत्येक शब्द की अलग अलग व्याख्या की गई है कुछ अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं:-

(ऊँ)

न्यायी नियामक सच्चिदानन्द,

जो निराकार व्यापक जग में,

वह ओम आत्मा प्राणों में,

है ध्यान योग्य सबके मन में।

(भूः)

मुनि लोग प्राण को भूः कहते,

फैला समरूप प्राणियों में।

इसको है सिद्ध यहां सब सम,

देखो सबको जैसे निज में।

(3) फुटकर रचनायें

(अ) व्यंग (नेता)

मैं नेता हूं खद्दरधारी,

धोती,कुर्ता, टोपी डटकर लगता हूँ जैसे अवतारी।

जब भाषण चक्र चले मेरा, सबकी जाती नानी मारी,

मेरी सेना के सब सैनिक, चाहे गुण्डा हो व्यभिचारी।

मैं नेता हूं खद्दरधारी।

× × × × × × × × ×

(ब) श्रंगार (रूपक)

नभ मण्डल सा मुख मण्डल था,

बैंदी चन्द्रज्योति सी छिटकी।

अलकें घन सीं, आंखें तारे,

दंतावलि दामिनि सी पटकी।

धूमकेतु सी नासा लखकर,

कृष्ण याद करते राधा को।

मथुरा के प्रांगण में बैठे,

लखते नभ को लगा टकटकी।

(स) समस्या 'राछरो' (वीर रस)

भुज में भुजंगिनी सी लटकती कृपान धार,

मरदन को वेष धरे खोंसे है कांछरो।

घोड़ा करे मारग में मारूत समान बात,

फरर - फरर लहरात जात लाल आँचरो।

बांधे लाल पीठ में औ दांतन लगाम दाब,

दुश्मन की सैन्य करे देख स्वर्ग बासरो।

झांसी की रानी की, वीरता कहानी सुन,

गाउती बुंदेलिनी है जोश भरो राछरो।

(द) दैनिक जागरण झांसी में प्रकाशित कल्पना पर एक अनुभूतिपरक रचना

तुम मनुज की कल्पना हो,

अतन सुन्दर कल्पना हो।

जब तुम्हारा उदय होता तार मन के झनझनाते।

प्राण हो उठते विकल सब, द्वार सारे सनसनाते।

देह के हर एक कोने मधुर लय में गुनगुनाते,

तुम सुखद वह जल्पना हो,

तुम मनुज की कल्पना हो।

× × × × × × × × × × ×

(य) उड़ रहा साहित्य नभ में

कल्पना के पर लगाकर,

उड़ रहा साहित्य नभ में।

एक पंछी नीड़ का है, खोजता आनन्द कण को,

नापता उँचाइयों को छोड़ता न एक क्षण को।

खोजकर दाना चुगाता वसुंधरा के मनुज मन को।

मैं मधुर मकरंद लाकर, मुदित करता हूं विजन को।

छंद की इस चंचुका से,

चहचहाता हूं सुलभ में।

कल्पना के पर लगाकर,

उड़ रहा साहित्य नभ में।

(र) ब्रजभारती मथुरा अंक 4 वर्ष 29 में (2032 विक्रम) प्रकाशित रचना

समस्या 'काहे बसन्त बनावत '

सरिता तट और बगीचन मांझ,

यहै फुलवारी अनूप दिखावत।

रंग विरंगन लोचन दै सुख,

और सुगंध है मोद बढ़ावत।

अंगन अंग उमंग रहो बढ़ि,

औ सब देह अनंग जगावत,

शिव के मन शेष जगावन को,

यह कौशल काहे बसन्त बनावत।

इसके अतिरिक्त मां शारदा पर 5 छन्द, कई फुटकर गीत व छन्द हैं जिनकी संख्या लगभग 150 होगी।

मूल्यांकन:

कवि की उपर्युक्त रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट है कि ये हिन्दी काव्य साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। रचनाओं में प्रवाह एवं लालित्य का गुण विद्यमान है। धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक सभी विषयों पर इन्होंने लेखनी चलाई है। हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाले श्री कौशल जी की रचनायें सरस एवं माधुर्य के गुण से ओत प्रोत हैं। कवि का हिन्दी काव्य साहित्य में दिया गया योगदान प्रशंसनीय है।

(3) श्री हरीसिंह राजपूत :

जीवन परिचय:

श्री हरीसिंह जी मूल रूप से ग्राम सैना राठ के निवासी हैं। वर्तमान समय में आप मुहाल सिकंदरपुरा राठ में रहते हैं। आपके पिता का नाम श्री भवानीदीन एवं माताजी का नाम श्रीमती शिवरानी था। माताजी का स्वर्गवास हो चुका है। आप कृषि कार्य में संलग्न हैं। आपकी शिक्षा इण्टरमीडियेट तक है जिसे आपने ब्रह्मानन्द इण्टर कालेज राठ से प्राप्त किया है। आप एक मेधावी छात्र रहे हैं।

श्री हरीसिंह जी ने गीत लिखना सन् 1977 से प्रारंभ किया जबकि आपको भू0पू0 प्रधानमंत्री स्व0 इन्दिरा गांधी के समर्थन में आयोजित आन्दोलन में जेल जाना पड़ा । वहीं पर कुछ लोगों की रचनायें सुनकर लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई। आपके प्रेरणा स्त्रोत स्व0 डा0 हरगोविन्द सिंह भी रहे हैं एवं छन्द सवैया लिखने की प्रेरणा राठ नगर के सुप्रसिद्ध कवि श्री गिरजादयाल सक्सेना से प्राप्त हुई।

आपका लेखन कार्य स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण कुछ वर्षो से बाधित है।

आपके कुछ गीत, छन्द सवैया (दो तीन कार्यक्रमों में) आकाशवाणी छतरपुर से प्रसारित हुये हैं। आप जनपदीय कवि सम्मेलनों में भी कविता पाठ कर चुके हैं।

काव्य कृतियांः

प्रकाशित रचनायें:

आपका कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है आपकी कुछ फुटकर रचनायें वार्तायन (नैनीताल) व सुकवि विनोद (लखनऊ) पत्रिकाओं में अवश्य प्रकाशित होती रही हैं। इसके अतिरिक्त किसी प्रकार का आपकी रचनाओं का उल्लेखनीय प्रकाशन नहीं हुआ है।

अप्रकाशित रचनायें:

श्री हरीसिंह जी ने मुख्य रूप से सामाजिक व्यवस्था, छुआछूत व जाति वर्ण व्यवस्था का विरोध किया है और इन्हीं विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। इसीलिये आप स्वयं को एक विद्रोही कवि के रूप में मानते हैं क्योंकि इनकी रचनाओं का केन्द्र उपर्युक्त वर्णित विषय ही रहे हैं।

आप गीत व छन्द, सवैया लिखते हैं आपकी भाषा खड़ी बोली, बुन्देली व ब्रज तीनों रही हैं। मुख्य रूप से आप बुन्देली में लिखते हैं इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(अ) किसान के प्रति

तप्त तपे धरती तल पे, दिन रात तपो तुम हे तपधारी।
पीठ ओ पेट भये मिल एक, हरो पर औरन को दुख भारी।
कौन? भगीरथ के तप से, सुख के भ्रम से तुम हे श्रमहारी।
कोऊ करै सुख भोग फिरौ, सिर पे धर खें धरती तुम सारी।

इस प्रकार किसान के प्रति 8 छन्द लिखे हैं।

(ब) समस्या ' चिनगारी '

घात करें, प्रतिघात करें, बड़वात करें न करें बिन गारी।
जीवन को बस जीवन है कि बिगार करो न करो झनकारी।
चेतत नांह रहे चढ़ चित्त सो चेतों अजों मति मंद अनारी।
जोर ओ जुल्म की टक्कर सों, प्रकटें वन चन्दन सों चिनगारी।

(स) व्यंग (मृतक भोज पर)

एक दई विपदा विधि ने, अरू दूसर काल दुकाल के प्रेरे,
तीसर है विपदा कलि में, नित पूजन हेतु फिरें घर घेरे।

धर्म नहीं शुभ कर्म नहीं, वन विप्र गये सब पेट के चेरे,

नेक न लाज, बने ये फिरें, नित काज अकाज में दाहिने डेरे।

(द) धर्म परिवर्तन (व्यंग)

यह छूत अछूत की बात हरी, हमको न रूची न ही आगे रूचेगी।

मतभेद अनेक समाज में डाल के स्वांग अनेक रचे व रचेगी।

थिगरी अपमानित मान को पाकर अन्य किसी कथरी में टकेगी।

क्रम ह्रास का ये चलता ही रहा, तो न धर्म न वर्ग न जाति रहेगी।

(य) अनेकता में एकता (व्यंग)

देख सकते हैं देवरूप पशु पत्थर में,

किन्त दलितों को कोई आदमी न लेखता।

चल रहा ये समाज सदियों से ऊँच नीच,

भेद भाव वेदना वैसाखियों को टेकता।

वर्ग और जातियों के हित में लगे हैं लोग,

कोई असमानता समाज की न देखता।

मानवीय मूल्य लोप देश व समाज बीच,

कैसे बन पायेगी अनेकता में एकता।

इस प्रकार के लगभग 10 छन्द इसी क्रम में लिखे हैं।

(र)धर्म परिवर्तन (व्यंग)

बार बार पास आया, भाई फिर भी न भाया,

तुमने बिठाया दूर दिया दुत्कार है।

भाई तुमको न पाया, निज भाई को सताया,

किन्तु गैर गले लगा किया सत्कार है।

प्रश्न मानपान का है और स्वाभिमान का है,

सोचिये समाज में कौन गुनहगार है।

इसीलिये त्याग रहे धर्म हैं स्वदेश बीच,

क्योंकि कभी मुक्त हृदय से न किया प्यार है।

इस क्रम में लगभग 10 छन्द लिखे हैं।

मूल्यांकनः

श्री हरीसिंह जी की उपर्युक्त फुटकर रचनायें देखकर यह स्पष्ट है कि आप सामाजिक विषमताओं, जाति वर्ग में व्याप्त कुरीतियों, छुआछूत, मृतक भोज, ऊँच नीच इत्यादि के प्रबल विरोधी हैं और उपर्युक्त विषयों को लेकर ही अपनी लेखनी चलाई है। आप अच्छे व्यंगकार हैं साधारण शब्दों में अपनी बात को रोचक व सरस बनाकर लिखना आपकी विशेषता है। आपकी रचनायें प्रवाह युक्त हैं। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता आपके लेखन कार्य को बाधित किये हैं अन्यथा आपके द्वारा हिन्दी काव्य साहित्य को उल्लेखनीय योगदान दिया जा सकता है।

(4) श्री रामखिलावन निरंजनः

जीवन परिचयः

आपका जन्म सन् 1940 में मुहाल मुगलपुरा-राठ में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री रामेश्वरप्रसाद निरंजन है जो एक जौहरी (सोने चांदी बनाने का काम करने वाले) थे तथा माताजी का नाम श्रीमती रामकुंवर है। आपकी प्रारंभिक शिक्षा राठ में संपन्न हुई। इण्टरमीडियेट परीक्षा भी आपने श्री गांधी राष्ट्रीय विद्यालय इण्टर कालेज राठ से उत्तीर्ण की तथा बी0 ए0 परीक्षा पन्ना (मध्य प्रदेश) से उत्तीर्ण की। वर्तमान समय में आप ग्राम मड़ला जिला पन्ना (मध्य प्रदेश) में शिक्षक पद पर कार्यरत हैं।

कविता करने की रूचि बाल्यकाल से ही आप में है जबकि कक्षा 8 में अध्ययन करते थे। आप वीर रस प्रधान कवि हैं और खड़ी बोली व बुन्देली दोनों में कवितायें लिखते हैं। स्वयं उन्हीं के अनुसार बुन्देली भाषा में लिखने की नींव जनपद हमीरपुर में आपने ही डाली है।

काव्य कृतियां:

प्रकशित रचनायें:

समाचार पत्र शुभ भारत (छतरपुर), दैनिक दर्शन (छतरपुर) दैनिक आलोक (रीवा) वार्तायन नैनीताल) मासिक पत्रिका में आपकी रचनायें प्रकाशित होती रही हैं।

एक पुस्तक ' निरंजन फाग बहार ' तथा एक गारी की पुस्तक 'दिल तरंग' भी आपकी प्रकाशित हो चुकी है। आकाशवाणी छतरपुर से कई बार आपका कविता पाठ प्रसारित हो चुका है।

अप्रकाशित :

आप गीता का अनुवाद दोहा व चौपाइयों में कर रहे हैं। अभी तक चतुर्थ अध्याय तक अनुवाद कर लिया गया है। एक अन्य काव्य संग्रह भी आपका प्रकाशित होने को है इसमें राष्ट्रीय, सामाजिक व सामयिक रचनायें संग्रहीत हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं:-

(1) मुक्तक

देश का कोई भाग सूखा न रहे,
देश का कोई पौधा रूखा न रहे।
झोली में भिक्षा मां डाल दो यही
देश का कोई शिशु भूखा न रहे।

(2) मुक्तक (तब और अब के संदर्भ में)

दुनियां बदलती है बदल जाने दो
चांद सितारे बदलते हैं बदल जाने दो
मेरे प्यारे दोस्त इंसानियत न बदलने पाये
शरीर बदलता है बदल जाने दो।

(3) व्यंग कुर्सी पर

शान घटती है घट जाने दो
आन घटती है घट जाने दो
कुर्सी मिल रही हो तो चूकिये नहीं
नाक कटती है कट जाने दो

(4) परिवार नियोजन पर

कुरबानी और न हमें बलिदान चाहिये
सिर काटने वाली भी नहीं आन चाहिये
मांगता है देश आज तुमसे एक बात
हर घर में सिर्फ दो संतान चाहिये।

(5)

इतै मालिक मजदूर किसान

कहत भारत के नेता आज, इतै मालिक मजदूर किसान
गरीबन के दिल देखौ चीर, आह के कितने बने निशान ।
निहारौ तनक इतै को चैत, बनत है चौमासे को नैत
चैत को दाना लेत हिलोर, दौड़ रहे बूढ़ ज्वान किशोर
लगी सड़कन पे लम्बी डोर, गठरियां धरैं ओर सें छोर।
कंधा पै डारें तुम्बी डोर, पीठ में लरका बंधो लिलोर।
देखवें ऊपर खां हर बेर, खेत तौ पहुंचत हो गई देर।
कहूं मालिक न देवें फेर एई आशा में दौरे जात
घाम में फटे मुलायम ओंठ, प्यास सें सूखी जात जबान
कहत भारत के . . . . . .

खेत में कुढ़रत सब दिन जात,
तपन में लस्त परत सब गात
पसीना ऐड़ी लौ चुचुआत
चैनुआं मेड़न में चिल्लात
मसूकें मिलत कटई ऐ शाम
कटत दिन सुमरत सुमरत राम
सांझ कै धरैं मूड़ पै लांक
मजूरी मालिक नें दई आंक
रहो गैलई में कौनऊ कांख
बिहानै कूटत जब मजदूर
कढ़त मुश्किल सै तीन छटांक
खून कौ पीकैं घूंट मजूर
आह भर सुमरत है भगवान
कहत भारत . . . .

(6) न अंचरा मां कौ मैलो होय (आकाशवाणी छतरपुर से प्रसारित दि0 31.8.91)

देश के विरन संभारौ वतन, जतन सैं करौ समस्या समन

न अंचरा मां को मैलो होय

कर्म है सब तीरथ कौ धाम
कर्म सें कृष्ण कर्म सैं राम
कर्म खां करौ समझ कैं काम
देश को मिलकैं करौ सुधार
जगत में बढ़ै कीर्ति औ नाम
खिला दो खुशबू वाले फूल, महक जावै जौ भारत चमन
न अंचरा मां को मैलो होय।

बड़ी मुश्किल से भओ विहान
त्यागदये तिनका जैसे प्रान
र. ख लई भारत मां की शान
न जानैं कितनीं आहुति परीं
न जानै कितने भये बलिदान
देश खां मुक्त करावे हेत, सहो है जानैं कितनौ दमन
न अंचरा मां को मैलो होय।

मिली हे पकी पकाई खीर
बांट कैं खाव न होत अधीर
ख्याल करकें बलिदानी पीर
बहा दो इतै प्रेम की गंग
होय मन निर्मल शुद्ध शरीर
भाव कटुता के सब उड़ जायें बहा दो ऐसौ प्यार पवन
न अंचरा मां को मैलो होय

चढ़ा माथैं माता की धूल
जब सब भेदभाव खां भूल
हंस दो सबै बात प्रतिकूल
पराओ कौनउं नइयां इतै
आय अपनो परिवार समूल
एकता डोर करौ मजबूत, करौ बापू के पूरे सपन
न अंचरा मां को मैलो होय।

कर्मफल

इस धरती पर नहीं कोई बड़ा और छोटा है
एक धातु के सब सिक्के हैं कौन खरा खोटा है
अपने अपने कर्मो का सब फल भोगा करते हैं
अपने अपने रूपों में ही बीज उगा करते हैं
बोकर गेहूं फसल चने की नहीं काट सकता है
दुष्कर्मो की खाई पगले नहीं पाट सकता है
यद्यपि धोखा‾या दशरथ को जो श्रवण निशाने पर आये
त्रिभुवन पति सा सुत पा दशरथ अपने को नहीं बचा पाये
अवतीर्ण हुये थे पारब्रह्म मर्यादा पुरूषोत्तम बनकर
मर्यादा का ही पालन था जो बाली को मारा छिपकर
कर्मो के फल ने त्रेता से द्वापर तक पीछा कर डाला
बन कर बहेलिया बाली ने प्रभु से भी बदला ले डाला
अपने पौरूष से भीषम ने अम्बा कन्या का हरण किया
पर ब्रह्मचर्यव्रत के कारण उस कन्या का न वरण किया
अंग अंग अनंग ने झकझोरा यौवन की अंगड़ाई मसली
उसका ही फल था भीषम को तीखे बाणों की सेज मिली
गल गया अंगूठा पैरों का कुन्ती सुत चिंतित घबड़ाये
धीरज देकर कुन्ती सुत को मनमोहन करनी समझाये
अश्वत्थामा रण खेत हुआ ये बात युधिष्ठिर झूठी थी
यद्यपि ये वाणी मेरी थी कुन्ती सुत बात अनूठी थी
तुम धर्मराज हो धर्म रूप सत की परिभाषा भूल गये
निर्णायक होकर धर्मराज अपने निर्णय में भूल गये
विश्वास द्रोण का हनन किया सिर पर रख करके सत्य ताज
इसलिये अंगूठा पैरों का गल गया तुम्हारा धर्मराज
दृष्टी में हर प्राणी समान है कौन बड़ा छोटा लघुतर
ऊंचा नीचा कुछ नहीं यहां, मानव मानव में क्या अन्तर
पीड़ा तड़पन उत्थान पतन वैभव विलासिता समतल है
तू भोग रहा जो धरती पर तेरे ही कर्मो का फल है।

मूल्यांकनः

श्री निरंजन जी की उपर्युक्त रचनायें इस बात का प्रमाण हैं कि इनका खड़ी बोली व बुन्देली में समान अधिकार है। आप वीर रस के कवि हैं और रेडियो स्टेशन छतरपुर से अब तक कई बार आपकी रचनाओं का प्रसारण हो चुका है। बुन्देली में लिखने वाले आप हमीरपुर जनपद के विशिष्ट कवियों में से एक हैं। आपका दोहा व चौपाइयों में लिखा जाने वाला गीता का अनुवाद अपूर्ण है जो शीघ्र ही पूरा हो जाने की आशा है।

कवि की ओज पूर्ण रचनाओं में सरलता एवं प्रवाह का गुण विद्यमान है रचनायें काव्य दोष से मुक्त हैं। भाषा सरल एवं सरस है संक्षेप में इन्हें वीर रस का एक अच्छा कवि माना जा सकता है।

(5) श्री जगदीश अड़जरिया ' गुरू ' :

जीवन परिचयः

आपका जन्म दिनांक 2.1.1950 को मुहाल पठनऊ राठ में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री ब्रजनन्दन अड़जरिया तथा मां का नाम श्रीमती सावित्री देवी था। आपके पिताजी एक अध्यापक थे ये उपन्यास भी लिखते थे किन्तु इनके लिखे उपन्यास प्रकाशित नहीं हुये। कुछ उपन्यासों का संग्रह अभी भी श्री अड़जरिया के अनुसार उनके पास है। श्री ब्रजनन्दन जी का लिखा एक नाटक ' देश प्रेम ' प्रकाशित हुआ था। श्री जगदीश जी ने काव्य सृजन की प्रेरणा स्व0 डा0 श्यामसुन्दर बादल की रचनाओं को पढ़कर प्राप्त की। इन्होंने काव्य रचना का कार्य वर्ष 1967 से प्रारंभ किया। ये एक व्यंगकार हैं। क्षेत्रीय कवि सम्मेलनों में आपने कविता पाठ भी किया है उरई, छानी (हमीरपुर), हरपालपुर, कुलपहाड़ इत्यादि स्थानों में आयोजित कवि सम्मेलनों में आपने भाग लिया है। इनकी शिक्षा बी0ए0, एल0एल0बी0 है। इस प्रकार पेशे से ये एक अधिवक्ता हैं। अपनी वर्तमान व्यंग विधा में लिखने से पूर्व ये श्रंगार वियोग परक रचनायें भी लिखते थे।

काव्य कृतियां:

इनका कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं है। कुछ पत्र/पत्रिकाओं में यदा-कदा रचनायें प्रकाशित होती रहती हैं।

इनकी अप्रकाशित रचनाओं में व्यंग, श्रंगार व अध्यात्म का संग्रह है जिनकी एक झलक नीचे दी जा रही है

(1)

खायेंगे समाज को तो लायेंगे समाजवाद,

भ्रष्ट जब बनेंगे तब भ्रष्टता हटायेंगे।

जातिगत संगठन दूर करें जातिवाद,

फतवों से देश को महान हम बनायेंगे।

प्यार नहीं राम से दुलारे न रहीम हमें,

कुरसी के वास्ते धर्म को भुनायेंगे।

मूर्खों का तंत्र 'गुरू' आय प्रजातंत्र सुनो,

मंत्र स्वार्थ सिद्धि से पार्टी चलायेंगे।

(2)

मुक्तक

भाषण से बोलचाल से भगवान हो गये।

जनता की आन बान शान हो गये।

नेता था पहले आम, गुरू क्या गजब हुआ,

कातिल हुये तो गांव के प्रधान हो गये।

(2)

गीत

मुर्गा बोले कुकड़ूं कूं,

सुनो हकीकत कहें गुरू।

जो कहे हमेशा अच्छा।

बस वही आदमी सच्चा।

ना नुकर करेगा बन्दे,

तो हंसेगी दुनियां रोये तूं, मुर्गा बोले . . . . .

अरे सीधे चलना भाई,

है यहां कुआं वहां खाई

तब एक कहावत हमको,

बस यहां याद है आई।

कि जी के गांव में रइयो।

तो ताकी तैसी कइयो

कोउ कहै बिलइया ले गई ऊंट

तो हां जू हां जू कहिये।

मत धार पार करनाये तूँ। मुर्गा बोले . . . . .

जैसा देश वैसा भेष

हार गये खरगोश बहादुर

कछुआ जीत गया था रेस,

'गुरू' के सुन लो कुछ उपदेश

जिसकी लाठी उसकी भैंस

प्यास बुझे न चाटे ओस

तब कमजोरों को देना धौंस

भैंस के आगे बीन बजाई

भैंस खड़ी पगुराई हूं। मुर्गा बोले . . . .

जब अंधों में हो काना राजा

तब बिना सुरों का बाजे बाजा

अपनी ढपली अपना राग

टके सेर का बिकता साग

नाच न आवै आंगन टेढ़ा

नाकों चना चबा गओ मोड़ा

जो देखो किस्मत को खेल

बढ़ गओ चन्दा घट गई सेल

घर में नइयां दाने

तब अम्मा चलीं भुनाने

कहां नौ मन तेल जो राधा नाचै

बैठ गया क्यों उकड़ूं कूं।

मुर्गा बोले . . . .

मूल्यांकनः

कवि की उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि ये हास्य व्यंग के अच्छे कवि हैं। इनकी रचनायें वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाओं पर एक करारा व्यंग होती हैं। रचनायें सरस एवं बोधगम्य शैली में लिखी गई हैं। कवि का प्रयास सामाजिक कुरीतियों एवं अव्यवस्थाओं से जन सामान्य को जाग्रत करने का है और अपने इस उद्देश्य में कवि पूर्ण रूप से सफल प्रतीत होता है।

(6) श्री मोहन लाल बुधौलिया :

जीवन परिचय:

आपका जन्म दिनांक 2.12.1930 को मुहाल भटियाना राठ में हुआ था। आपके पिताजी का नाम स्व0 पं0 श्री मूलचन्द्र बुधौलिया था। आपकी अधिकतम शिक्षा हाई स्कूल है जिसे आपने बी0एन0वी0 इण्टर कालेज राठ से उत्तीर्ण किया। आप पोस्टमास्टर के पद पर कार्यरत रहे और दिनांक 31.12.1981 को आपने अवकाश ग्रहण किया और अब घर पर ही रहते हैं।

सन् 1962 में आपको भारत चीन युद्ध से लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई। आप प्रकृति प्रेमी कवि हैं केवल गीत ही आप लिखते हैं एवं प्रत्येक गीत को प्रकृति से जोड़कर ही आप भावाभिव्यक्ति करते हैं।

काव्य कृतियां:

प्रकाशित रचनायें:

सन् 1966 में साहित्य कुंज महोबा से प्रकाशित कवियों की रचनाओं के संकलन ' कुहरे की कलियां ' में आपकी (1) वर्षा गीत (2) गीत (3) बसंत गीत , एवं (4) युद्ध के बादल, चार रचनायें प्रकाशित हुई हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी प्रकार का आपका साहित्य प्रकाशित नहीं हुआ है।

अप्रकाशित रचनायें:-

आपने अब तक लगभग 50 गीत लिखे हैं जो अप्रकाशित हैं आपके गीतों के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

प्रकृति का श्रंगार परक चित्रण

मुतियन वाली चूनर रात हुई मैली,

बदल लिया नीला अम्बर कुछ शर्मा कर

बिखरे काले केश सम्भाले ऊषा ने,

अपने महदीले हार्थों रोली भर भर कर

फिर उठा लिया धीरे से सिर पर स्वर्ण कलश,

जो डूबा था अब तक कालिन्दी के तट पर।

× × × × × × × × × × ×

(2)

देश के विभाजन पर एक गीत

अरे पुजारी जिस प्रतिमा के आगे तूने दीप जलाये

प्राण प्रतिष्ठा से पहिले ही क्यों उसको खण्डित कर डाला

जिसने निज सर्वस्व समर्पित कर सपना साकार किया था

शदियों के ध्वंशावशेष को मंदिर का आकार दिया था

जिसकी मृदुल छेनि को छूकर दानव भी बन गया देवता

अर्चन बेला में उस शिल्पी को ही क्यों दण्डित कर डाला

× × × × × × × × × × × ×

(3)

ताशकन्द समझौता (सैनिक की प्रतिक्रिया)

कौन सतलज के किनारे धो गयीं पग के महावर

धो गयी हैं कौन मेंहदी ले मृदुल अपने रुचिर कर

पोंछ दी किसने प्रतीची छोर से सिंदूर लाली

और निशि के वसन से निज काजलों की र

यह चमकती तारिकायें चूड़िया टूंटी किन्हीं की

यह जुन्हाई जड़ित लहरें कर धनी रूठी किन्हीं की

यह सभी श्रृंगार उन विधवाओं का बिखरा पड़ा है

चिर अमर सिंदूर जिनका बन्हि गिरि पर चढ़ लड़ा है

× × × × × × × × × × × × × × ×

सन् 1966 में साहित्य कुंज महोबा से प्रकाशित ' कुहरे की कलियां ' में संकलित श्री बुधौलिया जी की कुछ कविताओं के अंश पृष्ठ सं0 - 60 से 63 तक।

(1)

वर्षा गीत

धरती की दहक रही देह पर

झुलस गये गली गांव गेह पर

बरस गई बदरिया बावरी

छलक गई अमृत की गागरी।

अंकुरा उठे लेकर अंगड़ाइयां

पोखरों में बज उठी बधाइयां

भर गये सरोवरों के घाव री

नाच उठी नदिया में नाव री।

× × × × × × × × × × × × × × × ×

(2)

गीत

कितने घट लेकर आया इस पनघट पर

किंतु युगों की प्यास आज भी रही अधूरी

सुधा सरोवर के तट पर ही सफरी सिर धुनती है

चन्द्र किरन को छोड़ चकोरी अंगारे चुगती है

सुघर सलोने पर कच्ची माटी के लिये खिलौने

खेल रहा युग युग से खोकर मां के नरम बिछौने

कितनी आशाओं की लाशें जला चुका मरघट पर

किंतु युगों की आश आज तक रहीं अधूरी।

× × × × × × × × × × × × ×

(3)

बसंती गीत

मधु ऋतु आये और कली मुस्काये ना

तो बासंती गीत कहो कवि कैसे गाये

आज डाल की मांग भरी है धूल से

आज रक्त बहता हर घायल फूल से

सिसक रहा कलिका की पलकों में सपना

भूला भटका भ्रमर बिंधा है शूल से

मलयज आये पर सौरभ बरसाये ना

तो बासंती गीत कहो कवि कैसे गाये।

× × × × × × × × × × × × ×

(4)

युद्ध के बादल

थम गई है वृष्टि बूंदें रूक गई हैं

पर गगन में घन अभी लहरा रहे हैं।

सिंधु का अनुदान है आकार उनका

वायु की बैसाखियां आधार उनका

कर चुके कुण्ठित अशामि आघात हो तुम

पर उपल भू पर अभी छहरा रहे हैं।

× × × × × × × × × × × × ×

मूल्यांकन:

उपर्युक्त रचनाओं के नमूनों को देखकर ये स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि श्री बुन्देलिया जी प्रकृति प्रेमी कवि हैं। आप अपनी बात को प्रकृति से जोड़कर कहते हैं और प्रकृति के पशु पक्षी, पशु, नदी, तालाब, हवायें, भ्रमर, कलियां, आकाश, चांद-सितारों सभी को माध्यम बनाकर अपनी बात कहते हैं इस प्रकार इन्हें छायावादी कवि की श्रेणी में रखा जा सकता है। आपने केवल गीत ही लिखे हैं और गीत की विधा में आपकी अच्छी पकड़ है आपके पास कई सुन्दर गीत संग्रहीत हैं परंतु अभी तक उनका प्रकाशन किसी भी रूप में संभव नहीं हो सका है जिसकी महती आवश्यकता है।

(7) श्री गिरजादयाल सक्सेना:

जीवन परिचय:

श्री गिरजादयाल सक्सेना का जन्म 10-12-1926 को ग्राम कैंथी (चरखारी) में हुआ था। इनके पिता श्री लक्ष्मणप्रसाद सक्सेना भी अच्छे कवि थे। श्री गिरजादयाल सक्सेना गांधी राष्ट्रीय विद्यालय इण्टर कालेज राठ में भूगोल के प्राध्यापक रहे हैं और सन् 1987 में अवकाश ग्रहण करके वर्तमान समय में चौबट्टा-राठ में रहते हैं। स्वास्थ्य अच्छा न रहने के कारण ये साहित्य सृजन में पूरा समय नहीं दे पा

रहे हैं किंतु अब तक इनक द्वारा किया गया काव्य सृजन उच्च कोटि का है प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर आयोजित हुये कवि सम्मेलनों में भी आपने कविता पाठ किया है।

काव्य कृतियां:

हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर श्री सक्सेना जी प्रायः भक्तिपरक छन्द, धनाक्षरी व सवैया ही लिखते हैं। इनके द्वारा लिखे गये कुछ गीत भी हैं। अभी तक इनका कोई कविता संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। यमुना तट (यमुना जल श्याम क्यों ?) पर आपने लगभग 100 छन्द लिखे हैं। इसी प्रकार इनका अप्रकाशित कविता संग्रह ' टूटी गगरी फूटी चूरी ' भी है जिस पर इन्होंने लगभग 100 छन्द लिखे हैं। रूग्णावस्था में भी वर्तमान समय में इनके द्वारा हास्य एवं भक्तिपरक रचनाओं का सृजन किया जा रहा है। इनके द्वारा सुदामा चरित्र भी लिखा जा रहा है जो अभी अपूर्ण है। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

धनवान व गरीब के बीच बढ़ती खाई एवं महंगाई पर इनका एक व्यंग गीत देखिये।

(1)

क्या ख्याल है ?

बड़े पेट भर रहे ठसाठस,

छोटों पर भीषण अकाल है।

एक सेर का गीला गुड़ है शक्कर को क्यू पड़े लगाना
आध पाव का मिला हुआ घी, गंगाजल सा दूध सुहाना।
राजा सब बन गये बानियां, लगा लगा पूंजी मनमानी।
जमींदार मिट गये बिचारे, पास रही न कौड़ी कानी।
मंदिर लुट गये, धर्म बिगड़ गये, पंडित जी का खुला टाल है।

शिक्षित फिरते मारे मारे और बढ़ाने का आयोजन
एक जगह चपरासी वाली को आते एम0 ए0 कई हरिजन
फिर भी चुने ड़ास जाते हैं भीतर भीषण गोल माल है।

न्याय यहां बिकता पैसे से बिन पैसे इज्जत लुटती है
आज तराजू की डण्डी में हल्के पलड़े पर झुकती है
पौ बारह हैं उसके अब जो कोठों वोटों का दलाल है।

राधा कृष्ण से संबंधित कुछ सुन्दर छन्द देखिये।

(2)

जाहि घाट राधिका नहाति, वाही घाट श्याम,

सोच सोच गोरो गात पीरो परो जात है।

जासों दूर भाजिबे के लछा यत्न करे नित्य,

वाहि सों निगोड़ो मन हठ अरूझात है।

सांसन संकोचन सों मन मुरझात जात,

दृग अरूझात जात सांस गरमात है।

सोच तो यही है सखी जासों सकुचात मन,

मोरे गोरे अंग श्याम रंग चढ़ो जात है।

(3)

बांसुरी जो कृष्ण की है सप्त स्वर वाली बनी,

पांच ज्ञानेन्द्रियों को घेरि घेरि लेत है।

नाद अनहद फूट फैल जात आधी रात,

सुधि भूल जात मन झकझोर देति है।

टूट मरजाद जात, तन मन खिंचे जात,

सागर अथाह कुल कानि बोर देति है।

ये है प्रेम डोर मृत्यु लोक बीच खींच खींच,

भक्त भगवान एक साथ बांध देति है।

(4)

सभी सरितायें शुभ्र स्वच्छ जल से हैं भरी,

काहे भानुजा को नीर दिपे कारो कारो है।

या में है असंख्य पुण्डरीक चंचरीक तहां,

गूंज रहे कालिमा कौ तिनकी पसारो है।

बावरी भई री सखी, सोचती नहीं है काहे,

नन्द कौ कुमार कृष्ण आवै मतवारो है।

नित्य नित्य न्हाय न्हाय, धोय धोय श्याम तन,

भानुजा कौ नीर कान्ह कारो कर डारो है।

(5)

ऐसो है जु कान्ह जाके हुये होत कारे सब,

कह दो उसे कि आये यहां द्वारे द्वारे ना।

रसना न नाम लेत करी पर जाये कहूं,

या सों कृष्ण नाम कोउ जीभ सों उचारे न।

भूलहूं न प्रीति कोउ कान्ह सो लगाये कहूं,

नेह चीकने सुचित्र श्याम को उतारै ना।

शांत स्वस्थ, शुभ्र नवनीत से पुनीत चित्त,

गोपियों के कान्ह कहूं कारे कर डारै ना।

(6)

जाते समय मथुरा को आवन कही थी वेग,

बाट जोहि जोहि भयो सांझ को सकारो है।

राधिका अराधिका अनन्य कान्ह की ही रही,

आज बिन कान्ह हिया बिरह ज्वाल जारो है।

कोयला से कारे परे जरे दिल सों निकल,

जमुना में पर्‌यो नीर दग्ध कारो छारो है।

व्यर्थ दोष सांवरे के शीश जिन लाखो सखि,

रधिका के आंसुओं सों नीर भयो खारो है।

(7)

तिरंगे की शान में

शीश कट के भलेहि आसमान में उड़ाहि,

अरि के समक्ष भूल सोंहु झुक पाये न।

क्रुधा सों पुकार बार बार मार मार कढ़े,

एक बार में हो पार आहि कह पावे ना।

रहें ना रतन धन धजी धजी उड़े तन,

आबरू वतन की पै दाग लग पाये ना

धरा धंस जाये, आसमान झुक जाये पै

ये तीन रंग का तिरंगा ध्वज झुक पाये ना।

(8)

तुलसी पर

राम औ रहीम पै झगड़ते जहानबीच,

होके निरभीक कौन राम गुण गावतो

कौन धौं निषाद और राम की मिठाई बता,

फैले महाभूत छुआ छूत को मिटावतो।

कौन देवभाषा के प्रपंच पंचड़ों सें खींच

राष्ट्र भाषा हिन्दी को सुआसन बिठावतो

हिन्दी की न कोउ चिन्दी चिन्दो ढूंढ़ पावतो

जो भूमि पै यहां न तुलसी सो संत आवतो।

(9)

' फूटी गगरी टूटी चूड़ी ' पर कुछ छन्द

पहिले ले मिट्टी कुम्हार ने पानी में गुंधवाई,

फिर काल चक्र जैसे चक्के पर रक्खी और घुमाई।

गढ़कर बर्तन रखे धूप में, खुले गगन उन्मुक्त पवन में

पुनः उन्हें चुनकर भट्टी में शुभ अग्नी परचाई।

छिति जल पावक गगन समीर,

पांचों तत्व मिलाये

तब जाकर मिट्टी के कच्चे ये भांड़े बन पाये

फिर उन पर अपनी रंग साजी करके प्रजापति ने

अपनी अपनी श्रेणी में ले जाकर सभी सजाए

अब बाजार हो गया शुरू लेने वाले भी आये

जिनने वे सारे के सारे ठोके और बजाये

कुछ का रंग रूप न भाया कुछ फूटे ही निकले

फिर भी उनके जैसे तैसे कुछ सौदे हो पाये

किन्तु देख अन्धेर मुझे थी बात बहुत ये अखरी,

जो आता वह ठोक पीट था, निरख रहा हर गगरी

इतना सस्ता मिट्टी का भांड़ा यों परखा जावे
किन्तु न परखे जीवन साथी ये अंधेरी नगरी

होते होते शाम गई बिक ले गई राधारानी
फिर बड़े सबेरें ले उनको निकलीं वे भरने को पानी
रंग बिरंगी चूनरि पहले दाहू कैसी गुइयां
या तुलसी की ग्राम बचूटी भोली अरू अनजानी

वहां बनावट नहीं तनिक थी, सब थीं भोली भली
चली जा रही खुली डगर पर वे हिरनी मतवाली
कुछ बातें करती इठलाती थीं, कुछ हंसती गाती
जैसे सभी नायिकायें हों कवी बिहारी वालीं।

सुक नासा दाड़िम दसनों पर नयना नीलम प्याले
कुंचित अलकें घेरे मुंह ज्यों विधु को बद्दल काले
सिंह ध्वनि गज गवनि हंस गति से सुन्दरियां जातीं
कुछ सुंदर कंधों कुछ कूल्हों पर थीं घड़े संभाले।

(10)

पन्द्रह अगस्त पर

आज इसी पन्द्रह अगस्त को हम सब ठाने ठान
सुखी हो अपना हिन्दुस्तान
है परिपूर्ण दिशयें तम से
मानव मन परिपूर्ण सितम से
आज सितम के गम को मानव
टाल रहा है सिर्फ कलम से
अब न कलम भाषण धमकी से
होगा कोई काम धरा पर
नामुमकिन मुमकिन हो सकता,
अगर करेंगे यत्न लगन से
सिर्फ लगन से ही हो सकता जग में,
स्वर्ग विहान, (सुखी . . . .)

श्रमिक फोड़ते पत्थर जिनके

दाना एक न पेट में

धूप चमकती रात ठिठुरती

बीती जिनकी खेत में

बच्चे बिलख रहे हैं इनके बिन रोटी,

बिन कपड़ों,

फिर भी मतवाले धनवाले

आये न अब तक चैत में

हो प्रयत्न खुश हों सब जिससे

ये मजदूर किसान

॥सुखी हो . . . . .

॥।॥

सुदामा चरित

घनघोर भई वर्षा तेहि रोज, तवै हम दोउ जने बिलगाने

और कहूं हम बैठ रहे घनश्याम लगे कहुं और ठिकाने

भींज गये सितियाय गये तब मौन गहो कछु वा बरसाने

आन के कान्ह कही कछु देहु दियौ गुरूमातु जो खांय के लाने

॥2॥

द्वापर युग निज पुर बसें विप्र एक अति दीन

शीलवान गुणवान अति प्रभु सेवा में लीन

प्रभु सेवा में लीन परम संतोषी दोऊ

सबको निज सम लखें परायो जिन्हें न कोऊ

जो भिक्षा में मिलै रहें निर्भर ताही पर

गृहणी परम प्रवीण बसें दोउ ब्राह्मण द्वापर

मूल्यांकन:

श्री गिरजादयाल सक्सेना की उपर्युक्त रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि हिन्दी काव्य के ये प्रतिभासंपन्न कवि हैं इनकी रचनाओं में कहीं काव्य दोष दिखाई नहीं देता। सुन्दर

शब्दों का चयन, यत्र तत्र अलंकारों का प्रयोग, तथा बोधगम्य, लालित्यपूर्ण शैली में लिखी गई इनकी रचनायें मन को छू लेती हैं। हिन्दी भाषा पर कवि का अच्छा अधिकार है। इनके द्वारा हिन्दी काव्य साहित्य को किया जा रहा योगदान सराहनीय है।

(8) डा0 जमीलउद्दीन ' जमील ':

जीवन परिचय:

इनका जन्म मुहाल फरसौलियाना राठ में 10 अक्टूबर 1946 में हुआ था। इनके पिता का नाम सैयद मनसब बली तथा माता का नाम फरोग जहां है। इन्होंने एम0ए0 तक शिक्षा प्राप्त कर उर्दू में पी- एच0 डी0 की उपाधि प्राप्त की है। वर्तमान समय में आप नरेन्द्रदेव जू0हा0 स्कूल राठ में प्रधानाध्यापक पद पर कार्यरत हैं। देश के विभिन्न स्थानों पर जाकर आपने कविता पाठ किया है। बुन्देलखण्ड के ये प्रसिद्ध शायर/कवि हैं।

काव्य कृतियां:

डा0 जमीलउद्दीन 'जमील' का हिन्दी व उर्दू दोनों पर ही समान अधिकार है। उर्दू में जहां इन्होंने उच्चकोटि की गजलें लिखी हैं वहीं हिन्दी में सुन्दर गीत व छन्दों की रचना भी की है। इनके द्वारा लिखी गई पुस्तक खुलके पैगम्बरी (सन् 1994) सागर विश्वविद्यालय के एम0ए0 प्रथम भाग के पाठ्यक्रम में सम्मिलित की गई है। उर्दू पर सन् 1992 में आपने शोध कार्य किया जिस पर इन्हें पी-एच0 डी0 की उपाधि प्राप्त हुई है। हिन्दी में लगभग 30 गीत इन्होंने अब तक लिखे हैं जो अत्यन्त उत्कृष्ट हैं उर्दू में लगभग 75 गजलें इन्होंने लिखी हैं उर्दू में इन्होंने धनाक्षरी छन्दों की रचना की है जो सम्भवतः देश में इनका पहला सफल प्रयोग है इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

उर्दू धनाक्षरी छन्दों के कुछ नमूने देखिये :-

(1)

हुसने पयाम लिये लुतफे करार लिये,

जामों का सुरूर लिये मस्ती का जोर भी

अब्रे सियाह लिये जलवे हजार लिये

मोती की चमक लिये अशकों की डोर भी

तरजे अदा से नई दिल को लुभाने वाला

वहीं पे कयाम करे मगरूर चोर भी

आंखों की किताब तेरी ऐसे भी वरक लिये

बूढ़े भी उन्हीं को पढ़ें पढ़ते किशोर भी

(2)

कत्लो फसाद अभी थम तो गये हैं यहां

खतरा बमों का नया फिर भी बहाल है

इनको गुरूर वही उनको जुनून वही

झुकना किसी का यहां अमरे मुहाल है

मैचों में वफायें लिये गैरों की उछल रहे

अपने वतन का ये हुसेन जबाल है

धरती को पूजे वही धरती को लूटे वही

धरती जला के वही धरती का लाल है।

हिन्दी गजल का एक सुन्दर नमूना देखिये

(3)

रिमझिम रिमझिम जल बरसाये रात गये बरसात का मौसम

भूली बिसरी यादें लाये रात गये बरसात का मौसम

धरती की अब प्यास बुझाये रात गये बरसात का मौसम

तन में मन में आग लगाये रात गये बरसात का मौसम

दूर कहीं दीवार गिरी है अपनी भी कमजोर खड़ी है

पल पल भय का भूत जगाये रात गये बरसात का मौसम

हाये गरीबी की लाचारी भूखी सोती रामदुलारी

दुखियों के संग नीर बहाये रात गये बरसात का मौसम

आओ जमील अब लिख ही डालें कुछ अपनी कुछ औरों की

आंखों से जब नींद उड़ाये रात गये बरसात का मौसम

बुन्देली गीत

वर्षा ऋतु पर नदी में आयी भीषण बाढ़ और उससे हुई क्षति का सजीव चित्रण इस गीत के माध्यम से कवि ने किया है।

नदिया तोरी जवानी जवानी तोरी जवानी

गांव गांव के अटा अटारी कर गई पानी पानी

डूब गये सब ताल तलइयां डूब गई सब खेती

नदिया तोरे कारन धरती अंखियां भर भर देती

डूब गये हैं बैला बछवा डूबी हरी किसानी

नदिया तोरी . . . .

एइ फसल में बाढ़ी दैने एइ फसल में करजा

एइ फसल में सींच तकाबी एइ फसल में हरजा

कटहै कैसें साल जा विधना एकइ हूक समानी

नदिया तोरी. . . . .

डूब गये सब लोटा खुरवा डूब गये सब गहने

विपदा ऐसी आन पड़े के टूट गये सब सपने

अबकी गौनो और न हूहै ऐसी सौत रिसानी।

नदिया तोरी. . . . .

खड़ी बोली गीत

भाषा और सूबे को लेकर उलझे हैं नादान

बनेगा कैसे हिन्दुस्तान हमारा भावी हिन्दुस्तान

जनता से बाबू है लेता बाबू से अधिकारी

अधिकारी से नेता लेता सबकी है लाचारी

रक्षक ही जब बन बैठा हो भक्षक और शैतान

बनेगा कैसे हिन्दुस्तान. . . . .

कत्ल कहीं हो जाय किसी का कहीं पकड़ हो जाती

कहीं कहीं तो सरेशाम से हैवत हरसू छाती

बलात्कार को मिला हुआ है पेपर में स्थान

(1)

जब सें सूरत लखी तुम्हारी, चैन परै ना प्यारी।
बिछुरन भओ तुम्हारो तब सें बिसरे नहीं बिसारी।
सब मेवा मिष्ठान त्याग दये हमने धरे अगारी।
शंकर पिवा इश्क को पानी बुझवा प्यास हमारी।

(2)

दहेज की कुप्रथा पर एक सुन्दर फाग देखियेः-

दोहा: लेन देन की प्रथा सबमें बुरी दहेज।
सोच समझ कर दूर तक कर लीजे परहेज।

टेक: जग में बुरी रीति है भारी देख लेव नर नारी।

छन्द: घर में पास नहीं गर पैसा घर वर चाहो मिलै न जैसा
कह कर पल्टो बाढ़ै रहसा हो बदनामी
लडकी विदा दई करवाय ससुरे होवे नहीं निभाव
ताना सास ननद दे ताह घर का स्वामी।

उड़न: थोड़ी थोड़ी सी बात में करै छिनरियां दारी।
बहू हमारी नेक ना, देख लेव नर नारी।

टेक: महादेव यह चाल ठीक ना तजिये सोच विचारी।

वृक्षारोपण पर कवि की एक फाग देखियेः-

(3)

टेक: वृक्षारोपण करिये भाई, ये सबको सुखदाई।

छन्द: इनको लगाव, हो जहां कटाव, जल का भराव इनसे रोको।
खेतन की मेड़, दो लगा पेड़, हो साल डेढ़, छटिये इनको।

दोहा: कृषक कार्य के हैं ये पौधा, इनको देव लगाई।
समय समय पर काम चलाहैं, हैं सबको सुखदाई।

उड़ान: पर उपकारी सक्से बिरखा महादेव लख गाई।

छन्द: सन्तन समान फल देत आन, बूढ़े ज्वान सब कोई खाते।
जड़ पात काम आवे तमाम, ये रोक अनेकन रूकवाते।
इन बिन हार गांव ऊजर सो लागे बुरो दिखाई।
बीस सूत्रीय कार्यक्रम, यह महादेव कथ गाई।

भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व0 इन्दिरा गांधी की हत्या से ये बहुत आहत हुये। उस समय इनके द्वारा रचित ' गारी व ख्याल इन्दिरा ' प्रकाशित पुस्तक की एक रचना नीचे दी जा रही है।

﴾4﴿

टेक: कार्तिक शुक्ल सप्तमी के दिन इन्द्रिा जी गईं हैं मारी।

छन्द: जानों सन उन्नीस चौरासी, इकतीस अक्टूबर प्रकाशी, बुध दिन भवन तजो सुख रासी।

उड़ान: तीन सिक्ख अंगरक्षक जिनके धोखा कीनो है भारी।

छन्द: कार्य भवन को जातन वारी उन सामें से गोली मारी, धरनी में गिर गई बिचारी।

उड़ान: धारा बहन खून की लागी, वस्त्र भींज भींजी सारी।

छन्द: ऊपर गार्ड रक्षक आ भाई उसने दो को मार गिराइ इक को दिये जेल पहंचाई।

उड़ान: आर0के0 धवन साथ इन्द्रिा के लखी व्यवस्था यह सारी।

छन्द: ले गये सचिव डाक्टर पास कीनी दवा खास ही खास तब भी लौटी नहीं स्वांस।

उड़ान: गोली आठ देह से काढ़ीं देख रये सब अधिकारी।

छन्द: सुनकर मृत्यु सबन दुख पायो, डूबे शोक सिन्धु बहुतायो सुनते कोई कोई प्रान गंवायो।

उड़ान: कइयन के तौ खून खौल रहे मचा रये मारा मारी।

छन्द: सुन कई जगह सिक्ख संहारे कइयक घर जाकर के जारे टाटर बाटर ला दये सारे।

उड़ान: हिंसा की आंधी सी आई एकइ एकां भई जारी।

छन्द: राजू जी की ना ये इच्छा उनने कीनी कड़ी स्वरक्षा दीनी सबको ये ही शिक्षा।

उडान: पर हिंसा न होय किसी की कहत यही बारम्बारी।

छन्द: पिछली सब ये ख्याल बिसारो फूट न आपस में अब डारो रहिये प्रेम से मिल के यारो।

उड़ान: महादेव आगे की सोचो बैर भाव दीजे टारी।

मूल्यांकन:

श्री महादेव प्रसाद जी की उक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि यह एक अच्छे कवि हैं। फागों के अतिरिक्त गारी, ख्याल एवं कवित्त भी इन्होंने लिखे हैं। बुन्देली के सरल शब्दों को भावपूर्ण ढंग से इन्होंने अपनी रचनाओं में पिरोने का प्रयास किया है। काव्य क्षेत्र में कवि का यह प्रयास सराहनीय है।

(10) श्री स्वामी ब्रह्मानन्दः

बुन्देलखण्ड मालवीय स्वामी ब्रह्मानन्द जी का जन्म वि0सं0 1951 के मार्गशीष शुक्ल सप्तमी को तदनुसार 4 दिसंबर 1894 को ग्राम बरहरा(राठ-हमीरपुर) में एक लोधी परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मातादीन उर्फ लाड़ले महतों तथा माता का नाम श्रीमती यशोदा देवी था। इनका बचपन का नाम शिवदयाल था। नौ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह ग्राम अमूँद की श्रीमती राधाबाई से हुआ। जिनसे बाद में एक पुत्री श्यामकुंवर एवं पुत्र बृजलाल पैदा हुए। संवत 1975 में इन्होंने सन्यास ग्रहण कर अपना नाम ब्रह्मानन्द रख लिया। ये प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी रहे। इनके द्वारा स्थापित ब्रह्मानन्द इण्टर कालेज एवं ब्रह्मानन्द महाविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश के ख्यातिप्राप्त शिक्षा संस्थान हैं। ये संसद सदस्य भी रहे, सन् 1984 को 90 वर्ष की अवस्था मे इनकी मृत्यु हुई। पूज्य स्वामी जी के जीवन दर्शन की सूक्ष्म झलक निम्न प्रकार है-

(1) ग्राम बरहरा, जिला हमीरपुर के एक कृषक परिवार में 4 दिसंबर 1894 को जन्म।

(2) तेईस वर्ष की अवस्था में भरी पूरी गृहस्थी का परित्याग कर सन्यास ग्रहण।

(3) स्वाधीनता संग्राम में महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू एवं गणेश शंकर विद्यार्थी से निकट का संबंध और उनके साथ 'नमक कानून तोड़ने' (1930) सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1932) भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) रियासतों के मुक्ति आन्दोलन (1947) तथा गौहत्या विरोध (1966) में जेल यात्रायें कीं।

(4) राठ में शिक्षा संस्थाओं-ब्रह्मानन्द इण्टर कालेज (1938) ब्रह्मानन्द संस्कृत महाविद्यालय (1943) तथा ब्रह्मानन्द महाविद्यालय (1960) की स्थापना एवं शिक्षा प्रसार के लिये अन्य कई विद्यालयों की स्थापना के प्रेरक और सहायक।

(5) लोक सभा क्षेत्र हमीरपुर से सांसद (1967 से 1977) तक प्रधान मंत्री इन्दिरा जी व राष्ट्रपति वी0वी0 गिरि के प्रमुख सहयोगी।

(6) सन्यास ग्रहण कर आजीवन द्रव्य हाथ से नहीं छुआ और न कभी कोई निज की संपत्ति रखी।

(7) कृषक राष्ट्र की सुख समृद्धि की जड़ें हैं' के पक्षधर।

(8) पूज्य स्वामी जी के सम्मान में तीन अभिनन्दन ग्रन्थों एवं उनके द्वारा रचित ब्रह्मानन्द तरंगिणी का प्रकाशन।

(9) 13 सितंवर 1984 को पूज्य स्वामी जी मानवों की दुनिया से अनश्वर की ओर प्रस्थान कर गये।

काव्य कृतियां:

स्वामी ब्रह्मानन्द प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, समाज सुधारक एवं कई विद्यालयों के संस्थापक होने के साथ साथ अच्छे कवि भी थे। ब्रह्मानन्द तरंगिणी नाम से उनकी रचनाओं का संग्रह प्रकाशित हो चुका है जिसकी कुछ रचनायें यहां दी जा रही हैं।

(1)

कैसे विनय करूं प्रभु तोरी।

सन्तन कौ संग मोहिं न भावै, पापन में रूचि मोरी।
थोरी करौं बहुत मैं गावौं बात करौं मुंह जोरी।
ब्रह्म ज्ञान उपदेश सुनावौं अन्तस तृष्णा तोरी।
पुजवावे में प्रीति बहुत है पूजन से है थोरी।
जो काहू की सुनों बड़ाई मन में उठै मरोरी।
पूजन भजन करौं दिखरावा, मन करता भड़फोरी।
ब्रह्मानन्द प्रभू मति कौं फेरौ सब में सकती तोरी।

(2)

मादक द्रव्य निषेध

गांजा भांग तमाखू अरू चरस शराब
जो इनका सेवन करै सो नट होत खराब।
सो नर होत खराब करै तन धन का नासा,
औरन देत सिखाय रहै जो तिनके वासा।
कहते ब्रह्मानन्द गुनी जन इनसे भाजा,
सुखी रहै जो तजै तमाखू भांग अरू गांजा।

(3)

बाल विवाह

हैरानी है बालकन, ब्याहैं देश विहाल।
कल विद्या सब खो गई, बैठे सब कंकाल।
बैठे सब कंकाल दीनता आई भारी,
तीन बरस के माह बुढ़ापा हो गयाजारी।
कहते ब्रह्मानन्द सत्यसंतन की बानी
त्यागौ बाल विवाह मिटे सबकी हैरानी।

॥4॥

स्वदेश प्रेम

देशी वस्त्रन पहिनिये बचै धर्म अरू दाम।

चलने में बहु दिन चलै शीत लगै न घाम।

शीत लगै न घाम देश का खद्दर पावन,

बचै तुम्हारी लाज मान ले मोर सिखावन।

कहते ब्रह्मानन्द वस्त्र तजौ विदेशी

भजौ कृष्ण गोपाल धार लेव बानौ देशी।

॥5॥

मोह का बंधन

मोह की कांस कठिन दैया।

मोह की फांसी धर्म की नाशी जा हत्यारिन है भैया।

झूठ बुलावै नाम छुटावै नाना नाच नचा भैया।

जन्म कराय प्रदेश भ्रमावै जा कंकालिन है भैया

ब्रह्म जो ध्यावै तौ बच जावै नाहर प्राण लेय भैया।

॥6॥

पाप पुण्य की पहिचान

जानौं सोई पुण्य है करने में हरषाय ।

शुभ करनी सुनें उर आनन्द अधिकाय ।

उर आनन्द अधिकाय, पुण्य है सुख कौ कारन।

जग में कीरत होय करम शुभ करै जो धारन।

कहते ब्रह्मानन्द अन्त में हरि उर आनौं।

पुण्य करौ नर यहां दोऊ लोकन सुख जानौ।

॥7॥

मुखिया नेता

मुखिया ताकौ जानिये जो कोई पाले नीत।

पक्ष करै सत पक्षकौ, होवे ना भयभीत।

होवे ना भयभीत सत्य को जान शिरोमन।

लालच को कर दूर करम में अरपै तन धन।

मुख सम ब्रह्मानन्द अंग पोखै कर सुखिया।

दुखिया रहै न कोय, होयजो मुख सौं मुखिया।

(4)

पहिचान

मात वही जन में हरि भक्त जो,

तात वही जो सुतान पढ़ावै

भ्रात वहीं जो बढ़ावत प्रेम को,

घोर विपत्ति से आन बचावै।

साथी सोई दुख में जब साथ दे,

नित्य सुपंथ चलै सु चलावै।

ब्रह्म जो ज्ञान को देवै वही गुरू,

शिष्य को लै भव पार लगावै।

मूल्यांकन:

इस प्रकार ब्रह्मानन्द तरंगिणी से उद्धृत उपरोक्त रचनायें ये प्रमाणित करती हैं कि संत हृदय स्वामी ब्रह्मानन्द एक अच्छे कवि भी थे। समाज में फैली हुई कुरीतियों जैसे नशा, बाल विवाह दहेज इत्यादि पर उन्होंने अपनी कलम जितनी कुशलता से चलाई है भक्ति भावपूर्ण रचनायें भी उतनी ही कलात्मकता से सृजित की हैं कबीर के समान मस्त स्वभाव के स्वामी ब्रह्मानन्द की हिन्दी साहित्य को ब्रह्मानन्द तरंगिणी के रूप में कविता संग्रह की देन अतुलनीय है।

(11) डा0 हरगोविन्द सिंह:

परिचय:

साहित्य, मनीषी, बुन्देली भाषा और साहित्य के मूर्धन्य विद्वान डा0 हरगोविन्द का जन्म श्रावण कृष्ण 14 सोमवार सं0 1992 वि0 (29 जुलाई 1935 ई0) में बाजा सिंह की इटैलिया (हमीरपुर) उ0प्र0 में हुआ था। इनके पिता श्री राजधर सिंह स्वयं अध्यात्म एवं साहित्य प्रेमी थे। इन्होंने किशोरावस्था से ही कविता सृजन प्रारंभ कर दिया था। इनकी पन्द्रह सोलह वर्ष की अवस्था में लिखी गई मानक हिन्दी रचनायें प्रसिद्ध आध्यात्मिक पत्रिका 'अखण्ड ज्योति' में प्रकाशित होती रहीं।

सन् 1956 से इन्होंने बुन्देली में लेखन प्रारंभ किया और प्रथम काव्य कृति 'फाग मंजरी' सन् 1959 में प्रकाशित हुई। उपन्यास सम्राट बाबू वृन्दावनलाल वर्मा तथा राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने इस कृति की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। सन् 1966 में इनके द्वारा घाघ की शैली में रचित बुन्देली सूक्तियों का संग्रह 'छक्का पचीसी' प्रकाशित हुआ। सन् 1967 में इन्होने बुन्देली शोध तथा साहित्य सृजन को प्रोत्साहन देने के उददेश्य से 'बुन्देली साहित्य परिषद' की स्थापना की।

इन्होंने डा0 वासुदेव शरण अग्रवाल तथा डा0 मुंशीराम शर्मा 'सोम' के निर्देशन में बुन्देली शब्दावली पर वृहद शोधग्रन्थ पी0एच0डी0 उपाधि (1970) के लिये लिखा। इस कृति को डा0 धीरेन्द्र वर्मा तथा डा0 उदयनारायण तिवारी जैसे मूर्धन्य भाषाविदों ने डी0लिट के स्तर का घोषित किया।

सन् 1980 में इनका काव्य संकलन 'पुष्पांजलि' प्रकाशित हुआ। इसका दो तिहाई भाग मानक हिन्दी तथा एक तिहाई भाग शुद्ध बुन्देली रचनाओं का है इनके द्वारा रचित 'सदवाक्य मंजरी' सन् 1973 में प्रकाशित हुई। युग निर्माण योजना के अंतर्गत चलरहे विचार क्रान्ति अभियान में इनके सद्वाक्यों का भरपूर उपयोग हुआ। बुन्देली संस्कार गीत (सम्पादित) तथा बुन्देली लोक भाषा और साहित्य की विधि (निबंध संग्रह) इनकी अप्रकाशित कृतियां हैं। ये सन् 1956 से ही आकाशवाणी से जुडे रहे किंतु कवि सम्मेलनों के मंच से प्रायः अलग ही रहे। इन्होने बुन्देली में कविता नाटक रूपक, कहानी, वार्ता आदि लगभग सभी विधाओं में सामग्री दी है।

उ0प्र0 हिन्दी संस्थान ने बुन्देली की समग्र सेवा के लिये इन्हें सन् 1982 के 'मैथिलीशरण गुप्त पुरूस्कार' से सम्मानित किया। इन्होने सन् 1989 में प्रकाशित बुन्देली काव्य पुस्तक का सम्पादन किया। यह पुस्तक बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी के बी0ए0 तृतीय वर्ष के एक प्रश्न पत्र के लिये मान्य है।

सन् 1980 में एक असाध्य व्याधि से संघर्ष करते हुये रूग्णावस्था में भी पचपन वर्ष की उम्र में 'सद विचार सतसई' नामक कृति की रचना की। बुन्देली भाषा में रचित यह सतसई एक अमूल्य निधि है।

डा0 सिंह ब्रह्मानन्द महाविद्यालय राठ (हमीरपुर) उ0प्र0 में हिन्दी विभागाध्यक्ष पद पर सन् 1969 से मृत्यु तक कार्यरत रहे। रूग्णावस्था में भी असीम कष्ट को झेलते हुये इनकी लेखनी चलती रही। इनका निधन 20 जनवरी सन् 1991 में छप्पन वर्ष की उम्र में हुआ।

इनके पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह प्रवक्ता ब्रह्मानन्द महाविद्यालय राठ (हमीरपुर) उ0प्र0 के पास इनकी प्रकाशित एवं अप्रकाशित साहित्य सम्पदा सुरक्षित है।

काव्य कृतियां:

'पुष्पांजलि' काव्य कृति के कुछ अंश

(1)

पात्रता का अभाव

सृष्टि के हर अंग पर सम दृष्टि है पालक पिता की।
हो रही अनुदान वर्षा, है कमी बस पात्रता की।
रात दिन सुरभित पवन जब एक सा बहता रहा है
कर झरोखे बन्द तब भी कष्ट जो सहता रहा है।
कह रहा वह वायु हमको शुद्ध अब मिलती नहीं है।
दे सके जो शान्ति अब ऐसी हवा चलती नहीं है।
ठीक कर लें शीघ्र ऐसी भूल अपनी मान्यता की।
हो रही अनुदान वर्षा है कमी बस पात्रता की।
सूर्य की किरणें चलीं जब विश्व का तम दूर करने
चेतना देकर नयी आलस्य का अभिशाप हरने।
खिल उठें पंकज कुमुद ने किन्तु अपना मुख छिपाया।
अंध कोटर प्रेमियों को ज्योति का वैभव न आया।
जो छिपे उनके लिये क्या त्रुटि अरूण की दिव्यता की।
हो रही अनुदान वर्षा है कमी बस पात्रता की।
हो गयी जल वृष्टि इतनी भर गये सरिता सरोवर।
भर गये वे क्षेत्र जिनमें थी ग्रहण क्षमता कहीं पर।
प्यास निज सामर्थ्य के अनुसार जीवों ने बुझायी।
पर अधोमुख पात्र में लघु बूंद भी आने न पायी।

पूर्ति कैसे हो सकेगी इस अभागी रिक्तता की।

हो रही अनुदान वर्षा है कमी बस पात्रता की।

चाहती है चिन्मयी मां वक्ष का पीयूष देकर

पुष्ट कर दे लाड़लों को प्राण में देवत्व भरकर।

किन्तु आकर्षक खिलौने छोड़ना शिशु को न भाता

बस इसी से जुड़ न पाता शक्ति से अक्षुण्ण नाता।

कामना के कष्टकों ने राह रोकी पूर्णता की।

हो रही अनुदान वर्षा है कमी बस पात्रता की।

(2)

अरे बावले

अरे बावले तू अपने ही मद में बैठा चूर है

इसीलिये तो परमेश्वर वह तुझसे कोसों दूर है।

अपनी चतुराई से तूने रचा कपट का जाल है।

नर-नारायण को छलकर तू जोड़ रहा धन माल है।

मन्दिर में भी सौदा करता आदत से मजबूर है।

इसीलिये तो परमेश्वर वह तुझसे कोसों दूर है।

घट घटवासी की आंखों में झोंक रहा तू धूल है।

बुद्धिमान कहलाता फिर भी करता भद्दी भूल है।

तेरी छोटी सी काया यह माया से भरपूर है।

इसीलिये तो परमेश्वर वह तुझसे कोसों दूर है।

सींच रहे ईश्वर की बगिया जो अपने श्रम नीर से

कभी न तेरा हृदय पसीजा उनकी गहरी पीर से।

विषय वासना में ही फूंकी तूने जीवन मूर है।

इसीलिये तो परमेश्वर वह तुझसे कोसों दूर है।

उसे न वश में कर सकता तू, सोने के भण्डार से।

वह तो बिना मोल विकता है सदाचार के प्यार से।

जुड़ा न अब तक सीधा नाता कोई कमी जरूर है।

इसीलिये तो परमेश्वर वह तुझसे कोसों दूर है।

॥3॥

अमूल्य निधि

रूप कोई पा गया, कोई खजाना

बल किसी ने देह का ही श्रेष्ठ माना

किंतु मां ने दी जिसे सदबुद्धि केवल

साथ उसके चल दिया करता जमाना।

॥4॥

अधोगति

आदमी पीयूष के गुण गा रहा है।

किंतु चुपके से जहर ही खा रहा है।

खूब पंचामृत पिलाओ प्रवचनों का

कण्ठ से नीचे कहीं पर जा रहा है।

॥5॥

ऊर्ध्वगति

आदमी में खामियां हैं यह सभी को ज्ञात है।

कह दिया विज्ञान ने यह बन्दरों की जात है

किन्तु जब भी पंक से ऊपर उठा कोई कमल

कह उठा कवि का हृदय क्या बात है, क्या बात है।

॥6॥

कवि के प्रति

कवि तुम रच दो ऐसे गीत।

गूंज उठे जन जन की भाषा

जागे नवयुग की अभिलाषा

अखिल सृष्टि के संघर्षों में लिख दो तुम मानव की जीत

फैली कुण्ठाओं की ज्वाला

कौन पिये विष का प्याला

करनी होगी साधक को ही शिव की परम्परा अभिनीत

भटक रही कितनी प्रतिभायें।

बिखर चुकी अगणित उल्काएं।

जीवन सही दिशा पा जाये मुखरित कर दो वह संगीत

तपकर धरती पर छा जाओ

ऐसी रसधारा बरसाओ।

पुण्य पंथ के सारे कण्टक गलकर बन जायें नवनीत

कवि तुम रच दो ऐसे गीत।

(7)

कुसुम कुछ उगाओ

कमी कण्टकों की नहीं इस जगत में

अगर हो सके तो कुसुम कुछ उगाओ।

सरल है यहां धार के साथ बहना

फिसलना बहकना बहुत ही सुगम है

चरणरक्तरंजित हुये हैं प्रगति के

शिखर के लिये साधना का नियम है

सघन हो रही कालिमा जब चतुर्दिक

अगर बन सके तो दिये कुछ जलाओ।

घृणा और विद्वेष की अग्नि पाकर

बहुत जल चुकीं चेतना की चितायें

घुटन से भरी कोठरी जिन्दगी की

सिसकती विकल त्रस्त संवेदनायें।

जहां हर लहर में जहर घुल रहा है

अगर बन सके तो सुधा कुछ पिलाओ।

उदर और प्रजनन चरम लक्ष्य लेकर

सहस्त्रों यहां कीट कृमि पल रहे हैं

बदलता जिन्हें वन्य पशु को मनुष में

वही शूल की नोक पर चल रहे हैं।

नरक तो अनाहूत आगे खड़ा है

कहीं स्वर्ग हो तो बसाकर दिखाओ।

(8)

(8)

मानव की प्रगति

बोलते आकाश धरती आज जिसकी जय
उस मनुज को शेर चीते का नहीं कुछ भय
किन्तु फिर किसके लियेहैं ढेर से आयुध
बस इसे निज वंश से ही है विकट संशय।

(9)

लेखनी की दिशा

हो गया यह देश अपने आप पर निर्भर
अब नहीं परमाणु-बम की शक्ति का भी डर
पर बचाओ लेखनी पथ भ्रष्ट होने से
अन्यथा हीरोशिमा बन जोगा हर घर

(10)

चन्दन है इस देश की माटी

चन्दन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है
हर नारी देवी की प्रतिमा बच्चा बच्चा राम है।

इसके सैनिक समर भूमि में गाया करते गीता
यहां खेत में हल के नीचे खेला करतीं सीता

जीवन का आदर्श यहां पर कर्मयोग निष्काम है।
हर नारी . . . . . .

यहां कर्म से भाग्य बदलती श्रम-निष्ठा कल्याणी
त्याग और तप की गाथायें गाती कविं की वाणी

ज्ञान यहां का गंगाजल सा निर्मल है अभिराम है
हर नारी. . . . .

रही सदा मानवतावादी इसकी संस्कृति धारा
मिलकर रहते मंदिर मस्जिद गिरजाघर गुरूद्वारा

सागर इसको अर्घ्य चढ़ता हिमगिरि करे प्रणाम है
हर नारी. . . . . . .

बुन्देली में कवि की कुछ सुन्दर रचनायें देखिये-

(1)

गुनी जनन से

या तौ सब कृपा तुम्हार आय।

मैंने कुछ डरे परे रोरा
जब गॉंस दये जाघन ताघन
तुम ओखों मन्दिर कहन लगे
थापो देवी को सिंहासन
यौ धुजा नारियल तुम जानों
मोरौ कन्नी कौ कार आय।

मैंने माटी में डार दये
कुछ रकत पसीना के दाने
तब चना चरपटा मुठी-मुठी
तुमने हीरा मुतियां माने
यौ घटी मुनाफा तुम जानो
मोरौ अंधरौ रूजगार आय।

जब गमई गॉंव की भासा में
मैंने अपनौ जी बहराओ
तुम सुख दुख के इन बोलन में
तुमने कुछ अपनो सौ पाओ
जेखों तुम कविता कहन लगे
वा हिरदै कै उलछार आय।

(2)

बुन्देलखाण्ड के किसान

हम किसान बुन्देलखाण्ड के हमें भूम या प्यारी है।
ई धरती पै जलम जुगन सें हमने काया गारी है।

जब औरन नें गंगाजल सें अपनी बगिया सींची जू
तब पाठिन की जर सें हमने स्रम की झिरें उलीची जू।

निज की विपदा तनक न सेंटी, हमें पिरानी पर पीरा।
अपने दोरैं मुरम बिछाई, बांट दये बाहर हीरा
मुरका डुभरी भोग लगा कै परसी सदा सुहारी है।
जब तुम ऊँघत बैठे बैठे खस की टटियन में प्यारे।
तब हम भेंटत लपट घाम खों दौर दौर कै उघरारे
साखन सें चल रही तपस्या तपा तपत हो गये कारे
अब हम ठाँड़े रहत पछारूं जहां जुरत गोरे नारे।
जहाँ कसौटी होत हिये की बस ह्वां जीत हमारी है।
खेतन में जुन बहुयें बिटियां मनभावन सावन गातीं।
समय परे पै बेई अवन्ती, दुर्गा, देवल बन जातीं
का चीन्हें इतिहास हमें यौ,टरकत पकरैं बैसाखी।
कितने पले हमाए दोरें जमुन नरमदा है साखी।
पिरलै की रातन में हमनें जियन जोत उजयारी है।
जिननें सोसण करो हमारो बची न उनकी रजधानी।
डेरा लद गये अंगरेजन के बिला गये राजा रानी।
काटत पेट दलाल आज जुन कारे धन के मतवारे।
आउन चहत काल की आंधी उड़ जैहें सब अब ढारे।
अपनी तौ हर नये भोर के स्वागत की तैयारी है।
हम किसान बुन्देलखाण्ड के हमें भूम या प्यारी है।

मूल्यांकन:

डा० हरगोविन्द सिंह की हिन्दी साहित्य को प्राप्त अमूल्य निधि जनपद हमीरपुर के लिये गौरव की बात है। इस साहित्य मनीषी ने मृत्यु शैया पर पड़े हुये भी 'सद्विचार सतसई' जैसी नीतोपदेश पुस्तक में जो नीति संबंधी दोहे लिखे हैं वे कवि के दार्शनिक चिन्तन एवं विद्वत्ता का अनूठा उदाहरण है। हिन्दी काव्य को शुद्ध परिमार्जित गंभीर एवं माधुर्यपूर्ण सरस रचनायें देने वाले मां सरस्वती के इस वरद्पुत्र को हिन्दी साहित्य में उचित स्थान मिलना चाहिये। बुन्देली के मर्मज्ञ इस कवि ने हिन्दी काव्य को उत्कृष्ट रचनायें देकर हमीरपुर जनपद को गौरवान्वित किया है।

⁅12⁆ पं0 रामसनेही तिवारीः

परिचयः

पं0 रामसनेही का जन्मसन् 1896 में ग्राम सरसई राठ में कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 गजाधर प्रसाद तिवारी था। इनकी विद्यालय की शिक्षा बहुत कम थी किन्तु स्वाध्याय द्वारा ये संस्कृत व हिन्दी के अच्छे विद्वान हो गये थे। देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी इन्होंने बुन्देलखण्ड केसरी दीवान शत्रुघ्न सिंह के साथ सक्रिय योगदान किया। सन 1930 में नमक सत्याग्रह में इनको दो वर्ष का कारावास भी हुआ। सन् 1932 में पुनः इन्हें छः माह की सजा दी गई। सार्वजनिक जीवन में विभिन्न सहकारी संस्थाओं से आप जुडे रहे। केन्द्रीय सहकारी बैंक महोबा के आप कई वर्ष तक डायरेक्टर रहे। इनकी मृत्यु 20 जनवरी सन् 1983 में हुई।

काव्य कृतियांः

पं0 रामसनेही जी अच्छे लेखक एवं कवि थे। इनकी लिखी दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। 1. नौने अर्जुन सिंह, 2. स्वतंत्रता का श्रीगणेश । इन्होंने उस समय की प्रचलित परंपरा के अनुसार फागें, ख्याल, लावनी व कवित्त एवं सवैया लिखे हैं। खड़ी बोली एवं बुन्देली दोनों में ही आपने रचनायें की हैं। उनकी रचनाओं के कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं।

निष्ठुर जमींदारी प्रथा पर इनकी एक सुन्दर रचना देखिये।

यो इतरैला कतराय गरीबन पेरै
यौ हंगत गली मा और गुरेरा हेरै।
यौ विना मजूरी दिन भर काम करावै।
छाती पै ठांढ़ो कोऊ न सुसता पावै।
अनहोनी बातें कहै जो हाथ रूकावै
कुछ पेट के लानें मांगत मारन धावै
यौ जी को जो पा जाय कभऊं न फेरै

यो हंगै गली मा और गुरेरा हेरै (1)
जो कोऊ ई के दस बीस रूपइया लेवै
तौ कभऊं चुके न चहे जनम भर देवै
कोऊ देत देत मर जाये यो समझा देवै
यो तौ चुकता हो गवो सवाई से वै
यो लैवे ब्याज कौ ब्याज और घर घेरै
यो हंगै गली मा और गुरेरा हेरै (2)
यो ठाढ़े बैठें घर से पकर बुलावै
जो तनिक देर लग जाय मुसक बंधवावै
बिन अनुवां बिना अठाव खीर बिन पावै
बुलवावैं थानेदार चलान करावै
खरिया खोला कर लेय हाय हर बेरै
यो हंगै गली मा और गुरेरा हेरै (3)
बिक गये बैलवा जिमी परी है परती
पैला भर भवौ न नाज बिजी न धरती
लरका बिटियां सब हाय अन्न बिन मरतीं
जब लगी उगाही बहुतऊ हाय अखरती
अब दीनबंधु बिन कौन दीन तन हेरै
यो हंगै गली मां और गुरेरां हेरै (4)
चौका बासन लीपा पोती घर भर की
चूलौ चकिया सुध घर की ढोर डंगर की
लें ढीमर और कहार नौनियां धर की
मालकिन मौज से परी खाट पै सर की
बीरा है मुख मा हाथ पेट पै फेरै
यो हंगे गली मां और गुरेरा हेरै (5)

उनकी कुछ फागों के सुन्दर नमूने नीचे दिये जा रहे हैं-

(1)

सूरत देखी लली तुम्हारी, पीर भई उर भारी
गोरो बदन गुलाब कली सो खिली उमर है बारी

उठत उमंग रंग की बिरियां विपत विधाता डारी
व्याकुल बलम जनम के रोगी, ढूंढ़ै बाप मतारी
रामसहाय तजत न तऊपै घन भारत की नारी।

(2)

धोती रंगी गुलाबी रंग मां लसे सांवरे अंग मां
अलका सेत सेठ टोपी है टहल चले हैं मग मां
रामदयाल रबूदा खरगी, सरसुतिया है संग मां
प्यारेलाल तिवारी जू के, भये न कोनऊं ढंग मां
रामसहांय जड़े जड़ियन में ज्यों के त्यों नंग नंग मां।

(3)

आई रितु बसन्त अब आली, प्रिय बिन बहुत बिहाली।
सैनजुही सजीवन सुमना, कुन्द तीर उर घाली।
कीर कुलिंग कुमार लटन पर, निरतत अति खुसयाली।
कोयल कूक हूक सी उर में मोर करेजे साली।
रामसहांय विकल ब्रज वनिता बिन देखें बनमाली।

एक सुन्दर मात्राहीन फाग का नमूना देखिये-

(4)

हर रट कष्ट नसत अस तन कर, रहत न रंच अघन कर।
रहत करत गण सकल अघन कर, जस गज रहत कटत डर
जस नर सरन तकत हट चरनन, तस तहं रक्ष करत हर
कहत सहय तज धन्य धन्य नट, रट हर रट हर रट हर।

मूल्यांकन:

पं0 रामसनेही तिवारी की उपरोक्त रचनाओं के अवलोकन से पता चलता है कि ये अच्छे कवि थे। भाषा पर इन्हें अच्छा अधिकार था। सामाजिक कुरीतियों पर सामयिक व्यंग रचनाओं के माध्यम से जहां एक ओर कवि ने उस समय की बुराईयों का चित्रण किया है तो दूसरी ओर श्रंगार एवं हास्य रसों पर भी अपनी लेखनी चलाई है। ऐतिहासिक महत्व की पुस्तक 'स्वतंत्रता का श्रीगणेश' लिखकर कवि ने अपने

एतिहासिक ज्ञान को प्रमाणित किया है । पं0 रामसनेही तिवारी की उक्त साहित्यिक सेवा जनपद हमीरपुर के लिये गौरव की बात है।

(3)

श्री उमाशंकर नगायच 'उमेश'

जीवन परिचय:

श्री उमाशंकर नगायच 'उमेश' का जन्म हमीरपुर जनपद के राठ नगर में दिनांक 4.7.1912 को हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 कुंजबिहारी लाल तथा माता का नाम श्रीमती जानकी देवी था। सरल उदार हृदय एवं मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी श्री उमाशंकर जी हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजी में मिडिल थे तथा इलाहाबाद हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण थे। इन्हें हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू का भी अच्छा ज्ञान था इस कारण उर्दू में भी ये रचनायें करते थे। हिन्दी कविताओं में उपनाम 'उमेश' तथा उर्दू गजलों में 'बख्शी' उपनाम से ये लिखते थे। इनकी मृत्यु सन् 1996 में हुई।

काव्य कृतियां:

इनका कोई कविता संकलन प्रकाशित नहीं है किन्तु इनकी कवितायें सुकवि पत्रिका (कानपुर) तथा वार्तायिन पत्र (नैनीताल) में प्रकाशित हुई है इन्होंने शताधिक गीत, छन्द, सवैया, मुक्तक आदि लिखे हैं। सामाजिक राजनैतिक, दार्शिनिक एवं भक्ति भाव से परिपूर्ण इनकी शताधिक रचनायें अप्रकाशित रूप में इनके परिवार वालों के पास उपलब्ध हैं। समस्या पूर्ति करने में आप निपुण थे। अवलोकनार्थ इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

कविता के महत्व पर प्रकाश डालती हुई कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं:-

दीनों के दुःख न काट सके
वह प्रभुताई प्रभुताई क्या ?
रण संकट में निष्क्रिय होकर
बैठे वह भाई भाई क्या ?
हो पक्षपात से पूर्ण हृदय
जिस न्यायी का वह न्यायी क्या ?

मृतकों में प्राण न फूंक सके,

वह कविताई कविताई क्या ?

मां सरस्वती के प्रति कवि अपने भावपूर्ण शब्दों को छन्द के रूप में इस प्रकार व्यक्त करता है:-

मुदित मराल पर लेके लीन बैठे तू ही,

कवि उर मध्य स्वर तान भर देती है।

कल्पना के लोक में सुभाव भर देती

और नव रस देके दुख शोक हर लेती है।

दाता भक्त शूरन को अमर बनाती और

पापी पामरों के घर देती कंठ रेती है।

सेवक उमेश की लगेगी क्यों न नैया पार

गह पतवार जब अम्ब आय खेती है।

गणतंत्र दिवस के पावन पर्व पर मां वीणापाणि का आह्वान कवि इस प्रकार करता है:-

कुंद के समान शुभ्र अंबर उड़ाती हुई

हंस पे विराजमान होती चली आओ मां

बीन के नवीन सुर सरगम गाती हुई

मानस के मोती कुंज बोती चली आओ मां

आनन की ओजमयी आभा झलकाती हुई

मन के कलुष कुल धोती चली आओ मां

आज गणतंत्र को मनाती हरसाती देश

भक्ति को जगाती हुई जोती चली आओ मां।

और कवि जब गीत लिखने बैठता है तो भी उसमें एक गहरी अनुभूति होती है:-

मुस्कुराये कुमुद रात रानी हंसी,

नृत्य करती धवल चांदनी आ गई

आज प्रमुदित धरा और प्रमुदित गगन

बह रहा मंद शीतल सुगंधित गगन

टकटकी चरन चकोरी लगाये है क्यों

तन की सुधि बुध जो खो हो रही है मगन

चांद प्रियतम है उससे लगी है लगन

मन को अनुरागिनी रागिनी भा गई

नृत्य करती धवल चांदनी आ गई।

कवि अपने जिस क्षेत्र का निवासी है उस पावन प्रिय भूमि बुन्देलखण्ड के प्रति कवि के भाव इस प्रकार हैं-

सूर्य चंद्र नक्षत्र उतारा करते जिसकी आरती
कालिन्दी जिसके कारे कजरारे केस संवारती
मेकल सुता नर्मदा जिसके पावन पांव पखारती
चारण चंबल टौंस कि जिसके सुयश गीत उच्चारती
केन धसान पहूज बेतवा जिसके धवल निशान हैं
हमने इसमें जन्म लिया इसलिये हमें अभिमान है।

(2)

कीरत सागर, बरूवा सागर, सागर बेलाताल हैं
पारीक्षा लहचूरा माताटीला डैम विशाल हैं
कामदगिरि कालिंजर यश वैभव से मालामाल हैं
छिपे हुये जाने कितने अनगिन गुदड़ी के लाल हैं
वीर भूमि है यहां सभी जन वीरों की संतान है
हमने इसमें जन्म लिया इसलिये हमें अभिमान है।

× × × × × × × × × × × ×

सभी धर्मो को समान आदर देने वाले कवि की गुरू नानक देव जी के प्रति आदर भक्ति देखिये:-

है अक्षर ईश्वर अजर अमर अविनाशी
सच मानो चेतन अमल सहज सुखरासी
है मायातीत पुनीत अमित बल धारी
यह पूर्ण परात्पर पुरूष सदा अविकारी
यह ग्रन्थ साव के अक्षर मणि मानिक हैं
सच पूछो तो बस यही गुरू नानक हैं
ये इनका पुण्य प्रभाव कि कलजुग हारा
बस रहते हैं यह जहां वहीं गुरूद्वारा
यह शब्द ब्रह्म शाश्वत हैं हरदम दिख हैं
जो करे प्रेम से पाठ नित्य वे सिख हैं
ये ग्रन्थ साव गुरू नानक अमृत सागर
भर ले जी चाहे जिसका अपनी गागर

ज्ञानी जन इस अमृत को पियें पिलायें

वाणी द्वारा इस अमृत को बरसायें

मैं करूं प्रेम से श्रद्धांजलि समर्पण

कर दो उमेश का तुम निर्मल दिल दर्पण।

बसंत पंचमी के पावन पर्व पर लिखी गई कवि की ये पंक्तियां पठनीय हैं:-

आज तुम्हारा गैंदे के फूलों से मां श्रंगार हुआ है

प्रेम सदन के प्रेम भाव से पावन प्रेम अपार हुआ है

आज बसंतपंचमी आई ले अपनी आभा बासन्ती

युगों युगों से चली आ रही मुदित मनाती मंजु जयंती

पुण्य पर्व है आज आज ही मां तेरा औतार हुआ है।

× × × × × × × × × × ×

आपात काल (इमरजेन्सी) जब देश पर लागू था उस समय जनता किस प्रकार भयभीत थी और उसके बाद नई सरकार आने पर जनता ने किस प्रकार खुशी व्यक्त की ये भाव कवि अपने गीत द्वारा इस प्रकार व्यक्त करता है:-

गावो खुशी के गीत रे,

तानाशाही खत्म हो गई न्याय नीति की जीत रे

गाव खुशी के गीत रे

हर्षित हैं जनता के जन जन

सुरभित हैं सारे बन उपवन

यहां वहां गुन्जरित हो रहा

मधुकर स्वर संगीत रे

गाव खुशी के गीत रे

खिजां गई अब मधु ऋतु आई

बजने मधुर लगी शहनाई

कूक उठी कोकिला कामिनी

पाकर मन का मीत रे

गाव खुशी के गीत रे

जनता के मुंह पर ताला था

जाने क्या होने वाला था

चमचागीरी बढ़ी चढ़ी थी

जनता थी भयभीत रे

गावो खुशी के गीत रे।

नसबंदी की आंधी आई

जिससे जनता थी घबराई

जोर जबरदस्ती की अब तो

दूर हुई अनरीत रे

गावो खुशी के गीत रे

और कवि की लेखनी जब विरह की ओर उन्मुख होती है तो गोपियों से कृष्ण के प्रति इस प्रकार कहलाती है-

क्यों ब्रज में आना भूल गये ?

मथुरा में जाके मोहन तुम क्यों ब्रज में आना भूल गये

चितचोर हमारे बोलो क्यों माखन का चुराना भूल गये

सब ग्वाल बाल संगी साथी तुम बिन व्याकुल हो रोते हैं

गोपाल कहाते हो फिर क्यों गौवों का चराना भूल गये

वो वंशीवट, वो जमुनावट, वो कुंजगली वो रास भली

जहां रास रचाते रहे वहां क्यों रास रचाना भूल गये।

× × × × × × × × × × ×

तुलसी जयन्ती पर गोस्वामी तुलसीदास जी के प्रति अपने उद्‌गार कवि इस प्रकार व्यक्त करता है:-

मानस के गुण जगत में जगमगात दिन रैन

गली गली सुन परत हैं तुलसी के मृदु वैन

तुलसी के मृदु बैन ऐन बन गये कहाने

उतरत बिलकुल सत्य जिन्हें सब कोऊ माने

कहें उमेश तुम जानकार थे कवि नस नस के

मानस सकृत मराल रचयिता जन मानस के

समस्यापूर्ति करने में भी कवि सिद्धहस्त हैं शताधिक समस्यापूर्तियां कवि ने की हैं । एक समस्यापूर्ति की झलक देखें जो अप्रैल 86 में 'वार्तायन' पत्र नैनीताल में प्रकाशित हुई थी।

समस्या-कजरारे

लघु बाल सजे घर सों निकसे

लघु बाल लसैं सिर पै घुंघरारे

मृग शावक से ब्रज बीथिन में,

बिचरें मनमोहन नंद दुलारे

मुरली अधरान धरें कर सों,

मकराकृत कुंडल कानन धारे

उनकी छवि को कवि को बरने,

बिनु काजर नैन लगैं कजरारे।

होली आती है, लोग होली के रंग में डूब जाते हैं , वातावरण रंगमय हो जाता है इस समय कवि गुनगुना उठता है:-

होली आई सभी नारि नर मस्त हो झूम के राग में फाग गाने लगे

आज विटपों पे बेलें लिपट सब गईं भौरे कलियों से जा गुनगुनाने लगे

बौरीं अमराइयां कूक कोकिल उठीं बुलबुलें भी बहारों से घुलमिल उठीं

बात की बात में रंग आने लगा दिल की मुरझाई थी वो कली खिल उठी

अब गगन में मगन चांद तारे हुये रवि दरश पा कमल मुस्कराने लगे।

कवि की लेखनी जब हास्य रस की ओर उन्मुख होती है तो कवि अपनी वृद्धावस्था पर ही व्यंग करता है-

'बुढ़ापा' (हास्य)

आया है वो जमाना सुनते हैं खरी खोटी

मिलती है मुश्किल से खाने को दाल रोटी

बच्चे पकड़ते बाल कोई खींचते चोटी

नातिन चिढ़ा रही है पांच साल की छोटी

जर के बगैर हालत दरसल हुई जिहालत

बच्चे खिला रहे हैं बब्बा को बग्घा गोटी

आराम से मुंह ढंक कर आये मजे में सोये

देखा बुढ़ापा यारो सोने की है कसौटी

खाया पिया उड़ाया मस्ती में खूब छानी

कहते हैं कहने वाले क्या खूब भांग घोंटी।

(2)

मेरी वाणी में अब वो रस नहीं है
जो कस पहिले था अब वो कस नहीं है
मैं पहिले क्या था और अब क्या हो गया हूं
बुढ़ापे पर किसी का बस नहीं है।

भगवान शंकर के प्रति अपना विश्वास एवं भक्ति कवि इस प्रकार व्यक्त करता है:-

'शिव पंचक'

परम प्रसिद्ध प्रण पूरन करैया भव
भय के हरैया दुख छन्द के नसैया हो
काशी के बसैया बर बैल के चढ़ैया कर,
डमरू बजैया चार फल के दिवैया हो
भावी के टरैया रंक रैया हो करैया भक्त
भाव परखैया नाथ नैया के खिवैया हो
बिगरी बनैया मेरी लाज के रखैया तुम्हीं
सखा और भैया तुम्हीं स्वामी बाप मैया हो।

'होलिका' (हास्य)

कहीं मिल जाये हमें काम कन्ट्रोल का
लायेंगे खरीद नयी साड़ी नया पोलका
बीबी को जो भी पसंद रंग आयेगा
हम उसी रंग में मनायेंगे होलिका

समस्या पूर्ति 'होलिका' (वार्तायन पत्र मार्च 93)

प्रतिवर्ष आती अति हर्ष उपजाती उत,
कर्ष को बढ़ाती मदमाती आती होलिका
रंग बरसाती है गुलाल लाती संग संग,
अंग अंग में अनंग रंग लाती होलिका
भंग की तरंग में विहंग बन जाता मन
भर भर जाम मधु के पिलाती होलिका
चलती बसंती वायु खेलती है वायु संग
युवा बाल वृद्धों में उमंग पाती होलिका

संसार की मौलिकता खोते जाने का कारण बताते हुये कवि अपनी एक अन्य कविता में कहता है-

मानव मानव की दूरी अब होती जाती है

इसीलिये मौलिकता जग की खोती जाती है

आज एकता का अलाप हम सभी यहां करते हैं

सद्भावों का है अभाव सब दुराभाव रखते हैं

तभी जमाने की मानवता रोती जाती है

इसीलिये . . . . . .

× × × × × × × × ×

मूल्यांकन:

श्री उमाशंकर नगायच 'उमेश' द्वारा हिन्दी काव्य की गई सेवा प्रशंसनीय है हिन्दी व उर्दू दोनों का ज्ञान रखने वाले कविवर की रचनायें सरल, सरस एवं भावपूर्ण है। यद्यपि कहीं कहीं काव्य दोष दिखाई देता है किन्तु भाव प्रधान नीतोपदेशक कवितायें हृदय को छू जाती हैं समस्या पूर्ति में कुशल कवि ने हिन्दी साहित्य की अपनी कविताओं से अमूल्य सेवा की है।

(14) श्री श्यामचरन यादव:

जीवन परिचय:

श्री श्यामचरन यादव का जन्म 24.1.52 को मुहाल मुगलपुरा, राठ में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री भैरवप्रसाद यादव था जो एक स्वतंत्रता सेनानी थे। इनकी मां का नाम श्रीमती रामदुलारी था । आपकी प्रारंभिक शिक्षा राठ में ही संपन्न हुई। इन्होंने बी0ए0 बी0एन0वी0 डिग्री कालेज राठ से तथा बी0टी0सी0 कुलपहाड़ से की। काफी समयतक ये राठ प्रा0पा0 मगरौठ में सहा0 अध्यापक पद पर कार्यरत रहे। इनको कविता करने की रूचि बाल्यकाल से ही थी इनकी प्रथम रचना अर्चना पत्रिका में उस समय प्रकाशित हुई जब से कक्षा-4 के विद्यार्थी थे इस रचना में नीति के दोहे थे। इसके बाद इन्हें अपने बहनोइ से सुनकर ख्याल लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई। कुछ समय बाद इन्होंने बुन्देली में रचनायें लिखना प्रारंभ किया। हिन्दी प्रसार समिति उ0प्र0 रूद्रावली बाराबंकी द्वारा वर्ष 1988 में इन्हें काव्य प्रतियोगिता में द्वादश

स्थान प्राप्त होने का प्रमाण पत्र दिया गया है। इनकी मृत्यु सन् 1993 में हुई।

प्रकाशित रचनायें:

इन्होंने लगभग आठ वर्ष तक आकाशवाणी छतरपुर में अपनी रचनायें पढ़ीं उन कार्यक्रमों में इन्होंने वीर रस व सामाजिक रचनायें प्रस्तुत कीं। इनके कुछ बुन्देली गीत विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं जिसमें बन्डा (म0प्र0) से प्रकाशित पत्रिका 'प्रतिबन्ध' वार्तायन पत्रिका नैनीताल प्रमुख हैं। शेष कोई उल्लेखनीय रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है।

अप्रकाशित:

श्री यादव जी छन्दों व सवैयों में राधा खण्ड काव्य लिख रहेथे जो अपूर्ण ही रह गया आपके लिखे हुये लगभग 200 गीत संग्रहीत हैं जो अभी तक अप्रकाशित हैं।

इनकी दो ओजपूर्ण रचनायें देखिये-

(1)

देश में घिरे हैं चहुं ओर फिर काले घन, जागो बन्धु उठो कस अपनी कमर लें।
सीमा पार रिपु ने उठाई आज आंख फिर, चलो एक और जीत उससे समर लें।
मां पै अंगुली उठाने वाले नीच शत्रुओं के, चलो मिल हम एक साथ काट सर लें।
अपने लिये जिये-मरें हों यों हजार बार,आओ राष्ट्र के लिये भी एक बार मर लें।

(2)

दुर्गावती लक्ष्मीबाई यहां हर बाला बने, जन्म शिवा,राणा,छत्रसाल घर-घर लें।
कर्मपथ पे सदा बढ़ें, हटें न पीछे हम, चाहे राह रोक काल बन विषधर लें।
मां की अभिलाष है कि मेरे लाल एक बार, शक्ति पुंज बन फिर विश्व में उभर लें।
अपने लिये जिये-मरे हो यों हजार बार, आओ राष्ट्र के लिये भी एक बार मर लें।

मूल्यांकन:

श्री स्व0 श्यामचरन यादव की ओजपूर्ण रचनायें पाठक के हृदय पर अपना प्रभाव छोड़ने में सफल हुई हैं। कवि के साहित्य के संरक्षण एवं प्रकाशन की आवश्यकता है जिसका गुरूतर दायित्व समाज सेवी संस्थाओं को उठाना चाहिये। कवि का योगदान अविस्मरणीय है।

(15) मुंशी राजधरः

जीवन परिचयः

मुंशी राजधर का जन्म सन 1912 ई0 में ग्राम अकौना (राठ-हमीरपुर) में कायस्थ कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री काशीप्रसाद तथा माता का नाम श्रीमती तुलसीरानी था। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती गुलाबरानी था। इन्होने हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त की थी एवं सरीला के महाराज के यहां दरोगा थे। इनकी ससुराल भी सरीला ही थी। सन् 1960 ई0 में इनकी मृत्यु हुई।

काव्य कृतियांः

ये एक अच्छे फागकार थे इन्होंने कवित्त सवैया भी लिखे थे। इनकी कुछ सुन्दर फागें यहां दी जा रही हैं।

हास्य रस की एक फाग देखियेः-

ब्रज में मोहन बन गये नाउन, नारी रूप बनाउन
गये वृषभानपुरी बरसानें, राधा के घर आंउन
कह सखी आज कहां से आई लागे हाल बताउन
लगे महावर देन प्रिया के, चीन लये मनभाउन
मोहन राधा चरित राजधर लगे प्रेम सों गाउन

(2)

नीकी छवि वृषभान सुता की, तन द्युति खूब मजा की
कीधों आय चांदनी बैठी पूरन चन्द कला सी
कींधों हेम भवन सुन्दरता राजत बैठ इकाकी।
उपमा मिलत न समता इनकी गई शारदा थाकी
कहत राजधर कृपा करो अब, भगतन मन मुदता की।

मुंशी राजधर द्वारा रचित कुछ सुन्दर कवित्त नीचे दिये जा रहे हैंः-

(1)

इन्द्रप्रस्थ धर्मराज जन्म भयो युधिष्ठिर को,
धर्म वीरता को जिन गाड़ो निशानो है

फेर महोबा में अवतार आल्हा भयो,

जिन्हें देख बैरी रणक्षेत्र से परानो है

वही धर्म औ तरो महेबा में छत्रसाल,

राजधर जिन तेग से रखाओ हिन्द बानो है

प्रकटो मगरौठ वही धर्मवीर देश भक्त,

शत्रुघ्न स्वतंत्रता को बांध लियो बानो है।

॥2॥

होकर प्रचण्ड महा शक्ति हने केटभ बन्धु,

हर के भू भार कीन्हीं जनता सुखारी है

महिषासुर रक्त बीज आदि असुर बाढ़े जब,

नष्ट कियो दुर्गा हो सिंह पर सवारी है

हरे दुष्ट लक्ष्मी हो कछु काज शेष राख

काल का प्रभाव देख राजधर सिधारी है

पूरन वह काज करन भारत को कष्ट हरन

प्रकटी फिर वही शक्ति इन्द्रा कुमारी है।

॥3॥

खद्दर का बाना तन तिरंगा निशाना कर

देवन मन मोह रहो देशी तराना है

महिला किसान वन्दी हरजन सम्मेलन लख

हिन्दू इस्लाम प्रेम सतयुग झलकाना है।

नेतों के भाषण गीता सम जान परत

भारत के काज आज पारथ सजाना है

यहां अन्याइयों के दमन दबाव राजधर प्रसाद

हो गये सब ख्वाव कांग्रेस का जमाना है

[4]

जैतपुर वाले बुन्देला बलबेला की

वीरता बताऊं कहां चरित्र नवांना है

अठारह सन्तावन को चक्रव्यूह विध्वन्श करो,

चचा भाई बन्धु ने साथ नहीं दीन्हा है

गोरन की गोलन को मार धरो गोरन में

खोरें हिलोरें खून विकट युद्ध कीन्हा है

राजधर दगाबाजों ने सन्धि की प्रतिज्ञा कर

अभिमन्यु भांति पकर परीक्षत लीन्हा है।

मूल्यांकन:

मुंशी राजधर की उपर्युक्त रचनायें से सिद्ध करती हैं कि ये अच्छे फागकार थे एवं कवित्त सवैया भी सुन्दर सरल शैली में लिखते थे। कहीं कहीं काव्य दोष इनकी रचनाओं में अवश्य मिलता है राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत कवि की रचनायें देश भक्ति की उमंग एवं जोश पैदा करने में सार्थक भूमिका का निर्वाह करती हैं।

(16) पं0 वंशगोपाल शुक्ल:

जीवन परिचय:

पं0 वंशगोपाल का जन्म ग्राम अकौना (राठ-हमीरपुर) में सन् 1894ई0 में ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामनाथ शुक्ल तथा माता जी का नाम श्रीमती जगरानी था। इन्होंने मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की थी। इनकी मृत्यु सन् 1989 ई0 में हुई। राजा मलखानसिंह चरखारी के यहां ये कविता सुनाया करते थे जहां इन्हें काफी सम्मान प्राप्त था।

काव्य कृतियां:

इन्होंने ख्याल एवं कवित्त बहुत लिखे हैं। ये अच्छे फागकार भी थे। इनकी कुछ सुन्दर रचनायें नीचे दी जा रही हैं:-

(1)

कवित्त

करके स्वतंत्र देश गांधी पयान कियो,

हिन्द है अधीर पीर हिये ना समायेगी।

शासन कुरीतों की अब लो न घृणा हुई।

देश व धर्म की धुरीनता विलायेगी

राक्षी अनीत कछू अब न निकारी गई,

तो देवी स्वतंत्रता में बाधा पड़ जायेगी।

वंशगोपाल क्षीण होगा पुण्य पितरों का

पूर्वजों की केवल कहानी रह जायेगी।

(2)

धावो जगदम्ब अम्ब काटो मम फन्द मात

कीन्हीं विलम्ब कहां सिंह पर सवारी कर

हिय में त्रिसूल हूल दुष्ट महापापी के,

महि में मिला दे शत्रु अब न अबारी कर

हर ले संताप आय अपने इस सेवक को

धर कर विकराल रूप दैत्य पर दवारी कर

वंशगोपाल काल गाल में दबा दे शीघ्र

अर्जी पै मर्जी मातु वेग तू हमारी कर।

(3)

चम्पत के सुवन वीर प्रकटे थे छत्रसाल

तेग तलवार को पराक्रम सुनाऊं मैं

वीर तो बुन्देला तासे नाम है बुन्देलखण्ड

यमुना नर्वदा टौंस चम्बल हू बताऊ मैं

बाजी ती टाप वहां राज जो बुन्देला को,

कोऊ न आड़ी करी कहां लो गिनाऊं मैं

वंशगोपाल वीर भूमि का महत्व कहौं,

भारत सो देश कहूं और नहिं पाऊं मैं।

ग्राम अकौना में एक बार डकैती पड़ गई थी जिसका रोचक वर्णन इन्होंने गारी में किया था जो आज भी उस गांव में लोगों की जुबान पर है उसे नीचे दिया जा रहा है।

(4)

गारी

देहात में न राखो पैसा मानो सीख हमारी ।

सुनियो दिन मंगल की बात

कृपाराम की गई बरात

डाकू आये आधी रात

टेरें सुनो सेठ जी बात

खोल किवाड़े बिंडल दे दो तलब लगी है भारी, देहात में . . . .

बनिया दिये किवाड़े खोल

डाकू घुसे गोल की गोल

मारन लगे कहां धन बोल

अब न चले तुम्हारी पोल

डपट लगा के चाबी ढूंढ़ी, लूटी सम्पदा सारी , देहात में . . . . . .

हो रये बन्दूकन के धड़के

रोवें बाप मतारी लड़के

बूढ़े बच्चे घर से सरके

ईश्वर कैसे होंहें तड़के

ग्राम अकौना में देखी न ऐसी आफत दारी , देहात में . . . .

भोरें जुट आये नर नारी

कीन्हीं थाने की तैयारी

भैया या भई दशा हमारी

विधना कैसी आफत डारी

थाने में जा बनिया रोवे पब्लिक लुटी तुम्हारी, देहात . . . . . .

यह सुन चल भये थानेदार

संग में लिये सिपाही चार

पूछे बनिया से हर बार

ब्यान करना ना बेकार

वंशगोपाल दरोगा जी ने तब कीन्हीं इनक्वारी, देहात में . . . . . .

ये एक अच्छे फागकार भी थे। पूरे क्षेत्र में बड़े ही रोचक ढंग से गायी जाने वाली इनकी एक लोकप्रिय फाग देखिये: -

﴾5﴿

दोहा: काह करौं कैसी करों, लगे विरह के बान

खगपति पति आये नहीं, ऋतुपति पहुंचे आन

टेक: सजनी खगपति पति नहीं आये, ऋतुपति और जनाये।

छन्द: आये ऋतुराज, सज के समाज, उन बिना काज नहीं भाये

बिरहा की जोर उठती मरोर, उम्मर है थोर पिया जा छाये।

उड़ान: जा छाये परदेश में सखी पिया नहीं आये

अब बिरहा के बस परी रितुपति जोर जनाये।

टेक: फूले पलास रये चारों दिस कोयल शब्द सुनाये

छन्द: फूले दुमन्त दसहों दिसंत, सखि बिना कन्त सूझत नाहीं।

बालम विदेश ना दये संदेश है अति अंदेश, दिल के माही।

उड़ान: छाये पिय आये नहीं, करिये कौन उपाये

कुंजन और दुमन में सजनी, कोयल शब्द सुनाये।

टेक: छाई पियराई बागन में बोलत मधुप सुहाये।

छन्द: भये पीरे बाग,उठी विरह आग

उन बिना राग कछू नहीं भावे

चाले समीर, कम्पत शरीर

नहिं धरत धीर मम घबराये।

उड़ान: धरत धीर नाहीं सखी, बहु विध मदन सताये

तापर अरू दुख देन कों, बोलत मधुप सुहाये

टेक: आय गये प्यारी के पिय घर, अति आनन्द मनाये

छन्द: रये आनन्द छाय मिले पिया आय,

बज रहे बधाय भये सुखकारी

विप्रन को दान, दीनें हैं आन,

हित अपने जान गई बलिहारी।

उड़ान: रहत अकौना नगर में वंशगोपाल ने गाये

जो होय भूल माफ कर दीजै अति आनन्द मनाये।

मूल्यांकन:

पं० वंशगोपाल शुक्ल की उपरोक्त रचनायें पढ़ने से पता चलता है कि ये एक अच्छे कवि थे जिनका कवित्त, सवैया, ख्याल व फागों पर एक समान अधिकार था। सरल एवं रोचक, बोधगम्य शैली में

कविता लिखना इनकी एक विशेषता थी। भाषा पर भी कवि को अच्छा ज्ञान था।

(17) सफदर अली:

जीवन परिचय:

सफदर अली उर्फ गनेश शंकर का जन्म सन् 1907 में ग्राम अकौना (राठ-हमीरपुर) में हुआ था। इनके पिता का नाम दरयाव अली था। बचपन में माता पिता की मृत्यु हो जाने के कारण इनका पालन पोषण इनके चाचा लालशाह के द्वारा किया गया। श्री लालशाह स्वयं एक अच्छे ख्याल व लावनीबाज थे। सफदर अली को भी उन्होंने इसमें पारंगत किया। सफदर अली ग्राम अकौना से जाकर चरखारी में ही रहने लगे थे। चरखारी के महाराज श्री गंगा सिंह जू देव के दरबार में इन्हें अच्छा सम्मान प्राप्त था। ये अच्छे ख्याज व लावनीबाज थे। स्वयं रचनायें बनाते एवं गाते थे। महाराज टीकमगढ़ अजयगढ़ आदि रियासतों के दरवारों में भी प्रायः ये बुलाये जाते थे। महाराज गंगा सिंह के पश्चात श्री अरिमर्दन चरखारी नरेश हुये जिनके द्वारा स्थापित नाटक कंपनी 'दि रायल ड्रैमैटिक सोसायटी' में भी इन्होंने काम किया। लगभग सन् 1989 ई0 में इनकी मृत्यु हुई।

काव्य कृतियां:

ये हिन्दी, उर्दू, फारसी सभी भाषाओं के मिले जुले ख्याल लिखते थे। इनकी एक सुन्दर रचना देखिये:-

गये जब से पिय परदेश तो जियरा तरसे।
यह विरह बदरिया झूम झूम कर बरसे।
कोई कह दो खबर अब जाके हमारे वर से
वह पड़ी विरह में लपेटे मुंह चादर से
सुख श्याम गये हैं जब से हमारे घर से
अब दुखदाई कर कमान ताने कर से
उड़ान: नाहें शोर मचावे कह दो यह झींगुर से
यह विरह वदरिया झूम झूम कर बरसे (1)

हरि लगावें मेरी सौत गले आदर से
भई प्रीत नई कुबरी और श्याम सुन्दर से
इस तरफ लगी है लगन मेरी गिरधर से
है सच्चा नेह सखियन का राधा वर से।
कोई मना करे ना बरसे घन इन्दर से।
यह विरह बदरिया झूम झूम कर बरसे (2)
हैं नैन नीर से भरे बहें घर घर से
नित पौंछा करती मुंह अपना आंचर से
है इसी सबब से खटटा जी चूनर से,
नहिं रंज से ओढ़ी जाती सारी सिर से।

मूल्यांकन:

सफदर अली जी की उपर्युक्त रचना इस बात का प्रमाण है कि वे एक अच्छे ख्याल-लावनी गायक व कवि थे। हिन्दी, उर्दू व संस्कृत सभी भाषाओं का उन्हें ज्ञान था। ये मिले जुले ख्याल गाते थे। साहित्यिक दृष्टि से इनकी रचनायें सरस एवं भावपूर्ण हैं।

(18) पं0 मनबोधन शर्मा:

जीवन परिचय:

---------.

कविवर पं0 मनबोधन जी वैद्य का जन्म सं0 1954 में हमीरपुर जनपद के ग्राम धमना में हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 दशाराम शर्मा था। पं0 मनबोधन शर्मा जब दो वर्ष के थे तभी इनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। मां पर इनके लालन पालन का पूर्ण भार आ गया। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इस कारण इनकी शिक्षा दीक्षा ठीक प्रकार से न हो सकी। संयोग से इन्हें कविता प्रेमी लाला जगन्नाथ सक्सेना का आश्रय प्राप्त हुआ उन्हीं की कृपा से इन्होंने कुछ पढ़ना लिखना सीखा। लाला जगन्नाथ सक्सेना के निर्देशन व मार्गदर्शन में इन्होंने कविता करना सीखा तथा वैद्यक का ज्ञान प्राप्त किया। मुस्करा निवासी लाला गौरीशंकर सक्सेना के आश्रय में तीन वर्ष तक रहकर इन्होंने चूर्ण, रस, भस्म तथा अवलेह आदि

बनाने की विधि सीखी और ग्राम करौंदी में रहकर औषधालय खोला। राठ में भी इनका औषधालय इसी नाम से चलता था। लगभग 90 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हुई।

काव्य कृतियां:

इनकी तीन प्रकाशित काव्य कृतियां हैं। सर्वप्रथम इनकी रचनाओं का संग्रह 'रामयश कीर्तन' के नाम से प्रकाशित हुआ जिसमें परशुराम संवाद, लंका दहन, अंगद-रावण संवाद आदि स्थलों का बहुत सुन्दर वर्णन किया गया है। मनबोधन शर्मा की दूसरी पुस्तक 'दम्पति विनोद' के नाम से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में भीष्म पितामह तथा अभिमन्यु आदि का वर्णन किया गया है।

इनकी तीसरी प्रकाशित पुस्तक का नाम 'बोधन - बोधनी' है इस पुस्तक की भूमिका लक्ष्मीप्रसाद सक्सेना द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक का 'बोधन-बोधनी' नाम पं0 रामसनेही , सरसई का दिया हुआ है। जैसा कि कवि ने पुस्तक की प्रस्तावनों में स्वयं स्वीकर किया है। बोधन-बोधनी पुस्तक में कवि ने मनुष्य व पशुओं के विवाद के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि रूप, बल, धन, मान, अपमान, न्याय, प्रेम आदि सभी बातों में मनुष्य हम पशुओं से भी गिरे हुये हैं। जप,तप,संम,नियम, यम, सम, दम, अहंकार आदि शब्दों के अर्थ को सुन्दर भाषा व सरल दृष्टांतो के माध्यम से समझाया है। बोधन बोधनी पुस्तक कवि ने स्वामी श्यामानन्द जी महाराज की प्रेरणा से लिखी है। पुस्तक के कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं।

॥1॥

एक समय की बात है सुनो सुजन सुख धाम
पशु पक्षी अरु नरन में , हुआ विकट संग्राम।
पशु पक्षी भी एक थे मनुज मात्र थे एक।
कौन जीव जग में बड़ा, यही ठनी थी टेक।

मानुष बोले बलवान हैं हम, सुनकर सिंह दहाड़ उठे।
कोलाहल चारों ओर हुआ हाथी घोड़े चिग्घाड़ उठे।
भयभीत हुये मानुष बोले हां बल में जीत तुम्हारी है।
फिर भी यदि सुन्दरता देखो तो जग में जीत हमारी है।

पशु पक्षी कहने लगे इस पर करो विचार

सुन्दरता में मिलत हैं कुछ भी अंग हमार।

उन्नति पर उपमा देत बड़ों की, ढूंढ़ ढूंढ़ कर कवि जैसी

पटतर देते हैं सदा हमारी, कटि सुन्दर केहर कैसी।

मृग नयनों से नैन मनोहर, नासा शुक सम प्यारी है।

बोली नीकी कोकिल बयनी, उपमा मिली हमारी है।

अंग-अंग की छबी हमारी लेकर सुंदर धारी है।

कंध तुम्हारे वृषभ कंध से इसमें नहिं जीत तुम्हारी है।

मानुष बोले धनवान हैं हम, भण्डार तुम्हारे हैं रीते।

पशु पक्षियों ने उपहास किया इसमें भी आप नहीं जीते।

धन श्रेणी में श्रेष्ठ धन है, वह मणि मोतियों की गणना होती।

वह मणि सर्पों से पाते हो गजराजों से मिलते मोती

बल सुंदर धन मे जहां हारा जन समुदाय।

एक बात अब और है हम करते हैं न्याय।

न्याय करइया है नहीं, मनुज मात्र के बंस

आगे बढ़ कहने लगा, ताल ठोंक कर हंस।

पंचायत में जाय बैठकर मुंह देखी कुछ कह दोगे

पक्षपात में या लालच में झूठ फैसला कर दोगे।

आप कचहरी में रिश्वत ले झूठ गवाही भर दोगे।

क्षीर नीर सम विलय करो क्या न्याय हंस सम कर दोगे।

(2)

इसी प्रकार अन्यत्र कविवर मनवोधन ने तप, यम, नियम को निम्न प्रकार समझाया है:-'

तप

शुद्ध भाव सत मनना, सत करना सत बोल।

मन को पापाचरण से रोक धर्म में खोल।

सम विद्या वेदादि का पढ़ चलना अनुकूल।

इन्द्रियों को अन्याय में जान न देवे भूल।

धरमयुक्त शुभ कर्म तप यह तप मुनिन बखान

का लीजे मान प्रमान

यम

\- -

बैर त्याग तस मानना सत्य बचन सतकर्म
चोरी लोलुपता अधिक, भूल न करे अधर्म।
इन्द्रियों का संयम करे राखे न अभिमान।
पांच यमों का करत हैं सेवन सदा सुजान
सत्य अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य अस्तेय
इन पान्चों को यम कहत, सज्जन समुझ करेय।

नियम

\- - -

स्नान आदि से पवित्रता करत रहे पुरूषार्थ
कष्ट परे पर भी सदा राखे धर्म यथार्थ।
हानि लाभ जो होय तो करे न हर्ष विषाद
धर्मयुक्त शुभ कर्म कर, पढ़ पढ़ाय वेदादि।
अरपित राखे आत्मा ईश्वर पर दृढ़ प्रेम
इन पांचों को सुजन जन बोधन भाषत नेम।
बिना यमों के नियम का सेवन करता जोय।
ताको सुख सपने नहीं प्राप्त अधोगति होय।

धर्म तथा अधर्म के बारे में कवि ने अन्यंत गहराई से चिन्तन किया है। जिसकी एक झलक नीचे दी जा रही है:-

धर्म

\- -

विद्या पढ़ना संग सत युवा अवस्था ब्याह
परमारथ व्योहार सत जीत इन्द्रियां बाह्य
सत करना, सत मानना, सत्य बचन सत कर्म
'बोधन ' सत ब्रह्मचर्यजेवही कहावत धर्म।

अधर्म

\- - -

हिन्सा,पर हानी करम, छल कुसंग व्यभिचार,
झूठ कपट आलस ग्रहण करत असत व्योहार

अथ अवगुण पापाचरण और अविद्या जान
बोधन' कर्म· कुकर्म· जे यह अधर्म पहिचान

कवि मनबोधन जी ने अत्यंत सुंदर छन्दों की भी एक रचना की है। बोधन बोधनी पुस्तक के प्रारंभ में दिये गये दो कामधेनु छन्द इसके प्रमाण हैं। इन छन्दों की विशेषता है कि जिस खाने से छन्द को उठाया जाये उसी खाने के पास छन्द बन जाता है। अवलोकनार्थ दोनों कामधेनु छन्द नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

राजत हैं	रघुनाथ	सिंहासन	चौर लिये
हनुमन्त	सुमोदन	लाजत हैं	रतिनाथ
निघासन	ख्वौर दिये	द्विज संत	मुनोदन
हाजत हैं	सब भात	निजासन	गौर पिये
अतअन्त	प्रमोदन	गावत हैं	गुण गाथ
सुभातन	और हिये	कलकंत	सुबोधन

(2)

टेर सुनी	ब्रजराज	सखीन कै	हाथ उठाय
लियो तव	गोधन	फेर फनी	पग साज
कमीन पै	आय जताय	हटे जब	जोहन.
देव घनी	दुःा भाज	खलीन पै	जाप बनाय
तबै छब	मोहन	प्रेम मनी	महराज.
अधीन कै	धाय बचाय	कहैं कब	बोधन

मूल्यांकन:

उपर्युक्त रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट है कि कविवर मनबोधन शर्मा की रचनायें साहित्यिक दृष्टि से उच्च कोटि की है। पिंगल के अच्छे ज्ञाता होने के कारण भावपूर्ण सुंदर छन्दों की

रचना इन्होंने की है। सुन्दर सरल एवं सरस भाषा में गूढ़ शब्दों के अर्थों को अपनी कविता के माध्यम से अत्यन्त रोचक ढंग से इन्होंने समझाया है। कबीर की साखियों की तरह इनके दोहे बड़े ही प्रभावोत्पादक हैं। इनमें प्रसाद गुण अधिक है। लोकोक्तियों की तरह इनमें हृदय ग्राह्यता है। भाषा की सरलता व स्पष्टवादिता जैसी विशेषतायें कवि को एक अच्छा कवि सिद्ध करने के लिये पर्याप्त प्रमाण हैं।

(.19) श्रीपत सहाय रावत

जीवन परिचय:

श्रीपत सहाय रावत का जन्म राठ तहसील के अंतर्गत ग्राम जराखर में दिनांक 15.8.1897 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री खूबचन्द्र रावत तथा माता जी का नाम श्रीमती मोनी बाई था। कविवर की पत्नी श्रीमती शान्ति देवी एक धार्मिक विचारों वाली स्त्री थीं।

प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्रीपत सहाय रावत भूतपूर्व विधायक थे स्वतंत्रता संग्राम में आप पांच बार जेल गये । सर्वप्रथम सन् 1923 में नागपुर सत्याग्रह में एक वर्ष का कारावास हुआ। सन् 1930 में नमक सत्याग्रह में 2 वर्ष 6 माह का कारावास एवं 12 हजार रूपया जुर्माना हुआ। सन् 1931 में एक वर्ष की सजा, 1941 में 6 माह की सजा व 10 हजार रूपया जुर्मानााा हुआ। सन् 1942 में श्री लाल बहादुर शास्त्री के साथ जेल गये। सन् 1918 से ही साहित्य सृजन का कार्य करते रहे। 98 वर्ष की आयु में भी वाणी में तेज था इस उम्र में भी उनके मुख से राष्ट्रीय रचनायें, देश भक्ति से पूर्ण काव्य पाठ सुनकर रोम सिहर उठते थे आपके पिता स्व0 श्री खूबचन्द्र रावत भी बहुत अच्छे कवि थे। आपको भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व0 श्रीमती इन्दिरा गांधी के द्वारा पदक भी दिया गया । इनकी मृत्यु सन् 1997 में हुई।

काव्य कृतियां:

आपके द्वारा सृजित प्रकाशित साहित्य में 6 पुस्तक/पत्रक हैं।

(1) लाठी के दांव

यह पुस्तक गद्य रूप में लिखी गई है जो सन् 1937 में प्रकाशित हुई। जिसके प्रथम पृष्ठ में लिखा है:-

नव जवान यदि चाहते, धाक जमे हर गांव,

लाठी लो सीखो सभी, यह लाठी के दांव।

पुस्तक की भूमिका में स्वयं लेखक द्वारा बताया गया है कि उसने लाठी का प्रशिक्षण पूज्य प्रोफेसर माणिकराव जी व्यायाम मन्दिर बड़ौदा से प्राप्त किया है। पुस्तक में 23 पृष्ठ हैं जिसमें लाठी के भेद, लाठी पकड़ना, मार एवं विभिन्न प्रकार से लाठी चलाने की कलायें सिखायी गयी हैं अन्त में लाठी चलाने का प्रशिक्षण देते हुये 29 चित्र बने हुये हैं।

(2) जौहर जराखर:

'जौहर जराखर' कवि की एक उत्कृष्ट पुस्तक है। मुगल शासकों की फौज दिल्ली से पन्ना पर चढ़ाई करने आयी थी। उसका उद्देश्य महाराज छत्रसाल को पराजित करना था। रास्ते में फौज ने जराखर में रात्रि विश्राम लिया तो जराखर निवासियों ने उस फौज पर रात्रि में गुरिल्ला हमला करके उसे समाप्त कर दिया। तत्पश्चात महाराज छत्रसाल ने जराखर के मुखिया को उसके बहादुर साथियों सहित पन्ना में राजदरबार में सम्मानित किया और उन्हें रावत का खिताब युक्त ताम्रपत्र, कृपाण, गदा, रोला, मण्डील लदाऊ, चोगा आदि भेंट किया। उक्त संपूर्ण घटना क्रम का वर्णन जौहर जराखर में किया गया है जिसके कुछ अंश निम्नलिखित हैं:-

(1)

छत्रसाल भूपाल बुन्देला पन्ना का यह गांव रहा।

उनका एक किला ईटों का नन्हा सा इस ठांव रहा।

ग्राम निवासी जनता का राजा के प्रति सद्भाव रहा

देशभक्त राजा के हित में कभी न कोई अभाव रहा।

(2)

जिस भांति शिवाजी दक्षिण में शाहों को निशदिन खलते थे

उसी भांति ही छत्रसाल से उनके हृदय दहलते थे।

पन्ना की हीरक खानों पर लालच भरे मचलते थे

साहसहीन पड़े दिल्ली में खाली हाथ मसलते थे।

(3)

पन्ना विजय हेतु दिल्ली से था शाही सरदार चढ़ा
बड़ा तोपखाना लेकर के यमुना के इस पार बढ़ा
हाथी घोड़े पैदल सेना पर लोहे का जाल पड़ा
बादशाह दिल्ली वाले का झण्डा बड़ा निशान खड़ा।

(4)

गांव गांव आतंक जमाता कहता कहां बुन्देला है।
मजा चखा दूंगा मैं उसको यह शाहों का रेला है ।।
शाही सेना का नहीं देखा उसने कभी झमेला है।
अन्धों में काना राजा है, करता मौज अकेला है ।।

× × × × × × × × × × ×

(5)

ग्रीष्म के तूफान सरीखा आता जब दल बल देखा ।
ग्राम जराखर के वीरों ने उसको निज शत्रु लेखा ।।
छत्रसाल भूपाल बुन्देला की है यह लक्ष्मण रेखा ।
इसको मार भगा देने का ले रक्खा हमने ठेका ।।

× × × × × × × × × × ×

(6)

ग्राम जराखर के तड़ाग पर सेना ने विश्राम लिया ।
खोल दिये हथियार सभी ने एक साथ यह काम किया।।
हाथी घोड़े थके सैनिकों ने शीतल जलपान किया।
सेनापति पलंग पर बैठा वट के नीचे ठांव लिया।।

(7)

इधर जराखर वालों ने भी मिलकर एक विचार किया।
बुन्देलखण्ड की रखवाली का अपने ऊपर भार लिया।।
उस समय गांव के मुखिया ने नवयुवकों को उत्साह दिया।
जन्मभूमि की सेवा कर लो ईश्वर ने सौभाग्य दिया।।

(8)

आज रात को इस शत्रु का युवको काम तमाम करो।

अपने गांव जरखार का युवको अब तुम नाम करो।

लेकर नग्न कृपाणें कर में, वीरोचित अब काम करो।

विजयश्री को लेकर के फिर राजा को प्रणाम करो।।

× × × × × × × × × ×

(9)

गये भेदिया तुरत गांव से सेनापति से हिले मिले।

पूछा उसने कहां मार्ग में छत्रसाल के बने किले।

कहां तुम्हारा चूहा राजा कितने उसने किले बिले।

कितनी चुहियों की फौजें हैं उसे अभी नहीं शेर मिले।।

× × × × × × × × × × ×

(10)

सेनापति चिलम गांजे की प्रतिक्षण पर पीता था।

बिला नशे का कभी न रहता इस पर ही जीता था।।

हाथी की अम्बारी पर गांजा भरा खलीता था।

चिलम पकड़कर खैंच लगाता उड़ता आग पलीता था।।

× × × × × × × × × × ×

(3) ग्राम सतसई :

ग्राम सतसई का प्रथम संस्करण सन् 1942 में और दूसरा संस्करण 1988 में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का सृजन कवि ने उस समय किया जब वह स्वतंत्रता संग्राम में 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में चौथी बार जेल गया। जेल में रहकर ही कवि ने इस पुस्तक को लिखा । इस पुस्तक में ग्राम जीवन की कुप्रथाओं व सांस्कृतिक - सामाजिक सुधारों पर लेखनी चलाने का सुन्दर प्रयास कवि के द्वारा किया गया है। पुस्तक में कुल 124 पृष्ठ हैं जिनमें कुल 820 दोहे है। विभिन्न विषयों पर कवि ने अपनी लेखनी चलाई है कुछ अंश प्रस्तुत हैं।

ग्राम महिमा

(1)

ग्राम सुधर जावें सभी, शिक्षित हौंय किसान।
सुदृढ़ मूल उन्नति करै, श्रीपति हिन्दुस्तान।

(2)

गांवन को जौ देश है गांव किसान निवास।
मानव जीवन की जहां पूर्ण होत है आस ।।

(3)

घी अनाज रेशम शहद शक्कर गुड़ की खान।
हैं अपने ही गांव ये दाता श्रमी किसान।।

ग्राम रक्षक दल

(1)

अगर किसी भी काल में होता हो संग्राम।
महादुखित हैं विश्व के देश नगर अरू ग्राम ।।

(2)

जनता सब संसार की होती हो भयभीत ।
रक्षक दल तैयार हों, बढ़े प्रीति परतीत ।।

(3)

सेवा करने का समय युद्ध काल के बीच ।
जनता की रक्षा रहै, करैं न ऊधम नीच ।।

महिलायें

(1)

लक्ष्मीबाई की तरह महिलायें हों वीर।
गुण्डा चोर डकैत भी दे न सकैं कुछ पीर ।।

(2)

तिरियां लाठी सीख लें और छुरी के दांव।
अपनी सब रक्षा करैं, खड़ीं होंय निज पांव।।

(3)

हिन्दू मुस्लिम औरतें, बोलैं ऐसे बोल।

ताकत जिसमानी बढ़ै, बढ़ै सभी में मेल।।

पुरूष

(1)

गस्त पार्टी गांव में बना लेंय सब लोग।

रक्षा करने के लिये करैं सभी सहयोग।।

(2)

बदमाशों के यदि कहीं पाओ गुप्त गिरोह।

कर दो भण्डाफोड़ सब कर उनका विद्रोह।।

(3)

अमन रहे सब देश में बना रहे सुख चैन।

इसीलिये हर गांव में बना लेव निज सैन ।।

ग्राम निर्माण

(1)

दूर दूर घर गांव के चौड़े मारग होंय

कुलियां तंग बनायकर रोग बीज नहिं बोंय।।

(2)

प्रतिदिन निज घर द्वार को साफ करैं सब लोग।

कूड़ा कचरा नहिं रहै, जासें नासें रोग।।

(3)

नाबदान गहरे चहैं, बहैं न ऊपर खोर।

ऊपर से ढक्कन रहै पियें न पानी ढोर।।

(4)

जहं-तहं नहिं मल मूत्र हित, डटैं अगीत पछीत।

बाल कटे कपड़े फटे परें न नीचे भीत।।

(5)

जहं कूड़ा करकट वहीं मच्छर कीट पतंग

बिच्छू सर्पादिक वहीं करत रंग में भंग

कुआं

॥1॥

निर्मल शीतल सलिल तल उच्च स्थल हों कूप।

उथल पुथल जल नहिं करै, सदल सबल मण्डूक ।।

॥2॥

कुआं खुदै जल बहुत हो, फूट जाय मण्डील।

जगत सदा ऊंची बने, इसमें नहिं हो ढील।।

॥3॥

बहुत पुराने कुयें में हो जाती है खोय ।

मिलकर सब जन गांव के पत्थर जड़ दो ढोय ।।

॥4॥

चूना या पोटाश को डालो जल में घोल ।

कीड़े सब मर जायेंगे कूप बने अनमोल ।।

॥5॥

कभी कुयें की जगत पर धोना नहीं शरीर ।

देह मैल छींटे पड़ें, दूषित होवे नीर।

भोजन बनाने के नियम

॥1॥

आटा गूंधत के समय स्वच्छ रखिये देह।

आटे में बरसे नहीं कहीं स्वेद का मेह।।

॥2॥

मैले हाथों से कभी भोजन नहीं बनाव।

साबुन निर्मल नीर से धो डालो कर पांव।।

॥3॥

दुह कर आवै दूध तो, फौरन लेव उबाल।

पहिले उसको छान लो पड़े न होवें बाल ।।

भोजन करने के नियम

(1)

लिपा-पुता निर्मल रहे भोजन का अस्थान
ऊन आसनी काठ पर बैठो कर असनान

(2)

भोजन करने के समय, निर्मल मजा गिलास
पानी शीतल छान कर भरकर रख लो पास

(3)

आवै नहिं मक्खी निकट पंखा झलते जाव
पच जावे जितना असन, उतना ही तुम खाव

(4)

भोजन करके तुरत ही मुंह कर डालो साफ
फिर इसके पश्चात ही कर डालो पेशाब ।।

बाग बलिदानः

बाग बलिदान दो पृष्ठ का पत्रक के रूप में प्रकाशित कविता है जिसे कवि ने अराजक तत्वों के द्वारा अपना बाग काट लिये जाने पर लिखा है , कविता के कुछ अंश निम्नलिखित हैं:-

जन्म भूमि भारत माता का बाग कटा कटहल का।
एक-एक पत्ती में जिसकी गान्धी का चित्रण था।
श्रमशील जीवन हो ऐसा, रस नेहरू मिश्रण था।
स्वतंत्रता की बलिवेदी का खाद भरा कण-कण था
सस्य श्यामला सुफला की सेवा में एक एक क्षण था।
तैयार खड़े थे लिये मोर्चा सभी चीनिया दल का
जन्म भूमि भारत माता का बाग कटा कटहल का।
रक्त पसीना बहा बहाकर जिसको निसिदिन सींचा
प्यार भरी दोनों अंजलि से हृदय उड़ेल उलीचा।
साठ हाथ के कुआं जराखर लू लपटों में खींचा
सतरंगी फल फूल कला से सुंदर बना बगीचा।
आदर्श रूप था नव विकास की सरकारी हलचल का।
जन्मभूमि भारत माता का बाग कटा कटहल का।

होनहार कोमल वृक्षों पर कठिन कुल्हाड़ी घाली।
कैसा था वह हृदय कि जिसने काटी डाली डाली।
भला करैं भगवान कि जिसने छीनी परसी थाली।
उत्पादन के कार्य राष्ट्र के पथ में बाधा डाली।
अपने पर ही वार किया है उसने अपने बल का।
जन्म भूमि भारत माता का बाग कटा कटहल का।

फिरकर फिर कर संभर बिसर कर छोड़ निजी दुर्बलता
महा भगीरथ यत्न किये जा क्यों विघ्नों से डरता।
जो डरता है वह मरता है जो करता वह भरता
सबका कर्ता धर्ता जो है वो ही कर्ता-धर्ता।
श्रीपति आशा पूर्ण करेगा राम धनी निर्बल का
जन्म भूमि भारत माता का बाग कटा कटहल का।

(5) हमीरपुर जनपद का स्वतंत्रता संग्राम और उसके सेनानी:

यह पुस्तक मुख्यतया गद्य रूप में है जिसमें कवि ने अपने स्वतंत्रता संग्राम काल की जनपद की सभी घटनाओं को क्रमबद्ध लिखा है। लगभग 200 पृष्ठ की यह पुस्तक अभी प्रकाशन हेतु प्रेस में है।

(6) काव्य कृपाण:

कवि का यह उत्कृष्ट रचना संग्रह है जो अप्राप्त है। श्री लक्ष्मी आनन्द प्रधानाचार्य (अ०प्र०) मौदहा-नेशनल इण्टर कालेज, कवि से इस पुस्तक को ले गये थे वहीं से प्राप्त होने की संभावना बताई गई थी किंतु प्रयास किये जाने के बाद वहां से भी नहीं मिल सकी।

मूल्यांकन:

कवि की उपर्युकत काव्य कृतियों के अवलोकन से स्पष्ट है कि वे वीर रस के बहुत अच्छे कवि थे इनकी कविताओं में राष्ट्रीयता का पुट परिलक्षित होता है। ग्राम सतसई पुस्तक की रचनायें इस बात का प्रतीक हैं कि कवि के हृदय में ग्रामों के विकास की तीव्र लालसा थी। व्याकरण की दृष्टि से

भी रचनाओं में काव्य दोष नहीं है। साधारण ग्राम में निवास करते हुये हिन्दी साहित्य को किया गया कविवर का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। 'जौहर जराखर' पुस्तक की रचनायें श्यामनारायण पाण्डेय की हल्दी घाटी की याद दिलाती हैं। हिन्दी साहित्य की ओर से कवि की लुप्त होती जा रही प्रकाशित/अप्रकाशित रचनाओं के संरक्षण की आवश्यकता है।

(20) मुंशी तुलसीदास 'दिनेश'

जीवन परिचयः

इनका जन्म 1 मार्च सन् 1899 को राठ में वैश्य कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री कढ़ोरेलाल शाह था। इन्होंने हिन्दी व उर्दू से मिडिल पास किया था तथा शिक्षा विभाग इलाहाबाद से अध्यापक प्रशिक्षण किया था। एक मार्च 1959 में ये शिक्षक पद से सेवानिवृत्त हुये। इनकी मृत्यु 2 सितंबर सन् 1980 को हुई।

काव्य कृतियांः

आपकी रचनायें सुकवि पत्रिका (मासिक) तथा रसखान में प्रकाशित होती रही हैं। आप टीकमगढ़ व छतरपुर के राजघरानों में कविता पाठ करने जाते रहे हो। इनकी कवितायें आकाशवाणी छतरपुर से भी प्रसारित होती रही हैं। आपको विभिन्न प्रकार के प्रशस्ति पत्र प्राप्त होते रहे हैं। राजघरानों में कविता पाठ में आपको कई प्रशस्ति पत्र व प्रशस्ति चिन्ह प्राप्त हुये हैं। आपका अप्रकाशित साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है जो अत्यंत सारगर्भित एवं उच्च कोटि के साहित्य की श्रेणी का है जिसका प्रकाशन होना अत्यंत आवश्यक है।

शारदा विनय

(1)

शूर रखता है जैसे आसरा कृपाण का ही, भूप रखता है आसरा ज्यों राजधानी का
एक ही पती की जिमि आस रखती है सती, जैसे रखता है युवा आसरा जवानी का।
हरिजन हरि से ज्यों माली वाटिका से जैसे रखता आसरा है ज्यों कृषक किसानी का।

जैसे स्वाति बूंद का है आसरा पपीहरा को, आसरा दिनेश को त्यों शारदा भवानी का

[२]

मेट दे विचार बद भाव सद लादे मन साहस अजेय शक्ति अंग अंग भर दे

कष्ट कर नष्ट सुख संपति अपार भर एक बार हिन्द को निहाल फिर कर दे

नीति के निधान गुणवान साहसी महान, मोतीलाल के समान लाल घर घर दे

तेरो अविलंब जगदम्ब न विलम्ब कर देश हो स्वतंत्र शीघ्र ऐसा शुभ वर दे।

(3)

एरी हंसवाहिनी विराज मन मानस में कविता में नये भाव विकसित कर दे

काव्य कला कौशल में कर दे प्रवीण मुझे तान लय स्वर देववाणी भी मधुर दे

गूंजे महिमण्डल स्वमण्डल में काव्य मेरी भूपित अलंकारों से सजा दे राग भर दे

कविता तरंगनी में डूबा रहे मेरा मन शारदे पसार दे कृपा की कोर कर दे।

भगवान विनय

(1)

यातनायें अब तो असह्य हो रही हैं तो भी अंत नहीं होता दिखता है विचार में

क्या कहूं कहां जाऊं निरूपाय हो रहा हूं, बहा जा रहा हूं हाय दुख जलधार में

दीनबन्धु डाल दो दया की दृष्टि एक बार दीन के कटेंगे कष्ट नैसुक निहार में

निपट निराश हूं मैं सूझता नहीं है कुछ वेग ही उबार लो पड़ा हूं मंझधार में।

(2)

सामने सुनैन के श्याम छबि छाई रहे रसना हमारी गुणगान में पगी रहे

काम क्रोध मोह लोभ दंभ कुविचारन में मेरी यह बुद्धि प्रभो कभूं न ठगी रहे।

सीताराम सीताराम कहने में बीतें दिन मन में हमारे शुचि भावना जगी रहे

सेवक दिनेश की है कामना ये जीवन सौं पीत पटवारे सों है लगन लगी रहे।

(3)

सुनत पुकार दीन जन की द्रवित हो हो आय कई बार भार हिन्द के उतारे नाथ

किंतु यह हाहाकार कैसे न सुनते नाथ दीनबन्धु हो के दीनबन्धु क्या बिसारे नाथ

टूट गया चक्र या कि भूले हो चलाना आप या कुछ हिये में और बात निरधारे नाथ

किम्बा सो रहे हो क्षीर सिंधु में सनेह सने या कि बहु छन्द देख मौन व्रत धारे नाथ।

मेरा परिचय

शिष्य हूं महेश का मैं साथी श्याम सुंदर का राधापुर वासी अनुराग भरा प्याला हूं

चोर श्रंग कुमर्दों का जिय है जलाने वाला सुजन सरोजों में सुख देने वाला हूं।

शत्रु हूं तिमिर का 'दिनेश' उपनाम मेरा देश द्रोहियों के लिये प्रज्जवलित ज्वाला हूं।
दास कवियों का शुचि लाल वीणापाणि का हूं अलि कविता का और कवि मतवाला हूं।।

गंगा गौरव

बारि लखि पापिन के पातक विलीन होत पूर्ण अभिलाष होत आवत किनारा मैं
यमराज हू की नहिं पेश चल पावे कछु रहत सशंक मग्न सोच ही विचारा में
शीश के नवो शीश पर से उतरे भार अमित अपार तेज चन्द्र में न तारा में
हरत त्रिताप दुख दारिद न आवै पास बैठत ही निर्मल पुनीति गंग धारा में।

मातृ भूमि

बालक अजान सम जान पालती है हमें रहती सदैव तू हमारे अनुकूल है
साहस उमंग भरती है अंग अंग में तू कायरता हार हार करती समूल है।
धूल में भरी हैं करामात हैं अजीब तेरी अंग लगते ही तीव्र शूल होत फूल है
सुधि रखती है मातु जीवन मरण लौं तू हंस हंस टालती हमारी सब भूल है।

हमारा भारत

एक ओर जिसके हिमाद्रि की निराली छटा तीन ओर वारिध अपार विस्तारा है
खेलती हैं गोद में समोद सरितायें मंजु दर्श दर्श पाके होत पाप ताप हारा है
अन्न फल फूल ही क्या धूल भी न ऐसी कहीं जग से निराला जगदीश का दुलारा है
निशि में निशेष कैसा दिन में दिनेश कैसा सोहे जगतीतल में भारत हमारा है।

एक लघु एक दीर्घ शब्दों में घनाभरी

न हो सका क्लेश दूर है है विशेष क्या उसे न ध्यान आन बान शान साज बाज का
न फूट को हटा सका न दंभि को मिटा सका उसे प्रभाव हो न जाति गान की आवाज का
पुकार नारि वृन्द की न त्राह आह दीन की सुनी न कान में सदा उसे न खौफ लाज का
न नाखुदा जहाज का न ताज है सिपाह का करे भला सुधार क्या गिरी हुई समाज का।

घनाभरी

कविता न जानू सिर्फ नाम मात्र का हूं कवि तुकबंदियों ही पर मुझे है बड़ा घमण्ड
वाणी भी न नीकी न सुरीली रस रंग हीन बढ़ता हूं अग्र किंतु ताल ठोक होक भुज दण्ड।
बे तुकी ही छेड़ता हूं ऊब मत जाना कहीं करना मजाक नहीं मेरा सुन आल्हा खण्ड
आया हूं सभापति जी इससे सुनाने आज मैं भी हूं बुन्देलखण्डी मेरा है बुन्देलखण्ड

बुन्देलखण्ड गान (महिमा) आकाशवाणी छतरपुर से कई बार प्रसारित

ओ वन्दनीय ओ पूजनीय अभिनंदनीय बुन्देलखण्ड
जगमग जगमग जग रही जगत में ज्योति प्रखर ज्यों मारतंड

(1)

जिसके आंगन में खेल रही सुंदर सरितायें मचल मचल
कल कल निनाद से गूंज रहा झरनों का निर्मल शीतल जल
सदियों से संरक्षक बनकर ये खड़ा हुआ है विन्ध्याचल
फल फूल लता द्रुम कुंजों से है भरा हुआ जिसका अंचल
उसकी छवि लखि हो जाता है नंदन कानन का गर्व खण्ड ।। (ओ वन्दनीय. .)

(2)

यहाँ प्रकृति नटी जिस पै बलि हो करती रहती है आराधन
फल फूल अन्न नव जीवन दे करती रहती है प्रति पालन
समयानुकूल ऋतुओं का भी होता रहता है परिवर्तन
जिसपै मुग्ध होकर समीर करती नव जीवन संचालन
दुखदायी अन्य देश कैसा नहिं हिम है आतप नहीं ठंड (ओ वन्दनीय . . .)

(3)

आल्हा ऊदल की वह कृपाण जो खुल खेली समरांगन में
लक्ष्मी चम्बल वह छत्रसाल जौहर दिखलायें जिस रण में
वह रानी राम लला बाई जिसका यश छाया त्रिभुवन में
हरदौल पुज रहे देवतुल्य घर घर में देशन देशन में
ऐसा बतलाओ वसुधा में है और कहीं क्या भूमि खण्ड (ओ वन्दनीय. . . .)

(4)

वह प्रागराज कैसा महत्व रखता है देखो कुण्डेश्वर
सहजा को मिले सहज ही में घर आकर देखो परमेश्वर
है तपोभूमि पाराशर की वह राठ परासन सर्वोपर
है वेद व्यास की जन्मभूमि जिससे ऊंचा सिर है भू पर
वह गाधि सुवन का हवन कुण्ड है बता रहा वह झारखण्ड (ओ वन्दनीय. . . .)

हास्य रस

(1) भगवान का भोग

एक न‌ः एक बार गाड़ी ठीक ठाक कर नाज भर बेचने को गयो तो बजार है
वापिसी में आके एक जगै गाड़ी ढील खाने हेतु रोटी करी रूचि सौं तयार है
नैन मूंद ध्यान से लगायो भगवान भोग श्वान आय रोटी लेय भागो बे करार है
खोले नैन खाली प्याली देख बार बार कहै खूब लीन्हों भोग राखो न हमार है

(2) कोरा पत्र

गया मित्र यहां वहां देखता क्या इक पत्र लिफाफे में जा रहा है
वह कोरा बिना लेख का है सपट्ट नहीं कुछ दृष्टि में आ रहा है
अति आतुर हो लगा पढ़ने मैं यह कारण कौन बता रहा है
कहने लगा बीबी न बोलती है इस हेतु ही कोरा ये जा रहा है।

श्रंगार रस

शिकवा

(1)

तुम्हें प्रेम का नाता निभाना न था तो सनेहलता को लगाना न था
प्रिय प्रेम के पंथ को जाने बिना इस ओर को पैर उठाना न था
नित नूतन चाह बढ़ाना न था हितू होके 'दिनेश' भुलाना न था
यदि आना न था अपनाना न था कलपाना न था तरसाना न था

(2)

विरहानल में गर झोंकना था तो सनेह सुधा को पिलाना न था
सुख देना तुम्हें जो खा था नहीं सिर पै दुख बज्र गिराना न था
मंझधार में नौका डुबाना जो थी दिलदार हमें अपनाना न था
यह बाजीगरी दिखलाना न था कलपाना न था तरसाना न था।

भूल गये

(3)

लखि मोहिनी सूरत प्यारी तेरी अंग अंग ये फूल से फूल गये
न विचार किया मन देत सभै प्रेम तव प्रेम हिंडोर पै झूल गये
तुमने जो कहा कबूल किया न तुम्हारे कभी प्रतिकूल गये
अब कैसे प्रिये मुख मोड़ती हो कुछ बोलो तो क्या हम भूल गये

प्रेम प्रवाह में

|4|

बोलो उठाया नफा किसने कब आकर के इस इश्क की राह में

छानते खाक को लाखों फिरैं गुमराह हुये कितने पड़ चाह में

लाखों के प्राण पखेरू गये उड़ लाखों पड़े दुख सिंधु अथाह में

देखते नीचा हैं लाखों सुनो प्रिय प्रेमिका के पड़ प्रेम प्रवाह में

|5|

'नहीं' की पूर्ति में श्रीमान सनेही ने कविवर की उपाधि दी थी

स्वप्न में लखो री सुख कंद नंद नंदन को जाके अंग अंगन की उपमा जुरे नहीं

आयो मुसकात गही बाँहि बाँहि को पसार मैं तो झुंझलात वो तो नेक हू डरै नहीं

बैठो परयंक पै निशंक भर अंक मोहिं टूटी नींद देखो कहूं लखि हू परे नहीं

कोटिन उपाय करहारीबिसराय तऊ वा दिन को द्रश्य मम द्रुष्टि से टरे नहीं

|6|

तुम भूल हमें भले भूल गये हमें प्रेम का पंथ निबाहना है

तुम आओ न आओ कभी घर में हमको नहीं देना उलाहना है

भला सोचो विचारो तुम्हीं दिल में इसमें नहिं होगी सराहना है

तुम चैन की वंशी बजाते रहो यहं रोना बदा औ कराहना है

वियोगिनी

|7|

आयो मन भावन सुहावन मास सावन को आये मन भावन न कैसे बंधायें धीर

घर न सुहात न सुहात वन बाहर हू जिय घबरात न बेधत मनोज तीर

तापै कूक कोकिला की हिय उपजावे हूक पपिहा की धुन सुन उठत करेजे पीर

जल बिन मीन जैसी तड़पूं मैं आठों याम हों तो हतभागिनी जो आये नहीं मेरे वीर

शरद वर्णन

|1|

कर सरितान मध्य सलिल सुहाने स्वच्छ मग में न दीखै पंक रेणु जब लेश को

अमल अकाश गयो खंजन दिखाने लगे गाने लगे भ्रंग दे दे सरद संदेश को

हेरि के हराने लगे हीरन की ज्योति उड़ सुधा बरसाने लगी भूमि धार भेष का

फूलो न समात चित्त चौगुनो उछाह भरो देख रहो इक टक चकोर राकेश को

(2)

मेघ घहरान चमकान विज्जु को है गयो झिल्ली दादुरन को न शोर रहो लेश को
सरिता सरित सर विमल भये है जल निकसत सरोज देत शोभा विशेष को
फल फूल औषधीं लतायें शस्य देख दिव्य हो अनुमान प्रकृति घोर है सु मेष को
अमल अकाश आस पास महि फूले काश देखत बड़ो है गर्व दुगनो राकेश को

बसंत

(1)

लुंज तरू पुंजन में आयेंगे नवीन पात जहां तहां दुलहा से सज्जित दिखायेंगे
शीतल सुगंध मंद मारूत चलेगी अब सुंदर रसालन पै बौर छवि पायेंगे
कुहू कुहू कोकिला करेगी राज बागन में चटक गुलाब मन मोद को बढ़ायेंगे
गुंजत फिरेंगे अलि वृन्द अलमस्त होके साज के समाज ऋतुराज आज आयेंगे।

मंत्र से स्वतंत्रता के गूंजता स्वदेश हो

-----

(1)

विनय सुनाऊं शीश नाऊं पद पंकज पै हरा भरा भारत हमारा करूणेश हो
फूले फले प्रेम की लतायें हिंद वाटिका में काम क्रोध मोह का मन में लवलेश हो
होवे धीर वीर और साहसी गंभीर प्रिय आनंद मगन दूर दारिद कलेश हो
स्वर्ग बन जाये प्रभो कामना दिनेश की ये मंत्र से स्वतंत्रता के गूंजता स्वदेश हो

वीर रस

(अभिमन्यु की माता अभिमन्यु से कहती है)

(1)

प्रण कर आया पुनि आयो प्रेम मंदिर क्यों दिल दहलाया रिपु बैठा देख छाती में
तोड़ के अनीति दुराचार के कपाट द्वार झाड़ झाड़ खंग शीश काट कुरू जाती में
छक्के तू छुड़ा दे कलपा दे महारथियों को धाक को जमा दे जाय शत्रु उतपाती में
जा तू बस जा तू रण जौहर दिखा दे वीर लग जा तू तीर सा निशाना बन छाती में

(2)

(अभिमन्यु का धर्मराज युधिष्ठिर से कहना)

व्यूह रच काल के सुग्रास में हुआ है कौन होकर मदान्ध किया हेर फेर किसने
किसने पियो है दूध कौन जननी का लाल किसके हिये में बाल किया जोर किसने

नाक दम कराऊं न कदम हटाऊं किया अग्नि के मुकाबले ये तृण ढेर किसने
काले विषधर की मरोड़ी पूंछ किसने है सोता हुआ मांद से जगाया शेर किसने

(3)

(शिवाजी की कृपाण)

सर सर कर धर सर से विहीन कर काटती थी करबी सी फौज मुगलाने की
खुल खुल खेल खेल खेलती विपक्षी उर ठाने मन ठान शत्रु रक्त में नहाने की
म्यान से कढ़त म्यान बाहर है जात देख बैरी दहलात जगै मिलै न लुकाने की
बिल्ली सी दबकि फौज दिल्ली में दिखात जभी चमकै कृपाण शिवा वीर मरदाने की।

मूल्यांकनः

मुंशी तुलसीदास 'दिनेश' द्वारा सृजित काव्य साहित्य जो इनके पौत्र श्री इन्द्रप्रकाश गुप्ता, प्रवक्ता ब्रह्मानन्द इण्टर कालेज राठ के पास संग्रहीत है, के अवलोकन से पता चलता है कि ये हिन्दी काव्य के एक सशक्त हस्ताक्षर थे। इनकी कविताओं में कहीं भी काव्य दोष नहीं दिखायी देता। सभी प्रकार के छन्दों को इन्होंने अत्यंत सरल व बोधगम्य शैली में लिखा है। इसके अतिरिक्त इनके द्वारा शताधिक गीतों की भी रचना की गई है। हिन्दी भाषा का इन्हें अच्छा ज्ञान था। समस्या पूर्तियां करने में ये अत्यंत निपुण थे। श्रंगार, वियोग,वीर रस एवं भक्ति भाव से पूर्ण सभी प्रकार की रचनायें इन्होने की हैं। राष्ट्र-प्रेम की भावनाओं से ओत प्रोत इनकी रचनायें मन को छूने वाली हैं। जनपद के श्रेष्ठ कवियों में कवि को रखा जाना उचित ही प्रतीत होता है।

(2.1) वैद्यभूषण मथुराप्रसाद गुप्तः

- - - - - - - - - - - - - - - - -

परिचयः

- - - - -

वैद्यभूषण मथुराप्रसाद गुप्त का जन्म वि0 1970 में तहसील राठ के अंतर्गत ग्राम भैंसायं में हुआ था। इनके पिता का नाम रामप्रसाद गुप्त था। ये वैद्य थे और कोट बाजार राठ में इन्होंन अपना चिकित्सालय खोल रखा था। इनके एक मात्र पुत्र श्री रामशरण गुप्त आजकल राठ में ही रहकर व्यवसाय करते हैं। कवि मथुराप्रसाद गुप्त भारतीय चिकित्सा परिषद के वर्षों तक सदस्य रहे। इनकी मृत्यु लगभग सन् 1980 में हुई।

काव्य कृतियां:

- - - - - - - -

ये मुख्य रूप से फागकार थे किंतु गीत एवं छन्द भी इन्होंने लिखे जो इनके पुत्र के पास अप्रकाशित रूप में संग्रहीत हैं। इन्होंने 'नवयुवक प्रोत्साहन' नाम की एक पुस्तक लिखकर स्वयं ही उसे वि0 1994 में प्रकाशित कराया था। इनकी दूसरी प्रकाशित पुस्तक 'फाग विनोद' है जिसमें फागें लिखीं गयी हैं। कुछ रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

कवि ने स्वयं अपना परिचय इस प्रकार दिया है:-

दोहा: पोस्ट मुस्करा कात हैं, जिला हमीरपुर मांय
वहां नदी के तीर पर, जन्म भूमि भैंसांय।
अपनी जन्म भूमि बतलाई, सुनों सुजन जन भाई
भुर्जी कुल में जनम हमारो, धन्दो बेदकताई।
यह भूषण की पदवी हमने, आयुर्वेद की पाई।
कवि मथुरा राधा नगरी मां, फाग राग में गाई।

(2)

अरझो मन राधा में मेरो, निनुरत नहीं निनेरो
वंशी कैसी डोर लगी नित, चकरी कैसो फेरो।
कल्पवृक्ष के ऊपर पंछी, निसदिन लेत बसेरो
मधुकर मथुरा रहत हमेशा, पदपंकज को चेरो।

जुरे पंच सरपंच आयकें, करत नहीं निनुवारो।

मथुरा कात गरीबन को, अब कैसें होयनवारो।

कवि द्वारा रचित भयानक रस से ओत प्रोत फागें भी बहुत सुंदर हैं जिसे सन् 1942 की क्रांति के समय लिखा गया था। कुछ नमूने देखिये:-

बाजी भारत की रन भेरी, सुन सन् ब्यालिस केरी।

क्रान्ती दल की धूम मची थी, बलिया में जिन केरी।

इकतें एक हते भट बांके, तरूनई रंग रंगेरी।

दहल उठी अंग्रेजी 'मथुरा' देख फौज इन केरी।

(9)

भारत छोड़ो कौ प्रण ठानों, फिर न पांव समानो।

दिल्ली छोड़ भगौ लन्दन खां, जेई शब्द सुनानो।

भगे जात अंग्रेज राठ उठ, ऐसो भूत समानो।

सेंतालीस पन्द्रह अगस्त में, भारत भाग जगानो।

लाल किले के ऊपर मथुरा विजय केतु फहरानो।

मूल्यांकन:

वैद्य भूषण मथुराप्रसाद गुप्त की उपर्युक्त फागों के अवलोकन से पता चलता है कि वे एक अच्छे फागकार थे। उनके द्वारा रचित वीर रस, श्रृंगार रस के साथ साथ नीतोपदेशक फागें उनके एक अच्छे कवि होने का प्रमाण हैं , फागों के अतिरिक्त गीत एवं सुंदर छन्दों की रचना भी उनके द्वारा की गई है जो पूर्णतया काव्य दोष से मुक्त हैं। संक्षेप में उन्हें साहित्यिक दृष्टि से एक अच्छा कवि माना जा सकता है।

(22) बाबूराम पटवारी:

परिचय:

बाबूराम पटवारी का जन्म राठ तहसील के पवई ग्राम में सन् 1905ई0 के लगभग हुआ था। ये कायस्थ कुल में पैदा हुये थे। मिडिल तक इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। 15 वर्ष की आयु में ही इनके

पिता जी लालजी प्रसाद निगम का स्वर्गवास हो जाने के कारण इन्हें पटवारीगीरी मिल गई थी। ये प्रसिद्ध आल्हा गायक थे। इनके गुरू थे चंडौत निवासी गजाधर प्रसाद दर्जी। इन्होंने गोकुल प्रसाद पाण्डेय कुपरा (राठ) से ज्योतिष तथ पं० वृन्दावन वैद्य नौरंगा (राठ)से वैद्यक का ज्ञान प्राप्त किया। इनकी मृत्यु 20 जून 1975 ई०में हुई।

काव्य कृतियां:

स्व० बाबूराम पटवारी अच्छे कवि होने के साथ साथ प्रसिद्ध आल्हा गायक भी थे। इनका कोई प्रकाशित काव्य साहित्य नहीं है किंतु उपलब्ध अप्रकाशित काव्य संग्रह उनके अच्छे कवि होने का प्रमाण देता है। कवि ने स्वयं अपना परिचय इस लावनी में दिया है।

(1)

त्रेता जुग से प्रकट हुआ है, है अनुसुइया नाम।

जन्म भूमि है वहां हमारी, पवई विदित हो मेरा ग्राम।

पूरब दिशा में अनुसुइया का, बना हुआ भारी स्थान

पश्चिम दिशा में नीमनाथ जी करते सबका पूरा काम।

उत्तर उत्तम सक्ती माता उनको मेरी है परनाम।

दक्षिण दिसि में पर्वत ऊपर, अपरबली जी है सरनाम।

बीच अथाई में बना बैठका, वहीं बना मेरा निज धाम।

जन्म भूमि है वहां हमारी, पवई विदित हो मेरा ग्राम।

थाना जरिया जिला हमीरपुर राठ परगना भारी है।

चण्डौत ग्राम के गुरू गजाधर क्या टकसार निकारी है।

अपने द्वार पै झण्डा गाड़ के, मोह लये नर नारी है।

वह ना गये सुरधाम लोक को, नाम अभी तक जारी है।

कायस्थ कुल में निगम वंश है, बाबूराम है मेरा नाम।

जन्मभूमि है वहीं हमारी, पवई विदित हो मेरा ग्राम।

कवि को ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था। इसका प्रयोग उसने अपने रचनाओं में भी किया है। ऊदल के जन्म का एक सुंदर चित्रण देखिये:-

बुध रवि जो दसमें बसे, राहु भौम रिपु धाम।

राजयोग कौ जोग है, कहत गनिक गुण ग्राम

सहज जीव भृगु आठवें, मध्य बसै खग और।

होय नृपति कछु काल में, कहत सुकवि सिर मौर।

उच्च शुभ ग्रह केन्द्र घर तापर शुभ की दीति।

नृप हुई है कुल पालहै, ऊदल बैरी को न दैहै पीठि।

इसी प्रकार ऊदल के विवाह का एक सुंदर चित्रण देखिये, जिसमें वह बीमार बनकर आया था वहां दिल लगन चिकित्सा के चुटकुले प्रयोग किये गये हैं:-

(3)

लघु लायची और दाख नवेली, अरूण छुहारे लीजे।

तज पत्रज औ गिरी कमल की मिसरी तासम दीजे।

टका-टका भर सबको लीजे पीपर अर्द्ध नवेली।

कूट पीस के चूरन कीजे, सुनो प्रिया अलबेली।

पित्त ज्वर में चटनी प्यारी, शहद मेल कै खावे।

अति तृष्णा और वमन मूर्च्छा फिर ढूंढ़े नहीं पावे।

कवि को आल्हा का विवाह, आल्हा मनौवा तथा मलखान का ब्याह अत्यंत प्रिय थे। बड़ी ही रूचि व तन्मयता के साथ इन प्रसंगों को कवि गाकर सुनाता था। एक नमूना देखिये-

माहिल ने पाती लिखी कि पृथ्वीराज को देव।

जगनिक कनउज जात है, हरनागर हर लेव।

हरनागर हर लेव, कनौजे जान न पावै।

बिगर जाय सब काज साज दल मण्डरीक आवै।

धांधू चौड़ा जाय धाय, कीजै नहीं काहिल।

पवन गवन सम जात लिखी पाती या माहिल।

कवि ने ख्याल, लावनी, दोहा, सोरठा, छप्पय, किरवान तथा चौपाई सभी लिखे हैं। आधुनिक विषयों पर आल्हा शैली में लेखनी चलाई है। जमींदारी उन्मूलन पर कवि का एक सुंदर छंद देखिये-

हुकुम निकाला गवर्नमेन्ट ने, कृषि विभाग के रूलन में।

करो दस गुना लगान दाखिल, जमींदार उन्मूलन में।

लंका आक्रमण के समय की एक सुंदर फाग का नमूना देखिये-

बांधे सेतु सिन्धु रघुराई, कपि दल संग लिवाई।

उतर पार सब जाय रामदल, घेर लेत गढ़ जाई।

गिर बन बाग बगीचन मरकट, चहुं दिस देय दिखाई।

गढ़ लंका में प्रभु की मथुरा, लागी फिरन धुआई।

इस संसार में कोई अमर नहीं है, सभी को एक दिन जाना है, इस आशय की कुछ सुन्दर फागों के नमूने देखियेः-

(4)

यो तन सदा न तोरो रैहे, एक दिना मिट जैहे।

ज्यों जल बीच मिटत बलबूला, पवन लगें ढुर जैहै।

पिंजड़ा छोड़ उड़े जब पंछी, फिरना तुम्हें दिखैहे।

जा है वस्तु विरानी मथुरा, आहै सो लै जैहै।

(5)

इक दिन चलो सबई को जानें, बनो यहां न रानें।

आठ पहर बत्तीस घरी मां, जब जिह औसर पानें।

हिल मिल चाल चलो सब ही सें, ई दिन सदा न रानें।

मथुरा कात करौ न ऊदम, दिना चार के लानें।

(6)

अब मन राम नाम गुन गाले, मिटत जनम के छाले।

भाई बन्धु सब आन तुम्हारे, ना लये बांट कसाले।

जुर आये सब पुरा गली के, ना उनहूं प्रत पाले।

मथुरा काये भरम मा भूलो, बिगड़ी अपन बनाले।

आज के युग में व्यक्ति कितना अवसरवादी तथा पक्षपाती हो गया है इसका एक सुंदर चित्रण देखिये-

(7)

आ गओ अब कलजुग को पारो, सतजुग दे गओ टारो।

मूं देखी सब बात करत हैं, तकैं चीकनो द्वारो।

अक्टूबर से हुआ दाखिला हुई किसानों की शिक्षा
बनो भूमिधर दाखिल करके जिसकी जैसी हो इच्छा।
पटवारी घर जाय ग्राम में सबको दीनी यह दिच्छा।
छोटा परचा दाखिल कर दो, दीजे मुझको यह भिच्छा।
नाहीं करो न दुर्जन दादी गड़े धरे हैं चूल्हन में।
करो दस गुना लगान दाखिल जमींदार उन्मूलन में।

मूल्यांकन:

स्व0 बाबूराम पटवारी का उपलब्ध काव्य साहित्य इस बात का प्रमाण है कि ये जनपद के श्रेष्ठ कवियों में से थे। ज्योतिष तथा वैद्यक का अच्छा ज्ञान रखने के साथ साथ ये एक अच्छे आल्हा गायक भी थे। बुन्देलखण्ड तथा बुन्देलखण्ड के बाहर के जनपदों में जाकर इन्होंने आल्हा गायन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। छन्द, ख्याल, लावनी, सोरठा, छप्पय, कवित्त , सैरें तथा चौपाई सभी की रचना करने में ये कुशल थे। कठिन विषयों को भी सरल एवं रोचक शैली में प्रस्तुत करने में निपुण थे। अपने काव्य सृजन में जिस प्रकार से शब्दों का चयन ये करते थे उससे पता चलता है कि हिन्दी भाषा का इन्हें अच्छा ज्ञान था। धार्मिक ग्रन्थों एवं ऐतिहासिक ग्रन्थों का भी इन्हें पर्याप्त ज्ञान था।

(23) रामदयाल वर्मा:

जीवन परिचय:

इनका जन्म वि0सं0 1970 में तहसील राठ के ग्राम इटैलिया में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मुल्ला वर्मा था। ये लोध राजपूत थे। ये स्वतंत्रता सेनानी भी थे। वैद्यक का इन्हें अच्छा ज्ञान था। इनकी मृत्यु 17 अक्टूबर सन् 1986 ई0 में हुई।

काव्य कृतियां:

इनकी 'फाग विजय' तथा लवकुश काण्ड' नाम से एक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। शेष अधिकांश साहित्य अप्रकाशित ही है जो इनके परिवार वालों के पास उपलब्ध है। ये अच्छे फागकार थे। फागों के अतिरिक्त छन्द एवं गीत भी इन्होंने लिखे हैं इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

हिन्दी भाषा का कवि को कितना अच्छा ज्ञान था इसका प्रमाण कवि की नीचे दी जा रही एक फाग है जिसमें बसन्त का वर्णन किया गया है।

॥1॥

आली सर मनोज ने मारे, त्रिविध समीर सहारे।
किंसुक सुमन कुटिलता चहुं दिस, तानें खड़े दुधारे।
पिकगन धुन सुन चैन न पल भर, लेवें प्रान निकारे।
रामदयाल काम रितुपति के, हमनें कहां बिगारे।

प्रियतम के विरह में व्याकुल विरहणी की व्यथा का सुन्दर चित्रण इस फाग में देखियेः-

॥2॥

दोहा: सजन सनेही तज गये, विकल रहत मम वीर।
करन कहा लागत मदन घटन कहा लग धीर।

प्रीतम बिना पूस के पाले, सकहिं न काट दुसाले।
निकर गयी जनवरी अरी मैं, डरी मरी सी परी न चैन
माह शिशिर फरवरी बसर न, असर हृदय में कीन्हों मैन
गूंजत और रसाल पर ठौर-ठौर लागे दुख देन।
पिया बिना री आफत मारी, टरै न टारी यह दिन रैन।
नाहीं पीर पिया ने हेरी, गुइयां किसमत फूटी मेरी।
ऐसे दुख नहिं जात सहे री दिल घबरावै।
लागे फागुन मार्च महीना, मोहन ताकत तनहं रही न
होरी खेलें खें निकरी न नहीं कछू भावे।

दोहा: होरी सोतन जरत है परे जान के लाले।
उड़त अबीर गुलाल नार नर घूमत मद मतवाले।
पीराई छाई लखौ, चतुराई गये आये।
नहीं चेत अप्रैल में कछु गृह काज सुहाये।
करन कहा कल परत न छन पल, कल कोकल के सालें
कोकिल कूके, सुब जी सूखे, उठत भभूकें विकल परी।
चक्र चकोरे बोलत ओरे , सुन-सुन शोरे जात मरी।
किन सुख डारन वार आचरन, लख कचमारन की मजरी।
त्रिविध समीरा जैसे तीरा, लागत हृदय करी।

छन्द: है बैसाख गई के हाल, मनमथ डारो हम पे जाल
लाये जेठ जून विकराल सन घर आये।
चहुं दिश लपटें चलत घनेरी, देहिया जली जात है मेरी।
बालम जाय विदेश बसे री, मोहे तलफाये।
आंगन आगी सो तपत चलत परत पग छाले।
मची कलह तन बदन में जेठ मास अति साले

[3]

राजा हरिश्चंद्र की दान गाथा पर एक सुंदर फाग नीचे दी जा रही है:-

दोहा: कहत कथा हम आज जू, हरिश्चन्द्र नृप कीन्ह,
कीन्हे दान धन धाम सब, राज्य तिलक दे दीन्ह।

टेक: दीन्हो धाम कोष सब दानी दान करी रजधानी।

ख्याल: रजधानी है अवधपुरी, जहां हरिश्चन्द्र बसे नृपाल।
पालत प्रजा पुत्र सम सारी, नाहीं कोई दुखी बिहाल।
हाल सुनो नृप रखें एक रानी, तारा रोहिताश्व एक लाल।
बालक केवल एक भूप को नाहीं और दूसरा लाल।

छन्द: लालन सहित भूप सुनि दानी, तेसी सतवन्ती है रानी
सुनिये तिनकी सत्य कहानी
जो है कीन्ही यज्ञ अनेक, केवल बाकी सौ में एक
ताकी चिन्ता रहत विशेष नृप मन दीन्हा।.

दोहा: दीन्हें यह मन में रहत, बस हरदम नृप राय
नाहिं चैन जब लग नहीं, यज्ञ पूर्ण हो जाय

छन्द: जो यह हाल सुनो सुर राई, सुन कर गये बहुत घबराई
लीन्हों कौशिक मुनिह बुलाई, बस वचन कहत
कहत न बनत नही सुधा बानी, धीरज धार जोर युग पानि
बोले स्वामी यह रजधानी, अब नहीं रहत।

उड़ान: रहत नहीं मम धाम यह, जो भूपत मन ठानी।
ठानी पूरण होय तो लैबे मम रजधानी।

दोहा: रजधानी तेरी रहे, कहे महा मुनि बैन
वचन सुनत तेरे देशपत, मम मन भयो अचैन।

टेक: चैन करो मैं जाकर करों सत्य भूप को हानी।

ख्याल : रानी से महलन में आकर कहा हाल भूपत सारा।

सारा राज्य धाम धन दीन्हों, विकल भई सुनकर तारा।

तारा समुझावत भूपत र्खें, सुनो वचन मम भरतार।

भरतार नहिं सत्य छोड़िये, चलो बिकन सुत नर दास।

छन्द: दारा की सुनकर ये बानी, सौंपो ताज विप्र को आनी।

बोले भूप जोर युग पानी अब है का देर

देरी कीजिये न दुज ज्ञानी, बेंचे हमें और सुत रानी।

दोहा: कायर पीछा नीच तें, गधा मूर्ख अज्ञानी।

ज्ञानी रामदयाल कहत है, रहो न अरि को पानी।

मूल्यांकन:

उपर्युक्त रचनाओं एवं अन्य अप्रकाशित रचना संग्रह के अवलोकन से पता चलता है कि स्व0 रामदयाल वर्मा एक अच्छे फागकार थे। इन्होंने मुख्य रूप से फागों की ही रचना की है। इनकी फागों में बुन्देली को सरल एवं बोधगम्य शैली में प्रयोग किया गया है। बुन्देली के शब्दों पर इनका अच्छा अधिकार प्रतीत होता है। हिन्दी साहित्य में इनका योगदान उल्लेखनीय है।

(24) पं0 बच्चीलाल तिवारी

परिचयः

पं0 बच्चीलाल तिवारी का जन्म वि0 1948 के लगभग ग्राम सैदपुर, राठ में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मंगल तिवारी एवं माता जी का नाम श्रीमती गंगी था । ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। ये राठ तहसील के ग्राम सैदपुर में अपनी बुआ के घर रहते थे । इनके पिता का जन्म स्थान ग्राम चिल्ली (औंता) था। दादा रामनाथ ने इन्हें पुरोहित बनाकर कुछ जमीन लगा दी थी। इन्होंने कक्षा 4 तक शिक्षा ग्रहण की थी। इनके एक पुत्र पं0 हरिदास शर्मा हैं ये फागें स्वयं बनाते एवं गाते थे। किन्तु लेखन कार्य ये नहीं करते थे। लगभग 85 वर्ष की आयु में वि0सं0 2033 कार्तिक सुदी 6 शुक्रवार दिनांक 29.10.76 को इनकी मृत्यु हुई। ये संस्कृत के योग्य विद्वान थे और पुराण प्रवचन का कार्य करते थे।

काव्य कृतियां:

इन्होंने चौकड़िया और छन्ददार दोनों प्रकार की फागें काफी संख्या में लिखी हैं इन्होंने फागों को द्विज बच्चीलाल या भुजबल, जगदीश के नाम से भी लिखा है उक्त दोनों सज्जन इनके निकट संबंधी रहे हैं, नमूने के लिये कुछ फागें दी जा रही हैं।

(1)

कैसे सिय चूड़ामणि पाई, भेद कहो समुझाई ।
कीनें रची कौन को दीनी, किहिं विधि सिय पंह आई।
शोक वाटिका बीच वायसुत, जनकसुता सें पाई।
कवि जगदीश चिन्हारी प्रभु की, यही दीन दिखलाई।

(2)

आली मनमोहन न आये, लये कुबजा बिलमाए ।

जब सें गये सुघउ न लीन्हीं, नहिं सन्देश पठाए ।

दिन नहिं चैन रैन नहिं निदिंया, ये जीरा तरसाए।

द्विज भुजबल भई विकल राधका, नैनन नीर बहाये।

(3)

पति कौं विधवा नार झुलावै, छलरावै दुलरावै।

मचल जात पलना बिच लालन, मीठी तान सुनावै।

दशरथ पितुको दीर्घ लगा कें, सोई दूघ पियावै।

कवि जगदीश भेद जो बरनै, सोई मरद कहावै।

(4)

दोहा: मथुरा में वसुदेव गृह जनम लीन्ह घनश्याम।

उतै अवधपुर में भये दशरथ के ग्रह राम ।

दशरथ के गृह राम, भये हैं आनन्द भारी

उतै नन्द बबा घर करैं केल बलराम मुरारी ।

कहें द्विज बच्चीलाल भक्त जन के हितकारी।

विनय करौं कर जोर प्रकट भये दोउ अवतारी ।

टेक: प्रकटे अवधपुरी में रामा, गोकुल में घनश्यामा।

छन्द: प्रकटे अवधपुरी में राम, खेलें गोकुल में घनश्याम।

शोभा आंगन में है धाम, उतै कुंजन में

इनके संग में लक्ष्मन तात, उनके बलदाऊ से भ्रात

इनकी कौशिल्या सी मात, जसुदा उनमें।

उड़ान: इतै अवधपुर में गुन गावैं सीतापति अब रामा।

उत मथुरा में राधा के संग केल करैं घनश्यामा।

टेक: इतै राम बन खैं पगधारे, उत मधुबन सुख धामा।

इतै कौशिल्या पूव दिखावै दौरत आवैं रामा।

उतै यशोदा माखन देवै, सुखी होंय सुखधामा।

मूल्यांकन

उपरोक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि पं0 बच्चीलाल तिवारी छन्ददार व चौकड़िया दोनों ही प्रकार की फागों की रचना करने वाले अच्छे कवि थे। भक्ति भाव पूर्ण रचनायें ही मुख्य रूप से इन्होंने लिखी हैं।

(25) लाला रामनाथ:

जीवन परिचय:

इनका जन्म वि0 1943 के लगभग राठ तहसील के अंतर्गत ग्राम गल्हिया में हुआ था। ये भी फागकार थे। इनकी मृत्यु वि0 2007 के लगभग 74वर्ष की अवस्था में हुई।

काव्य कृतिया:

लाला रामनाथ ने प्राय: भक्ति रस पर ही फागें लिखी हैं ये स्वयं फाग फड़ों में गाते भी ये कुछ फागों के नमूने यहां दिये जा रहे हैं:-

(1)

प्रभू मैं दूसर को नहिं जानो, माया रहित समानों।
तू तो अकथ अनादि पुरूष हैं, सब जग में पहिचानो।
काम क्रोध मद लोभ बीच फंस, निस दिन फिरत भुलानो।
मैं अति कायर क्रूर निपट हों, तुमसे नाम सुनानो।
रामनाथ आधार तुम्हारो, ढूंढत फिरत दिमानो।

(2)

जै प्रभु दीनबन्धु जदुराई, शठ सुमरन कर भाई।
मो अस दीन कुटिल कपटी सों, कौन चूक बन आई।
हों प्रभु दीनदयाल सांवरे, आरत हरत कन्हाई।
जद्यपि भूल हॉय सौ मोहन, कृपा करो मो पाई।
रामनाथ है दास तिहारो, चाहत है सेवकाई।

मूल्यांकन:

लाला रामनाथ ने केवल भक्ति रस पर ही फागें लिखी हैं। इनकी संख्या भी कम है। किन्तु साहित्यिक दृष्टि से उन्हें एक अच्छा कवि माना जा सकता है।

तहसील कुलपहाड़

ǁ1ǁ श्री काशीराम साहू:

जीवन परिचय:

श्री काशीराम साहू का जन्म कुलपहाड़ ǁमहेबाǁ में सन् 1924 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री बदलूप्रसाद था। इन्होंने सन् 1937 में मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की विद्यार्थी जीवन से ही इनकी कविता में रूचि है। ये जीविकोपार्जन हेतु कवितायें लिखकर उन्हें छपवाकर स्वयं बेचते हैं। वर्तमान समय में ये मु0 कठवरिया - कुलपहाड़ में निवास करते हैं।

काव्य कृतियां:

श्री काशीराम साहू अपनी रचनायें मुख्य रूप से बुन्देली में ही करते हैं। ये गारी, कवित्त, ख्याल तथा छन्द लिखाते हैं। धार्मिक पुस्तकों के विभिन्न प्रसंगों को आधार बनाकर की गई इनकी रचनायें ग्रामीण जनता में बहुत लोकप्रिय हैं। लगभग दो दर्जन लघु पुस्तकें इनकी प्रकाशित हैं जिनमें ǁ1ǁ कमल कली ǁ2ǁ चन्द्रकली ǁ3ǁ हरदौल ǁ4ǁ कृष्णावतार ǁ5ǁ मित्र मिलन ǁ6ǁ रामजन्म ǁ7ǁ भर्तृहरि चरित्र ǁ8ǁ अनोखा ख्याल ǁ9ǁ श्री राम गुणगान कीर्तन ǁ10ǁ अलबेला कीर्तन ǁ11ǁ गुलाब का फूल कीर्तन ǁ12ǁ फाग चौकड़िया ǁकई भाग प्रकाशितǁ ǁ13ǁ दान लीला ǁ14ǁ पुष्प कली ǁ15ǁ प्रेम कली ǁ16ǁ विचित्र रेखा ǁ17ǁ कुसुम कली प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त अप्रकाशित कवित्त व सवैया भी काफी संख्या में इनके पास संग्रहीत हैं।

इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

ǁ1ǁ

ǁ 'गूढ़ दान लीला' प्रकाशित पुस्तक सेǁ

कृष्ण : वृत कौन सो है कहौ आज सखी काहे भोर से आप नहावतीं हौ।
वन बीच फिरौ मग में भटकीं, किन भूप की बेटी कहावतीं हौ
कवि काशी कहैं बतलाव हमें, तुम गीत ये कौन सो गावतीं हौ।
जिनको इसनेह तुम्हारे हिये, उनकौ नहिं दान चुकावतीं हौ।

राधाः हम कातिक मास उपास रहैं, जल ढार प्रभू कौ तो ध्यान धरें।
पग धोय पियें मनमोहन के, नित ही हरि का गुणगान करैं।
कवि काशी कहैं हंस प्रेम पियें, यदुनाथ के साथ को भाव भरैं।
कहुं देख न ले अब कोऊ हमें, इस कारन तो ब्रजनार डरैं।

पद

भगवान दरश हमें कब दैहौ।
लेकर जनम ई ब्रज गोकुल में, कब आके प्रभू तुम रैहौ।
नख पै गोवरधन गिरि धर के, कब मोरी बहियां गैहौ।
हम हैं सेवक तुम हो स्वामी, कब मोरी अब सुध लैहौ।
बिन्द्रावन की कुंज गलिन में, कब दहिरा माखन खैहौ।
मधुर मुरलिया धर अधरन पै, कब राधा मोहन कैहौ।
कंस कुटिल को मार के मोहन, कब यश के बीजा बैहो।
काशीराम कहैं देवकी की, कब बेड़ी काटन जैहौ।

(2)

(गारी-पुष्पकली, प्रकाशित पुस्तक से)

धन धन श्री हरदौल बुंदेला ऐसी उम्मर बारी में,
विष खाये ज्योनारी में।
चुगलन ने जे जाल बिछाये, तुमने भेद समझ न पाये,
अपने नाहक प्राण गंवाये।
चले गये सुरधाम लोक को, रहे नहीं सिनसारी में,
विष खाये . . . . .
जिनके संग में नौ सै ज्वान, उन सबही ने तज दये प्रान।
राखी अपने कुल की शान।
भैया सगे बने हैं दुश्मन, रहे नहीं हुशियारी में
विष खाये . . . . .
नृप जुझार खां दया न आई, विष की ज्योंनारी बनवाई,
कह न सकी कछू भौजाई।
टप टप नीर चुवत नैनन से, भोजन परसे थारी में,
विष खाये . . . . .

कुंजा बहिन के काज समारे, जग में जाहिर नाम तुम्हारे।

तुमने राखो मान हमारे।

प्रगट भये हरदौल बुंदेला, थे गज बाज सवारी में

विष खाये . . . .

जिनकी धर्म ध्वजा फहराई, गावत हैं गुन लोग लुगाई,

महिमा तीन भुवन में छाई .

काशीराम कहत सिर नाकें, छन्द रचत हैं गारी में,

विष खाये . . . . .

(3) ख्याल

मिथलापुर में देश देश के, भूप जुरे हैं मनमाने,

है कोई वीर उठावै धनु, यह जनक भूप ने प्राण ठाने।

कपटी कुटिल नरेशन ने बल पहले अपनो कर हारो,

हिला सके ना धनुष जरा भी तिल भर टरो नहीं टारो।

मन मलीन जब जनक कौ देखो, रामचंद्र ने पग धारो।

उठा सरासन लगे घुमावन, छिन में टोर धनुष डारो,

मगन भये मन में नर नारी, भेद काहू ने ना जानो।

रामचंद्र की छबि लख करके, मगन भये हैं नर नारी

धन्य भाग जो दरशन पाये, प्रभु चरनन की बलिहारी

देव दनुज छबि देखात खुश भये बोलत हैं जय जय कारी।

'काशीराम' भूल न जइयो, सुध मोरी करूणा कारी

रूप अनूप राम कौ लखकर राजन मन में हरषाने।

मूल्यांकन:

जैसा कि उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है श्री काशीराम साहू एक बुन्देली के कवि हैं। प्राचीन ग्रन्थों का गहरा अध्ययन कर उनके महत्वपूर्ण प्रसंगों को अपनी कविताओं को आधार बनाकर उन्हें रोचक व सरल शैली में कवि द्वारा काव्य सृजन किया गया है इनकी रचनायें भावपूर्ण हैं। कवि का प्रयास सराहनीय है।

(2) श्री रामलोचन नायकः

जीवन परिचयः

श्री रामलोचन नायक का जन्म तहसील कुलपहाड़ के अंतर्गत ग्राम बैंदो में 14 जून सन् 1927 को हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 नारायण दत्त नायक तथा माता जी का नाम श्रीमती श्यामबाई था। इन्होंने एम0ए0 एल-एल0बी0 तक शिक्षा प्राप्त की। ये बी0डी0ओ0 पद पर कार्यरत रहे। सन् 1985 में इस पद से ये सेवानिवृत्त हुये। इसके पूर्व इन्होंने पंचायत इन्स्पेक्टर व जिला पंचायत अधिकारी के पद पर भी कार्य किया। वर्तमान समय में ये मुहाल भटियाना पुरा महोबा में निवास करते हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। ये गीत, दोहे तथा अतुकान्त रचनायें लिखाते हैं। अप्रकाशित रचनाओं का संग्रह इनके पास है। इनकी कुछ रचनायें निम्नांकित हैं।

(1)

दोहे

जय वक्रतुण्ड गुणधाम, मेटन सकल कलेस,
जय अखिल विश्व प्रमान, ब्रह्मा विष्णु महेस।

सरस्वती श्री गौरी, बन्दौं चरनन कूल,
अन्तस खां सीरौ करौ, नासो कलुष समूल।

दूर करौ बाधा सकल, रामदूत हनुमान,
रामचरन मनुआ रमै, तज विषयल की खान।

निराकार है ब्रह्म कै, धरै रूप आकार,
दुविधा तज कौनो भजो, मिलि है करत पुकार।

ईसुर मिसरी की डली, मीठी चारहु ओर,
उलट पुलट मीठी लगै, चाहे चाखो फोर।

निज आनन दर्पण लखौ, पोंछ पांछ चहुं ओर,
ईसुर की छवि देख लो, पौछे मन की कोर।

(2)

(पन्द्रह अगस्त पर)

आज पन्द्रह अगस्त है, अतः बधाई लीजिये
बधाई है, बधाई है पर किसको और किसलिये
क्या भारत के नागरिक को, देश के पीड़ा के लिये
अथवा अपने कृत्यों पर न आने वाली व्रीड़ा के लिये
आज नेता हो या मतदाता करके प्रचार जातिवाद का
मांगता है वोट नाम पर आरक्षण के
कर्णधार हमारे देश के लेते हैं उत्कोच,
बहाने से आर्थिक उदारीकरण के लक्षण के
गिराया जाता है मनोबल, सेनाओं का सीमा पर
देकर दुहाई मानवाधिकार की
प्रयास है कि दोषी बंबई और सहारनपुर काण्डों के,
न आ पावें परिधि में, कानून के विचार की।
ऐसी परिस्थिति में देना बधाई होगा केवल आत्म प्रवंचना
अगर बनना है पात्र बधाई का तो पहले सुधारो चरित्र अपना।

(3)

डाकखाने पर हमला रेलवे स्टेशन पर उत्पात
चार बसें जलीं ठप्प हुआ यातायात
यही है आज राजनैतिक, सामाजिक धार्मिक आंदोलन की रूपरेखा
उन्मीदी जुलूस ने इसी में अपना सर्वोपरि कर्तव्य देखा।
सरकार को प्रभावित करने का,
वे इसे अपना अमोघ अस्त्र मानते हैं।
पर मोटी खाल के राजनीतिबाज,
इसकी असलियत जानते हैं।
क्योंकि यही सब कुछ करके ही वे गददी पर पहुंचे हैं
जनता को ही होगी असुविधा वे तो इससे अछूते हैं।

(4)

(4)

ओ निर्मल चन्द्र कान्ति,

देखकर तुमको,

शीतल हो जाते लोचन चकोर,

विकसित हो जाता,

हृदय कुमुद

संपुटित जो का तनिक पूर्व

पाकर तेरी आभा को

मथ जाता है

मनोधदि

उठती इसमें

उत्ताल तरंगें।

मचलती सी चलती हैं पुनः

अति ऊंची हो

छूने को आतुर

तव कलित कलेवर

किंतु असमर्थ सी है भाव लहरी

पाने में तुम्हार नैकट्य

और नष्ट हो जाती है

टकराकर

कल्पना लोक के सुरम्य तट से

क्योंकि तुम बहुत दूर

अप्राप्य सी।

(5)

(जालियां वाले बाग में)

था रोका सुकोमल शिशुओं को संगीनों पर,

मदन सम वीर थे झौंके गन आग में।

गर्भवती ललनायें चलाई पेट के बल,

पोंछा सिंदूर जो शोभित था मांग में

रक्त से रक्तवर्ण की थी सारी सभा,

डाला हो लाल रंग जैसे कहीं फाग में

लोचन भूलें वे जुल्म कैसे कहो कभी,

डायर ने किये थे, जालियान वाले बाग में।

मूल्यांकनः

श्री रामलोचन नायक जनपद के एक वरिष्ठ कवि हैं इनके द्वारा सृजित रचनाओं की संख्या सीमित है किन्तु इनकी रचनायें श्रोता या पाठक के अंतःकरण को झकझोरती हैं। अतुकान्त रचनायें भी प्रवाहपूर्ण एवं सरस हैं। कवि का प्रयास उत्तम है।

(3) श्री रफीक उल्ला सिद्दीकी 'नीर'

जीवन परिचयः

श्री रफीक उल्ला सिद्दीकी 'नीर' का जन्म कुलपहाड़ (महोबा) में 2 जुलाई सन् 1947 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री चन्दे सिद्दीकी तथा माता का नाम पुनियांबाई था। इन्होंने एम0ए0 (अंग्रेजी, समाजशास्त्र, संस्कृत) तक शिक्षा प्राप्त की तथा बी0टी0सी0 एवं बी0एड0 का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। वर्तमान समय में ये पूर्व मा0 विद्यालय लाड़पुर में विज्ञान अध्यापक हैं। ये बुन्देलखण्ड साहित्य संगम के अध्यक्ष तथा शिक्षक संघ महोबा के मंत्री भी हैं।

काव्य कृतियां:

श्री 'नीर' जी ने गीत, गजल, चौकड़िया व छन्दों की रचना की है। इनकी रचनायें विभिन्न पत्रों में प्रकाशित हुई हैं किंतु इनकी अपनी कोई पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं है। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने प्रस्तुत हैं।

(1)

(ओम की महत्ता)

जीवन की कुसमय बेला पर, दुर्जन बने स्वजन सब अपने।

हमने तो विश्वास नींव पर, देख थे महलों के सपने।

हृदय विदीर्ण हुआ कुछ ऐसा, स्पंदन भी लगता थमने
लेकिन अपने मन मंदिर का, बदला नहीं पुजारी हमने।
झंझावात बुझा न पाई अर्चन के दीपक को मेरे
युग बीता पर लखी न ऊषा कैसे होंगे सुखद सबेरे
भौतिक तन न हुआ सुवासित चन्दन वन सब लगा लिया है
मीरा ने विष पिया एक दिन मैने तो हर रोज पिया है
आलोकित काया मंदिर को करता रहा अश्रु घृत डाले
हृदय दीप लौ रिझा न पायी मन के ईश्वर भोले भाले।
एक किरण की आशा में फिर, जीवन वीणा का स्वर अटका।
मन मोती को चक्षुयंत्र से लेगा परख जोहरी भटका।
होगा अखिल विश्व आभामय, पा प्रकाश उस भव्य ओम का।
'नीर' न तम रह जायेगा फिर इस धरती का और व्योम का।

(2)

(चौकड़िया बुन्देली में)

नैना रस के तला भरे हैं, कइयक डूब मरे हैं
जिनने पांव धरो छिड़ियन पे, तुरतइं रिपट परे हैं
जितने गये तरी लैबे खां, तरसे तरे डरे हैं
'नीर' पार में बैठे देखत, लोरत छरी छरे हैं।

नैना वार करत न झूंकत नई निसानों चूकत।
इतने गहरे घात करत जे, मरत मरत न सूकत।
जिनपे इनने दांव करे हैं वे अधरातन हूकत
नीर परत न कल ऊपल, जब वे घूंघट से ढूंकत।

(3)

व्यंग

एक नेता जी बड़े ही क्रुद्ध थे
भ्रष्टाचार से कर रहे युद्ध थे
बोले पकड़ माइक, यों कुछ जोश में
भ्रष्टाचार मिटाना है अगर,

एक रास्ता आता नजर

रिश्वतों की सब रकम आ जाये

मेरे कोष में।

मूल्यांकनः

श्री रफीक 'नीर' एक उदीयमान कवि हैं। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं कुव्यवस्थाओं के विरूद्ध संघर्ष अपने लेखानी के माध्यम से करने को कृतसंकल्प प्रतीत होते हैं। श्रंगार रस की रचनायें भी इन्होंने की हैं। इनकी रचनायें सरस एवं लालित्यपूर्ण है। कवि का योगदान प्रशंसनीय है।

(4) खेत सिंह यादव 'राकेश'

जीवन परिचयः

श्री खेत सिंह यादव 'राकेश' का जन्म कुलपहाड़ (महोबा) में संवत 1965 (सन 1907ई0) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री देवीप्रसाद था। इनकी मां बेलाताल की थीं जो बेरी वाली के नाम से प्रसिद्ध थीं। इनकी शिक्षा मिडिल तक थी। इनकी मृत्यु दि0 17.8.92 को हुई। श्री खेतसिंह यादव पहले अध्यापक रहे फिर 1932 से 1944 तक सहकारी समिति महोबा में कार्य किया। 1948 से 1981 तक सुपरवाइजर रहे। तदुपरान्त अवकाश प्राप्त कर घर में रहे। ये सादा जीवन जीने वाले विनम्र व्यक्ति थे।

काव्य कृतियां:

ये मुख्य रूप से ख्याल तथा फाग लिखते थे। आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक सभी विषयों पर इन्होंने लेखनी चलाई है। इनकी बहुत सी पुस्तकें प्रकाशित हैं जिनमें लगभग 5000 फागें प्रकाशित हैं।

(1) ख्याल अनमोल (भाग 1 व 2)
(2) फाग लवकुश समर
(3) फाग मोहन की मुरली
(4) ख्याल राकेश - प्रकाश
(5) वीर अभिमन्यु समर
(6) फाग सिंह दहाड़
(7) फाग राजा हरिश्चन्द्र
(8) फाग प्यारा बापू
(9) फाग सीता समर
(10) फाग यादव सुमन
(11) फाग श्याम बिछरन
(12) फाग राजा हरिश्चन्द्र
(13) फाग ऊषा अनिरूद्ध
(14) गारी लाला हरदौल चरित
(15) ख्याल राजा भरथरी
(16) गारी सुमन कली
(17) फाग सिंह दहाड़ (फाग 1 व 2)
(18) फाग जयद्रथ वध
(19) फाग हरदौल चरित
(20) फाग लंका समर
(21) ख्याल वीर हरदौल चरित पुस्तकें प्रमुख हैं।

इसके अतिरिक्त लगभग 1500 अप्रकाशित फागें कवि के पौत्र के पास सुरक्षित हैं। कुछ अप्रकाशित फागों के नमूने यहां दिये जा रहे हैं।

फाग नं0-210

नेकी कर लो जो बन जावै, काम तुम्हारे आवै।
थोरे दिन कौ जीवन है यो, नाहक भरम गमावै।
बदी करें बदनामी हूहै, ऐसो चित में लावै।
खेत सिंह मिट जाती काया, नाम जियत ही रावै।

फाग नं0-441

खोजत सीता को धनुधारी, फिरते विपिन मझारी।
विप्र रूप धर हनुमत उनसे, आके गिरा उचारी।
को तुम आव फिरत वन फूले, कथा कहो निज सारी।
खेत सिंह तब हाल सुनायो, उनको सब असुरारी।

फाग नं0-988

रै गओ आरक्षण जौ जमकर, भारत भर में थमकर।
नहीं किसी में शक्ति ऐसी, देबै ईखों कम कर।
शासन सत्ता चादर नैंया, देबै सब में समकर।
खेत सिंह जो जनता ऊपर, कैसो रहे जुलम कर।

इनकी प्रकाशित पुस्तकों के कुछ नमूने देखियेः-

ख्याल राकेश प्रकाश (चौथा भाग) से -

दोहाः द्वारिपाल श्री कृष्ण से, कहें बचन कर जोर।
विप्र सुदामा नाम कौ, खड़ो नाथ इक दोर।

टेकः उपनये पांवन दुर्बल तन कौ, विप्र द्वार इक थामा है।
मिलो नाथ से चहत बताता, अपना नाम सुदामा है।

चौकः सुनो मित्र का नाम कृष्ण ने, द्वारिपाल के जब मुख से।
दौड़ पड़े भगवान भवन से, फूल उठा है उर सुख से।
प्रीति पुरानी देत दिखाई, उमगी उनके इस रुख से।
देखत छाती उन्हें लगायो, दूर सुदामा भयो दुख से।

लौटः चरण धोय चट निज आसन पर, करवाया विश्रामा है।

मिलो नाथ से चहत बताता , अपना नाम सुदामा है।

× × × × × × × × × × ×

(2)

फाग लंका-समर से (हनुमान का मूर संजीवन लाना)

दोहाः देखो प्यारे भ्रात को, मुर्छित जब रघुवीर।

दुख में हुये अधीर तब, बहो द्रगन से नीर।

सैरः लखा जामवन्त दुख में, दुख हरन ऐन को।

लंका में बैद, बोले अब जाय लैन को।

ना करी देर हनुमत सुनते ही बैन को।

चट भवन सहित लाकें धर दओ सुखैन को।

टेकः हनुमत मूर लैन तुम जाओ, ऐसौ वैद सुनाओ।

छन्दः रातई रात औषधी आवै, देखो भानु उअन न पावै।

इतनी बात ध्यान में राबै, होंय काज भले।

मिलहे दौनागिर पै मूर, उत्तर दिश में है कुछ दूर।

सिर पै करकें तब लंगूर, बजरंग चले।

उ0 : वहां भेद जौ लंकापति को, जाकें कोई बताओ।

कालनेम को मग रोकन तब रावन ने पहुंचाओ।

(3)

(गारी सुमन कली से)

राम नाम को भज लो प्यारे सुधरै जामें जिंदगानी।

करौ न अपनी मनमानी।

काल कलेवा करत सबहिं कौ, कीने ऊकी गति जानी। करौ न . . .

यौ संसार सार बिन जानो, चार दिना की मनमानी। '

भाई बन्धु अरू कुटुम कबीला माया फिरती लपटानी। '

जौ मेरा है बौ तेरा है भूलो तामें अज्ञानी। '

मानुष को तन मिलत मसूकें, नर यौनी है कल्यानी। '

आवागमन मिटत न जग कौ, मरते जीते निज प्रानी।

खोत सिंह चरनन कौ सेवक, स्वामी हर लो हैरानी।

(4)

(वीर अभिमन्यु समर से)

दोहा: उन्ना से होकर विदा, सेना सजी विशाल।
चलो लड़न रण बांकुरा, अभिमन्यु तत्काल।

सैर : ततकाल चलो शंका ना करी काल की।
रणबीर वीर बालक करनी कमाल की।
गये भीम मदद करने, अर्जुन के लाल की।
कोई लाख करै रेखा न मिटत भाल की।

टेक: टोरन चक्रव्यूह को आयो, वीर सुभद्रा जायो

छन्द: जायो वीर सुभद्रा ऐन, आयो रण में लेकर सेन।
देखी चक्रव्यूह भर नैन, जो द्रोण रची।
रचना करी गुरू हुशयार, जाके राखे सात दुवार।
सेना ठाड़ी लगा कतार, बहु भीड़ मची।

उ0 : समर करें को शूर खड़े हैं, जावै नहीं बतायो।
कर द्वारे पै सेनापति को, रक्षा हेतु लगायो।

(5)

(फाग - प्यारा बापू से)

दोहा: बापू तुम तो हो गये, अब नैनन से ओट।
छवि बिसरत नहिं रात दिन लगी हृदय में चोट।

टेक: नैनन बापू की छवि छाई, बिसरत न बिसराई।

छन्द: सुन्दर चौड़ा जिनका भाल, जामें तीन खाये बल खाल।
निशदिन दीनों का है ख्याल, जिनके दिल में।
चशमा लगौ नाक पर सोहे, बूढ़ा चेहरा भी मन मोहे।
उनकी समसर नहीं लखौ है, जन भूतल में।

उड़ान: अधरन की छवि अजब निराली क्या मुसकान सुहाई।
सुन्दर लगत हंसत में जिनके जुरा रद देत दिखाई।

× × × × × × × × × × × ×

मूल्यांकनः

श्री खेत सिंह यादव 'राकेश' द्वारा रचित प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचना संग्रहों के अवलोकन से स्पष्ट पता चलता है कि ये बुन्देली के असाधारण कवि थे। बुन्देली पर इनका अच्छा अधिकार था। साधारण बोलचाल की भाषा में सर्व साधारण को ग्राह्य सरल व सुन्दर शैली में जो रचनायें कवि ने हिन्दी साहित्य को दी हैं वह हमीरपुर जनपपद के लिये गौरव की बात है। कवि खेत सिंह राकेश एवं उनका फाग साहित्य' नाम से लघु शोध 'महाराजा डिग्री कालेज छतरपुर (रीवा विश्वविद्यालय) से प्रकाशित हुआ है। उक्त शोध कार्य श्री भरत पाठक द्वारा किया गया है जो कवि के उच्चकोटि की साहित्यिक सेवा का प्रमाण है। हिन्दी साहित्य में ऐसे अद्वितीय प्रतिभा के धनी कवि को स्थान मिलना चाहिये।

(5) भगवानदास 'बालेन्दु':

जीवन परिचयः

श्री भगवानदास 'बालेन्दु' का जन्म कुलपहाड़ (महोबा) में दिनांक 23.7.1907 ई0 को हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 बृजगोपाल जी अड़जरिया था। पं0 बृजगोपाल जी अड़जरिया प्रान्त के चुने हुये सभ्य रईसों और जमींदारों में एक थे। अपने पिता की अकेली सन्तान भगवानदास 'बालेन्दु' की शिक्षा केवल प्राइमरी तक ही थी। प्राइमरी विद्यालय में पढ़ते समय भी इन्हें कविता से अत्यधिक लगाव था। आप जनपद के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। आजादी की लड़ाई में कई बार सपरिवार जेल गये। इनकी पत्नी श्रीमती किशोरी देवी भी स्वतंत्रता सेनानी हैं इनकी कविताओं का अधिकांश भाग स्वतंत्रता आन्दोलन के समय जेल में रहते हुये ही लिखा गया है । वर्षो तक ये अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। बुन्देली स्वातन्त्र्य चेतना के अग्रदूत, प्रखर स्वतंत्रता सेनानी तथा अनासक्त लोकसेवी कवि भगवानदास 'बालेन्दु' की मृत्यु सन् 1997 मे हुई।

काव्य कृतियां:

'बालेन्दु' जी का एक अभिनन्दन ग्रन्थ सन 1983 में प्रकाशित हुआ है जिस पर इनके व्यक्तित्व कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। बालेन्दु जी की प्रथम काव्य कृति 'किरण' सन् 1938 में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में राष्ट्रीय कवितायें दी गई हैं। इसकी एक रचना अवलोकनार्थ दी जा रही है:-

'गांधी गौरव'

दीनों का परम धन, अधीनों का मुक्ति मंत्र,
वन्दनीय विश्व का विशिष्ट मेहमान है।
बीसवीं सदी के राजनीति नभ का है इन्दु,
ईश्वर प्रदत्त हिन्द मां को वरदान है।
शुचिता की मूर्ति, नव स्फूर्ति है स्वतंत्रता की,
सत्यता की बान महागुरुता की खान है।
आन है अहिंसा की जान असहयोग की है,
गांधी तू निश्चय आज भारत की शान है।

(2)

बालेन्दु जी की दूसरी पुस्तक 'श्रद्धा के फूल' सन 1964 में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में सन 1857 से 1947 के बीच के 17 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर कवितायें हैं। अवलोकनार्थ एक रचना नीचे दी जा रही है:-

वीर रानी लक्ष्मीबाई

गृह में लक्ष्मी, सभा मंच पर सरस्वती बन जाओ
रण में दुर्गा बनकर, लक्ष्मीबाई सम यश पाओ।
जयति शौर्य साहस युता भारत सुता अनन्य,
आदि शक्ति स्वातंत्र्य श्री लक्ष्मीबाई धन्य ।
फूंका था स्वराज्य शंख तूने ही प्रथम यहां
भारतीय क्रान्ति की मचायी धूम खासी है।

तेरा रण कौशल विलोक विश्व कहता था,
पुत्रि वही कौन भूमि आज हिन्द मां सी है
जब तक रही तूं स्वतंत्र होकर ही रही,
अन्त तक फिरंगियों के गाँसी सी आँसी है
बाई साब कालिमा मिटायी दासता की तभी
लालिमा लिये सी आज तेरी भूमि झांसी है।

(3)

कवि की एक अन्य प्रकाशित काव्य कृति 'नवनीत' है जिसका सन् 1964 में प्रकाशन हुआ। यह पुस्तक दोहों में है कवि द्वारा दैनिक आचार व्यवहार संबंधी निर्देशों, कूटनीति और राजनीति में नैतिकता के प्रथम चिन्हों व धार्मिक तथा सामाजिक विषयों की खाईयों से मुक्ताओं को खोजकर दोहों में पिरोया गया है। कुछ दोहे अवलोकनार्थ निम्न प्रकार हैं-

(1)

नाम भले ही भिन्न हों, जैसे राम रहीम
मतलब सबका एक है, कृष्ण कहो कि करीम।

(2)

साहित्यिक के पास है अमर शब्द भण्डार।
बन सकता है समर में वह ही शस्त्रागार।

(3)

अन्न वस्त्र आवास हो शिक्षा स्वास्थ्य प्रबंध
जनता को यह चाहिये पंचशील निर्बन्ध।

(4)

दुष्ट मन, वचन कर्म में राखत भेद दुराव।
सज्जन तीनों में सदा राखत एकै भाव।

(5)

मागत भीख न अन्य घर बिना बुलाये जात।
ऐसा कर पाहन पुजत फिर नर की का बात।

कवि की एक अन्य प्रकाशित काव्य कृति 'स्वतत्रता सेनानी' पत्रक के रूप में है जिसमें स्वाधीनता की रजत जयन्ती पर देश रत्नों की वन्दना की गई है। कवि की एक अन्य अप्रकाशित पुस्तक 'बुन्देल भारती' है इसमें भी अत्यधिक ओजपूर्ण रचनायें हैं एक रचना नीचे दी जा रही है।

अब किसान की बारी है

बदल रहा इतिहास देश का, नवयुग की तैयारी है।

जौहर दिखलाया जवान ने अब किसान की बारी है।

(1)

पाक सैनिकों ने जब हमला काश्मीर पर बोला है।

गददारों ने साम्प्रदायिक जहर देश में घोला है।

मौन हुये जब मित्र राष्ट्र भी पत्ता कहीं न डोला है

हिन्द जवान बढ़ा तब लेकर गोला, दिल में शाला है

मार भगाया काश्मीर से बिगड़ी बात सम्हारी है

जौहर दिखलाया जवान ने अब किसान की बारी है।

(2)

हलधर बना महाभारत यह, आज तुम्हारा भारत है

हूणासुर चंगेज चाहते करना इसको गारत है

उधर चक्रधारी जवान, सीमा पर शत्रु संहार रहा

इधर देश टकटकी लगाये हलधर तुम्हें निहार रहा।

ग्राम सम्हालो, खेत सम्हालो, पाली यही तुम्हारी है

जौहर . . . .

(3)

लोहा लेता है जवान सोना किसान के द्वारे है

शस्य श्यामला पूत अरे तू फिर क्यों हाथ पसारे है।

वही भूमि है जहं जनक ने हल को स्वयं चलाया है

वही उर्वरा है जिसने लक्ष्मी, सीता को पाया है

जो विदेह है वह किसान निज देह तपन में जारी है

जौहर . . . .

(2)

कवि का एक अन्य प्रसिद्ध गीत जिसका प्रसारण आकाशवाणी से भी किया गया है, नीचे दिया जा रहा है-

रे मन चल बुन्देल भारती की आरती उतारें,

श्रम विकासिनी, काव्य भाषिनी की कृति कला निहारें।

(1)

तुलसी, केशव, पद्माकर, गंगाधर लाल बिहारी,

गाई लिखी मधुरिमा जाकी, कही ईसुरी न्यारी।

जीवन सफल होय जीवन में जो यह बातें टारें,

रे मन चल . . . .

(2)

घर-घर, नगर-नगर में जाकी मधुर मुरलिया गूंजे,

द्वार, पहार, खेत, खरयाना में कोयलिया गूंजे।

कजरी-तीज-दिवारी-होरी में, जो देत बहारें,

रे मन चल . . . .

(3)

सुनो भोर माते की बहुऐं, चकिया पै का गातीं,

प्यार भरे देवर ननदी के, मीठे वचन सुनातीं।

घर-घर सुमति दिखावैं जो हम इन्हें ध्यान में धारें,

रे मन चल . . . . . .

(4)

सांझ-सवेरे बहुऐं बिटियां हिल मिल पनघट जातीं,

पुरा परोसिन संग कुआं के गीत प्रेम से गातीं।

रहे न बैर पुरा पाले में, जो ये भाव विचारें,

रे मन चल . . . . . .

(5)

एक अन्य अप्रकाशित काव्य कृति 'स्फुट बुन्देली काव्य द्वंद्व' के रूप में कवि के पुत्र श्री भारतेन्दु अड़जरिया के पास है जो स्वयं एक अच्छे कवि हैं, इस पुस्तक में कवि की फुटकर रचनायें संग्रहीत हैं।

मूल्यांकनः

उपरोक्त काव्य कृतियों में दी गई रचनाओं को पढ़ने से पता चलता है कि भगवानदास बालेन्दु उच्च कोटि के कवि थे। इनकी सरल व स्पष्ट शैली में ओजपूर्ण रचनायें हृदय को छू लेती हैं। साहित्यिक दृष्टि से रचनायें शुद्ध, परिमार्जित एवं भाषा दोष से रहित हैं। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होने के कारण इनकी कवितायें राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। इनके मुख से कविता पाठ सुनकर ऐसा प्रतीत हुआ कि सच्चे अर्थो में कवि में राष्ट्रीय कवि होने की क्षमता है। जनपद के इस कवि की साहित्यिक सेवायें हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

तहसील - महोबा

⟨।⟩ श्री उमाशंकर नगायच :

जीवन परिचयः

श्री उमाशंकर नगायच का जन्म 24 फरवरी सन् 1927 ई0 को मुहाल भटियाना पुरा महोबा में एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री अयोध्याप्रसाद तथा माता का नाम श्रीमती कस्तूरी देवी था। इन्होंने एम0 ए0 अंग्रेजी, हिन्दी तथा भूगोल से उत्तीर्ण किया है। डी0ए0वी0 इण्टर कालेज महोबा में प्रधानाचार्य पद पर कार्यरत रहेतथा अवकाश ग्रहण के पश्चात भी इनका आध्यात्मिक जीवन अध्ययन अध्यापन के लिये ही समर्पित रहता है। आप एक चिन्तनशील शिक्षाविद् एवं विचारवान मनीषी हैं। इनका आदर्शोन्मुख जीवन एवं लेखन इसी पुनीत लालसा के प्रति प्रतिबद्ध है। हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत में आपका अधिकार है। आप क्षेत्रीय सांस्कृतिकएवं साहित्यिक चेतना के प्रमुख केन्द्र हैं।

काव्य कृतियांः

आकाशवाणी छतरपुर से आपकी बुन्देली कवितायें, परिष्कृत संस्कृत निष्ठ, उत्तमोत्तम काव्य रचनायें कहानियां एवं वार्तालाप प्रकाशित हुये हैं। आप नगर की विभिन्न सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से संबद्ध हैं। आपने इन्दल हरण नाटक भी लिखा है। कुछ मनोवैज्ञानिक महानियां भी लिखी हैं। वर्ष 1966 में ' कुहरे की कलियां ' कविता संकलन का प्रकाशन आपके द्वारा ही किया गया जिसमें आपकी कई रचनाये संग्रहीत हैं जिसमें मां, चीन के नाम चिट्ठी, आलोचक के प्रति, तथा पहली रात की बात, कवितायें प्रकाशित हैं। आपने एक खण्ड काव्य ' सीता निर्वासन ' लिखा है जो प्रकाशित है। शेष रचनायें अप्रकाशित हैं। आपके द्वारा लिखा गया खण्ड काव्य ' सीता निर्वासन ' एक उत्कृष्ट कृति है।

इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

{1}

कवि से

मेरे कवि मेरे भावों को ले, गा कुछ ऐसे अमर गीत
ढह जायें विषमतायें जग की, बह चले साम्य का मधुर समीर।
कुत्सित समाज भी व्याधिग्रस्त काया परिवर्तन को अधीर।
हो उठे धरा का लघु कण कण मुखरित कर ऐसे प्रखर गीत।

इस प्रकार कवि समाज में व्याप्त विषमताओं को मिटाने के लिये व्यग्र दिखता है। इसी प्रकार जब वह देखता है कि पूंजीवादी व्यवस्था में जकड़ी हुई उपेक्षित शक्ति व सामर्थ्य जब भिक्षावृत्ति के लिये विवश है तब कवि का हृदय कह उठता है -

फट नहीं पड़ा गगन, धंस नहीं गई धरा
क्यों न चन्द्र सूर्य, जलधि आज भी प्रलय रचा।
यही तपी, यही सती वृती यही दरिद्र धीर
हाय कामधेनु आज घास के लिये अधीर

अपने देश के गौरव व स्वाभिमान को बनाये रखने के लिये कवि के ये भाव पठनीय हैं:-

हिमगिरि का मस्तक कभी नहीं झुकने देंगे
गंगा की धारा मन्द नहीं हो पावेगी
भारत की जय का केतु सदा ऊंचा होगा
माता की स्मृति म्लान न होने पावेगी

अपने देश में फैले हुये अशांति व अराजकता के वातावरण को कवि इस प्रकार व्यक्त करता है:-

यह सारा वातावरण क्षुब्ध सा लगता है क्यों,
मधु ऋतु का वैभव लुटा लुटा सा लगता है क्यों
ये लता गुल्म, ये गिरि गहर ये तरू पादप ये नद निर्झर
ये कदनिकुंज से अलि गुंजन ये सावन धन टेसू के वन
सब श्रीविहीन से लगते क्यों, निष्प्राण म्लान से लगते क्यों
उससे कि बन्धु का गला घोंटता बन्धु यहां . . . . .

और ' प्रगतिशीलता ' से कवि अपने भावों को इस प्रकार व्यक्त करता है:-

(2)

प्रगतिशीलता

तुम सिर्फ निर्जीव पन्नों को पढ़ते हो, मनु के विधानों के
मुझे मुखर सुन पड़ते स्वर, मनु की आत्मा के
भास्वर, विनम्र, सर्वव्याप्त जीवन की धारा
अवरूद्ध हो गयी वत्स,
नव नवोन्मेषिनी प्रतिमा से गति मय करो
मेरे स्वरूप हो, अनुगत नहीं

(3)

सत्ताधीरों के प्रति

सत्ताधीरों के प्रति किया गया कवि का चुटीला व्यंग कितना मर्मस्पर्शी है-

बीघ्या भर खेत बनाकर सीना तान रहे
फिर चाहे बंजर पूरा हिन्दुस्तान रहे।
रे छोड़ बने संभरे ऊसर बंजर संभार
जिससे कण कण में मुस्काता उद्यान रहे

इसी प्रकार अन्यत्र एक कविता में संसार की वास्तविकता से कवि ने इस प्रकार अवगत कराया है-

यह कर्म भूमि है यहां पौरूष बुलंद है
साहस की वन्दना है कुशलता पसंद है
हंस हंस के मौत से जो मुलाकात करेगा
वह वीर यहां जिन्दगी का हाथ गहेगा।

(4)

आलोचक से

सजाकर पालकी फिर भाव की, मैं गीत लाऊंगा
धरा पर स्वर्ग से मैं स्वर्ग का संगीत लाउँगा
अवनि फिर फागुनी रंग में रंगी होगी, बहारों का समां होगा
धरा ऊंची उठी होगी गगन नीचे झुका होगा।

(5)

युग गान

खेतों की मेड़ों पर बैठी मानवता रोती है

फुटपाथों पर आज सिसकती मानवता सोती है

यदि भूखे शिशुओं के मुंह में दूध नहीं दे पाया

तो तेरी कविता का रस कवि मिथ्या है या माया

प्राण नहीं यदि फूंक सके कवि मृत प्रायों में गीत

तो प्राणहीन ये छन्द नहीं कवि युग चाहे संगीत

प्रतीकात्मक शैली में प्रकृति चित्रण ' दो प्रहर ' कविता के माध्यम से कवि ने किया है जिसमें दिन व रात की अच्छाइयों व बुराइयों को कवि ने एक अनूठी शैली में प्रस्तुत किया है उक्त कविता की कुछ पंक्तियां नीचे दी गई हैं:-

(1)

दिन के लिये

कुंज जगे, तरू जगे, जगे पल्लव, खग कुल की बानी

जग की स्मृति जगी और बरसों सोने का पानी

खुले कमल के नयन भ्रमर की बन्द वन्दना गूंजी

अलसाये पलकों ने खोली अमित नेह की पूंजी

(2)

रात के लिये

माना इसका कृष्ण रूप है काली इसकी काया

पर उज्जवल अंतर अन्तर की अति ही उज्जवल छाया

उस छाया में उस ज्योत्स्ना में कुमुद खिला करते हैं

और प्रेम के स्त्रोत मंदिर में अविराम बहा करते हैं।

खण्डकाव्य ' सीता निर्वासन '

' सीता निर्वासन ' खण्ड काव्य कवि श्री उमाशंकर नगायच की एक उत्कृष्ट रचना है। यह दिल्ली से प्रकाशित है छायावादोत्तर हिंदी राम काव्य परंपरा में कवि का ' सीता निर्वासन ' खण्ड काव्य

अपने प्रेरक तत्वों की पौराणिक पृष्ठभूमि विचार पक्षों की तर्क संगत युग सापेक्ष मौलिकता, कथ्य एवं शिल्प के आदर्शों की भाव भाषागत बनावट तथा सीता के निर्वासन से पीड़ित स्वयं राम, सीता, लक्ष्मण तथा अन्य पात्रों की संस्कृति तथा कर्तव्य को प्रतीकायत करने की क्षमता की पुन व्याख्या तथा नई कविता के इस दौर में नवीनीकरण का नया शिलान्यास है। सीता की मूर्ति का पौराणिक स्थापन तथा राम की अपनी ही प्रिया को निर्वासित करके पीड़ा के अनन्त प्रवाह में बहते रहने की स्वयं को दी गई दण्ड विधा की यह आधुनिक स्वीकृति हिन्दी काव्य धारा में एक अपवाद पठनीय काव्य है।

यह खण्ड काव्य (1) तमसा तटवर्तिनी (2) मनस्ताप (3) आदेश खण्ड (4) वनपथ, वैदेही सौमित्र संलाप (5) धिक अवध, धन्य यह वन प्रान्तर (6) गोवत्स (7) मृग शावक (8) यज्ञ घनला गंगा से यह छल (9) अग्नि परीक्षा (10) राजमाताओं का सन्ताप (11) भक्त का विद्रोह (12) राम का चित्र (13) सीता की छवि (14) राम की आत्माभिव्यक्ति (15) ओ मेरे नेही बन्धु (16) राम का राजधर्म (17) नीति निष्कर्ष (18) तथा कवि की आश्वस्त वाणी। अठारह सर्गो में विभक्त है। कुछ सर्गो के अंश यहां प्रस्तुत हैं।

मनस्ताप

हे जगत वन्द्य नयनाभिराम
पुरूषोत्त्तम धर्मध्वज ललाम
पावन नैतिकता के आश्रय
मेरे प्राणों के इष्ट राम
तेरी मंगल छवि के नीचे
निर्भय, निशंक, आंखें मीचे
माधवी लता के कुंज सदृश
भोले भावों के दल सींचे

वैदेही - सौमित्र संलाप

सुन सीता भाभी की
वात्सल्यमयी वाणी।
विह्वल हो रथी लखन
पीछे घूमे होंगे।

अतिशय विपन्नता भरी छलकती आंखों से
विकलित धरती की
छाती सींचरहे होंगे
चिंतित हो मन ही मन
रोदन करते होंगे।

(धिक अवध, धन्य यह वन प्रान्तर)

जो दैव्य दानवों का करती हो दर्प दलन
सुर पुर अभिनन्दित अवधपुरी में
नहीं दिख रहा रंच रोष
निश्चय दुर्लव्य विराट
रहा होगा राघव व्यक्तित्व
कि जिसके क्रूर निर्णयों के विरूद्ध
जग सका न होगा जनाक्रोश

या राजतन्त्र के उद्दण्डी आतंक तले
जनता का अंतुलित बल पौरूष टूटा होगा
लंका के नेता का प्रचण्ड तपता प्रताप
जनता का नैतिक साहस
ले डूबा होगा।

(अग्नि परीक्षा)

उस अग्नि परीक्षा का भी मैं
साक्षी राघव !
जब विमल सव्य की स्त्रोत
प्रेरणा पतिवृत की
कर बद्ध कृशांगी सस्मित
अग्नि प्रविष्ट हुई
जब छू देवी के चरण
ज्वाल माला हर्षित हो
धन्य हुई।

तुम भी साक्षी हो रघुनायक

तब देव लोक से फूल झरे

सीते जय जय, सीते जय जय

सीते जय जय के नाद भरे

फिर भी हे मेरे देव

प्राण के स्पन्दन

हे सव्य केतु। पुरूषोत्तम ।

राजन । रघुनन्दन ।

निर्मला, पुण्यशीला, विमला

से ऐसा छल,

अम्लान कुमुदिनी पर

कुलियों के दल के दल।

' कुहरे की कलियां ' कविता संग्रह में प्रकाशित कविताओं के अंश ।

॥ मां ॥

मैं तुम्हारे लाड़ में इतना हिला हूं मां

रोम हर मेरा तुम्हारी बोलता जय मां

और इतना हो गया हूं मुंह लगा तेरे

अनगढ़े ही भाव छूटे मां चरण तेरे

बन नहीं पड़ता तनिक भी अम्ब शिष्टाचार

मुस्करा मां दोष पर हूं मैं, निपट लाचार

मां मुझे दे लेखनी संसार का मैं भाग्य रच दूं

पोंछ लूं हर आंख का आंसू अधर में हास भर दूं।

× × × × × × × × ×

॥ चीन के नाम चिट्ठी ॥

बहुत दिनों से सोच रहा था मैं साथी,

अपनत्व भरा बस एक संदेशा देने को

मदहोश जवानी के आलम में उमड़ घुमड़

उन्माद तुम्हारा मर्यादा झकझोर न दें।

शायद तुमको इतिहास हमारा पता नहीं
या गलत किसी ने सब तुमको बतलाया है
यह वह धरती है जिस पर वीर उपजते हैं
जग जेता ने भी जिस पर शीश झुकाया है।

मैं शेखी नहीं मारता अपने पौरूष की
पर इस भू पर क्या कभी विदेशी जीते हैं।
आम्भीक, मीर जाफर, जयचंद आदि ने ही
मां के वैभव के सब आभूषन छीने हैं।

× × × × × × × × × × ×

मूल्यांकन:

श्री उमाशंकर नगायच की उपर्युक्त रचनायें सिद्ध करती हैं कि ये एक अच्छे कवि, विचारवान मनीषी एवं चिन्तनशील शिक्षाविद् हैं। राष्ट्र भक्ति, सामाजिक विषमतायें एवं आध्यात्मिक विषयों पर आपने लेखनी चलाई है। महान कवि निराला की ' राम की शक्ति पूजा ' के समान कवि द्वारा रचित खण्ड काव्य ' सीता निर्वासन ' एक उच्च कोटि की कृति है। कवि की रचनाओं में दार्शिनिकता की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है। रचनाओं में प्रवाह एवं माधुर्य का गुण विद्यमान है। काव्य दोष से मुक्त कवि की रचनायें हृदयस्पर्शी एवं मन को आन्दोलित करने वाली हैं। आप जनपद के एक श्रेष्ठ कवि होने के सच्चे अधिकारी हैं। हिन्दी , संस्कृत एवं अंगेजी पर अच्छा ज्ञान रखने वाले श्री उमाशंकर जी की साहित्यिक सेवा प्रशंसनीय है।

[2] श्री पीयूष नगायच :

जीवन परिचय:

श्री पीयूष नगायच का जन्म 24 नवंबर 1966 को मु0 भटियाना पुरा महोबा में एक ब्राह्मण कुल में हुआ था इनके पिता श्री उमाशंकर नगायच एक श्रेष्ठ कवि हैं। इनकी माता जी का नाम श्रीमती शान्ति देवी नगायच है। श्री पीयूष जी ने बी0एस-सी0, एल-एल0बी0 तक शिक्षा प्राप्त की है। आप

तरुण परिषद महोना के संस्थापक/अध्यक्ष हैं। ये एक उत्साही सशक्त व्यंगकार हैं।

काव्य कृतियां:

राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्थाओं व रूढ़ियों पर मर्म को छूने वाले चुटीले व्यंगकार श्री पीयूष जी हास्य व्यंग के सशक्त उदीयमान हस्ताक्षर हैं। इनका कोई रचना संग्रह अभी प्रकाशित नहीं हुआ है। ये मंचों पर कविता पाठ करने में निपुण हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

(भोपाल और ये)

रे आत्महत्या करने का
विचार रखने वालो
आओ
मुझे अपनी समस्याओं से अवगत कराओ
मैं तुम्हें जीने का रास्ता
बताऊंगा
क्या कहा !
मुझे तो मरना ही है !
तो ठीक है, हमसे
तुम्हें एक नया रास्ता भी मिलेगा
ऐसे मरोगे तो मुकदमा चलेगा।
x x x x x x x

(2)

(शपथ)

ये भारत वाले तो
बिलकुल नहीं मानते हैं
कुछ कहते हैं तो भृकुटियां तानते हैं
फिर आप ही बताओ
क्या किया जाये

देश की आबादी को
कैसे कम किया जाये
मैने कहा
शादी में मण्डप के नीचे
ली जाने वाली शपथों में
एक शपथ और बढ़ा दी जाये
कि - मैं अग्नि को साक्षी मानकर कहता हूं
कि देश की आबादी कम करने में
पूरा सहयोग करेंगे
लड़का हो या लड़की
बच्चे सिर्फ दो पैदा करेंगे।

(3)

(घर का खर्चा)

गरीबदास जी ने मुझे चाय पर बुलाया।
अपने चार बेटों से मेरा परिचय कराया
यह मेरा बड़ा लड़का है, एम0बी0बी0एस0 पास है
नाम इसका हर्ष है, पर रहता उदास है
यह जो सामने टूटी खाट पर लेटा है
मेरा दूसरा बेटा है, लंदन से आया है
इंजीनियरिंग की डिग्री लाया है
तीसरा जो नल से पानी भर रहा है
हिन्दी में एम0ए0 कर चुका है
पी0एच-डी0 कर रहा है
चौथे का दिमाग जरूरत से ज्यादा हाई है
पढ़ लिख नहीं पाया इसलिये नाई है।
हेयरकटिंग सैलून चलाता है
अच्छे अच्छों की हजामत बनाता है
मैंने कहा गरीबदास जी

परिवार की रेपुटेशन सम्हालिये

इस नाई को घर से निकालिये

आपने तीन लड़कों को तो खूब पढ़ाया

पर मखमल में टाट का पैबंद कहां से आया

वो बोले

निकाल तो दूं पर आजकल यह बहुत काम आ रहा है

बाकी सब बेरोजगार हैं

घर का खर्चा तो यही चला रहा है।

(4)

(कवि से)

कवि, तुमने काफी गीत लिखे

पर भूल एक की

भाव तुम्हारे उच्च बहुत थे

शब्द तुम्हारे पास बहुत थे।

× × × × × ×

तारीफ तुम्हारे गीतों की

मैं कर न सका

यदि गीत लिखो तो कवि ऐसे

जो दें समाज को राह नयी

जिससे उत्थान देश का हो

जन जन में जाग्रति जगे

प्रखर पौरूष दिनेश सा हो

(5)

कल तक था जो भविष्य

वही आज वर्तमान है

कल तक था जो हरा भरा,

वो आज एक शमशान है

मृत्यु को कदापि ना,

गले लगाने वाला वाग

आज अपने बागवान,

से ही परेशान हैं।

(6)

(नव वर्ष मंगलमय हो)

आप

महंगाई की तरह बढ़ें

मण्डी के भावों की तरह

सफलता की सीढ़ियां चढ़ें

भ्रष्टाचार की तरह फलें फूलें

यश और वैभव के झूलों में झूलें

समाज में,

सबसे ऊंची हो आपकी नाक

अपने लक्ष्य तक अर्जेण्ट पहुचें

जैसे बिना टिकट बैरंग डाक

अपने उद्देश्यों से भली भांति

परिचर्चित हो जायें

अपने कार्य क्षेत्रों में

वाशिंग पाउडर निरमा से चर्चित हो जायें

आप

शतायु हों, चिरायु हों

सफल मनोरथ हों

आपके दरवाजे

सुख और सम्पन्नता के रथ हों।

(7)

(शुभकामनायें)

शुकामनायें

आपको बानवे में दी थीं।

कुछ हमें भी मिली थीं

पर वे काम नहीं आईं

देश व समाज में

कुछ कर नहीं पाईं

आशा है अन्यथा नहीं लेंगे

तिरानवे यदि शुभ शुभ निकला

तो शुभ कामनायें चौरानवें में देंगे

इस बार

बिना कुछ लिये दिये

दिल मिलायें

बिना शुभकामना के

काम चलायें।

मूल्यांकन:

श्री पीयूष जी की उपर्युक्त रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये हास्य व्यंग के उदीयमान सशक्त हस्ताक्षर हैं। सामाजिक समस्याओं एवं कुरीतियों को लक्ष्य बनाकर हास्य व्यंग लिखने में आप दक्ष हैं। विशेष रूप से मंचीय कवितायें आप लिखते हैं। इनकी रचना शैली सरल एवं लालित्यपूर्ण है। रचनाओं में प्रवाह है एवं हृदयस्पर्शी हैं। सरस एवं रोचक शैली में कविता लिखना इनकी विशेषता है।

(3) श्री भारतेन्दु अड़जरिया :

जीवन परिचय:

श्री भारतेन्दु अड़जरिया ' इन्दु ' का जन्म कुलपहाड़ (महोबा) में 27 सितंबर सन् 1935 को एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता स्व0 बालेन्दु अड़जरिया जनपद के प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व कवि थे। इनकी मां श्रीमती किशोरी देवी अड़जरिया ने भी स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया। इनकी शिक्षा बी0ए0, एल0एल0 बी0 है किन्तु ये वकालत का कार्य नहीं करते हैं। वर्तमान समय में आप महोबा में रहते हैं। इन्दु इनका उपनाम है। आप एक अच्छे विचारक एवं समाजसेवी हैं।

काव्य कृतियां:

श्री भारतेन्दु अड़जरिया का एक पाण्डुलिपि संग्रह प्रकाशित होने को है जिसमें राष्ट्रीय व ऐतिहासिक रचनायें हैं। झांसी से प्रकाशित एक पुस्तक ' झांसी के विद्यमान काव्यकार ' में इनका जीवन परिचय व कुछ रचनायें संग्रहीत हैं। इनकी रचनायें ' सुकवि विनोद ' लखनऊ डी0 ए0 वी0 कालेज पत्रिका ' अकेला ' आराग लोकराज, दैनिक जागरण आदि अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। बुन्देली की अनेक रचनाओं का आकाशवाणी से प्रसारण हो चुका है। इनकी प्रकाशित काव्य कृतियां (1) नैवेद्य (2) महोत्सव नगर महोबा की वीर गाथा तथा (3) शीत निशा हैं। शीत निशा विरह पीड़ा का काव्य है इसके कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

आहत जीवन मरूथल में,

क्यों मधुर कल्पना आयी।

प्रियतम तुमको अर्पित है

यह शीत निशा दुखदायी।

(2)

सबसे सुन्दर यह धरती

धरती पर सुन्दरतम तुम

वह नील झील सी आंखें

लहरों में डूब गये हम (छन्द सं0 -9)

(3)

शीतल शुभ प्रात किरण बन

नव मंगल गीत सुनाना

हो प्रीत पल्लिवित पुष्पित

उस पथ पर बढ़ती जाना (छन्द सं0 173)

प्रिय दर्श कभी तो होगा

अगले जन्मों में आना

यह मधुर लालसा अन्तिम

युग युग तक संग निभाना (छन्द सं0- 176)

इस पुस्तक में कुल 176 छन्द हैं। कवि की एक अन्य शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तक ' आल्हा बावनी ' है। यह वीर रस का लघु काव्य है जो कवि के अनुसार भूषण के शिवा बावनी के समान हैं इसमें घनाक्षरी छन्द व सवैया है। इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है।

(4)

दोहा : अरूण राज को पौत्र जो सोमेश्वर सुत सूर

पृथ्वीराज सों युद्ध में उड़ी जुझौती धूर

ऊदल पायी वीर गति अगनित वीरन संग

आल्हा कजली वन गये गुरू गोरख के संग।

छन्द

वीर भूमि महुबो है भूमि रणवीरन की

यज्ञ भूमि पावन पुनीति संस्कार की

राष्ट्रीय युन्द्ध में लड़े थे आल्हा मंडलीक

काबुल लड़ाई बड़ी जीती कंधहार की

वीरता कुमारी बेला पृथ्वी खां मोह लयो

बृम्हा को विवाह है ललामी असि धार की

आल्हा वरदानी है खानीदार पानीदार,

इन्दु सी धवल धार तीखी तरवार की।

एक अन्य प्रकाशित पत्रक ' महोत्सव नगर महोबा ' है 7 पृष्ठ के इस पत्रक में बुन्देली में महोबा के इतिहास, आल्हा के शौर्य छन्द तथा कजरिया की लड़ाई दी गई है कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(5)

(कजरिया की लड़ाई)

बीते बरस सैकरन सम्वत, जोत न अबै सिरानी

वीर भूमि के रजपूतन की, जौहर भरी कहानी।

भर चौमासो आल्हा ऊदल नगर महोबा छूटो

जौन भूम पै जनम लयो तो, ऊसें नाता टूटो।

माहिल मामा ने अपनी लिल्ली घोड़ी कसवाई।
हैं राजा परमाल अकेले, जाके बात बताई
निरबल नगर महोबा कर लेव पृथ्वीराज मनमानी
वीर भूमि के रजपूतन की जौहर भरी कहानी।
चन्द्रावलि सी राजकुमारी, नई दुनिया में दूजी
सोम सम्पदा पारस पथरी, कौन भूप ने पूजी।
लोहा छुअत बनत सुबरन है, ऐसौ और कहां है।
गज पश्चावत सुन्दर भारी दूजो नहीं यहां है
खजुराहो के सुन्दर मन्दिर ऐसी कितै निसानी।
वीर भूमि के रजपूतन की जौहर भरी कहानी।
× × × × × × × × × ×

एक अन्य प्रकाशनाधीन कविता संग्रह ' अनगाये गीत ' है जिसमें इन्दु जी की गजलें गीतकायें तथा गीत हैं। इसके अतिरिक्त ' पुष्प परिजाति ' अप्रकाशित कविता संग्रह है। जुन्हैया ' बुन्देली रचनाओं का अप्रकाशित संग्रह है तथा एक अन्य शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तक ' बुन्देली चौकड़िया ' है जिसमें लगभग 500 चौकाड़या फागें हैं। कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(6)

अब नइं भेंट रजऊ से होनें, रजऊ जा रही गौनें
आ गये पिया लिवा कें डोला दरद भये अनहोने
इनकी ताप तपी सावन में, फुरे न गुनियां टोने।
ई बखरी खां इन्दु छोड़ गई मचे विदा में रोने।

(7)

पीरे पात पलासन पारे पिउ परदेश पधारे।
पावक पुष्प पवन परचायें पखरूनि पांव पखारे।
पौर पुरा, पनघट पुर पथ पे, पाहन पिया पुकारे
पापी प्रान पखेरू पिंजरन प्रेम परे प्रनवारे।

इन्दु जी के प्रकाशनाधीन लघु काव्य संग्रह में लगभग 12 गीत एवं 25 गजलें हैं। एक गीत की कुछ पंक्तियां अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं।

(8)

अकेला मन घबराता है।

नयन ने खोई निंदिया री।
निशा निर्जन है अंधियारी।
उठी है घटा घोर कारी
नहीं अब पथ दिखलाता है
अकेला मन घबराता है।

मेघ के बान बरसते हैं
विकल यह प्रान तरसते हैं
दुखित दोनों द्रग रिसते हैं
शूल सुधि का चुभ जाता है
अकेला मन घबराता है।

मिले सुख सुमन सदा तुमको
आह पीड़ा कन्टक हमको
ज्योतिमय कर दो इस तम को
क्रूर धन कुलिश गिराता है
अकेला मन घबराता है।

× × × × × × × ×

झांसी महोत्सव स्मारिका में इन्दु जी के तीन सुन्दर छन्द प्रकाशित हुये हैं जिसमें एक छन्द नीचे प्रस्तुत है जिसमें बुन्देलखण्ड के गौरव का वर्णन है।

(9)

विन्ध्य घाटियान बारौ बेतवा धसान वारौ
चम्बल औ क्यान वारौ नाम है बुन्देलखण्ड
कालिंजर से सोनगिर, ओरछा उनाव तीर्थ
राम रमे चित्रकूट, धाम है बुन्देलखण्ड
साकौ है चन्देलन कौ सूरमा बुन्देलन को

कला खजुराहो की, ललाम है बुन्देलखण्ड

देव भूमि, दुर्ग भूमि, रण की वरण भूमि,

इन्दु कवि भूमि अभिराम है बुन्देलखण्ड।

मूल्यांकनः

इन्दु जी की उपर्युक्त रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट है कि ये हिन्दी काव्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं। खड़ी बोली एवं बुन्देली दोनों में ही आपका समान अधिकार है। रचनायें भावपूर्ण एवं सरल शैली में लिखी गयी हैं वर्तमान समय में भी काव्य साधना में निरंतर रत हैं। इनकी रचनाओं में यत्र-तत्र अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया गया है। रचनाओं में प्रवाह एवं लालित्य का गुण उपस्थित है हिन्दी काव्य को कवि द्वारा किया जाने वाला योगदान सराहनीय है।

(4) श्री बैजनाथ वर्मा ' रसरंग ':

जीवन परिचयः

श्री बैजनाथ वर्मा ' रसरंग ' का जन्म 15 जनवरी 1930 में मलकपुरा महोबा में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री हग्गूराम धुरिया तथा माता का नाम श्रीमती जानकी देवी था। इन्होंने इण्टरमीडियेट तक शिक्षा प्राप्त की है ये हिन्दी साहित्य सम्मेलन से विशारद तथा उर्दू मिडिल भी उत्तीर्ण है।

काव्य कृतियांः

विद्यार्थी जीवन से ही कविता लिखने वाले श्री बैजनाथ जी मुख्य रूप से प्रगति शील कवितायें ही लिखते हैं। विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में इनकी रचनायें प्रकाशित होती रही हैं अभी तक कोई कविता संग्रह इनका प्रकाशित नहीं है इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

तुमसे रौशन ये चांद तारे हैं।

तेरे जलवों के सब नजारे हैं।

तुमसे और कुछ न मांगूंगा
इतना कह दो कि हम तुम्हारे हैं।

(2)

शाख टूटी तो फिर नहीं जुड़ती
राह बिछुड़ी तो फिर नहीं मिलती
लाख कोशिश करो बनाने की
बात बिगड़ी तो फिर नहीं बनती।

(3)

वतन के हम सिपाही हैं, वतन की बात करते हैं
गुलों में आब रखने को चमन की बात करते हैं
हमारा देश मन्दिर है, हमारा धर्म मानवता।
अमन के हम पुजारी हैं अमन की बात करते हैं।

(4)

गीत

जादूगर तेरी मुरली में क्या राज है,
नींद आंखों से मेरी है जाती रही।
राह में तेरी पलकें रही हैं बिछी।
याद आती रही और जाती रही।

मैं हूं भोली गुजरिया निरे गांव की।
मोल माखन का करना नहीं जानती।
बात की बात में जान तक हार दूं।
बात रो मैं मुकरना नहीं जानती।
तुमने बातों ही बातों में क्या बात की,
बात मेरी भी है आज जाती रही।

(5)

फागुन गीत

फागुन तो आयो सखी, रंग अंग छायो रे,
कान्हा को आंगन में, बोल न सुनायो रे।

कोयल की कूक उठी, गली गली गूंज गयी।

भौंरन की बीन बजी, कली कली झूम गयी।

फूलन की सेज सजी, अंग अंग चूम गयी।

कान्हा न आये सखी रैन ऐन भींज गयी।

अंसुवन से चूनर को रंग छूट आयो रे

कान्हा को - - - - - -

मूल्यांकनः

प्रगतिशील कवितायें लिखने वाले श्री बैजनाथ वर्मा एक वरिष्ठ कवि हैं उर्दू का ज्ञान प्रायः उनकी सभी रचनाओं में अपना प्रभाव डालता है। यत्र-तत्र उर्दू शब्दों का प्रयोग इन्होंने कविताओं में अवश्य किया है। सरल शैली में लिखी गयी इनकी रचनाओं में यद्यपि प्रवाह एवं लालित्य की कमी है फिर भी हिन्दी काव्य को कवि की देन प्रशंसनीय है।

(5) श्री पन्नालाल उपाध्याय :

जीवन परिचयः

श्री पन्नालाल उपाध्याय ' अरविन्द ' का जन्म ग्राम सूपा (चरखारी) में 12 जून सन् 1929 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री बैजनाथ उपाध्याय तथा माताजी का नाम श्रीमती सुभद्रा देवी था। इन्होंने बी0ए0, एल-एल0बी0 तक शिक्षा प्राप्त की है । इलाहाबाद विश्वविद्यालय से साहित्यरत्न की उपाधि भी प्राप्त की है। वर्तमान समय में ये स्थायी रूप से छजमनपुरा (महोबा) में रहते हैं।

काव्य कृतियांः

इनकी रचनायें अभी तक अप्रकाशित हैं। ये गीत, गजल, चौकड़िया, ओजस्वी रचनायें, कुण्डलियां व दोहे सभी लिखाते हैं। इनके कई लोकगीत आकाशवाणी छतरपुर से प्रसारित हो चुके हैं। इन्हें कविता के क्षेत्र में कई सम्मान भी प्राप्त हुये हैं। ये अपने विद्यार्थी जीवन सन् 1951 से ही काव्य सृजन में लगे हुये हैं। ये मंचों पर जाकर भी कविता पाठ करते रहे हैं।

इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं:-

(1)

मुनियों के सदा गुणगान रहे, अरू वीरन के यशगान रहे
नहीं खाली हुई कभी कोख यहां, ऋणियों के सदा वरदान रहे।
इतिहास बना करते जिनसे, यहां ऐसे सदा इंसान रहे
इस भूमि की धूलि में वो गुण हैं जहां भक्त रहे भगवान रहे।

(2)

बृज औ बुन्देल में होड़ लगी, कहु कौन मही वसुधा में सुहावन,
कौन ने जाये हैं सूर अनेक, कौन की नारि रही बलशालिन।
केहि के कवि काव्य शिरोमणि हैं, अरे सूर ससी तुलसी रवि पावन,
केहि के घर छोड़ के कृष्ण भगे, कहु कौन के धाम बने प्रभु पावन।

(3)

कैसा भी दुर्ग हो कुछ काल में ढह जाता है
समय का मर्म बस, इतिहास ही कह पाता है।
जो भी करना है अरे, कर ले चार दिन में यहां,
आखिर दुनिया में तेरा नाम ही रह जाता है।

(4) गीत

तेरी एक सुबह के बदले, कभी डूबती शाम न दूंगा,
महलों का वैभव मत दो, तुम धरती का आराम न दूंगा।

मानव है वह मुझको प्यारा, जो माटी को कंचन कर दे,
धरती अम्बर के छोरों का निश दिन को गठबंधन कर दे।
प्यार नहीं मुझको लक्ष्मण से, और न दशरथ से है ममता,
राजा राम निछावर कर दूं, पर शबरी के राम न दूंगा।

(5) गीत

फूलों में रस गंध नहीं है, गीतों में लय छंद नहीं है
सबके प्रणय यहां पर झूठे, सच्ची कोई सौगंध नहीं है।

सूरज वही चांदनी रातें, मलय बसंत, सुखद बरसातीं
जाने क्या हो गया समय को जीवन में आनंद नहीं है।

आस्तीन में सांप पले हैं, बढ़े अंधेरे दिया तले हैं,
किसको कहें मीरजाफर हम, कौन यहां जयचंद नहीं है।

राजमार्ग से गलियारों तक, धरती से झिलमिल तारों तक,
ऐसी कोई जगह न देखी, जहां आज दुर्गन्ध नहीं है।

(6)

(लोकगीत, आकाशवाणी छतरपुर से प्रकाशित)
सिर धुन धुन पछताहो, राजा मो सी रानी न पाहो।

भोरई से नित झारों बुहारों,
दौहनी बंधनी कूरा डारों,
कीर्से जो गोबर पथाहो, राजा मो सी . . . . . .

भांवर डार बनी अर्द्धांगिन
सुख दुख की मैं संगी साथिन,
धन के पाछे जरा हो, राजा मो सी . . . . . .

कहें 'अरविन्द' एक वृत ठानो,
पत खों परमेश्वर ही मानो,
कबहूं तो पतयाहो, राजा मो सी . . . . . .

(7)

(कुण्डलियां, काका हाथरसी के संदर्भ में)
लाला को डरवा रहे क्यों काका जी आप।
धन बटोरने में स्वयं हो बिड़ला के बाप।
हो बिड़ला के बाप, शरम नहिं आती भैया
एक रात की मांग, आठ सौ एक रूपइया।
छापा बालिन के आका हो तुम तो काका
दिन दोपहर ही डार रहे हो तुम तो डाका।

कवि सम्मेलन कैसे करें, राह बता दो नेक,
दाढ़ी वाले मांगते नकद आठ सौ एक
नगद आठ सौ एक, हाफ पहले भिजवा दो
कवि सम्मेलन बीच शेष सब तुरत गहा दो
कर ले जी भर लूट, अरे ओ दाढ़ी वाले
लाली जी के बाद, खुलेंगे तेरे ताले।

(8)

गीत सुनाऊं मैं तुम्हेंया कोई रंगीन गजल
सोये उदगार जगें, दर्द भी कुछ जाये बहल।
मैं हूं फनकार, मेरी लेखानी स्याही से,
रोज बनता है सरे बज्म, नया ताजमहल।

(9)

वीर धरती तो क्या आकाश बदल देते हैं
लहू की बूंद से विन्यास बदल देते हैं।
हम कवि हैं हमें समझो न कोई सौदागर
कलम की नोक से इतिहास बदल देते हैं।

मूल्यांकन:

श्री पन्नालाल उपाध्याय 'अरविन्द' एक अच्छे कवि हैं। अभी तक लगभग 200 गीत, 125 गजलें तथा अन्य फुटकर रचनायें इन्होंने की हैं। जन सामान्य की समझ में आने वाला सरल शैली में लिखा गया कवि का साहित्य लालित्यपूर्ण है। कवि का भाषा ज्ञान अच्छा है। रचनायें प्रवाहपूर्ण हैं संक्षेप में एक अच्छे कवि की श्रेणी में इन्हें रखाना पूर्णतया न्यायोचित है।

(6) श्री रामदत्त 'अजेय' :

जीवन परिचय:

श्री रामदत्त ' अजेय ' का जन्म चरखारी (महोबा) में चैत्र शुक्ल रामनवमी संवत् 2004 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री काशीप्रसाद तिवारी तथा माता जी का नाम श्रीमती लक्ष्मीदेवी है।

इन्होंने बी0ए0, एल0एल0बी0 तक शिक्षा प्राप्त की है। ये दीनोदय तथा दीनानाथ पत्रों के सम्पादक हैं। इनका मलकपुरा महोबा में अपना प्रेस है जिसका नाम बसन्त प्रेस है। वर्तमान समय में ये स्थायी रूप से मलकपुरा-महोबा में रहते हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हैं अप्रकाशित रूप में भी काफी रचनायें इनके पास संग्रहीत हैं। इनकी प्रकाशित पुस्तकें हैं (1) प्रहार (2) आकांक्षा (3) मधुज्वाला तथा प्रतीक्षा (खण्ड काव्य) इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कतियां (1) महोबा कीर्तिका (2) नजरिया (3) सुलगते सवाल तथा (4) तलाश भी हैं जो गद्य में हैं। इनकी अप्रकाशित पुस्तकों में (1) भरत चरित्र खण्ड काव्य तथा धम्मपद का पद्यानुवाद है। अन्य बहुत सी फुटकर रचनायें भी अप्रकाशित हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

('प्रहार' प्रकाशित पुस्तक से)

80 पृष्ठ की इस पुस्तक में 22 शीर्षकों में रचनायें दी गई हैं। कुछ अंश देखिये :-

भारत के पूरे कवियों से,
मैं एक निवेदन करता हूं।
साथी जब कोई नहीं मिला,
तब स्वयं समर्थन करता हूं।

याद करो अपनी ताकत को,
क्यों अतीत को भूल रहे,
सतपथ को क्यों छोड़ दिया है
जाकर अब क्यों दूर खड़े।

(2) अहसान

चुनाव में जीते हुये नेताजी ने कहा
दौराने चुनाव हमने ना जाने क्या क्या सहा,

चुनाव भी क्या बला है

छोटी छोटी सी बातों में लोग अहसान जताते हैं,

और,

चुनाव के बाद हम उसे भुनाते हैं

तभी एक ने जबाब दिया,

नेताजी आपने कमाल किया

अहसान हमारा आप भुनाते हैं

तभी तो हारने पर आप भुनभुनाते हैं।

(3)

('आकांक्षा' प्रकाशित पुस्तक से)

एक सौ पृष्ठों की इस पुस्तक में लगभग 50शीर्षकों में कवितायें दी गई हैं।इस काव्य संकलन के माध्यम से कवि ने सामाजिक चेतना जगाने का प्रयास किया है कुछ उदाहरण देखिये-

(1) सुन्दर शासन

सुन्दर शासन, स्वच्छ प्रशासन

होगा कब इस देश में

हर नर जब नारायण होगा

नर देही के वेश में।

सुन्दर शासन, स्वच्छ प्रशासन

होगा तब इस देश में।

शोषक या शोषित में जब तक

कोई भेद न होगा

सुन्दर शासन स्वच्छ प्रशासन

तब तक यहां न होगा।

अनाम जिन्दगी

मैं अनाम जिन्दगी जी रहा हूं

जीवनी कलुष को ही पी रहा हूं

दूसरों की ईर्ष्या मेरी जिन्दगी है

और द्वेष दूसरों का मैं ढो रहा हूं

मैं अनाम जिन्दगी जी रहा हूं।

मानव ही तो ज्ञान पुंज है

आओ साथियो हिल मिल,

चलकर ज्ञान की ज्योति जलायें

अंधकार को इस धरती से

सब मिल दूर भगायें

मानव ही तो ज्ञान पुंज है

घर घर में समझायें

और घरों में व्याप्त तमों को

मिलकर दूर भगायें।

〈4〉

〈 'मधु ज्वाला' प्रकाशित पुस्तक से 〉

एक सौ छियासठ पृष्ठ की इस पुस्तक मं 333 पद हैं। रचनाओं के कुछ अंश देखिये-

कलकल, छलछल ध्वनि होती है,

जब हाला प्यालों में गिरती,

कल कल से कल छिन जाता है

छल छल से हाला छलती।

छम-छम-छम होती पद ध्वनि,

जब चलती साकीबाला

ये उसके प्रिय की आहें हैं

जो सदा रौंदते मधुशाला।

ऐ मधुशाला जाने वालो,

पहचानो तो मधुशाला

ऐ मधुशाला लिखने वालो

समझो तो तुम मधुशाला।

क्षय करने की अक्षय शक्ति

रखती स्वयं सदा मधुशाला

दुर्घटना के हेतुक बनते

हाला, प्याला, साकीबाला।

बिना काल कवलित हो जाते,

कारण बनती मधुशाला

जब ये समझेगी साकी तो

बन्द करेगी मधुशाला।

मूल्यांकन:

श्री रामदत्त 'अजेय' नयी पीढ़ी की कविता के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। कवि की रचनाओं में उसके गंभीर मौलिक चिन्तन की एक स्पष्ट झलक दिखायी पड़ती है। रचनायें दुरूहता से हटकर सरल एवं रोचक शैली में लिखी गई हैं। रचनाओं में लालित्य एवं माधुर्य का गुण विद्यमान है।

(7) श्री जाहर सिंह:

जीवन परिचय:

श्री जाहर सिंह का जन्म 21 सितंबर सन् 1920 को महोबा तहसील के अंतर्गत ग्राम मकरबई में हुआ था किन्तु अब स्थायी रूप से ये गांधीनगर महाबा में रह रहे हैं। इनके पिता का नाम स्व0 ठाकुर फूल सिंह तथा माता का नाम श्रीमती गोरी बहू था। इन्होंने प्रयास विश्वविद्यालय से बी0ए0 तथा आगरा विश्वविद्यालय से एम0ए0 की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने राजकीय सेवा में प्रति उप विद्यालय निरीक्षक के पद पर हमीरपुर , प्रतापगढ़ व अलीगढ़ में कार्य किया तत्पश्चात राजकीय दीक्षा विद्यालय मथुरा व जालौन में प्रधानाध्यापक रहे। बाद में प्रधानाचार्य पद पर राजकीय इण्टर कालेज गगाली हाट, बांदा, समथर चरखारी व मटौंध में कार्यरत रहे। अवकाश प्राप्ति के बाद अब महोबा में ही रहते हैं। ये एक अच्छे खिलाड़ी भी रहे हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी कोई पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है। इनकी फुटकर रचनायें विभिन्न पत्र/ पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1) नारी के प्रति

नारी तेरा नाम धरा पर अमर रहा है, अमर रहेगा।

धारी भारी पीर, प्यार का श्रोत बहा है, सदा बहेगा।

मन्वन्तर की प्रात बनी श्रद्धा मनुहारी,

हिमगिरि के उत्तुंग शैल बिच लीलाकारी

प्रलय प्रवाह तिरोहित मनु की नांव संवारी

जन्यो तात आनन्द सृजन की बेलि पसारी।

गंग जमुन की भांति तुम्हारा सृजन चिरंतन अजर रहेगा।

जन्मे ध्रुव, प्रहलाद, हरिश्चंद्र , गौतम, गांधी

जनी अहिल्या,तारा, सीता, इन्दिरा गांधी।

जनन हेतु जननी तुमने, शिव पिंड आराधी।

मनु मानव हित सदा अनेकों सहे उपाधी।

कंसासुर वध हेतु वन्दिनी नाम तुम्हारा प्रवर रहेगा।

(2) चौकड़िया

देखो जमुना कमल कन्हाई,

सुधि राधा की आई।

गोपी, ग्वाल बाल, गो-गोरस,

मधुवन की परछाई।

बंशीवट, वृन्दावन, गोकुल,

रमण रेत अंगनाई,

केसव कहत बिलख ऊधवसन,

यह मन मम बसनाई।

(3) कवित्त (भकार-भंवर)

भालन भवानी भर्ग, भूषित भभूत भव्य,

भद्रिका भगीरथि भगति भचकाई है।

भूपक, भूधर, भूप, भाषा, भाव भद्र भूमि

भूरि भूरि भद्रक भजन भक्ति भाई है

भूसुर भ्रमर भक्त, भास्वर भुवन भाल,

भूषित भिंसार, भूति, भगित भलाई है।

भारत भरत भूमि, भासुर, भगण -भानु

भव भहार भद्र भूमिका भ्रमाई है।

(4) गीत

नभ मण्डल दिव्य ज्योति से आलोकित

नीली चादर पर हीरे मोती बिखार गये।

काली अलकों के मध्य टंका कुमकुम सुहाग।

नीलांचल के अवगुण्ठन तिल तिल निखार गये।

मेरे मन के चंचल पंखों ने ली उड़ान,

पढ़ लूं दैवी दुर्बोध गुप्त अप्रितम रहस्य।

गिन गिन कर इक इक रत्न डाल लूं झोली में।

बन विपुल राशि निधि पति सूची का इक सदस्य।

राका रमणी का निर्मल गुभ्र नगनाभिराम

क्षण क्षण आवाहन करता था मेर मन को,

अनकहे कह रहा था सब कुछ निज हृदय खोल,

पढ़ पढ़ अक्षर अक्षर प्रभु सत्ता के धन को।

(5) दोहे

ऊर्ध्व अधोगति मनुज की, निज करनी बरा होय

कूप खानक शिल्पी भवन, नीचो ऊंचो होय

गुण अवगुण बिच आत्मा, लसत शिला की भांति,

अति श्रम गुण स्थापना, लघु अवगुण झपि जाति।

श्री की समिधा सात हैं, क्षमा, दया, कारूण्य,

पवित्रता, धृति कुमितता, तज वाणी दारूण्य।

विविध यतन जिमि गुरू शिला, उच्चारोहण होय।

क्षण भर में नीचे गिरें, बिन श्रम कीदै सोय।

(6) गीत

ओ सरस्वती के स्नेहित सुत, तुमको वन्दन
ओ वदेही के भक्त, तुम्हें शत सहस नमन।

तेरी वाणी से मुखरित हो साकेत सरित।
उर्मिला उर्मियों से आप्लावित धार निरत
तुलसी की तूली ने जिसको सीमित रखाकर।
अति संयत सन्यासिन विरक्त, रस वंचित कर
जिस अनुज वधू का विम्बांकन था योगासन
उसकी छवि तुमने मूर्तिमान की विरह जनन।

तुमने गौतम ग्रहणी को है, अमरत्व दिया
तुमने शाश्वत संस्कृति का अमृत घूंट पिया
तुम प्रेम पुंज करूणा निकुंज थे क्षमाशील।
तुम सहज सरल शालीन सतत थे विनय शील
नीहारक ध्रुव की भांति, अडिग बिच ज्ञान गहन
चिर पथ दर्शक विचलित पंथी की होम किरन।

मूल्यांकन:

श्री जाहर सिंह की उपर्युक्त रचनायेंउनके एक अच्छे कवि होने का सशक्त प्रमाण हैं। कवि को हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान है अलंकारों का सुन्दर प्रयोग रचनाओं के सौन्दर्य को बढ़ाता है। कविताओं में कहीं कहीं कठिन शब्दों का प्रयोग किया गया हे किन्तु उनमें प्रवाह है तथा वे माधुर्य के गुणों से युक्त हैं। जनपद के अच्छे कवि के रूप में श्री जाहर सिंह द्वारा की जा रही साहित्यिक सेवा सराहनीयहै।

(8) श्री रामशरण दीक्षित 'सुमन' :

जीवन परिचय:

श्री रामशरण दीक्षित 'सुमन का जन्म संवत 2000 में ग्राम पहरा (महोबा) में हुआ था।

इनके पिता का नाम श्री चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित तथा माता का नाम श्रीमती रामरती देवी है। इनकी शिक्षा एम0ए0 (हिन्दी अंग्रेजी) बी0एड0 है। वर्तमान समय में डी0ए0वी0 इण्टर कालेज महोबा में अंग्रेजी प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं तथा प्राइवेट बस स्टैण्ड के पास महोबा में निवास करते हैं।

काव्य कृतियांः

इनकी कोई पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है इनकी फुटकर रचनायें विभिन्न पत्र/ पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। आकाशवाणी छतरपुर से भी इनके कुछ गीत प्रसारित हो चुके हैं। ये मूल रूप से एक गीतकार हैं तथा राष्ट्रप्रेम तथा प्रकृति चित्रण के गीत मुख्य रूप से लिखाते हैं लगभग 125 गीतों की रचना अभी तक इन्होने की है। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

(मां सरस्वती के प्रति)

दोष विशारदे, वार दे ज्ञान, दया कर कंजहु नैकु पसार दे।
नीर भरी अखिंया पसुरीन को, आंचल पोंछ ले प्यार दुलार दे।
भाव भरे अंजुरी भर छन्द दे, अम्बुज सी रसना सुकुमार दे।
हंस के वाहन बीन बजावति, गावति अम्ब अशारदे शारदे।

(2)

राष्ट्र गीत

देख लाली पूरब की ओर,
चूमती धरा क्षितिज का छोर,
भोर ने पंख पसार दिये।
हरित तृणों को नीले नभ ने मुक्ता हार दिये।
धूल माटी चन्दन,
हमारा ये नन्दन।

दिशा अंगनों हैं सस्वर,
स्वागत गान सुनातीं
मुदित मधुर भ्रमरावलियां
कलियों का मन बहलातीं।

हिमालय किये समुन्नत भाल
निर्झरों का मोहक स्वर ताल
काल का कालपात्र ऐसा
मोह रहा ऐसे, मोहन का
वृन्दावन जैसा।

वन्दनीया भू है,
कोकिला की कू है।

यहां शान योगेश्वर का
कौन्तेय कर्म सहचर है
यहीं कबीर, सूर तुलसी की
वाणी का अध्वर है।

कला कौशल का यह आगार
सोम सा सोमनाथ साकार,
हार हर हारे मन का है,
निर्बल का बलराम
डूबते जन का तिनका है।
विवेक समुन्दर है
सत्य शिव सुन्दर है।

चित्रों का यह चित्रकूट, मधुमय है मन भावन है।
हरा भरा फल फूलों वाला, धरती का सावन है।
× × × × × × × × × ×

(3) गीत

फिर गाता कुसुमाकर वसन्त आया।
खुशियों का ले सागर वसन्त आया।
सरसों, बरसों की साध लिये झूमें
धरती का श्याम सलौना मुख चूमें
गोरी राधा के श्याम डिठौना है
बहता समीर जैसे मृग छौना है

वसुधा पर सुधा कलश लेकर उतरा,

छलकाता हर गागर वसन्त आया।

खुशियों का . . . . . .

विश्वास विनय ममता की बात करो।

भाई हो भाई से मत घात करो

जाने कब जाने की बेला आये।

हो सका न अब तो कभी न कर पाये।

हर दिशा दिव्य अंगना बनी बैठी।

लेकर फिर पद्माकर वसन्त आया।

खुशियों का . . . . .

(4)

बुन्देली गीत

करैंया हो अब का करतार, ऐन मौका में हो रई हार,

द्वार पे मैं ठाड़ो लाचार, साथ धौरा ने छोड़ दओ

ऐसे फूटे भाग, दूध को मटका फूट गओ।

तो इहां जानो तो, घरइयामानो तो।

कजरा बिन धौरा को बोरा, ज्यों लक्ष्मन को भइया,

खेती को सब स्वांग बिलुर गओ, ऐसी परी समइया।

हमइं खां मिल गये खोटे भाग, न बोनी भई न गायी फाग

आग जा ऐसी गुंगवाई।

टटिया दे कड़ जइये जा अपने मन में आई

अकेलो का करहों, करज कैसे भरहों।

का खेहों का साहूकार का देहों, तुमइं बता दो।

कीके गरे लिपट हों, हंस हों, रो हों जा समझा दो।

मोइ खां भर भादों में ज्वाब, सूख गे मोहां कुआं तलाब।

दाब भोतइ मानी मोरी,

मैंने गलती करी तोइहां देत रओ खोरी।

गम्म तैंने खाई, बड़ी मोरी भाई।

मूल्यांकनः

श्री रामशरण दीक्षित एक अच्छे गीतकार हैं। जैसा कि उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि ये खड़ी बोली तथा बुन्देली दोनों में ही सुन्दर गीत लिखते हैं। रचनायें प्रवाहपूर्ण तथा सरस हैं कवि का राष्ट्रप्रेम उसकी रचनाओं में झलकता है। कवि का सुन्दर प्रयास सराहनीय है।

(9) श्री मैयादीन शुक्लः

जीवन परिचयः

श्री मैयादीन शुक्ल का जन्म ग्राम चिचारा (मौदहा) में लगभग सन् 1920 को हुआ था किन्तु अब ये महोबा में ही रहते हैं। इनके पिता पं0 बाबूराम शुक्ल भी एक अच्छे कवि थे। इनकी शिक्षा संस्कृत से मध्यमा है। ये भागवताचार्य है लगभग 18 वर्ष की आयु से ही ये काव्य सृजन में लगे हुये हैं।

काव्य कृतियांः

इनकी अभी तक केवल एक रचना संग्रह 'गारी नवरत्न' प्रकाशित हुआ है अप्रकाशित काव्य पुस्तकें (1) सर्वोदय कीर्तन (2) मातृ मंजरी तथा (3) कवितावली है। इन्होंने फाग, चौकड़िया, लावनी, कवित्त, छन्द तथा दोहे सभी लिखे हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं।

(1)

('गारी नवरत्न' से)

प्यारी विनय करत प्रीतम से, बात मान मोरी सैंयां
इस दुनिया में कुछ नहियां।

छन्द

प्रीतम देखो हृदय विचारी, जब से बने आय संसारी
तबसे बिगड़ी बुद्धि तुम्हारी, कर लई संसारी पै यारी।
भूल गई सुध गर्भ केर जा कौल करी थी वहि ठइयां
इस दुनिया . . . . . .

तुमने देखा यहां तमाशा, यह तो है मृगतृष्णा भाषा

जैसे पानी केर बताशा, ऐसे यह शरीर की आशा।

आसा करी अन्य जीवन की, सत्य त्याग दयो क्षण महियां

इस दुनियां . . . .

झूठो सत्य जाहि बिनु जाने, रण में ज्यों भुजंग पहिचाने,

ऐसे माया में लपटाने, भूलत भरमत हो मनमाने।

मनमाने तुम काम करत हो, भव बंधन में परिजइयां।

इस दुनिया . . . . . .

(2)

पिया मानो तुम मोर बात आज की

कदर नहीं नशाबाज की।

देखो अपने हृदय विचारी,

या में आठ हान हें भारी

इक तो आयु क्षीण तुम्हारी

दूजे बढ़ती है बीमारी

तीजे घटती मरजाद ह्वै लाज की

कदर . . . . .

चोथे तन को बल घट जावै

पचमें बैरी दांव भंजावै

छठयें बेमतलब बतलावै

सतयें रातन नींद न आवै

अठयें बुद्धि न रहत काम काज की।

कदर . . . . . .

मूल्यांकन:

श्री मैयादीन शुक्ल की रचनायें सरल शैली में लिखी गई हैं जो आसानी से जन सामान्य की समझ में आ जाती हैं। कवि ने सामाजिक कुरीतियों एवं जीवन की वास्तविकता को अपने काव्य सृजन का

आधार बनाया है। कवि की धार्मिक प्रवृत्ति की छाप उसकी रचनाओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है रचनायें सरस व प्रवाहपूर्ण हैं। कवि का प्रयास अच्छा है

(10) श्री रामप्रकाश शुक्लः

जीवन परिचयः

श्री रामप्रकाश शुक्ल का जन्म ग्राम चिचारा (मौदहा) में 1 दिसंबर सन् 1955 को एक कुलीन ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता श्री मैयादीन शुक्ल स्वयं एक अच्छे कवि हैं। इनकी माताजी का नाम श्रीमती कलावती शुक्ल है। एम0ए0, एल-एल0बी0 तक शिक्षा प्राप्त श्री रामप्रकाश शुक्ल वकालत करते हैं। वर्तमान समय में गांधीनगर महोबा में ये रहते हैं।

काव्य कृतियांः

इनका कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। सन् 1975 से काव्य सृजन में लगे श्री शुक्ल जी गीत, छन्द व कुण्डलियांसभी विधाओं में लिखते रहते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये गये हैं।

(1) कुण्डलियां

विधना तोसों न बनी, जस कलंक तें कीन्ह
कमल नाल कांटा किये, पंडित नहिं धन दीन्हि।
पंडित नहिं धन दीन्हि, कीन्ह रतनारे खारे
नव यौवन के बीच, केश ऊजर कर डारे
ऐसी तोरी चाल सोच बस कर दये राजना।
उल्टी तोरी रीति रची, तैंने यह विधना।

(2) गीत

आज वह शुभ दिवस आया
आज कलिका ने किलक कर विश्व में मृदु हास डाला।
और सुमनों न विहंस कर, भर दिया मकरंद प्याला

कोकिला के कलित स्वर में, झूमता मधुमास आया

आज वह . . . .

विश्व के प्राचीन वैभव, और अर्वाचीन भारत

खो दिया था पूर्ण गौरव, देख कर यह दशा आरत

मन मलिन मकरंद सावन, मधुप मधुवन आज पाया

आज वह . . . . . .

गांधी जवाहरलाल, लाला लाजपत की वह कहानी,

गाविन्द बल्लभपन्त और पटेल की वह अमर वानी।

गूंजती थी व्योम में जो, स्वप्न बन साकार आया।

आज वह . . . .

आज पावन पर्व पर उत्साह की कलिका खिली है

मुस्कराता है हिमालय , मुक्ति की बेला मिली है।

सिंधु का वैभव निराला, इंदु का है आज भाया

आज वह . . . . . .

गा रहा था गीत अम्बर, अरू धरा उन्मुख दिशायें

मानस मयूर नर्तकी बन, स्नेह की मनियां लुटायें

विश्व के इतिहास में है, आज वह सौभाग्य आया।

आज वह . . . . . .

श्याम निशि भी जा चुकी अब, चन्द तारा मणि संजोकर

प्रेम पूरित पर्व पावन, लीन निद्रा रात खोकर

अगस्त पन्द्रह आज आया

आज वह . . . . . .

(3)

दर्दो से हम भी अपना पैगाम पूंछते हैं

आये हो तुम कहां से, वह धाम पूंछते हैं।

क्यों जिन्दगी खफा है हमसे ये तुम बताओ।
हमने किया है कौन सा, इल्जाम पूंछते हैं।

हम हर मुकाम जिन्दगी का खोजते ही रहते,
जाना हमें कहां है, वह धाम पूंछते हैं।

गम से भरी हुई है मेरी भी जिन्दगी ये,
जिससे कि तर बदन हो, हमाम पूंछते हैं।

रूक जायें जहां सांसें मंजिल भी बस वहीं है
मिलने की शुक्ल प्रभु से अन्जाम पूंछते हैं।

मूल्यांकनः

श्री रामप्रकाश शुक्ल हिन्दी कविता में युवा पीढ़ी के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। प्रवाहपूर्ण, सरल शैली में कविता लिखाना इनकी विशेषता है। रचनाओं में लालित्य का गुण विद्यमान है। कवि का योगदान सराहनीय है।

(11) वन्दना सोनीः

जीवन परिचयः

वन्दना सोनी का जन्म 14 जनवरी सन् 1976 को गांधीनगर महोबा में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री बाबूलाल सोनी तथा माताजी का नाम श्रीमती सुशीला सोनी है। इन्होंने एम0ए0 तक शिक्षा प्राप्त की है । वर्तमान समय में महोबा में ही रहती हैं।

काव्य कृतियांः

इनकी फुटकर रचनायें विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। ये मुख्य रूप से श्रंगार एवं सामाजिक संदर्भो में लिखाती हैं। इनकी कुछ रचनायें अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं।

(1)

अंजाना था वह, पर था नाम तेरा

फिर भी दिल को करार आया

ये क्या था शायद

गहरा गया स्मृति का स्पंदन

तू था कभी अपना

पर आज है अपनापन लिये

है ये बोध सांसारिक रिश्तों का

नहीं पर ऐसा नहीं,

यह द्योतक है उस टीस का

जो तुमने मिली कल्पनाओं में

परिणित यथार्थ का।

(2)

(स्पंदित अभिलाषायें)

प्रत्येक स्वप्न

रात्रि के उपरान्त

पिस गया काल यन्त्र में

कल्पनायें स्निग्ध जीवन।

यथार्थ की कसौटी पर

कस गयी जिन्दगी।

और

फिर घिर गया

अनुभव आंगन

अनुभव और विवेक

के माध्यम से

अहंकार उर्जस्वित हुआ।

फिर स्पंदित अभिलाषायें

अंगड़ाई

ले गयी अतीत और

भविष्य की

सुखद छांव में

बाबुल की नांव में

पिया के गांव में।

(3)

समर्पण

आई हूं द्वार

हृदय प्रेम पूर्ण

समर्पित आज

तुम्हारे लिये

अंधेरों से हार

प्रार्थना के सहारे

आशा का दीप

तुम्हारे द्वारे

हृदय की कामना

बस यही प्रार्थना

प्यारा समर्पण

बन गई वंदना

अग्रसर ये मन

तुम्हारे लिये।

मूल्यांकन:

वन्दना सोनी एक नवोदित कवियित्री हैं। जैसा कि उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है ये अतुकान्त कवितायें ही लिखती हैं। अतुकान्त होते हुये भी इनकी रचनाओं में प्रवाह है। रचनायें लालित्यपूर्ण एवं हृदयस्पर्शी हैं। सुन्दर शब्दों का चयन इनके गहरे भाषा ज्ञान का प्रतीक है। इनका प्रयास उत्तम है।

(12) कु0 रागिनी सोनी:

जीवन परिचय:

कु0 रागिनी सोनी का जन्म 13 जनवरी सन् 1978 को गांधीनगर महोबा में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री बाबूलाल सोनी तथा माताजी का नाम श्रीमती सुशीला सोनी है। इनकी बड़ी बहिन वन्दना सोनी भी अच्छी कवियित्री हैं। इनकी शिक्षा बी0ए0 तक है अभी भी ये अध्ययनरत हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी फुटकर रचनायें कादम्बिनी व गृहलक्ष्मी जैसी विशिष्ट पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। ये अतुकान्त रचनायें ही लिखाती हैं। इन्होंने आध्यात्मिकता की ओर ध्यान आकर्षित करने वाली रचनायें अधिक लिखी हैं। इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

(1)

हाँ !
कहां पाऊं तुझे,
सामाजिक चौराहे से
जाते हैं अनेक मार्ग
हर मार्ग पर लिखा है
यह सत्य दूसरा असत्य
ऐसे में क्या
मुझे अपना मार्ग,
स्वयं ही बनाना होगा।
हाँ ! तुझे ही मुझ तक आना होगा।

(2)

(छलती स्वयं को)

छांव की तलाश में,
ठंडक की प्यास में
नीरवता भटकती

ठूंठों के नीचे खड़ी रह गयी
नीचे की घास ने मुझे छल लिया
गिर गया मेरे ही ऊपर
मेरा ही लगाया पेड़
और रह गयी मैं देखती
चौंका देने वाला दृश्य
स्वयं से स्वयं का छलना
चुनती रह गयी
आंसुओं के ज्वार में
अपनी निपुणता बेजान देह
ढोने को मजबूर हूं। आज
बस
आकांक्षा पूर्ति की आशायें
फिर धूमिल होती हैं अभिलाषायें
फिर भी
जीने की इच्छायें
छलती स्वयं को
ढह गया एक घर
और ।

× × × × × × × ×

मूल्यांकन:

जैसा कि उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है , अपनी बड़ी बहिन वन्दना सोनी के समान ही कु0 रागिनी सोनी भी अतुकान्त कवितायें ही लिखती हैं। इनकी रचनाओं में इनका गहरा मौलिक चिन्तन स्पष्ट दिखायी देता है। रचनायें सरस एवं प्रवाहपूर्ण हैं। इनकी भावपूर्ण रचनायें मन को झकझोरती हैं। हिन्दी कविता की नवोदित कवियित्री कु0 रागिनी सोनी का प्रयास सराहनीय है।

(13) श्री संतोष कुमार पटैरिया:

- - - - - - - - - - - - - - - - - -

जीवन परिचय:

- - - - - - - - -

श्री संतोष कुमार पटैरिया का जन्म 28 अगस्त सन् 1958 को महोबा में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गोपाल पटैरिया तथा माताजी का नाम श्रीमती उमा देवी है। इन्होंने एम0ए0 (संस्कृत) तक शिक्षा प्राप्त की है तथा वर्तमान समय में अध्यापन का कार्य करते हैं। सम्पादन कार्य में इनकी विशेष रूचि है। खजुराहो पर भी इन्होंने शोध कार्य किया है आल्हखण्ड में इनकी विशेष रूचि है।

काव्य कृतियां:

- - - - - - - - -

इनका अपना कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु इनकी रचनायें विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आकाशवाणी छतरपुर से भी इनकी कविताओं व वार्ताओं का प्रसारण होता रहता है इनकी कविताओं का मुख्य विषय वर्तमान दुर्व्यवस्था तथा भारतीय संस्कृति का उन्नयन है। अवलोकनार्थ इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

(1)

फागुनी उमंग मे रंग छलकाती प्रिय,
अंग-अंग, संग संग चंग सी बचावतीं
तिय के कपोलन को मोल को कर सके,
नैन मन बैन कहे, चित्त को चुरावतीं।
यौवनी अनूप धूप रूप को सुगन्ध देत,
देख देख के स्वरूप शशि को लजावतीं।
पूरवी समीर लिये, नेह का अबीर साथ,
कुंकुंम और केशर की फाग सी मचावतीं।

(2)

खाली न हो जाये कहीं,
नैन की सीपिका
अधिक समय बाद किसी,
मोती का जन्म होता है

कुछ समय संयत करें, उल्लास को अपने

चन्द खुशियां द्वार देहरी ने पाई है

स्वागत करें भीड़ की आकांक्षा मन में न रहे,

कुछ घड़ी को होंठ पर मुस्कान आई है

ज्योत्स्ना जितनी मिली संतोष हमको

व्यर्थ ही क्यों उसे तुला से तौल डालें।

वर्तमान का सुख ही सहन हो बहुत है

छोड़ो भ्रम की ग्रन्थि क्यों खोल डालें

प्रकाश का तारतम्य,

क्यों अवरून्द्ध कर दें

बड़ी कोशिश के बाद

एक दीप जला करता है।

(3)

क्षणिकायें

गिरगिट अब,

अपना मुख नहीं दिखाने काबिल

क्योंकि आज के नेता ने

उसे मात दे दी है

क्षण क्षण में बदल कर दल

हत्यायें, बलात्कार, डकैतियां

बेशर्म के पौधों की तरह

फल रहे हैं

कुर्सी पर गेंडुली मारे

ये विषधर

उन पर ही पल रहे हैं।

(3)

भगवान कृष्ण की भांति

आज भी लोग

चन्दा को प्यार करते हैं

वे चन्दा लेकर,

सूची में दिखाकर

स्वयं ही रख लेते हैं।

देश में विकलांग,

समस्या गहरी है।

जनता गूंगी, कानून अंधा,

सत्ता बहरी है।

(4)

गीत

आंगन की धूप अच्छी लगती नहीं है आज

घर की देहरी कहीं पुजती नहीं है आज।

औरों के द्वारे जा के, बुलबुल थिरक रही

अपने घर में घुंघरू बजती नहीं है आज।

पश्चिम की आयी आंधी में सब कुछ उड़ रहा

पूरब की हवा मौन है कुछ कहती नहीं है आज।

आंगन के पेड़ की टहनियां इतनी नहीं है बढ़ गयीं

तने की ओर बिलकुल झुकती नहीं है आज।

उल्लास से उमड़कर बहुत दूर जा रही नदी

बहुत यत्न पर भी रूकती नहीं है आज।

बस्तियां बस्तियां मरघट हैं बन रहीं

खुद किसी की सांस अब चलती नहीं है आज।

दीवारों पर कंगूरों की तस्वीरें दिख रहीं

नींव की ईट की झलक दिखाती नहीं है आज।

मूल्यांकनः

श्री संतोष कुमार पटैरिया हिंदी कविता के एक नवोदित कवि हैं। गीत छन्द तथा अतुकान्त कवितायें सभी पर इन्होंने समान कुशलता के साथ लेखनी चलाई है। इनकी रचनाओं में प्रवाह है, सरस एवं सरल शैली में रचनायें की गई हैं। हिन्दी भाषा पर कवि का अधिकार है। संक्षेप में इन्हें युवा पीढ़ी का एक अच्छा कवि कहा जा सकता है।

{14} श्री शिवशंकर दयाल रिछारिया :

जीवन परिचयः

श्री शिवशंकर दयाल रिछारिया 'अशान्त' का जन्म मलकपुरा-महोबा में 16 जनवरी सन् 1929 को हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 शिवदयाल रिछारिया तथा माता जी का नाम मथुरा देवी था। इनकी शिक्षा एम0ए0 {हिन्दी} तक की है। सिंचाई विभाग महोबा में ये कार्यालय अधीक्षक के पद पर कार्यरत रहे। सेवानिवृत्तिके पश्चात अब ये मलकपुरा महोबा में ही निवास करते हैं। शिक्षण कार्य में इनकी विशेष रूचि है।

काव्य कृतियांः

इनकी अभी तक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। अप्रकाशित रूप में 'महोबा' खण्डकाव्य इनके पास उपलब्ध है। इनके अप्रकाशित तीन नाटक भी हैं {1} लाला हरदौल {2} महारानी पद्मावती तथा {3} आदर्श नारी , ये मुख्य रूप से व्यंग व वीर रस में रचनायें करते हैं। इन्होंने मदिरा छंद का प्रयोग सर्वाधिक किया है मंचों पर भी ये कविता पाठ करते हैं। कवि के ही अनुसार अभी तक लगभग 500 रचनायें इन्होंने की हैं। अवलोकनार्थ इनकी कुछ रचनायें निम्नांकित हैं।

॥1॥

॥पृथ्वीराज चौहान का महोबा पर रक्षा बंधन के दिन चढ़ाई करना तथा राजमाता मल्हना का आल्हा, ऊदल को कन्नौज से बुलाना॥

यह नगर महोबा,

जिससे दिल्लीपति हरदम थर्राता था

यह नगर महोबा,

जिसका ध्वज बावनगढ़ पर फहराता था

था 'रामराज्य' सर्वत्र यहां,

यह नगर सदा संपन्न रहा

सबके तन पर था वस्त्र,

यहां पर सदा पेट में अन्न रहा।

जब मानव, मानव था यथार्थ,

शुभ प्यार पला करता था।

ऐश्वर्य, पराक्रम वैभव का,

प्रिय दीप जला करता था।

उस नगर महोबा को पहिले,

कवि की कविता का अभिनन्दन।

उस वीर भूमि के वीरों का,

कण कण करता शत शत वन्दन।

उसकी माटी की याद,

हमें हरदम आयेगी।

आल्हा ऊदल से वीर,

सदा यह उपजायेगी।

जब औरों का बढ़ता वैभव,

देख नहीं सकता है मानव

तब उसका इतिहास उसी को,

चिल्ला कर कहता है दानव।

थ सावन का मास,

दिवस था रक्षाबंधन।

कजली का त्यौहार,

मनाता था पाटनपुर का सिंहासन

बादल नभ में घुमड़ रहे थे,

अंधियारी झुकती आती थी

वर्षा के स्वागत में कजली,

जन गाता धरती गाती थी।

बाल वृद्ध क्या युवा सभी पर,

सावन की खुशहाली छायी

जैसे एक साल के अन्दर,

दो दो बार दिवाली आयी।

कहीं दूर पर धीमा धीमा,

जगनिक का स्वर सुन पड़ता था

यही राग था जिसको सुनकर,

क्षण में जोश उंमड़ पड़ता था।

दूर राजपथ पर कतार से,

हाथी,घोड़े खड़े हुये थे

जिनके एक एक हौदे में,

हीरा मोती जड़े हुये थे।

जहां महीनों के पहले से,

चहल पहल थी कोलाहल था।

इन्द्रभवन सा जगमग करता,

वह चन्देली राजभवन था।

निकलेगी थोड़े विलंब से,

महाराज की अभी सवारी।

शायद पूरी नहीं अभी तक,

उनके स्वागत की तैयारी।

× × × × × × × ×

कोलाहल यह भगदड़ कैसी,

कुछ अनर्थ होने वाला है।

राजमहल से हुई घोषणा,

पृथ्वीपति चढ़ने वाला है।

पृथ्वीपति चौहान चढ़ गया,

खबर हो गयी दावानल सी,

सावन कजली बन्द हो गये,

बन्द हो गयी ध्वनि मंगल की।

जहां अभी सावन पावन था,

वहां अभी तूफान आ गया

स्वर्ग लोक की पुण्य भूमि में,

जैसे इक शमशान आ गया

कीरत सागर से पठवा तक,

कुलपहाड़ से गोरखागिरि तक

गिरि गुखार से विजय नगर तक,

विजय नगर से दसरापुर तक।

फैला था चौहान शान से,

ऐसे अपना डेरा डाले।

मानो गीदड़ दल आया हो,

मरते समय सिंह के पाले।

उत्तर दिशि में सेनापति,

श्री चक्रपाणि जी का डेरा था।

दक्षिण दिशि में बच्छराज ने,

रिपुदल को सशस्त्र घेरा था।

डौगर सी निज सेना लेकर,

पूरब दिशि में ठहर गया था

दुश्मन की सेना के ऊपर,

केशरिया ध्वज फहर गया था।

इधर युद्ध की पल भर में ही,

रणभेरी बजने वाली थी।

इधर राजमाता आल्हा को,

आमंत्रित करने वाली थी।

लिखा राजमाता ने आल्हा,

आज हमारी लाज बचा लो

दुश्मन के हाथों से अपना,

देश, राज्य, सर, ताज बचा लो।

जाने कितनी माताओं के,

लाल गोद से छिन जायेंगे

जाने कितनी बहिनों के,

सिन्दूर रक्त से सन जायेंगे

आज तुम्हें मेरी बहिनों की,

आरत आह पुकार रही है।

नगर महोबे की हर माता,

व्याकुल राह निहार रही है।

× × × × × × × ×

मूल्यांकनः

श्री शिवशंकर दयाल रिछारिया की उपर्युक्त सशक्त रचना उनके एक प्रख्यात कवि होने का प्रमाण है। कवि द्वारा लिखित खण्ड काव्य 'महोबा' एक उत्कृष्ट खण्ड काव्य है। हिन्दी साहित्य के हित में इनका प्रकाशन अवश्य ही होना चाहिये जिससे जन सामान्य को कवि की विद्वत्ता का पता चल सके। वीर रस एवं व्यंगपूर्ण रचनायें लिखाने में कवि कुशल हैं। इनकी रचनायें प्रवाहपूर्ण एवं लालित्य के गुणों से युक्त हैं। काव्य दोष से पूर्णतया मुक्त श्री रिछारिया जी की हिन्दी काव्य को देन सराहनीय है। भावपूर्ण सुन्दर शब्दों के चयन से इनकी कवितायें अत्यंत प्रभावी हैं। संक्षेप में इस वरिष्ठ कवि को जनपद के श्रेष्ठ कवियों में स्थान दिया जाना पूर्णतया न्यायोचित है।

(15) डा0 नर्मदा प्रसाद गुप्तः

जीवन परिचयः

हिन्दी साहित्य के प्रख्यात विद्वान डा0 नर्मदा प्रसाद गुप्त का जन्म 1 जनवरी सन् 1931 को महोबा में हुआ था। 'प्रसाद' इनका उपनाम है। इन्होंने एम0ए0 (अंग्रेजी, हिन्दी) बी0एड0 तक शिक्षा प्राप्त की है एवं 'बुन्देलखण्ड का मध्ययुगीन काव्य : एक ऐतिहासिक अनुशीलन' विषय पर इन्हें पी-एच0डी0 की उपाधि प्राप्त हुई है। ये उच्च शिक्षा, मध्य प्रदेश शासन में हिन्दी के प्रोफेसर पद पर कार्यरत रहे तथा वर्तमान समय में सेवानिवृत्त होकर मंगलम, सर्किट हाउस मार्ग-छतरपुर म0प्र0 में निवासकरते हैं एवं साहित्यिक साधना में सतत रत हैं।

संस्थागत एवं साहित्यिक सेवायेंः

डा0 गुप्त जी विभिन्न संस्थाओं से संबद्ध हैं। ये ईसुरी परिषद मऊरानीपुर झांसी के मंत्री, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त स्मारक संस्थान-चिरगांव (झांसी) के महामंत्री, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त विद्यालय छतरपुर (म0प्र0) के संस्थापक, बुन्देलखण्ड साहित्य अकादमी छतरपुर (म0प्र0) के संस्थापक तथा अध्यक्ष, बुन्देलखण्ड सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोग परिषद लखनऊ उ0प्र0, म0प्र0 हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल तथा म0प्र0 आदिवासी लोककला परिषद भोपाल (म0प्र0) की समितियों के स्थायी सदस्य हैं। विभिन्न सांस्कृतिक मंचों से संबद्ध रहकर आप साहित्यिक सेवा कर रहे हैं। आप जगनिक शोध संस्थान महोबा (उ0प्र0), केशव शोध संस्थान ओरछा (म0प्र0) तथा म0प्र0 साहित्य परिषद भोपाल से भी संबद्ध हैं आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है। इसके अतिरिक्त उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, म0प्र0 लेखक संघ भोपाल द्वारा 'अक्षर आदित्य' सम्मान, बुन्देली विकास मंच पथरिया, दमोह द्वारा 'ईसुरी' सम्मान तथा बघेली विकास परिषद तिवनी रीवा द्वारा लोकभाषा सम्मान आपको प्राप्त हैं। आपका अनेकों अन्य मंचों पर भी अभिनन्दन किया जा चुका है। आपकी कृति 'बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति का इतिहास' पर उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार भी आपको प्राप्त हुआ है।

काव्य कृतियां:

डा0 गुप्त जी अनेकों पत्र/पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य भी कर चुके हैं जिनमें महाविद्यालय पत्रिकायें, मामुलिया त्रैमासिकी, लोकगीतों व लोकगाथाओं का सम्पादन तथा सुराज, गांधी, लोकगीत, पारीछत को कटक, छत्रप्रकाश, पांच पुस्तकों का सम्पादन प्रमुख है।

इनकी अनेकों वार्तायें, रूपक तथा नाटक आदि छतरपुर, भोपाल, जबलपुर, इलाहाबाद तथा दिल्ली आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारित हो चुके हैं। दूरदर्शन से भी आपके कार्यक्रम प्रसारित हुये हैं। इनकी अब तक प्रकाशित पुस्तकों / ग्रन्थों की सूची निम्न प्रकार से है-

(1) आल्हा	1962	नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली
(2) बुन्देली फाग, एक मूल्यांकन	1982	बुन्देलखाण्ड साहित्य अकादमी छतरपुर
(3) आल्हखण्ड: शोध और समीक्षा	1983	' '
(4) लोककवि ईसुरी और उनका साहित्य	1983	' '
(5) मध्यप्रदेश लोक संस्कृति	1987	' '
(6) राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की साहित्य साधना	1988	' '
(7) बुन्देली लोक संस्कृति	1989	' '
(8) बुन्देलखाण्ड की लोकसंस्कृति का इतिहास	1995	राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
(9) लोकसाहित्य पर शोधलेख	95	प्रकाशित
(10) लोककला पर शोध लेख	10	'
(11) लोकललित निबंध	10	'
(12) साहित्य पर शोध लेख	40	'
(13) कवितायें	30	'
(14) कहानियां	40	'

इसके अतिरिक्त अन्य छः अप्रकाशित पुस्तकें भी हैं। आप एक उच्च कोटि के साहित्यकार एवं कवि हैं। इनकी कुछ रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

(1)

डूब रहे तम का विश्वास

कितना दृढ़ कितना है गहरा डूब रहे तम का विश्वास।

कालमुखी छायागें अनजानी गैल गईं

अपनी ही परछाईं तन तन कर फैल गईं

मौन हुई अपनी ही राधा टूटा मन-मोहन का रास।

बोधों के नये दीप अंधकार उगल रहे

अजगर से पड़े दीप मुक्ताहल निगल रहे

काजर की मोर चुग गई फिर टंगा हुआ हार अनायास।

एक रेखा आशा की तारक फिर खींच गया

सूरज का स्वर्णिम मृग छल-बल से जीत गया

ऊषा की सीता हर लाया तापस बन तम का आकास।

दीपों की कोरों से जगमग छबि फूट पड़ी

मावस के अधरों पर जैसे स्मित रेखा खड़ी

किन्तु दुके अंधयारे आकर लूट गये द्युति का मधुमास।।

(2)

अंकुआया सिर

हर आदमी के सिर से

एक सिर और अंकुआया है

जैसे बनिये के मूलधन से उगा ब्याज

पहले सिर को दूसरे ने / धीरे धीरे हजम कर लिया है

जैसे मूलधन हजम करने वाला

ब्याज ही बार बार देता है

और बार आर के भ्रम से महाजन उसे ही मूलधन समझने लगता है

फर्क केवल इतना है कि

पहले मूलधन ने ब्याज को जन्म दिया था

अब ब्याज मूलधन को जन्मता है।

मतलब यह है कि पहला सिर / किसी उधारी बिचारी के घर कैद हो गया है

और दूसरा मूल बन गया है

साफ है कि यह अंकुआया सिर

खार पतवार की तरह

असली फसल की खूराक खाये जा रहा है

और पहला सिर पीला पड़ता जा रहा है

मेरा कहना मानो

इस अंकुआये सिर को पहचानो

नहीं तो असली फसल नष्ट हो जायेगी

और खार पतवार की फसल असली हो जायेगी।

(3)

दोषी कौन ?

अधर में लटके हुए

अस्तित्वों के मकड़जाले

और उन में फंसा हुआ

मक्खी सा मन

बार-बार भिन्नाता है।

दूर से रेंगता

बड़प्पन का मकड़ा

अपनी टांगें फैलाए

चोरी-चोरी आता है

दोष किसका है

उस मकड़जाले का ?

जो मकड़े के भीतरी रस से बुना है

उस मक्खी का?

जो दूसरे के शिकार में घूमती है

उस मकड़े का ?

जो अपना पेट भरता है

दोष किसका है ?

मकड़जाला बनेगा

तो मक्खी फंसेगी

और मकड़ा रेंगेगा।

§4§

प्रजातंत्री गणेश

मंगल और शकुनों के देवता गणेश!
आज के अमंगल और अपशकुनों से तंग आकर
हमने एक प्रजातंत्री गणेश ढाला है
बिलकुल आप जैसा ।
दूसरों का माल पचाने की होड़ में सबसे बड़ा उदर
बुराइयाँ सुनने के ताव में बढ़ते सूपों जैसे कान
दोषों की खोजबीन में छोटी सी खुर्दबीनी आंखें
और अपनी यशगंधों को सूंघती हाथी की सूंड़ जैसी नासिका
आपको शक हो तो
हे सर्वव्यापी, उन्हें टटोल कर देख लें।
अपने पापों को ढकने वाले श्वेतवस्त्री कमल
वोटों की उगाही के लिये दबावों का पैना परशु
योग्यता के प्रतीक रूप में जेब में खुसी लेखनी
और दलबदल की वजह से एक नहीं दोनों हाथों में लड्डू
क्या यह हूबहू आपका चित्र नहीं है ?
आप घबरा रहे हैं
जबकि देश के सारे लोग गणेश बनने की होड़ लगा रहे हैं।
आपको मालूम है कि आज प्रजातंत्र है
इसलिये प्रजातंत्री पद्धति से रचे गणेश ही काम देंगे।
इसी कारण मेरी आपसे कर जोड़ प्रार्थना है
कि आप प्रजातांत्रिक भावना का ख्याल रखते हुए
अपने प्यारे भक्तों से कहें
(आज्ञा देना आसान नहीं)
इन्हीं गणेश को पूजो
जैसा गण वैसा गणेश ।

(5)

जीवन बोध

अकेली ऊब की गहराइयों में

बहुत नीचे, बहुत नीचे, भाव की सीपी ।

जैसे किसी सुनसान जंगल में बसे

एक निर्वासित निराश्रित किन्तु गहरे

कूप के मन में अचानक कौंध जाए

एक विस्मृति सी किसी मुख की झलक।

विरह की तटहीन धारा में बही

तीव्र गति से, तीव्र गति से, सांस की लहरी।

जैसे किसी तम के समुन्दर में तिरी

एक क्षत विक्षत कमल सी दीप की लौ

पास लहरों के थपेड़े

क्रूर झंझा के झकोरे

कभी जलती

कभी बुझती

किन्तु सावित्री सती सी

ढो रही मन में शलभ-शव-भार

मन की अंधेरी डूबती परछाइयों में

बहुत ऊँचा, बहुत ऊंचा आत्म का सूरज।

जैसे घटा की आंख से झिर कर बढ़ी

एक नन्हे अश्रु सी नव बूँद

कभी लखती धरा,पर्वत, वृक्ष

कभी सागर का लहरता वक्ष

किन्तु ज्यों ही सिर उठाकर देखती

कितना बड़ा उँचा तना आकाश

जो रहा मेरा कभी आवास।

ऊब , बिरही-वेदना, मन के अंधेरे में

छिपा गहरा, तीव्र व्यापक बोध।

जैसे देह-मरू के बहुत नीचे

हृदय की रसधार बहती है

बहुत गहरी, तेज, चौड़ी

किन्तु उसके देखने को एक पैनी आंख

पैने तीर सी धँस जाय जो

और अर्जुन सा निशाना

जो बहा दे भीष्म के मुख में

अबाधित श्रोत - सी जलधार।

मूल्यांकन:

जैसा कि उपर्युक्त साहित्यिक परिचय तथा जीवन परिचय से स्पष्ट है, डा0 नर्मदा प्रसाद गुप्त जी एक उच्च कोटि के ख्यातिप्राप्त साहित्यकार एवं कवि हैं। हमीरपुर जनपद में इस साहित्य मनीषी ने जन्म लेकर अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से जनपद को ही नहीं अपितु सारे राष्ट्र को गौरवान्वित किया है। इनकी रचनायें ओजपूर्ण, माधुर्य एवं लालित्य के गुणों से ओत-प्रोत हैं। जैसा कि उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है , ये नयी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनकी रचनाओं में इनका मौलिक चिन्तन स्पष्ट दिखायी देता है। हिन्दी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान डा0 गुप्त जी द्वारा हिन्दी साहित्य की अनवरत रूप से की जा रही साहित्यिक सेवा अतुलनीय है।

(16) बल्लभदास गुप्ता :

जीवन परिचयः

स्व0 बल्लभदास गुप्ता का जन्म श्रीनगर (महोबा) में दिनांक 2.10.1932 ई0 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मन्नूलाल गुप्ता तथा माताजी का नाम श्रीमती मुन्नीदेवी था। इन्होंने मिडिल तक शिक्षा प्राप्त करके अध्यापक प्रशिक्षण किया एवं ग्राम ऊजरा में अध्यापन कार्य करते रहे। इन्होंने शादी नहीं की थी। अविवाहित रहकर ही समाज सेवा एवं अध्यापन कार्य में लगे रहे। इनकी मृत्यु दिनांक 4.12.1989 को हुई।

काव्य कृतियां:

स्व0 बल्लभदास गुप्ता का काव्य संग्रह प्रकाशित रूप में उपलब्ध नहीं है इनका अप्रकाशित काव्य संग्रह इनके परिवार वालों के पास उपलब्ध है कवि के उपलब्ध काव्य संग्रह से कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

(1)

कृपा हम पर करो भगवान, लगे नैया किनारे पर।

मिले वह ज्ञान गीता का जगा दो देश का घर घर

सखा के भाव से तुमने बताया ज्ञान ऊधौ को

दिखा दो भाव वैसा ही बना लो आज युग द्वापर

मिटा दो चाल कलजुग की बढ़ा दो धर्म की नैया।

टिके बल्लभ सहारे हैं तुम्हारे द्वार के हरि हर।

(2)

छिती पावक पवन, जल में जभी ये हित उड़ानी है

तजोगे तुम तभी धन्धे न साथी विश्व प्रानी है।

जिसे तू नेह करता था उसी का हाल भी लखना
बना ठठरी हटा देंगे लुगरिया तन छुवानी है।
नहीं कुछ साथ जायेगा जगत भी स्वार्थ का धंधा।
जपा बल्लव करो हरिहर नहीं फिर पार पाना है।

(3)

जग में कौन किसीः का साथी।
पड़े रहेंगे महल द्वार में गोरू घोड़ हाथी
कुटुंब कबीला कोई न पूछे, विध के काटत लेख
लगा पंख जब उड़त चेरेरू, डाली पींजर देख।
तत्व तत्व सों बने मिटेंगे जैसे घरिया राती
जटा जूट को धरें शीश में बगुला भक्ती होई।
मन मन्दिर में जिसने ढूंढ़ा तपा ऐन हे ओई
समझ सको ता समझ लेव जा बल्लव हरि की माठी।

(4)

जग में कौन किसी की आश।
अभी देखते माया जोरत हटी न तन की प्यास।
रोतें गाते डीपत सबरे हंस उड़ा जब जाये।
बांध लंगोटी भवन छोड़ के चेटक में पौढ़ाये।
पन चारों में चेत अचेते जोर सका क्या पास।
बता बता में डाता कमाई तूने रे मति मन्दा
समझ सका न फिर भी जग को बना नीर का बुन्दा।
मणि मंदिर की दीप अलौकिक जला इसे ही दास।

(5)

प्रेम की पूजा करो मन प्रेम ही भगवान है
प्रेम ही जग को नचाता प्रेम से उत्थान है
प्रेम से ही मिल गया उस खम्भ में प्रहलाद को।
प्रेम से न्याय नहीं अब प्रेम ही तो ज्ञान है।
उस विजन वन में ध्रुव को भी मिला था प्रेम से
कर दिखायें प्रेम बल्लभ फिर मिले कब आन है।

॥6॥

कभी भगवान हम पर भी दया दृष्टी दिखा दोगे
कठिन भवजाल से पापी दयाकरके बचा लोगे
नहीं कुछ सूझता स्वामी भरम जंजाल के मारे
भजन को दम नहीं मिलती हराने पेटके मारे
अहो हमसे अधर्मी को कहीं पर भी बिठा लोगे
लगा ये चक्र माया का नहीं कुछ भी सुहाता है
तुम्हारी याद आते ही कलेजा कांप जाता है
गिरे इस दीन बल्लभ को कभी फिर से उठा लोगे।

॥7॥

धरती का भार हरने भगवन्त आ रहे हैं
निर्गुन भी होय सगुन जग को बना रहे हैं
श्री कृष्णके जनम पर आनन्द हैं मनाते
सुर नर मुनीश देखो गणपति मना रहे हैं
देवांगनायें नाचती गंधर्व गा रहे हैं
नारद मुदित रसीली वीणा बजा रहे हैं
खुश होके देव सारे वर्षा सुमन रहे हैं
अपनी अपार अदभुत लीला दिखा रहे हैं
मथुरेश कर लिया था ऋषियों से रक्त रूपी
अवतार लेके नटवर बदला चुका रहे हैं
खल जन को मार देवें वे लाजके बचैया
बचनो मे वद्ध भगवन बल्लभ बता रहे हैं।

॥8॥

परदा ऊपर चढ़ा विलक्षण भीतर कोई न जाने रे
मल मल काया धोता फिरता भीतर कोई न जाने रे
साबुन बढ़िया से क्या धोता भीतर मैल जमे रे
काम क्रोध मद लोभ भयंकर धोवन नाहिं टटेरे
बल्लवदास भजो हरिहर खां भव मल तोर धुवे रे

(राष्ट्रीय गीत चाऊ चें चें)

चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।
बता रहा इतिहास हमारा वैभव हित मिट जायेंगे।

कापेंगे हर हर हर गिर से ले त्रिशूल धाये संग में।
चीनी सेना को काट काट ले मुण्ड माल धारे जंग में।
भारत के करते सिंहनाद आ जायेंगे त्रिलोक धनी
ले चक्र सुदर्शन हाथों में दे तिड़ी बिड़ी कर चीन अनी।

माता का खप्पर भरने में चिनियों का रक्त चढ़ायेंगे।
चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

ले परशुराम के फरसे से हम शीश उड़ा देंगे झट से
चीनी का चीनी घोल बना हम पान करेंगे अब चट से।
जो साथ हमारा देता है हम उसके हैं तो साथी हैं
जो बात हमारी न माने तो आदि भयंकर हाथी है।

बुन्देले नाहर छत्रसाल की खग जग चमकायेंगे।
चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

भीमसेन की गदा उठेगी अर्जुन धनु टंकारेगा।
दस दस चीनी बौनों को अब भारत वीर पछाड़ेगा।
सुनो चीनियो तुम्हें बतायें बचा सकोगे न पंजर
उठा लिया है हम सबने भी आल्हा ऊदल का खंजर।

स्वांसा की अंतिम बूंदों तक हम अपना कदम बढ़ायेंगे।
चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

न हम तोपों से डरते न बम्बों से घबड़ाते हैं
एटम बम्बों टैंकों के तो सम्मुख हम भिड़ जाते हैं
छुरी कटारी और कृपाणें भाला बरछी हों मुग्दर।
वह देख सभी डर जायेंगे जब सोये हैं हम तीरों पर।

राणा प्रताप का ले प्रताप रण कौशल खूब दिखायेंगे।
चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

झांसी वाली रानी का है पान चबाया बहिनों ने
दुर्गा का बाना धार लिया माताओं के कुछ गहनों में
आजाद हिन्द के नाहर का बज गया बिगुल है घर घर में
उठ गई लहर है देश प्रेम की हिन्द भूमि के नर नर में।

नेफा अरू लद्दाख हमारा विजय ध्वजा फहरायेंगे।
चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

यहां हिमालय खड़ा हुआ जो कभी नहीं हिल सकता है।
पर हनू हकारन तोपों से पेकिंग का छज्जा उड़ सकता है।
यहां भगत सिंह ऊधम सिंह हैं जिसने जग थर्राया था।
नादिर शाह सिकंदर का भी जिसने मान घटाया था।

हैं महाराष्ट्र के सेनानी जो वीर शिवा बन जायेंगे।
चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

चाऊ चाऊ दगाबाज इतिहास सदा से गाता है
ये बड़े निर्लज्जी बड़े नीच संसार जिन्हें ठुकराता है
भारत में होते लौह पुरूष इसको भी जग ने जाना है
आजाद रहे या मर जाये पर चीनी मार भगाना है।

शान्ति स्वरूपी सिंह वीर भी तुमको मजा चखायेंगे।
चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

काश्मीर आबाद हैदरा जागे दिल्लीपति चौहान
मदरास साथ में केरल है अब जागे बंबई राजस्थान।
पंजाब साथ गुजरात केसरी लखनऊ ज्वाला तगड़ी है।
बंग बिहार उड़ीसा कटक चीन हमारी ककड़ी है।

भोपाल और आसाम हिमाचल तेरा मान घटायेंगे।
चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

हे दीनबन्धु, हे दीन दया कर, साय सदा देने वाले
बवर शेर हम सब बच्चे, देश प्रेम के मतवाले
उन्हीं वीर पुरूषों की संतति जिनकी गाथा अजर अमर
कभी न झुकने वाले साथी पंडित वीर जवाहर।

मुक्त रहे या मर मिट जायेंगे ऐसा बिगुल बजायेंगे

चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

हम शांति दूत के बने पुजारी शांति तभी अब चाहेंगे।

आठ सितंबर की रेखा पर चीनी बोने जायेंगे।

अटल प्रतिज्ञा अटल रहेगी कभी नहीं अरमानों की।

बल्लव विजय पताका फहरे भारत वीर जवानों की।

भारत भूमि अखण्ड रहेगी ऐसा हुनर दिखायेंगे।

चाऊ तुम्हारी चें चें से हम नहीं कभी डर जायेंगे।

गायन ﴾1﴿

भारती जन का एकता के स्वर में गायन

आये जमाना जब भी तब भी तो हम लड़ेंगे।

देंगे न भूमि अपनी बलिदान में डटेंगे।

जिस भूमि से बने हैं रग में खून जिसका

हो करके हम निछावर रक्खेंगे मान उसका

छोटा न समझो उम्र में बम्बों से हम भिड़ेंगे।

आये जमाना जब भी तब भी तो हम लड़ेंगे।

रक्खेंगे कदम आगे क्या चीन क्या पाक ताकत

इसमें है उनकी भलाई कर दूर देंगे आफत।

बल्लव हमारे देश में सुख शांति से रहेंगे।

आये जमाना जब भी तब भी तो हम लड़ेंगे।

गायन ﴾2﴿

देश की सीमा पर डटने वास्ते जवान प्रतिज्ञाबद्ध हैं।

लो देखों भाईयो बहिनो, हमें रण में भी लड़ना है।

सभी है देश हित अर्पण वतन को स्वर्ग करना है।

हमारा शीश भी जाये मगर है देश से श्रद्धा

वतन से हम बने बल्लव वतन हित आज मिटना है

सभी है देश हित अर्पण वतन को स्वर्ग करना है

लो देखो भाईयो बहिनो हमें रण में भी लड़ना है।

गायन (3)

सन 1965 में देश की संकटमय स्थिति देखते हुये राष्ट्र के नाम जो सन्देश जय जवान जय किसान का श्री लाल बहादुर शास्त्री ने दिया है उस पर हर समय देश का जवान व किसान तैयार हैं।

जय जवान, जय जवान, जय जवान, जय जवान।

जय किसान, जय किसान, जय किसान, जय किसान।

किसानः हम किसान हम किसान

हम किसान , हम किसान।

जवानः हम जवान हम जवान

हम जवान , हम जवान

जय किसान, जय किसान, जय किसान, जय किसान।

जय जवान, जय जवान, जय जवान, जय जवान।

किसानः खेत को बनायेंगे, अन्न को उगायेंगे।

हिन्द का बढ़ाये मान, हम किसान , हम किसान, हम किसान।

जवानः सिंह सी दहाड़ दे दुश्मनों को मार दे।

है शिवा, भवानी आन, हम जवान हम जवान, हम जवान।

जय किसान, जय किसान, जय किसान। जय किसान।

जय जवान, जय जवान, जय जवान, जय जवान।

किसानः हम करें करायें श्रम, न पड़ेगा खाद्य कम।

यह पढ़ें पढ़ायें ज्ञान, हम किसान, हम किसान, हम किसान।

जवानः सूर्य से अड़े रहें चन्द्र से बढ़े चलें।

परशुराम चले बान, हम जवान, हम जवान, हम जवान।

जय किसान, जय किसान, जय किसान, जय किसान।

जय जवान, जय जवान, जय जवान, जय जवान।

किसानः फूल फल उगायेंगे कृषि पशु बढ़ायेंगे।

देश पर लगायें प्रान, हम किसान हम किसान हम किसान।

जवानः हैं प्रताप का प्रताप, शिवा लक्ष्मी की छाप

चन्द्र का तमंचा तान, हम जवान, हम जवान, हम जवान

जय किसान, जय किसान, जय किसान,जय किसान

जय जवान, जय जवान, जय जवान, जय जवान।

किसानः देश का सुधार हो, प्रेम बल्लव हार

यह हमारा नित्य ध्यान, हम किसान, हम किसान।

जवानः राष्ट्र ध्वजा हाथ है, वीर तेज साथ है

देश बल्लव गाये गान, हम जवान, हम जवान, हम जवान।

जय किसान, जय किसान, जय किसान , जय किसान।

जय जवान, जय जवान, जय जवान, जय जवान।

पुकार

उत्तर पूर्व व उत्तर पश्चिम दिशा से हिमालय की तलहटी से चीन
व पाक देश का आक्रमण करने से भारत के वीर जवानों की जोरदार पुकार।

आज हिमालय के आंगन से आती यही पुकार है।
सभी चलेंगे लड़ने मरने, सबको मां से प्यार है।

दूध लजाना नहीं भाईयो तारा बाई अहिल्या का।
गोड़ देश का दुर्गा माता, वीरो चांद सुल्ताना का।

आगे कदम बढ़ाना वीरो माता की ललकार है।
आज हिमालय के आंगन से आती यही पुकार है।

वीरो आज जगाया तुमको पानीपत के पानी से।
देश प्रेम का पाठ पढ़ाया राणा से अभिमानी से।
भारत मां की लाज बचाई महाराष्ट्र सेनानी ने।
तुम्हें जगाया और उठाया झांसी वाली रानी ने।

भारत के रणवीरों को ही भारत मां का आधार है
आज हिमालय के आंगन से आती यही पुकार है।

वह बिस्मिल आजाद जिन्होंने आजादी की रक्षा में
फांसी झूला झूल गये जो मुक्ति न मांगी भिक्षा में
भगत सिंह से अभिमानी ने भारत पर बलिदान किया
मरते मरते जिस नाहर ने भारत मां का उत्थान किया।

आज परीक्षा देने चलना किसकी क्या तलवार है
आज हिमालय के आंगन से आती यही पुकार है।

मंगल पाण्डे वीर तांतिया, चम चम चमकी तलवारें।
देश प्रेम के गुरू गोविन्द सिंह जीवन अपना फिर वारें
उन्हीं वीर पुरूषों की गाथा वीरो आज निहारती।
आन बान पर मरना वीरो यही चाहती भारती।

सच्चे पथ पर डटे रहो तुम भारत बेड़ा पार है।
आज हिमालय के आंगन से आती यही पुकार है।

जलयाना के बाग में भी तुमने खेली है होलियां
नेफा अरू लद्दाख चलेंगे फिर से खाने गोलियां
दादा भाई तिलक गोखले वीरो तुम्हें निहारते
राम राज्य से देश सजेगा सबसे यही पुकारते।

एक बनेंगे, नेक बनेंगे सबका यही विचार है
आज हिमालय के आंगन से आती यही पुकार है।

मूल्यांकन:

स्व0 वल्लभदास गुप्ता की उपर्युक्त रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट है कि ये राष्ट्रीय विचार धारा के एक उत्कृष्ट कवि थे। धार्मिक विचारों से ओत प्रोत रचनायें कवि की ईश्वर में गहरी आस्था व्यक्त करती हैं। देश प्रेम की रचनायें कवि की राष्ट्र के प्रति समर्पण एवं भक्ति की प्रतीक हैं। कवि का भाषा ज्ञान गहरा है काव्य दोष रहित कवि की रचनायें सरस शैली में लिखी गयी हैं। कविता में सरसता है। राष्ट्रीय कवि के समान कवि की रचनायें राष्ट्र के प्रति त्याग एवं सर्मपण की चेतना का संचार करती हैं। कवि का उपलब्ध अप्रकाशित काव्य साहित्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है जिसके संरक्षण एवं प्रकाशन की आवश्यकता है।

(17) गोरेलाल सैनी:

जीवन परिचय:

स्व0 गोरेलाल सैनी 'शंकर' का जन्म श्रीनगर (महोबा) में लगभग सन् 1901 ई0 हो हुआ था। इनके पिता का नाम लक्ष्मण प्रसाद सैनी तया माता जी का नाम श्रीमती दुलारी सैनी था। इनकी पत्नी

श्रीमती गुमान बाई धार्मिक विचारों की महिला थीं। कवि की शिक्षा मिडिल तक थी। ये एक साधारण परिवार में पैदा हुये थे। नार्मल ट्रेनिंग करने के पश्चात ये अध्यापक हो गये। श्रीनगर में ही शिक्षण कार्य करने के साथ साथ इन्होंने पोस्ट मास्टर के पद पर कार्य करते हुये लोगों की सेवा की। स्वाधीनता आन्दोलन में भी कवि ने बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। दिनांक 3.9.1989ई0 को इनकी मृत्यु हुई।

काव्य कृतियां:

इन्होंने कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। इनकी प्रकाशित रचनाओं में शंकर लहरी, प्रहलाद तथा रावणायन प्रमुख हैं।

(1) शंकर लहरी : ये भजन संग्रह है जिसमें कुल 78 पृष्ठ हैं। इसमें विभिन्न प्रकार के भजन दिये गये हैं।

(2) प्रहलाद : यह भी प्रकाशित है जो स्कूल में चलती रही है किन्तु बहुत प्रयास करने के पश्चात भी यह पुस्तक प्राप्त नहीं हो सकी।

(3) रावणायन : यह पुस्तक भी प्रकाशित किन्तु अप्राप्त है।

इसके अतिरिक्त इनका अप्रकाशित काव्य साहित्य कवि के परिवारवालों के पास उपलब्ध है। कवि की प्रकाशित पुस्तक ' शंकर लहरी ' से कुछ रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

(1) श्री गणेश जी

जयति श्री गणपति गिरजानन्द

एकदन्त गजमुख भुजचारी,
लम्बोदर मूषक असवारी
सेंदुर भाल जनेऊ धारी।

मोदक भोग पसन्द, जयति . . . .

सुरन मध्य प्रथमहिं तुम्हें ध्यावे,
जग में सर्व पदारथ पावे
कारज सभी पूर्ण हो जावें।

पावें संपूर्णानन्द, जयति . . . .

ऋद्धि सिद्धि शुभ वर के दाता,
शंकर सुवन षड़ानन भ्राता

बाधा, विघ्न हरण विख्याता।

शरण बहत पदवन्द, जयति श्री . . . . . .

(2) जगदम्बे

जय जगत जननि, जय जगदम्बे।

भव भय भंजन, जय-जय अम्बे,

तुम्हरी छाया में केल किये,

तुम्हरी गोदी में खेल किये

निश्चिन्त विहरते सदा मातु

तुम्हरी दाया के अवलम्बे

जय जगत - जननि, जय जगदम्बे।

हम भले बने तो तुम्हरे हैं,

यदि बुरे बने तो तुम्हरे हैं

जैसा हमें बनाया तुमने

हम वैसे ही बन गये अविलम्बे।

जय जगत जननि, जय जगदम्बे।

(3) श्री सरस्वती जी

जयति जय जय जय सरस्वती।

बुद्धि प्रदा श्री भगवन्ती।

तेरे ही वर से वाक्य सिद्ध हों,

तेरे ही वर से बुद्धि वृद्धि हो।

जय जय अम्बे।

जय जगदम्बे।

वन्दन ज्ञानवती,

जति जय जय, जय सरस्वती।

विमल बुद्धि हो,

ज्ञान स्फूर्ति हो।

सत्य ज्ञान हो,

भक्ति ध्यान हो।

यह दीजे सुकृती,
जयति जय जय, जय सरस्वती।

(4) वरदान

हम मांग रहे वरदान, दीजिये ज्ञान, राम जी प्यारे।

सचराचर प्राण अधारे।

हम बल विद्या अनुगामी हों, शुचि सत्य अहिंसा हामी हों,

हो विश्व चकित लख करके कृत्य हमारे।

दोनों के हित का ध्यान रहे, निज जन्मभूमि का मान रहे,

माता के संकट में हों बलिदान हमारे।

नित शान्ति सुधा हम बरसावें, नवजीवन जग में सरसावें।

शुचि सत्य न्याय युत भाव हमारे।

निस्वार्थ सदा उपकारि हों, निज शारणागत भयहारी हों।

जन सेवा के करने में निशि वासर मिलें सहारे।

निज धर्म-कर्म मर्यादि रहे, प्रभुवान सदा यह याद रहे।

हम भक्तों के भक्त हमारे, सचराचर प्राण अधारे

हम मांग रहे वरदान, दीजिये ज्ञान, रामजी प्यारे।

(5) पुकार

तुम्हें कोई टेरत है भगवान।

आओ वेग, उबारो बूड़त, भव जलनिधि, कृपानिधान।

तुम्हें कोई टेरत है भगवान।

नहिं गयन्द, नहिं गीध, अजामिल, नहिं भिल्लानि, नहिं गनिका

प्रहलाद नहीं हैं, ध्रुव भी नहीं न ही कसाई सदन का।

मीरा और द्रोपदी से प्रभु कैसी पहिचान।

जितने पापी तुमने तारे, उतने नहिं नभ में तारे हैं।

हमको भी अब तारो प्रभु, हम भी तो कोई तुम्हारे हैं।

प्रभुवर भिक्षुक मांग रहा है, केवल इतना वरदान।

तुम्हें कोई टेरत है भगवान, तुम्हें कोई टेरत है भगवान।

(6) भगवान की महिमा

प्रभुवर तुम्हारी कीर्ति कथा,

हम कैसे वर्णन कर पावें।

वेद पुराण, शास्त्र आदिक सब,

तेरी ही गाथा गावें।

शेष-महेश-गणेश, शारदा,

तेरा ही ध्यान लगाते हैं।

ऋषि-मुनि-सिद्ध-देव-सन्यासी,

नेति - नेति कह गाते हैं।

मैं क्या हूं, क्या शक्ती मेरी

बस यही देख डरता हूं।

हे नाथ सभी जब हार गये,

मैं भी प्रणाम करता हूं।

(7) श्री रामराज्य

वर्णाश्रम धर्म प्रजहिं सच्चे हित,

भक्ति विरोध की धार नहीं।

शासन का मर्म प्रजा पालन,

पीड़न, ताड़न, व्यापार नहीं।

नीरोग, निरामय, व्याव रहे,

त्रैताप, व्यथा, आगार नहीं।

श्रीराम सा राज्य मही में कहां,

कुविचार नहीं, व्यभिचार नहीं।

(2)

कुटिला-कुटनी, कौटिल्य नहीं,

चोरी नहिं, चोर लकार नहीं।

परिहास नहीं, उपहास नहीं,

इक हास में झूठ विचार नहीं।

जल मांगे से वारिद देय सदा,

दुर्भिक्ष दरिद्र पचार नहीं।

श्रीराम सा राज्य मही में कहां,

कुविचार नहीं, व्यभिचार नहीं।

(3)

सब उन्नति द्वार खुले नित ही,

प्रतिबंध न बंधन हार नहीं।

सब सृष्टि की संग्रह सेवा ही,

भय धर्म, अधर्म विहार नहीं।

समता सब भावन में विहरे,

रमता पर स्वेच्छाचार नहीं।

श्रीराम सा राज्य मही में कहां,

कुविचारनहीं, व्यभिचार नहीं।

(8) चेतावनी

इस नर देही को पाकर के, कुछ नेकी कर लो बाबा।

दीन दीनता दीनों की बन दीनबंधु हर लो बाबा।

जो तुम्हें ईश ने माना है तो तुम भी उसे न बिसराओ।

जीते जी जीवन जाग्रति कर, जगती तल से तर लो बाबा।

भाग्य भरोसे मत रहना, जो भाग्य में है वह भुगत रहे।

अब भविष्य के बनने को, कुछ शुचि पूंजी धर लो बाबा।

पुरूष बने पुरूषार्थ करो, परमार्थ बने है स्वार्थ यही।

सत्कार्य करो, परमार्थ यही, दुष्कर्मों से डर लो बाबा।

जो बीती, बीती, मत चिन्ता कर, जो शेष उसे न व्यर्थ खो।

है प्रभु की कृपा बड़ी तुम पर, जो बना दिया नर लो बाबा।

⟬9⟭ चेतावनी

शिव और दधीचि, मान्धाता, प्रभु भरत ऐसे,

माध्र्वज, रघु, भूप जिनके यश जग छाये।

सत्य में हरिश्चंद्र, दानिन में बली कर्ता,

धर्म में युधिष्ठिर से बड़े बड़े गुणी भये।

बल में बाली, भीष्म, भीम, अर्जुन से,

दशरथ से वचन वीर भूतल पर बने रये,

ऐ हो नर ज्ञानी, जीवन भओ कीको अमर,

यशहूं से जाने जात, देखे नहीं किधर गये।

⟬2⟭

मधु और कैटभ, हिरण्याक्ष, हिरण्यकशुप,

महावीर, आये जो पृथ्वी को हिला गये।

रावण भट कुम्भकरण, मेघनाद, दूषण, खर,

वरन का प्रताप लिये भूतल में मिला गये।

कंस और जरासंघ, दुर्योधन और भौमासुर,

बड़े बड़े प्रतापी सारी पृथ्वी तिलमिला गये।

ऐ हो अभिमानी, जीवन कीकौ, भओ अमर,

ऐसे केतक नर आये और बलबूला से बिला गये।

⟬10⟭ चेतावनी

नर होके जग में आये,

अब चार दिनां हंस ले, हंस ले।

फिर पण्डित आय कही भैया,

कुछ पुण्य करो जस ले, जस ले।

तव वैध ने नाड़ी देख कहा,

यह अंतिम है, रस ले, रस ले।

आय कही यमराज तभी,

अब तो इसको कस ले, कस ले।

तब दांत निकाल के छोड़ चले,

घर बाहर के असले, बसले।

(11) आधुनिक राज्य

शेरन को बलि होत नहीं,

बकरे बलिदान को लाये गये।

टेढ़े नहिं, काटे जाते कहीं,

सीधन पर आरे चलाये गये।

विषधारी को दूध पिलाते सभी,

केंचुये कटिया लटकाये गये।

धनवान कहीं न सताये गये,

धनहीन सदा विलपाये गये।

(12) दिवस सब एक से नहिं जात

प्रमुदित पंकज दिन स्वभाव बस,

निशि आवत सकुचात।

मायापति, माया धरणीधर,

स्वबस धरे शुभ गात।

राज सदन तज वन वन भटकत,

फिर नर की का बात।

देह नेह गेहन, जब बांधौ,

देही कत अकुलात।

साधो तरनि चहो भवसागर,

ध्यावहु संध्या प्रात।

(13) खुदा का फरमान

ना मन्दिर में, ना मस्जिद में,

ना काबा कैलाश में।

तू मुझको कहां ढूंढ़ता बन्दे,

मैं हरदम तेरे पास में।.

आ जा तू मुझमें मिल जा,

यहां न डर शैतान का।

जन्नत दोजख नहीं कयामत,

यहां वास ईमान का।

पानी ऐसो बूंद आन मिल,

मेरे ऐसे सागर में।

फिर कोई उलीच नहिं सकता,

तुझको भरके गागर में।

(14) कर्मफल

भुगत डार कर्मों के फल को भुगते में ही सार है,

आना कानी के करने में चिन्ता की भरमार हे।

समझ बूझ कहती है इसका कर्ता करतार है,

मान महत्तम खोने वाले जीवन को धिक्कार है।

बिन भोगे से भ्रम ना पड़है, जानें कितनी बार है।

हम तुम तो किस गणना में, कर्ता को लेना पड़ता अवतार है।

यह सारा जग कर्म क्षेत्र है, देखा प्रत्यक्ष साकार है,

बिन भुगते से काम न चलहै, भुगते बेड़ा पार है।

(15) चेतावनी

अरे अब जाग उठो लाला।

हुआ पूरब का उजियाला।

काली निशा छाई पश्चिम को, तारे हुये मलीन।
अरूण-अरूण सूरज की देखो छिटकी छटा नवीन।
मचा भारी गड़बड़ झाला।
अरे अब जाग उठो लाला।
सोने का यह समय नहीं है हो जाओ चैतन्य।
देखो कितने बन्धु तुम्हारे, बने आज अकर्मण्य।
सृष्टि को चकति कर डाला।
अरे अब जाग उठो लाला।
लज्जा आती मुझे देखकर ये तेरे दुष्कर्म।
तेरे साथी संगी तुझको धिक्कारत बेशर्म।
तुझे कर बहुत लाड़ पाला।
अरे अब जाग उठो लाला।
उठ-उठ, जल्दी कर, अब भी तक ले अपना खेत।
नहीं अन्त में पछताओगे, कौआ खायें लेत।
उड़ा दे कागा काला काला।
अरे अब जाग उठो लाला।

मूल्यांकन:

कवि की प्रकाशित पुस्तक 'शंकर लहरी' की रचनाओं एवं अन्य अप्रकाशित काव्य साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाले कवि की रचनायें सुन्दर एवं उत्कृष्ट हैं। कवि की धार्मिक भावनाओं का समावेश उनकी कविताओं में स्पष्ट रूप से है। छन्द, सवैया, पद एवं गीत सभी प्रकार की रचनायें कवि द्वारा की गई हैं। चेतावनी के रूप में छन्दों व गीतों के माध्यम से मनुष्य को सत्कर्म करते हुये सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी गई है। कवि की रचनायें सरल एवं बोधगम्य शैली में हैं जो कि एक अच्छे कवि का आवश्यक गुण है।

(18) लक्ष्मीप्रसाद वियोगी :

जीवन परिचयः

इनका जन्म सन् 1902 में नैकानापुरा (महोबा) में ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 परमानन्द तथा माता जी का नाम पत्तीबाई था । ये होम्योपैथिक चिकित्सक तथा तहसील महोबा में स्टाम्प विक्रेता रहे। ये योग साधना में गहन आस्था रखते थे। योग साधना की शक्ति से ये कई प्रकार के चमत्कारी प्रदर्शन भी करते थे। कार को रोकना, सीने के ऊपर भार से लदे ट्रक को निकलवाना, अंगारों पर चलने जैसे कठिन कार्य ये सहज भाव से करते थे। सन् 1932 में जब पंडित जवाहरलाल नेहरू महोबा आये तो अपनी योग शक्ति से अपने घर के सामने कवि ने उनकी कार को रोका था। अपनी योग शक्ति का अंतिम बार प्रदर्शन इन्होंने सन् 1956 में पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त के सामने झांसी में किया था लगातार 54 घण्टे तक पानी में तैरने का भी इनका कीर्तिमान था। इन्होने सन् 1947 में मौन साधना का प्रारंभ श्री कृष्ण जन्माष्टमी से किया जिसका प्रचार प्रसार वे अपनी मृत्यु तक करते रहे। कवि की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र श्री सुनील कुमार वियोगी मौन साधना के प्रचार प्रसार में लगे हुये हैं। शब्द भेदी बाण चलाने में भी लक्ष्मीप्रसाद वियोगी अत्यन्त निपुण थे। उनका धनुष व तीर आज भी उनके पुत्र के पास सुरक्षित है। इनकी मृत्यु 85 वर्ष की अवस्था में 24.3.1987ई0 को हुई।

काव्य कृतियांः

इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हैं जिनमें कुछ गद्य में तथा कुछ पद्य साहित्य में हैं। प्रकाशित गद्य साहित्य में (1) अमर ज्योति अवतरण मौन साधना, (2) सत्य दर्शन (3) साकेत की चाबी एवं शाश्वत सत्य (4) सत्यनारायण की भविष्यवाणी का प्रकटीकरण , तथा (5) समय की नाभि, हैं। जबकि पद्य साहित्य में प्रकाशित पुस्तकें (1) रामायण की भविष्य वाणी का प्रकटीकरण, तथा (2) मौन साधना सत्यव्रत गीत हैं।

कवि की 6 पुस्तकें अप्रकाशित हैं जो उनके पुत्र सुनीलकुमार वियोगी के पास उपलब्ध हैं।

कवि की कुछ रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं:-

रामायण की भविष्य वाणी का प्रकटीकरण से समभावना गीत

ओ राही,

ओ राही,

ओ पथिक,

अरे ओ पथिक,

अरे ओ चलने वाले,

ओ चलने वाले रूको तनिक तुम पथ भूले हो।

बिगड़ी को अब भी बना, समय है अब भी तेरा।

सत्य सहारा काट मोह माया का घेरा,

चेत और पग उठा जान कर आज सबेरा।

पावेगा तू सुख शान्ति, अन्त प्रभु धाम बसेरा।

ओ राही . . . .

(मौन साधना सत्य ज्ञान) पुस्तक से

गीत (1)

साधने तुमको कोटि प्रणाम।

कलिमल कलुषित मन्द हृदय को, देतीं विमल विराम।

करतीं एकीकरण आत्म में, जग जीवन की ज्योती।

मौन मोद से मनु बिखेरती, महानन्द मृदु मोती।

शांति सुधा प्रश्रवित हृदय हृदि लेती लहर ललाभ।

है प्रवंचनाओं से प्रलुभित, इन्द्रिय मन व्योहार।

संचित कर संयम सूत्रों से देती हो तुम तार।

अटल समय का शूल हाथ ले, करतीं तन निष्काम।

वज्र घोष सी शंख ध्वनि, सुनि फूटत पाप पहार।

हृदयस्पर्शी मिलन बढ़ाता, आत्मानन्द अपार।

भ्रान्ति मिटाकर जीवन पथ में, देतीं सुख अभिराम।

नमो-नमो, हे देवि साधने, आज तुम्हारा अर्चन।

ऐसी ज्योति जगा दो घर घर, जागें पुरजन, परिजन।

फैले आतम बिन्दु पहिचानें, महासिन्धु को धाम।

(2) मन की बात

मन भयो आज दीवानो रे।

कहि न जात कछु कहत बनत ना ऐसो सब बिसरानो है।

सत्य ज्योति नैनन ने देखी, मैं मग माँहिं हिरानो रे।

कछुक दिनन पर पीड़ा लख मन, खीज खीज खिसयानो रे।

पीर पराई स्वाद परख्यो अब अपनो आज पिरानो रे।

भ्रमत भ्रमत थाक्यो जब मनुवां, भूल्यो सबहिं विरानो रे।

काम क्रोध मद लोभ गठरिया, छांड़ि कै फिरत भुलानो रे।

(3) जागरण

जागो सबहिं जगाओ रे।

बीती रैन उदय प्राची दिस, आनु प्रकाश दिखाओ रे।

अब उठ चेत चेतना वाले, प्रभु ने शंख बजाओ रे।

जो कछु कियो आज कल फल चाख्यो जो बोयो सो पायो रे।

नैनन नीर बहाये लाभ नहिं, बीती ताहि भुलाओ रे।

आलस छांड़ि देख चहुं दिसि, सूखो उपवन लहराओ रे।

पिव पिव तजे उठ धाव द्वार तेरे तेरो पिव आओ रे।

(4) समर्पण

जैसहिं राखौ मोहन तैसहिं रइहों रे।

मैं रोगी तू वैध बड़ो तोही को हाथ दिखैहों रे।

है विश्वास हिये मोरे मैं मुक्ति पदारथ पैहों रे।

भाग्य कहों कि कहौं जड़ता, तुमसे कछु नाहिं छिपैहों रे।

पीड़ा असह सही न जात, अब निभहे से निभ जैहों रे।

अधम उधारन नाम तिहारो, अरु मैं अधमन में हों रे।

जो आये सब पार उतर गये मैं हूं वह सुख लै हों रे।

(5)

मन तू मान मेरी बात।

तू चला चल मग यही है, इसी में कुशलात।

प्रेम श्रोम पयोध से तू, सिन्धु पावत जात।

पूर्णता की पूर्ण आश्रय पर छटा मुसकात।

उठा पग तू निकसि जैहे मार्ग बहु बलखात।

समर्पण से पायेगा तू, अमर ज्योति प्रभात।

(6) भजन की खेती

उपज आये अंकुरा मोरे, बोयो हरिनाम

बोयो हरिनाम, रखाऊं आठों याम।

पंच तत्व तन भूमि में तप सौं जोतो खेत।

ऊसर माटी हो गयो सत्य नाम के लेत।

बोवे जोतै कछु दिनन, तब काटै सब कोय।

हरौ हरौ लख मेड़ सौं, मो मन तृप्ती होय।

यो खेती कछु अटपटी, उल्टी याकी रीति।

बिन काटे खोड़ो भरै, काटै मिलै न सीत

दिन दूनौ निसि चौगुनो, हिय में बाढ़े मेह।

प्रीति बदरिया चहुं दिसन, वर्षा बहिं जब मेह।

(7)

फूल सी जिन्दगी शूल सी राह पर,

रंग अपना दिखाये तो लाचार हूं।

मैंने जग से स्वयं ही किनारा किया,

छोड़ अब तो सभी का सहारा दिया।

चाहता हूं तिमिर से भरा पथ रहे,

राह खुद जगमगाये तो लाचार हूं।

प्रेम का हूं किसी के भिखारी नहीं,

छवि का मादक सुरा का पुजारी नहीं,

रूप कादम्बरी नैन के पात्र में,

कोई बरबस पिलाये तो लाचार हूं।

मन के दर्पण में अब कोई छाया नहीं,
सुधि ने प्रतिमा किसी को बनाया नहीं,
स्नेह की धूल से चित्त की आरसी
कोई धूमिल बनाये तो लाचार हूं।
पास होकर भी इतनी बड़ी दूरियां,
आज जीवन में लाखों है मजबूरियां।
कामनायें मिलन की न अब शेष है,
याद बरबस रूलाये तो लाचार हूं।

(8)

ऐसौ कब करिहौ मन मेरो।
सांझ होत सतव्रत मैं पाऊं, ध्यान धरूं मैं तेरो।
तन मन धन सर्वस अर्पण कर, पाऊं चरन बसेरो।
जो कछु मिलो जगतपति तुमसे, सब हो जाये तेरो।
मैं मैं तोर, मोर यह भ्रम प्रभु, सब मिट जाये मेरो।

(9)

सतव्रत में रंगी है मोरी तन चूनरी,
मोरी तन चूनरी, मोरी तन चूनरी।
चौरासी के भोग - भोग कै पाई, नर तन काया।
चेत सकै तो चेत व्यर्थ क्यों माया में भरमाया।
कर ले ऊजरी पुरानी औ न सानी चूनरी।
जग जाहिर है सत्य प्रेम के बिना न कोऊ तर पाओ,
यही गीत, गीता-रामायण, वेद शास्त्र ने गाओ,
भर ले साधना सुहागिन से मन चूनरी . . . . .

(10)

ऐसो कब करिहौ मन मेरो।
सांझ होत सतव्रत मैं पाऊं,ध्यान धरूं मैं तेरो।
तन-मन-धन सर्वस अर्पण कर, पाऊं चरण बसेरो।

जो कछु मिलो जगतपति तुमसे, सब हो जाये तेरो।

मैं, तैं, तोर, मोर यह भ्रम प्रभु, सब मिट जाये मेरो।

मूल्यांकन:

जैसा कि कवि के जीवन परिचय में बताया जा चुका है कि योग साधना में कवि की गहरी आस्था थी। उसी की स्पष्ट झलक कवि की रचनाओं में भी मिलती है। कवि ने जो भी काव्य सृजन किया है ईश्वर के प्रति श्रद्धा, अनुराग एवं प्रेम से ही संबंधित है। कविता दोष से मुक्त कवि की रचनायें मन को छू लेने वाली हैं। कविता में सरसता एवं लालित्य है, अपने मन के माध्यम से समाज को सच्ची राह पर लाने एवं ईश्वर में आस्था पैदा करने का उपदेश देने वाला कवि का काव्य साहित्य हिन्दी साहित्य की अनुपम धरोहर है।

(19) पं0 बैजनाथ तिवारी:

जीवन परिचय:

इनका जन्म तिवारीपुरा - महोबा में 28.2.1898 ई0 को ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम नन्दराम तिवारी एवं माता जी का नाम श्रीमती कमलांगी बाई था। इनकी पत्नी का नाम श्रीमती यशोदा देवी था। इनकी शिक्षा बी0ए0 तक थी। लखनऊ के कालीचरन मिशन स्कूल में पढ़ते समय लोकमान्य तिलक के भाषण से प्रभावित होकर ये स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय हुये। इनकी पत्नी भी स्वतंत्रता सेनानी थीं। हमीरपुर जनपद में सन् 1916 में कांग्रेस के अग्रगामी नेता बनकर ये आये थे तथा लोकमान्य तिलक के सन्देश को घर घर पहुंचाने में अथक परिश्रम किया। हमीरपुर जनपद के अग्रिम पंक्ति के स्वतंत्रता सेनानियों में इनका नाम लिया जाता है। इनकी मृत्यु 27.10.1985 को हुई।

काव्य कृतियां:

पं0 बैजनाथ तिवारी द्वारा हिन्दी साहित्य को किया गया योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं विस्तृत है। इनकी प्रकाशित पुस्तकों की संख्या 9 है जिनके नाम हैं, (1) जय दुर्गे (2) जय शिवा शिव

(3) गीत गोविन्द एवं चिन्तन (4) बिलंका रामायण (5) जय हनुमान (6) श्री मद्भागवत गीता (7) जय कृष्ण (8) वीर बब्रूवाहन तथा (9) भक्त प्रहलाद। उक्त कृतियों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

(1) जय कृष्ण: इस पुस्तक में कुल 1010 पृष्ठ हैं। यह पुस्तक महाकाव्य के रूप में है जिसमें श्रीकृष्ण जन्म, पूतना वध, शकटासुर वध, तृणावर्त वध, श्रीकृष्ण का मूर्ति भक्षण, माखन चोरी, गोकुल त्याग तथा भौमासुर वध इत्यादि शीर्षक दिये गये हैं , कुछ रचनायें दी जा रही हैं-

श्री कृष्ण जन्म शीर्षक से

मघ भाद्र मास बोले धड़ धड़
है अन्ध पाख विद्युत तड़ तड़
नभ से है नीर झड़े झड़ झड़
सो गये पहरूवा भी पड़ पड़
हैं फड़क उठे बन्दी बन्दिन
जब कड़क उठे उनके बन्धन
बन्दी गृह पाट खुले झन-झन
फिर सुना पड़ा शिशु का रोदन।

(कालिया नाथ)

थे ग्वाल बाल अब ग्वाल बने
गोचारण कर गोपाल बने
वंशीधर वंशी बाल बने
गोपों में सुन्दरलाल बने।

(सुभद्रा हरण)

रोहिणी सुता बलभद्र बहिन
अनुरक्त सुभद्रा पर अर्जुन
दे चुकी सुभद्रा भी है मन
है कार्य कठिन होगा पूरन

(2) श्री मद्‌भागवत गीताः

इस पुस्तक में कुल 191 पृष्ठ हैं जो अठारह अध्यायों में विभाजित हैं, कुछ पंक्तियां नीचे दी जा रही हैं:-

(प्रथम अध्याय से)

धृतराष्ट्र कहा ए हो संजय
सुत मेरे एवं पाण्डु तनय
कुरू क्षेत्र जुड़े कर रण निश्चय
सब हाल बताओ युद्धालय

(2)

संजय बोले सुनिये राजन
रण क्षेत्रीय हाल करूं वर्णन
पाण्डव सेना लख दुर्योधन
गुरू द्रोण पास जा कहे वचन।

(3) तीसरा अध्याय से

देकर उपदेश ज्ञान का यों,
करवाते कर्म भयंकर क्यों (1)
बुद्धी मोहित सी करते ज्यों,
कल्याण होय बतलावो त्यों (2)

सुन हे अर्जुन ! बोले अच्युत,
है निष्ठा जग मम पूर्व कथित
है ज्ञान योग ज्ञानिन के हित
निष्काम कर्म योगियों निमित।

(3) जय दुर्गे

इस पुस्तक में 67 पृष्ठ हैं जो 13 अध्यायों में विभाजित हैं इसमें देवताओं के तेज से देवी का प्रादुर्भाव और महिसापुर की सेना के वध का वर्णन है । एक नमूना देखिये-

द्वितीयोध्याय:

(ध्यानम)

महालक्ष्मी देवी जिन कीन्ह महिष संहार
है बैठी कमलासने, मुख प्रसन्नता धार
ध्याऊँ उन ही देवि को, लीन्हें अक्षम माल
शंख, चक्र, गदतृशूलहु, घंटा कृपाण ढाल।

ऊँ ऋषि उवाच (।)

पूर्वकाल में था हुआ, देवासुर रण भयंकर
असुरो नायक था महिष, देवो नायक पुरन्दर
हुआ युद्ध सौ वर्ष तक, असुरों का बल था प्रबल
हुआ पराजित देव दल, महिषासुर सैना सकल।
पाकर विजय सभी देवों पर, इन्द्र बन गया खल महिषासुर।
तब सब देव विधाता साथा, गये जहां श्री हरि शिव नाथा।
× × × × × × × × × × ×

(4) बिलंका रामायण:

- - - - - - - - - - - -

इस पुस्तक में 298 पृष्ठ हैं जो 35 शीर्षकों में विभक्त हैं। एक उदाहरण देखिये:-

(शिव पार्वती संवाद तथा श्री रामचन्द्र का अयोध्या आगमन)

- - - - - -

शूल पाणि श्री शम्भु के झुका पदों में माथ।
गिरजा बोली कृपा कर, कहहु कथा शिवनाथ।
प्रभु मुझ पर प्रसन्न हो जाओ, कथा बिलंका नाथ सुनाओ।
कवन प्रकार राम रण कीन्हा, सहर्ष शिरा, खल को वध दीन्हा।
कहिये नाथ सकल वृतान्ता, हुआ कवन विधि खल का अन्ता।
पारवती के बैन सुन , बोले शिव भगवान।
हूं प्रसन्न, सुन शैलजा, वर्णू कथा महान।

॥लक्षसिरा की तपस्या॥

पारवती ने शम्भु से, कहा जोड़ कर हाथ।

लक्षशिरा कैसे रहा, कहिये मुझसे नाथ।

शिव बोले सुन शैल कुमारी, इक्षा पूरण करूँ तुम्हारी।

दो सुत दर्शन पाय सुरारी, आनन्द उर में बढ़ा अपारी।

वैभव उसे प्राप्त था भारी, मगन बिलंका रहा सुरारी।

चन्द्रप्रभा के ही अनुसारी, सुतन किया था बढ़ना जारी।

बाल्यकाल उनका चल जाई, युवा अवस्था पहुंचे आई।

अस्त्र शस्त्र की विद्या पाई, दुष्ट बुद्धि क्रोधी बन जाई।

॥5॥ गीत गोविन्द एवं चिन्तनः

वि० सं० 2032 में प्रकाशित इस पुस्तक में 172 पृष्ठ हैं। इसमें मुद्रित गीत, कवित्त एवं अन्य पदों की संख्या 94 है। 'द्रोपदी भीष्म शिविर में' शीर्षक के अंतर्गत ग्यारह पृष्ठों की एक बड़ी कविता भी इसमें दी गई है। इस पुस्तक की कुछ रचनायें अवलोकनार्य नीचे दी जा रही हैं

पागल 30

ज्ञानियों का ज्ञान भंग, ध्यानियों का ध्यान भंग,

वीर शिरोमणियों का साहस घट जाता है

जगत, दृष्य शोक ग्रस्त स्वजनों का प्यार ध्वस्त।

निःसहाय चहूं ओर कछू न सुहाता है।

मानव के मन में जब मृत्यु की याद पड़े।

चिन्ता के सागर में गोते लगाता है।

ऐसे समय पागल ही मस्ती में मस्त रहे।

निर्भई निशंकी निरदुन्दी दिखलाता है।

बीस शिर रावण 82

॥1॥

हे राम करूणा धाम होवे, उदय करूंगा भास्कर।

छल छद्म लांच कुधान, भ्रष्टाचार का नासै तिमिर।

भगवान अब दस शीश के बढ़ हो गये हैं बीस शिर।

घोर अत्याचार ढावे पाय कर चालीस कर।

(2)

प्रथम मुख सब धान लीला है जखीरा बाज बन।

फुंकारता मुख दूसरे महंगाई का धातक पवन।

तीसरे सतभाव ऊंचे, बेचता है चोर धन।

चतुष्मुख लालच दिखा, फुसलाय लेवे शासकन।

(6) जय हनुमान:इस लघु पुस्तक का प्रकाशन अगस्त सन् 1963 ई0 में हुआ। इस पुस्तक में 30 पृष्ठ हैं।

इस पुस्तक में कवि ने परम अनुरागी भक्तराज श्री हनुमान जी के चरित्रों का दिग्दर्शन सरल एवं प्रादेशिक भाषा में किया है । कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

(1)

जै पवन पूत अंजनी लाल, जै महावीर बलवन्ता,

जय शंकर सुवन, केसरी सुत, जय राम दूत हनुमन्ता।

मदमस्त बली बाली अनीति से था सुग्रीव दुखारी,

सब छीन लिया था राज पाट अरू छीन लई थी नारी।

तुम हरि से दिया मिलाय प्रभु, जो सदा भक्त भय हारी।

श्रीराम बाण से बाली वध करवाय विपत सब टारी।

तब सिय खोजन सुग्रीव पठाये, वानर दल बलवन्ता,

श्रीराम मुद्रिका चिन्ह दीन तब तुमको श्री हनुमन्ता।

जै पवन पूत अंजनी लाल, जय महावीर बलवन्ता।

जय शंकर सुवन, केसरी नन्दन, जय राम दूत हनुमन्ता।

(7) जय शिवाशिव:

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण सन् 1979 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसमें 290 पृष्ठ हैं। भगवान शंकर के दिव्य पावन चरित्र को कवि ने सरल एवं बोलचाल की भाषा में सर्व साधारण के लिये उपलब्ध कराने का प्रयास इस पुस्तक के माध्यम से किया है। भगवान शंकर की यह कथा चार खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में स्वरूप दर्शन, द्वितीय खण्ड में सती चरित्र, तृतीय खण्ड में माता पार्वती की

मनोहर लीलायें तथा चतुर्थ खण्ड में कुमार एवं गणेश जी के दिव्य चरित्रों का वर्णन किया गया है। संपूर्ण पुस्तक में दोहों व चौपाइयों का प्रयोग किया गया है। अवलोकनार्थ कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं:-

दोहा: ब्रह्मा जी से विनय ए, की नारद कर जोर।
सुन बहु पावन शिव कथा, भरा नहीं मन मोर।
ब्रह्मदेव श्री शम्भु के, देवी सती चरित्र।
वरणन कीन्हें कृपा कर, हो मन चित्त पवित्र।
बृह्मा जी बोले मुने, सुनो लगाकर ध्यान।
गोपनीय शिव सती की , वरणूं कथा महान।

चौपाई: पूर्व सदा शिव निर आकारी। निर्गुण निर्विकल्प सतधारी।।
रहित शक्ति चिन्मय त्रिपुरारी। पूर्ण अरूप विलक्षण धारी।।
धरो सशक्ति सगुण शिव रूपा। सती भगवती शक्ति अनूपा ।।
निर्विकार मन भगवति साथा। शोभित दिव्या कृथि शिवनाथा ।।
प्रगटे विश्नु अंग शिव बायें, प्रगटे फिर बृह्मा हम दायें ।।
प्रगटे मद्ध रूद्र भगवाना । यों शिव धरो तृरूपी बाना।।

दोहा: तीन सदा शिव ने लिये, पावन रूप बनाय।
कार्य रूप अनुरूप ही, करन लगे मन लाय।

कवि द्वारा रचित ' वीर वब्रू वाहन ' तथा ' भक्त प्रहलाद ' पुस्तकें अवलोकनार्थ प्राप्त नहीं हो सकीं। उक्त प्रकाशित पुस्तकों के अतिरिक्त प्रचुर मात्रा में कवि का अप्रकाशित काव्य साहित्य उनके पौत्र श्री शरत तिवारी उर्फ दाऊ के पास उपलब्ध है। कवि की एक रचना छन्द के रूप में ' सुकवि ' पत्रिका (कानपुर) के जुलाई 1929 के अंक में प्रकाशित हुई थी जिसे नीचे दिया जा रहा है।

लख हिन्द में खद्दर का परचार,
कला मेनचेस्टर की कसकी।
कसकी गरबी बुरवान की जान,
है आय करोणन की खसकी।
खसकी सब शान धरातल से,
जब स्वर्णमयी न रही बस की।

बस कीरत याही में दे दो सुराज,

लहो सुख भूमि है पारस की।

इस प्रकार के कवि के अनेकों छन्द व गीत विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं।

मूल्यांकनः

स्व0 पं0 बैजनाथ तिवारी, हिन्दी काव्य साहित्य के मूर्धन्य, लब्ध प्रतिष्ठ कवि थे। इनकी रचनाओं के अवलोकन से पता चलता है कि ये राष्ट्रीय स्तर के कवियों में स्थान पाने के अधिकारी थे किन्तु जनपद हमीरपुर का यह दुर्भाग्य है कि ओजस्वी काव्य प्रतिभा के धनी इस कवि को वह स्थान नहीं मिल सका जिसके कि ये सच्चे अधिकारी थे। काव्य दोष से पूर्णतया मुक्त कवि की प्रत्येक रचना सरल एवं सुबोध शैली में लिखी गई है जो अन्तःकरण को छू लेती है। सरल बोधगम्य एवं जनप्रिय शैली में साहित्य सृजन कवि की विशेषता रही है हिन्दी भाषा का गहरा ज्ञान कवि की रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। शब्दों का चयन अत्यन्त विवेकपूर्ण ढंग से प्रत्येक कविता में कवि द्वारा किया गया है। धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक सभी विषयों पर कवि ने सफलतापूर्वक लेखनी चलाई है। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी रहे कवि की रचनाओं में राष्ट्र प्रेम एवं जनकल्याण का भाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। कवि की कुछ पुस्तकें यदि अध्ययन हेतु विद्यालयों में पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराई जायें तो इससे विद्यार्थियों को बहुत लाभ हो सकता है। गीत, पद, छन्द, सवैया, दोहा एवं चौपाई सभी कवि द्वारा समान कुशलता के साथ लिखे गये हैं। माँ सरस्वती के अमर पुत्र का हिन्दी काव्य साहित्य को किया गया यह योगदान अविस्मरणीय है। ऐसे उच्च कोटि के कवि के साहित्य को सरकार द्वारा प्रकाशित एवं संरक्षित कराया जाना अति आवश्यक है।

----

(20) पं0 शिवराम शर्मा ' रमेश ' :

जीवन परिचयः

पं0 शिवराम शर्मा का जन्म वि0सं0 1946 में श्रीनगर (महोबा) में हुआ था। ये जुझौतिया ब्राह्मण थे। जनपद के प्रसिद्ध कवि पं0 परशुराम पटेरिया इनके पिता थे। इन्होंने कविता करना अपने पिता से सीखा । सन् 1944 तक ये जू0हा0 स्कूल में अध्यापक रहे फिर अवकाश प्राप्ति के पश्चात छतरपुर (मध्य प्रदेश) में टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल में 5 वर्ष तक प्रशिक्षक के पद पर रहे। हिन्दी विश्वविद्यालय से साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त कवि को संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान था। रमेश इनका उपनाम था जिसे ये कविता करने में प्रयोग करते थे। इनकी मृत्यु सन् 1955 के लगभग हुई।

काव्य कृतियां:

इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं जिनमें राम महात्म, उपदेश भजनावली, विवाह गीतावली, हिन्दी पंचदेव स्तव, महाभारत गायन तथा मंगलाचार व ब्रह्मचर्य प्रमुख हैं। इनकी पुस्तक महाभारत गायन की भूमिका हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान पं0 माखनलाल जी चतुर्वेदी ने लिखी है । अप्रकाशित रूप में भी इनका बहुत सा साहित्य है इन्होंने सभी प्रकार के छन्दों की रचना की है । चौकड़िया तथा छन्ददार फागें भी लिखी हैं। इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

फाग सिंहावलोकन

(1)

प्यारी है पैजनियन वारी, वारी है सुकुमारी।
सुकुमारी के पग में राजें, दे रई शोभा भारी।
भारी नहीं पत्र सोने के , तापर पच्चीकारी।
पच्चीकारी नौरतनन की, उपमा नहीं निहारी।
हारी है रमेश मोहन सें, तासें उनखां प्यारी

(2)

दोहा :	चरन कमल नंदनन्द के, अपने हिये बसाय ।
	अलंकार उपमा कहौं, आज सभा में गाय।
टेक:	इक दिन गजरा लै बनवारी, गये सदन निज प्यारी।
छन्द:	लैकें निज कर गिरवर धारी, गजरा दियो राधिका प्यारी।
	इक-इक फूल की शोभा न्यारी, ज्यों तारागन।
	चम्पा चमेली संभारी, जैसें चन्द्र छटा उजियारी।
	देखी बेला की छवि न्यारी, जैसे बुध की किरन।
दोहा:	जूही सो है शुक्र सी, मंगल सौ मुचकन्द।
	देख सुदर्शन फूल को, स्वाती हो गये मन्द।
उड़ान :	ऐसी करी तयारी।
टेक :	सिर पेंचा को फूल देख कें, शनि ने शान बिसारी।
छन्द :	गुलतुर्रा की सान, जूही गुलाबांस की आन।
	देखो जा गेंदी सुखदान, गेंदा न्यारो।
	गुलफूंदर दिखान, ऊपर गुलदावदी बखान।
	सातउ सप्तरिषी अनुमान, छवि है धारी।

मूल्यांकन:

पं0 शिवराम शर्मा ' रमेश ' जनपद के एक अच्छे कवि माने जाते थे। इनकी प्रकाशित पुस्तकों तथा अप्रकाशित रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये हिन्दी काव्य के विद्वान कवि थे। संस्कृत व हिन्दी का गहरा ज्ञान इनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है। साहित्यिक दृष्टि से शब्दों का चयन कुशलतापूर्वक किया गया है। जनपद के अच्छे कवियों की श्रेणी में निःसन्देह इन्हें रखा जा सकता है।

2। पं0 लक्ष्मीप्रसाद दीक्षित ' उमादास ' :

जीवन परिचयः

इनका जन्म वि0 सं0 1944में श्रीनगर (महोबा) में ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम अयोध्या प्रसाद दीक्षित था। ये तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे तथा जीवन के अंतिम वर्षो में केवल शाकाहारही करते रहे। इन्होंने शादी नहीं की। इनकी मृत्यु संवत 2035 के लगभग हुई।

काव्य कृतियांः

इनकी रचनायें सभी प्रकार के छन्दों में मिलती हैं। इनकी ' कुम्भ प्रयाग पर्व ' नामक पुस्तक भी प्रकाशित हुई। इस पुस्तक की भूमिका हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान श्री जगन्नाथ शुक्ल द्वारा लिखी गई है। उक्त पुस्तक तो अवलोकनार्थ प्राप्त नहीं हो सकी किन्तु उनकी प्राप्त दो चौकड़ियां फागें उनके अच्छे कवि होने का आभास देती हैं। उक्त रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

(1)

अपनी घर की भई लुगाई, तऊ पराई जाई।
पति प्रीतम की लाज राख है, पदवी बढ़े सवाई।
धर्म कर्म की जो मरजादा, राखत आवै भाई।
रमा बड़न को कहो मान है, बनी रहे रौताई।

(2)

गुदना रो रो कें गुदवाये, तऊ आदे गुदवाये।
सुकृती सन्त सुपात्र पुन्य के, चरण कमल अपनाये।
वेद-वेद के वेदन कर कर , ब्रह्म तब्ब दरसाये।
हृदय उमगन की डोरन में, रामलला सरसाये।
रमा प्रेम की साकी कर कर, जंगम जोत जगाये।

मूल्यांकनः

कवि की रचनाओं में अर्थ गौरव और पद लालित्य का गुण मिलता है सरल बुन्देली के शब्दों का चयन किया गया है। रचनायें भावप्रधान हैं। कवि का प्रयास अच्छा है।

(22) हीराबाई :

जीवन परिचय:

इनका जन्म महोबा नगर में वि0सं0 1959 में हुआ था। महोबा नगर के प्रसिद्ध रईस पं0 मुकुन्दलाल तिवारी इनके पिता थे। इनकी शादी बांदा में पं0 परमेश्वरीदयाल अवस्थी के साथ हुई थी। इनके पति बांदा में सरकारी वकील थे। पूर्व विधायक बाबूलाल तिवारी (महोबा) इनके छोटे भाई हैं। इनकी छोटी बहिन फूलमती ने भी काव्य सृजन में महत्वपूर्ण योगदान किया है। संवत 2019 के लगभग इनकी मृत्यु हुई।

काव्य कृतियां:

इनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले सुन्दर गीत लिखने का है। शादियों में प्रायः गाये जाने वाले भद्दे और अश्लील गीतों के स्थान पर गाने के लिये इन्होंने सुन्दर गीत लिखे जिन्हें बुन्देलखण्ड में व्यापक लोकप्रियता प्राप्त हुई। गीतों के अतिरिक्त छन्दों एवं फागों की भी इन्होंने रचना की। कोई प्रकाशित काव्य ग्रन्थ इनका उपलब्ध नहीं है। इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

(1)

मोकों अबकी बेर उबारो, नेक दया चित धारो।
तुम अनाथ के नाथ कहावत, दाता नाम तिहारो।
करमहीन मोहिं सूझत नइयां, मोतें कवन निकारो।
तीन लोक के तुम पतिपालक, कीकों लेउं सहारो।
'हीरा' मीरा सबकी तारी, मो पै किरपा धारो।

(2)

हमरो संकट काट मुरारी, तुम्हरी है बलिहारी।
सुरपत कोप कियो बृज ऊपर, सब तुव सरन पुकारी।

ब्रजवासिन तुम राख लियो है, गोवर्धन गिरधारी।

ज्यों गज टेर सुनी जदुनन्दन, त्यों 'हीरा' की बारी।

(3)

ऐसो कब करिहौद्द गोपाला, जैसी सबरी बाला।

मनसा नाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाला।

चरन कमल चित बसे निरन्तर, रसना चरित रसाला।

लोचन सजल प्रेम पुलकित तन कर,कंजन दल माला।

हीरा तुम्हरी आस गही अब, मिलो वेग नन्दलाला।

मूल्यांकन:

बुन्देलखण्डों में शादी के अवसरों पर गाये जाने वाले सुन्दर गीतों की रचना करने का श्रेय स्व0 हीराबाई को दिया जाता है। इनका यह कार्य हिन्दी काव्य साहित्य के लिये एक महत्वपूर्ण योगदान है विशेष रूप से भक्ति रस के गीत व छन्द ही इन्होंने लिखे हैं। काव्य दोष से मुक्त इनकी रचनायें सरल एवं बोधगम्य शैली में लिखी गई है।

(23) पं0 गोकुल प्रसाद द्विवेदी :

जीवन परिचय:

पं0 गोकुल प्रसाद द्विवेदी का जन्म वि0सं0 1948 (सन् 1891 ई0) में बेलाताल विकास खण्ड के अंतर्गत ग्राम बुधवारा (महोबा) में एक जुझौतिया ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री अयोध्याप्रसाद द्विवेदी था इनके पितामह स्व0 श्री भैरोंप्रसाद जी द्विवेदी अत्यन्त उदार हृदय, दानी, ईश्वरभक्त तथा ऐश्वर्यवान व्यक्ति थे। पं0 गोकुलप्रसाद द्विवेदी अल्पशिक्षित थे किंतु ये जन्मना प्रतिभासंपन्न थे। इन पर माँ सरस्वती जी की भरपूर कृपा रही जिससे इन्होंने उत्कृष्ट काव्य ग्रन्थों की रचना की। इनकी मृत्यु सन् 1951 ई0 को दिसंबर माह में हुई।

काव्य कृतियां

ये अत्यन्त उदार हृदय एवं अनन्य कृष्ण भक्त थे। इन्होंने कई काव्य ग्रन्थों की रचना की।

जिनमें सबसे उत्कृष्ट ग्रन्थ 'श्यामायण' है। अल्पशिक्षित होने के बाद भी श्यामायण की रचना इनके द्वारा किया जाना लोगों की दृष्टि में किसी चमत्कार से कम नहीं है। इस ग्रन्थ की रचना इन्होंने संवत 1979 में प्रारंभ की थी। इस ग्रन्थ में श्रीकृष्ण के लोकरंजक व लोकोपकारी चरित्र का दिग्दर्शन कराते हुये ज्ञान,कर्म व भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है। कवि ने श्रीमद्भागवत पुराण, गर्ग संहिता, हरिवंश पुराण एवं भगवद्गीता का आधार लेकर उक्त ग्रन्थ की रचना की है। कवि ने इस ग्रन्थ को सरल तथा भावपूर्ण भाषा,श्रृंगार, वीर, करूण, वात्सल्य तथा शान्त आदि रसों से अभिसिंचित किया। यह ग्रन्थ चौहा व चौपाइयों एवं विविध छंदों में लिखा गया है।

'श्यामायण' महाकाव्य में कुल बारह खाण्ड हैं जो श्रीकृष्ण चरित्र के क्रमिक सोपान हैं। इसमें श्रीकृष्ण जन्म से लीला प्रारंभ होकर समग्र लोकव्यापी लीलाओं की परिसमाप्ति के पश्चात उनके बैकुण्ठ गमन के साथ विराम लेती है। यह ग्रन्थ क्रमशः गोकुल खाण्ड, वृन्दावन खाण्ड, मथुरा खाण्ड, द्वारिका खाण्ड, रिपुदमन खाण्ड, अनुरूद्ध खाण्ड, मनोहर खाण्ड, युद्ध खाण्ड, आनन्द खाण्ड, भारत गीता खाण्ड, शान्त खाण्ड तथा बैकुण्ठ गमन खाण्ड में विभक्त है। कवि द्वारा प्रतिवर्ष एक खाण्ड का सृजन कर 12 वर्षों में इसे पूर्ण किया गया था। 'श्यामायण' महाकाव्य के कुछ अंश अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं -'श्यामायण' के नायक श्रीकृष्ण पूर्ण ब्रह्म हैं किंतु उनकी नर लीला अत्यन्त स्वाभाविक एवं सजीव है। रास लीला की एक झलक देखिये-

झूम-झूम धरत पैर,घूम घूम जात घैर,भूमि ठैर ठैर शोभा दरशायी है।

छूम छूम शब्द देत, चूम चूम सखी लेत, हरे मीत नील सेत अम्बर छवि छाई है।

ता-थेई, ता-थेई कात उठत फेर बैठ जात काम, देख श्याम गात लज्जा अति पाई है

गोकुल द्विज भनैं,बृज बालन के संग माहिं,यमुना के कच्छन में नृत्यत कन्हाई है।

रसखान की भावना के समानान्तर इनका एक सवैया दृष्टव्य है -

जो जग रंजन दैत्य विभंजन,शत्रुन गंजन शोक नसावैं

देवकि नन्दन द्वन्द निकंदन श्री जग वन्दन जुक्त सुहावैं

दीनदयाल बड़े प्रतिपाल कृपाल गुपाल सबै मन भावैं।

गोकुल गोप की छोहरियां तेंहि नेह के बंधन बंध नचावैं।

प्रत्येक खाण्ड के अंत में कवि ने कुण्डलिया छन्द का अनुबंध किया है। निम्न कुण्डलिया में कवि की भक्ति भावना दर्शनीय है।

बलदाऊ बलभद्र कह संकर्षण बलराम।

भजिये गोकुल दास नित राधा माधव श्याम।

राधा माधव श्याम अहै बड़ नाम अगाधा।

सुमिरत व्है अघ क्षार, हरै यम की भव बाधा।

अजामील गणिकादि व्याध जड़ जन्म स्वपच खल।

तरे नाम लै सकल भजो हिरदय धर हरि बल।

संपूर्ण लोक के दुष्ट राक्षसों का संहार कर आनन्द खाण्ड में श्रीकृष्ण जी ने समस्त मुनियों की उपस्थिति में महायज्ञ किया एवं अंत में दिये गये महाभोज में भोज्य सामग्री का जो वर्णन कवि ने किया वह व्यंजन सूची देखते ही बनती है।

बरा-भात युत कड़ी पकौरी। परसी प्रथम सुमर शिव-गौरी।

दाल चना की अति रूचि कारी। मसरी मूंद उरद की न्यारी।

रार समेत बनी धोवा की। परसी सवै बिना चोवा की।

अति सुन्दर फुलका मैदा के। परसे घृत समेत औंदा के।

अड़िया, अदरख,आंवला, निबुआ आम अचार।

परसे पुनि सूरन सहित, सबके नाम उचार।

ककड़ी, कुमड़ा, कटहल, केला। परसे परवल सहित करेला।

सलगम, सेंमर, सेम रतालू। भिण्डी, भटा, टमाटर, आलू।

गोबी, गोल गड़ेलू घुइयां। अरू झमकुल फदकुला तुरइयां।

चौरइ युक्त मैथी की भाजी। परसी सकल साग अति ताजी।

मगद मलीदा घृत चुअत, अरू शुचि मोहन भोग।

परसाये मेवन मिले, जहं सब बैठे लोग।

मूल्यांकन:

पं0 गोकुल प्रसाद द्विवेदी का 'श्यामायण' महाकाव्य एक अनुपम धार्मिक कृति है। इस महाकाव्य की भाषा, शैली, रस, छन्द व अलंकारों का प्रयोग अद्वितीय है। जनपद हमीरपुर का यह सौभाग्य है कि ऐसे माँ सरस्वती के वरद पुत्र ने यहां जन्म लेकर इस महान काव्य ग्रन्थ की रचना की। अन्य फुटकर रचनायें भी कवि द्वारा की गई हैं जो उच्च कोटि की हैं किंतु केवल 'श्यामायण' महाकाव्य ही कवि को अमरता दिलाने के लिये पर्याप्त है।

तहसील चरखारी

〈1〉 श्री गणेश दत्त शुक्लाः

जीवन परिचयः

डा0 गणेश दत्त शुक्ला 'विद्रोही' का जन्म ग्राम मकरॉव - मोदहा में 12 जुलाई सन् 1931 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री द्वारिकाप्रसाद तथा माता जी का नाम श्रीमती प्यारी बाई था। इन्होंने इण्टरमीडियेट तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात चिकित्सा क्षेत्र में कई उपाधियां प्राप्त कीं। स्वयं कवि के अनुसार ये एक अच्छे लेखक, नाटककार, कहानीकार एवं उपन्यासकार, दार्शनिक, तांत्रिक तथा हस्तरेखा विशेषज्ञ हैं। ये स्थाई रूप से सदर बाजार चरखारी में निवास करते हैं।

काव्य कृतियां:

इनका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं है अप्रकाशित रूप में इनकी पूरी रचनाओं का संग्रह श्री ज्ञान पयोनिधि संहिता के नाम से है। इस ग्रन्थ में गद्य व पद्य दोनों प्रकार की रचनाओं का संग्रह है। इसमें गणित , ज्योतिष, कुण्डली बनाना, चिकित्सा रोग खाण्ड काव्य भीष्म पितामह तथा कर्ण खाण्ड काव्य तथा गीता का अनुवाद तथा अन्य विविध विषयों से संबंधित रचनायें हैं। इस ग्रन्थ के 41 खाण्ड अभी तक लिखे गये हैं। 'श्री ज्ञान पयोनिधि संहिता' में दिये गये लघु खाण्ड काव्य 〈1〉 उपेक्षिता 〈2〉 उजड़ा नीड़ 〈3〉 जलता बदन 〈4〉 तूफान 〈5〉 सीमा और शहीद 〈6〉 कर्ण 〈7〉 सिंहनाद 〈8〉 एक बार ललकारा था 〈9〉 बलिदान 〈10〉 चातक और स्वाति 〈11〉 मंदिर मेरा सुधि शाला 〈12〉 भारतवर्ष 〈13〉 पवनपुत्र हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

〈1〉

〈 उपेक्षिता से 〉

मैं आराधना में रत थी,

मन माहि विलोक रही थी उन्हें

करती कुछ बतियां उनसे थी
अप्रत्यक्ष स्पर्श कराती उन्हें।

× × × × × × × × ×

तुम जानो क्या वियोग किसे कहते
तुम जानो क्या योग किसे कहते
तुम जानो क्या टीस किसे कहते
तुम जानो क्या पीर किसे कहते।

× × × × × × ×

तुम सम्मानित गर्भित गरिमा
मैं निर्वासित का अमित दण्ड
तुम मंदिर की पूजित प्रतिमा
मैं एक उपेक्षित शिला खाण्ड।

॥2॥

॥ उजड़ा नीड़ से ॥

चौरासी के चक्कर में,
जाने अनजाने भटक चुका हूं,
फिर भी हूं परतंत्र अभी
मोहजाल में उलझ चुका हूं।

× × × × × × ×

उजड़ा नीड़ निरखाता पंछी,
बेबस झंझावातों में
तरू की टहनी चरमर टूटी
तूफानी आघातों में।

× × × × × ×

जगाता रहा दे थपकियां उन्हें
प्रभाती करूण मन सुनाता रहा
नृत्य करता रहा जग के रंग मंच पर
प्रदक्षिणा में फेरे लगाता रहा।

(3)

गीत- पहले रो लूं तब गाऊंगा

प्यासा पक्षी पनघट रीता
अधर शुष्क वह चाट रहा है
आशाओं का पिंजड़ा छूछा
प्राणों का पंछी छोड़ रहा है
पहले उसको भर लेने दो
पीछे तब पीर बताऊंगा
पहले रो लूं तब गाऊंगा।
× × × × × ×
पंचवटी में कोई मृग
पुनः स्वर्ण का बन आया है
और राम को अपने पीछे
बार बार भटकाया है
कोई रावण मन मन जाकर
सध्वा नारी को ठगता है।
और पंचवटी में जाकर कोई
फिर सीता को हरता है
पहले कोई जटायु पा लेने दो
पीछे पता बताऊंगा
पहले रो लूं तब गाऊंगा।

(4)

गीत

नीड़ था अपना बनाया गीत गा
तिनकों तिनकों को पिरोया प्यार से
सारे अरमां गूंथ जीवन के दिये
रूप देकर कल्पना को नाज से
नीड़ था सुंदर बनाया गीत गा।

भावना का कर समर्पण प्रेम को
चित्र एक अंकित किया था चाव से
रंग वे सारे रंग चुके थे जो जगत
पर यह हृदय जलता था उनकी याद से
नीड़ था सुंदर बनाया गीत गा।

(5)

(पवन पूत से)

हे केशरी के सुवन पधारो
हर लो मेरे जो कष्ट हैं अपार
हे राम दूत आओ न करो देर
विनय तुमसे है बारम्बार

× × × × ×

अक्षय विदारक, वाटिका उजारक
सीय सुधि कारक, जानकी कष्ट हारक
दुष्ट दलाहक, लंका विध्वंश कारक
ऐसे हैं आप राम दूत जन जन प्रतिपालक।

× × × × × × ×

प्रकाश के पुंज प्रचण्ड सूर्य से भी तेज
हे एकादश रूद्र श्री राम के आदेश
है विनय आप से बटुक वेश
लक्ष्मी प्रदाता करो न अबेर है वीरेश

मूल्यांकन:

डा0 गणेश दत्त शुक्ला जनपद के एक वरिष्ठ कवि हैं। काफी अधिक संख्या में लिखी गई इनकी रचनाओं में कहीं कहीं मात्रा तथा वर्णो का दोष मिलता है फिर भी सरल एवं प्रवाह पूर्ण शैली में लिखी गई कवि की रचनायें हृदयस्पर्शी हैं। कवि का प्रयास अच्छा है।

﴾2﴿ श्री कालका प्रसाद सक्सेना:

जीवन परिचय:

श्री कालका प्रसाद सक्सेना 'मकरन्द' का जन्म 24 जुलाई सन् 1929 को राज मंदिर के पास चरखारी में हुआ था। इनके पिता स्व0 हीरा सक्सेना तथा माताजी का नाम श्रीमती तुलसा देवी था। इण्टरमीडियेट तक शिक्षा प्राप्त श्री सक्सेना जी प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक पद पर कार्यरत रहे जहां से इन्होंने सन् 1991 में अवकाश ग्रहण किया। ये जनपद के एक श्रेष्ठ कवि हैं। वर्तमान समय में चरखारी में ही निवास करते हुये ये काव्य साधना में रत हैं।

काव्य कृतियां:

श्री सक्सेना जी का अभी तक कोई काव्य संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। इन्होंने बहुत अधिक मात्रा में श्रेष्ठ कोटि के काव्य साहित्य का सृजन किया है जो इनके पास अप्रकाशित रूप में उपलब्ध है। इन्होंने अब तक 29 पुस्तकें लिखी हैं तथा अन्य फुटकर रचनायें हैं उक्त अप्रकाशित पुस्तकों में इनका एक महाकाव्य 'सीतायन' भी है जिसमें लगभग अठारह हजार छन्द हैं। यह सुंदर महाकाव्य मिथला काण्ड, पीहर काण्ड, पंचवटी काण्ड, विजय काण्ड, साधना काण्ड तथा उत्क्रान्ति काण्ड में विभक्त है। प्रत्येक 9 छन्दों के बाद इसमें एक दोहा दिया गया है। इस प्रकार महाकाव्य में कुल 15539 छन्द तथा 1795 दोहे दिये गये हैं। कुल संख्या 17334 है। इस महाकाव्य का प्रारंभ कवि द्वारा 27 मार्च सन् 1982 को किया गया तथा 25 जनवरी सन् 1990 को यह पूर्ण हुआ इसके अतिरिक्त इनके अन्य अप्रकाशित काव्य संग्रह निम्न प्रकार हैं:-

﴾1﴿ समय समय के गीत

﴾2﴿ नैतिक लहर

﴾3﴿ अनौटिया मांझी नई पतवार

﴾4﴿ सुझाव के भाव

﴾5﴿ मधु कलश

﴾6﴿ जीवन दर्शन

﴾7﴿ नारी दर्शन

﴾8﴿ हिंदुओं के पथ भ्रष्टक

(9) व्यंग तरंग

(10) उसूलों का गुलदस्ता

(11) आजाद गजलें

(12) बे सिर पैर की लमतड़ानें

(13) गीत गुंजन

इनकी गद्य में लिखी गई भी कुछ अप्रकाशित पुस्तकें हैं। कुछ की सूची निम्न प्रकार है:-

(1) विचारों के लठा लठे

(2) चलते पुरजे

(3) सामाजिक क्रान्ति 1990

(4) आप्त वचन

(5) अपनी शंका, समाधान अपने

इनकी रचनाओं के कुछ नमूने अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं।

'सीतायन' महाकाव्य से

(1) मिथला काण्ड

दोहा: परम शक्ति में अंकुरित, नारि का परिवेश।
चिंतित सी भवतव्यथा, व्यवहारिक उन्मेष।

पली जनक के राजमहल में, लली कली सुषमा सी।
निर्मल सरल सुचिन्त भाव में, छहरत पूरनमासी।
सुघर सुनैना के नयनों की, ज्योतिर्मयी शिखा सी।
निर्विकार निर्लिप्त जनक की, भक्ति भावना कासी।
रूप और सौन्दर्य सौम्य तन, मुखरित तरूनाई में।
किन्तु न समता हो सकती है, स्वामिन में दाई में।
जड़ दे कोई आक पुष्प यद्यपि, गुलाब की डाली।
किंतु असंभव है उनके संग, चुन लेगा कोई माली।
जोड़ रहे हैं मनगढंत सब, अन्तर्कथा हमारी।
राजाश्रित कविवर विदेह की, कहके सुता कुमारी।
अंश वंश अज्ञात कौन, इस कन्या को अपना ले।
आर्य संस्कृति के लटके हैं, बुद्धि शुद्धि पर ताले।

॥2॥ पीहर

दोहा : नगर प्रवेश बरात का चौथे प्रहर सुयोग।
कौशल में आनंद के, घरन घरन संयोग।

तोरण द्वार राजमंदिर के, स्वर्ण भिमंडित।
स्वरित पाठ ही, शुभागमन में करते पंडित।
कोरन कोरन मोर सुनहरे, पंख सम्हारें
गजाकार दोऊ ओर, शुण्ड से शुण्ड निवारें।
युगल अप्सरायें चित्रित कर में मालायें
भित्ति चित्र में धरे, कलश सिर पे बालायें।
कला कला में कला कल्पना कलाकार की।
अंग अंग में रंग, रंगी रंगी निखार की
मंत्र मुग्ध दर्शक, इकटक ही बिलबिचयाने।
सत्यासत्य विवेक, विचारत चतुर सयाने।
मेल भला कैसे हो सकता, प्राकृत में मानव में।
पोषक शोषक की विभिन्नता देव और दानव में
मंगल कलश धरे सिर गावें कोकिल बानी।
राजमार्ग पर सुघर सुआसिन थीं अगवानी।

॥3॥ चित्रकूट काण्ड

दोहा: कर्मो का परिणाम है, अनजाने प्रारब्ध
भ्रामकता कारण स्वयं, करता प्राणी क्षुब्ध।

कालचक्र की करे उपेक्षा, को समर्थ है।
स्वास्थ्य की वैतरनी, आधारित अनर्थ है।
निष्कर्षो की छानबीन, ही करते करते।
बड़े बड़े विद्वान , अंत कवि देखे मरते।
विद्या और अविद्या के लेखे जोखे की।
कर पाते पहचान नहीं, खोटे चोखे की।
मानवता की ठेकेदारी करते ठगुवा।
ऊंची बोली बोल बोल कर बनते अगुवा

मनमानो कर लेंय, धर्म के बांधे नाके।
लाबर लड्डू खांय, परे सांचिन पै फांके।

दोहा : कपटी क्रूर कुचक्र में, बांध रहे परिवेश।
तिलक तिलोक तिवाव दै धर संतन को वेश।

(4) लंकाकाण्ड

दोहा : कर प्रदक्षिणा गगन पथ, लंका के चहुं ओर।
रावण हर्षित सीय मन करूणा भाव विभोर।

हल्के फुलके मेघ अम्बरी तल से।
अर्धाहुति दे रहे धरा पर जल से।
बीच बीच में अनमनष्क से तारे।
मिलमिलात से लपक झपक के मारे
कर्म भूमि लंका की भाव विमर्शी
धर्माचरण प्रतीक्षा में, स्पर्शी
आकर्षित हो रही यान से पूरी
या कि यान से न्यून धरा की दूरी
उतरा भूमि विमान प्रेरणा पन का
निशाचरी अभिमान दशानन मन का।
सुता, सताई सी सहेजती माता।
पग स्पर्श संसर्ग वर्ग का नाता।
ज्ञानापि हरत, सुरम्य रूप रमिता से।
मद मदान छू रही क्षितिज ममता से।
झिलमिलात झालर झमेल बहुरंगी।
राजमार्ग पर आज, भंगिमा भंगी।

दोहा: शोभनीय सुविधा सुखद विभव विशेषक भान।
धर्मान्धर्न प्रवर्त का है प्रत्यक्ष प्रमान।

'समय-समय के गीत' पुस्तक से

शुभ यात्रा

जा रही नैहर प्रिये, तुम छोड़ पीहर देश अपना।
आज की प्रत्यक्ष घटनायें, बना कर एक सपना।
तुम हो जीवन की सुहानी, चांदनी की मंद छाया।
पथ प्रदर्शक नेह बंधित, ओ हमारी योग माया।
धाम, धनपहले दिया, हिरदय में न कुछ क्लेश था।
दे चुके तन मन तुम्हें अब और क्या कुछ शेष था
तुम, हमारी याद करके, भूल कर रोना नहीं
नेह बंधन में बंधी, कल कानि को खोना नहीं
पत्र द्वारा भेजना, अपने हृदय के प्यार को
उर लगा हम रोक लेंगे, आंसुओं की धार को
वायु के झोंकों से ही, कुछ भेजना संदेश प्यारे
हम तुम्हें भेजा करेंगे, चांद तारों के सहारे
लब पै गायत्री रहेगी, नैन उसका वास होगा।
मूंद कर हम देखा लेंगे, जब कभी अवकाश होगा।
मान हो अभिमान हो, तुम ही हमारी मान हो।
फिर मिलन की आस ले जाओ प्रिये, कल्याण हो।

(3) प्रश्न चिन्ह

जगते जगते कितने सोये।
हंसते हंसते कितने रोये।

मुस्करा चुके कितने वसंत ?
मुकुलित दल लोचन खोल खोल।
कितने सावन भादो बरसे ?
हर्षे कितने पिक बोल बोल

अनगिनित हुये ग्रीष्म प्रचण्ड
अपनी तेहा तप तप खोये
जगते जगते . . . . .

कितनी कुटियों के बने महिल।
कितने प्रसाद हुये खण्डहर
उजड़े कितने उद्यान उपवन
रीते कितने सरवर भर भर।

फिर बार कितेक निकेत धरा के,
चरण समुंन्दर ने धोये
जगते जगते . . . . .

(4) टीका नजर

सच्चे मन से तुम्हीं बता दो
कौन किसे है देता।
इसीलिये ही मैं समाज से
टीका नजर न लेता।

कौन पूछता है किससे
छोटे रिश्ते मनचाहे
छोटे बड़े परस्पर सब हैं
किसको कौन निबाहे

पहले था सम्मान रूप
फिर हुई केवल दस्तूरी
आज, बाध्य होकर समाज में
करनी पड़ती पूरी।

बदल दिया मानव ने युग को
या युग ने मानव को
स्वार्थवाद की स्वल्प लहर ही
बहा ले गयी भव को।

(5) 'व्यंग-तरंग' पुस्तक से

इस पुस्तक में कुल 115 व्यंग रचनायें हैं :-

(1)

लव मैरिज ना निभत है, जतन करो तुम लाख।
चार दिना की चांदनी, फेर अंधेरी पाख।

फेर अंधेरो पाख, अरे दो दिन का मेला
उठ जैहे जब हाट, कमर में रैहे धेला
छिन्न भिन्न परिवार प्रथा बन जैहे गैरिज
पछतानी मकरंद, राधिका कर लव मैरिज।

(2)

निश्चय ही बढ़ जायेगी तब नारी की पूंछ,
घर बाहर ढूंढ़ें मिलें, दाढ़ी पखा न मूंछ।
दाढ़ी पखा न मूंछ, बिगारें शोभा सारी।
नर कुरूप कहलायें, रूप के बने पुजारी।
हू है तब मकरंद, सार्थक उनको परिचय।
नीचे ऊपर हेर फेर, मनमाने निश्चय।

(3)

लल्ला पेहलऊं पहल भओ, करतीं बहुत गुमान।
घर बाहर न सैंटतीं चलतीं सीना तान।
चलतीं सीता तान, संग पप्पू के पापा।
गोदी में ले लैंय, बेग में भरे पुजापा।
पिक्चर में 'मकरंद' देख के होवे हल्ला।
पापा जी शर्माय, और रो देवै लल्ला।

(4)

लै हैं मोटर साईकिल, तब करवाहें ब्याव
अपने बाप मताई से लड़का खेंचे ताव
लड़का खेंचे ताव, संग में टेप रिकार्डर
आटोमेटिक घड़ी फिरज को दैहें आर्डर
है नैंया करतूत कछू का फूंक चबैहें।
सुघर बहू मकरंद पढ़ी ऊपर से लैहें।

(5)

नकलन से डिगरी मिली, अकलन पै लई लाद
करते बे सर पैर की, बातें बे सर स्वाद।

बातें बे सर स्वाद, बने रिश्वत से वक्ता

फिरते बेघर द्वार, टांगते लिख के तख्ता।

देख लेव मकरंद, न मानौं तो सकलन से

कीकी कीकी कहें,बोलते पी नकलन सें।

मूल्यांकनः

श्री कालका प्रसाद सक्सेना जनपद के उन वरिष्ठ कवियों में से एक हैं जिन्हें हिंदी काव्य साहित्य में सम्मानजनक स्थान मिलना चाहिये था किंतु जनपद का यह दुर्भाग्य है कि ऐसे श्रेष्ठ कवि को अभी तक उचित स्थान नहीं मिल सका है। कवि का रचित महाकाव्य 'सीतायन' कवि को अमरता दिलाने के लिये पर्याप्त है। काव्य दोष से पूर्णतया मुक्त कवि की रचनायें सरस एवं प्रवाहपूर्ण हैं। इनकी रचनाओं में लालित्य एवं माधुर्य का गुण विद्यमान है। अलंकारों का सुंदर प्रयोग कवि के काव्य कौशल का प्रमाण है। सुंदर शब्दों का चयन कवि की विद्वत्ता का प्रतीक है। कवि को हिंदी भाषा का गहरा ज्ञान है हिंदी काव्य साहित्य की अमूल्य धरोहर कवि के महाकाव्य 'सीतायन' का प्रकाशन शासन/प्रशासन के द्वारा अवश्य कराया जाना चाहिये। संक्षेप में कवि का अमूल्य योगदान अविस्मरणीय है।

(3) श्री राजाराम सिंह परिहार :

जीवन परिचय:

श्री राजाराम सिंह परिहार का जन्म भार्दो पूर्णमासी संवत 1985 को तहसील राठ के अंतर्गत ग्राम मझगवां में हुआ था। इनके पिता स्व0 रामभरोसे सिंह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इन्होंने एम0ए0 (हिन्दी) तक शिक्षा प्राप्त की। पहले कुछ समय तक ये कलैक्ट्रेट हमीरपुर में कार्यरत रहे किंतु बाद में नार्मल ट्रेनिंग स्कूल चरखारी में अध्यापक हो गये जहां से अवकाश प्राप्ति के पश्चात अब ये स्थायी रूप से जयेन्द्रनगर चरखारी में ही रहते हैं।

काव्य कृतियां:

ये मुख्य रूप से वीर रस में छन्द व गीत लिखते हैं। इन्होंने अन्य कई स्वतंत्र गीत भी लिखे हैं। मंचों पर काफी समय तक कविता पाठ करने ये प्रदेश के विभिन्न नगरों में जातेरहे हैं। इनका कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है इनकी फुटकर रचनायें विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1) घनाक्षरी छन्द

जन्म जहां पाया, जिसका जलान्न खाया, उस

मात्रभूमि के महान ऋण से उबर लें।

आज नहीं काल, काल कवलित होना है तो

कायर कहा के क्यों कलंक सिर धर लें।

क्यों हो भयभीत हम भीष्म, भीम पार्थ पुत्र,

काल को भी ललकार सम्मुख समर लें।

कीरों की तरह तो मरे ही हैं हजार बार,

वीरों की तरह चलो एक बार मर लें।

(2) गीत

यद्यपि अब आंखों में मेरी आंसू तो छाते नहीं।

इसका अर्थ नहीं यह मुझ पर,दुख कभी आते नहीं।

मिला न जब कुछ श्रेय, वेग का सम मैदानों में।

तब आरंभ कर दिया मैंने बढ़ना, रेगिस्तानों में।

पहले छोटे छोटे फिर तो, बड़े बड़े मरूथल आये।

और सहारा हारा काला हारी भी हारी खाये।

अब हम आंधी तूफानों से बिलकुल घबराते नहीं।

इसका मतलब नहीं कि तूफां मुझसे टकराते नहीं।

आसमान ने अब तक जो बूदें बरसायी हैं

उनसे कहीं अधिक मुझ पर विपदायें आयी हैं।

चीर चीर घनघोर घटा, ज्यों दामिन खेली है।

उसी भांति मैने हंस हंस हर विपदा झेली है।

प्रलयंकर घन मुझे मार्ग से, तनिक डिगा पाते नहीं।

इसका मतलब नहीं कि अब वे ओले बरसाते नहीं ।

× × × × × × × × × × ×

(3) तुलसी के प्रति

कलिकाल की काली विभावरी में,

चिर शाश्वत ज्योति जला गये हो।

पथ भूले भ्रमे, भटके जनों को,

एक सीधी सी राह लखा गये हो।

बहुजन्म प्रपाशित प्राणियों को,

एक अमृत कूप बना गये हो।

तुलसी यह मानस काव्य नहीं,

हमें स्वर्ग नसैनी लगा गये हो।

सुत,भ्रात, पिता, गुरू,स्वामि, सखा,

सबके आदर्श दिखा गये हो।

परिवार समाज प्रशासन के,

सबके सब भेद बता गये हो।

यह लोक संभाल नये तुलसी,

पर लोकहु की समझा गये हो।

मानस के मिस मानव को,

तुम मुफ्त में मुक्ति लुटा गये हो।

(4) हास्य व्यंग

मैं कवियों की पूंछ भी नहीं

सिर्फ पूंछ का बाल हूं।

कुछ कवि अलंकार के कुंजर

कोई रचते छंद छछूंदर।

कोई अर्थ की अर्थी सजते।

कोई भावों के भस्मासुर।

ढूंढ़ो एक हजारों मिलते

गालिब का वह ख्याल हूं

मैं कवियों की . . . .

(4)

कवि की दो सुंदर रचनायें सन् 1966 में प्रकाशित पुस्तक 'कुहरे की कलियां' में छपी थीं। जिन्हें अवलोकनार्थ नीचे दिया जा रहा है।

गीत

रंगने बैठा क्यों जीवन पल

स्मृतियां उर में रहीं मचल

मुख दर्शन का सत्य कहो

नेत्रों का उत्पात अहो।

प्रथम स्पर्श की सिहर रहो

अधिक न अब इस धार बहो।

है दृश्य नहीं क्या यही अचल

रंगने बैठा क्यों जीवन पल

हृदय का आलोड़न कर बन्द

नेह की धार तनिक कर मन्द

रच रहा हूं स्वासों के छन्द

पा रहा इसमें कुछ आनन्द

किन्तु कहो क्या नहीं एक छल

रंगने बैठा क्यों जीवन पल।

अश्व काल्पनिक की गह डोर।

उड़ जाता हूं नभ के छोर

टकरा कर पर वहां शून्य से

आता लौट तुम्हारी ओर

सखि लेना है अब तुमसे बल।

रंगने बैठा क्यों जीवन पल।

(2)

(जैसे गये और आये सभी हैं)

कभी मुस्कराता कभी अश्रु ढाता उसी भांति मैं भी चला जा रहा हूं।

कि जैसे गये और आये सभी हैं।

रहा देखाता मैं भंवर में फंसे तृण गये दूर कुछ और फिर लौट आये

रहे फरफराते विकल प्राण उनके, मगर वे बिचारे किनारा न पाये।

पड़ा सिन्धु संसार की धार में हूं उसी भांति बहता चला जा रहा हूं।

कि जैसे विवश बहते आये सभी हैं।

आये गये युग नहीं याद कितने मगर मैं रहा यों ही गोते लगाता।

पड़ा धार में यार लाचार कितना, मुझे हर थपेड़ा थपेड़ा लगाता।

नयन नीर ढाता कठिन क्लेश पाता, उसी भांति सहता चला जा रहा हूं।

कि जैसे सदा सहते आये सभी हैं

कि जैसे गये और आये सभी हैं।

अवनि के उदर में नहीं आग केवल निहारो तो ऊपर गगन जल रहा है।

छिपाये सभी पीर कोई न कोई, यहां वेदनाओं में जग पल रहा है।

अरे प्राण, धीरज धरो मत विकल हो, तुम्हीं ही नहीं ये असह यातनायें।

जो आये यहां हैं सो पाये सभी हैं।

कि जैसे गये और आये सभी हैं।

अवशि है किसी न किसी का सहारा कि जिससे निराधार ही नभ धरा है।

कहीं न कहीं से मिली गति तभी तो, युगों से लगातार घूमी धरा है।

उसी प्रेरणा से प्रबल पैर पथ पर सदा से चले अरू चले जा रहे हैं।

नहीं हारते हैं न हारे कभी हैं।

कि जैसे गये और आये सभी हैं।

मुझे क्या पता कब कहां से चला और कैसे कहूं कि कहां तक चलूंगा।

हमारे पवन तुम जहां को कहो मैं, तुम्हारे सहारे वहीं को बहूंगा।

मुझे डर नहीं क्योंकि मैं जानता हूं, कि मंझधार के तृण पवन के सहारे।

किनारे भी पाये कभी न कभी हैं।

कि जैसे गये और आये सभी हैं।

मूल्यांकन:

श्री राजाराम सिंह परिहार की उपर्युक्त रचनायें उनके एक श्रेष्ठ कवि होने का प्रमाण हैं। कवि की रचनायें उसके हृदय की गहराइयों में डूबी हुई हैं। कवि की रचनाओं में प्रवाह है माधुर्य के गुणों से युक्त कवि की रचनायें हृदय स्पर्शी हैं कवि को हिन्दी भाषा का गहरा ज्ञान है। कवि की दार्शनिकता एवं गंभीर विचारों की स्पष्ट छाप उसकी रचनाओं में है। हिन्दी काव्य साहित्य की कवि द्वारा की गई सेवा प्रशंसनीय एवं अविस्मरणीय है।

{4} डा0 अजिर चौबे:

जीवन परिचय:

डा0 अजिर चौबे का जन्म 28 अक्तूबर सन् 1965 को चरखारी में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री श्यामबिहारी चौबे तथा माताजी का नाम श्रीमती सावित्री देवी है। इन्होंने एम0ए0, एम0फिल0 पी0एच-डी0 {मनोविज्ञान} तथा एम0ए0 {हिन्दी} तक शिक्षा प्राप्त की है तथा वर्तमान समय में सनातन धर्म बालिका महाविद्यालय उरई में मनोविज्ञान के अध्यापक हैं। वर्तमान समय में 16-जयेन्द्रनगर चरखारी में ये निवास करते हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी कोई पुस्तक अभी तक प्रकाशित तो नहीं हो सकी है किन्तु अप्रकाशित रूप में 4 पुस्तकें उपलब्ध हैं जो निम्न प्रकार हैं:-

{1} 'युगान्तर' गीत काव्य — इसमें 74 छन्द हैं।

{2} 'सीपियां' — इसमें 1988 से 90 तक की 36 कवितायें हैं।

{3} 'निता' — इसमें 36 स्फुट गीत व कवितायें हैं।

{4} 'दिव्या' — इसमें 1990 से बाद के 51 गीतों का संग्रह है।

इनके लगभग 15 गीत व कवितायें अब तक विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इनके दो शोध पत्र भी प्रकाशित हुये हैं। आकाशवाणी छतरपुर से साहित्यिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा नाट्य विषयक 25 से अधिक इनकी वार्तायें व परिचर्चायें अब तक प्रसारित हो चुकी हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

(यह धरती वीर सपूतों की)

हम्मीर देव की पुण्य धरा,
यह वीर प्रसूता वसुन्धरा
इसके कण कण में गौरव है,
पग पग में है इतिहास भरा।

यह धरती वीर सपूतों की,
बुन्देलों की रजपूतों की,
जो झुके नहीं सिर कटवाया।
उन क्रान्ति वीर युग दूतों की।

हम ऋणी हमेशा तेरे हैं,
है ऋणी राष्ट्र है ऋणी ग्राम
हम्मीर धरा के युग सपूत,
है तुम सबको लाखों प्रणाम

(2)

' सीपियां ' से

रख दो निज यौवन का भार,
मेरे अधरों पर एक बार

पतझड़ सा जीवन विकराल
तन में सुलगी भीषण ज्वाल
थोड़ा द्रग जल दो उपहार
रख दो . . . .

मैंने तुमसे कुछ न पाया,

वृक्ष भला क्या जाने छाया

ये है जीवन का व्यापार

रख दो . . . .

(2) गीत

लो! टेसू मुस्काया,

सन्यासी से पहने वस्त्र

और ध्यान लगाये सा

बिन पत्तों के सघन वृक्ष से,

मांग रहा छाया

लो! टेसू . . . .

निर्जन दोपहरी उतरी है,

वन वन वृक्ष उबायें

नित्य धूप में जली पली

शान्ति स्निग्ध काया

लो! टेसू . . . .

(3) आवाहन गीत

भीड़ में कब तक चलोगे

लीग से तुम कब हटोगे।

वक्त की ये मांग है अब

लाओ तुम एक क्रान्ति साथी

युगों युगों से गर्त सी

मानस पटल पर छा गयी है

हाथों में लेकर मशालें

मिटा दो सब भ्रान्ति साथी

लाओ तुम अब क्रान्ति साथी।

(4) हिमपात के बाद

तुम मेरे ऊपर
हौले हौले झरे
बर्फ से
मैं ढकता गया
किसी (चन्)
दरख्त सा
कुछ समय बाद
पत्ते झर गये
और मुझे भी
पता न चला
अब तुम्हारी
नफरत की ऊष्मा में
पिघला दी है बर्फ
और मैं . . .
निस्तब्ध खड़ा हूं
ठूंठ सा !

(5) तुम! कुछ स्थितियां

मेरे सिरहाने
तकिये सी
तुम्हारी
याद!
जैसे
रूई के साथ
रह गया हो,
धुनकर का
बांट ।

(6)

तुम्हारे

नयन

टांक जाते हैं,

सूनेपन का

अहसास

जब तुम

विदाई के क्षण में

मुस्कराते हो!

(7)

तुम जानती हो

कभी नहीं मिलतीं

समानान्तर रेखायें

तो भी हम

समानान्तर

क्या मिटेगा

ये

अन्तर ।

(8)

धूप सी आयी ! तुम

मेरी जिन्दगी में

और सूरज

ढलने पर

अलविदा कह रही हो,

क्या प्रतीक्षा करूं

मैं नयी भोर की।

(9) 'युगान्तर' से

झरेंगे पहले पीले पत्र

तभी फिर आयेगा नव सत्र

यही है प्रिय जीवन का चक्र

सुगम है तिर्यक है या वक्र ।

(10) 'दिव्या' से

कितने भोले प्रश्न तुम्हारे

कितने मोमीले

सूख गयी भावों की नदिया

तट भी रेतीले।

मूल्यांकनः

डा0 अजिर चौबे नयी कविता के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनकी रचनायें दार्शनिकता से ओत प्रोत तथा मन को झकझोरने वाली हैं। मनोविज्ञान में डाक्टरेट की उपाधि से विभूषित कवि को हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान है। छायावादी पुट लिये हुये कवि की रचनायेंसरस एवं प्रवाहपूर्ण हैं। हिन्दी कविता की नयी विधा के उदीयमान कवि डा0 अजिर चौबे द्वारा हिन्दी काव्य की की जा रही सेवा महत्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय है।

(5) श्री राहुल गुप्ताः

जीवन परिचयः

श्री राहुल गुप्ता का जन्म 1 जुलाई सन् 1975 को मुहाल वासुदेव-चरखारी में एक वैश्य कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री ओमप्रकाश गुप्ता तथा माताजी का नाम श्रीमती विमला देवी गुप्ता है। इन्होंने बी0ए0 तक शिक्षा प्राप्त की है तथा अभी भी अध्ययनरत हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी अभी तक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं है। इनकी रचनायेंविभिन्न पत्र/पत्रिकाओं में अवश्य प्रकाशित हुई हैं। ये अतुकान्त कवितायें लिखाते हैं। समाज की विषमताओं तथा व्याप्त कुरीतियों के प्रति गहरी पीड़ा की अभिव्यक्ति ये अपनी रचनाओं के माध्यम से करते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1) 'डरते-डरते'

सब कुछ

दुनियां में डरते डरते होता है।

प्यार भी इनकार भी

व्यापार भी प्रचार भी

झगड़ा भी भांगड़ा भी

सच कहना हो,

या चुप रहना।

जीना हो या मरना

सभी में शामिल होता है डरना

सवाल यह है

कि इंसान न डरे

तो क्या करे

कलियुग में डरना

एक तरह की सावधानी है

सावधान आपकी निडरता से

कोई दुर्घटना घट सकती है।

(2) 'प्यार'

प्यार एक शब्द नहीं,

भावना है,

जो मरने के लिये जन्म नहीं लेती

एक भरोसा है प्यार

जो टूटने के लिये नहीं जुड़ता

प्यार वह आग है

जिस पर कोई पानी

असर नहीं करता

वह दरिया है प्यार

जिस पर कोई बांध नहीं बंधता

प्यार वह इकलौती पगडंडी है
जो दो दिलों के बीच की
दूरियां तय करती है
एक रोशनी है प्यार
जो आसमां से जमीं के उस पार
तक उतरती है
प्यार की कोई जाति नहीं होती
कोई धर्म नहीं होता
इन सभी तथ्यों के समर्थन में
हर संभव सबूत मुझे
सारी दुनियां को सौंपना है।

(3) 'आखिरकार'

ये पंडित ये मुल्ला
तुम्हारा ईश्वर और अल्ला
तुम सभी को मेरा आखिरी प्रणाम
आखिरी सलाम
जाओ मेरे देश की सीमा से
दूर निकल जाओ
मेरी दुनियां में न आओ
कान खोलकर सुन लो
कि मेरी दुनियां में
तुम्हारी मंदिर व मस्जिद के लिये
एक इंच भी जगह नहीं है
ढिंढोरा पिटवा दो
कि मैंने अपने राज्य से
सभी धर्मो को निष्कासित कर दिया है
आज मैं अपने पूरे होशोहवाश में
दृढ़ता और विश्वास के साथ
स्वयं को नास्तिक घोषित करता हूं।

मूल्यांकनः

श्री राहुल गुप्ता युवा पीढ़ी के एक उदीयमान कवि हैं। इनकी रचनायें अतुकान्त हैं। किन्तु वे प्रभावी एवं पाठक पर अपना असर डालती हैं। रचनाओं में माधुर्य का गुण विद्यमान है। गंभीर विषयों पर कवि की सोच उनके एक अच्छे कवि होने का आभास देती है। संक्षेप में इन्हें नयी पीढ़ी का एक अच्छा कवि माना जा सकता है।

[6] श्री हरीदास सक्सेना :

जीवन परिचयः

श्री हरिदास सक्सेना का जन्म एक जनवरी सन् 1922 को सरीला (हमीरपुर) में एक कायस्थ कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम लाला बाबादीन तथा माता का नाम छोटीबाई था। इन्होंने बी0ए0 तक शिक्षा प्राप्त करके आयुर्वेदरत्न की उपाधि प्राप्त की। ये सन् 1945 से लेकर सन् 1965 तक गंगा सिंह हाई स्कूल चरखारी में अध्यापक रहे तत्पश्चात अनिवार्य शिक्षा विभाग के डिप्टी डायरेक्टर रहे। नार्मल विद्यालय चरखारी में दस वर्ष तक अध्यापक रहे। सन् 1980 में अवकाश ग्रहण करने के पश्चात वर्तमान समयमें ये अपने स्थायी निवास रायनपुर चरखारी में रहते हैं। ये अपने निवास पर आयुर्वेद औषधालय चलाते हैं।

काव्य कृतियांः

ये छन्द, सवैया, गीत सभी लिखाते हैं। विभिन्न विषयों पर इन्होंने अपनी लेखनी चलाई है। इनकी दो लघु पुस्तकें गद्य में प्रकाशित हैं जो चिकित्सा से संबंधित हैं।

इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

चाहते हैं चूमना हम गगन के सितारों को,

पानी को समझें कि अमृत बरसत है।

जानते हैं सूंघना हम गंध रहित फूलों से,

देख धरणि धन को बहु हृदय हरषत है।

मानत हैं नित्य सत्य, झूठे निज स्वारथ को,

अंखारी में स्वर्ग कहें, कर्म न दरसत है।

छानते हैं धूल राख दूर हरि जिला कोसों,

पुपले के आनन सम सोभा सरसत है।

(2)

रहो तुम मिलाते घड़ी से मुहूरत,

अतिथि द्वार आकर चला ही न जाये

न यौवन खबर भेजता आगमन की

नहीं सूचना भी सुनाता गमन की।

चला जो पकड़कर समय की कलाई,

जगत सुख निछावर मिले सब बड़ाई

रहो तुम मिलाते पुरानी सरंगी,

समय गीत गाकर चला ही न जाये।

(3) बुन्देलखण्ड पर

इत जमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत सौन,

वीर बांकुरे नरन की, जननी साधे मोन।

वीर प्रसू सुन्दर प्रकृति जल थल सों गंभीर

भारत मध्य संभारती, अग्र जग बनकर धीर

तुलसी वियोगी गुप्त से, निकसी बन रस धार

वीर श्रेष्ठ था तांतिया, लक्ष्मी सी थी नार।

छत्रसाल, हरदौल, बुन्देला, आल्हा ऊदल अरू परमाल

पद्माकर भूषण से कविवर अर्की थी ढाल

अर्जुन सिंह, जयसिंह वीरवर बाजी राखी बाजीराव

केशव व्यास बिहारी कविवर देते रहे ताव पर ताव।

(4)

ममता ने जीवन चर डारो।

मम मम ध्यान सदा निशि बासर, प्रभू को ध्यान बिसारो।

मात-पिता, भगिनी सुत नारी, बंधु मित्र चित बारो।

तीनउ पन में घिरे घिरे ही सत से कियो किनारो

जानत तू पुनि, पुनि संभ्रम में मीठो कर दओ खारो

कहत कवि हरिदास त्याग ममता को गहो हरि को सहारो।

मूल्यांकन:

जनपद के वयोवृद्ध कवि श्री हरिदास की रचनायें सरल शैली में लिखी गयी हैं जो आसानी से जन सामान्य की समझ में आ जाती हैं। विविध विषयों में की गई उनकी रचनायें उनके एक दीर्घ जीवन के अनुभवों का सार है रचनायें भावपूर्ण हैं । कवि का प्रयास अच्छा है।

(7) श्री अमरसिंह 'अमरेश' :

जीवन परिचय:

श्री अमर सिंह 'अमरेश' का जन्म चरखारी तहसील के अतर्गत ग्राम काकुन में हुआ था। आप इस समय कृषि कार्य करते हैं ये आशु कवि हैं इनकी रचनायें उत्कृष्ट कोटि की होती हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी एक प्रकाशित पुस्तक 'वीर आल्हा' खण्डकाव्य है। शेष अप्रकाशित साहित्य कवि के पास संग्रहीत है। 'वीर आल्हा' खण्ड काव्य की कुछ रचनायें अवलोकनार्थ दी जा रही हैं।

सो0 : जय-जय-जय जगदीश, जयति जानकी नाथ जय,

गुरू पद रज धर शीश, वीर सुयश वरनन करत।

दो0 : विश्व बंद्य भारत वृहत, वीरन देश प्रधान।

सोहत ताकी गोद में नगर महोवा जान।

युद्ध वीर जाहिर भयो, देशराज कौ लाल।

जाके बल निर्भय धरनि, राज्य कियौ परमाल।

वही वीर की वीरता, हौं इति करत बखान।

राखी अपने बाहुबल जो भारत की शान।

कुछ महीप अज्ञानवश, भूल गये निज बोध।

तासों हिन्दुस्तान में, लाग्यो बढ़न विरोध।

समय जानि तुर्कान यह, मिलकर कियो विधान।

गढ़ दिल्ली कर विजय फिर, मेंटहिं हिंदुस्तान।

(छप्पय छन्द)

मिलकर यहां म्लेच्छ मुदिन मन मंत्र द्रढ़ाओ।

साठ लच्छ परमान विकट भट कटक बनायो।

सजि स्सैन्य चतुरंग भवन अविलंब सिधारे।

होकर सुभट तमाम मद्य मद में मतवारे।

कह कवि विचार अमरेश इमि आन चढ़यो तुर्कान है।

चौहान राज्य रन खेत पर, दीन्हें गाड़ निशान है।

दो० : युद्ध क्षेत्र अवलोक कर राख्यो कटक सम्हार।

विविध बाग बन की सुभग, लाग्यो लेन बहार।

(छप्पय छन्द)

परम रम्य चहुं ओर दृश्य देखत मन मोहत।

वरन वरन वर बेल सघन वृक्षन पर सोहत।

नित प्रति विविध बयार बहत जहं मन्द मन्द गीत।

लेत पराग प्रसून हर्ष हिय भरि मलिन्द अति।

कह कवि विचार अमरेश इमि सुषमा ललित ललाम जहं।

निज दल समेत तुर्कान मिलि कियो शाह विश्राम तहं।

मूल्यांकन:

श्री अमरसिंह 'अमरेश' वीर रस के कवि है। ओजपूर्ण कवि की रचनायें पाठक के मन में अपना प्रभाव छोड़ने में समर्थ हैं।आशु कवि श्री अमरेश जी को हिंदी भाषा का अच्छा ज्ञान है।, अपनी रचनाओं में ओजपूर्ण सुंदर शब्दों का चयन उनके काव्य कौशल का प्रमाण है। कवि का योगदान प्रशंसनीय है।

तहसील मौदहा

﴾1﴿ श्री सुन्दरलाल भार्गवः

जीवन परिचयः

श्री सुन्दरलाल भार्गव का जन्म ग्राम खण्डेह ﴾मौदहा﴿ में संवत 1984 में एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन में ही इनके माता पिता का स्वर्गवास हो गया था। इस प्रकार इनका जीवन संघर्ष बाल्यकाल से ही प्रारंभ हो गया था। इन्होंने एम0 ए0 ﴾हिंदी﴿ तक शिक्षा प्राप्त की तथा एच0 टी0सी0 किया तथा अध्यापन कार्य प्रारंभ किया। संघर्षमय जीवन होते हुये भी सतत प्रगति के पथ पर चलना कवि का ध्येय रहा है।

काव्य कृतियांः

इनकी दो काव्य कृतियां प्रकाशित हैं- ﴾1﴿ जय काली मां, तथा ﴾2﴿ प्रभु देख रहे हैं। इनकी अप्रकाशित कृतियों में ﴾1﴿ दानव दहेज ﴾2﴿ कर्मवाद ﴾3﴿ वाणी का महत्व ﴾4﴿ समय का महत्व ﴾5﴿ पैसे का महत्व प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त अन्य फुटकर रचनायें भी हैं। इनकी कुछ रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

﴾1﴿

﴾ आज का समाज ﴿

﴾1﴿ आज का समाज प्रगति का विरोधी, अकमर्ण्यता का आराधक
स्पर्धा का अवरोधक ईर्ष्या का पुजारी बन गया है।

﴾2﴿ दुर्गुणों का श्रोता, व्यसनों का अनन्य भक्त
निन्दा का समर्थक औ विवाद का भण्डारी बन गया है।

﴾3﴿ चाटुकारिता में चतुर संकीणता में सर्वश्रेष्ठ
स्वार्थ साधना का आभारी बन गया है।

(4) सत्यता में कष्ट, स्पष्टता असहनीय है
आडम्बर में अग्रणी श्रंगार और भय में नर से नारी बन गया है।

(5) सिद्धान्त के राज मार्ग को त्याग कर विलासिता की पगडंडियों में भटक रहा है
वहीं तक कदम बढ़ाता है जहां तक द्रव्य का आलोक है
हर मानव को स्वार्थ की कसौटी में कस रहा है इसी से अटक रहा है।

(6) कर्तव्य से कोसों दूर वाणी में सन्त ज्ञानेश्वर से आगे
इसी से न तो भौतिक वाद में सफल है न आध्यात्मवाद में
दोनों के बीच राजा त्रिशंकु की तरह लटक रहा है।

(2)

(दानव दहेज)

(1) कितनी हुई सभायें हैं कितने हुये विचार विमर्श
फिर भी इस दानव दहेज का क्या कुछ है निकला निष्कर्ष

(2) इस दानव दहेज ने जग में कैसा डाला डेरा है
कन्या भी ले पैसा भी ले ऐसे मिले लुटेरा है

(3) दुश्मन बन जाते दमाद कन्या की करे पिटाई
यदि विवाह के बाद कहीं वह बाकी रकम न पाई।
संबंधी वह शत्रु बन गये यदि सामान अधूरा हो
कन्या को दे विविध यातना किसी तरह से पूरा हो।
धन लोलुप इन मक्कारों को,
पैसा दिया जाय यदि कम
तो कहते लड़का पढ़ता है,
शादी नहीं करेंगे हम।

(3)

(दहेज की मांग)

सजने दो सिंदूर मांग में बजने दो शहनाई
अर्थ नहीं सब कुछ जीवन में मानवता है भाई।

(1) शादी के पहिले ही मन में है लोलुपता का दर्पण
कन्या वाले कर सकते हैं कितना द्रव्य समर्पण।

पहिले तो कन्या चलती थी, पीछे चलता था उपहार
अब पीछे कन्या चलती है, पहिले है दहेज की मार।
यदि दहेज में कमी रह गई, असफल हुई सगाई, सजने दो सिंदूर . . . .

(2) पहिले धन का श्रेय नहीं था, श्रेय यही था कन्यादान
अब लड़के क्रय वस्तु बन गये और बन गया द्रव्य महान।
कन्या की सौन्दर्यशीलता शिक्षा का कुछ मान नहीं
स्वागत, शिष्टाचार सभ्यता का कोई सम्मान नहीं।
पैसे का ही भाव रह गया पैसे की पहुनाई। सजने दो सिन्दूर मांग पर . . . .

(3) इस दहेज के कारण ही दर दर ठोकरखाते हैं
मानवता का मूल्य यही है पैसे को अपनाते हैं।
जब खिलती है कलियों में यौवन बसन्त लाली।
किन्तु मांग के कारण ही यह मांग रह गई खाली।
लाखों ललनायें बैठीहैंबीत रही तरूणाई। सजने दो सिंदूर मांग पर . . . .

(4) कितनी प्रतिभाओं का जीवन इसके कारण रूक जाता है
चाहे कितना धनी पुरूष हो, इस दहेज से झुक जाता है
निर्धन कन्या वालों से बनता है धनी भिखारी
अपने को महान कहता है यह अचरज है भारी।
फिर भी लाज स्वजाति प्रेम की करते सभी बड़ाई । सजने को सिंदूर मांग पर . . .
पर बजने दो शहनाई, अर्थ नहीं सब कुछ जीवन।

(4)

दोहा (1) सुन्दर यह संसार में पैसा है सरताज।
पैसे की ही प्रीति है, पैसे का ही राज।

(2) पैसा यदि है पास में, तो भोगो सुख चैन
नहीं दीन ह्वै जगत में, रोवोगे दिन रैन।

(3) खर्च हमेशा कीजिये मन में सोच विचार।
जितनी चादर पास हो, उतने पैर पसार।

(4) सार वस्तु दो ही लखो एक रूपया एक राम
राम देत निज धाम को रूपया से सब काम

(5) दुनिया बकबे में चतुर, करबे में है क्रूर।
कार्य सिद्धि नहिं कर सके, कहते हम मजबूर।

(6) बहु विवाद से मौन भल, निन्दा से चुपचाप।
पर उपदेशक न बने, स्वयं सुधारे आप।

(7) पर दुख देखो सुखी भे, पर सुख देखो रूष्ट
भला न काहू को चहे, ताको जाने दुष्ट।

(5)

मुक्तक

(1) कौन कितना दुखी है संसार में,
आ गई कितनी कमी है प्यार में।
आज मैं आदर्श भारत से कहूंगा,
नाव नैतिकता की डूबी आज है मंझधार में।

(2) जीने की अब आस नहीं है,
अपना कोई खास नहीं है।
कौन दगा कब किसको देगा,
इसका भी विश्वास नहीं है।

(3) स्वार्थ साधना ही मानव के जीवन का आधार बन गई।
मानव की मानवता केवल शिष्टाचार बन बई।
पद और पैसे की लोलुपता भारत का व्यापार बन गई
केवल तुच्छ वासना ही अब नवयुवकों का प्यार बन गई।

(4) वहुत देखा जमाने हम इतना सोच पाये हैं,
जिन्हें खुशियांप्रभू ने दी उन्होंने दुख उठाये हैं।
अंधेरी रात को लखकर कभी यह भूल न जाना,
चांदनी रात के भी दिन बहुत नजदीक आये हैं।

(5) कंचन को जो कांच बना दे, झूठे को जो सांच बना दे।
ऐसा कोई काम नहीं है जिसको न यह लांच बना दे।

मूल्यांकन:

श्री सुन्दरलाल भार्गव जनपद के एक अच्छे कवि हैं। समाज में फैली हुई कुरीतियों तथा आर्थिक एवं सामाजिक विषमताओं के प्रति कवि के मन में गहरी पीड़ा है। इन्हीं असमानताओं एवं कुरीतियों के विरूद्ध कवि ने लेखनी चलाई है। शब्दों का सुंदर चयन रचनाओं को जीवन्तता प्रदान करता है। इनकी कवितायें सरल शैली में लिखी गई एवं प्रवाह युक्त हैं। कवि को भाषा का अच्छा ज्ञान प्रतीत होता है। कवितायें लालित्य एवं माधुर्य के गुणों से युक्त हैं। कवि का प्रयास अच्छा है।

(2) श्री बृजेश नारायण सक्सेना :

जीवन परिचय:

श्री बृजेश नारायण सक्सेना ' बृजेश ' का जन्म ग्राम इमिलिया (मौदहा) में 1.10.1952 को एक कायस्थ कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री शिवरतन लाल सक्सेना है। बी0ए0, एल0एल0 बी0 तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इन्होंने वकालत का पेशा अपनाया। वर्तमान में ये छत्रसाल ग्रामीण बैंक के पीछे - मौदहा में निवास करते हैं।

काव्यकृतियां:

इनका अभी तक कोई काव्य संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। किन्तु इनके गीत कानपुर से प्रकाशित ' समग्र चेतना ' एवं अन्य पत्र/ पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। इनका एक काव्य संग्रह ' नयी पीढ़ी का गीत ' शीघ्र प्रकाशित होने वाला है जिसमें इनके अतिरिक्त जनपद के अन्य कवियों की रचनायें भी हैं। इन्होंने अभी तक लगभग 125 गीत लिखे हैं। ये मुख्य रूप से गीतकार ही हैं वैसे छन्द, सवैया व मुक्तक भी इन्होंने लिखे हैं। ये राष्ट्रीय, श्रृंगारिक व व्यंगपूर्ण रचनायें लिखते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

॥1॥

मुक्तक

आज समन्दर शान्त हो गये,

गांव गली में ज्वार है

और जेब में बन्द हो गया,

लोगों का संसार है।

सार्वजनिक जीवन में अब तो

केवल भ्रष्टाचार है।

जो जितनी ऊंची गद्दी में

उतना ही गद्दार है।

आज झूठ को नमन दे रहे हैं हम

और सत्य को तपन दे रहे हैं हम

मांगने से जिन्दगी को भीख न मिले

और मौत को रतन दे रहे हैं हम।

॥2॥

जानते हुये भी सत्य, झूठ का ही पक्ष करें,

आदतों से कैसे हैं घिनौने लोग हो गये।

दर्शन और चिन्तन की बातें बड़ी लम्बी चौड़ी,

आचरण से हैं किन्तु **बौने** लोग हो गये।

ऊपर से मीठे मीठे रस भरे, मद भरे,

अन्दर से किन्तु हैं अलौने लोग हो गये

कैसी मजबूरी ज्ञानवान, बुद्धिमान लोग,

बुद्धुओं को कहते हैं सलौने लोग हो गये।

॥3॥

॥ श्रंगार वियोग ॥

मैंने तुमको चाहा मन से है प्यार किया,

बस एक बात मैं केवल तुमसे कहता हूं।

है चलन यहां व्यवहारों का लेना देना

तुम मेरा प्यार मुझे ही बस लौटा देना।

मैंने यदि तुमको फूलों की घाटी दी हो

इक बिरवा देना उससे मन बहला लूंगा।

कुछ भी करना, घाटी पर है अधिकार तुम्हें

बस एक बात मैं केवल तुमसे कहता हूं

चाहे जो कुछ करना बस इतना न करना

मरूथल को तुम न हंसने का मौका देना।

आराध्य देवता जैसा तुमको माना है,

मेरे छोटे आराधन को अपना लेना।

मैंने यथार्थ की यदि तुमको दुनिया दी हो,

मृग-तृष्णा भरा झूठा मूठा सपना देना।

प्रिय रटी तुम्हारे नामों की मालायें हैं

और तपस्वी जैसा समय बिताया है।

तुम कुछ कहो लकीरें माथे की कहतीं

आदर्शों के दावानल में तपते रहना।

तुम राह गमन की चुनो पूर्ण स्वातन्त्र्य तुम्हें

बस एक बात मैं, केवल तुमसे कहता हूं।

पल रहा तुम्हारे अन्दर मेरा प्रेम पुण्य

तुम मेरे भोले प्यार को न भटका देना।

(4)

(संदली मन)

संदली मन आजकल घायल हुआ।

चांदनी की छांव में तपता हुआ।

नशे में पूनम यहां देखी गयी

तम के कटि भुजपाश को डाले हुये।

प्रेम के प्यासे अधर ने छू लिया

कामिनी के गाल में छाले हुये।

भूल लय कर्कश हुआ, स्वर आजकल
रागिनी के राग को छलता हुआ।

अनुबंध की दीवाल बालू की हुई
जिन्दगी की हाट में घाटे हुये
औपचारिकता की नागिन डस गई
प्यार के संबंध भी कांटे हुये

वासना ने यों किया कुछ आजकल
भामिनी का भाग्य है गलता हुआ

चींटियों के अंश में फसलें पड़ी
जमींदारी इस तरह बांटी गई
बुद्धिमानों को यहां ऊसर मिले
अक्ल मेरी इसलिये मारी गई।

छांह के पौधों को गली आजकल
दे रहा है पीत रवि ढलता हुआ।

(5)

(छन्द गीत)

मछुवारे हैं जाल बिखेरे
संसद में बस गये लुटेरे
कौवों की बकवास हमारे देश में
सारा जीवन संत्रास हमारे देश में

कवि लेखकों , विचारकों से कोई आशा नहीं,
बड़े बड़े लोग आज चुटकुले सुनाते हैं
अर्थ के लिये अनर्थ बातें करते हैं व्यर्थ,
व्यर्थ में ही हंसते हैं हमको हंसाते हैं
महा प्राण मैथिली सूर औ कबीर आज,
या तो हैं बीमार या कि भूखों मर जाते हैं।
मान सम्मान सब तुक्कड़ों के पक्ष में है
ईलू ईलू गाते हैं वे आइसक्रीम खाते हैं।

गांधी पर भी प्रश्न चिन्ह है तुलसी का उपहास हमारे देश में
सारा जीवन संत्रास हमारे देश में।

नेता धर्म जाति उग्रवाद को बढ़ावा देंगे,
भाई भाई से बड़ी लड़ाइयां लड़ायेंगे
निर अपराध भोला आदमी मरेगा यहां,
आदमी की हड्डियों से रोटियां पकायेंगे।
आई-एस-आई वाले घर में ही बैठेंगे
औ दावतें उड़ाके बहू बेटियां भगायेंगे।
वह दिन दूर नहीं अपनी आंख देखियेगा,
मानसिंह दुश्मनों की पालकी उठायेंगे।
सारा वातावरण है गूंगा वाणी को वनवास हमारे देश में
सारा जीवन संत्रास हमारे देश में।

× × × × × × × × × × ×

मूल्यांकन:

श्री बृजेश नारायण सक्सेना की गिनती जनपद के अच्छे गीतकारों में की जाती है। वर्तमान सामाजिक विषमताओं पर चुटीले व्यंग लिखने में ये कुशल हैं। इनकी रचनायें सरस एवं प्रवाह पूर्ण हैं। शब्दों के सुन्दर चयन से रचनायें लालित्य एवं माधुर्य के गुणों से युक्त हैं। श्रंगार-वियोग तथा राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर समान कुशलता के साथ इन्होंने लेखनी चलाई है। कवि का हिन्दी काव्य साहित्य को किया जा रहा योगदान सराहनीय है।

(3) श्री कामता प्रसाद गुप्त :

जीवन परिचय:

श्री कामताप्रसाद गुप्त ' काका ' का जन्म सन् 1940 ई0 में ग्राम मटौंद (मौदहा) में एक वैश्य कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गज्जूप्रसाद तथा माता का नाम श्रीमती रूकमणीबाई था। इनकी शिक्षा केवल प्राइमरी तक ही है वर्तमान समय में ये मौदहा में रहकर चाय की दुकान चलाते हैं।

काव्य कृतियां:

ये हास्य रस के कवि हैं, इनका कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। भक्ति परक गीत एवं राष्ट्रीय रचनायें भी इन्होंने की हैं। इनके द्वारा लिखा काव्य साहित्य कम है किन्तु अब तक इनके द्वारा जो रचनायें की गई हैं वे हास्य रस की अच्छी रचनायें हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

सुन्दर श्याम सलोनो सखी,
सुन सुन्दर तान सुनावत है।
मनमोहन, मोहन मोह लियो,
मन मोहन मोहन गावत है।
ललिता ने कही ललि तान सुनो,
लला तान में तान मिलावत है।
ग्वालन ग्वालिन संग लिये,
यमुना तट रास रचावत है।

[२]

बारी ससुरारी क्या दशा है हमारी,
चढ़ी सारी पै सारी मोहे सारी पहिनाती हैं।
सारे के सारे इशारे करें बार बार,
सरहज सर पकर सर पें बंदी लगाती हैं
नारी इक नारी के ना री ना री कहत कहत,
नारी धर पकर मोंह चुरिया पहनाती हैं।
नारी हमारी नर नारी के बीच हंसे,
नारी नर रूप देख सखियां किलकाती हैं।
बाजी करती रंगबाजी, बाजी हंसबे में बाजी,
बाजी कहतीं, जीजा जी तुम्हें जिज्जी बुलाती हैं।
भंगकी तरंगन में काका मत मार गयी,
रगड़ गुलाल लाल गालन लगाती हैं।

गोरी गोरी गोरी ससुर की छोरी,

डारे रंग झोरी होरी होरी चिल्लाती हैं।

(3)

दोहे

बड़े बनो ऐसे बनो जैसे पेड़ खजूर,

आसन दे स्वागत करे, करे गंदगी दूर।

पति देव जो भास्कर, पत्नी मिली मयंक।

जीवन बीता कलह में, ज्यों छत्तिस को अंक।

दुल्हन सोलह साल की दूल्हा सोलह साल।

कालहि लाये ब्याह के, गये काल के गाल।

(4)

(दहेज पर व्यंग)

एक अस्सी वर्षीय वृद्ध पिता,

अपने चालीस वर्षीय बेटे से

लिपट लिपट कर रो रहा था

सारा जन समूह इकट्ठा हो रहा था

एक लाख नकद, फ्रिज, टी0वी0 स्कूटर गोदरेज

हाय रे दहेज लड़का हो गया ओवर एज

उन्हें देने की मजबूरी

उन्हें लेने की मजबूरी

न लड़के की मांग पूरी

न लड़की की मांग पूरी

आया न आज तक जो देने को कह गया

गंगाराम कुआंरा रह गया।

(5)

खाय के भंग चलै जस पंग,

करै बहु तंग लला बहुनी को

रोज गटा गट दारू पिये,

अरू चाहें नहीं कबहूं दधि घी को

बारहु मास निवास भखौ

भलमासहुं मे भजै शिवजी को

घरनी को मिलो वर नीको नहीं,

वरू रोक थकी अपने वर जी को।

(6)

(व्यंग लक्ष्मी जी पर)

कामत काका आज मनायें, कैसे हमें दिवाली
कैसे लक्ष्मी पूजन होगा, जेब पड़ी है खाली
बीच भंवर में कवि कामत की अटकी जीवन नैया
उल्लू के वाहन में आ जा, मोरी लक्ष्मी मैया।
मैं चौंका, चौका चौका में लिये हाथ में चौका
तेरे हाथों में है मइया, मेरी जीवन नौका
तू चाहे तो क्षण में ला दे मेरे भाग्य का पत्ता
मेरे हाथों दुख की तिक्की, तेरे हाथों सत्ता
कैसे घी के दीप जलाऊं, सवाव सो को मइया।
अर्पित है तेरी पूजा में पान बतासा लइया।
मां अम्बे जगदम्बे भर दे घर घर में खुशियाली
सुखमय हो सारा जन जीवन, मंगलमय दीवाली।

(7)

(राष्ट्रीय गीत)

भारत मां को नमन करो, घर घर झण्डा फहराओ रे
आज दिवस छब्बीस जनवरी, गीत खुशी के गाओ रे

याद करो झांसी की रानी, भगत सिंह, शेखर सेनानी
वीर जवाहर लाल बहादुर, औ राणा की लहू लुहानी
बिस्मिल, शिवा, सुभाष की सानी, आशाराम हमीद निशानी
प्राण निछावर किये देश पर साक्षी है गंगा का पानी

बापू जी की महा शक्ति पर श्रद्धा सुमन चढ़ाओ रे
आज दिवस . . . . .

बच्चो पढ़ो लिखो श्रम करके, कसरत कर बलवान बनो
माता पिता गुरूजन का तुम, उठ कर के सम्मान करो
छुआछूत को दूर भगाओ हरिजन का उद्धार करो
हिल मिल करके रहना सीखो सबसे सच्चा प्यार करो
दीन दुखी को गले लगाकर प्रेम के दीप जलाओ रे
आज दिवस . . . . . .

भारत मां के वीर बहादुर, मिलकर कदम बढ़ाना है
सत्य अहिंसा का बच्चों को घर घर पाठ पढ़ाना है
अंधकार को दूर भगाओ, नयी रोशनी लाओ रे
आज दिवस . . . . . .

मूल्यांकन:

श्री कामताप्रसाद गुप्त हास्य रस के एक अच्छे कवि हैं। यद्यपि उनके द्वारा की गई रचनाओं की संख्या अधिक नहीं है किंतु अपनी सीमित रचनाओं के द्वारा उन्होंने जन सामान्य पर जो छाप छोड़ी है उससे उनकी काव्य कुशलता का पता चलता हे। अपनी रचनाओं में यमक, व श्लेष अलंकारों का प्रयोग करके वे कविता में रोचकता पैदा करते हैं। आम बोल चाल में आने वाले शब्दों का प्रयोग ही ये अपनी कविताओं में करते हैं इनकी रचनाओं में माधुर्य का गुण विद्यमान है। संक्षेप में उन्हें हास्य रस का एक अच्छा कवि कहा जा सकता है।

[4] श्री रामेश्वर प्रसाद शुक्ल :

जीवन परिचय:

श्री रामेश्वरप्रसाद शुक्ल ' पतित ' का जन्म 14 जून सन् 1937 ई0 में मौदहा के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री महावीर प्रसाद शुक्ल तथा माता जी का नाम

श्रीमती रामरती देवी था। इनकी शिक्षा इण्टरमीडियेट अनुत्तीर्ण है। वर्तमान समय में ये मौदहा - रगौल (हमीरपुर) में निवास कर रहे हैं।

काव्य कृतियां:

इनका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। इनकी फुटकर रचनायें विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। ये व्यंग गीत, भक्ति परक गीत तथा राष्ट्रीय गीत लिखते हैं। लकवा रोग से पीड़ित होने के कारण अब इनका लेखान कार्य बाधित हो गया है। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

(अनात्रिक छन्द - मां सरस्वती पर)

सरसइ कमल चरन रज सर धर,
अभय रहत गह वचन परम वर
मम उर बस अब सरस शब्द झर
कहत रचत पद सकल अक्षय कर

(2)

गीत

हम भारत के सैनिक किसान,
हम भारत के वीर जवान
सभी क्षेत्र में करके सेवा,
रखेंगे माता का मान।
सत्य अहिंसा प्रेमपूर्वक
अविरल बढ़ते जायेंगे।
चक्र सुदर्शन धारण करके,
अरि का मस्तक लायेंगे।
जिस मिट्टी से हैं हम पैदा,
उसकी रखेंगे हम शान।
हम भारत . . . . .

एक सूत्र में बंधकर ध्वज दण्ड को सभी उठायेंगे
संविधान के रक्षक बन माता की लाज बचायेंगे
देश धर्म की बलिवेदी पर तन, मन, धन करते कुर्बान
हम भारत . . . . . .

शिक्षाविद्, वैज्ञानिक हों या हों व्यापारी वैद्य,
बाल वृद्ध और नर नारी सब रखें प्रेम अभेद्य
पंचशील, पंचवर्षीय अपना कर, करते नेहरू का सम्मान
हम भारत . . . . . .

(3)

समस्या पूर्ति

राम को खेलावत कौशिल्या रानी
सुर मुनि देव कोटि तेंतीसों, वेदहु मरम न जानी
शिव चतुरानन नारद मोहे, सती देख बौरानी
रूप अनूप नख शिख सुन्दर, शारद लख सकुचानी
सोई भगत वत्सल गोदी लै, कौशिल्या हुलसानी।
'पतित' महामूरख किम बरनै, नैन भये बिन बानी।

सौगन्ध राम की खाकर कहते मन्दिर वहीं बनायेंगे
बाबर के बर्बर चिन्हों को, मिलकर के सभी मिटायेंगे
राम भक्त बलिदानी सन्तों का मिल कौल चुकायेंगे
तन,मन,धन, सरबस अर्पण कर, मंदिर वहीं बनायेंगे।

(4)

बागवीर अगणित हम देखे
नभ से तारे लाने वाले
कर्मवीर कोई न पाया,
भय से त्राण दिलाने वाले।
कथनी करनी में अंतर कितना
बोलो भाषण देने वाले

बिल्ली की आहट पाकर के,

बिल में घुस जाने वालो

समय नहीं कुछ कहने का,

यदि साहस हो तो कुछ कह डालो

× × × × × × × × ×

(5)

दोहे

सप्तवार को याद रख, फिर कर जग व्यवहार।

शंका लघुशंका तजो, तब हो बेड़ा पार।

इतवार कहे इतवार कर, यह जीवन आधार।

इतवार गयो भ्रम में फंसो, हो गया बंटाढार।

सोमवार शुभ कर्म कर, शीतल स्वच्छ विचार।

सतपथ गह संतोष कर, सब धर्मो का सार।

मंगलवार मंगल करे, मंगल मोद मनाय

सकल अमंगल दूर हों, कर्म कर मन लाय।

मूल्यांकन:

श्री रामेश्वर प्रसाद शुक्ल जनपद के वरिष्ठ कवि हैं। इनके द्वारा की गई रचनाओं की संख्या तो अधिक है किन्तु रचनाओं में कहीं कहीं काव्य दोष भी मिलता है। रचनायें सरल शैली में लिखी गई हैं। किन्तु उनमें माधुर्य एवं लालित्य की कमी प्रतीत होती है। वैसे सामाजिक एवं राष्ट्रीय चिन्तन प्रशंसनीय है। कवि द्वारा हिन्दी काव्य साहित्य को महत्वपूर्ण योगदान किया गया है।

(5) श्री लक्ष्मीनारायण आनन्द :

जीवन परिचय:

श्री लक्ष्मीनारायण आनन्द का जन्म वैशाख कृष्ण पक्ष छठवीं सं0 1976 को मौदहा (हमीरपुर) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री सेठ छोटेलाल तथा माताजी का नाम चन्दन देवी था।

ये पांच भाई तथा चार बहिनें थे। श्री आनन्द जी अपने भाईयों में चौथे क्रम के थे। इनकी शिक्षा एम0 ए0 (हिन्दी) बी0 काम0 व एल0टी0 है। ये आपात काल की अवधि में 17 अगस्त 1975 से 7 फरवरी 1977 तक जेल में रहे। ये नेशनल इण्टर कालेज मौदहा में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत रहे। अवकाश प्राप्ति के बाद भी विद्यालय परिसर के आवास में ही निवास करते रहे। इनकी मृत्यु सन् 1997 ई0 में हुई।

काव्य कृतियां:

ये जनपद के प्रख्यात कवि, समाजसेवी एवं लोकप्रिय प्रधानाचार्य थे। इनके द्वारा सृजित काव्य साहित्य प्रचुर मात्रा में अप्रकाशित रूप में उपलब्ध है। इन्होंने लगभग 500उर्दू रूबाइयां भी लिखी हैं। इनका ' प्रसंग पारिजात ' का 108 पदों का पद्यानुवाद भी अप्रकरशित है लगभग एक सौ गीत और इतनी ही गजलें अप्रकाशित हैं। इनके द्वारा रचित लगभग चार हजार पंक्तियों का महादेवी वर्मा का प्रशस्ति काव्य भी अप्रकाशित रूप में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त 151दोहों की ' परमार्थ दोहावली ' तथा महाकवि गालिब, इकबाल, अनीस, असगर इत्यादि उर्दू शायरों के प्रशस्ति काव्य भी अप्रकाशित हैं। इनका लिखा नाटक 1857 की क्रान्ति भी अप्रकाशित है। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

एक एक गुल इस गुलशन के बीती बीत बताते हैं।
भूले भटके राही को, मंजिल की राह दिखाते हैं।
वे जो कहते हम सब सुनते अब आंखें भर लाते हैं।
हम हमराही बने न उनके, सोच सोच पछताते हैं।

ऐसे खिले कि तारीखों ने उनकी गूंथी जयमाला,
जिनकी सकल साधना से क्षितिजों में छाया उजियाला।
युग युग की काई काटी है, हटा हटा द्रग के जाला।
वाल्मीकि कवि व्यास उन्हीं की हमको कथा सुनाते हैं।

जीर्ण जगत बेसुध सोया है, उसे दे रहे हैं थपकी
उनका शील संयमन अनुपम हिम्मत बस उनके बस की
कंधे देकर नाव उठाते जो रेती में हैं अटकी
जड़ता के जंजाल काट नूतन धारा में लाते हैं।

(3)

जाग उठा अब जी दुनिया से, फिर उसका यों सोना क्या
ज्ञान दग्ध जब बीज हो गये, तब उनका फिर बोना क्या
प्राप्त हुये संपूर्ण भाव अन्तस्थल से खोना क्या
निर्मल आत्मा निष्कलंक को जल से उसको धोना क्या
झर झर अश्रु सदा झरते हैं इसे समझते रोना क्या
मैं शाश्वत हूं सदा निरंतर, होना क्या अनहोना क्या।

(3)

प्यार की गहराइयों में,
डुबकियां लेकर सुघर स्नान कर लो।
स्मरण कर शारदा संपुट स्वरों से,
नृत्य गीतों का सरस संधान कर लो।
वृत्तियों को मौनक र उर स्वच्छ कर लो,
तापत्रय की मुक्ति का संज्ञान कर लो।
सूक्ष्म हो सौन्दर्य का अंकन तुम्हारा,
प्रेमरस से सिक्त सब परिधान कर लो
नित नया आलोक तब मिलता रहेगा,
भव्य भावों का हृदय आगार भर लो
मन द्रगोंके पट खुलेंगे शीघ्र तेरे,
उक्तियों से शैलियां निर्माण कर लो।
हित यही साहित्य का हो लक्ष्य स्थिर
साधना संकल्प के अरमान भर लो।
युग कलुष पीना पड़ेगा,
संकल्प शिव अभियान उर लो।
सुरभि परिपूरित दिशायें खिल उठेंगी,
व्यास तुलसी सूर सा यशगान कर लो।

(4)

(4)

गीत

पंछी सुबुक सुबुक कर मत रो अभी बहुत है रात रे,

सावधान, रह कर जगना है कहीं न होवे घात रे।

तम से घिरा हुआ है उपवन,

बंद सींकचों में है जीवन।

नद के एक किनारे रोदन।

करे दूसरा तट प्रतिरोदन।

विरह वहि की ज्वाला जलती धूं धूं करती बात रे।

माली जिसको समझ रहे थे

जिस पर माला चढ़ा रहे थे।

जिसे समझ हित चिन्तक अपना

निद्रा से हम जगा रहे थे

उसने खंजर से पर काटे, दे दे घूंसा लात रे

डाल डाल बैठे उलूक हैं

इनके राक्षस से सुलूक हैं

भोंक रहे हैं पागल कुत्ते

गृहिणी गृहपति सभी मूक हैं

अपना आज विराना बनकर करता है उत्पात रे

बनजारिन कहती प्रियतम से

चलो शीघ्र निकलें हम वन से

संघर्ष से बांस जल रहे

लपट निकलती है तन मन से

नहीं चैन हमको वन में भी कैसी बिगड़ी बात रे

क्रान्ति मार्ग में पांव बढ़ाया

धर्मराज ने दांव लगाया

शकुनी ने पांसे उल्टे हैं

छल छद्मों का जाल बिछाया

दुःशासन द्रुपदा से अपना भूल गया है नात रे।

(5)

गंगा माई हम छौने तेरे बारे

बड़ी दूर से पैदल चलकर आये हम अनियारे

खील बताशे हम लाये हैं लाये गरी छुहारे

लो मइया तुलसीदल हमसे, नयनों से जल धारे

चन्दन का उबटन हमको दो हमें वस्त्र दो न्यारे

चन्दा से हम चमकें जग में जन मन के उजियारे

बुध पियूष मधुर शीतल जल अमिय धार रतनारे

मद मत्सर अभिमान काम खल बल को देत बहारे

आत्म चारू चिन्तामणि ध्यावे पुलकित चित्त निहारे

तेरी कृपा मूक जड़ बोलें ब्रह्म विचार विचारे

भक्त वत्सला तू हरि रूपा गिन गिन अधम उधारे

तब दर्शन ने अंधी अंधों के जनम जनम निस्तारे

त्रिविध ताप हरती रहती मां भव भय के सब भारे

भ्रम के फन्द काटती रहती गंगा नाम उचारें।

(6)

मेरे गीत

मैं गीत नहीं गाता हूं।

कुछ मन ही बहलाता हूं।

खिल जाते हैं शब्दों के गुल

जब इन पर झुंझलाता हूं

मैं इसे लोरियां देता

देता हूं चंद्र खिलौना

जब पवन झुलाने लगता

तंद्रिल स्वप्नों के छौना

कम्पित अधरों से अस्फुट

कुछ शब्द निस्सरित होते

तब मेरे द्रग कोरों से

अश्रु विकल हो कहते
लेकर मसि का कागज
मैं इन्हें मांजता रहता
इनकी व्यापक गतियों से
मैं वामन से डग भरता।

(7)

(वही पुरूष वही पुरूष है साथियो)

वही पुरूष , वही पुरूष है साथियो
कि जिसकी दो हथेलियों में यह धरा समा सके
कि जिसकी क्रान्ति ज्वाल को न कोई भी दबा सके
कि जिसके दो डगों से नपे यह जमीन आसमान
चन्द्र सूर्य आरती करें, हो ऐसी आन मान
वही पुरूष वही पुरूष है साथियो,
वह जिस तरफ चला कि शाह राह एक बन गई
वह इस तरह बढ़ा कि भ्रान्तियां सभी सिमट गईं
वह इस तरह जिया कि जिन्दगी युगों की बन गई
वह इस तरह मिटा कि मौत उस पै आके मिट गई
वही पुरूष वही पुरूष है साथियो,
क्षमा में जो धरा सदृश जो सिंधु सम उदार है
कि जिसमें तेज सत्य का भरा हुआ अपार है
जो है प्रबुद्ध विश्व को निरख रहा असार है
जो मुस्कराते चल रहा है तेज ज्ञान धार है।
वही पुरूष वही पुरूष है साथियो
कि जिसके तेज गाम से लजा रही है बिजलियां
कि जिसके नाम मात्र से वहम की फटती बदलियां
कि जिसके बाजुओं में जोश की भरी हों नदियां
कि जिसकी एक हांक से खिसक रही हों गद्दियां

वही पुरूष वही पुरूष है साथियो

न भय कभी भी हो जरा मुकाबले में काल हो

कि जिसका शील शिष्टता से जगमगाता भाल हो

कि जिसकी मीठी बोलियों से जिन्दगी निहाल हो

कि जिसमें न्याय नीति की चमक रही मशाल हो

वही पुरूष वही पुरूष है साथियो।

(4)

(अन्तराल का अगम सिन्धु)

अन्तराल के अगम सिन्धु में अगणित मेरे हीरे

किसको खोजूं किसको ढूंढूं युग युग भरे जखीरे

तन्द्रिल पलकों में स्वप्नों की मधु सरिता इठलाये।

बजती रहती गति अबाध प्रिय जीवन जमुना तीरे।

यहां तृप्ति कविता राधा की है चुलबुली सहेली

यहां उतरता लोक लाज का कंगन धीरे धीरे।

भरत खण्ड की शिला खण्ड पर योगी अलख जगाये

डमरू को डिमडिम ध्वनियों से निःसृत शब्द प्रवीरे।

शाश्वत शब्दों की सन्तों ने यहां बहाई सरिता।

नरसी को करताल बज रही, नामदेव मंजीरे।

चिश्ती अरूण शिखा भक्ती का नव संदेश सुनाया

और औलिया इश्क इलाही की करता तकरीरें।

तुलसी तरूण अरूण वारिज की लखाता अनुपम झांकी।

रामसीय चरितामृत धारा अपने आप बही रे।

रामा और शिवा के स्वर में स्वतंत्रता का सौदा

प्रबल पराक्रम की सुगन्धि से देश अवनि महकी रे।

राष्ट्रोत्यान प्रभात काल में दयानन्द ऋषि आये

गायत्री के शुभालोक में काली रात कटी रे

गांधी जन स्वतंत्रता गंगा भागीरथ वन आये

शील अहिंसा के पंखों से सत्य अग्नि दहकी रे।

मूल्यांकनः

स्व0 लक्ष्मीनारायण ' आनन्द ' का हिन्दी काव्य के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है। उनकी कवितायें काव्य दोष से मुक्त तथा माधुर्य एवं लालित्य के गुणों से युक्त हैं। कवि को हिन्दी भाषा का गहरा ज्ञान था। सुन्दर सरल शब्दों के चयन से कवितायें रोचकता के गुण से ओत प्रोत हैं रचनायें प्रवाहपूर्ण हैं। आध्यात्मिक तथा राष्ट्रीय विषय कवि ने प्रमुखाता से अपनी रचनाओं में लिये हैं। इनके अप्रकाशित साहित्य का राष्ट्र एवं हिंदी काव्य साहित्य के हित में प्रकाशन कराया जाना चाहिये। कवि द्वारा हिन्दी काव्य साहित्य की जो सेवा की गई है वह सराहनीय है।

(6) श्री शिवनारायण शिवहरे :

जीवन परिचयः

श्री शिवनारायण शिवहरे का जन्म उपरौंस - मौदहा में संवत 1992 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री देवीदीन था। इनकी शिक्षा केवल प्राथमिक स्तर की है। वर्तमान समय में ये मौदहा में ही रहते हैं।

काव्य कृतियां:

ये अच्छे कवि हैं मुख्य रूप से ये छन्द लिखते हैं। इनकी रचनायें अप्रकाशित हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

सावन में कहि आवन को सखि प्यारे पिया परदेश सिधाये
सावन बीत औ भादौं बीत कुआंरहु बीतिउ आस लगाये।
दीपन को त्यौहार गयो, खुद आये न स्वामी संदेशा पठाये
सिसयात सिसर ऋतु बीत गई, सखि आयी बसन्त पे कन्त न आये।

(2)

मोरे मुंडेरे से काग जा भाग तैं, प्यारे पिया का संदेशा न लाये
तैं कर्कश स्वर से मचावस शोर, मैं भोर रहि तैं बैठी हों आस लगाये।
मन पछितात न जात कछू कहि, सौतिन कौन उन्हें बिलमाये।
हेरत बाट रहौं निशि बासर बीते बसन्त पे कन्त न आये।

(3)

बल विक्रम खोय चुके अपना सपना सा लगे इतिहास हमें
सुचि शौर्य कथा बल वीरों की, उस पे न रहा विश्वास हमें
सत्संग सुधा रस पान करें नहिं मिलता कभी अवकाश हमें
बस हास विलास में मस्त रहे, अरू भाया सदा उपहास हमें।

(4)

(रानी लक्ष्मीबाई के प्रति)

धुपकार नगारन की गमकी, जुमकी जमधार भयानक भारी।
निज दत्तक पुत्र को पीठी में बांधि, दोउ कर रानी ने तेग संवारी
गोलिन की बौछारन में झट कूद परी कर अश्व सवारी।
अबला से बनी सबला रण में, रिपु सैन्य सराहत पौरूष भारी।

(5)

धर्म की आड़ ले सांड़ दो लड़ रहे,
छोटे पौधो का होना है निश्चय पतन
शांति सद्भाव को ताक में रख दिया
द्वेष की ज्वाल में जल रहा है चमन
स्वार्थ की सर्प शासन के सन्मुख डटा
कारगर हो न सकता है कोई जतन
शिव हृदय से करो दूर आक्रोश को,
फिर विभाजित न हो जिसमें अपना वतन।

(6)

है दानवी प्रकृति का प्रकोप आज देश में
सो धर्म की धरा का मां कलेश आय तार दे

मां दुर्दशा तो देख धर्म औ समाज की,

ले राख लाज देश की दशा को आ सुधार दे।

विलीन होत जात, धर्म सूर्य अंधकार में

करि के कृपा की कोर, घोर तम निशा निवार दे।

भूमि भार टारती रही हो आप बार बार,

एक बार अम्ब आय भूमि भार तार दे।

(7)

एकता पर

ज्यों भारत हिंदुस्थान, इण्डिया, नाम एक स्थान के।

इसी तरह से खुदा, गौड, इत्यादि नाम भगवान के

प्रीत, प्रतीत, नीति अरू निष्ठा, लक्षण व्यक्ति महान के

क्रोधी, कुटिल, कलह प्रिय कामी, चिन्ह चुगल बेईमान के

गीता और कुरान बाईबिल भास ग्रन्थ भगवान के

इनके आदर्शों से हटकर उठे कदम शैतान के

रंग, स्वरूप, सुगन्ध अलग हैं प्रथक प्रयक पहिचान के

इतनइ समझ सके हैं हम सब पुष्प एक उद्यान के।

मूल्यांकन:

श्री शिवनारायण शिवहरे की उपर्युक्त रचनायें उनके एक अच्छे कवि होने का प्रमाण देती हैं। इन्होंने मुख्य रूप से छन्द ही लिखे हैं और उनकी संख्या भी बहुत अधिक नहीं है किन्तु सुन्दर एवं सरल शैली में लिखे गये उनके उपलब्ध छन्द सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने का महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। कवि ने प्राथमिक स्तर तक ही शिक्षा प्राप्त की है किन्तु उनकी रचनायें इस बात का प्रमाण हैं कि उन्होंने स्वाध्याय द्वारा हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है। इनकी रचनाओं में माधुर्य एवं लालित्य का गुण विद्यमान है। जनपद का एक अच्छा कवि इन्हें कहा जा सकता है।

(7) श्री छोटेलाल नामदेव :

जीवन परिचयः

श्री छोटेलाल नामदेव का जन्म संवत 1984 में मौदहा तहसील के अंतर्गत ग्राम कुनेहटा में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मथुराप्रसाद तथा माता का नाम श्रीमती रामाबाई था। इन्होंने केवल प्राथमिक स्तर तक की शिक्षा प्राप्त की है शेष ज्ञान इन्होंने स्वाध्याय द्वारा घर पर ही प्राप्त किया। ये धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं वर्तमान समय में मौदहा में ही निवास कर रहे हैं। चौदह वर्ष की उम्र से ही कवितायें लिख रहे हैं। इन्हें पिंगल का अच्छा ज्ञान है।

काव्य कृतियां:

धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण श्री नामदेव जी केवल धार्मिक रचनायें लिखते हैं। छन्द ही इन्होंने अधिकता में लिखे हैं। अब तक इनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं (1) प्रेम पथ - इसमें प्रेम से संबंधित लगभग एक सौ छन्द हैं, (2) प्रेम मय - इसमें लगभग 150 छन्द हैं तथा (3) बजरंग विनय - चौपाई व दोहों में लिखी कवि की यह एक उत्कृष्ट पुस्तक है जो हनुमान जी पर आधारित है। इसके अतिरिक्त कुछ अप्रकाशित पुस्तकें भी हैं जिनमें (1) ' श्रीराम विजय ' खण्ड काव्य प्रमुख है । यह दोहा, चौपाई व सोरठा में लिखी गई कवि की एक अच्छी पुस्तक है। ' विवेक वाटिका ' भी इन्होंने लिखी है । यह अप्रकाशित पुस्तक गद्य में है। इसके अतिरिक्त अन्य फुटकर रचनायें भी इनके पास अप्रकाशित रूप में हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

('श्रीराम विजय' खण्ड काव्य से)

राम ब्रह्म सचराचर नायक, कृपा सिन्धु सुंदर सब लायक।
नाम भजहि जो अति सुख मानी, तिनहिं देंय प्रभु सुगति भवानी।
सेवक बनकर प्रभु सेवकाई, तज छल कपट कठिन कुटलाई
तब प्रभु देय अभय वरदाना, भव भय भंजन कृपानिधाना।

नाम पुनीत वेद यश गावत, अधम से अधम जपत सुख पावत।
शरण गये पापी खल कामी, अभय करहिं प्रभु अंतरयामी।
× × × × × × × × × × ×
सुन्दर शिशु लख मुनि सुख पावा, लै सप्रेम तेहि हृदय लगावा।
राम नाम तेहि जनमत लयऊ, नाम राम बोला मुनि कहऊ।
नाम सुभग मुनि शोध धरावा, पुनि यज्ञापवति करावा।
पीत बसन सोहत तन बारे, भाल विशाल नयन रतनारे।
उर सोहत तुलसी की माला, सुन्दर मुख अति तिलक विशाला।
समय पाय मुनि ताहिं पढ़ावा, नीति शास्त्र शुभ कर्म सिखावा।
× × × × × × × × × × ×

सो० भये अवध तब जाय, चक्रवर्त दशरथ नृपति।
कह्यो शंभु समुझाय, पारवती प्रति हरष हिय।

उमा प्रेम लखा दीनदयाला, कहन लगे हरि कथा रसाला।
राम जन्म जेहिं कारण होई, कहौं बुझाय चरित मैं सोई।
भानुप्रताप नृपति रणधीरा, पालहिं प्रजहिं चतुर गंभीरा।
ताहि आय भूसुत भय दयऊ, मैं परिवार निशाचर भयऊ।
रावण कुंभकरण भट नाना, महावीर विजयी जग जाना।
करहिं अनीति निशाचर भारी, घोर पाप छायो मति भारी।
राम जन्म लीन्हो जिन हेतू, सो सब कथा कही वृषकेतू।
अवध भयो आनंद अपारा, सुखी भयो दशरथ परिवारा।

॥2॥

भोजन कहे भूख न जाई, पानी कहे पियासा
ब्रह्म कहै कोऊ ब्रह्म न होवै, छोटे बात विलासा
नृप कहे नृपति नहिं सोई, धन कहे धनवाना।
आतम ज्ञान बिना सब विरथा, पोथी पंथ पुराना
जान सके न जीव जतन बिन, जाग कहे न जागै
अनहद शब्द सुनाय परै ना, जब तक सुरति न लागै।

(3)

वैभव अपनो देखा के, छोटे मत इतराय
नौबत बाजत आज जो, कल नौबत बन जाय।
सहज सुलभ सब समय पर, धन, दारा, सुत यार
छोटे पलटत समय के, बहुरि लगत न वार
हरि सुमिरन में रूचि बढ़ै, जग प्रपंच जाय भूल
छोटे जबहीं जानिये भयो समय अनुकूल
छोटे हरदम सीखिये, प्रभु से प्रेम अटूट।
ना जानै कौने दिना, प्राण जावेंगे छूट।
अब हरिचर्चा है कहां, जग चर्चा दिन रात।
जग चर्चा के सामने, हरि चर्चा न सुहात।
चला शिकारी गांव से, जंगल करन शिकार।
छोटे बिनु हथियार के, स्यारन खाओ फार।

(4)

जो कोउ एक गह्यो सोइ पायो
सब तज एक सत्य कर मानियो तामे मनहिं लगायो
निश वासर जामे मन रातियो, दुई को नाम मिटायो
सदा रहत अलमस्त एक में, देवी देव भुलायो
सुमिरत निसंदेह नाम सोई दूजो जाहि न भायो
ऐसी मति गति निर्मल जाकी, सोई संत कहायो
समदरसी सोइ संत विवेकी, परम तत्व सोइ पायो
छोटे सदा एक मति आही, निज विचार मैं गायो।

(5)

जिन हरि जू सो प्रीति करी ना।
जिनको नाम परम पावन, अति सुमिरयो एक घरी ना।
चेत अचेत पाय मानुष तन मिलै या बहुरि घरी नाम
विषय विलास दास दासी सब, इनसे काज सरी ना
सब दुख को कारण है तृष्णा, तृष्णा कबहुं मरी ना।

गहु सतपंथ शरण सतगुरू की, ऐसो समय परी ना।

छोटे नाम बिना घर भीतर, अमृत बून्द झरी ना।

(6)

('विवेक वाटिका' से)

सन्तो सतगुरू शरण सही।

वेद पुराण शास्त्र श्रुति सबही एकै बात कही।

भव बंधन अति कठिन छूटवो बिन गुरू जतन नहीं

छूटत जबहिं द्वैत को फंदा जिन गुरू शरण गही

गुरू चरनन में निश दिन जिनकी लागी लगन रही।

गुरू की कृपा मोक्ष मुक्ता मणि छोटे सहज लही।

(7)

यह निश्चय कारण कौन कहै, केहि भांति बनी बिगरी करनी

छंद निबंध बिना कारण कवि कैसे, लिखे कविता मनहरनी।

करनी को बीज बनयो कारण सोई कारण लाग कथा जिन बरनी।

कह छोटे भगवंत भजन बिन अन्त वही करनी की तरनी।

(8)

(प्रकाशित पुस्तक 'श्री बजरंग विनय' से)

दो0 - तुमहि राम प्रिय प्राण सम, तुम पर श्री रघुवीर।

हरहु विघ्न विकराल मम, कृपा सिन्धु कपि वीर।

चौ0 - श्री बजरंग सुनहु वर वानी, द्रवहु दयाल दीन जब जानी।

हे अंजनि सुत दीनदयाला, जान अनाथ नाथ प्रण पाला

दया दृष्टि करिये प्रण पालक, जान अजान मंद मति बालक

जयति कपीश कृपा अब कीजे, हेर हरष हरि मम सुध लीजै।

देहु मुदित मन शुभ वरदाना, संकट मोचन कृपानिधाना।

राखहु हठ हनुमंत हठीले, करहु सिद्ध वाणी गरबीले।

सुयश सराहत सब संसारा, कीजिये नाथ दीन उपकारा।

तुम समान को पर उपकारी, बरणत सदा साधु श्रुति चारी।

गहु सतपंथ शरण सतगुरू की, ऐसो समय परी ना।

छोटे नाम बिना घर भीतर, अमृत बून्द झरी ना।

(6)

('विवेक वाटिका' से)

सन्तो सतगुरू शरण सही।

वेद पुराण शास्त्र श्रुति सबही एकै बात कही।

भव बंधन अति कठिन छूटवो बिन गुरू जतन नहीं

छूटत जबहिं द्वैत को फंदा जिन गुरू शरण गही

गुरू चरनन में निश दिन जिनकी लागी लगन रही।

गुरू की कृपा मोक्ष मुक्ता मणि छोटे सहज लही।

(7)

यह निश्चय कारण कौन कहै, केहि भांति बनी बिगरी करनी

छंद निबंध बिना कारण कवि कैसे, लिखे कविता मनहरनी।

करनी को बीज बनयो कारण सोई कारण लाग कथा जिन बरनी।

कह छोटे भगवंत भजन बिन अन्त वही करनी को तरनी।

(8)

(प्रकाशित पुस्तक 'श्री बजरंग विनय' से)

दो० - तुमहि राम प्रिय प्राण सम, तुम पर श्री रघुवीर।

हरहु विघ्न विकराल मम, कृपा सिन्धु कपि वीर।

चौ० - श्री बजरंग सुनहु वर वानी, द्रवहु दयाल दीन जव जानी।

हे अंजनि सुत दीनदयाला, जान अनाथ नाथ्र प्रण पाला

दया दृष्टि करिये प्रण पालक, जान अजान मंद मति बालक

जयति कपीश कृपा अब कीजे, हेर हरष हरि मम सुध लीजै।

देहु मुदित मन शुभ वरदाना, संकट मोचन कृपानिधाना।

राखहु हठ हनुमंत हठीले, करहु सिद्ध वाणी गरबीले।

सुयश सराहत सब संसारा, कीजिये नाथ दीन उपकारा।

तुम समान को पर उपकारी, बरणत सदा साधु श्रुति चारी।

चारू चरित चारिउयुग माहीं, सिद्ध संत सुर सकल सराहीं।
सबके उर परतीत तुम्हारी, सुमिरत हरत नाथ दुख भारी
कौन सो काज कठिन प्रभु तोही, कहहु बुझाय कृपानिध मोही।
तुम सम कौन दीन हितकारी, हरहु त्रास मैं शरण तुम्हारी।
दो० - देहु हरष मोहि सिद्धवर, वरदायक मति धीर।
छोटे उर परतीत बड़, कृपासिन्धु कपि वीर।

मूल्यांकन:

श्री छोटेलाल नामदेव जनपद हमीरपुर के एक वरिष्ठ कवि हैं। इन्हें पिंगल का अच्छा ज्ञान है किन्तु जनपद के कवियों में वे आज भी अनजान ही हैं। काव्य दोष से मुक्त इनके छंदों में माधुर्य एवं लालित्य का गुण विद्यमान है। सरल शैली में लिखी गईं इनकी रचनायें हृदयस्पर्शी हैं। सरल हृदय एवं धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण उसकी स्पष्ट छाप इनकी रचनाओं में है। इनकी अप्रकाशित पुस्तक ' श्रीराम विजय ' खण्ड काव्य एक उच्च कोटि की पुस्तक है जिसका प्रकाशन कराया जाना चाहिये। कवि का उपलब्ध काव्य साहित्य हिन्दी काव्यसाहित्य की अमूल्य निधि है जिसके संरक्षण एवं प्रकाशन की आवश्यकता है।

(8) श्री प्रहलाद गुप्त :

जीवन परिचय:

श्री प्रहलाद गुप्त का जन्म । जून सन् 1950 ई0 को मौदहा (हमीरपुर) मे हुआ था। इनके पिता का नाम श्री पन्नालाल गुप्त तथा माता जी का नाम श्रीमती शान्ती देवी है। बी0ए0, एल-एल0 बी0 तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात इन्होंने वकालत करना प्रारंभ किया। वर्तमान समय में ये नुहाल हैदरिया (मौदहा) में रहते हैं तथा वकालत का कार्य करते हैं। सरल एवं उदार हृदय के श्री गुप्त जी नई विधा के एक अच्छे कवि हैं।

काव्य-कृतियां:

श्री प्रहलाद जी हिन्दी कविता की नई विधा में ही रचनायें लिखते हैं इनकी रचनायें पत्र पत्रिकाओं में कभी कभी प्रकाशित होती रहती हैं। इनका स्वयं का कोई काव्य संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। इनके द्वारा दानवीर कर्ण पर लिखा गया लघु खण्ड काव्य अभी अप्रकाशित है। वर्तमान समाज में फैली हुई कुरीतियों एवं विसंगतियों को विषय बनाकर ही ये मुख्य रूप से रचनायें करते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

॥1॥

नयनों की भाषा को सीख लूं,
होठों के शब्दों को जान लूं
डूबा हूं इतना आकण्ठ तक
परिभाषा प्रेम की मैं जान लूं
इसलिये मैं जिन्दा हूं इसलिये मैं जिन्दा हूं
अंसुवन के सागर में, सपनों की नाव लिये
मरघट की छाती में बैठे हैं पावं किये
फिर भी विश्वास है
मन में एक आश है
सूरज की किरणें मेरे भी आंगन में,
एक रोज आयेंगी
यादों की सरगम में,
आशा की ज्योति कोई गीत बन जायेगी
इसलिये मैं जिन्दा हूं, इसलिये मैं जिन्दा हूं।

॥2॥

व्यंग

रात आयी, उल्लुओं, चमगादड़ों के वास्ते
वरना ये सब प्रगति पथ पर
राष्ट्र हित को त्याग कर
तस्करों व चोर जैसी हरकतों से

भव्य महलों के बना सकते हैं खण्डहर

विश्व के इंसान

तुम हो रात से व्याकुल

अरे, अमिताभ प्रातःकाल में

आयेगा, जब आयेगा

उल्लुओं, चमगादड़ों का राज्य तब मिट जायेगा

(3)

गीत

अब किसे विश्वास से अपना कहें

हर व्यक्ति ही जब आस्तीनी सांप है

इंसानियत का आकलन है द्रव्य में

देवता भी दे रहे बस श्राप हैं

आज से मैं सोचता हूं छोड़ दूं

प्यार करना फूल हो खार हो

बस उसी रफतार में मैं भी चलूं

जिन्दगी में सार या निस्सार हो

हर तरफ है स्वार्थ के बादल घने

बूंद स्वाती की कहीं गिरती नहीं

कैक्टस व नागफन शोभाय है

अब कहीं तुलसी हमें मिलती नहीं

कल तलक जो पांव को चूमा किये

आज मेरे बाप के भी बाप हैं

इंसानियत का . . . .

(4)

मुक्तक

जिंदगी का नशा उतर जाता है

कारवां चलकर ठहर जाता है

राख के ढेर नजर आते हैं, उस मंजर पर

आदमी जब औकात से उतर जाता है।

(5)

क्षणिकायें

महंगाई,

आकाश को छूती है,

क्या कहें

यह ना जाने किस अभागिन मां की कपूती है

आज,

न जाने कितने दिनों के बाद,

वो आये मनुहार लिये आये

और वक्त की बात

हम तैयार नहीं थे,

सच पूछो,

तो हम उनके यार नहीं थे।

(6)

बहुत दिनों से,

मैं सोच रहा था

कि नींव के पत्थर से मिलूं

भव्यता व ऐश्वर्य को भोगने वाले

पत्थरों के भार को ढोने वालों से मिलूं

और कहूं,

कि मैं बुद्धिजीवी

तुम्हारे अहसान को मानता हूं

कोई कुछ भी कहे

परंतु नींव का पत्थर

उसके सामने मैं नतमस्तक हो गया

मेरा बुद्धिजीवी अहम भी

चूर चूर हो गया।

बोला,

भैया मेरी नहीं

मेरे ऊपर खड़े

बेहोश, वैभव को भोगने वाले

साथियों को देखो

कहीं इनको,

धूप, समीर अथवा पानी

बीच में ही तोड़ डालें

वर्षों का संजोया स्वप्न

ये हवेली खण्डहर बना डालें

मैं तो सदियों के बाद भी

इसी तरह हंसता रहूंगा

आज की भव्य कहानी

सदियों के बाद सिर्फ मैं ही कहूंगा

(7)

प्रेम पूजा कहूं या ऋचा मैं कहूं

इसका क्या नाम है कौन अन्जाम है

बस यही मैं कहूं, प्रिय की बन्दगी

तितलियों की महक, गीत की जिन्दगी

कुछ कहें प्रेम टपका हुआ नीर है

कुछ कहें हीर रांझा की तस्वीर है

कुछ कहें यह निराला की थाती अगर

चिर विश्राम ग्रह की बुझी पीर है

कुछ का मन्तव्य इससे अलग ही रहा

कैस पागल मगर जिंदगी भर रहा

इक कली खिल के बिखरी, बिखरती रही

बताओ भ्रमर क्यों भटकता रहा

प्रेम को मैं नदी की रवानी कहूं
गीत कविता गजल या कहानी कहूं
बस यही मैं कहं
प्रिय की बन्दगी

सोचिये प्रेम होता नहीं गर यहां
कौन परवाह करता यहां पर कभी
गंध फूलों की होती यहां कैद सी
रामनामी दुपट्टा चढ़ाते सभी
तब पपीहा नहीं ताकता बूंद को
चाहे स्वाती मघा पूर्वा ही झरे
चांद हमको नहीं याद आता कभी
और लगता शलभ तो बेचारे मरे
व्यर्थ उपमान होते ये कोयल की कूक
नहीं रास आती न पुजता ही तूं
बस यही मैं कहूं,
प्रिय की बन्दगी . . . . .

मूल्यांकन:

श्री प्रहलाद गुप्त हिंदी कविता की नई विधा के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनकी कवितायें रोचक एवं प्रवाहपूर्ण हैं। इनकी रचनाओं में माधुर्यका गुण भी विद्यमान है विभिन्न सामाजिक विषयों को आधार बनाकर ये कवितायें लिखते हैं। शब्दों के सुंदर चयन से कविताओं मे प्रभावोत्पादक गुण विद्यमान है। कवि ने प्रकृति के विभिन्न उपहारों को प्रतीक के रूप में कविता का माध्यम बनाकर अपने भावों को सरल ढंग से कहने का सुंदर प्रयास किया है । कवि का यह प्रयास प्रशंसनीय है।

{9} श्री भगवानदीन 'मुनीम' :

जीवन परिचयः

इनका जन्म 15 अगस्त सन् 1947 में ग्राम धनौरी {हमीरपुर} में हुआ था किंतु अब ये स्थायी रूप से मौदहा में ही रहते हैं। इनके पिताजी का नाम श्री राधाचरण तथा माता जी का नाम श्रीमती कलावती था। इनकी शिक्षा केवल प्राथमिक स्तर तक हुई है। ये वर्तमान समय में मौदहा में सिलाई का कार्यकरते हैं।

काव्य कृतियांः

ये बुन्देली में रचनायें करते हैं मुख्य रूप से ख्याल व गारी के रूप में इन्होंने रचनायें की हैं। कुछ गीत भी लिखे हैं। सीमित संख्या में इनके द्वारा की गई रचनायें अभी तक अप्रकाशित हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

{1} ख्याल

जानत है पै मानत नइयां मानव ने माना है
आया है जो भी इस जग में इक दिन उसको जाना है
मालिक ने जब सृष्टि रची तब सबको नियम सिखाये थे
सब मिल जीव प्रेम से रहना भोजन भजन बताये थे
रहना संयम नियम से हरदम बारम्बार जताये थे
सब प्रकार की सीमा भीतर मारग चलन लखाये थे
फिर बोले ईश्वर जाओ प्यारे ये सब बोल निभाना है।
आया है . . . . .

दिखो जीव पृथ्वी पर आकर करके नियम दिखाते हैं
शाक मांस जो जिसे बताया वही आप भी खाते हैं
शाकाहारी शाक खाये बच्चों को वही सिखाते हैं
मांसाहारी मांस खाय कर प्रभुके बोल निभाते हैं
पर मानव सबका सबइ खाय नहिं इसका कोई ठिकाना है
आया है . . . . . .

(2) गारी (एकता पर)

भारत मां के अब गोदी में खेल करें हम तुम भइया

एक पिता के सब छैया।

मन में राग द्वेष न लइयो,

सब कोउ सब खें गरे लगइयो

रोटी एक बांट सब खइयो

घर की बात घरइ में सुरजो नहीं विपति कोउ बटवइया

एक पिता के सब छैया।

हिंदू मुस्लिम सिक्खा ईसाई

आपस में सब भाई भाई

जिनके बीच नहीं कोउ खाई

कहें मुनीम हिंदुस्तां की हाथ तुम्हारे है नइया

एक पिता के सब छैया।

(3) फागुन गीत

बैठो बैठो आम की डार

पपीरा, पिया पिया बानी बोल रहो

अरे हां रे पपीरा मोरे पिया परदेश गये

सुन बिरहा जना रओ जोर पपीरा

कौन दिशा में डोल रहो

बैठो बैठो . . . . .

अरे हां रे पपीरा, कोयल कुहू कुहू बोल रही

मैं चितवऊं चारउ ओर पपीरा

जो चित चोर छछोल रहो

बैठो बैठो . . . .

अरे हां रे पपीरा सेज शूल सी मोहे लागे

मैं जरो जुन्हइया की छावं पपीरा

कन्ण कंठ के छोल रहो

बैठो बैठो . . . . .

(4) गीत

हे भारत के वीर सपूतो हम नमन तुम्हारा करते हैं
भये शहीद जो मातृभूमि पर कभी नहीं वो मरते हैं
झांसी में जब अंग्रेजों से हो रई जंग करारी थी
तब कूद पड़ी थी बाई लक्ष्मी, करके अश्व सवारी थी
कर रही घोर घमसान युद्ध जहं वो कोरिन झलकारी थी
बादर सी गरज रही तोपें दिन में दिखाती अंधियारी थी
उन वीरों की कुर्बानी से घर घर घी दीपक जरते हैं
भये शहीद जो . . . . .

दुनिया लोहा मान गई है भारत मां के पानी का
एहसान न भूलेंगे हम तीनउँ गांधी की कुर्बानी का
ऋणी मुनीमा रहा हमेशा इन स्वतंत्र सेनानी का
इस धरती पर जनम हुआ है हजरत मौलाना मोहानी का
हम मोती हैं इस भारत के जो न कभी बिखारते हैं
भये शहीद जो . . . . . .

मूल्यांकन:

जैसा कि उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है, श्री भगवानदीन मुनीम केवल बुन्देली में ही रचनायें करते हैं। यद्यपि इनकी शिक्षा केवल प्राथमिक स्तर तक की ही रही है। फिर भी उनकी रचनायें साहित्यिक दृष्टि से अच्छे स्तर की हैं बुन्देली के सरल सुंदर रूप में कवि ने अपने भावों का अभिव्यक्ति देने का सफल प्रयास किया है। रचनायें भावपूर्ण एवं माधुर्य के गुण से युक्त हैं। सीमित संख्या में ही इनके द्वारा रचनायें लिखी गई हैं किंतु कवि का उपलब्ध काव्य साहित्य हिंदी काव्य साहित्य को दिया गया एक अच्छा योगदान कहा जा सकता है।

(10) श्री धर्मात्मा प्रसाद गुप्त :

जीवन परिचय:

श्री धर्मात्मा प्रसाद गुप्त ' अभिलाषी ' का जन्म 10 अक्तूबर सन् 1945 को पश्चिमी तरौस (मौदहा) में एक वैश्य कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री धनीराम गुप्त तथा माताजी का नाम श्रीमती रामप्यारी है। इन्होंने बी0ए0, एल0एल0बी0, साहित्य शिरोमणि तक शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान समय में ये मौदहा में ही रहकर व्यापार कार्य करते हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी रचनाओं का कोई संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। प्रारंभ में ये विरह गीत लिखते थे किंतु अब ये सामाजिक चेतना की रचनायें करते हैं ये मुख्य रूप से गीत मुक्तक तथा क्षणिकायें लिखते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1) विरह गीत

प्रिय तुम्हारी याद के दीपक जलाये, आज कितने
जिंदगी की मधुर राहों पर सजाये साज कितने
किंतु फिर भी तुम मिले ना
फूल खुशियों के खिले ना
जिंदगी में फिर मिलन की
मधुर घड़ियां पा सके ना
याद को सपने बनाकर हैं छिपाये राज कितने
प्रिय तुम्हारी . . . . (1)
सिर्फ दो क्षण के लिये बस
मिलन का वरदान दे दो
प्रेम के इस मधु हवन में
मिलन आहुति दान दे दो

प्रेम में बलिदान कितने तख्त कितने ताज कितने

प्रिय तुम्हारी याद . . . .(2)

काश आओ जिंदगी में

तो तुम्हें आभास होगा

कसमकश कितनी भरी है

यह तुम्हें एहसास होगा

दर्द इस दिल में है कितने दर्द के अंदाज कितने

प्रिय तुम्हारी . . . .

(2) मुक्तक

आती हैं परेशानियां तो फिक्र क्यों करें

खुशियों के साथ गम को भी आना ही चाहिये

कैसे कटेगी इतनी बड़ी उम्र ये तमाम

जीने के लिये कोई बहाना भी चाहिये

चाहिये साहस बहुत आगे को बढ़ने के लिये

छोड़ना पड़ता है सब संघर्ष कहने के लिये

ठोकरों से इस तरह इंसान क्यों घबरा रहा है

ठोकरें मिलती हैं गिरकर के संभलने के लिये

(3)

आज का हर व्यक्ति उलझन से घिरा है

आज का इंसान भी कुछ सरफिरा है

आदमी ही आदमी के उलझनों का राज है

आदमी औकात से ज्यादा गिरा है

(4) क्षणिकायें

हरिजन का पात्र

यदि गंगाजल से धुला हो

तो भी अशुद्ध है

दुर्भावनाओं से, कपट से, छल से भरा शरीर

यदि उच्च वर्ग का है तो वह शुद्ध है

हमारा वर्ग कितना प्रबुद्ध है

नक्शा

गांधी जी,

पूरे भारत के नक्शा थे

नंगा बदन सिर्फ धोती

पिचका पेट दो रोटी।

दहेज

उन्होंने कहा,

मैंने अपनी बेटी के लिये

खरीदा है एक नौकर

बीस हजार रुपया नकद

स्कूटर, फ्रिज और लाकर

साथ में टेलीविजन भी देकर

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार उन्मूलक समिति के सदस्यों बीच,

आचरण की बातें

कुछ इस तरह बढ़ गईं

कि बोतलें खुल गईं

(5) दोहे

प्रियजन दूरी राखिये, खरबूजे के भेष

ऊपर से छै सात हों, पर भीतर से एक।

कभी न बनियें संतरा, सन्तों जैसा भेष

अन्तर भीतर सब बटें, पर ऊपर से एक।

(6) गीत

चिंतन के अति पराकाष्ठा से पहुंचे निष्कर्ष में।

कुछ न कुछ होने वाला है, पूरे भारतवर्ष में।

वो चरित्र आचरण कहां है

कोई नया रूप बदला है

आम सड़क पर न्याय हो रहा

चिंतन का स्वरूप बदला है

आदर्शों का गला घुट रहा पिटा सत्य संघर्ष में

कुछ न कुछ . . . .

अध्यापक से वैज्ञानिक तक, आज बिकाऊ माल है

देश का दर्शन कहीं न दिखता, असुरों जैसा हाल है।

लोकसभा से संसद तक है, आज दिखावी हर्ष में।

कुछ न कुछ . . . .

गोरखालैण्ड

इधर असम गुजरात, गोरखालैण्ड और पंजाब है

और उधर कश्मीर मांगता, कोई नया हिसाब है

बेईमानों ने पूरा कर दिया, देश संघर्ष में

कुछ न कुछ .. . .

नौजवान को चरस की सिगरेट, छात्रों को मेण्डेक्स की गोली

बच्चे भीख मांगना सीखें, फैला फैला कर के झोली।

जहां सभ्यता पनपे ऐसी पहुंचें किस निष्कर्ष में

कुछ न कुछ . . . .

पत्नी, पति की हत्यारिन है, पुत्र पिता को मार रहा है

बहिन दे रही विष भाई को, सुत मां को दुत्कार रहा है

कृष्ण, राम की भूमि देख ये, रहें शोक या हर्ष में

कुछ न कुछ . . . . .

मूल्यांकन:

श्री धर्मात्मा प्रसाद गुप्त जनपद के एक अच्छे कवि हैं। इनके द्वारा जो रचनायें की गई हैं उनकी संख्या अधिक नहीं है किंतु उनकी उपलब्ध रचनायें अच्छे स्तर की हैं। प्रारंभ में लिखे गये उनके

विरह गीत भी हृदयस्पर्शी हैं किंतु अब जो सामाजिक चेतना के गीत लिखे जा रहे हैं वे भी कवि की दूरदृष्टि एवं स्वस्थ चिन्तन का प्रतीक हैं । रचनायें सरल शैली में लिखी गई हैं। रचनाओं में पाठक के मन को झकझोरने का गुण है। संक्षेप में कवि का प्रयास सराहनीय है।

(11) श्री सुधाकर प्रसाद त्रिपाठीः

जीवन परिचयः

श्री सुधाकर प्रसाद त्रिपाठी ' राकेश ' का जन्म 2 जुलाई सन् 1939 को ग्राम इचौली (मौदहा) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मुरलीधर त्रिपाठी एवं माताजी का नाम श्रीमती सुखवती देवी था इन्होंने एम0ए0 (हिन्दी, संस्कृत एवं इतिहास) तक शिक्षा प्राप्त की है तथा वर्तमान समय में कन्या क्रमोत्तर पाठशाला इचौली में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

काव्य कृतियांः

इनकी एक पुस्तक ' देहली से देहली तक ' सन् 1974 में प्रकाशित हो चुकी है 94 पृष्ठ की इस पुस्तक में पोषक के ऊपर शोषक के अत्याचारों का स्पष्ट आभास कराया गया है तथा देश के भावी कर्णधार छात्रों को विदेशी नकल से मुक्त होकर स्वदेशी आदर्शों की ओर संकेत किया गया है। पूरी पुस्तक 18 शीर्षकों में विभक्त है। इसके अतिरिक्त इनके आध्यात्मिकता से संबंधित लगभग 100 छन्द तथा अन्य फुटकर रचनायें अप्रकाशित रूप में इनके पास उपलब्ध हैं।

इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

('देहली से देहली तक' पुस्तक से)

प्रतिशोध

रामायण है गवाह इसकी,
साक्षी लंका का प्रांगण है
दश दिशा विजेता दसकंधर
क्यों मिटा कौन सा कारण है।

कौरव दे देते पांच ग्राम

तो देश नहीं होता आरत

मिट जाता बन्धु विरोध

कृष्ण रच पाते नहीं महाभारत।

जब गढ़कुण्डार ने खींची थी

फोटू आशिकी खंगारों से

बुन्देलों ने प्रतिशोध लिखा

था तलवारों की धारों से।

जब तक्षशिला नगरी नरेश,

अम्भी पोरस का शत्रु बना

मौका पा वीर सिकंदर की

चढ़ आई यूनानी सेना।

पोरस की हिम्मत के समक्ष

अरि खोद रहा था माटी को

दुश्मन ने घूर घूर उस दिन

देखा था झेलम घाटी को।

गरीब की ओर

भारत स्वतन्त्रते छोड़ो अब

महलों के शिखर कंगूरों को

अफसोस बिक गई दौलत पर

देखो अब पर्ण कुटीरों को

महलों के रहने वालों को

तू सभ्य पुरुष मानती रही

सभ्यता संस्कृति केन्द्र सदा

इनको ही क्यों जानती रही।

स्वार्थी चश्मे को छोड़ अगर,
देखो तो तुम्हें दिखाऊं मैं
उलझी सांसों की वीणा पर
जीवन के गीत सुनाऊं मैं

क्या रक्खा है इन हृदयहीन
महलों के सूने ख्वाबों में
आ सकती कहीं सुगन्ध भला
कागज के बने गुलाबों में

महलों के साये कुटियों की,
आजादी बीन लिया करते
स्वाभाविक चिढ़ कर दीनों की
रोटी को छीन लिया करते।

{2}

उठो जवान देश के जगो जवान देश के
विपत्ति का बिगुल बजा, सजो जवान देश के
वतन पुकारने लगाा चमन पुकारने लगा
धरा से ध्वनि उठी तो सब गगन पुकारने लगा
स्वदेश की पुकार सुन गुहार मातृभूमि की
लुटें न थातियां कहीं स्वदेश भक्ति खून की
प्रताप की धरोहरें शिवा की सब विरासतें।
सुभाष की स्वतंत्रता, पटेल की रियासतें
अगर स्वतंत्रता लिखी अशफाक ने जो काल पर
उठा है भाल भारती हमीद के कमाल पर
वो राजगुरू का हौसला, जुनून ऊधम सिंह का
उबल उठा गरम लहू शहीद भगत सिंह का।
× × × × × × × × × × × ×

{3}

निज दोष देखो, दोष पर के परेखो मत,

धोखे में अनमोल जीवन गंवाओ ना

भव साध्य साधनों में, ढूंढ़ो कभी न शान्ति

अभ्यास जीने मरने के दोहराओ ना

तन,मन,धन, यौवन, अहंकार छोड़ जीव जड़

धोखे में दो दिन के साथी बनाओ ना

शान्ति एकान्त ढूंढ़ अपनी मन भ्रान्ति ढूंढ़,

स्वात्मानन्द शाश्वत सुधा सिन्धु डूब जाओ ना।

{4}

दारा सुत भ्रात गये, मैया और बाप गये

कई बार आप गये, पर जगे न आप में

अन्तरब्रह्म जीवन भर, जीव की प्रतीक्षा में

मनके दुष्कर्मी अभयस्त गये शाप में

निज गुण प्रदर्शन किये, पर दोष दर्शन किये

सौ बार मरे जिये, इस क्रिया कलाप में

पाप वश आये थे, करते विलाप यहां,

पाप कर पापी, फिर डूब गये पाप में।

{5}

{'महारास पांचाध्यायी' अप्रकाशित पुस्तक से}

चले गये पूर्वज देव श्रेष्ठ से,

चले गये बंधु हंसी बिखेरते

रहेगा कोई न सदा रहा यहां

क्रीड़ास्थली है ये जन्म मृत्यु की

नूतन नवेली नित प्रस्फुटित कली,

पुनः पुनः पतझड़ फिर बसन्त है।

शाश्वत यही सत्य विधान सृष्टि का,

अखण्ड सौभाग्यवती वसुन्धरा।

न काम क्रोधादिक लेशमात्र है
न भ्रम जहां मत्सर लोभ मोह का
विमुक्त हो नाचे भक्ति भावना
सुयोग्य पाकर बृज में बृजेश का।

देवांगनायें सब संग में चलीं
निज निज विमानों गन्धर्व यक्ष भी
त्रिदेव भी वेश बदल बदल चले
भक्ति स्वरूपा बृज भूमि भव्य को।

(6)

(गीत- धरती या स्वर्ग)

यही है सुलभ स्वर्ग मेरी धरा का।
अखिल सृष्टि सुषमा समायी इसी में
महायोग माया परब्रह्म के संग
सहित शेष अवतार आये इसी में
मनीषी मिले अत्रि जैसी इसी में
शिरोमणि सती पूज्य माता अनुसुइया।
रमे राम आराम सुख सृष्टि भर के,
भरे नैन छलके मिले चारों भइया,
मनाने यहां नीति को प्रीति आयी
विरह की पयस्विनी बहाई इसी में
यही है . . . . . .
यहीं मंजु मानस के मुखरित हुये स्वर
किसी कवि हृदय भक्त की चाह हुलसी
मिले प्रेरणा के पवन सुत यहीं पर
कलम काव्य साहित्य कवि धन्य तुलसी
हीं भक्त भगवान भगवान भर अंक भेंटे
खुली विश्व भर की भलाई इसी में
यही . . . .

यही भाव की भूमि, प्रभु पद सुअंकित
सुरक्षक यही धर्म साहित्य संस्कृति।
यंही सत्य शिव सुन्दरम से अलंकृत
इसी के यशोगान त्रैलोक्य झंकृत
तुम्हें क्या समर्पित करूं मातृ भूमि
छिपी विश्व निधि लूट पायी इसी में
यही हैं . . . .

(7) मुक्तक

मुझको धरतः की चाहत न धन चाहिये
जो गरीबों पे सोचे वो मन चाहिये
मौत पहली नहीं जिन्दगी के लिये
लाश को राष्ट्रध्वज का कफन चाहिये

[२]

सच्चिदानन्द घन मेरा बहुरूपिया
नाम रूपों से सारा जहां भर गया
श्रद्धा विश्वास जिसका जहां जम गया
बस उसी भाव में काम वो कर गया।

मूल्यांकनः

श्री सुधाकर प्रसाद त्रिपाठी की उपर्युक्त रचनायें उनके एक प्रखार कवि होने का प्रमाण हैं। प्रारंभ में वीर रस प्रधान कवितायें लिखने वाले कवि का झुकाव अब आध्यात्मिकता की ओर है जो उनकी रचनाओं से स्पष्ट है। कवि की रचनायें ओजपूर्ण एवं प्रवाहयुक्त हैं। रचनायें काव्य दोष से मुक्त हैं। कवि का गहरा चिन्तन उसकी रचनाओं में झलकता है। सुन्दर शब्दों के चयन से कवितायें अपना प्रभाव डालने में सक्षम हैं। इन्हें जनपद के अच्छे कवि की कोटि में रखा जाना न्यायसंगत है।

(12) श्री रामदास गुप्तः

जीवन परिचयः

श्री रामदास गुप्त 'विकल' का जन्म ग्राम इचौली (मौदहा) में 5 जनवरी सन् 1945 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री साधुप्रसाद गुप्त तथा माताजी का नाम श्रीमती लक्ष्मीदेवी था। इनकी शिक्षा बी0ए0, एल-एल0बी0 तक की है किंतु ये कृषि कार्य ही करते हैं। ये अच्छे समाजसेवी भी हैं।

काव्य कृतियांः

इनकी कोई पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है किंतु अप्रकाशित रूप में काव्य सामग्री प्रचुर मात्रा में इनके पास संग्रहीत हैं। इनका लिखा खण्ड काव्य 'प्रतिज्ञा पुरूष' एक अच्छी कृति है जो अभी अप्रकाशित है। यह खण्ड काव्य भीष्म पितामह पर लिखा गया है इसके अतिरिक्त कुछ अप्रकाशित गीत संग्रह (1) बबूल के फूल (2) द्रवित द्रव्यों का अर्चन, तथा (3) अभिशप्त सपने हैं। एक अन्य अप्रकाशित पुस्तक 'अभिलाषा' भी कवि की एक अच्छी कृति है। लगभग एक हजार गीत इनके पास संग्रहीत हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

(अप्रकाशित खण्ड काव्य 'प्रतिज्ञा पुरूष' से)

(प्रारब्ध)

पूर्व जन्म प्रारब्ध मिलन की,
मधुर घड़ी लाया था
प्रातः भ्रमण काल
दोनों का बंधन बन आया था।

यह अष्टम वसु था सुत मेरा
इसकी थी अब बारी
मुक्त नहीं हो सका,
तुम्हारे कारण हे बलधारी।

(पराक्रम)

हुआ भयानक युद्ध,
बाण पर बाण चले टकराये
जीत गये युवराज
शाल्य को बन्दी कर ले आये।

जय जय कार चतुर्दिश गूंजी
बजने लगी बधाई
वर्षो बाद राज्य महलों में
खुशी लौटकर आयी।

(प्रतिज्ञा)

दासराज तेरी शंका का,
समाधान करता हूं।
मैं आजीवन अविवाहित,
रहने का प्रण करता हूं।

चन्द्रकिरण हों ज्वालामय,
या सूर्य ताप हों शीतल
ध्रुवतारा टल जाये भले,
पर मेरा प्रण है निश्चल।

(कीर्ति)

कहा भीष्म ने पूर्व प्रतिज्ञा,
कभी नहीं तोड़ूंगा।
पूज्य ! युद्ध के भय से
अपना धर्म नहीं छोड़ूंगा।

जो भी हो आदेश आपका
माता वही करूंगा।
किन्तु प्रतिज्ञा तोड़ कभी
अपयश सिर नहीं धरूंगा।

(क्लेश)

लाक्षाग्रह में भस्म हुये पाण्डव
सुन भीष्म उदास हुये

हुये प्रवाहित अश्रु द्रगों से
अतिशय व्यथित निराश हुये।

भीष्म चाहकर भी
यह कुत्सित क्रिया रोक न पाये
पौत्रवधू की व्यथा देखकर
व्यथित हुये अकुलाये।।

(2) गीत

बांट सको तो आपस में मिलकर के सुख दुख बांटो
जाति वर्ग के लिये देश की धरती नहीं बंटा करती है
काट सको तो द्वेष दम्भ के भाव हृदय से काटो
किसी धर्म के लिये देश की काया नहीं कटा करती है
मिटा सको तो इस धरती से जयचन्दी कुल मेटो।
निजी स्वार्थ के लिये देश की, भक्ति नहीं मिटा करती है
छांट सको तो राष्ट्र गगन से, दुख के बादल छांटो
लोक लाज से रहित कष्ट की छाया नहीं छटा करती है।

(3)

सृजन शक्ति की साधना चाहता है,
वतन भक्ति की भावना चाहता है
अगर राष्ट्र गौरव बढ़ाना है अपना
हमें एक होकर के चलना पड़ेगा
कथन कृत्य की कामना चाहता है
भरण पूर्ति की धारणा चाहता है
अगर सिद्धियां प्राप्त करनी हैं अपनी
हमें एक होकर के चलना पड़ेगा।

(4) कुण्डलिया

खोये खोये मन लिये मिलते देखो लोग
तन मन व्याकुल कर गया महंगाई का रोग
महंगाई का रोग हो गयी खाली झोली
भंग, रंग बिन लगी बहुत फीकी सी होली

महंगाई का रोग मनुज मन कैसे ढोये
मन मारे दिख रहे, लोग सब खोये खोये।

(5) विरह गीत

तारे गिन गिन अनगिन रातें, बीत गईं बिन सोये
तेरी सुधि में सब सुख भूले, रो रोकर दिन खोये
लेकर पीड़ा जल से बोझिल आंखें भर भर आयीं
पलकों से छलकीं जल बूंदें, विह्वल नयन भिगोये
कब आओगे संगम पथ पर परिणय पर्व रचाने
देख रहे हैं राह मिलन की मधुमय स्वप्न संजोये
मन मानस में तेरी छवि की लहरें हैं लहराती
बैठे हैं अपने नयनों में तेरी प्रीत पिरोये।
विकल विरह की जलन जगाकर, बरस गया गत सावन
बौराया फागुन तेरे बिन, उर आंगन में रोये।

(6)

हर मन में बैठा दुःशासन प्रेरित करता दुष्कृत्यों को
धर्मराज की ध्वजा भला, किस आंगन में फहरायें
अर्जुन हुये नपुंसक सारे, भीम भीरू हो बैठे
किसके बल पर कृष्ण महाभारत का बिगुल बजायें।

(7)

कौन बचाये लाज आज द्रोपदि अबला की,
दुर्योधन का दम्भ दलित कर रहा हृदय हो
प्राणहीन हो गये भीष्म के भाव ज्ञान के
मूक विवश सब देख रहे तल अतल वलय को।
किसे सुनायें कृष्ण ज्ञान गीता की वाणी
अर्जुन तो निरूपाय बधिर गतिहीन हो गये
विलख रहा गांडीव कौन प्रत्यंचा खींचे
कौरव दल बलवान पाण्डव दीन हो गये।

(8)

('अभिलाषा' अप्रकाशित पुस्तक से)

हार मान लेते यदि राणा, मिट जाती मन की आशा
तो कैसे इतिहास बोलता, उनके सदयश की भाषा
चेतक पर आसीन भेदकर भाले से अरि भालों को
पूरी की हल्दी घाटी में विजय लक्ष्य की अभिलाषा।

मूल्यांकन:

श्री रामदास गुप्त ' विकल ' जनपद के एक अच्छे कवि हैं। अपने मन के भावों को सरल एवं सरस ढंग से इन्होंने कविता में पिरोहित किया है। भाषा शैली लालित्यपूर्ण है। कवि के द्वारा प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन उसकी विद्वत्ता का प्रतीक है। यत्र-तत्र अलंकारों का भी सुन्दर प्रयोग किया गया है। कवि द्वारा हिन्दी काव्य साहित्य की जा रही उल्लेखनीय सेवा सराहनीय है।

(13) श्री सोमनाथ तिवारी :

जीवन परिचय:

श्री सोमनाथ तिवारी ' सोम ' का जन्म 5 अक्टूबर सन् 1958 को पश्चिमी तरौस मौदहा में एक कुलीन ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री राधेश्याम तिवारी तथा माता जी का नाम श्रीमती सावित्री देवी है। बी0ए0 तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात ये व्यापार का कार्य करते हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी अभी तक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं है। ये गीत, मुक्तक व छन्द लिखते हैं। इनके गीत मुख्य रूप से राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में ही होते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

भारतीय युवकों का खून पानी हो गया है,
अब ऐसा कोई राष्ट्र कहने न पायेगा।

अबल अनाथ जुल्म सहने न पायेगा
एकता, अखण्डता का पूर्वजों का शुभ स्वप्न,
पागलों की साजिशों से ढहने न पायेगा।
राष्ट्रगान गाना होगा, देश के निवासियों को,
जो न गायेगा वो वहां रहने न पायेगा।

(2) गीत

चलो साथियो चंदन बन, जगती का ताप मिटाने को
सत्य अहिंसा का दीपक ले, घर घर अलख जगाने को।

हिल मिल कर सब रहें प्रेम से, आपस में छल छन्द न हो
सब हों विद्या सुयश के भागी, कोई भी मतिमन्द न हो
नयी चाह दो, नयी राह दो, कहीं चरित्र का पतन न हो
चलो साथियो कान्हा बन, द्रोपदी की लाज बचाने को
सत्य अहिंसा . . . .

अपना भारत हो विश्वबंधु इसकी एकता अखण्डित हो
मुल्ला पूजन करे आरती, देता अजान नित पण्डित हो
भरा जोश हो मगर होश हो, चाल शत्रु की सफल न हो
चलो साथियो भगत सिंह बन मां पर शीश लुटाने को
सत्य अहिंसा . . . . . .

(3) प्रभात वर्णन

यह सुखद कितना सवेरा
रवि के स्वागत में गगन ने पूर्व में कुंकुंम बिखेरा

हरित दूर्वा कंचुकी में, ओस मुक्ता मन लुभातीं
कोयलें पंचम सुरों में सरस मनहर गीत गातीं।
मलय गन्धी पवन स्वागत, नृत्यरत देती हैं फेरा
यह सुखद कितना सवेरा।

देखकर आदित्य मुख सरसिज सरों में मुस्कराये
प्रिय प्रफुल्लित देख भौरों ने, मिलन पद गुनगुनाये।
उड़ चले खगवृन्द प्रमुदित, छोड़कर अपना बसेरा।
यह सुखद कितना सवेरा।

चक्रवाकों के युगल हरषित हुये, सन्निकट आये
घंटियां सी बज उठीं, जब खेत सन के लहलहाये।
जागकर चातक ने अपने प्राण प्रिय को फिर से टेरा
यह सुखद कितना सबेरा।

सुप्त जग ने जागरण संदेश पाकर आंख खोली
हो गयी निज कर्म में रत, नारियों पुरूषों की टोली
'सोम' पृथ्वी को चतुर्दिक, तरिण निकरों ने है घेरा
यह सुख कितना सबेरा।

(4) दोहे

निशा सुनीता जल भरी, लगा बदन में आग
कब तक रक्त से मनेगी, इस दहेज की फाग

बैल बखर सब बिक गये, गिरवी हुआ मकान
फुलवा की सासू कहे, मिला न कुछ सामान।

मनमथ मंद महान बल, मैं अबला बल हीन
सुमन बाघ बेधत मदन, आज पयोधर पीन।

मेघ भरा आकाश है, नीम गयी बौराय
कण कण के उर में प्रिये मधु सा भरता जाय।

(5) क्रान्ति का सूरज

सो गयी है हार कर जग की जवानी, जागरण का गीत गाना ही पड़ेगा
चाहते हो जुल्म के तम को मिटाना, क्रान्ति का सूरज उगाना ही पड़ेगा।

यह कहां संभव कि कंचन महल के हित, झोपड़ी के दर्द को मैं बेच दूं
प्राप्त करने के लिये झूठी प्रतिष्ठा सत्य का कोमल गला मैं रेत दूं।

भूल बैठा है युवा अब शक्ति अपनी, आइना उसको दिखाना ही पड़ेगा

सो गयी है . . . .

छल औ तृष्णा से भरे इन व्यक्तियों में, लाख ढूंढ़ो पर नहीं इंसान मिलते

हर शहर की हर गली में दस कदम पर बोर्डधारी पाँच छै: भगवान मिलते।

बांटते हैं भ्रान्तियां ओढ़े मुखौटे उन मुखौटों को हटाना ही पड़ेगा

सो गयी है . . . .

{6}

रात हुई बारिश बगिया में नफरत के तेजाब की

सौ सौ प्रश्न पूंछती मुझसे, इक पंखुड़ी गुलाब की

हिंदू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, चार सुमन फुलवारी में

किसने फूट बेल बोई भारत की क्यारी क्यारी में

कौन बिखेर रहा है कणियां, गांधी जी के ख्वाब की

सौ सौ प्रश्न . . . .

आज अयोध्या में रण करवाने का निर्णय लेता कौन

मंदिर मस्जिद के विवाद में शासन षण्ड पंगु औ मौन

अब तक नहीं बुझी क्यों हिंसक, चिंगारी पंजाब की

सौ सौ प्रश्न . . . .

मूल्यांकन:

श्री सोमनाथ तिवारी की उपर्युक्त रचनाओं के अवलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये जनपद के ख्यातिलब्ध कवि हैं। इनकी रचनायें माधुर्य व लालित्य के गुणों से युक्त हैं। स्थान स्थान पर अलंकारों के सुन्दर प्रयोग तथा शब्दों के सुंदर चयन ने कविता के सौन्दर्य को बढ़ाया है इनकी रचनायें मन पर एक गहरी छाप छोड़ने में समर्थ हैं। कवि का प्रयास प्रशंसनीय है।

(14) श्री रामगोपाल दीक्षित :

जीवन परिचय:

श्री रामगोपाल दीक्षित का जन्म 1 दिसंबर सन् 1917 को मौदहा तहसील के अंतर्गत मुस्करा नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री दनकूलाल दीक्षित तथा माताजी का नाम पार्वती देवी था। इन्होंने हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त की तथा नार्मल विद्यालय से बी0टी0सी0 का प्रशिक्षण प्राप्त किया। ये प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी दीवान शत्रुघ्न सिंह के साथ रहे, सन् 1953 तक ये शिक्षक रहे ये प्रसिद्ध समाजवादी नेता विनोबा जी के सन्निकट सन् 1956 से 1966 तक रहे। तत्पश्चात सन् 1976 तक श्री जयप्रकाश नारायण के साथ अखिल भारतीय शान्ति सेना मण्डल के प्रशिक्षक के रूप मे रहे। सन् 1972 में इन्होंने चम्बल घाटी व बुन्देलखाण्ड क्षेत्र के बागी भाइयों के शस्त्र समर्पण अभियान में श्री जयप्रकाश जी की ओर से प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। सन् 1977 से 1983 तक गांधी सेवा आश्रम जौरा, जिला मुरैना में आत्म समर्पित बागी भाईयों के परिवारों के नौजवान शिक्षित/अशिक्षित लड़कों को प्रशिक्षण देने का कार्य 'जीवन शिक्षा केन्द्र' के प्राचार्य के रूप में किया। तब से आज तक गांधी स्मारक निधि के कार्यकर्ता के रूप में भारतवर्ष के प्रथम ग्राम दानी गांव मगरौठ - राठ (हमीरपुर) में भूमि व्यवस्था, भूमि वितरण व ग्राम को ग्राम स्वराज्य की दिशा में परिवर्तित करने के प्रयास में संलग्न हैं। आप प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी व समाजसेवी के रूप में जनपद में विख्यात हैं।

काव्य कृतियां:

आप पहले वियोग श्रंगार लिखाते थे। तत्पश्चात आपने वीर रस देश भक्ति व ओजपूर्ण कवितायें लिखाना प्रारंभ किया। इनकी रचनायें सर्वोदय, भूदान आंदोलन के समय निकलने वाली सभी पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। आपकी प्रकाशित पुस्तकों का वर्णन निम्नांकित है।

(1) जागरण गीत : इस लघु पुस्तिका में ओजपूर्ण 24 गीत हैं।

(2) क्रान्ति गीत : इस पुस्तक में 32 गीतों का संग्रह है।

(3) कलयुगी वामन : इस लघु पुस्तिका में विनोबा जी की पदयात्रा का वर्णन है।

(4) किरातार्जुन एवं अज्ञातवास तथा भीष्म प्रतिज्ञा इस पुस्तक में 26 सुन्दर छन्द संग्रहीत हैं।

उपर्युक्त प्रकाशित साहित्य के अतिरिक्त अप्रकाशित साहित्य भी प्रचुर मात्रा में कवि के पास उपलब्ध हैं जिसमें 'हांडा रानी ' लघु खण्ड काव्य तथा ' महारानी पद्मिनी का बलिदान ' लघु खण्ड काव्य भी सम्मिलित है। कवि का उपर्युक्त साहित्य उच्च कोटि का है इनकी रचनाओं के कुछ नमूने अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

एक ओर धवल धाम ऊंचे आकाश छुयें,
एक ओर छोटी सी झोपड़ी दिखात है
एक ओर भूख नहीं, भोजन के थाल भरे,
एक ओर भोजन बिन भूखे बिलखात हैं
एक ओर घर में तो लरकन के झुण्ड फिरैं,
एक ओर सन्तति बिन सम्पति नसात हैं
एक ओर रास रंग ठाट बाट एक ओर,
दीन की कराह हाय दूर सों सुनात है।

(2)

देखात में स्वर्ण भलो, लेकिन सुगंध नहीं
चन्दन में वास तो निवास नहीं फूल को
ऊख में मिठास भरी, लेकिन फल एक नहीं
फूलन में रंग रूप, संग दियो शूल को
दानिन को द्रव्य नहीं, कृपणन को वित्त खूब,
रूप को न शक्ति दई, एसो प्रतिकूल को।
विदूषन को ज्ञान दियो, लेकिन दारिद्र साथ,
ठौर-ठौर देख लेहु ब्रह्मा की भूल को।

(3)

आपसी मतभेदों को भुलाकर प्यार का संदेश देने वाला कवि का यह सुन्दर गीत देखियेः-

जिसके लिये गगन आंगन है,
चन्दा आज बना दर्पण है।
जिसकी इच्छाओं का सचमुच दास बना विज्ञान है
सीखा न पाया प्यार की भाषा, अब तक वह इंसान है।
कोई मस्जिद टेर लगाता
कोई मौन शिवाले में
गुफा अंधेरी कोई बैठा
भटका कोई उजाले में
अपना अपना अलग करम है
सबका अपना अलग धरम है।
अपने अपने ढंग का सबका घर घर में भगवान है
उसी के बन्दों को ठुकरा कर पूज रहा पाषाण है।

झोपड़ियों के प्राण सूखते
हैं महलों की छाया में।
ईर्ष्या द्वेष पनपते देखो
ऊंच नीच की माया में
सबकी अपनी पकड़ पैठ है
अपनी अपनी अकड़ ऐंठ है
कहता तो है एक पिता की हम सारे संतान हैं।
मगर मानता नहीं कि मानव मानव सभी समान हैं।

बेईमानी की दुल्हन देखी
लुभावने श्रंगार में
रूप बिकाऊ आज बना है
काया के बाजार में
पैसे ही में दया धरम है
सस्ती बिकती लाज शरम है।

झूठ कपट, छल छन्द के सौदे में बिकता ईमान है
क्षुद्र स्वार्थ के पीछे मानव बना हुआ शैतान है।

महलों की जगमग दीवाली,
होली खून पसीनों की
पूंजी का उत्पात, दुर्दशा
भूखे नंगे दीनों की
कहने भर को लोकतंत्र है
मानव क्या अब भी स्वतंत्र है।
लोकतंत्र विज्ञान का जिसको मिला हुआ वरदान है
जुटा न पाया अब तक मानव, भोजन वस्त्र मकान है।

जीवन के प्रति कवि का गहराई से किया गया सुंदर चिन्तन, उसके इस गीत के माध्यम से देखिये -

जीवन है दास स्वयं मरा, मैं हूं जीवन का दास नहीं
जीवन भी कोई उलझन है, इस पर मेरा विश्वास नहीं।

मैं देखा चुका हूं इस जग के,
उत्थान पतन की रेखायें
फिर भी तो बदली न जा सकीं
जीवन की कुछ परिभाषायें

मैं सदा तोड़ता आया हूं, इसलिये रूढ़ियों के बंधन,
ये भेदभाव की दीवारें मेरा कर सकी विकास नहीं

संघर्ष शिलाओं पर जिनके,
पद चिन्ह निराले देखे हैं
बहुमत वाले भी झुके जिन्हें
ऐसे मतवाले देखे हैं।

जग भले करे पूजा उनकी, जिनके मस्तक पर चिन्ह लगे,
पदधारी मैले मस्तक का, मैं तो लिखाता इतिहास नहीं।

फूलों से हाथ मिलाया है
तो गले मिला हूं शूलों से
बदनाम हुआ जिनके कारण,
आगाह रहा, उन भूलों से।

फिर भी वे सुमन बहुत प्यारे, शूलों की शैया जिन्हें मिली
जिनके आंगन के दरवाजे, आकर झांका मधुमास नहीं।

(5)

('हांडा रानी' अप्रकाशित लघु खाण्डकाव्य से)

अपने सुख सुहाग की जिसने स्वयं जलाई होली
राजपूतों की आन बान की, तुला प्राण दे तोली
जिसकी अमर प्रेरणा बन गई, बलिदानों की गाथा
जिसकी आवे याद, भक्ति से झुक जाता है माथा।
उसी वीर बाला की सज्जन,
सुन लो अमर कहानी।
पर कारज के लिये मिटा दी,
जिसने चढ़ी जवानी।

रूप नगर की राजकुमारी ने लिखा भेजी पाती,
जबरन मुझे छीन लेने को तुले मुगल उत्पाती।
आज बचा लो नहीं क्षत्रियों की कुल कान नशाती
मैं वर चुकी तुम्हें हूं, मन से जीवन संघ संघाती
नाम , रूप, बल,गुण, पौरूष की , दासी हुई दिवानी।
× × × × × × × × × × ×
गया मूंछ पर हाथ सबों ने अपने भाले तौले,
तमक, ताक औ आन बान से, सेनापति यों वोले।
अरे मुगल अब लगे समझने, अपनी हिन्द वपौती,
रजपूतों की इज्जत को भी देने लगे चुनौती।
टकराना चहती है हम से, आज शक्ति मुगलानी।
× × × × × × × × ×

(6)

('महारानी पद्‌मिनी का बलिदान' अप्रकाशित लघु खण्ड काव्य से)

जय वन्दनीय चित्तौड़ भूमि,

कण कण है तेरा पूजनीय।

है विश्व व्याप्त तेरी साका,

निर्बाध रूप उन्नत सगर्व

फहरा केसरिया ध्वज बांका।

तेरी गुण गाथा बनी गेय, इतिहास क्षेत्र में मची धूम (1)

बप्पा के वंशज सिसोदिया,

रण पण्डित वीर महान हुये।

अब आन बान मर्यादा हित,

रण वेदी पर बलिदान हुये।

जिनकी तलवारों पर हँस हँस, नाची रणचण्डी झूम झूम (2)

पावन सतीत्व की वेदी पर,

धधकी हैं जौहर ज्वालायें,

सानंद अग्नि में कूद जलीं,

आहुति सी अगणित अबलायें।

हमवार रहे मान्स मोती, उन चिता स्थलों को चूम चूम (3)

उन नारि शिरोमणि सतियों के,

चरणों में टेक रहा माथा

दे शक्ति लेखनी हो समर्थ।

लिखने को उनकी गुण गाथा।

उर नभ में भावों की बदली, घिर आये झुक झुक, झूम झूम (4)

(7) गीत

चित्तौर दुर्ग की रूपवती, विख्यात पद्‌मिनी रानी थी,

यह अलादीन खिलजी ने अपने कानों सुनी कहानी थी

बप्पा के वंशज रत्न सिंह,

थे हुये बीसवीं पीढ़ी में

राणा का विक्रम पौरूष में,

था नाम उच्चतम सीढ़ी में।

चित्तौर राज्य सिंहासन पर,

आसीन हुआ ज्यों नर नाहर,

जम गई धाक आतंक अतुल,

चित्तौर राज्य से भी बाहर।

अरि कर से अजय, अछूत बनी, चित्तौड़ दुर्ग रजधानी थी ॥1॥

थी विश्वविमोहिनि रूपवती,

वह रत्न सिंह की वर बाला,

जिसके निवाससे महल बना।

था कामदेव की रंगशाला

था नाम यथा वैसी सचमुच

सर्वाग सुन्दरी नारी थी।

थी कनक लता सी तन्वंगी

वह बिधु बदनी सुकुमारी थी।

था नाम पद्मिनी, पद्ममुखी, सुमुखी उनकी पटरानी थी। ॥2॥

लम्बे, घुंघराले, घने केश,

शोभित करते थे मुख वर को

काले लहराते नाम यथा,

घेरे रक्षार्थ सुधा धर को

सोया सर्पो की शैया पर,

रजनीश खिली या कंज कली।

मंडराती मधु रस पान हेतु

मधु लोलुप वनकर अलि अवली।

वह मधुरभाषिणीपिक बयनी पीयूष वर्णिणी वानी थी। ॥3॥

(8)

(अलादीन का प्रथम आक्रमण)

कवि की इस सशक्त वीर रस की रचना को पढ़कर सहसा ही श्री श्यामनारायण पाण्डेय के ' हल्दीघाटी ' की याद ताजा हो जाती है।

प्राची में ऊषा मुस्काई,
खग कुल ने कलरव गान किया।
चुपके से तारक परियों ने,
नभ मण्डल से प्रस्थान किया। (1)

ज्यों दूर क्षितिज पर दिनकर की,
किरणों ने तनिक ललामी दी
फौजों ने उनके स्वागत में
तोपों से दाग सलामी दी। (2)

धॉ धॉ कर तोपें छूट चलीं,
लोगों में हाहाकार मचा।
कंप उठीं दुर्ग की दीवारें
गढ़ बीच प्रलय संहार मचा। (3)

होती थी धरती डगर डगर
सेना के क्रिया कलापों से
रणभूमि धंसी सी जाती थी
खुद कर घोड़ों की टापों से (4)

चहुं ओर सेन सागर उमड़ा
चित्तौर दुर्ग बन गया दीप।
हलचल लख ऐसा लगता था,
हो गया डूबने के समीप। (5)

जब जोश ज्वार में दल पयोधि,
बढ़कर गढ़ से टकराता था।
तब लघुतम तरणी सदृश्य दुर्ग,
चित्तौर डगमगा जाता था। (6)

सेना की सारी शक्ति लगी,
था जहां दुर्ग का मुख्य द्वार।
झुरमुट था मत्त गयन्दों का
हां पिले पड़े थे घुड़सवार। ‖7‖

बज उठा दुर्ग में युद्धनाद
चतुरंग सेन सन्नद्ध हुई।
खिलजी से लोहा लेने को,
चित्तौर प्रजा कटिबद्ध हुई। ‖8‖

मुठभेड़ हुई दोनों दल में,
मारो पकड़ो का शोर हुआ।
उस काल यवन रजपूतों का
विकराल युद्ध घनघोर हुआ। ‖25‖

यवनों ने धावा बोल दिया,
कहकर के अल्ला हो अकबर
भिड़ गये वीर रजपूत इधर।
जय बोल बोल जय बम शंकर।

× × × × × × ×

रजपूत लड़ाके उछल उछल,
यवनों पर ऐसे टूट पड़े
ज्यों सिंह क्षुधा से व्याकुल हो,
मृग झुण्डों पर चट छूट पड़े। ‖29‖

× × × × × × × ×

चहुंदिशि से दुश्मन घेर घेर,
करते थे चोटें डाट डाट,
रावल को तुरंग बचाता था,
चकरी से चक्कर काट काट।

घोड़े ने चारों ओर दौड़,
यों चक्कर काटे घेरे में।
टापों से इतनी धूल उड़ी,
रावल छिप गये अंधेरे में।

भगदड़ मच गयी, भगी टुकड़ी,
रह गये सिपाही थोड़े से।
बस चल न सका कुछ टुकड़ी का,
उस एक अकेले घोड़े से।

(9) श्रंगार गीत

आंखों में पावस बन छाये, अधरों के मधुमास रंगीले
घिरे गगन में बादर कारे।
बरस पड़े नैना कजरारे।
सह न सके खारी बूंदों को, मन चातक के पंख चुटीले। (1)
मधुर मिलन की बेला आयी,
आसाओं ने ली अंगड़ाई।
मर्म मुखर कब हुये हठीले,यौवन के ये क्षण गर्वीले। (2)
बार बार हंस प्रीतम बोले,
सुनती रही अधर न खोले।
मैं न हंसी सखि, कस न सके वे, बने रहे भुज बन्धन ढीले। (3)

मूल्यांकन:

श्री रामगोपाल दीक्षित को जनपद हमीरपुर के कवियों में वीर रस का सम्राट कहा जाये तो कोई आतिशयोकित न होगी। वृद्धावस्था में आज भी उनकी रचनाओं का पाठ उनके मुख से सुनकर रोम सिहर उठते हैं। उनकी ओजपूर्ण रचनायें प्रवाहपूर्ण तथा माधुर्य के गुणों से युक्त हैं। पूर्व में लिखी गयीं उनकी श्रंगार रस की कवितायें भी मन को गुदगुदाती हैं। हिंदी भाषा का गहरा ज्ञान तथा शब्दों के सुंदर चयन से उनकी रचनायें अत्यंत प्रभावी हो गयी हैं। शासन/प्रशासन को चाहिये कि उनके अनमोल अप्रकाशित साहित्य का प्रकाशन शीघ्र कराये जिससे उनके बाद यह महत्वपूर्ण काव्य सम्पदा नष्ट न हो सके। जन सामान्य की समझ में आसानी से आने वाले सरल एवं सरस शैली में काव्य साहित्य का सृजन जो कवि द्वारा किया गया है, जनपद इसके लिये उनकी ऋणी रहेगा।

(15) श्री चन्द्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' :

जीवन परिचयः

श्री चन्द्रिकाप्रसाद सक्सेना 'कीर्ति' का जन्म भाद्रपद कृष्ण 4 संवत 1988 को हमीरपुर जनपद के लरौंद ग्राम में एक निर्धन कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री रामदास सक्सेना एक स्वाभिमानी कृषक थे माता श्रीमती नन्हीबहू एक धर्मनिष्ठ कर्मशीला नारी थीं। निर्धनता जन्य वेदना उन्हें जन्म से ही पैतृक गुणों के साथ विरासत में मिली। बाल्यावस्था में ही माता पिता का स्वर्गवासहो जाने के कारण सन्ततुल्य त्यागी उनके चचेरे भाई श्री लक्ष्मीनारायण सक्सेना ने उनका सम्यक विकास करने में जीवनपर्यन्त भरपूर सहयोग दिया। शिक्षालय में केवल मिडिल तक पढ़कर उन्होंने स्वाध्याय के बल पर एम0ए0 (हिंदी) साहित्यरत्न की उपाधियां उत्तम श्रेणी में प्राप्त कीं एवं प्राइमरी स्तर से शिक्षक कार्य प्रारंभ करके उत्तरोत्र प्रगतिशील रहते हुये अन्ततः इण्टर कालेज तिंदवारी (बांदा) के प्रधानाचार्य के पद से सन् 1991 ई0 में सेवानिवृत्त हुये। उनकी सहधर्मिणी श्रीमती श्यामकुमारी सक्सेना उनके संघर्षशील जीवन के उन्नयन में सदैव प्रेरक शक्ति रहीं और आज भी हैं। सम्प्रति आप अपने पुत्र प्रकाशचंद्र सक्सेना (अध्यापक) एवं ज्ञानचन्द्र सक्सेना (एडवोकेट) के साथ बांदा में रहते हैं एवं अखिलभारतीय साहित्य परिषद के महासचिव के रूप में साहित्य सेवा करते हैं।

काव्य कृतियां:

श्री कीर्ति जी हिंदी ब्रजभाषा बुन्देली के सिद्धहस्त कवि हैं। उनकी कुछ उर्दू गजलें भी प्रभावशाली हैं। उनकी बुन्देली कवितायें आकाशवाणी छतरपुर से प्रसारित होती रही हैं किंतुउनके स्वाभिमानी स्वभाव एवं व्यापक दृष्टिकोण ने स्वर्णपिंजर में पले राजश्रयी पक्षी की तरह परजीवी होना कभी पसंद नहीं किया।

प्रकाशित काव्य कृतियां:

(1) वियोगिनि (2)मंगल सन्देश (3) पार्वती (4) अस्मिता के फूल (5) चांद का धब्बा

अप्रकाशित कृतियां: ⟬1⟭ किशोर कुसुमांजलि ⟬2⟭ जयभारत जय बांगला ⟬3⟭ संजय गीता ⟬4⟭ ढहती कगारों से ⟬5⟭ बेशरम ⟬6⟭ रणभेरी ⟬7⟭ कीर्तिलता ⟬8⟭ कीर्तिकुसुम ⟬9⟭ कीर्ति कौमुदी ⟬10⟭ ताजमहल के आंसू ⟬11⟭ ब्रजभाषा के छन्द बुन्देली गीत एवं उर्दू गजलें।

⟬1⟭ वियोगिनि: कवि की आदर्शवादी प्रकृति के अनुरूप प्रारंभकाल की यह श्रेष्ठ गीत रचना है जिसमें प्रेम वासना का उद्रेक नहीं हृदय की पावन तपसाधना है।

श्रान्त पथिक के शीतल छाया के सुख में पथशूल छिपे हैं।
सन्तति सुखानुभूति में मां के, प्रसव जनित दुख फूल छिपे हैं।
धधक धधक विरहाग्नि ज्वाल में, चिर विशुद्ध मति हुई कांचना।
अविकल मन में मिलन साधना, शेष किन्तु वर विमल साधना।

⟬2⟭ मंगल सन्देश: वर वधू को विवाह में दिये जाने योग्य प्रेरक कर्तव्यबोधक सरस उपहार रचना है जिसमें नरनारी के समत्व के व्यवहार का आदर्श अर्द्धनारीश्वर के रूप में निरूपित किया गया है।

मैं हूं अर्द्धनारीश्वर भद्रे ! तुम्हारा शिव,
आधा शरीर ही तुम्हारा बन जाउँ जो !

⟬3⟭ पार्वती : प्रकृति के मानवीकरण की अनुपम कृति है जिसमें अतुकान्त सरस प्रवाहमयी शैली में पहाड़ी नदी एवं नारी के विविध रूपों का विम्ब प्रतिविम्ब भाव से चित्रण किया गया है जिसके लिये काशी विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डा0 विजयपाल सिंह ने लिखा है।

ऐसा प्रकृति चित्रण हिंदी के कवियों के लिये अनुकरणीय है। एक उदाहरण दृष्टव्य है।

दोनों ओर पहाड़ कगारे,
श्यामल गोल चीड़ के वृक्षों की हरीतिमा से शोभित हैं।
और बीच की गहरी घाटी,
में बहती तन्वंगी सलिला,
सूर्य प्रभा में चमक रही यों,
जैसे किसी पर्वती बाला
के उन्नत वक्ष प्रदेश के
बीच बचे गहरे सुदेश में

हरे सलूके के ऊपर से

चांदी की चमकीली सांकर,

धीरे धीरे लटक रही है।

× × × × × × × ×

(4) अस्मिता के फूल: अयोध्या के रामजन्म भूमि आंदोलन की पृष्ठ भूमि पर हिंदुओं के टूटे मनोबल को उठाने वाली ओजस्वी मुक्तक रचना है। इसके ओजस्वी मुक्तक नट की कुण्डली की तरह संपूर्ण भाव को चतुर्थ पंक्ति में समेटकर मर्मान्तक प्रभाव डालने में पूर्ण समर्थ है। भारत का गौरव राम, कृष्ण और शिव की अर्चना में ही सन्निहित है।

यहां पर राम,शंकर, कृष्ण की पुरजोर हस्ती है,

हमारी जान की कीमत दीन ईमाँ से सस्ती है।

जहां पर सिंह शावक छीनकर शिशु खेलते निर्भय,

ये बाबर की नहीं भारत, बबर शेरों की बस्ती है।

(5) चांद का धब्बा: जातिगत आरक्षण एवं नेताशाही पर यह प्रभावशाली वाग्प्रहार है जिसमें सांस्कृतिक भावात्मक एकता और अखाण्ड मानवतावादी दृष्टिकोण का भरपूर पोषण किया गया है।

नेताशाही की कलई अन्ततः खुल ही जाती है,

अन्ततः खुल जाती है पोल सदा अन्धेर नहीं होता है।

वेष बदल लेने से गदहा, शेर नहीं होता है।

इनके कारनामों के प्रति कवियों को ललकारते हुये वह कहते हैं:-

नकल विदेशों की करके ये बुनते ताने बाने

घर में दाने नहीं पै अम्मा, बाहर चलीं भुनाने।

ये मिटा स्वदेशी बुला विदेशी डंकल घर घालेंगे,

यदि जनता जागी नहीं सिरफिरे देश बेच डालेंगे।

कुछ ऐसा जादू करो कि इनके सब कपटी पांसे कट जायें,

हो ऐसी आवाज कि इनके कानों के परदे फट जायें।

अप्रकाशित रचनायें :

किशोर कुसुमांजलि में बलिदानी किशोरियों की गौरवगाथा आकर्षक कथोपकथन के साथ वर्णित की गई है। सूर्य परमाल, चम्पा, कृष्णा, वीरमती, विद्युल्लता, चंचलकुमारी , लालबाई, मानवा ताजकुंवरि एवं भगवती के बलिदान मुर्दो में भी जान डाल देते हैं।

जयभारत जय बांगला: में बंगलादेश की स्वतंत्रता में भारत के योगदान के साथ वहां की पाकिस्तान द्वारा की गई दुर्गति के सजीव चित्रण अंकित किये गये हैं। यथा-

सरे बाजार वह औरत खड़ी, नंगी लजाती है,
कि जिसकी दूध की छाती, कटी खून से नहाती है।
उसी के दुधमुहें बच्चे को , बूटों से कुचलते हो,
अरे शैतान के बन्दो, न तुमको लाज आती है।

ताजमहल के आंसू उनका अनूठा प्रभावशाली खण्डकाव्य है जिसमे उनकी 40 वर्ष की साहित्यसाधना युगबोध को सशक्त अभिव्यक्ति देने में सफल हुई है। जिसमें हाथ कटे कलाकार का प्रेत जो ताजमहल के ऊपर बैठा है, कवि कीर्ति से कलाकार के स्वाभिमान की बुझती ज्योति को जगाने का सन्देश देता हुआ समग्र युगबोध को मुखरित करता है। संपूर्ण कृति कवि के क्रान्तिकारी विचारों को प्रकाशित करती हुई श्रोता या पाठक के मन पर मर्मान्तक प्रभाव छोड़ती है।

प्रतिभाओं के शील हनन एवं राजव्यवस्था के सत्तामद से उत्पीड़ित विक्षुब्ध कलाकार के प्रेत का कवि कीर्ति से दायित्व बोध की यह आशा करना स्वाभाविक ही है।

मैं कह सकता हूं, लिख न सकूंगा,
हाथ कटे हैं मेरे
तुम लिख डालो अभी सलामत
हाथ बचे हें तेरे
मेरे स्वर जब तेरा रचना,
कौशल पा जायेंगे
ताजमहल के मेरे आंसू, व्यर्थ नहीं जायेंगे।

मेरे विचार से केवल यही कृति उन्हें हिंदी संसार में अक्षय कीर्ति प्रदान करने में पूर्ण सक्षम है। उनके बसन्त बहार में सवैये बड़े ही प्रभावशाली एवं मर्मस्पर्शी हैं एक एक पंक्ति में तीन तीन श्लेषों का सहज स्वाभाविक निर्वाह कर सकना उनकी अप्रतिम विशेषता है।

यौवन पै पियरी सरसें मति,

बौरी बनावत आम की बौरें,

प्रति पराग पगी प्रकृति लखि,

करके तुरंग लगाम न तोरें।

अथवा

जब से घनश्याम छाये दृगों में मेरे,

गीत नवरस के छम छम बरसते रहे।

आप के व्यापक चारित्रिक पतन पर टिकी हुई भौतिक उन्नति पर उनकी उर्दू की गजल का यह शेर बड़ा ही जीवन्त बन पड़ा है।

धँसकती जा रही है तेजी है, दीवारें रसातल को।
कंगूरे देख कर तवियत तो बहलाई नहीं जाती।

उनके बुन्देली गीत की कुछ पंक्तियां देखें जिनमें आज की वस्तुस्थिति का चित्रण पक्षियों के प्रतीकों के माध्यम से किया गया है।

बक्का भये तला के राजा भूखे हंसा काई खावें
शीश उठावे जोई मछरिया, कौवा छीन झपट ले जावें
घामन मरै कोयरिया प्यासी, बैठे बाज बरा की छंहियां
घरई में भइया भइया लर रये, है ईश्वर हौ काय करइयां।

मूल्यांकन:

श्री कीर्ति जी आदर्शवादी विचारक, भारतीय संस्कृति के उपासक, राष्ट्रीय चेतना के उन्नायक उदार मानवतावादी गीतों के गायक वाणी के वरदानी ऐसे ओजस्वी कवि हैं जिनकी कविता लाखों लोगों के

विशाल श्रोता मंचों पर भी तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सुनी और सराही जाती है। इनकी रचनायें ओजपूर्ण तथा माधुर्य के गुणों से युक्त हैं। सर्वतोमुखी काव्य प्रतिभा के धनी कवि कीर्ति बुन्देलखण्ड की अक्षय साहित्यिक निधि हैं। उनकी कविता हृदय से निकल कर सीधे हृदय पर अप्रतिम प्रभाव छोड़ती है। उनकी कृतियों सम्यक प्रकाशन के लिये साहित्यिक मनीषा का आगे न आना नितांत खेदजनक है।

कहीं यह वनफूल

प्लास्टिक फूल सजे महफिल में,

महकउवा वनफूल उजर गये।

का उद्घोष करता हुआ बिना अपनी सुगन्धि समाज को दिये न मुरझा जाये।

उनकी अप्रकाशित रचनाओं का प्रकाशन कराना उनके व्यापक सार्वभौमिक सन्देश को जन जन तक पहुंचाने में यथेष्ट सहयोग देना हम सबका पुनीत दायित्व है।

(16) श्री मुन्नीलाल अवस्थी:

जीवन परिचय:

श्री मुन्नीलाल अवस्थी का जन्म ग्राम बिवांर (मौदहा) में 29 मई सन् 1942 को हुआ था इनके पिता का नाम श्री अनन्तस्वरूप अवस्थी था। इन्होंने एम0ए0 (हिन्दी, अर्थशास्त्र) एल0टी0 (बेसिक) तक शिक्षा प्राप्त की है तथा वर्तमान समय में परिषदीय जू0हा0 स्कूल बिवांर में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी रचनाओं का संग्रह अप्रकाशित रूप में उपलब्ध है। ये राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत गीत तथा ओज व वीर रस से परिपूर्ण कवितायें लिखते हैं। अप्रकाशित रूप में इनके पास 'भरत' प्रबंध काव्य तथा माण्डवीय श्रुतकीर्ति खण्ड काव्य उपलब्ध हैं। अन्य फुटकर रचनायें हैं जो विभिन्न विषयों पर समय समय पर लिखी गई हैं। उनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

मानवता खो गई है, मानव के ज्ञान में

और हम ढूंढ़ते हैं, उसे ऊंचे मकान में

मानवता मिलगी अवश्य, आपस में विश्वास तो कर

जो डबडबाये अश्रु हैं, उनमें निवास तो कर

(2)

शिक्षक अब शिक्षा के नहीं, इच्छा के हुआ करते हैं

बेचकर अपना पावन पेशा, भिक्षा में जिया करते हैं।

मेरा तो यह दावा है यदि शिक्षक वशिष्ठ बन जाते

तो निश्चय ही शाला में, रामकृष्ण पा जाये।

(3)

(प्रबंध काव्य 'भरत' से)

प्रथम सर्ग

भरत भुवन भल पालन कर्ता,

अंश ब्रह्म के लघु भ्राता

जगति जननि सीता अनुजा

पति श्रुति शास्त्रों में विख्याता।

द्वितीय सर्ग

मृत्युमान की उपमा संचित

देवों की मालिन्य शकल

भू का भार मिटाने आये

भरत माण्डवी योग विमल।

चतुर्थ सर्ग

प्राची दिशि में हिमकर आया,

नखत कान्ति लिप्सा हरने

अंतरिक्ष में रूचिर प्रभा दे

नमन मेदिनी के जड़ने।

सप्तम सर्ग

यही मोक्षप्रद मृदुल मार्ग है

ऋषि मुनियों ने बतलाया

भक्ति राम की तारन भव है,

सब कवियों ने है गाया।

(4)

(श्रुतिकीर्ति- खण्ड काव्य से)

भ्रमर मधुर गुंजन सुमनों पर

भीनी भीनी मृदु मुस्कान

अलसाई कलियों का खुलना

अरू खगकुल की मीठी तान।

मृग छौनों का किलकन , फिसलन

मृगी जनों का लालन प्यार।

मां के उर का वत्सल झलके,

खोले ममता सुघर द्वार।

कहीं लचीली सुमन साख से

लता नवेली रही लिपट

कहीं कोकिला कूक भर रही,

कहीं तितलियां रही चिपट।

(5)

('त्रेता' खण्ड काव्य से)

तन से तन, मन से मन का अब,

सतबल का होगा संग्राम

जब तक विजयश्री न आवे,

कहां पा सकतीं हम आराम

सत पौरूष की महत झील में,

मेघनाद अति त्रस्त हुआ

अन्त समय सर के लगने से

लौह पुरूष सा ध्वस्त हुआ।

मूल्यांकनः

श्री मुन्नीलाल अवस्थी की रचनायें सरल शैली में लिखी गयी हैं। श्रोता व पाठक की समझ में आसानी से आ जाने वाली रचनायें भावपूर्ण हैं। यत्र-तत्र अलंकारों का भी प्रयोग किया गया है। प्राचीन ग्रन्थों का किया गया गहन अध्ययन कवि की रचनाओं में झलकता है। कवि का प्रयास सराहनीय है।

----

(17) रामाधार गुप्त ' फटाफट ' :

जीवन परिचय:

स्व0 रामाधार गुप्त ' फटाफट ' का जन्म सन् 1926 में उपरौंस (मौदहा) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री बद्रीप्रसाद गुप्त था। ये हास्य रस के अच्छे कवि थे। ' फटाफट ' इनका उपनाम था जिसे ये कविता करने में प्रयोग करते थे। इनके पुत्र श्री मन्नीलाल गुप्त मौदहा में होटल व्यवसाय का कार्य करते हैं। रामाधार गुप्त ' फटाफट ' की मृत्यु दिनांक 2.7.1991 को हुई।

काव्य कृतियां:

ये हास्य रस के अच्छे कवि बताये जाते हैं। इनकी एक पुस्तक ' फटाफट के लतीफे ' प्रकाशित है। इनकी हास्य रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

हाय रे रिक्शे वाले

कड़ी धूप औ कड़ी ठंड में, बरसातों में नाले।
कठिनाई से जूझ रहे हैं, परे पैर में छाले।
हाय रे रिक्शे वाले।
कोई मारे कोई पीटे कोई कहता साले,
बेकसूर होने पर भी करते पुलिस हवाले।
हाय रे रिक्शे वाले।
कैसा आया समय सुहाना, मिले श्रमिक को भाले,
वेतन काट करे वे तन के, ये मन के मतवाले।
हाय रे रिक्शे वाले।

मेहनत की तू खाता रोटी, पेट काट बच्चों को पाले।
मूंछ ऐंठ छाती पै बैठें, देखो पैसे वाले।
हाय रे रिक्शे वाले।

(2)

एक बौना
जो छोटा सा था पौना
करा के आया अपना नवीन गौना,
मां ने बुलाया, पास बिठाया
कान में कहा, सुन लो मेरे छौना
यह लड़की पराई
है मुश्किल में आई
इसे खूब निभाना
पर पेट न दिखाना।
उसने पीठ दिखा दी।

(3)

एक बिचारा रंडुआ
छान रहा था आटा
चिल्लाया जोरों से
हुआ बड़ा है घाटा
देखा उसने उसमें
निकली इक है पाई
साथी से यों बोला
कैसे खाऊं भाई
साथी ने समझाया
हुण्डी भरे सकारें
डरते हो पाई को
लाखों लोग डकारें।

(4)

बुढ़ापा

अनुभवों का सांचा

मुरझाया हुआ गात

जैसे पीत हुआ पात

आदतों से मजबूर

होकर चकनाचूर

बुढ़ापे की कहानी

गुजरी हुई जवानी।

(5)

एक ठण्डे कवि ने

ठण्डी रचना बनाई।

पास पड़ोस के सम्मेलन में,

जा सुनाई।

कविता ठण्डी ही थी,

सर्दी जोर की थी

एक श्रोता को फौरन,

शीत टकराई।

कवि को जा बुलाया,

काफी बड़बड़ाया

दवा को कहा गया,

उसे भी न रहा गया

बोले कम बल वालों का यही हाल होता है।

(7)

बेकारी से परेशान,

इक मजबूर इन्सान

रेल में किया पयान

मिले दरोगा महान

किसी बात पे हुई लड़ाई

उस दरोगा ने कसम खाई

चल थाने, भंगी बना दूंगा

उसने कहा

शुक्रिया, नौकरी तो पा लूंगा।

कवि ने हास्य के अतिरिक्त ओजपूर्ण रचनायें भी की हैं, एक रचना देखियेः-

(7)

सदा न्याय के लिये लड़ेंगे, सिन्धु सरिस बन हृदय उदार।

नहीं पनपने देंगे उनको, करते हैं जो अत्याचार।

अन्यायी के दमन चक्र को, कुंठित कर देंगे शतवार।

नहीं फटाफट कर पाये तो है इस जीवन को धिक्कार।

कवि द्वारा रचित ' हिन्दी वन्दना ' एक प्रसिद्ध कविता है, अवलोकनार्थ इसे नीचे दिया जा रहा हैः-

(8)

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा प्रगति की सोपान है।

जैसा लिखें वैसा पढ़ें, इसकी यही पहिचान है।

शुभ नागरी लिपि देव इसकी, तन सुघर रस प्रान है।

आओ करें मिल आरती, हिन्दी ये हिन्दुस्तान है।

सुप्त जन जगनिक जगाये, प्रेम कविरा ज्ञान है।

मन्जु मानस सन्त तुलसी, का अभय वरदान है।

सत्यं शिवम् और सुन्दरम से भारती गुणगान है।

आओ करें . . . .

कवि देव पद्माकर बिहारी, और प्रिय रसखान हैं।

हरिचन्द रत्नाकर तथा हरिऔध, नवयुग मान है।

प्रसाद, वर्मा, महादेवी, पन्त (छाया) ध्यान है।

आओ करें. . . . .

सद्भाव चन्दन सुमन श्रद्धा, भेंट करते पान हैं।
आगत विगत बतला रही, करती सदा कल्यान है।
यह एकता की दिव्य देवी 'फटाफट' की शान है।
आओ करें. . . . .

मूल्यांकन:

कवि की उपर्युक्त रचनायें यह सिद्ध करती हैं कि ' फटाफट ' जी हास्य के अच्छे कवि थे। सरल एवं बोधगम्य शैली में काव्य सृजन कवि की विशेषता है। हास्य के अतिरिक्त ओजपूर्ण रचनाओं में भी प्रयास सराहनीय है। जनपद के श्रेष्ठ कवियों में उन्हें स्थान दिया जाना उचित ही प्रतीत होता है।

(18) छेदीलाल सक्सेना :

जीवन परिचय:

इनका जन्म संवत 1930 में मौदहा तहसील के अन्तर्गत ग्राम इमिलिया में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गोपाल सक्सेना था। इन्होंने अलिफ तक शिक्षा अपने गांव में तथा कक्षा -7 तक की शिक्षा भटेवरा कलां (चरखारी) में प्राप्त की थी। ये पटवारी के पद पर कार्यरत रहे। स्व0 बलभद्र व्यास जलालपुर इनके साहित्यिक गुरू थे। ये कीरत कवि के समकालीन थे। इनकी मृत्यु सन् 1945 के लगभग हुई।

काव्य कृतियां:

अपने समकालीन कवियों के समान ही इन्होंने भी फागों की रचना अधिक संख्या में की हैं कोई प्रकाशित पुस्तक कवि की उपलब्ध नहीं है इनकी अप्रकाशित रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

राधा हरन हमारी बाधा,

बाधा जिन अवराधा

अवराधा जिन नेम प्रेम से

जिनने करके साधा

साधा जिनने योग जोग कर

तिन कर भये अबाधा

बाधा छेदीलाल मिटत है

जो सुमिरै श्री राधा।

(2)

तुमखां विधना नीक बनायो

जन्म उच्च गृह पायो

धन वो चुरा धन्य बस्ती खां

जिनके बीच बसायो

धन्य पिता औ धन्य मात खां

जिनने तुम खां जायो

छेदीलाल धन्य है पण्डित

राधा नाम धरायो।

(3)

मोरो अब गौनो नियरानो

करती कौन बहानो।

आमन लगे पिया के घर के

टिया टारवे कानो।

छूटन लगे संग के साथी

मन मतंग पछतानो

छेदीलाल विदा इक दिन है

आगम आन दिखानो।

॥4॥

जब से ब्राजे कुंजबिहारी

सुख शोभा अधिकारी

उत्तर बाग कूप पश्चिम का

दखिन पोशरा भारी

लगत बजार सामने मन्दिर

ताकी शोभा न्यारी

मंगली प्रसाद लुकतरा वाले

पूजा के अधिकारी

वेद विधा को करत निरूपण

रामाधीन सुखारी

छेदीलाल तुम्हारे चरनन

बार बार बलिहारी।

॥5॥

बाधज अब न बनत बनाये

जैसी हटी चलाये।

देवी नेम बड़ाई करके

फिर फिर आये जाये।

नई बहू को होत मिलौनो

पलका चार कराये।

छेदीलाल जबै की एवज

कौड़ी मोहर लगाये।

॥6॥

जौ लौ रहत रहे हैं जी से

नौने मिले जुले अरि प्रिय से

कीन्हों काम जान अपनो सो

भेद न करो किसी से

झूठी बात सभा न बोली।

नहीं विचारी जी से

अब आगे होरी है दुर्लभ

ठाढ़ो काल उसी से

छेदीलाल कूच भौ डेरा

राम - राम सबही से।

मूल्यांकन:

कवि के प्राप्त रचना संग्रह के अवलोकन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये एक अच्छे कवि थे। बुन्देली में किया गया काव्य सृजन लालित्य एवं माधुर्य के गुण से ओत प्रोत है। भाषा में सरसता एवं प्रवाह का गुण है। कवि का प्रयास सराहनीय है।

(19) भूरे सिंह चौहान :

जीवन परिचय:

स्व0 भूरे सिंह चौहान ' शिवेश ' का जन्म क्षत्रिय कुल में सन् 1902 में ग्राम खन्ना (मौदहा) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री ज्वाला सिंह चौहान तथा माता का नाम श्रीमती गनेशी देवी था। इनकी शिक्षा कक्षा 4 तक थी। ये प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे। ये बहुत अच्छे वैद्य तथा बहादुर व्यक्ति थे। इनकी मृत्यु सन् 1958में हुई।

काव्य कृतियां:

इनकी प्रकाशित रचनाओं का संग्रह इनके पुत्र श्री विजयचन्द सिंह चौहान के पास उपलब्ध है जो स्वयं एक अच्छे कवि हैं। इनकी रचना संग्रह ' नख शिख वर्णन ' में 30 छन्द हैं तथा अन्य लगभग 50 रचनायें उपलब्ध हैं। ये ' शिवेश ' उपनाम से कविता लिखते थे। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

॥1॥

पावन पियूष की सुभावन जीव मन की,

प्राणन की मूलमंत्र मंगल महन्त की।

जन चित्त मोहन की, प्रणाली प्रेम दल की,

शोभा की समाज सूर साहब के तंत्र की।

कहत शिवेश रामचन्द्र के मन बसी,

गसी कोटि राशि की सुगमता बसन्त की।

गोल मुख गोड़ी, भव्य हेम कल जोड़ी पेलि,

दिव्य छटा ओड़ी टोड़ी वीर हनुमन्त की।

इसी प्रकार हनुमान जी की पूंछ का भी सुन्दर चित्रण देखिये:-

॥2॥

पुण्य परिपाटी, सुन्दर सुवेश ढांकी,

सुखद की घाटी, धवल धारा धो गंग की।

प्रबल प्रताप परिपूरण प्रभाव भूरि,

भूपत प्रपालन की, शेष के उमंग की।

कहत ' शिवेश ' भुजन मारन निवार दुष्ट,

मारन मदहार की जुझार वर जंग की।

सन्त जन रक्षा, दीन्ह पक्ष गुण स्वच्छ,

पाल खलन के निकच्छ या पुच्छ बजरंग की।

कुछ अन्य फुटकर रचनायें देखिये जिनसे कवि की योग्यता व विद्वत्ता का पता चलता है:-

॥3॥

केशव कमल नयन, कमला के कन्त सोई,

कदम द्रुम चढ़ैया, कारी कामरी उढ़ैया को।

नरहरि, हरि गोविन्द, गोपी, गोपाल कृष्ण,

नाग के नथैया, गोवर्धन धरैया को।

कहत ' शिवेश ' श्री माधव मधुसूदन सों,

मदन मुरारी मुख मुरली बजैया को।

कंस मद गंजन, विध्वंसन सुरेश गर्व,

बंदौं जग बंद, नन्द-नन्द कन्हैया को।

(4)

अधम, उधारी, श्रीपति गिरधारी कृष्ण,

मोर मुकुट धारी, बनवारी कहायो है।

दीन हितकारी, सुख सागर बिहारी सो,

करूणा निधान बृज सांवरो सुहायो है

कहत ' शिवेश ' श्याम करूणा कर दीनबन्धु

छीर सिन्धु वासी, अविनासी जग गायो है।

कहां लौ सुनाऊँ, बार बार गुहराऊँ नाथ,

दीनन के दयाल नाम कौन सो धरायो है।

(5)

कठिन कलि कला वक्र, मदनै द्वन्द्व रोष,

संस मोह मेटे, शोक साहै बहाली जै।

मौज मन मनसा, पूरन पवित्र अंश,

चित्त चारू वित्त भरण कर्ण निहाली जै।

कहत ' शिवेश ' परम उत्तम उत्तेज यंत्र,

अजब अमोल स्नेह पावै बिसाली जै।

गर्द में मिला खल खल का हिला दौर,

धर कर करवाल अरि मर्द मर्द काली जै।

मूल्यांकन:

कवि की उपर्युक्त रचनायेंउसकी काव्य क्षमता की परिचायक हैं। अलंकारों के प्रयोग युक्त सुन्दर रचनायें सरस एवं भावपूर्ण हैं। इनमें लालित्य का गुण विद्यमान हैं। कवि को हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान था। हिन्दी काव्य के श्रेष्ठ कवियों में कवि को स्थान मिलना न्यायोचित है।

[20] जागरण सिंह परिहार :

जीवन परिचयः

स्व0 जागरण सिंह परिहार का जन्म 11.7.1949 को ग्राम इंगोहटा (मौदहा) में क्षत्रिय कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामदीन सिंह परिहार तथा माता जी का नाम श्रीमती बिट्टी देवी था। इन्होंने बी0ए0, एल0टी0 तक शिक्षा प्राप्त की। जुलाई 1971 में अशासकीय सहायताप्राप्त जू0 हा0 स्कूल इंगोहटा में प्रशिक्षित सहायक अध्यापक के रूप में ये नियुक्त हुये। काव्य क्षेत्र में भी इनका विशेष योगदान रहा। ये एक भावुक कवि थे, 6 अगस्त 1986 को कवि का असामयिक निधन हो गया।

काव्य कृतियांः

इनके द्वारा लिखित पद, गीत तथा अन्य फुटकर रचनायें प्राप्त हैं जिनमें विरह, श्रंगार एवं राष्ट्रीयता से ओत प्रोत रचनायें हैं। अवलोकनार्थ कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

(1) गीत

प्रेम मन्दिर में तुम्हारी,
अर्चना करता रहूंगा।
दर्श देना या न देना,
वन्दना करता रहूंगा।
आराध्य मेरे मैं पुजारी,
बन तेरी पूजा करूं
हर हृदय मन्दिर में तुमको,
मैं सदा खोजा करूं।
जव तक न दोगे दर्श मुझको,
मैं यूं ही चलता रहूंगा।
जिन्दगी की शाम में,
गम का अंधेरा छा रहा,
साथ का साथी ये तब भी
साये में ढलता जा रहा,

स्नेह का दीपक लिये मैं,

रात भर जलता रहूंगा।

× × × × × × × ×

राह में तेरी बिछाये,

प्रेम वाणी के सुमन

आगमन में सर झुकाये

कर रहे तेरा नमन,

तुम इधर आना न आना

राह को लखता रहूंगा।

अपना समझ अपना लो मुझको,

या कि ठुकरा दो मुझे

जागरण पलकों में जब तक,

मैं न भूलूंगा तुझे।

मैं सदा गीतों में अपने

तानको भरता रहूंगा।

(2)

जीवन पथ पर जीवन साथी बनकर हमने देख लिया

कस्में रस्में इस दुनियां की आंख से हमने देख लिया।

जीवन बगिया के उपवन में

हर फूल गिरा मुरझा करके

इन आंखों में आंसू भर के

अपने न रहे अपने बनकर अपनों का सहारा देख लिया।

× × × × × ×

तुम दूर हुये हम दूर चले,

जीने का सहारा टूट गया

सागर में एक तूफान उठा

मांझी का सहारा छूट गया।

घर के चिराग से ही घर अपना हमने जला के देख लिया।

× × × × × × ×

अरमानों की जली अर्थियां,

रूपन कफन को ओढ़ चले

जिनकी याद में जीवन बीता

वह खुद से मुख मोड़ चले।

हम दोष तुम्हें कैसे देंगे, किस्मत का तमासा देख लिया।

जिनको हमने अपना समझा

बेगाने बनकर छूट गये

जिन सपनों को अपना समझा

जब हुआ जागरण टूट गये।

झूठी दुनिया की राहों में, अपने को भटकता देख लिया।

(3)

तुम्हें जब से अपना समझने लगे हैं,

कदम राह पर से बहकने लगे हैं।

तुम्हें जब से जाना तुम्हें अपना माना

तुम्हारे लिये हो गया हूं दिवाना,

सभी तार दिल के धड़कने लगे हैं।

अगर मैंने पूजा तो तुमको ही पूजा

ख्यालों में अब तक नहीं कोई दूजा,

तुम्हारे बिना हम तड़पने लगे हैं।

मुझे मत भुलाना, अगर मिल न पाना,

कदम चूम लेगा हमारा जमाना।

नयन अब हमारे तरसने लगे हैं।

कभी प्रात होगी कभी रात होगी

कि हर जागरण में मुलाकात होगी

अरमान दिल में मचलने लगे हैं।

(4)

नदी की वह धारा

कहे सुन किनारा

न तुम मिल सकोगे

कभी भी दुबारा।

ख्यालों में तुम थे कि यादों में तुम थे,

मदहोश मेरी निगाहों में तुम थे।

मगर एक पल का था रंगे नजारा

न तुम . . . .

बड़ी बेवफा हैं जमाने की राहें,

किसे थाम लें हम बढ़ाकर के बाहें

न इतबार दुनिया में कोई हमारा

न तुम . . . . . .

बहारें भी आयीं मगर एक सपना

खिजाओं ने केवल दिया साथ अपना

जमीं के भी जर्रे ने एक दिन पुकारा

न तुम. . . . .

सपनों की डोली में हम दोनों आये

खुली नींद तुमको न हम देख पाये

न सपने बने जागरण का सहारा।

(5)

मैथिलीशरण गुप्त की पुण्य तिथि पर

अमर देश का अमर पुजारी

मानवता का वृत धारी

भारत मां की गोद छोड़कर

चला गया वह सत धारी।

बिना मैथिली इस मिथिला का

कण कण रूदन मचाता

आज अकेला छोड़ के हमको

तोड़ चले जीवन नाता।

आज भारती की आंखों में

आंसू भर भर आते।

जो कुछ तुमने दे डाला है

शब्द नहीं कह पाते।

नेहरू वियोग सह सके नहीं

चिरगांव इसी में छोड़ा

प्रेम अधिक था सियाशरण से

जाकर नाता जोड़ा।

(6)

स्वतंत्रता दिवस पर

आज के दिन आजाद हुआ था, हिन्दुस्तान हमारा।

हर जर्रे में गूंज उठा था, जय भारत का नारा।

आज का दिन पाने के खातिर

बहनों का सिन्दूर लुटा

लुट गये आंचल खाली गोदें,

कितनों का श्रंगार लुटा।

बलिदानों की अमर ज्योति में दर्शन मिला तुम्हारा।

आज के दिन . . . .

जालियां वाले बाग में मां का,

आंचल बनकर कफन जला

हर गोदी बन गयीं चितायें

जब डायर का हुक्म चला।

आजादी के लिये मिटेंगे, मर्दानी ने ललकारा

आज के दिन . . . . . .

भगत सिंह जिन अरमानों को,

लेकर फांसी पर झूले

चन्द्रशेखर ने गोली खायी।

कौन भला उनको भूले।

राणा सांगा अरू प्रताप के बही खून की धारा।

आज के दिन . . . . . .

आज बंधा लो राखी अपनी,

बहनों से ये भैया।

मिल न सकी राखी भी उनको,

जो सोये रण शैया।

उन बहनों के हाथ में राखी, आंख में जल की धारा।

आज के दिन . . . .

जगती में जब तलक जागरण,

सूरज में भव ज्योति रहे।

पन्द्रह अगस्त की पावन बेला

भारत भू पर बनी रहे।

अमर रहे यह दिन जब लौ है गंग जमुन की धारा

आज के दिन. . . . .

(7)

खुशियां न मिलीं, गम खार मिले, हर फूल चमन के मुरझाये।

दिल दर्द किसी से कह न सके, बस आंख में आंसू भर आये।

उस बाग के माली बन बैठे

जो बाग था केवल कांटों का

एक चांद उगा फिर डूब गया

यह चांद था कुछ ही रातों का।

रात अंधेरी संग कांटों का हर पल मन में घबराये।

खुशियां. . . . .

अधिकार मिला उस दौलत का

जिस दौलत को हम पा न सके

यह जीना भी क्या जीना है

जो मंजिल तक पहुंचा न सके।

हँस-हँस के जमाने ने पूछा क्यों आंख में आंसू भर आये

खुशियां. . . . . .

एक चोट लगी और दर्द उठा,

मरने का इरादा कर बैठे।

हमदर्द बना ये जग सारा

जीने की तमन्ना कर बैठे।

जीना भी न भाया इस जग को फिर मौत के तट पर ले आये

खुशियां . . . .

दुनिया ने खुशी अपनी देखी

कोई दर्द किसी का क्यों जाने

भगवान नहीं वह पत्थर थे

पूजा था जिन्हें हम अनजाने।

मेरी खुशियों के आंगन में जग ने कांटे ही बिखराये,

खुशियां . . . .

मूल्यांकनः

कवि की उपर्युक्त रचनायें इस बात का परिचायक हैं कि वे हिन्दी काव्य के सशक्त हस्ताक्षर थे। श्रृंगार विरह, वेदना एवं राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत कवि की रचनाओं में माधुर्य एवं लालित्य का गुण विद्यमान है। रचनायें सरस एवं भावपूर्ण हैं। कवि ने हृदय की वेदना को अत्यन्त मार्मिक व सुन्दर ढंग से चित्रित करने का प्रयास किया है। संक्षेप में हम कवि को अच्छे कवि की श्रेणी में रख सकते हैं।

----

(21) पं0 रामनारायण व्यास :

जीवन परिचयः

इनका जन्म मौदहा तहसील के अंतर्गत ग्राम मुस्करा में वि0 1937 में एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। ये एक अच्छे ज्योतिषी थे। ये आर्य समाजी थे और उसके समर्थन में इन्होंने विधवा विवाह भी किया था। इनके पुत्र पं0शिवराम त्यास भी कवि हैं। इनकी मृत्यु वि0 2011 में हुई।

काव्य कृतियांः

इनका कोई प्रकाशित काव्य साहित्य नहीं है। किन्तु अप्रकाशित काव्य साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है इनके रचना संग्रह के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

विधवा विवाह के संबंध में कवि की एक रचना देखिये-

(1)

मोरो काहू पै बस नइयां, कैसौ करिये गुइयां।
मात पिता ने ब्याह रचे ते, बिछुर गये हैं सैंया।
ससुरे मां भई सास सरीखन, ननदी लगत डटैयां।
मैके मां कोऊ मरम न जाने, जी जारें भौजइयां।
धरम सभा में चलन चली हैं, बिछुरे जोड़ मिलैंयां।
बिगड़ी बना देत नारायण, उनकी सरन जबैंयां।

हवन के महत्व को बताती हुई इनकी एक सुन्दर रचना देखिये-

करसें कर लेव होम अगिन मां, कुछ ना परौ ठगन मां।
जो घृत परत कुण्ड के भीतर सो चढ़ जात गगन मां।
मिल मिल जात सूर्य की किरनन बरसत मेघ गगन मां।

जल सें पैदा अन्न, अन्न सें परजा रहत मगन मां।
सब सें सिरें पुण्य नारायन, एही संग लगन मां।

और श्रंगार रस से ओत प्रोत कवि की यह सुन्दर रचना पठनीय है:-

॥3॥

बालम बाग तयार तुम्हारो, है न कोउ रखवारो।
कदली पुर्खी, पर्की नारंगी, लाल कली रंग ढारो।
भर आओ दूध नारियल भीतर, झुक आयो अंधयारो।
विगसत अनार विम्ब कुसमावलि, खिलो कमल दल न्यारो।
जलदी खबर करो नारायन, अब ना इहै उजारो।

कवि ने भक्ति भावपूर्ण रचनायें भी की हैं अपने नगर मुस्करा की देवी की प्रशंसा में कवि की यह सुन्दर छन्ददार फाग देखिये:-

॥1॥

टेक: लज्जा राख कालिका काली, नगर मुस्करा वाली।
छन्द: मुस्करा वाल, काली कृपाल, दीनन दयाल आनन्द राशी।
चौगिरद ताल, सोहत विशाल, बगिया रसाल, अति फर खासी।
सैर : खासी है सड़क आगे, बाजार लगा है।
है मेर कें बगीचा, माझा में बारगा है।
उड़ान : मांझा में है बारगा, रहत कुआं पर माली।
मालिन चौका रोज लगावै, नगर मुस्करा वाली।
टेक : कुरसीदार बनी है बैठक, उड़त धुजन की ताली।
छन्द: लाली न धार, साजत लिलाट,
करते हैं पाठ द्विज दल अन्दर।
नारियल कों डाट, बैठे हैं भाट,
सिन्नी को बांट झारत मन्दिर।
सैर : मन्दिर हैं दो अंगारी, सुन्दर है चार दो आरी।
जहां आन आन पण्डितन, पूजा बिस्तारी।

उड़ान : बिस्तारत पूजा कुण्ड ढिंग, जगतमात रक्षपाली।
मठ पर कलस धरे कंचन के, उड़न धुजन की लाली।

टेक : जो कुछ मुख सें निकर जात है, वचन परत ना खाली।

छन्द : खाली न बात, कनकउ दिखात,
जो निकर जात, मुख से बानी।
झनझनझनात, झालर प्रभात,
सुन सुन सकात खल अज्ञानी।

सैर : अज्ञानी दुष्ट डरते, धरते पांव न आगे।
जग में है कला जाहिर, दरसन से पाप भागे।

उड़ान : भागत दरसन नहिं करत, कपटी, क्रूर, कुचाली।
पहरे जहां लगत पण्डन के, वचन परत ना खाली।

टेर : संकट दूर करत सेवक के, हरत सकल जंजाली।

छन्द : जंजाल दूर, करतीं जरूर, सेवक हुजूर, कइयक ठाढ़े।
तिनको सऊर, दो भरपूर, संसय को चूर कर कर ठाढ़े।

सैर : काढ़े हैं सकल संसय, आसय जनायकें।
कहते हैं कवि नारायन, विनती सुनायकें।

उड़ान : सुन गुन विनती दास की, जुदी करत कंगाली।
संकट दूर करत सेवक के, हरत सकल जंजाली।

विनयपूर्ण रचनायें भी कवि ने की हैं। एक उदाहरण देखियेः-

(5)

दोहा : बारि बरोबर बारि है, तापर ढुरत बयार।
रघुबर पार उतारहैं, तुलसी सोच विचार।

टेक : रहगो बारि बरोबर बारो, रघुबर पार उतारो।
यो संसार अगम भौ सागर, सूजत नहीं किनारो।
माया पवन ढकोर जोर सों, मन केवट मतवारो।
नारायन कवि दीन हीन कों, अबकीं बेर उतारो।

जल की महत्ता पर प्रकाश डालते हुये कवि की एक सुन्दर रचना देखिये-

(6)

जग में को पानी की सानी, सब चीजें हरयानी।

ई पानी सें प्रकट भये हैं, ऋषी मुनी औ ज्ञानी।

पानी की तरवार सीस तें, तरवा जाय समानी।

बेपानी बेकार होत है, मानुस की जिन्दगानी।

पानी सें सब होत नरायन, कहां सें पैदा पानी।

देश पर जो गुलामी अंग्रेजों के शासन के रूप में आयी थी उसका कारण कवि की नजर में ब्रह्मचर्य का अभाव है, इस पर एक रचना देखियेः-

(7)

जब सें ब्रह्मचर्य व्रत छूटो, स्यार सिंह पै रूठो।

हो गये थकित बुद्धि विद्या बल, धुजा धरम को टूटो।

गऊ, कन्या व्याकुल भई तलफें, करम अभागी फूटो।

स्वामी के सेवक नारायन, देश विदेशन लूटो।

मूल्यांकनः

इस प्रकार उपर्युक्त रचनायें कवि के काव्य कौशल का प्रमाण हैं। कवि ने भक्ति, विनय, श्रंगार एवं राष्ट्रभक्ति सभी विषयों पर सफलतापूर्वक लेखनी चलाई है। बुन्देली में किया गया काव्य सृजन माधुर्य एवं लालित्य के गुणों से युक्त है। जन जन की समझ में आ सकने वाले सरल शब्दों का प्रयोग कर कवि ने अपनी रचनाओं को जन सामान्य तक पहुंचाने का प्रयास किया है तथा यत्र तत्र अलंकारों के प्रयोग से रचनाओं में सजीवता लाने का प्रयास किया गया है। जनपद के लिये कवि का यह योगदान सराहनीय है।

तहसील - हमीरपुर

⟨1⟩ श्री विजयचन्द सिंह चौहानः

जीवन परिचयः

इनका जन्म 1 अप्रैल सन् 1936 में हमीरपुर तहसील के अंतर्गत ग्राम इंगोहटा में एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री भूरे सिंह चौहान और माता जी का नाम श्रीमती लल्ला देवी चौहान था। इन्होंने इण्टरमीडियेट तक शिक्षा प्राप्त की है और ग्राम विकास अधिकारी के पद पर सन् 1994 तक कार्य किया है। वर्तमान समय में ये अपने गांव इंगोहटा में ही रहकर कृषि कार्य करते हैं। काव्य सृजन के कार्य में आप अभी भी पूर्ण समय दे रहे हैं।

काव्य कृतियांः

अब तक इनकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं ⟨1⟩ रण निनाद ⟨2⟩ मेहर सुगीता तथा ⟨3⟩माटी के भगवान।

सन् 1962 में प्रकाशित पुस्तक ' रण निनाद ' में वीर रस के फुटकर गीत दिये गये हैं। ' मेहर सुगीता ' मेहेर बाबा पर आध्यात्मिक गीतों का संग्रह है जिसका प्रकाशन सन् 1964 में हुआ था। सन् 1966 में प्रकाशित पुस्तक ' माटी के भगवान ' लघु काव्य है। एक अन्य फुटकर गीतों का संग्रह 'फूल झरे' है जो अभी अप्रकाशित है इसके अतिरिक्त लगभग एक हजार गीतों का संग्रह अप्रकाशित रूप में कवि के पास है। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

⟨1⟩

⟨'माटी के भगवान' लघु काव्य से⟩

जगो ओ! माटी के भगवान।
जगो ओ! आर्या की संतान।
हो तुम्हीं मुहम्मद , राम मेरे,
गुरू गौतम, गांधी, श्याम मेरे।

युग के वर पौरूष प्रणव वीर

भारत के मेहेरवान् मेरे।

हो युग युग के निर्माता तुम

भारत के भाग्य विधाता तुम।

तुम खरे कसौटी में निखरे,

जीवन के जीवनदाता तुम।

तुम गणेश हो, तुम सरस्वती,

तुम सदा संयमी, वीर व्रती।

तुम ब्रह्म, विष्णु, रूद्रावतार।

तुम त्यागी तपस्वी महाजती।

तुम परिवर्तन के शक्ति रूप

श्रद्धा, सेवा, सत के स्वरूप।

तुम अमर समर के ओज पुंज।

जय तथा पराजय युगल रूप।

जगो ओ! भारत वीर किसान।

जगो ओ ! माटी के भगवान।

(2)

('रण निनाद' से)

उठ प्रिये भवानी बन कराल।

युग युग से सिमटी लपट लाल।

कब तक केशों में रखोगी।

ढककर फूलों में प्रलय ज्वाल।

तेरे भारत की अखण्डता, तेरे शंकर की प्रचण्डता।

हो रही दुखित हो रही व्यथित, तेरी माता की महानता।

नयनों में रांज मत अमृतांजन आंखों में भर विद्युत प्रकाश।

मैं चला आमरण को पाने हिम शिला रूढ़कर वज्र घोष।

कलियों से चिनगारी फूटे, हरियाली शोणित पान करे।

अनझुन की मादकता बिसार चल प्रिये रक्त स्नान करें।

खप्पर धर करवाल उठा अब इन मृणाल सी बाहों में।
बन आज चण्डिका चामुण्डा, रण आग फूंकती आहों में
दे रोक गीत कल कोकिल से बम बम कर भैरव राग सुना,
हिम की चट्टानें दहक उठें, वह प्रलयंकर का साज सुना
आज खोल दो तुम झन्झा तूफान भरे जो आंचल में
भारत नारी का वर सुहाग कर वरण भरण हिमांचल में
हुंकार सुहागिन फिर सुहाग बढ़ती चल दावानल प्रवाल
तेरे मस्तक के टीके से प्रकटे युग युग का प्रखर ज्वाल।
भर दे जन जन में महामरण का तुमुल घोष संदेश प्रिये
संहार मचाने को तत्पर हो चल दुर्गा दल साथ लिये।

(2)

मुक्तक

इक वीणा के बिक जाने से स्वर नीलाम नहीं होते हैं।
कुछ लहरों के खो जाने से सागर बेकाम नहीं होते हैं।
जहां चमकती है बुलबुल हंसती है कलियां
कुछ फूलों के चुन जाने से उपवन वीरान नहीं होते हैं।

झंझा के डर से कभी सुमन उपवन न छोड़ेंगे
चन्द्रग्रहण के डर से तारे गगन न छोड़ेंगे
डाल कटीली पर ही गुलाब खिलते हैं महकते हैं
हम देश के लिये बलिदानों का चलन न छोड़ेंगे।

(4)

गीत

मैं गगन का गीत हूं, तुम वन्दना हो धरा की।
मैं सपन का स्वांग हूं, तुम हो जनम की आर सी।
मैं तुम्हारे विम्ब को अमरत्व देना चाहता हूं।
तुम इसे स्वीकार कर लो।

दीप बुझने तक जला जिस तिमिर में

वह चिरंतन एक रस है आज तक

इस तरह आयाम के बंधन में हूं मैं मुक्त बंधन।

पर सपन साथ देता हूं विवश

मैं रूप हूं पाषाण का तुम सुरभि हो पवन की

मैं चितेरा चहेतों का चाह हो तुम सुमन की

मैं स्वनिर्मित सीम के उस पार जाना चाहता हूं।

तुम इसे स्वीकार कर लो।

बोझ ढोने को उमर है थकन की

पर उमर का बोझ जीवन ढो रहा है आज तक

सुख दुख को रात दिन वह सिर झुकाये।

मौत मरकर जी रही है आज तक

मान हूं मैं मनुज का तुम मान्यता हो जनम की

अर्थ हूं मैं देह का तृप्ति हो तुम प्राण की

पाश मैं अभिशाप का अब तोड़ देना चाहता हूं।

तुम इसे स्वीकार कर लो।

× × × × × × × × × ×

(5)

गीत

चेतना जब चित्त की बेहाल हो गयी

सांसों की बस्ती कंगाल हो गयी

इसीलिये जिन्दगी सवाल हो गयी।

दर्पण संवारता रहा शशि बदन

पथ निहारते निहारते थके नयन

सांझ जली रात घुली आस की दुल्हन

पर आदमी न बन सका आदमी का मन

तो पीर प्रेयसी ही कंठमाल हो गयी

इसीलिये जिन्दगी सवाल हो गयी।

रात जाग जाग कर तारों की छाओं में
दर्द गा रही गजल रागों के गाओं में
संग्राम पर बिखर गयी सांस बांसुरी
कितनी जीत हार गयी दिल लगी के गांव में
और प्रीत शलम के लिये मसाल हो गयी
इसीलिये जिन्दगी सवाल हो गयी।

पीने को पी गई उमर उमर का बांकपन
प्याले सब रीत गये होश हो गये हिरन
जैसे सेज साधों की साजे सुबह हो जाये
रूप और श्रंगार को संवारती रहे दुल्हन
पल पल संजोई साल-साल हो गयी
इसीलिये जिन्दगी सवाल हो गयी।

मूल्यांकन:

श्री विजयचन्द सिंह चौहान द्वारा सृजित काव्य साहित्य साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। भाषा सरल एवं प्रवाह पूर्ण है। छायावाद इनकी कविताओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है वीर रस से ओत प्रोत ओजपूर्ण रचनायें कवि ने अधिक संख्या में की हैं। कवि को भाषा का गहरा ज्ञान प्रतीत होता है। संक्षेप में जनपद के हिन्दी काव्य के सशक्त हस्ताक्षर इन्हें माना जाना चाहिये।

[2] श्री गया सिंह परिहार:

जीवन परिचय:

श्री गया सिंह परिहार का जन्म सं0 1978 कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया को ग्राम इंगोहटा [हमीरपुर] में एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री नारायन सिंह तथा माताजी का नाम श्रीमती कौशिल्या देवी था। इन्होंने कभी किसी विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं की। ये अपनी रचनायें दूसरे व्यक्ति के द्वारा लिखवाते हैं। वर्तमान समय में पूर्णतया कृषि कार्य के लिये समर्पित हैं। किंतु कृषि कार्य इनके काव्य सृजन में कभी अवरोध नहीं बन सका है। आप जनपद के एक अच्छे कवि हैं।

काव्य कृतियां:

श्री गया सिंह परिहार की अब तक तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं ⟨1⟩ विजय पत्र खण्ड काव्य ⟨2⟩ मां मुझको भगवान बना दो ⟨3⟩ नूतन पदावली के गीत।

इसके अतिरिक्त ' शब्दवेध ' अप्रकाशित रचना संग्रह है जिसमें लगभग 250 रचनायें हैं। अन्य फुटकर अप्रकाशित रचनाओं का संग्रह भी कवि के पास है तथा निरंतर सृजन कार्य अभी भी चल रहा है।

कवि की प्रकाशित पुस्तक ' विजय पत्र ' खण्ड काव्य एक उत्कृष्ट पुस्तक है इस पुस्तक में महाभारत की कथा को कवि ने अपने ढंग से संजोया है। 56 पृष्ठ की इस लघु पुस्तक की भूमिका श्री शेखर चंद्र निगम साहित्य रत्न द्वारा लिखी गई है। पुस्तक के कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं।

⟨1⟩

उग रहा था प्रेम अंकुर कल्पना अज्ञात से।
सुप्त श्रुतियांनाद करतीं, एक ही स्वर स्वांस से।
क्षुब्ध मानव के हृदय में तारिकायें खिल उठीं।
विश्व, विश्वम्भर विभव को देखते ही हिल उठीं।
ज्योति आभाषित समुज्जवल प्रखर थी विस्तीर्ण में।
द्वेष देहासव सशंकित क्षुद्र हो संकीण में।
मिटा है मोह तिमरालय किरण करूणा सु-अम्बर की।
हुई वाणी प्रसारित जै निरंकारी दिगम्बर की।

⟨2⟩

लाक्षागृह ने लुप्त द्वार लघु,
बन्धु बताया था जिसको।
चाचा विदुर प्रेम से प्रेरित हो,
प्रवर बनाया था जिसको
देख उलूपी का कुकृत्य हम,
सबको ही झुलसाने को।

आज्ञा दी थी दुर्योधन ने,

उसमें आग लगाने को।

(3)

कानन क्रन्दन रहित राज्य में,

चित्त शान्त सब सोते थे।

सभी ओर छाई नीरवता,

केवल हम ही रोते थे।

रात्रि देवि थी लगी ऊंघने,

सकल रात जगते जगते।

बैठे तरू तर व्याकुलता थी,

बहुत थके भगते भगते।

कवि की दूसरी प्रकाशित रचना ' नूतन पदावली ' के गीत हैं जो आकाशवाणी छतरपुर से प्रसारित होते हैं। इस लघु पुस्तक में 32 पद हैं। अवलोकनार्थ कुछ पद नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

तुम बिन हरि सुख नहिं कहुं पायो।

बैठे जबहिं आसु तरू डारी, तबहीं ते बिलगायो (1)

जीवन मरन होत नहिं कबहूं, वृथा भ्रमहि उपजायो।

भवनिधि अमित अगम करि मानत सुगमन कोउ लखायो (2)

सरल सींव भाषत कन कन प्रभु सो हिय कतहुं न लायो।

सुमिरि स्वामि करूणा वरूणालय तबहिं सहज करि पायो (3)

(2)

रसना कैसे तव गुन गावै।

निशि दिन पर अपवाद कुटिलता, ताही सों रट लावै (1)

स्वाद भेद कहि वस्तु नाम सुनि रहि रहि पुनि ललचावै।

पर चुगली कीरत करमन को बार बार कहि ध्यावै (2)

कबहुंक गुन गोविन्द के गावत तव भव सुगमहिं होतो।

छूटत दुसह दरिद्र दोष दुख गुन निरमल मन धोतो। (3)

पौढ़त यह शरीर सेजहिं पर, जिव श्रम कबहुं न जावै।

चिन्ता चाह शिथिल कीन्हों यहि जेहि ध्यावै सोइ पावै ॥4॥

कवि की तीसरी प्रकाशित पुस्तक ' मां मुझको भगवान बना दो ' है इस पुस्तक में 92 पृष्ठ हैं जिसका प्रथम संस्करण 1969 में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक की समीक्षा डा0 रामकुमार वर्मा रिसर्च प्रोफेसर इलाहाबाद विश्वविद्यालय, डा0 त्रिभुवन सिंह, हिंदी विभागाध्यक्ष काशी विश्वविद्यालय तथा श्री भगवानदास शुक्ल अतिरिक्त जिलाधीश झांसी के द्वारा लिखी गयी है।

' जिस शक्तिमान में दोष न हो, भगवान उसे ही कहते हैं ' पंक्ति के भाव पर यह पुस्तक लिखी गयी है कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

॥1॥

तेरा सुत कहला करके
फिर न किसी का कहलाऊं
यह होगा अनुराग तभी,
जब अजर अमरता पा जाऊं।

तू मेरी ही माता होकर
फिर न किसी की बन जाये।
जग में आने जाने की ही,
सारे शुभ सुख पा जाये।

ऐसा सुंदर प्यार पिला दो
मां! मुझको भगवान बना दो।

गुरूता प्राप्त करूं गुरूजन से
आज्ञा पालन सेवा करके
पूर्ण प्राप्ति बिन शक्ति न खोऊं
समझूं क्षमा धैर्य कर धर के।

शासन का अधिकार कभी भी
भूल न शासक बन खोऊँ
तेरा ही सब रूप समझ
तेरे ही पाने को रोऊं

सरल विमल विज्ञान सिखा दो

मां! मुझको भगवान बना दो।

कवि की एक अन्य सुन्दर रचना देखिये :-

(2)

वीणा के तार ढीले थे।

आंसुओं से श्वते वस्त्र गीले थे

शोकवश अंग अंग पीले थे।

ग्लानि भरे भाव कुछ लजीले थे।

पुस्तक पड़ी थी कहीं, हंस का पता नहीं

टहलते अवध में हुई थी उन्हें शाम

मुख से निकल रहा जय वत्स जय राम

एक एक कल्प बीत रहा एक एक श्वांस का

मैं ही कारण बनी वैदेही वनवास का।

कवि की अप्रकाशित पुस्तक ' शब्द वेध ' की एक सुंदर भावयुक्त रचना देखिये :-

(3)

सरजू धारा करती कल कल,

था शीतल श्वेत सलिल निर्मल

लोहू लुहान यह रक्त धार

फूटा किसका यह मधुर प्यार

संध्या की लाली क्या सरिता के बीच हुई?

किस दुखिया का हृदय चीरकर बीच हुई

जो कहता नहीं श्रवण ही उसका उर दिया छेद

धिक्कार तेरा यह शब्द वेध

सोया है यह संसार हुआ यह प्राण हीन

चीख निकलती दो हृदयों से होयेगी वह भी विलीन

पाप इसी का पल पल तेरा क्या प्रायश्चित हो जायेगा

उद्धार अरे तेरा प्राणी वह राम नहीं कर पायेगा।

सामाज़िक संदर्भो में भी कवि ने अपनी लेखनी चलाई है वर्तमान विषमताओं पर व्यंग करता एक सुंदर गीत देखिये :-

(4)

दंगों की आंधी में टपके अधिकारों के आम बांट दो
वोट नीति की टेढ़ी चालें चलते प्यादे बन वजीर
दुश्चरित्र दंभी दु:शासन करते मर्यादा का हरण चीर
आरक्षण के दावानल में मानवता का आत्मदाह हो
प्रतिभाओं का गला घोंटकर भारत भर की युवा शक्ति
उद्दाम बांट दो भेद भाव बेदाम बांट दो।

तुष्टिकरण अलगाव वाद कर कर प्रपंच
रच लो घोर महाभारत बंटवारे का
शंख और अभिमन्यु हजारों हो जायें आहूत
भीष्म , कर्ण की बलि दे दो शल्य और घनश्याम बांट दो
दंगों की आंधी में . . . . . .

बन गयी अयोध्या धर्मयुद्ध का कुरू क्षेत्र
ये कूटनीति का चक्रव्यूह रच रहे द्रोण
वीर पार्थ की रथयात्रा को रहे मोड़
गद्दी पर धृतराष्ट्र कर रहे जोड़ तोड़
जाति बांटकर नाम बांट दो वर्ग बांट कर काम बांट दो
धर्म बांट दो राम बांट दो
निधर्न को तपती दोपहरी, धनवानों को शाम बांट दो
पंजाब तमिल, आसाम बांट दो, हिन्दुस्तान तमाम बांट दो
दंगों की आधी में . . . .

मूल्यांकन:

श्री गया सिंह परिहार ओजस्वी विचारों के कवि हैं। इनकी रचनाओं में सामाजिक विसंगतियों के प्रति गहरा क्षोभ स्पष्ट दिखाई देता है। भाषा सरस सरल एवं प्रवाह युक्त है। राष्ट्रीय विचार

धारा के ओजस्वी कवि के रूप में इनका किया गया प्रयास सराहनीय है। कविता का भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों ही सुन्दर हैं। कवि के द्वारा हिन्दी काव्य साहित्य को किया जा रहा योगदान अविस्मरणीय है।

(3) श्री भूपत सिंह परिहार :

जीवन परिचय:

इनका जन्म ग्राम इंगोहटा (हमीरपुर) में 15 मई सन् 1960 को एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामकिशुन सिंह परिहार तथा माता जी का नाम श्रीमती बेला कली है। आपकी शिक्षा एम0ए0, बी0एड0 है। वर्तमान समय में आप अध्यापक पद पर कार्यरत हैं।

काव्य कृतियां:

इनका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। लगभग 100 रचनायें अभी तक इन्होंने की हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

देश रोता रहा विश्व हंसता रहा।
आपसी द्वेष में राष्ट्र जलता रहा

मत मिटाओ इसे एक नारा दिया
इन्दिरा ने स्वयं कफन ले लिया
कहर क्रूरता का बरसता रहा
देश रोता रहा विश्व हंसता रहा।

घर जलाये गये दिल जलाये गये
प्यार सौहार्द्र के पर जलाये गये
राष्ट्र ज्वालामुखी सा धधकता रहा
देश रोता रहा विश्व हंसता रहा।

तुम संवारो चमन को मेरे दोस्तो
कहीं जल न जाये चमन दोस्तो।

आसमां क्या करे वो पिघलता रहा
देश रोता रहा विश्व हंसता रहा।

॥2॥

॥ सुभाष जयन्ती पर ॥

मैं नमन करूं कैसे तुमको,
हे भारत के भव्य भाल।
युग युग तक ऋणी रहेगा ही,
ये तेरा भारत विशाल
तुम उग्रनीति के हुये समर्थक,
बन भारत के कर्णवीर।
शाहन सहगल ढिल्लन से थे,
तेरी सेना के महावीर।
जीवन भर ढूंढ़ी आजादी,
बनकर साहस का महाजाल।
मैं नमन करूं कैसे तुमको
हे भारत के भव्य भाल।

॥3॥

तुम तो दिन की प्रथम किरण हो,
मैं हर शाम रहा करता हूं।
कविता कामिन के आंचल में,
गम के गीत लिखा करता हूं।
पता नहीं जल से निकली हो,
या नभ से उतरी लाली हो।
इसी सोच में मैं रूक जाता,
तुम तो दूर निकल जाती हो।
छलकाती रस कलम उठाकर
तेरी जीत लिखा करता हूं।
तुम तो दिन की प्रथम किरण हो,
मैं हर शाम रहा करता हूं। ॥1॥

बादल बीच ठिठोली करती,

आंगन में भी बल खाती हो।

स्वर्णिम स्वर्णिम गहनों वाली,

मुझसे फिर क्यों शरमाती हो

मदमाती आंखों से नित मैं,

मन की बात कहा करता हूं।

तुम तो दिन की प्रथम किरण हो मैं हर शाम रहा करता हूं।

सावन हों या शिशिर बहारें

तन को तपन दिया करती हैं।

फिर भी आंगन की अगियारी

जल कर साथ दिया करती है।

दीपक की सूखी बाती सा

मैं दिन रात जला करता हूं।

तुम तो दिन की प्रथम किरण हो

मैं हर शाम रहा करता हूं।

मूल्यांकन:

श्री भूपत सिंह परिहार जनपद के एक उदीयमान कवि हैं। इनकी कवितायें सरल एवं वोधगम्य शैली में लिखी गयी हैं। विरह वेदना के भावों को समाहित किये हुये इनकी रचनायें मन को छू लेती हैं।

(4) श्री लखन लाल जोशी:

श्री लखनलाल जोशी का जन्म ग्राम मिसरीपुर (हमीरपुर) में 2 मई सन् 1946 को एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम पं0 लक्ष्मीनारायण जोशी एवं माता जी का नाम श्रीमती विद्यादेवी था। इन्होंने एम0ए0 एल0टी0तक शिक्षा प्राप्त की है। तथा वर्तमान में विद्यामंदिर इण्टर कालेज हमीरपुर में हिंदी के प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी अभी तक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं है। एक खण्डकाव्य ' युगान्तर ' इनके द्वारा लिखा गया हे जो अभी अप्रकाशित है। यह खण्ड काव्य पांच सर्गो में विभाजित है, ये सर्ग हैं उपासना, उत्पत्ति, उत्थान, उद्बोधन तथा उद्गति।

इनका एक अन्य अप्रकाशित कविता संग्रह ' मंजुल रश्मि ' है इसे 30 मार्च 1987 को पूर्ण किया गया था। अन्य फुटकर रचनाओं में राष्ट्रीय गीत, व्यंग एवं विभिन्न विषयों पर लिखे हुये छन्द हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

('मंजुल रश्मि' काव्य संग्रह से)

(उक्त काव्य संग्रह में कवि ने अपनी दो पुत्रियों मंजुल व रश्मि को प्रतीक बनाकर रचनायें लिखी हैं)

तुम हृदय की चेतना या वेदना का भाव उज्जवल।
आन जन्मी ललित कुल में रक्त का संबंध निर्मल।
भाग्य की भवभूति अथवा, नेह की धारा प्रबल
आ गई ज्यों गेह में ही, मुक्ति की काया सबल।

(2)

आंजती अंजन कभी जब, मातु खांजन से दृगों में।
छुटक कर जा दूर छिपती द्वार के सम्पुट अरों में।
अधा रंजक वर्तिका ले, मोद से वह निज करों में।
रूप मर्कट सम बनाकर, देखती मुख दर्पणों में।

(3)

नेह चुम्बन का न जब तक, मैं सबल सम्बल दिखाता।
छड़ी यष्टिका ले हाथ में, यों शून्य में फिर फिर घुमाता।
अभी मारूंगा चलो, कह गोद में उसको उठाता।
तब कहीं सारे सदन में, शान्ति का सोपान आता।

(4)

कोमल कभी कलाई अपने बहना से गुदना गुदवाती।

लेकर लाल सलाई दीदी, फिरती सबके तिलक लगाती।

कभी चीकनी चट पर लिखती, उसका सत्यानाश बनाती।

अथवा रबड़ पेंसिल पटरी, ले भइया से दूर छिपाती।

('युगान्तर' खण्ड काव्य से)

(2)

प्रथम सर्ग 'उत्पत्ति' से

चलो दृष्टि फिर अपने पथ पर,

लेकर हृदय अमित उल्लास।

जहां कुंज की वल्लरियों में,

झांक रहा सुख का मधुमास।

अनुपम उपत्यका की प्रातः,

सुष्मित छटा निरख अनमोल।

प्रकृति सलोनी लुटा रही थी,

अपनी सुरभि विभा ज्यों खोल।

बन कदम्ब की सघन छांह में,

था सोया विश्रान्त युगल

तृण गुल्मों के मधु स्वप्नों में,

अन्तर्मन के भाव प्रबल

मृगी कभी करवट लेती थी,

बीच बीच में दृष्टि विलास।

सोये मृग के उदर नाल से,

पा कस्तूरी मधुर सुवास।

द्वितीय सर्ग 'उत्थान' से

सुत वियोग में बिलख रही थी,

यहां देवकी अति बेहाल।

अभी अभी जो हुआ प्रस्फुटित,

अष्ट चक्रमय अन्तिम लाल।

अरी निशा क्या नहीं चाहती

मेरा सुत पाये सौ साल।

तेरे विशाल आंचल का संबल,

मिल जाये उसको तत्काल।

तृतीय सर्ग 'उद्बोधन' से

लिये गोद में उस तनया को,

उतर रहे बस यमुना पार।

स्तम्भित हो गई वाटिका,

ठहर गई सरिता की धार।

ममता की झोली में विधूत

मांग रही अपना उद्धार।

अबला के विक्रान्त भाग्य में,

कुयश नहीं उसको स्वीकार।

चतुर्थ सर्ग 'उपालम्भ' से

हुआ जोर का शोर भोर का,

बज गया अष्ट वादन था।

अरे देवी सुत का अब तो,

प्रायोजित उच्चाटन था।

लिये तेग अति वेग आ गया,

बढ़ा क्रोध का ज्वार था।

वह खड़ा देवकी के समीप,

हत्या का भूत सवार था।

लाओ मुझे देवकी सुत को,

अट्टहास कर लगा मांगने।

देकर बली काल को अन्तिम,

निर्भय जीवन करूं सामने।

बोला विद्रूप हंसी हंसकर,

यह मेरी कठिन परीक्षा थी।

कब होगा अन्तिम लाल तेरा,

वर्षो से यही प्रतीक्षा थी।

पंचम सर्ग 'उद्गीथ' से

युग युग बीते, सदिया बीतीं,

बीते कल्प और कल्पान्तर।

नारी एक पहेली हो तुम,

मिला न जिसका समुचित उत्तर।

तुम्हीं सुगति का छन्द मालिनी,

मानवता का सुन्दर अक्षर।

तुम्हीं अगति के सोपानों में,

सदा रचाती महा स्वंयवर।

कवि की कुछ फुटकर रचनायेंनीचे दी जा रही हैं।

गीत

संबंधों को खोज रहे हम एक सितारे हैं।

भोर के तारे हैं, भोर के तारे हैं।

अंधकार में डूबे पथ के एक सहारे हैं।

भोर के तारे हैं भोर के तारे हैं।

निज तटबंध काटकर नित नित, नदी बहाती कितना पानी।

किन्तु सदा मझधार कूल की, मिटी न मन की प्यास पुरानी।

रोज रोज लहरों संग चलते, एक उजियारे हैं।

भोर के तारे हैं, भोर के तारे हैं।

देखो धरती के आंचल में, कितने शबनम रोज बिखरते।
निशा सुन्दरी के कुन्तल में, बौने कर से मोती भरते।
शून्य क्षितिज में नव आलोकित, दृग अनियारे हैं।
भोर के तारे हैं, भोर के तारे हैं।

× × × × × × × × × × ×

हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी की प्रशंसा पर लिखा गया कवि का सुन्दर गीत देखिये :-

हिन्दी, हिन्द देश वरदानी

शब्द तुम्हारे अमृत जैसे, अक्षर हैं अक्षय कल्याणी।
मीरा तेरी राज सखी थी, तू है राजमहल की रानी।
बनी सुभद्रा रूचिर महावर, मेंहदी महादेवि वरदानी।
सोहनलाल लाल हैं तेरे, बेटी गौरा पंत शिवानी।
हिन्दी हिन्द देश वरदानी, हिन्दी हिन्द देश वरदानी।

कबिरा सबद रमैनी बोली, पद्मावत ज्यों तेरी डोली।
सूर्यकान्त की सोन चिरैया, प्रिय प्रवास की अमर पहेली।
प्रसाद की ममता में डूबी, तुम्हीं पन्त की हो कौशानी।
हिन्दी हिन्द . . . .

रत्नाकर रहीम रसखान, गाते रहे तुम्हारे गान
तेरे ही आंचल में खेले, देव बिहारी और मतिराम
केशव कीर्ति कौमुदी वाला, भूषण की कविता का पानी।
हिन्दी हिन्द . . . .

(3)

(छन्द होली पर)

दौरे फिरैं मंड़रात तरंग मा,
ग्वाल दिये सब भंग की गोली।
आई फंसी बृजनार नवेली,
न खेली कहूं या ढंग की होली।

देख अकेली न संग सहेली,

टूट पड़ी बृजचन्द की टोली।

होली रे होली की बोली भई,

फिर घेर लई लै रंग की झोली।

लाज की मारी फिरौं भटकी, भटकी न सुहाय मोहै रसवारी

दोऊ आँखिन ओर किये पट की, घट अंतर फूटी अनेकन गारी।

अटकी कां हती बृजवारे लला की, जो बला अबला मोह जानि के डारी।

तब बीथिन आनि कह्यो हरि कै, रंग लेव तुमहि दिल खोल के प्यारी।

मूल्यांकन:

हिन्दी भाषा के मूर्धन्य विद्वान श्री लखनलाल जोशी की कविताओं में उनकी विद्वत्ता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। कविताओं में सुन्दर शब्दों का चयन , माधुर्य एवं लालित्य को बढ़ाता है। सरस एवं प्रवाहपूर्ण रचनायें जोशी जी के काव्य सृजन की विशेषता है। हिन्दी काव्य के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में जनपद में कवि का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

{5} श्री गणेश प्रसाद खरे ' मंजुल मयंक ' :

जीवन परिचय:

श्री गणेश प्रसाद खरे ' मंजुल मयंक ' का जन्म 30 सितंबर सन् 1922 को मुहाल मिसराना हमीरपुर में कायस्थ कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम स्व0 महावीर प्रसाद खरे था। इनकी शैक्षिक योग्यता एम0ए0 {हिन्दी} साहित्यरत्न है। ये सन् 1940 से 1946 तक बांदा कलेक्ट्रेट में कार्यरत रहे। सन् 1946 से 1951 तक जिला परिषद हमीरपुर में कार्यरत रहे एवं 1953 से 1955 तक नेशनल इण्टर कालेज मौदहा में कार्यरत रहे, 1955-56 में रहमानियां इण्टर कालेज मौदहा में अध्यापक रहे 1956 से 1985 तक विद्या मंदिर इण्टर कालेज हमीरपुर में शिक्षण कार्य किया वहीं से सन् 1985 में सेवानिवृत्त हुये। वर्तमान समय में हमीरपुर नगर में निवास कर रहे हैं।

काव्य कृतियां:

श्री मयंक जी की रचनाओं का संग्रह ' रूपरागिनी ' 1952 में प्रकाशित हुआ था। सन् 1960 में ' तन मन की भांवरें ' उपन्यास का प्रकाशन हुआ। सन् 1972 में ' जनता ही अजन्ता है ' काव्य संग्रह का प्रकाशन हुआ। आपके द्वारा सन् 1932-34 में दो नाटक (1) गांव का राजा (2) किसान कन्या लिखे गये जो कई बार राठ व हमीरपुर में मंचित किये गये ये अप्रकाशित हैं। आपकी रचनाओं का एक अन्य काव्य संग्रह ' रूप मंदिर ' अभी अप्रकाशित है।

हमीरपुर जनपद के प्रख्यात कवि श्री मयंक जी देश के विभिन्न स्थानों में कवि सम्मेलनों में पहुंचकर कविता पाठ करते रहे हैं। आपकी कवितायें 25 वर्षों से आकाशवाणी से प्रसारित हो रही हैं। दूरदर्शन से भी आपकी कवितायें प्रसारित की गई हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

चाहे राग दो न दो

चाहे राग दो न दो
मधु पराग दो न दो
आंखों से आंसुओं की गागरी न छीनना
चाहे आस छीन लो
चाहे सांस छीन लो,
सांसों से गीतों की बांसुरी न छीनना।
मन भटक रहा था धूप चांदनी के गांव में
जिस गली गये हजार शूल चुभे पांव में
जब न दर्द कम हुआ, जब न दूर गम हुआ
बैठ गये प्यार भरे बादलों की छांव में
चाहे सूर्य तोड़ लो,
चाहे चन्द्र तोड़ लो।
मेरे नभ से नीर भरी बादरी न छीनना।
स्वर न दो गुलाब के न छन्द हरसिंगार के

हम तो गा रहे हैं गीत आग के अंगार के

राग भैरवी न हो देश पूर्वी न हो

हों न स्वर बहार के न स्वर मिलन बहार के

अश्रु मेघ राग दो

वेदना विहाग दो।

चाह भरी आह की असावरी न छीनना

फूल से बिखार गये सितारे रात आ गई

चांद की दुल्हन के द्वार पर बरात आ गई

नील गगन देखकर चन्द्र किरन देखकर

याद जैसे मन को कोई भूली बात आ गई

दीप दामिनी न हो

रूप चांदनी न हो।

किन्तु याद से भरी विभावरी न छीनना।

[२]

प्यारे लगते चांद सितारे

लेकिन फिर भी सब से प्यारे

वे तारे जो छूट गये हैं।

कितने मधु बसन्त मुखरित हैं मेरे इस मन के मधुबन में

जाग रहे हैं प्रतिपल कितने मादक मोहक स्वप्न नयन में

कितने ही सुख के क्षण लूटे, मैंने अपने लघु जीवन में

जिनकी अक्षय अजर अमर छवि अंकित है मन के दर्पण में

लेकिन फिर भी सबसे प्यारे

वे निष्ठुर निर्मम निर्मोही

क्षण जो मुझको लूट गये हैं

इस जीवन की दीवाली में नित्य नये मैं दीप जलाता

नित्य जगाता रूप रश्मियां, नित्य ज्योति के फूल खिलाता

इन दीपों को कर में लेकर प्राणों का मधु स्नेह पिलाता

हर दीपक से ममता है जो नित्य आरती पर चढ़ जाता

लेकिन फिर भी सबसे प्यारे

दीप वही जलने से पहले

जो हाथों से छूट गये हैं

जीवन बीता गाते गाते गीतों के नव धन बरसाते
हर आंसू को मोती कहकर उसका रूप अनूप लुटाते
हर आहत आह की आग पर मधु पराग की रंग चढ़ाते
गीत विहग से उर में उठते स्वर के स्वर्ण पंख पा जाते
लेकिन फिर भी सबसे प्यारे
गीत वही अन्तर तक आकर
जो अधरों से रूठ गये हैं।

(काव्य संग्रह 'जनता ही अजन्ता है' प्रकाशित सन 1975 में कुल गीत-35)

गीत

(3)

जागते रहना रे भाई

खिले हैं नये नये ये फूल
न चुभने पायें इनमें शूल
जागते रहना रे भाई।

चुभे हैं अभी हिमालय की छाती से सौ सौ तीखे तीर।
अभी तक सिसक रही दिल्ली के दिल में नई पुरानी पीर।
अभी गंगा यमुना में छलक रहा लाखों आंखों का नीर
गरजती हिन्द महासागर की है हर लहर अशान्त अधीर।
मिली है नाव, दूर है कूल।
देखना राह न जाना भूल।
जागते रहना रे भाई।

खेलना सदा मेल का खेल हमारी हार जीत हो एक
हजारों बाहु हजारों बाण लक्ष्य पावन पुनीत हो एक
भले ही राजनीति हो भिन्न, हमारी प्रीति रीति हो एक
प्रान्त के चलतेरहें प्रलाप हमारा राष्ट्रगीत हो एक।
कहीं यह प्रान्त वाद की धूल
न बोये कांटों भरी बबूल
जागते रहना रे भाई।

x x x x x x x x x x x

॥4॥

टूट न जायें कड़ियां रे

गाते हैं अम्बर के तारे, धरती की कंकड़ियां रे

आपस में जंजीर न खींचो टूट न जायें कड़ियां रे

होती रही अगर यों कुश्ती कुर्सी के दीवानों में

होता रहा युद्ध यदि यों ही चंदेले चौहानों में।

लगे रहे सब इन्हीं अखाड़ों दंगल के मैदानों में

किसे समय है जो बोयेगा खेतों में खलिहानों में

आजादी के खेत जिन्हे सींचा है अपने खून से

फिर न उजाड़ें उनको चुनकर, कहीं फूट की चिड़ियां रे

आपस में . . . .

× × × × × × × × × ×

॥5॥

कौन चलेगा

आज देश की बलिवेदी पर

शीश चढ़ाने कौन चलेगा ?

वीरो आज तुम्हें ललकारा

भगत सिंह बलिदानी ने

वीरो आज तुम्हें ललकारा

पानीपत के पानी ने स्वर्गलोक से तुम्हें निहारा

झांसी वाली रानी ने

दूर देश से किया इशारा

उस सुभाष सेनानी ने

उन वीरों को दिया हुआ वह

कौल चुकाने कौन चलेगा ?

× × × × × × × × ×

॥6॥

फूलों के हार उनको

- - - - - - - - - - -

फूलों के हार उनको जो साथ विजय लाये।

आंसू के फूल उनको जो लौट कर न आये।

ओ हिन्द के सिपाही

है शान तेरी शाही

इतिहास के पन्नों को

दी तूने नई स्याही

तूने लहू से सींचा इस देश का बगीचा

अपने लहू से भरकर तूने दिये जलाये।

धधकी विराट ज्वाला

छाया नया उजाला

यश गान लिख रही है

तारों की वर्णमाला।

गुण गा रहा हिमालय, इस तीर्थ का शिवालय।

पद्मा भी मधुमती भी गंगा भी गीत गाये।

× × × × × × × × × × × ×

॥7॥

॥इस घर को डर नहीं है॥

- - - - - - - - - - - - -

इस घर को डर नहीं है बाहर की आग से

डर है तो हमको डर है घर के चिराग से

हम जिनको प्यार दें वही हमको सजा न दें

हमदम जो हमसफर हैं कहीं वो दगा न दें

इस लहलहाते बाग को दुश्मन जो आग दे

सींचा है हमने जिनको वो पत्ते हवा न दें।

हर फूल को सजाओ शूल से त्रिशूल से

कहती है चीख चीख के कोयल ये बाग से।

(8)

(फुलवारियों से तो पूछो)

बहारों के दिन हैं कि पतझड़ का मौसम

यही प्रश्न फुलवारियों से तो पूछो।

हैं शबनम में भीगी कि आंसू में डूबी,

जरा बाग की क्यारियों से तो पूछो।

मधुर फाग का राग है हर गली है,

रंगों में नहाई जो आई है होली

हजारों मगर भाभियां रह गई हैं

न भीगी अभी जिनकी चूनर की चोली।

ये व्यवहार कैसा ये व्यौहार कैसा,

यही प्रश्न पिचकारियों से तो पूछो।

× × × × × × × × × × ×

(9)

(चांद सितारों को क्या करें)

उठने की जगह और भी नीचे गिरा दिया

कोई बताये ऐसे सहारों को क्या करें।

अन्धेर है कि और अंधेरा बढ़ा दिया

ऐसे हसीन चांद सितारों को क्या करें।

कुछ बात है फुलवारियां रोती हैं रात भर

कांटों से सजी सेज पे सोती है रात भर

पत्तों का खून चूस के कलियां हंसी अगर

हम ऐसी गुनहगार बहारों का क्या करें।

× × × × × × × × × × ×

(10)

(आदमी तरस रहा है प्यार के लिये)

पीर से पुकारती है प्रात की किरन

दर्द से निहारते हैं रात के दिये

राग रंग रूप रस बरस रहा मगर

आदमी तरस रहा है प्यार के लिये

आंसुओं के गांव में कोई नहीं खुशी

हर नजर लुटी कमर झुकी उमर दुखी

कर रहा है चांद भी चांदी की आरती

धन यहां है सूर्य न्याय है सूरजमुखी

चल रही निरंतर पतवार ज्ञान की

जिंदगी की नाव मगर है रुकी रुकी

क्या यही प्रगति कि पशु प्रबल अकड़ रहा

उसके सामने सरल मनुष्यता झुकी

सो रहे हैं गीत हंस रही हैं गालियां

जी रही है आज जिंदगी जहर दिये

आदमी तरस रहा है प्यार के लिये।

(।।)

(अपने हिंदुस्तान में)

अब तो कुछ ऐसा लगता है अपने हिंदुस्तान में

जैसे कोई दीपक जलता हो आंधी तूफान में

यह कैसी आजादी देखी सभी तरफ बरबादी देखी

अपनी आंखों में अधनंगी भिखमंगी शहजादी देखी

जिसके अधरों पर आहें हैं दर्द रचा मुस्कान में (अब . . . .

यह कैसा मधुमास कि जिसमें

बिना खिले ही कलियां टूटीं

आते हैं त्यौहार मगर वो

पहले जैसी खुशियां रूठीं

जैसे कोई नदी सूख जाती है रेगिस्तान में

× × × × × × × × × ×

(12)

(जनता ही अजन्ता है)

है प्यार ही वृन्दावन
आंसू ही तो गंगा है
है आदमी ही मन्दिर
जनता ही अजन्ता है।

हर दुख है एक पूजा
हर दर्द आरती है
हर शोक वाटिका से
सीता पुकारती है।

राधा नयन में उसके
मीरा है मन में उसके।

× × × × × × ×

(13)

(अरे चितेरे)

अरे चितेरे अभी अधूरी
कितनी ही तस्वीरें हैं

हथकड़ियां तो टूटी लेकिन
अभी और जंजीरें हैं।
आजादी की एक किरन है
कहीं अंधेरा धूप कहीं
अरे मसीहा दवा एक है
लेकिन दो तासीरें हैं
उम्मीदें थीं फूल खिलेंगे
लेकिन हाय बबूल मिले
शबनम से नाजुक ख्वाबों की
अश्क भरी ताबीरें हैं
रोशन थे जो सारे जग में
ताजो तख्त सब खत्म हुये

मगर अंधेरे में अब भी

कितनी काली जंजीरें हैं

फिर भी तू मजबूर नहीं है

फिर भी तू कमजोर नहीं

ओ मां, तेरे हाथों में

पचपन करोड़ शमशीरें हैं।

(14)

(काव्य संग्रह-रूप रागिनी, कालिन्दी प्रकाशन हमीरपुर सन् 1952)

रूप रागिनी पुस्तक आरोह, अवरोह, स्वर, आलाप, लय, तान, मीड़ में विभाजित है।

(स्वर)

गीत नहीं है छन्द नहीं है

यह मेरे मन भाये मोती

जग जन ने मोती पाने को

जल के अतल सिन्धु मथ डाले

वसुन्धरा का हृदय चीरकर

पाषाणों से रत्न निकाले।

मैंने निज मन मान्स मथ कर

पाये और लुटाये मोती।

इनमें मेरे मन की भाषा

मेरे जीवन की परिभाषा

इनमें मेरा हास रूदन है

हर्ष विमर्श निराशा आशा

यही हृदय के फूल यही हैं

नयनों के छलकाये मोती।

× × × × × × ×

(आलाप)

ऐसा कर दे मैं चिर सुन्दर

चिर मंगलमय बन जाऊं।

प्राची में पश्चिमाकाश में

रवि संध्या के हेम हास में

धन मृदंग में जल तरंग में

सुमन सुमन के मृदु विकास में

क्षितिज छोर पर गगन धरा के

मृदु स्नेहालिंगन प्रयास में

शस्य श्यामला फुल्ल कुसुमिता

के कण कण की सुरभि श्वास में

तेरी रूप राशि बिखरी है

कैसे मैं बटोर पाऊं

कुछ क्षण ऐसे जिन पर साथी

युग युग का जीवन न्योछावर

विकल प्राण हैं सृष्टि तभी तो क्रान्त अशान्त केश छिटकाये

प्रबल प्राण हैं सृष्टि युगों से फिर भी मिटती नहीं मिटाये

है अवश्य कुछ रूप निखारते जिसको निशि दिन चन्द्र दिवाकर

निश्चय ही इस पाप शाप मय विकल धूल धूसरित धरा पर

कुछ कण ऐसे जिन पर साथी

मणिमय नील गगन न्यौछावर।

× × × × × × × × × × × ×

(लय)

असल नयन खोल सजनि

बीती युग यामिनी

कर में ले स्वर्ण थाल

आई ऊषा मृदुल गात

वह विहंग कूक रहे

धवल धरा स्निग्ध स्नात

कमल नयन चूम रही

प्रात किरण कामिनी

मुक्त कुन्तला मनहर

नर्तन रत मेघ परी

मधुरा धर नवल सजल

इन्द्रधनुष स्मित बिखारी

धन अवगुण्ठन उघार

विहंसी द्युति दामिनी।

× × × × × × × ×

(' कुहरे की कलियां ' में प्रकाशित दो रचनायें। प्रकाशन- साहित्य कुंज महोबा सन् 1966)

(1)

(आंखों में अभी नींद का काजल न लगाओ)

रहने दो प्रिये नींद के ये झूठे बहाने

देखो तो अभी चांद सितारे नहीं सोये

है चांदनी का पालना किरनों की है डोरी

तारे मचल रहे हैं गगन गा रहा लोरी

रूक रूक पवन झुला रहा दे दे के थपकियां

रजनी के मगर राजदुलारे नहीं सोये

चन्द्रा के साथ चन्द्र किरन जाग रही है

दूल्हे के साथ जैसे दुल्हन जाग रही है

हिलती है, कांपती हैं सितारों की भी पलकें

उनके भी वो खामोश इशारे नहीं सोये।

आंगन में अभी दीप की लौ झूम रही है

रह रह के पतंगों के अधर चूम रही है

जलता है दिये का हिया बाती की भी छाती

चिनगारियां गरम हैं अंगारे नहीं सोये

सोई नहीं अंगड़ाइयां लेती हैं तरंगें

जैसे किसी के दिल में मचलती हों उमंगें

देखो नदी की देह को बांहों में लपेटे

कुछ बातें कर रहे हैं किनारे नहीं सोये

पत्तों की गोद में नई कलियां तो सो गईं

रंगीन मधुर सपनों की गलियों में खो गईं

कुछ फूल तड़पते रहे कांटों की सेज पर

बेचारे अभी दर्द के मारे नहीं सोये

सोने के लिये प्राण अभी रातें बहुत हैं

तुम से अभी कहने के लिये बातें बहुत हैं

आंखों में अभी नींद का काजल न लगाओ

देखो अभी अरमान हमारे नहीं सोये

संसार रूठ जाये न हो कोई हमारा

आधार टूट जाये न दे कोई सहारा

बस एक तुम्हीं साथ रहो बाँह गहो तो

हम समझेंगे किस्मत के सहारे नहीं सोये।

(2)

(तुम नहीं आये सितारों को नींद आ गई)

रात ढलने लगी चांद बुझने लगा

तुम न आये सितारों को नींद आ गई

धूप की पालकी पर किरन की दुल्हन

आ के उतरी खिला हर सुमन हर चमन

देखो बजती है भौरों की शहनाइयां

हर गली दौड़कर न्यौत आया पवन

बस तड़पते रहे सेज के ही सुमन

तुम न आये बहारों को नींद आ गई

व्यर्थ बहती रही आंसुओं की नदी

प्राण आये न तुम नेह की नाव में

खोजते खोजते तुमको लहरें थकीं

अब तो छाले पड़े लहर के पांव में

करवटें ही बदलती नदी रह गई

तुम न आये किनारों को नींद आ गई

रात आई महावर रचे सांझ की

भर रहा मांग सिंदूर सूरज लिये

दिन हंसा चूड़ियां लेती अंगड़ाइयां

बिन तुम्हारे बुझा आस का हर दिया

तुम न आये सहारों को नींद आ गई।

मूल्यांकन:

प्रख्यात वरिष्ठ कवि श्री मंजुल मयंक जनपद हमीरपुर की शान हैं। उन्हें हिन्दी काव्य में गीतों का सम्राट कहा जाता है। काव्य दोष रहित कवि के सुंदर गीत मन को छू लेते हैं हिंदी शब्दों के सुंदर चयन से गीतों में लालित्य का गुण उपस्थित है। कवि ने केवल गीत ही लिखे हैं। इनके गीत सरसता एवं प्रवाह युक्त हैं। एक राष्ट्रीय कवि के गुणों की झलक श्री मयंक जी के गीतों में स्पष्ट दिखाई देती हे। इनके छायावादी श्रंगार गीत अत्यंत हृदयस्पर्शी हैं। जनपद हमीरपुर के गौरव श्री गणेशप्रसाद खरे 'मंजुल मयंक' द्वारा हिंदी गीतों के रूप में की गई हिंदी काव्य साहित्य की सेवा अविस्मरणीय है। इनके द्वारा सृजित गीत संग्रह हिंदी काव्य की अमूल्य निधि हैं।

(6) श्री हरीराम गुप्त ' निर्पेक्ष ' :

जीवन परिचय:

श्री हरीराम गुप्त ' निर्पेक्ष ' का जन्म ग्राम परछछ (मौदहा) में 16 अगस्त सन् 1952 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामरतन तथा माता जी का नाम श्रीमती परगिया है। इन्होंने हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त कर बी0टी0सी0 प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा वर्तमान समय में प्राइमरी विद्यालय में शिक्षक पद पर कार्यरत हैं। वर्तमान समय में ये सुमेरपुर (हमीरपुर) में निवास कर रहे हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी अभी तक कोई काव्य साहित्य प्रकाशित नहीं हुआ है। ये मुख्य रूप से श्रंगार रस में ही रचनायें करते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

§1§

छोड़ के देश बसै परदेश

सहै अति क्लेश मिलै न ठिकाना

मोह लगाव नहीं अपनत्व

रहै परतन्त्र सहै दुख नाना

बाप को छोड़ के बाप बनाय,

भला कहुं बाप बनो है बिराना।

तासे यही इक बात भली कि

रखौ सद्भाव न त्यागौ धराना।

§2§

धरा सजी ऐसी जैसी दुल्हन नवेली सजी

साड़ी हरियाली हरी रंग अंग भावती

गाढ़ो फीको, पीलो, नीलो फैलो रंग हरो हरो,

प्रकृति आलेखान सी सुंदर बनावती

नृत्यत मयूर बाग पेंग मारे झूला झूलें,

तिरियां हिंडोर राग झूम के हैं गावतीं

मंद मंद पहुना समीर निर्पेक्ष डुलै,

सावन फुहार पिचकारी धरा घालती।

§3§

श्रृंगार गीत

बरसों बीते पल पल ऐसे, मधुर मिलन की चाह लिये

अलि को तरसे हर पल जैसे वर्तिकायें मकरन्द लिये

कभी कभी ऐसा लगता है, डाकिया खत लै आया

आशा के पग द्वार से लौटे, रीते रीते हाथ लिये।

आंगन में तुलसी का बिरवा, कुंठित किसलय गमलों के,

पूंछ रहे हैं जैसे मुझसे, स्पर्शो की याद लिये।

खाली खाली दीवारों में तेरी स्मृति के साये।

कोरे कोरे कागज जैसे, कुछ रेखायें विम्ब लिये।

लंबी लंबी तनहा रातें मर मरकर फिर जीना,

(4)

देश गीत

शस्य श्यामला भूमि हमारी, प्यारा देश हमारा है,
गर्व है हमको हम भारत के, भारतवर्ष हमारा है।

सिर कश्मीर में मुकुट हिमालय, और हिमांचल है चेहरा,
चंडीगढ़ पंजाब है गर्दन, हरियाणा दिल बन सेहरा।

उत्तर मध्य बिहार उड़ीसा, बंग वक्ष उर धारा है,
गर्व है हमको हम भारत के भारतवर्ष हमारा है।

नागा मणिपुर तथा मिजोरम सिक्किम असम और भूटान,
बंध जाये तो वज्र का घूंसा वैसे देते ये वरदान

महाराष्ट्र गुजरात उदर तो, आन्ध्र रीढ़ सहारा है।
गर्व है हमको हम भारत के भारवर्ष हमारा है।

त्रिपुरा, तमिल प्रदेश केरला, ठोस मेखला कर्नाटक,
नदियां धमनी शिरा बनी हैं विश्व शांति जिनका नाटक।

धरा के मानव सभी कुटुम्बी धर्म अहिंसा प्यारा है,
गर्व है हमको हम भारत के भारतवर्ष हमारा है।

(5)

गीत श्रंगार

सावन के दिन आये सखी री, बाबुल की सुधि आय रही है
रह रह के मोरी अंखियां करकें, गदियां भी खुजलाय रही हैं।

पास पड़ोस की सखियां सबै मिल, करती हुइहैं किलोल।
करती हुइहैं याद वे जब जब गावत हुइहैं हिंडोल।
मातुल काहे न वीरन भेजिउ, मइके की याद सताय रही है।

जा उड़ जल्दी कारे बदरवा, पहुंचो जाय सुदेश
बाबुल के घर रिमझिम बरसो, अंसुवन दइयो संदेश
छोड़ के थाल पियें यहां पानी बेटी बहुत अकुलाय रही है।

आवौ रे कगवा बोल अटा पर मीठी खीर खिलाऊं
ओरी पवनियां खबर बता दे घी गुड़ होम कराऊं
बेल की पत्ती भांग, धतूरा शिव निर्पेक्ष चढ़ाय रही है,
रह रह के मोरी अंखियां करकें गदिया भी खुजलाय रही है।

मूल्यांकन:

श्री हरीराम गुप्त 'निर्पेक्ष' एक उदीयमान कवि हैं श्रंगार रस में अधिक लिखाने वाले निर्पेक्ष जी की रचनायें सरल एवं बोधगम्य शैली में लिखी गई हैं। छन्द, सवैया भी इन्होंने लिखे हैं। संक्षेप में इन्हें एक अच्छा कवि माना जा सकता है।

(7) श्री सीताराम सिंह ' विद्रोही ' :

जीवन परिचय:

श्री सीताराम सिंह ' विद्रोही ' का जन्म सुमेरपुर (हमीरपुर) में 7 अप्रैल सन् 1943 में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री दनकू सिंह तथा माता का नाम श्रीमती चुनकी देवी है। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से बी0 एस-सी0 (कृषि) उत्तीर्ण किया है। ये मार्केटिंग इंसपेक्टर के पद पर कार्यरत रहे किंतु उसे छोड़कर अब घर पर कृषि कार्य देखते हैं।

काव्य कृतियां:

इनका कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। अभी तक इन्होंने लगभग 150 रचनायें की हैं। खण्ड काव्य 'हृदय' इन्होंने लिखा है जो अभी अप्रकाशित है। इनकी कुछ रचनायें अवलोकनर्थ नीचे दी जा रही हैं।

खण्ड काव्य (हृदय) (1)

एक समर्पित मित्र आपका,
उसको तुम पहिचानो।

जिसके धक्कों से बल पाकर,

अपना सीना तानो।

पहिचानो उसके स्वभाव को,

ना तो वह भावुक है।

श्रम ही उसका मात्र सहारा,

कैसे फिर नाजुक है।

(2)

कभी न वह रोमांस करे,

क्यों बदनामी करते हो।

बाह्य इन्द्रियों की तृप्ति,

तुम मनमानी करते हो।

नहीं जानता अदला बदली,

नहीं प्यार की माया।

क्यों करते बदनाम उसे,

वह पाले केवल काया।

(3)

कभी न हो नाराज और वह

कभी न होता गद्‌गद्

चार लाख टन रुधिर घुमाता,

जीवन भर में शायद।

सहस छियान्वे किलोमीटरी,

लम्बी नलिकायें हैं।

करे रक्त संचार उन्हीं में,

वह लटका बायें है।

(4)

निद्रा में हो आप किंतु वह,

कार्य में रत रहता है।

एक मिनट में पचपन धड़कन,

फिर भी वह करता है।

जागो औ सामान्य रहो,

वह सेवा करता बेहतर है।

एक मिनट में धक्के देता,

सत्तर या बहत्तर है।

पावस (छंद - सवैया)

पावस की ऋतु आय गयी घर बाहर कीच दिखाय रह्यो है
रात की नींद हराम भई, कुटकी विष दंश चुभाय रह्यो है
भीषण ताप सताय रहो दिन में न समीर दिखाय रह्यो है
ताप की भाप उठै दिन में यो सरीर सबै चुचुवाय रह्यो है

नौकर सेठ तौ चैन करे, पै किसान की आफत कोउ न जानी।
प्रात से रात लौ काम परै जब से बरखा जग में घहरानी।
रात कटै सरके सरके टपकैं छपरा औ टूटी सी छानी।
दादुर मोर की कौन सुनै, पिछवाड़े पड़ी भितिया भहरानी।

श्रावण (छन्द-सवैया)

श्रावण की घनघोर घटा द्युति दामिन रात में राह दिखावै
कोप करैं नभ में बदरा टकराय के आपन तेज जनावैं
तेज प्रकाश चलो जग में, ध्वनि की गति मंद समीर सी आवै।
दीख परै बिजुली पहिले, फिर बाद में या रणभेरी सुनावै।

सावन या मनभावन है जब लौ यह तेज शरीर विराजै,
बूढ़ भये बनिहौ कुबरा घुंघरू न सुहाय न सावन छाजै।
रोकि रखो मन जौन मतो, हय जोरि कै आपन सैन न साजै।
अंत भली सब श्रेय भलो, यहु भोग का रोग सतावै न लाजै।

दहेज विरोधी (कवित्त)

देश में दहेज दैत्य दानव लगावै घात,

दसहू दिशाओं में दीख परत लोभी हैं।

बेटा के बाप बहुत बड़े बड़े बोलैं बोल,

बहू के बतावै दोष ढूढ़ ढूंढ़ जो भी हैं।

प्रकृति पहिचानो उन पापी पिशाचन की,

पूरब से पश्चिम तक प्रगटे प्रलोभी हैं।

वंदन अभिनन्दन चन्दन को धरो छोरि,

डण्डन से मुण्डन हो मानो फूल गोभी हैं।

दहेज और कानून (कवित्त)

ऐसा कानून लचर काहू न आवै काम,

खोले अदालत मानो दफा की दूकान है।

कीमत दो नम्बर की दफा ही खरीद लेत,

बिना रकम दफा होउ ऐसा विधान है।

या ही सों या दहेज दानव विकराल बनो,

दम्भ दरशावै दौड़ देख कै धसान है।

नर है न्यायालय तब नारी की सुनै नाहिं,

गुप्त है विधान या सो लुप्त समाधान है।

नारी जाग्रति (कवित्त)

करो न गुहारी ओ नारी, खडगधारी बनो,

दूषित समाज को दोष ही नशाय देव।

मांगे से मान मोह ममता न मिलै कतहूं,

धोखे में आपन या शान न गवाय देव।

रोये से रात कटै, राज नहीं मिलै कबहूं,

चिन्ता औ सोच छोड़ हृदय हर्षाय लेव।

दूर करो कारण निवारण को ढूढं ढूंढ़ ,

स्वागत सम्मान के साधन जुटाय लेव।

शरद ऋतु (गीत)

कह रहा है सूर्य आज चल रहे समीर से,

भीग गई किरण किरण बादलों के नीर से बादलों के नीर से।

दूर हो गई है धरा ओस बूंद भार से

मैं भी दूर हो गया हूं पाले की मार से

झांक रहा धरती पर दक्षिणी कगार से।

तुम पवन हिलोर लो, ठण्ड की तुषार से।

कांप रही रात यहां तुम बने अधीर से - भीग गई किरण किरण बादलों के नीर से

सिमट गई सरितायें खिसक खिसक बह रहीं

पारों की कोरें कुछ सिसक सिसक कह रहीं

अब तो पगडण्डियां पथिक भार सह रहीं

दादुर की अभिलाषा दुबक दुबक ढह रहीं

दूर हो गया है जल, नदिया के तीर से

भीग गई किरण किरण बादलों के नीर से बादलों के नीर से

कपड़ों का मान बढ़ा धूप का गुमान बढ़ा

दिन सिकुड़ गये हैं और रात का वितान बढ़ा

ईधन का खर्च बढ़ा पावन अभियान बढ़ा

गन्ना की गांठ बीच अब तो मिष्ठान बढ़ा

ओस बूंद झूम रही पत्तों के चीर से,

भीग गई किरण किरण बादलों के नीर से।

बसंत (कवित्त)

गगन गरमानो गुड़ गन्ना गरूआनो है,

गांव गांव गमकी हैं गलियां गलन्त की

मेदनी में मनसिज मातंक मड़रानो है

मुकलों में महकी है मठिया महंत की।

कोयल की कूक केलि करै कुंज कुंजन में,

कली कली किलक कीनअगुआनी कन्त की

बागन में बीहड़ में बस्ती और बंजर में,

आयो बसंत या सों सरदी बस अंत की।

मूल्यांकनः

श्री सीताराम सिंह की उपर्युक्त रचनायें इस बात का प्रमाण हैं कि आप हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। गीत, छन्द, सवैया सभीः आपने लिखे हैं। सरल एवं रोचक शैली में की गई रचनायें हृदयस्पर्शी हैं। हिन्दी भाषा का आपको अच्छा ज्ञान है। स्थान स्थान पर अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया गया है। कवि का प्रयास सराहनीय है।

(8) श्री गणेश सिंह 'विद्यार्थी' :

जीवन परिचयः

श्री गणेश सिंह ' विद्यार्थी ' का जन्म 28 जनवरी सन् 1959 में सुमेरपुर (हमीरपुर) में हुआ था। इनके पिता का नाम स्व0 राजाराम सिंह एवं माता का नाम श्रीमती शिवकुमारी था। स्नातक तक शिक्षा प्राप्त श्री गणेश सिंह 'विद्यार्थी' सन् 1975 से पत्रकारिता से जुड़े हुये हैं।

काव्य कृतियांः

सब दहेज मां दय दीन्हो,

बस बची एक टूटी खटिया।

पांस बरस मैं दर-दर भटक्यो,

खोजत बिटिया के वर का।

मोल तोल में पटो एक तौ,

मैं खरीद लीन्यो लरिका।

विगहा सात खेत सम्पती,

चार कुठरियां कच्चीं हर्ती।

अक्सा बक्सा दिख्यौ न एकउ,

दुई किवरियां लगी हर्ती।

दुई कोठी मां घुआं किवारा,

दुई मां उड़कीं र्ती टटियां

सब दहेज में . . . . .

मनसा अपनी जाय बताई

तुरत पड़ोसी बुलवायन।

चाय पान सब भाड़ में झौंकिन,

झटपट परचा लिखवायन।

नगद पचास हजार लिखाइन,

टी0वी0 पंखा व कूलर।

फ्रिज अलमारी डबल बेड अरू,

नेग कलेवा स्कूटर।

पढ़ते परचा प्यास लगी तब,

जल दीन्हिन फूटी लुटिया।

(2)

व्यंग

अरे भले आदमी

भ्रष्टाचार को समूल नष्ट करने की मांग,

भ्रष्टाचार शासकों से मत करो।

उन्होंने तो उसका

राष्ट्रीयकरण कर दिया है

ठीक, ब्रिटेन के अलिखित

संविधान की तरह।

(3)

बालगीत

जागो जागो राष्ट्र वीरो, रचिये नया विधान।

प्राची के अम्बर पर देखो आया नया विहान

भारत मां जय भारत मां।

बीत चुकी रचनी घन कारी,

गणतंत्र दिवस की बेला आई, चीर भयंकर तम का अंतर

नयी किरण धरती पर छाई।

भारत को चरितार्थ है करना जग में पुनः महान

जागो जागो . . . . . .

जागो जागो युवा सपूतो

जागो भारत के नर नारी

कन्या से केशर क्यारी तक

जाग्रत जनता हों अब सारी

राष्ट्र विरोधी शत्रु देश का, करना है अवसान

जागो जागो. . . . .

(4)

फुलवारी (बाल गीत)

फुलवारी है कितनी प्यारी

लगती है यह राज दुलारी

अहा, केतकी फूल रही है

उधर चमेली झूल रही है

गेंदा है अलबेला प्यारा

बेला है आंखों का तारा

सबका चित्त गुलाब चुराता

आंखों की है प्यास बुझाता

हरसिंगार की डोली हिलती

जब चम्पा से आंखें मिलतीं।

× × × × × × ×

होता है जब सुखद सवेरा

तितली दल का लगता फेरा

सर्दी गर्मी वर्षा सहते

आंधी तूफानों में हंसते

जीवन भर शूलों में बिंधते

फिर भी रहते सदा विहंसते

(5)

भेदभाव का काम नहीं है,

प्रेम सभी से करना जी,

आंधी हो या तूफानों की,

मुश्किल से न डरना जी।

साहस और लगन हो जिसमें,

कितनी ऊंची हो रातें

उनके पांव चूमती मंजिल,

हरदम हंसते रहना जी।

× × × × × × × × ×

हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख ईसाई

आपस में हैं भाई भाई

मानव धर्म श्रेष्ठ दुनियां में,

आपस में मत लड़ना जी।

मूल्यांकन:

श्री गणेश सिंह 'विद्यार्थी' एक उदीयमान कवि हैं। बाल गीतों के माध्यम से सरल एवं रोचक ढंग से अपनी भावनाओं को ये व्यक्त करते हैं। इनकी शैली सरस एवं प्रवाहपूर्ण है। सरल शब्दों का समावेश ये अपनी रचनाओं में करते हैं। कवि का प्रयास उत्तम है।

(9) श्री नारायण प्रसाद तिवारी 'रसिक':

जीवन परिचय:

इनका जन्म इंगोहटा (हमीरपुर) में 1 जुलाई सन् 1941 को एक ब्राह्मण कुल में हुआ था इनके पिता का नाम श्री शिवप्रसाद तिवारी है। इनकी शिक्षा इण्टरमीडियेट तक है तथा अध्यापक प्रशिक्षण

भी इन्होंने प्राप्त किया है। वर्तमान समय में ये सुमेरपुर में रहते हैं।

काव्य कृतियां:

इनका एक खण्ड काव्य ' तासकंद की गोद में शास्त्री ' सन् 1965 में प्रकाशित हुआ था। इनका लिखा हुआ एक एक अन्य खण्ड काव्य ' इन्दिरा ज्योति ' अभी अप्रकाशित है। एक अन्य खण्ड काव्य ' कैकेयी महान ' भी अप्रकाशित है। इन्होंने ' अब्दुल हमीद ' तथा ' जय चित्तौड़ ' नाटक भी लिखे हैं। इनकी अप्रकाशित रचनाओं में मुख्य रूप से श्रंगारिक गीत, देश भक्ति गीत एवं विविध विषयों पर लिखे हुये छन्द हैं।

इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

क्षीर चन्द कुण्ड से स्रवत धवल धार,
निशा के आंगन भीग रही कामिनी।
झरत फव्वारे हैं सितारों के कोष से,
मुक्तन पिरोती केश तार तार यामिनी।
किलक किल्लोर करें विलस विहास भरे
कंचन बदन को चूम रही चांदनी।
सघन गंभीर केश उछल उछाल भरें,
दमक दमक रही बीच बीच दामिनी।

(2)

('कैकेयी महान' खण्ड काव्य से)

सात सर्गो में बंटे हुये इस लघु खण्ड काव्य में कुल 125 छन्द हैं।

प्रथम सर्ग से

मां ममता स्नेह धरोहर,
युगों युगों संचित रखती
नहीं विश्व में ऐसी मां जो,
सुत सनेह वंचित करती।
ऐसा अनर्थ अन्यायकर्म,
यह मेरे द्वारा ही होगा

मां से बेटा प्राण का तन से,

बिछुड़न व विघटन होगा।

तृतीय सर्ग से

चांद के मुखड़े में कालिख,

तारावलियां गुप्त हुई।

सहमी सहमी छवि गृह में,

गहरी नींद में सुप्त हुई

अनहोनी सी काली छाया,

फैली नवल अयोध्या में।

कोलाहल का पिये हलाहल

बैठी हुई अयोध्या में।

सप्तम सर्ग से

कौशिल्या के मुंह से निकला,

जैसे ही यह शब्द महान।

निकल पड़े स्वर एक साथ ही,

चारों ओर से शब्द महान

सदा गूंजता रहा सृष्टि में,

कैकेयी तेरा बलिदान

नहीं विश्व में ऐसा कोई,

तुमसे ज्यादा श्रेष्ठ महान।

({'ताशकन्द की गोद में शास्त्री' लघु खण्ड काव्य से })

इस लघु खण्ड काव्य में लगभग 90 छन्द हैं।

कर रहा तप्स्या कौन तपस्वी,

बैठ सत्य के टीले पर।

पी रहा कौन है आज जहर,

मन्थन संग्राम हटीले पर।

॥'इन्दिरा ज्योति' लघु खण्ड काव्य से॥

॥यह अप्रकाशित लघु खण्ड काव्य आठ भागों में विभक्त है॥

प्रथम सोपान

बज उठीं आप ही शहनाई

घुंघुरू के स्वर बोल उठे

संगीत काव्य की धारा में

सुधा बिन्दु रस घोल उठे।

× × × × × × ×

उन्नीस नवम्बर उन्नीस सौ सत्तरह

इन्दिरा जन्मी नेहरू घर

सिंह वाहिनी दुर्गा शक्ती

आ उबरी भारत भूमि पर।

द्वितीय सोपान

काल चक्र के फेरे में जब,

छूट गया बचपन पीछे

पढ़ने गयीं विदेशों में वह

देखा हम कितने नीचे।

× × × × × × ×

सत्य अहिंसा की मसाल ले

निकल पड़े नेहरू गांधी

भारत छोड़ो आंदोलन की

प्रबल प्रचण्ड चली आंधी।

जेल भरो आंदोलन में भी

जेल गई इन्दिरा गांधी

त्याग दिये वैभव विलास सब

फेंक दिये सोना चांदी।

मूल्यांकनः

श्री नारायण प्रसाद तिवारी एक अच्छे कवि हैं। गीत व छन्द सभी इन्होंने लिखे हैं। सरल एवं सुबोध शैली में आपकी रचनायें जन सामान्य की समझ में आसानी से आ जाती हैं। हिन्दी काव्य के लिये किया जा रहा इनका प्रयास सराहनीय है।

(10) कुमारी अम्बे मिश्रा :

जीवन परिचयः

कुमारी अम्बे मिश्रा का जन्म सुमेरपुर (हमीरपुर) में मार्च सन् 1971 में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामकृष्ण मिश्र है। इनकी मां श्रीमती अन्नपूर्णा मिश्रा की मृत्यु हो चुकी है। इनकी शिक्षा बी0ए0, बी0एड0 तक है। यह पत्रकार हैं तथा गायत्री इण्टर कालेज सुमेरपुर में शिक्षिका हैं।

काव्य कृतियां:

इनका कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। ये मुख्य रूप से गीत लिखाती हैं। ओज एवं संवेदना पूर्ण गीत तथा देशभक्तिपूर्ण गीत इन्होंने लिखे हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

(गीत नारी जागरण पर)

मैं नारी हूं।
गंगा गीता और पुनीता
उर्मिला, सावित्री, सीता
अग्नि में जलकर देती हूं प्रमाण
मैं अहिल्या सी पत्थर प्रतिमान
मैं पूजा अर्चन वन्दन योग्य
फिर भी पुरूष क्षुधा की बनती भोग्य
मैं ही कल्याणी हूं।

मैं नारी हूं।

मैं उमा, रमा, देवियों में शचि सी मनहर

मैं कुलश प्याली कुलक्षणा श्रध्वा सी पयधर

मैं पूनम, चपला, चौपाई सी अर्धाली

मैं तितली मादक अधरों की मद घ्याली

मैं पूज्य पुत्र की, अपने प्रिय की प्यारी हूं।

मैं नारी हूं।

(2)

जागो आजादी के पहरेदारो,

ओ भारत के अमर सितारो

जब भी त्रस्त हुई यह धरती

शासन के मदमस्त राज से

ऊब गया अवनी का अन्तर

विषधर के बेसुरे साज से

तब तुमने कौशल दिखलाया

कण कण के कमनीय काज से

वही समयआ गया सृजन का,

मां का रूप संवारो।

(3)

अभिशापों की धरती पर

वरदान उगाने होंगे

जो अंगार विषमता के हैं

उन्हें बुझाने होंगे।

झुलस रहा अवनी का अन्तर

वर्णो के कुत्सित्त विषाद से

सिसक रही है मां की काया,

विद्वेषों की विकट आग से

कूट घृणा के शमन हेतु,

समता के श्रोत वहाने होंगे।

अभिशापों की धरती पर,

वरदान उगाने होंगे।

(4)

निरक्षरों की अर्चना में, अक्षरों के गीत ले
अज्ञान तिमिर भवन में, हम भव्य आरती करें।
युग पुकार घण्टियां, घनन घनन सुना रहीं
दीप दीप जला जला, सुरम्य भारती भरें
जहां कहीं तिमिर दिखे दीपदान हो वहीं
प्रकाश पुंज ज्योति से, विकास की किरण बढ़े
बिना पढ़े लिखे दिखें, जहां कहीं भी देवियां
ज्ञान दीप के सुमन, सनेह से वहीं चढ़ें
राष्ट्र के विकास का बस एक मार्ग है यही
मालिन्य मातृ शक्ति को, हम सबल मालती करें।

मूल्यांकन:

कुमारी अम्बे मिश्रा एक नवोदित कवियित्री हैं। नारी के प्रति अन्याय व शोषण के विरूद्ध इनके गीत लिखे गये हैं। वर्तमान युग की विषमताओं के प्रति इनके मन में गहरी पीड़ा है। इनकी रचनायें सरस एवं प्रवाह पूर्ण हैं। रचनाओं में लालित्य का गुण विद्यमान हैं। इनका प्रयास सराहनीय है।

(11) श्री कैलाश प्रसाद सोनी :

जीवन परिचय:

श्री कैलाश प्रसाद सोनी का जन्म ग्राम नदेहरा सुमेरपुर (हमीरपुर) में 7 नवम्बर सन् 1960 को एक स्वर्णकार कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मइयादीन तथा माता का नाम स्व0 श्रीमती लीलावती था। इनकी शिक्षा एम0ए0 (हिन्दी, संस्कृत) तक है इन्होंने बी0एड0 प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है। वर्तमान समय में ये सुमेरपुर में निवास करते हैं।

काव्य कृतियां:

आपका कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। इनकी अप्रकाशित रचनाओं में छन्द, सवैया, नयी विधा की कवितायें, सम सामयिक तथा राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत रचनायें सम्मिलित हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

हाथ जोर नाउँ माथ, वर यह पाउँ नाथ
लेके बन्धुगण साथ, सावन मनाउँ मैं।
गायत्री के कुंजन में, सु छन्दन की डोरी डार
पटुले के कारण निज हृदय को बिछाऊं मैं
तुलसी चढ़ाय, कैलाश शीश तुलसी के,
तुलसी समेत राम जानकी झुलाऊं मैं।

(2)

गीत

करें समर्पित नयी चेतना शिक्षा ज्ञान महान की
आओ हम भी ज्योति जगा दें, साक्षरता अभियान की
जब तक अनपढ़ है इंसान
नहीं रूकेगा यह अभियान
सच्ची सेवा जन कल्याण
दान में उत्तम विद्या दान।
शिक्षा ले ऊंचाई छू लें, निज बौद्धिक उत्थान की
आओ हम भी . . . . . .

(3)

राष्ट्रीय गीत

उठो तरूण तुम मातृ भूमि के राष्ट्र प्रेम हित कार्य करो
वन्धु भाव हित सब जन मिलकर राष्ट्र प्रेम हित एक बनो
कश्मीर तड़पता आहें भर, पंजाब बहुत ही रोया है।

बलिदानों के आत्म त्याग से क्या तुमने कुछ सीखा है।

हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई ऐसा एक विधान रचो

बन्धु भाव हित . . . .

(4)

लवौ (नयी कविता)

जिसे हम सबके पूर्वजों ने था जलाया,

अपने आपको समर्पित करके

और कहा ओ तिमिर जीवियो,

तुम्हारे द्वारे का कूकर भौंक रहा है

अब अंधकार में ही नहीं,

प्रकाश में भी पाप करने वाले लोग हो गये हैं

और कहीं नहीं यहीं बैठे हैं

लवों के पास घिराव करके

और मारते हैं फूंक,

सबकी आंखों में धूल झोंककर।

(5)

बसंत पर

ऋतुकान्त को पाकर हे धरिणी, तूं मत इतनी आल्हादित हो

होती प्रसन्न है देख जिसे,

पा उसे अधिक मत आकुल हो

त्यागेगा ये निष्ठुर बसन्त

से वसुन्धरे यह याद रहे

कर रही गर्व जिसको पाकर,

उसमें न अधिक अभिमान रहे

सीतल मन्द सुगंध पवन,

यह भी जिया जलायेगी।

मन को जो शीतल लगती है,

वह लू बनकर आयेगी।

हो सावधान इस चाटुकार से,

नहिं पछतावा बन आयेगी।

ऐसा बेदर्दी मिला हाय,

यह सोच सोच रह जायेगी।

मूल्यांकन:

श्री कैलाश प्रसाद सोनी की रचनायें वर्तमान सामाजिक विषमताओं एवं राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत है। कवि ने सरल शैली में जन जन की समझ में आने वाले शब्दों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। यत्र-तत्र अलंकारों का प्रयोग भी हुआ है। कवि का प्रयास अच्छा है।

(12) श्री नाथूराम पथिक :

जीवन परिचय:

श्री नाथूराम 'पथिक' का जन्म कुछेछा (हमीरपुर) में 1 फरवरी सन् 1953 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री फस्सा प्रसाद तथा माता का नाम श्रीमती दनकी है। बी0ए0 तक इन्होंने शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान समय में ये सिंचाई विभाग में लेखा लिपिक के पद पर कार्यरत हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी कोई पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हो पायी है। इनका लिखा एक अप्रकाशित खण्ड काव्य ' स्वंय प्रभा ' है जिसमें एक 365 छन्द हैं। रामचरित मानस के एक पात्र स्वयंप्रभा पर आधारित यह खाण्ड काव्य कवि का एक अच्छा प्रयास है। इनका एक अन्य गीत संग्रह ' मैं और मेरा गांव' है इसमें विविध विषयों पर आधारित 50 गीत हैं। इनके गीतों का प्रसारण आकाशवाणी छतरपुर से सन् 1980 से हो रहा है। लगभग सौ गीतों का प्रसारण अभी तक हो चुका है। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय महत्व के विषय, सामाजिक समस्यायें तथा कुरीतियों के निवारण जैसे विषय मुख्य रूप से सम्मिलित होते हैं। ये छन्द व गीत दोनों लिखते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं।

दिनांक 26.7.83 को आकाशवाणी छतरपुर से प्रसारित

(1)

भाषायें सीख रहा हूं जीने की।

मदिरा छोड़ रहा हूं, आदत डाल रहा विष पीने की।

दूर पूर्व में रोज निशा का जब आंचल कट जाये

एक प्रश्न मेरे द्वारे की तब सांकल खटकाये

घटनाओं के परिचित चेहरे

कुछ उदास कुछ गूंगे बहरे

पूछें क्यों आंसू जैसी है बूंद पसीने की

भाषायें सीख रहा हूं जीने की।

सूरज अपना धर्म बेच दे जब बाजारों में आसमान की

और ठुकरा दे घायल धरती शर्त प्रकृति के संविधान की।

तब कागज पर उगी फसल से

या गालिब की किसी गजल से

पैर भरे या मन बहलाये पीड़ा सीने की

भाषायें सीख रहा हूं जीने की।

पृष्ठ खोलकर के अतीत से गिन लेना कुछ गांव खुशी के

कुण्ठा के अनुवाद रचाये सांझ सकारे दीन दुखी से

कल के शब्द रेत की राहें

अलगावों की लंबी छांहें

जाने कब कासी होगा मन निरख मदीने की

भाषायें सीख रहा हूं जीने की।

(दिनांक 10.7.1984 को आकाशवाणी छतरपुर से प्रसारित कवि का यह गीत कवियों के लिये एक चेतावनी है)

(2)

कवि रे लिख मत आसमान की बातें
धरती में कुछ बहुत शेष है
तेरी कलम अपरिचित अब तक
अब भी कुछ ऐसा प्रदेश है।

पीड़ित मानवता के खातिर प्राणाहुति दी किस तारे ने
फुटपाथों की व्यथा कथा पर रूदन किया कब घन कारे ने
क्या होगा सौन्दर्य बोध से
दूर देश के चन्द शोध से
तेरी सामर्थ्य हीन भाषा से पग पग पर हंस रहा क्लेश है
कवि रे लिख मत . . . .

सच से दूर झूठ के द्वारे दीन हीन याचक सी कविता
राजनीति संगीत प्रीत और चाटुकारिता से अति व्यथिता
प्रणय सूत्र में परिवर्तन के गाते हैं सब गीत तपन के
ओ साहित्य पुजारी तेरा जग जैसा ही छद्म वेश है
कवि रे लिख मत . . . . .

अंधकार में जीने वालों को रवि कैसे कह सकता हूं
कलम बेच खाने वालों को मैं कवि कैसे कह सकता हूं
ओ हिन्दी के रचना धर्मी
अपना ली क्यों रीति अजन्मी
मानवता ही महाधर्म है प्यार तो बस केवल स्वदेश है
कवि रे लिख मत . . . . .

(3)

सूरज अंधेरी बस्तियों में खो नहीं सकता
सच है नदी का जल कभी भी सो नहीं सकता

आदमी जो आदमी संग हंस नहीं सकता

रो नहीं सकता

सच मानिये वो आदमी, आदमी तो हो नहीं सकता।

(4)

किसी गांव की नहीं इसी शहर की बात है

आधे शहर में रोशनी आधे में रात है

मैं जानता हूं इस खेल में है कौन किसका हाथ है

देखना है उन चरागों की उम्र क्या है जिनका हवा से साथ है।

(5)

(आकाशवाणी छतरपुर से दिनांक 28.10.94 को प्रसारित)

ये कोई अभिनय है या है जादू टोना

एक आंख से हंसना एक आंख से रोना।

जब से सच बीमार पड़ा क्या बातें नहीं हुई

जैसे अंधे का दर्पण से मिलना और खुश होना

तब तक ठहरे हंसी शहर में किसकी आस करे

समझे, रूकना नहीं घरों में नागफनी का बोना।

आज आदमी को डर है तो सिर्फ आदमी से

आज आदमी से अच्छा लगता है विषधर होना

पारस क्या है वर्षो समझा पर अब समझ सका।

जो अभाव में पले भले , पर दे औरों को सोना

मांझी ने भी कहा, रेत में नाव चलायेंगे।

चाहे मंजिल और मुसाफिर पड़े राह में खोना

न ही मान सरोवर है अब, न ही हंस रहे

गंगा जल भी चाह रहा है फिर से निर्मल होना।

(6)

गीत

आओ और पास आ जाओ मिट जाये तन मन की दूरी

सूरज जाग उठा तो चन्दा, चल देगा कह कर मजबूरी।

सुबह सुबह की नई धूप सी तेरी नई उमर,
थपकी देकर मुझे जगा देती है ये अक्सर।
खिला खिला कुछ खुला खुला सा
धुआं धुआं कुछ धुला धुला सा।
लौट रहा मौसम जैसे देकर कुछ संदेश जरूरी
सूरज जाग उठा तो चन्दा चल देगा कह कर मजबूरी।

अंजुरी भर जीवन में यौवन दो पल ही ठहरे
सावन आये जाये चाहे दर्पण दे पहरे
शाम कुआंरी प्रात विधुर हो
कितना ही संबंध मधुर हो
आस भरी मेंहदी का चाहे रंग न हो पाये सिंदूरी
सूरज जाग उठा तो चन्दा चल देगा कह कर मजबूरी।

ला तेरे आंचल में अपनी कुछ पल को तकदीर सुला दूं।
हार गया अनुबंध आज जो कुछ पल को ये पीर भुला दूं।
बिखर गया संयम संयेगी
मौन देखता रहा वियोगी
मीलों लंबी रातों में भी रह जाये हर बात अधूरी
सूरज जाग उठा तो चन्दा चल देगा कह कर मजबूरी।

(7)

(गीत- मैं और मेरा गांव, आकाशवाणी छतरपुर से दि0 26.7.83 को प्रसारित)

मैं और मेरा गांव
सदा उपेक्षित रहे हैं जैसे बदरी छांव

सूरज देता सबको प्रकाश, पर किरणें पथ में ही रूक जातीं।
काले मेघों की बस्ती में, आकर बरबस ही झुक जातीं
कुछ किरणों का दोष स्वयं कुछ बादल अपराधी है
कुछ उनका है दोष जहां तक किरणों नहीं पहुंच पाती हैं
दिया लगायेगा आंधी से कितनी बार जुआरी दांव
सदा उपेक्षित . . . .

थके कहार ,पालकी में बैठी दुल्हन हंसती जाती है
रहे सुहाग अमर उसका नागिन बन डसती जाती है
सूख रही है फुलवारी, छाये बादल देख देख कर
टूट रहीं आशा की कलियां, धीरे धीरे एक एक कर
कब तक लहरों से टकरायेगी कागज की नांव
सदा उपेक्षित . . . . .

अब तो धूप सयानी हो गई, खूब समझती है भाषायें
कितने किसके काले दिन हैं, कितनी किसकी श्वेत निशायें
काली रात चांदनी का घूंघट मुख पर कितना ही डाले
चाहे सिन्दूर भरे सेवा का, या कर्मठता का रंग रचा ले
सब कुछ अंकित कर जाते हैं, पथ में उभरे पांव
सदा उपेक्षित . . . . .

मूल्यांकन:

श्री नाथूराम 'पथिक' जनपद हमीरपुर के एक श्रेष्ठ गीतकार हैं प्रकृति के प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक विषमताओं का छायावादी चित्रण, पाठक के हृदय पर एक गहरी छाप छोड़ता है। रचनाओं में अलंकारों का अत्यंत सुंदर प्रयोग उचित स्थलों पर किया गया है। भाषा सरस एवं प्रवाहपूर्ण है। कवि को भाषा का गहरा ज्ञान प्रतीत होता है। इनकी रचनाओं में अच्छी कविता के समस्त गुण विद्यमान हैं। काव्य दोष से मुक्त रचनायें कवि के काव्य कौशल का प्रमाण हैं। जनपद के श्रेष्ठ कवियों में कवि को स्थान दिया जाना न्यायोचित है।

{13} श्री स्वामी सुरेश्वरानन्द जी 'सुरेन्द्र' वाणी भूषणः

जीवन परिचयः

पूज्य श्री स्वामी जी का जन्म सन् 1901 ई० में श्रावण माह में जनपद हमीरपुर के बिदोखर ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भूरा सिंह जी था। बचपन से ही स्वामी जी की लगन शास्त्रीय संगीत तथा काव्य के प्रति अधिक रही। ये 17 वर्ष की उम्र में ही कवि सम्मेलनों में भाग लेने लगे थे ये आशु कवि थे। 30 वर्ष की आयु में स्वामी जी ने अपने पूज्य गुरूदेव श्री अखण्डानन्द जी से सन्यास ग्रहण किया। सन्यास धारण करने के पूर्व स्वामी जी का नाम श्री हजारी सिंह उर्फ सुरेंद्र वर्मा था। इन्होंने तीन बार संपूर्ण भारत का भ्रमण किया। इनकी वाणी अत्यन्त प्रखर व ओजस्वी थी। सन् 1969 में इन्हें वाणी भूषण की उपाधि से बीकानेर में विभूषित किया गया। अपनी जन्म भूमि बिदोखार में ही स्वामी जी 16 दिसंबर 1995 ई० को ब्रह्मलीन हुए।

काव्य कृतियांः

इनकी रचनाओं में वीर रस, करूणा व श्रंगार रस प्रधान थे इन्होंने अपनी कविताओं में वैराग्य का गहन दिग्दर्शन कराया है। इनकी रचनाओं की जो कृतियां अतिप्रिय तथा प्रचलित हैं, निम्न हैं-

कृतियां जो प्रकाशित हैं:-

{1} हरिदर्शन {प्रथम-द्वितीय भाग} सती कमला तथा नन्दू ग्वाला का प्रसंग।

{2} हरिदर्शन {तृतीय-चतुर्थ भाग} श्री रघुनाथ जी, प्रागदास प्रसंग तथा श्री हनुमान अर्जुन प्रतिज्ञा।

{3} प्रेम पुष्पांजलि {चंचला चपला तथा भक्त ध्रुव}

{4} वैराग्य बावनी {52 कवित्त वैराग्य युक्त}

{5} क्षत्रिय वीर बैस वंशावली।

{6} महाभारत {काव्य}

{7} आल्हा संबंधी रासो लिखा जो प्रकाशित नहीं है तथा बहुत से ऐतिहासिक तथा धार्मिक प्रसंग जिनकी कोई कृति नहीं है।

(1) आल्हा संबंधी रचनायें

प्यारे दुलारे तोहि पालो परमाल वीर,

चीर जात तन कौ आय धीरज बंधाय जा।

ब्रह्मा निगार्यो तोहि गोदी मां खिलायो लाल,

बाल बिलखात आय लाज तौ बंधाय जा।

ओ बनाफर बनवारी वन आव बेग,

चन्द्रावल होत विदा नेंग तो चुकाय जा।

'सुरेन्द्र' बिन खिवैया सिन्धु डूब रही नैया,

आज देवें के छैया, कन्हैया बन के आय जा।

(2)

प्रबल प्रतापिन के पताके फहर फहर भये,

वीर धनुधारी विजय वीरता दिखा गये।

धमी धनवान ज्ञान गुण के निधान धन्य,

धर्मी धनवान सुयश धर्म को कमा गये।

'सुरेन्द्र' समर शूरन के सन्मुख परे न पांव,

धर धमकें धरा धाक सी जमा गये।

भूपत अनेक भोग भोगे भव्य भुवन बीच,

भारी बलवन्त अन्त भू में समा गये।

(3) छप्पय

कर मज्जन अस मज्ज प्रातः रण को दल सज्जौ।

तक तक तीर तरज्ज तेग तोमर धर बज्जौ।

गज्जन गोल गरज्ज गुरगज्जन गहि गल गज्जौं।

अरि दल दरन दरज्ज करौं निज टेक न तज्जौं।

भज्जौं न प्राण तज्जौं भले या 'सुरेन्द्र' भीर हौ भुवन।

जय धज्ज रज्ज रक्खौ जबै, तब कहिहौ मल्हन सुवन।

(4) लावनी

सब चलीं सखिन के संग लगीं गववावन।

सिर धरे चकौटी चली देखने सावन।

जरकसी की चोली कसे हरीरी सारी।
मोतिन की लरियां जरी है जर्द किनारी।
मृदु गोल गाल पै लसै नथुनियाँ प्यारी।
बरबस ही मन हर लेत मोहनी डारी।
कवि 'सुरेन्द्र' सुरीली तान मुनिन मन भावन।
सिर धरे . . . .।

वैराग्य बावनी कृति की रचनायें

कवित्त-1

जुल्मी जुलूसी जबर जंग जोरदारों के
जमी जर जेवर जड़ाऊ रह जायेंगे
खाने तहखाने मयखाने सब पड़े रहे
ऐशो आराम के बहाने रह जायेंगे
फकत फकीरों की सोहबत करेगा 'सुरेन्द्र'
दर्द भरे दिल को दिलदार से मिलायेंगे
दुई कर दूर नूर देखेगा नबी का गर
तब बन्दे जरूर तेरे फन्दे कट जायेंगे

कवित्त-2

परम पवित्रता के पलंग पुण्य पाये बने,
नेह की निवार बुद्धि बीधन लगाये हैं।
शान्ति की सुशैया जहां ज्ञान के गलीचे बिछे,
सुन्दर सुविचार चारू चद्दर उठाये हैं।
गेंडुआ गम्भीर भद्रभावों के सुरेन्द्र शीश,
मुदित मन मसहरी तोष तोषक सुहाये हैं।
अन्तर निरन्तर शुद्ध सदन सुशोभित हैं,
सुखमय सत्य सिन्धु सदा सतगुरू पौढ़ाये हैं।

अन्य रचनायें:   ﴾1﴿ गजल

जब दिल ही नहीं तो दर्द कहां ओ दर्द दिवाने भूल गया।
मन बुद्धि जीव देह आदिक मन के सब माने भूल गया।।

﴾2﴿ दादरा ﴾पद﴿

लगा ले गोरी कजरा गुरू पद रज का,
श्रद्धा सिल विश्वास का सोटा
घोर सनेह मुदित कर मुजरा। गुरू पद . . . . .
इत्यादि करीब 4 हजार रचनायें स्वामी जी द्वारा रचित हैं।

मूल्यांकन:

हिन्दी काव्य के उद्भट विद्वान स्वामी सुरेश्वरानन्द जी की रचनायें स्वयं उनके काव्य कौशल का प्रमाण हैं। इन्होंने वीर, करूणा तथा श्रंगार सभी रसों पर लेखनी चलाई है। इनकी रचनायें मुख्य रूप से भक्ति भाव से ओत प्रोत हैं। रचनाओं में सरसता एवं माधुर्य का गुण विद्यमान है। अलंकारों के प्रयोग से रचनाओं में सुन्दरता आयी है। एक आशु कवि के रूप में सामयिक विषयों पर तुरन्त कविता लिखने का गुण कवि की विद्वत्ता का परिचायक है। कवि का हिन्दी काव्य को दिया गया अमूल्य योगदान अविस्मरणीय है।

﴾14﴿ श्री शंभू श्रीवास्तव:

जीवन परिचय:

श्री शंभू श्रीवास्तव का जन्म 11 जून सन् 1922 को हमीरपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गनपत जी श्रीवास्तव था। इन्होंने बी0ए0 तक शिक्षा प्राप्त की एवं निर्वाचन विभाग में निरीक्षक पद पर कार्यरत रहे। वहां से सन् 1974 में सेवामुक्त होकर ये अब अपने स्थायी निवास नया रामनगर उरई में रह रहे हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी कोई काव्य कृति प्रकाशित नहीं है ये गीतकार हैं। इनके गीत कभी-कभी पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं। इनके गीतों में वास्तविकता के साथ दर्शन का हल्का संस्पर्श रहता है। अवलोकनार्थ इनका एक गीत नीचे दिया जा रहा है।

गीत

--

हर एक रात सो जाता मरण सेज पर,
हर एक प्रातः मैं नया जन्म लेता हूं।
तारक तिनकों से नीड़ बनाकर नभ में
रहने की मेरे मन में साध नहीं है
पर दिनभर धरती पर चलकर रजनी में
आकाश देख लेना अपराध नहीं है।
मैं मेघदूत बनकर योगी अम्बर को
वसुधा वियोगिनी का संदेश सुनाता
हर रोज मनोरथ के रवि रथ पर चढ़कर
मैं गीत गगन गंगा के पथ पर आता
मैं सदा धूप की गलियों में गाता हूं
मैं रजत चांदनी को भी स्वर देता हूं।
हर रोज निशा ने दीपावली सजायी
हर रोज उषा ने अरूण अबीर उड़ायी
हर रोज चांदनी भू पर उतरी लेकिन
धरती अपने आंचल में बांध न पाई
यों ही दुख-सुख की धूप-छांह में जग का
मधुमय विषमय अभिनय चलता है।
रे सन्धि पत्र सी समता ही सुखकर है
ममता ही मानव मन की दुर्बलता है।

पतवार छोड़कर आशा अभिलाषा की
मैं अपनी नौका लहरों से खेता हूं।
जो राग तुम्हारे गूंज रहे अन्तस में
उनसे ही गीतों का सरगम बनता है
तूलिका तुम्हारी अनुभूति लिये हृदय में
हर चित्र तुम्हारा रेखा क्रम बनता है।
मैं कुछ सांसें सुकुमार तुम्हारे नभ से
लेता हूं प्रतिपल लौटाता जाता हूं
खींचते जा रहे हो मेरी पथ रेखा
मैं उस पर ही निर्भय चलता आता हूं।
यह देह दीप मेरा है स्नेह तुम्हारा
निर्देश तुम्हारा, मैं तो अभिनेता हूं।

मूल्यांकनः

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है श्री शंभू जी भावुक कल्पना के एक संवेदनशील कवि हैं। दार्शनिकता से ओत प्रोत इनकी रचनायें प्रवाहमयी होती हैं। भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाले कवि की रचनायें चिन्तन को एक नयी दिशा देने में सफल हुई हैं। कवि का प्रयास अच्छा है।

(15) श्री संतोष दीक्षितः

जीवन परिचयः

श्री संतोष दीक्षित का जन्म 13 अक्टूबर सन् 1942 को ग्राम पौथिया (हमीरपुर) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गोपीनाथ दीक्षित था। इन्होंने स्नातकोत्तर, विधि स्नातक तक शिक्षा प्राप्त की है तथा वर्तमान समय में गांधी इण्टर कालेज उरई में प्राध्यापक हैं। अब ये 470, राष्ट्रकवि मार्ग उरई में ही रहते हैं। प्राध्यापक होने के साथ साथ ये पत्रकारिता से भी जुड़े हुये हैं।

काव्य कृतियांः

श्री दीक्षित जी एक अच्छे कवि हैं। विभिन्न स्थानों पर आयोजित कवि सम्मेलनों में भी

जाकर आप कविता पाठ करते हैं। कोई उल्लेखनीय काव्य कृति प्रकाशित नहीं है। फुटकर रचनायें अवश्य समय समय पर पत्र/पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। ये छन्द,गीत तथा नयी कविता सभी लिखते हैं। अवलोकनार्थ एक रचना प्रस्तुत है।

संभावनाओं का चित्रकल्प

(एक अन्र्राष्ट्रीय कविता)

उद्यान !

उड़कर प्राप्त कर ले

उडुगणों की पंक्ति में

स्थान !

बहुत संभव है - - - - धरा कुछ और सिकुड़े।

बादलों के पंख से

पानी न निचुड़े

क्या भरोसा - - - - - जुगनुओं के जंगलों का

मावसी मरूभूमि के

विस्तार को रोकें न रोकें ?

क्या पता विज्ञान अक्षम - - - -

भूकंप के संचार को टोकें न टोकें ?

बहुत संभव है - - - - धरा का पुत्र ही

उन्माद में आकर ध्रुवों की बर्फ पिघला दे

बहुत संभव है कि जल की आग

जल को ही जला दे।

किंतु यह सब कुछ असंभव

क्योंकि अब तक - - - - धरा की अंगड़ाइयों ने

गगन का पीछा नहीं छोड़ा

अधबुझी सी प्यास ने

तृप्ति का आंचल नहीं छोड़ा

और अब तक - - - - भोर का यह रेशमी कोहरा

सुलझा नहीं है - - - - रश्मियों की कंघियों से

उद्यान के सारे सुमन
बांध नहीं पाये अभी तक संधियों ने
और सीमा लंघनों में टूटन अभी आई नहीं
नील कंठी नयन भी तो - - - -
काल कूटी घूंट पी पाये नहीं
हर अधूरी नींद का
हर स्वप्न है अब तक अधूरा
हर अधूरी तानसेनी तान को
दोहरा नही पाया अभी तक तम्बूरा
इसलिये ओ सुरभि में सोये हुये
अज्ञान के अभिमान !
उडुगणों को ही बुलाकर
दे यहां स्थान ।

मूल्यांकनः

श्री संतोष दीक्षित की उपर्युक्त नवक्त कविता उनके एक अच्छे कवि होने का प्रमाण है। ये बुन्देली व खाड़ी बोली दोनों में ही रचनायें करते हैं। छन्द गीत व अतुकान्त कविता सभी पर इनका अच्छा अधिकार है। अब तक कवि द्वारा सृजित काव्य हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण धरोहर हैं। रचनायें सरस एवं लालित्यपूर्ण हैं। कवि के गहन चिन्तन का स्पष्ट प्रभाव इनकी रचनाओं पर दिखायी पड़ता है। कवि का योगदान प्रशंसनीय है।

****

षष्ठ अध्याय

काव्य की विकसित धारा में योमदान करने वाले

अन्य स्फुट कवि

(1) संक्षिप्त परिचय

(2) काव्य कृतियां

(3) मूल्यांकन

****

षष्ठ अध्याय

काव्य की विकसित धारा में योगदान करने वाले अन्य स्फुट कवि

इस अध्याय के अंतर्गत जनपद के उन कवियों को स्थान देने का प्रयास किया गया है जिनका कविता के क्षेत्र में सीमित किंतु उल्लेखनीय योगदान है। कई नवोदित कवि भी इस अध्याय के अंतर्गत लिये गये हैं जिनका हिन्दी काव्य की धारा में नवीन पदार्पण हुआ है। जनपद हमीरपुर में जन्म लेने वाले ऐसे सभी कवियों का संक्षिप्त परिचय एवं काव्य कृतियों का उल्लेख करते हुये उनका सम्यक मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। कवियों की संख्या अधिक न होने के कारण चतुर्थ एवं पंचम अध्याय के समान उन्हें अलग अलग तहसीलों में विभक्त नहीं किया गया है। कवियों से प्राप्त रचनाओं की त्रुटियों पर ध्यान न देते हुये उन्हें उसी रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

॥॥ श्री धनीराम सिंह गौर:

जीवन परिचय:

श्री धनीराम सिंह गौर का जन्म ग्राम बेरी स्टेट (हमीरपुर) में 2 नवंबर सन् 1930 को एक क्षत्रिय कुल में हुआ था। इनके पिता श्री सुखदयाल सिंह एक संतसेवी, उदार हृदय व्यक्ति थे। इन्होंने कक्षा 7 तक शिक्षा प्राप्त करके शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त किया और अध्यापक पद पर कार्य करन लगे। सन् 1990 में अवकाश प्राप्त करके ये समाज सेवा वें काव्य सृजन के कार्य में संलग्न हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी कोई पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हो सकी है। इनका लिखा एक खण्ड काव्य 'बुन्देलखाण्ड' धनाभाव के कारण प्रकाशित नहीं हो सका है ये मूल रूप में वीर रस के कवि हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं।

॥1॥

'बुन्देलखण्ड' अप्रकाशित खण्डकाव्य से॥

याद करो उन वीरों को, जिसने इस भू गो स्वर्ग बनाया,

नमन करो इस भू को, जिसने शेरों को उपजाया

शीश दिया पर ॥सी॥ न उचारी, कैसे वीर महान।

औ छत्रसाल, रानी झांसी, जू, हम तेरी सन्तान।

वीर बुन्देला शूर वीर थे, चमकी थी जिनकी तलवार।

मुगल मतंगन की मति नासी, कांपी अंग्रेजी सरकार।

जिनकी सिंह गर्जना सुनकर भागे बड़े बड़े सरदार।

जिसने इस भू का मर्म न जाना उसका जीवन है धिक्कार।

॥2॥

कुण्डलियां

वीर बुन्देला भूमि को बारम्बार प्रणाम

देखान को आये जहां, लक्षमण सीताराम

लक्ष्मण सीताराम, बननि गिरि सर छवि छाई

चित्रकूट सा धाम, जगत जीवन सुखादाई

तुलसी, केशव, व्यास, बिहारी गायन गाथा।

झूम झूम झुक झूल गौर कवि नावै माथा।

॥3॥

कैसा सुन्दर अति सुखाद यह पुर जिला हम्मीर

इत जमुना उत बेतवा, पावन निर्मल नीर।

पावन निर्मल नीर , बनन बागन छवि छाई

चरखारी अरू राठ, महोबा अति सुखादाई

यह बुन्देला भूमि, जगत जीवन सुखादाता

झूम झूम झुक झूल गौर कवि शीश झुकाता।

॥4॥

मुक्तक

आत्म निर्भरता वीरता का सार है

प्रेम ईश्वरी चमत्कार है।

सेवा का त्याग सब सुखों का सार है

धन्य जिनको अपनी जन्मभूमि से प्यार है।

मूल्यांकन:

वीर रस के कवि श्री धनीराम सिंह गौर की रचनायें भावपूर्ण हैं। सरल शैली में की गई कवि की रचनायें उसके आत्मचिन्तन की गहरी अभिव्यक्ति हैं। कवि का अप्रकाशित खण्डकाव्य 'बुन्देलखण्ड' कविता के प्रति कवि के गहरे लगाव का प्रतीक है। कवि का प्रयास सराहनीय है।

(2) श्री देवीदीन साहू:

जीवन परिचय:

श्री देवीदीन साहू 'अविनाशी' का जन्म ग्राम/पोस्ट बिहरका (हमीरपुर) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री लक्ष्मण साहू था। इन्होंने बी0एस0सी0(कृषि) आयुर्वेदरत्न तक शिक्षा प्राप्त की। ये बीस वर्ष तक ग्राम पंचायत अधिकारी के पद पर कार्यरत रहे तथा अब वर्तमान समय में परिषदीय विद्यालय में सहायक अध्यापक पद पर कार्यरत हैं। इस समय भरूआ सुमेरपुर में निवास करते हैं।

काव्य कृतियां:

इन्होने अभी तक यथार्थपरक फुटकर रचनायें लिखी हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

अध्यात्म

मिट्टी ही दुनिया कि तो, चन्दन से ज्यादा ही रही।

मिट्टी ही दुनिया कि तो, बन्धन में बांधे ही रही ।।

बीज बोये फूल के थे, शूल संग क्यों हो गये,

देते उलहना ही रहे, बोये बिना क्यों हो गये।

मिट्टी को भी देख लो, कंचन सी तपती ही रही। मिट्टी . . . .

होती रहती है जहां, फसलें अजूबे रंग की।

बोने वाले भी यहां, कहते अजूबे ढंग की।

मिट्टी अपने उदर में, अंकुर संजोये ही रही। मिट्टी . . . .

तोड़ने के पहले से ही, शूल ही चुभने लगे।

तोड़ने के पहले से ही, शूल भी चुभने लगे।

मिट्टी को जाना नहीं, नन्दन की दता ही रही। मिट्टी . . . .

जिसने किया है कामना, कामी बने ही रह गये

जिसने किया ना कामना,काया बंधे ना रह गये।

मिट्टी ही रोडा बनी, वन्दन की भूखी ही रही। मिट्टी . . . .

वे ही उगे अन्तर निहित, अन्जान में ही बो रहे,

फूल संग कांटे जहां, पहचान में ना वो रहे।

अविनाशी ना मिट्टी लखे, ज्योति छिपाये ही रही। मिट्टी . . . .

(2)

अध्यात्म

तेज स्वयं का स्वंभान हो, तेल नहीं बाती।

दीप चाह की चाह लेश हो, मेल नहीं खाती।

खुद से खुद ही तृप्त होय वो, त्रास कभी ना पायें।

पर में खुद ही लिप्त होय वो, राह कभी ना पायें।

देह भान ही भान रात सा, याद तभी आती।

तेज स्वयं . . . . . .

नित ही खुद से दूर देखते, देख नहीं वे पाते।

जब भी मन में तोष मानते, भूल वहीं वे जाते।

मोह दाह ही दाह जीव को, आह सही आती।

तेज स्वयं . . . . .

सब में रहते पास दूर हो, डाह रही ही होगी।

तब भी कहते आह दूर हो, चाम बने हो भोगी।

बीच चाह के बोय देंय तो, चाह नहीं जाती।

तेज स्वयं . . . . .

घर में अपने आग डाल के, दूर कहीं भी जायें

मन से उसका मोह छोड़ दें, हो अविनाशी जायें।

भेद जान के भूल जाये जो, तेल वहा बाती।

तेज स्वयं . . . . . .

मूल्यांकन

कवि की उपर्युक्त दोनों रचनायें अध्यात्म से कवि की गहरी आस्था की प्रतीक हैं। यथार्थ पर कवि का पूर्ण विश्वास है। सत्य को जानकर दूसरों तक अपने भावों की अभिव्यक्ति को कविता के माध्यम से पहुंचाने का कवि का प्रयास सराहनीय है। रचनायें सरल एवं भावपूर्ण हैं।

(3) श्री संजय सिंह सागरः

जीवन परिचयः

श्री संजय सिंह 'सागर' का जन्म हमीरपुर तहसील के अंतर्गत ग्राम कुरारा में । जनवरी सन् 1974को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामअवतार सिंह तथा माताजी का नाम श्रीमतीः कौशिल्यादेवी है। इन्होंने एम0ए0(अंग्रेजी) तक शिक्षा प्राप्त की है तथा वर्तमान समय में श्री सरस्वती विद्या मंदिर कुरारा में आचार्य पद पर कार्यरत हैं। ये बहुत ही अच्छे चित्रकार भी हैं।

काव्य कृतियांः

ये एक उदीयमान कवि हैं। मुख्य रूप से ये श्रृंगार तथा व्यंग लिखते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

श्रृंगार

ग्रीष्म काल का भोर पवन हो, शिशिर की शीतल धूप हो तुम।

चातक की स्वाती वर्षा हो, बसन्ती का रूप हो तुम।

प्यार में निर्झर का स्वरूप हो, धरा पे उतरी परी हो तुम।

अश्रुधार बन बहे जुदाई, रजनी ओस भरी हो तुम।

प्यार रहेगा अनतकाल तक, कस्तूरी कुड़ि हिरण हो तुम।

घोर निराशा के बादल में, मिलन की क्वांरी किरण हो तुम।

भूल भुलैया सी दुनिया में, इस दिल की बस याद हो तुम।

मेरी चाहत, राहत दिल की, बिरहा की फरियाद हो तुम।

(2)

गीत

सम्हलो हिन्दू वीरो, मां रूदन मचाती है।
अब जाग उठो शेरो, रणभूमि बुलाती है।

खूनी अभिशापों से दुष्टों के पापों से।
गौ माता की माता प्रतिपल, अकुलाती है
क्यों पिघल नहीं जाती, बज्जर की छाती है
सम्हलो . . . . . .
राणा की सन्तानो तुम डरना क्या जानो
सुन लो हल्दी घाटी किसके गुण गाती है
चित्तौड़ भूमि रण का संदेश सुनाती है।
सम्हलो. . . . .
बन्दा की हुंकारें, हरि सिंह की तलवारें
सिन्धु की लहरों से, किसकी ध्वनि आती है।
काबुल की मां जिस्से शिशुओ को सुलाती है।
सम्हलो . . . . . .
तेरे बल विक्रम से, पौरूष और ऊधम से।
वह मानवता जागे, जो प्रभु की थाती है।
दानवता के भय से, जो मिटती जाती है।
सम्हलो. . . . . .

मूल्यांकनः

श्री संजयसिंह 'सागर' एक नवोदित कवि हैं। ये मुख्य रूप ने श्रंगार व व्यंग की रचनायें लिखाते हैं। रचनायें भावपूर्ण है। सरस एवं प्रवाह मुक्त रचनायें कवि के काव्य कौशल का प्रतीक हैं। कवि का प्रयास अच्छा है।

[4] श्री जयराम अनुरागी:

जीवन परिचय:

श्री जयराम अनुरागी का जन्म तहसील राठ के अंतर्गत ग्राम कुर्रा में 1 जुलाई सन् 1942 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामदयाल है। इन्होंने एम0ए0 तक शिक्षा प्राप्त की है तथा सी0टी0 प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वर्तमान समय में ये बी0एन0वी0 इण्टर कालेज राठ में अध्यापक पद पर कार्यरत हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी रचनायें अभी तक पत्र/पत्रिकाओं में ही प्रकाशित हुई हैं। इनका अपना कोई रचना संग्रह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक कुव्यवस्थाओं तथा जातिवादी विचारधारा के प्रति तीव्र आक्रोश इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है। ये गीत, छन्द, चौकड़िया इत्यादि सभी लिखाते हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे प्रस्तुत हैं।

(1)

चौकड़िया

उतै न मंदिर, मस्जिद रोरा, कर रये इतै बिलोरा
आसमान की टंकी थिगरिया, बिना सूज औ डोरा।
ढोंग रचा रये हैं धरती पै, ठेकेदार निपोरा।
अल्ला, राम, ईश हैं एकइ, कर लो बैठ निनोरा।

(2)

गीत

चाहना जिसकी होती है, याद भी उसकी होती है।
ढूंढ़ लेता है सागर से, बहुत गहरे में मोती है।
जले विन भानु ज्योति है।
कल्पना मौन होती है।
चेतना सुख में सोती है।

बिहग आराम करते हैं, कुसुम कलियों में सोते हैं।
रात नीरवता में डूबे, स्वप्न पहरे पर होते हैं।
नींद जब सपनों को आती, रात मधुमास होती है।

पंख से हीन जो पक्षी, गगन में उड़ न पाता है।
हंस बगुला पर हंसता है, विवश हो लौट आता है।
पतंगी लौ में जलती है, रीत से प्रीत होती है।

निशा में खेलती मछली, धार को चीरकर चलती।
नजर मछुआ की पड़ते ही, भरे सागर में जा छिपती ।
लहर पानी में मिल जाती, नहीं पहिचान होती है।

(3)

देव धनाक्षरी

बजरंग महावीर, रघुनाथ तेरो पीर,
देव-देवन में वीर बलवीर बलि जाऊँ मैं
वज्र देह, लाल-लाल, धारो गदा विकराल,
देह विकट विशाल, यश गान गुण गाउँ मैं।
आओ हो के विकराल, कर दोनों द्रग लाल,
महाकाल हू को काल, हाल विनय सुनाउँ मैं।
मात अंजनी के लाल, हो दीन पै दयाल,
दुष्ट दलहु विशाल, प्रभु शीश को झुकाउँ मैं।

(4)

न हिन्दू चाहिये न मुसलमान चाहिये।
जो हिन्द के हितैषी हैं इन्सान चाहिये।
हर व्यक्ति यही चाहता है भगवान से मिले।
अपने में स्वयं रूप की पहिचान चाहिये।
ये चांद और सूर्य चिन्ह बेचते हैं लोग
इनकी दुकान बन्द हो निदान चाहिये।

मूल्यांकनः

श्री जयराम अनुरागी एक अच्छे कवि हैं। इनकी रचनायें अध्यात्म से ओत प्रोत हैं। सरल एवं रोचक शैली में पाखण्ड वाद एवं सामाजिक कुव्यवस्थाओं पर जिस प्रकार इन्होंने चोट की है वह प्रशंसनीय है। रचनायें परिमार्जित एवं भावपूर्ण हैं। कवि का प्रयास सराहनीय है।

(5) श्री सुरेश कुमार सोनीः

जीवन परिचयः

श्री सुरेश कुमार सोनी का जन्म 1 जुलाई सन् 1976 को चण्डौत (हमीरपुर) में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री राधेश्याम स्वर्णकार तथा माता जी का नाम श्रीमती रामकली देवी है। इन्होंने बी0ए0 तक शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान समय में ये मुहाल खुशीपुरा राठ में रहते हैं तथा व्यापार कार्य करते हैं।

काव्य कृतियांः

इन्होंने विभिन्न विषयों पर फुटकर रचनायें की हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे दिये जा रहे हैं।

(1)

जिस धरती पै जन्म लिया हमने है बंधु,
उस धरती का सदा मान होना चाहिये।
कोई देशद्रोही इसे करता कलंकित है,
शोणित बहा के दाग धोना चाहिये।
अभी तक इस भू का काफी कुछ खो चुके हैं,
अब इस भू का कुछ भी न खोना चाहिये।
स्वर्णिम भविष्य चाहते हो इस देश का तो,
हमें सदा राष्ट्रभक्ति बीज बोना चाहिये।

(2)

कुण्डलियां

वर्षा आयी झूम के काली घटा समेत।
तड़ित तड़क घन शोरभा, खुश भये सर औ खेत।
खुश भये सर औ खेत प्रकृति निज काया धोई।
भागी ग्रीष्म बहुत, तपन हम इसकी ढोई।
तृण शंकुल भई भूमि, देख मन सबका हरषा ।
खुशी भये सब जीव, सुहानी आ गई बरषा।

(4)

नव वर्ष गीत

विक्रम को पहुंचे मेरा वन्दन, नव वर्ष तुम्हारा अभिनन्दन।

तेरे स्वागत में विटपों ने , नूतन पल्लव धारे हैं।
तेरे आने की खुशियों में, मन प्रसन्न हमारे हैं।
स्वागत करने हेतु लिये हैं, कोमल कलिकायें उपवन।
नव वर्ष तुम्हारा . . . . .
नाचें गायें खुशी से बच्चे अरू गाते बूढ़े सारे।
सूर्य प्रफुल्लित हुये गगन में, होवें चन्दा अरू तारे।
करें आरती सभी कविगण गा गा के अपने छन्दन।
नव वर्ष तुम्हारा . . . .
काट रहे फसलें किसान औ गाते मीठे गीत सुहाने।
बहे पसीना तन से उसके, राहत देते पवन लुभाने।
शीतल करते इतना तन को, नहिं कर सकता है चन्दन।
नव वर्ष तुम्हारा अभिनन्दन।

मूल्यांकन:

श्री सुरेश कुमार सोनी उदीयमान कवि हैं। राष्ट्र के प्रति भक्तिभाव पूर्ण कवि का चिन्तन उसकी कविताओं में प्रतिविम्वित है। रचनायें सरल एवं सरस शैली में लिखी गयी हैं। कवि का प्रयास अच्छा है।

(6) श्री महितोष निगम :

जीवन परिचयः

श्री महितोष निगम का जन्म 4 नवंबर सन् 1955 को कस्बा सुमेरपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री भास्कर निगम है इनके पिता भी एक अच्छे कवि हैं। इन्होंने बी0काम0, एल-एल0बी0 तक शिक्षा प्राप्त की एवं वर्तमान समय में जनपदीय न्यायालय हमीरपुर में वकालत करते हैं ये साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था हमीरपुर के महामंत्री भी हैं।

काव्य कृतियां:

ये एक अच्छे गीतकार हैं इनके गीत राजनैतिक एवं आध्यात्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत होते हैं। अब तक इनका कोई काव्य संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु पत्र/पत्रिकाओं में कभी-कभी इनकी रचनाये प्रकाशित होती रहती हैं। इनकी कुछ रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

(1)

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जो है सब है उसका नूर।
थोड़ा सा यश वैभव पाकर क्यों हो मद में चूर।
हर पत्ती का अलग रूप है, हर प्रसून की अलग गंध है।
कहीं उड़ें उन्मुक्त तितलियां, कहीं कमल में भ्रमर बंद है।
कुहू-कुहू बोले कोयलिया, सबका मनुवां हरषे।
नाचे झूम मयूरा मेघा रिमझिम-रिमझिम वरषे।
झर-झर-झर-झर निर्झर गाये प्रभु न तुमसे दूर।
सत्यम् शिवम् . . . .
परदे के पीछे से आना और धुन्ध में फिर खो जाना।
सांसों पर अधिकार बिना यह जीवन जीते जाना।
कैसा रंगमंच है ये और कैसे उसके खेल।
कहीं विरह के बहते आंसू कहीं प्रणय के मेल।
झंझावातों की धरती पर दीप जले भरपूर।
सत्यम् शिवम्. . . . .

जन्म दिया उसने मानव का जीवन तेरा सजाया।

माया मोह के जाल में फंसकर तूने उसे भुलाया।

अपने हाथों से तुमने अपना इतिहास बनाया।

जैसे कर्म किये जीवन में वैसा प्रतिफल पाया।

सारा जग यह कर्मक्षेत्र है बनकर लड़ना शूर।

सत्यम् शिवम् . . . .

(2)

मानता हूं प्रगति पथ पर तुम बहुत आगे बढ़े हो।

बादलों से और ऊपर चांद तारों पर चढ़े हो।

जलधि अम्बर एक करके स्वर्ग धरती पर बनाये।

और मरूस्थल में भी मृदु अंबु के निर्झर बहाये।

ब्रह्म का नित शोध करते, ब्रह्मज्ञानी तुम कहाये।

मौत के मुख से कभी तुम जिन्दगी को खींच लाये।

किन्तु मानव आज आदमखोर बनकर क्यों खड़े हो।

मानता हूं . . . . .

सृष्टि रचकर के नई भगवान बनना चाहते हो।

या मिटाकर यह धरा शैतान बनना चाहते हो।

क्या महकते पुष्प उपवन के तुम्हें भाये नहीं।

चाहते हो कोकिला क्या गीत अब गाये नहीं।

युद्ध लड़ते ही रहे पर क्या कभी खुद से लड़े हो।

मानता हूं . . . . .

प्रश्न उठते ही रहे पर कुछ नहीं उत्तर मिले।

आदमी से आदमी के फासले हैं बढ़ चले।

नाज है गर युक्ति पर तो ऐसी एक दुनिया बसाओ।

शांति हो सद्भाव हो विध्वंश के सब स्वर मिटाओ।

नेह के सूरज उगाओ द्वेष तम में क्यो पड़े हो।

मानता हूं प्रगति . . . . .

मूल्यांकनः

उदीयमान कवि श्री महितोष निगम की रचनायें भावपूर्ण एवं प्रवाहयुक्त हैं। गीतों में माधुर्य एवं लालित्य का गुण विद्यमान है। कवि का सामाजिक चिन्तन उसकी रचनाओं में स्पष्ट दिखाई पड़ता है कवि का मौलिक चिन्तन एवं गहरी अनुभूतियों से युक्त रचनायें उसके एक अच्छे कवि होने की परिचायक हैं।

(7) श्री रामआसरे द्विवेदीः

जीवन परिचयः

श्री रामआसरे 'अलबेला' का जन्म 7 जनवरी सन् 1938 को ग्राम गहरौली, जनपद हमीरपुर में एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मनीराम द्विवेदी एवं माताजी का नाम श्रीमती माधव है। इन्होंने एम0ए0 (हिन्दी) बी0एड0 तक शिक्षा प्राप्त की एवं वर्तमान समय में श्री काशीप्रसाद इण्टर कालेज खरेला (महोबा) में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कार्यरत है। जनपद के गौरव वरिष्ठ कवि श्री मंजुल मयंक जी इनके काव्य गुरू हैं।

काव्य कृतियांः

ये मुख्य रूप से गीतकार हैं। अभी तक कोई साहित्य प्रकाशित नहीं हुआ है। अवलोकनार्थ इनकी कुछ रचनायें नीचे दी जा रही हैं।

गीत (1) शिशुओं के लिये

तुम पर ही भारत भविष्य निर्भर है मेरे लाड़लो।
नई पौध के नये अंकुरो फूलो फलो बाढ़ लो।
खेल खिलाता हर टहनी को हर बयार दे तालियां।
हर प्रभात गीले नयनों से छू जाता हर बालियां।
चांदी न्यौछावर कर चंदा नित्य मनाता रात में।

कब बढ़कर मुझ तक आयेंगी नन्हीं नन्हीं डालियां।

तुम पर ही निर्भर मेरी आशाओं का आकाश है।

कभी यहां पर शिथिल न हो उस इन्द्रधनुष की आड़ लो।

उस अतीत का बीज तुम्हारा वही केसरी क्यारियां,

जहां फूल कर कभी नहीं मुरझाई हैं फुलवारियां।

यहीं शूल पर फूल विहंसते हीरे मिलते धूल में।

यहीं दीप बुझ बुझ कर जल रंग जाते युग की सारियां।

अपने बल पौरूष से बढ़कर अपने युग का भार ले।

कौन कहेगा जुल्मों की आंधी तूफान दहाड़ लो।

गीत (2)

देखाते देखाते रूप राका लुटी, नयन कह न सके क्योंकि बानी नहीं

जब गिरा ने कहा कोई माना नहीं, क्योंकि देखी तो कोई निशानी नहीं।

लेके अंगड़ाई चुटकी बजा के सुबह,

हर कली आ गई रस की गागर लिये

सांझ होते ही घर घर में दीपक जले

छोर आंचल का छू स्नेह सागर पिये।

भौंरे आये आम चर्चा है यह,

मरने वाले शलभ की कहानी नहीं।

मेघ की आंख जब नभ में रोई बहुत

दर्द इतना बड़ा इन्द्रधनु बन गया।

फल पका डाल पर पीर पुरनम हुई।

रस लगा झांकने तब दुल्हन बन गया।

दिल की आंखों से देखो दिया कि नहीं।

जिनमें काजल तो है किंतु पानी नहीं।

गीत (3)

कोई सूरज जाये भइया कोई चंदा जाये रे

मेरा देश तो ऐसा जिस पर जियरा बल बल जाये रे।

खुले मगनवां भरे अंगनवां चिड़िया धीरे बोल गई

पिय आवन की मन भावन की सुधियों से रस घोल गई

दूध भात न खाये रे सोने चोंच मढ़ाये रे।

जहां सजन के लिये सजनियां ऐसे सगुन मनाये रे।

कागा रोज उड़ाये रे ।। मेरा देश . . . . .

रंग बिरंगी फसलें होती रंग बिरंगे हैं त्योहार,

कभी बसंती पवन चले तो कभी सुनावै मेघ मल्हार।

जब जब होली आये रे यौवन जोर लगाये रे

देवरा भाभी के ताना मारे प्रेम का रंग चढ़ाये रे

गारी दै दै जाये रे।। मेरा देश . . . . .

मूल्यांकनः

जैसा कि उपर्युकत रचनाओं से स्पष्ट है श्री रामआसरे द्विवेदी जी एक अच्छे गीतकार हैं। सरल एवं बोधगम्य शैली में इनकी रचनायें प्रवाहयुक्त हैं। राष्ट्रीय एवं सामाजिक संदर्भो में कवि का मौलिक चिन्तन उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है। कवि का प्रयास अच्छा है।

(8) श्री अनन्त स्वरूप सिंह 'अनन्त'

जीवन परिचयः

श्री अनन्त स्वरूप सिंह 'अनन्त' का जन्म ग्राम उजनेड़ी (हमीरपुर) में 4 मार्च सन् 1959 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री शिवपाल सिंह है इन्होंने बी0ए0 एल-एल0बी0 तक शिक्षा प्राप्त की है और वर्तमान समय में जजी हमीरपुर में वकालत करते हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी अभी तक कोई काव्य कृति प्रकाशित नहीं हुई है ये तुकान्त व अतुकान्त कवितायें लिखते हैं। इनके गीत या तो राजनैतिक स्थितियों पर आधारित होते हैं अथवा प्रकृति चित्रण को ये अपने गीतों का विषय बनाते हैं। इनकी दो रचनायें अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं।

जुगनू

जुगनुओं ने आज दीवाली मनायी है,
रात में यह फुलझड़ी किसने छुटाई है।
जल रहे बारूद कण या उड़ रही चिनगी,
या कि तारों की कोई बारात आई है।
है कहीं आकाश गंगा तो कहीं उल्के,
आसमानी दृश्य जैसे झील में झलके।
तिमिर प्रेमी चांदनी से बैर हैं जिनके
रोशनी के रूप अगणित रूप में छलके।
खोह दर्रा भित्तियों में टिमटिमाते हैं
दीपकों से होड़ लेकर जगमगाते हैं।
वेग से उड़ते हवा में झूल जाते हैं,
झुरमुटों में झालरों से झिलमिलाते हैं।

सुप्त वृक्षों झाड़ियों को चूमते चलते,

पत्तियों पर ये सुनहले फूल से खिलते

कहीं दिपते कहीं छिपते शून्य में तिरते

अंधकारों में प्रकृति के दीप से जलते।

खोत उपवन वीथियों में परिभ्रमण करते,

निर्जनों में मुग्ध होकर रस रमण करते,

गहन तम में अभय होकर संचरण करते,

ज्योति अपनी ही जलाकर जागरण करते।

खो नहीं सकते अंधेरों में चमकते हैं

निश्चयी की भांति अपने यत्न करते हैं,

कर्मयोगी की तरह निज कर्म करते हैं,

शून्य जीवन में निरंतर रंग भरते हैं।

मेहनत

मेहनत का ही दाना दाना पास तेरे रह जाना है,

जो अनर्थ का लूट रहा है थोथे सा उड़ जाना है

मेहनत का ही . . . . . .

मुख में मक्खन मन में छुरियां भरमाता है छलता है,

कितने भोले अरमानों को निर्मम स्वार्थ कुचलता है,

चन्द सुखों के लिये आदमी पैसे का दीवाना है।

मेहनत का ही . . . . .

सिक्कों में ईमान बिक रहा धर्म स्वार्थ में बिकता है,

जहां नियम कानून बिक रहे चैन कहां मिल सकता है

यह समाज की न्याय व्यवस्था बहलाना फुसलाना है,

मेहनत का ही . . . . . .

निडर निरंकुश नौकरशाही मन का माना खेल रही,

अधिकारों की युक्त छांव में कर्तव्यों को बेच रही,

वेतन को पेंशन समझे है जिसका ध्येय कमाना है

मेहनत का ही . . . . . .

राजनीति धन्ना सेठों की सत्ताधीश खिलौने हैं,
भोली जनता के कंधों पर ये मखमली बिछौने हैं
चोरों की चौकीदारी में अपना माल खजाना है
मेहनत का ही . . . . .
धन के आगे रिश्तों नातों संबंधों का ध्यान नहीं,
प्रभुता औ वैभव के मद में निर्धन का सम्मान नहीं
भौतिकता की चकाचौंध में अपना भी बेगाना है,
मेहनत का ही . . . . .
होड़ प्रगति की रहे सदा पर नहीं किसी का त्रास रहे,
अपने श्रम पर रहे भरोसा नहीं किसी से आस रहे,
कस्तूरी तेरे अंदर है तू मृग सा अनजाना है,
मेहनत का ही दाना दाना पास तेरे रह जाना है।

मूल्यांकन:

श्री अनन्त स्वरूप सिंह एक उदीयमान कवि हैं प्रकृति के प्रति संवेदनशील कवि की रचनाओं में उसके चिन्तन की गहरी अनुभूति दिखायी पड़ती है रचनायें बोधगम्य एवं लालित्यपूर्ण हैं। कवि का भावुक हृदय सामाजिक विषमताओं से आहत है जिसका स्पष्ट प्रभाव उसकी रचनाओं में है कवि का चिन्तन एवं प्रयास प्रशंसनीय है।

(9) श्री दिनेश कुमार ' चक्रवर्ती ':

जीवन परिचय:

श्री दिनेश कुमार चक्रवर्ती का जन्म ग्राम रिठारी पोस्ट झलोखर (हमीरपुर) में 8 अप्रैल सन् 1972 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री देवीदयाल तथा माता का नाम श्रीमती रामकली देवी है। इन्होंने एम0ए0 (हिंदी), संगीत प्रभाकर तथा उर्दू कक्षा-10 तक शिक्षा प्राप्त की है। ये इस समय मुम्वई में रहकर यूनीक्यू के लिये गीत लिखाने का काम करते हैं। धारावाहिकों में ये अभिनय भी करते हैं। वर्तमान समय में ये श्री दर्शन को0आ0हा0 सोसायटी 27, नवी वाड़ी द्रादी सेठ अभ्यारी लेन मुम्बई-400002 में निवास करते हैं।

काव्य कृतियां:

इनकी अभी तक कोई काव्य कृति प्रकाशित नहीं है ये उर्दू व हिंदी दोनों मे ही काव्य सृजन कर रहे हैं। ये अपने नाम के पूर्व 'शायर' लिखते है। इनकी अप्रकाशित काव्य कृतियां निम्न हैं- (1) कलाम-ए-शायर भाग एक व दो, (2) गजब शायर और गजब शायरी (3) आंखें, (4) गिरते फूल तथा (5) आनन्द मंगल। इनकी काव्य कृति कलाम-ए-शायर में केवल [illegible] गजलें हैं काव्य कृति 'आंखें' में आंखों के बारे में 165 शेर लिखे हैं। 'गिरते फूल' में हिंदी कवितायें हैं तथा 'आनन्द मंगल' में भगवान के भजन व पद हैं। इनकी रचनाओं के कुछ नमूने नीचे प्रस्तुत हैं -

(1) 'किसान मैं हूं'

भारत के अर्थ की जड़ मैं हूं।
मिट्टी का छोटा कण मय हूं।
जिस पर समाज का उदर भार
वह शेषनाग का पण मैं हूं।
मैं मेहनत में रत रहता हूं
मैं शीत धूप सब सहता हूं।
मैं अन्न उगाता हूं लेकिन
फिर भी भूखा रहता हूं।
हे! गीता उपदेशक श्रीकृष्ण,
क्या यह मेरे कर्मों का फल है,
खाने को सूखी रोटी है
पीने को गड्ढे का जल है
मेरी खुशियां आरक्षित हैं
आनन्द धूप का पाता हूं।
मैं मेवे पैदा करता हूं।
औ सूखी रोटी खाता हूं
पत्थर नहीं इंसान हूं मैं,
मेहनत का धनवान हूं मैं
जोंक की तरह लहू मत चूसो
देश की नींव किसान हूं मैं।

(2) भारत की शान (गिरते फूल से)

उठो भारत के हे! नव प्रान, बांकुरो धर दुर्गा का ध्यान
सम्भालो अब तुम तीर कमान, बचा लो तुम भारत की शान
बुलाती है तुमको कश्मीर उबलता है गंगा का नीर
तड़पती राणा की शमशीर जला जाता है मां का चीर
उठा लो अपने कर किरपान, बचा लो . . . .
जल रहा धू-धू कर पंजाब, आ गया यू0पी0 में सैलाब
अरावली देती है आवाज, हिमालय से छिनता है ताज
हो गया ठण्डा राजस्थान, सम्हालो. . . . . .
धमनियां दिल्ली में है बन्द मचा है नेताओं में द्वन्द
आ गयी घोटालों में बाढ़ ले गये मां का आंचल फाड़
उठ रहा है अब पाकिस्तान, सम्हालो . . . .
सिसकते दहकानों के खेत, उड रहा खलिहानों मे रेत
घट रहा इन्सानों को काम, बढ रहा पानी का दाम
हो रहा कागज में उत्थान, सम्हालो . . . .
उठाओ शंकर का त्रिशूल, उड़ा दो मैदानों में धूल
निकालो संगीनों से राग, मिटा दो दामन के सब दाग
तुम्हें है वीर शिवा की आन, सम्हालो. . . .
भगत सिंह बिस्मिल और सुभाष, लिखाया है जिसने इतिहास
दब गया उनका नीचे नाम, डाकुओं का है चर्चा आम,
सुनाते हैं लिखकर फरमान, सम्हालो. . . . .
देश का नहीं किसी को ध्यान, बोटियां नोचे जैसे स्वान,
बनाकर शान्तिदूत का वेष लिये जाते गड्ढे में देश
पहन करके खादी परिधान, सम्हालो . . . . .
तुम करो गद्दारों का नाश, न दुश्मन लेने पावें सांस
मिटा दो घोटालों का मूल, खिला दो गुलशन गुलशन फूल
बढ़े तिरंगे का फिर मान, सम्हालो . . . .
उठो जागो हे! मां के वीर, सम्हालो भारत की तकदीर

कमल 'शायर' की करे पुकार, देश की नइया है मँझधार

कदम रखो पथ को पहचान, सम्हालो . . . . .

मूल्यांकन:

जैसा कि कवि के जीवन परिचय तथा काव्य कृतियों से स्पष्ट है कि ये एक उदीयमान नवोदित कवि हैं हिंदी व उर्दू दोनों में समान अधिकार रखने वाले श्री चक्रवर्ती जी कविता लेखन करते हुये एक व्यावसायिक कंपनी से संबद्ध हैं। देश की वर्तमान कुव्यवस्थाओं एवं राष्ट्रीय चुनौतियों के प्रति कवि सजग एवं गंभीर है। रचनाओं में कवि का मौलिक चिन्तन प्रतिबिम्बित होता है रचनायें सरस एवं लालित्यपूर्ण हैं।

[10] श्री ओमप्रकाश तिवारी 'नीरस' :

जीवन परिचय:

श्री ओमप्रकाश तिवारी 'नीरस' का जन्म 7 नवंबर सन् 1950 को हमीरपुर में हुआ था किंतु ये मूल निवासी मुहाल नैकानापुरा - महोबा के हैं। इनके पिता का नाम श्री लक्ष्मीप्रसाद तिवारी था। इन्होंने एम0एस-सी0 तक शिक्षा प्राप्त की है तथा वर्तमान समय में सहायक फील्ड आफीसर के पद पर स्टेट बैंक शाखा राठ में कार्यरत हैं। ये एक सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों से संबद्ध रहकर सामाजिक कार्य करते रहते हैं।

काव्य कृतियां:

इन्होंने दो खाण्ड काव्य ' ऊदल ' तथा ' कैकेयी ' लिखे हैं जो अभी तक अप्रकाशित हैं। शेष फुटकर गीत व छन्द आपने लिखे हैं जो अप्रकाशित रूप में आपके पास संग्रहीत हैं। कहानी तथा नाटक भी आप के द्वारा लिखे गये हैं। आकाशवाणी छतरपुर से भी आपकी कुछ रचनायें प्रसारित हुई हैं। इनकी कुछ रचनायें अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं।

स्वदेशी गीत

ठुकरायेंगे माल विदेशी, वस्तु स्वदेशी लाना है।

फिर से ना आ जाये गुलामी अपना देश बचाना है।

स्वाभिमान हम बेच न सकते गिरवी रखने की साजिश है,

अपनायेंगे माल स्वदेशी अपनेपन की ही ख्वाहिश है।

डंकल से क्या होगी हानि घर घर जा बतलाना है।

भूल चुके हम बलिदानों को कितने वीर शहीद हुये थे।

बीत गये सूने खुशियों बिन ना होली ना ईद हुये थे।

समझी सोची चाल विदेशी,मिल जुल कर ठुकराना है।

सबकी नजरें भारत पर हैं कैसे ये सरताज बन गया

कर्णधार जो नीति बनाते खाने को मुहताज हो गया।

देखा चुके हम नीयत इनकी षडयंत्र पुराना है।

ललचाये फुसलाये हमें उन्नति का मार्ग दिखाते हैं।

यदि पूरे हो गये मनोरथ हम दुर्भाग्य बताते हैं।

दूर दृष्टि की सोच हमारी,हमें स्वदेशी लाना है।

हरे भरे ये खेत बाग बन सब गिरवी हो जायेंगे।

अपनी फसलों की मुंहबोली कीमत हम ना पायेंगे।

देना पड़े सदा रायल्टी ये तुमको समझाना है।

(2)

सारी दुनियां से अलबेले केवल हम हैं भारतवासी।

भाईचारा के हम हामी उन्नति पथ के अभिलाषी।

मंजिल दूर भले हो कितनी बाधायें कितनी भी आयें

रोक नहीं सकती बढ़ते पथ हम आगे ही बढ़ते जायें।

साहिल पर ही दम लेंगे जा ऐसा शौर्य हमारी नस में।

काल विवश भी कर न सकता लक्ष्य प्राप्ति अपने वश में।

दांत गिने हमने सिंहों के पीठ न दिखलाई है रण में।
स्वाभिमान में जान त्याग दी घाव लगे चौरासी तन में।
साथ वचन के पालन करने राम भटकते थे वन वन में।
तेवर दिखा दिये अर्जुन को, पाल रहे क्यो संशय मन में
धूर्त कौम अंग्रेज समझ गयी कैसी है ये रानी झांसी।

कितने हुये शहीद यहां के मातृभूमि आजाद कराने।
चुने गये वे दीवालों में आजादी के जो परवाने।
लगे थपेड़े हमें समय के फिर हमने नवजीवन पाया।
पड़े हुये छींटे धो डाले, करवट ले पौरूष दिखलाया।
बीत अमावस की गयी रातें, हम लाये चुन पूरणमासी।

चट्टानों से टकरा जायें ऐसा है फौलादी सीना।
हम कायर की मौत न मरते मुश्किल कर दे रिपु का जीना
जिसको अपना शत्रु समझते नामो निशां मिटा देते हैं
कालजयी हम ही बमभोले, मान सहित विष पी लेते हैं।
प्रभु की लीलाओं की साक्षी, आकर देखो मथुरा काशी।

'कैकेयी' खण्ड काव्य से

(1)

राम का तो जन्म जनहित में हुआ है।
उनको लालच मोह ने ही कब छुआ है।
व्यर्थ में बदनाम कैकेयी माँ को हम करते रहे हैं।
खेल विधना का जो तय था वह हुआ है।

(2)

जब धरा पर धर्म का अवसान होगा।
शासकों में स्वार्थ बुद्धि प्रधान होगा।
गुरू पिता नारी का जग अपमान होगा।
समझो धरा पर पैदा भगवान होगा।

(3)

उत्तर भारत में स्थित सुंदर कैकय देश।
सभी सुखों से धन धान्यों से था यह पूर्ण प्रदेश
प्रजा बहुत शालीन वहां की सुंदर नर नारी।
ऐसा सौम्य प्रदेश जहां की प्रकृति करे रखवाली।

(4)

ऐसा सुंदर देश जहां हो, राजा भी हो सुंदर।
रूप-राशि से युक्त गुणों का, दिखाता वहाँ समुंदर।
नृप बाला कैकेयी रूप की, सुंदर सुघड़ सलोनी।
काम स्वयं शर्माये जिसपर, मति हो जाये बौनी।

मूल्यांकनः

श्री ओमप्रकाश तिवारी 'नीरस' एक अच्छे गीतकार हैं वर्तमान समाज में व्याप्त विषमताओं के प्रति जागरूक कवि ने अपनी रचनाओं में इस पर प्रहार करने का सफल प्रयास किया है। शैली सरल एवं बोधगम्य है। रचनायें प्रवाहमयी हैं कवि द्वारा सृजित ' ऊदल ' व ' कैकेयी ' खाण्ड काव्य अच्छी काव्य कृतियां हैं। बुन्देली व खाड़ी बोली दोनों में ही इनके द्वारा रचनायें की गई हैं।

सप्तम अध्याय

जब हम किसी कविता, कहानी या उपन्यास आदि को पढ़ते या सुनते हैं या किसी नाटक को देखते हैं तो हमें एक आनन्द की अनुभूति होती है। इस आनन्द की अनुभूति को हम रस कहते हैं, रस काव्य की आत्मा है। काव्य को परिभाषित करते हुये आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्य दर्पण' में लिखा है कि 'वाक्यं रसात्मक काव्यं' अर्थात रसात्मक वाक्य ही काव्य है। काव्य के सर्वप्रथम आचार्य भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र में रस की निष्पत्ति के संबंध में इस प्रकार व्याख्या की है।

' विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः '

अर्थात विभाव, अनुभाव और संचारी (व्यभिचारी) भावों के संयोग से रस की उत्पत्ति होती है। रसों के आधार भाव हैं। भाव मन के विकारों को कहते हैं, ये दो प्रकार के होते हैं स्थायी भाव तथा संचारी भाव। यही काव्य के अंग कहलाते हैं।

स्थायी भाव:

स्थायी भाव उसे कहते हैं जो रस रूप में पुष्ट या परिणित होने वाला तथा सम्पूर्ण प्रसंग में व्याप्त रहने वाला हो। साहित्यकारों के अनुसार स्थायी भावों की संख्या नौ बताई गयी है जिनके नाम हैं- रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय तथा निर्वेद। इनके अतिरिक्त वात्सल्य नाम का दसवां स्थायी भाव भी स्वीकार किया जाता है। उपर्युक्त स्थायी भावों का विवेचन हम निम्न प्रकार करते हैं:-

1. रति : स्त्री-पुरूष के मध्य परस्पर प्रेम से उत्पन्न भाव को रति कहते हैं।
2. हास : किसी के अंगों, वेष-भूषा तथावाणी आदि के विकारों के ज्ञान से उत्पन्न प्रफुल्लता को हास कहते हैं।
3. शोक : इष्ट के नाश अथवा अनिष्ट के आगमन के कारण मन में जो व्याकुलता उत्पन्न होती है उसे शोक कहते हैं।

4. क्रोध : जब कोई कार्य बिगड़ता है तो उस कार्य को बिगाड़ने वाले अपराधी को दण्ड देने के लिये मन में जो उत्तेजित करने वाली वृत्ति उत्पन्न होती है उसे क्रोध कहते हैं।

5. उत्साह : दान , दया और वीरता के प्रसंग से उत्तरोत्तर उन्नत होने वाली मनोवृत्ति उत्साह कहलाती है।

6. भय : प्रबल अनिष्ट करने में समर्थ विषयों को देखकर जो व्याकुलता मन में उत्पन्न होती है उसे भय कहते हैं।

7. जुगुप्सा : जब हम किन्हीं घृणा उत्पन्न करने वाली वस्तुओं को देखते हैं तो एक ऐसी मनोवृत्ति पैदा होती है जो उन वस्तुओं से संबंध न रखने को बाध्य करती है, यह मनोवृत्ति ही जुगुप्सा कहलाती है।

8. विस्मय : जब हम किसी असाधारण या अलौकिक वस्तु को देखते हैं तो हम जो आश्चर्य होता है उसे विस्मय कहते हैं।

9. निर्वेद : मानव के मन में संसार के प्रति जो त्याग भाग पैदा होता है उसे निर्वेद कहते हैं।

10. वात्सल्य : पुत्रादि के प्रति उत्पन्न होने वाला सहज स्नेह भाव वात्सल्य कहलाता है।

(1) विभाव :

अभी हमने जिन स्थायी भावों की चर्चा की है उन स्थायी भावों को जो व्यक्ति, वस्तु अथवा परिस्थितियां आदि जाग्रत या उद्दीप्त करती हैं उन्हें विभाव कहते हैं। किसी भाव का प्रवर्तन करने के लिये दो पक्षों का होना आवश्यक है, एक तो वह जिसके हृदय में भाव उत्पन्न व संचारित होता है और दूसरा वह जिसके प्रति भाव प्रवृत्त होता है। इस प्रकार विभाव दो प्रकार के होते हैं, 1. आलम्बन, 2. उद्दीपन ।

1. आलम्बन विभाव

जिन व्यक्तियों, वस्तुओं आदि का अवलम्ब लेकर स्थायी भाव अपने को प्रकट करते हैं उन्हें आलम्बन विभाव कहते हैं। इसके दो भेद होते हैं 1. आश्रय तथा 2. विषय ।

आश्रय : जिस व्यक्ति के मन में रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय कहते हैं।

विषय : जिस व्यक्ति या वस्तु के कारण आश्रय के चिन्ह में रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं उसे विषय कहते हैं।

(2) उद्दीपन विभाव:

जो वस्तुयें अथवा चेष्टायें भाव को उद्दीप्त अथवा तीव्र करती हैं उन्हें उद्दीपन विभाव कहते हैं। उद्दीपन के हेतु तो आचार्यों ने बहुत से बतलाये हैं पर उनमें से निम्न सत्रह मुख्य हैं- सखा, सखी, दूती, वन, उपवन, षडऋतुयें, पवन, चन्द्र, चन्द्रिका, चन्दन, कुसुम, पराग, श्रंगार, नृत्य गान, सुन्दर चित्र और सज्जित शैया। इनमें भी भेदापभेद किये गये हैं।

नायक और नायिका में कोई एक आश्रय होता है, जैस राम (आलम्बन) को लताकुंज (उद्दीपन) में देखकर सीताजी के मन में रतिभाव जगा तो यहां सीता जी आश्रय हैं और यदि सीताजी (आलम्बन) को फूलवाटिका (उद्दीपन) में देखकर श्री राम के मन में अनुराग जगा तो राम ही आश्रय हो गये।

2. अनुभाव:

भावों का नाम लेने और उनके उत्पन्न करने के साधनों को कह देनेसे ही काव्य में रस की सिद्धि नहीं मानी जाती। 'लक्ष्मण जी को परशुराम जी की कड़ी कड़ी बातें सुनकर क्रोध आ गया' ऐसा कह देते से श्रोता के हृदय में लक्ष्मण के क्रोध से उत्पन्न रौद्र रस की अनुभूति न होने लगेगी वह तभी होगी जब क्रोध की प्रकट होने वाली लक्ष्मण की शारीरिक चेष्टाओं - आंखों का लाल होना, होंठ, नथनों, भौंहों आदि का फड़कना, मुख से कठोर उत्तर का निकलना आदि का प्रदर्शन हो। अतः आश्रय की शारीरिक क्रियाओं की अभिव्यंजना रसात्मकता के लिये अत्यावश्यक है।

आश्रय के शरीर के वे विकार कार्य आदि जिनसे विभावों की सहायता से उसके मन में स्थित भाव के जाग्रत होने का ज्ञान होता है, अनुभाव कहलाते हैं। अनुभाव के तीन भेद हैं (1)सात्विक (2) आंगिक और (3) वाचिक।

सात्विक अनुभाव आठ होते हैं-

(1) स्तम्भ : हक्के बक्के या जड़ीभूत रह जाना।

(2) स्वेद : श्रम, अनुराग, आश्चर्य आदि से शरीर का स्वतः पसीने से भर जाना।

(3) रोमांच : हर्ष, भय आदि से रोंगटों का खड़े हो जाना।

(4) स्वर भंग : स्वाभाविक रीति से जैसे शब्द निकलते हैं, वैसे न निकलना, चुप सा हो जाना।

(5) कम्प : शरीर का थर थर कांपने लगना।

(6) वैवर्ण्य : चेहरे का रंग उड़ जाना, उसका फीका पड़ जाना।

(7) अश्रु : अकस्मात आंखों से आंसुओं का बहने लगना।

(8) प्रलय : सुध बुध का खो जाना या चेतना शून्यता, मूर्च्छित हो जाना।

इसके अतिरिक्त कुछ साहित्यकारों ने जृंभा (जंभाई आना) को नवां सात्विक भाव कहा है। यहां यह उल्लेखनीय है कि आश्रय की चेष्टायें ही अनुभाव के अंतर्गत हैं आलम्बन की नहीं। संताप, निद्राभंग, कृशता और प्रलाप आदि अन्य आंगिक और वाचिक अनुभाव कहलाते हैं। संयोग श्रंगार में लीलादिक बारह हाव हैं जो अनुभाव के अंतर्गत हैं। इनका विवरण निम्न प्रकार है-

(1) लीला :

नायक नायिकाओं का परस्पर एक दूसरे का वेष धारण करके उन्हीं के प्रेम संभाषण तथा चेष्टाओं का अनुकरण करना लीला कहलाती है। इसे भी तीन भागों में विभक्त किया गया है (1)स्वगता (2)सखीगता (3) स्वप्रियगता, जब नायिका स्वयं पति के वेषादि का अनुकरण करे तो वह स्वगता लीला होती है। जब सखी से नायक के वेषादि का अनुकरण कराये तो उसे सखीगता लीला कहते हैं तथा नायक से नायिका के वेषादि का अनुकरण कराना स्वप्रियगता लीला कहलाती है।

(2) विलास :

प्रिय के दर्शन मात्र से नायिका की आकृति नेत्रों तथा चेष्टाओं में एक विशेष परिवर्तन होना।

⟨3⟩ विच्छिप्तिः कांतिवर्द्धक अल्प केश रचना।

⟨4⟩ विभ्रम : परिस्थितिवश उतावली में किसी अंग का भूषण किसी अंग में पहिन लेना तथा ऐसे ही अन्य भ्रान्तिपूर्ण आचरण करना।

⟨5⟩ कित्रकिंचितःप्रिय के संसर्ग आदि से जब एक ही साथ रस,भय, हास्य, क्रोध, मान तथा हर्ष प्रकट हों।

⟨6⟩मोट्टायितः प्रेम में तन्मय होकर प्रियतम संबंधी कथावार्ता सुनना और इस भाव को छिपाने के लिये कान खुजलाना या ऐसी ही अन्य चेष्टायें करना।

⟨7⟩ कुट्टमितः प्रिय के अंग स्पर्श से आनन्दानुभूति होने पर भी बाह्तः क्रोध प्रकट करना।

⟨7⟩ विब्बोक : गर्व या मान के कारण प्रिय के पति या उसके द्वारा दी गई वस्तु के प्रति अनादर भाव।

⟨9⟩ ललित : सरसता और सुकुमारता का प्रदर्शन।

⟨10⟩ विहृत : अक्सर मिलने पर भी लज्जावश प्रिय से कुछ न कह सकना।

⟨11⟩ हेलाः प्रिय का संगम होने पर ढिठाई के साथ नाना विलास करना।

⟨12⟩ बोधक : नायक व नायिका का निश्चित संकेतों द्वारा एक दूसरे पर अपना अभीष्ट प्रकट करना।

3.संचारी या व्यभिचारी भाव:

स्थायी भाव तो प्रधान मानसिक क्रियायें हैं इनके साथ ही कुछ ऐसी अस्थायी मानसिक क्रियायें भी होती हैं जिनका आर्विभाव कुछ काल के लिये ही होता है। वे स्थायी भावों के समान निरंतर नहीं रहतीं स्थायी भावों को पुष्ट करके ही विलीन सी हो जाती हैं ऐसे भाव संचारी कहलाते हैं क्योंकि जब तक स्थायी या प्रधान भाव बने रहते हैं तब तक ये बराबर संचरण करते रहते हैं आते जाते रहते हैं।

इस तरह के भावों को व्यभिचारी भी कहते हैं इसका कारण है कि व्यभिचारी का अर्थ होता है जो किसी एक में दृढ़तापूर्वक न टिके और संचारी भाव एक ही रस से वैसे ही बंधे नहीं रहते जैसे स्थायी, ये कभी किसी के साथ प्रकट होते हैं और कभी किसी के साथ। इसी अस्थिरता के कारण ये व्यभिचारी कहलाते हैं। व्यभिचारी या संचारी भाव तेंतीस हैं।

विशेषायाभिमुख्येन चरणाद्व्यभिचारिणः।

स्थायिन्युन्मग्ननिर्मग्ना स्त्रमस्त्रिशब्द तद्भिदाः।

(सा0द0 परि0 2 श्लोक ।40)

इनके नाम हैं निर्वेद, ग्लानि, शंका, श्रम, धृति, जड़ता, हर्ष, दैन्य, उग्रता, चिन्ता, त्रास, असूया, अमर्ष, गर्व, स्मृति, मरण, मद, स्वप्न, निद्रा, विवाद, क्रीड़ा, अपस्मार, मोह, मति, आलस्य, आवेग, तर्क, अवहित्था, व्याधि, उन्माद, विषाद, औत्सुक्य और चंचलता।

निर्वेदः साधु संगति, अपमान या निराशा आदि से संसार के प्रति विरक्ति, उदासीनता या अपने को को धिक्कारने की भावना।

ग्लानि : भूख प्यास, परिश्रम और मनस्तापादि के कारण उत्साहहीनता या शिथिलता का आ जाना।

शंका : अपनी या अपने आत्मीय जनों की इष्ट हानि की संभावना होना।

श्रम : थकावट, इसमे स्वेद, कंपन, प्यास और लेटने की इच्छा होती है।

धृति : धैर्य का नाम है, दृढ़ता, पुरूषार्थ तथा निश्चिंतता होना इसके लक्षण हैं।

जड़ता : कुछ क्षण के लिये कार्य करने की शक्ति खो बैठना।

हर्ष : कार्य में सफलता मिलने पर या उत्साह आदि में मन की अति प्रसन्नता।

दैन्य : विरह या आपत्ति के कारण निस्तेज हो जाना।

उग्रता : दुष्टतावश स्वभाव का प्रचण्ड हो जाना।

चिन्ता : प्रियजन या प्रिय वस्तु के न मिलने पर उसका ध्यान बना रहना।

त्रास : बादल या शेर की गर्जन, असंभावित आक्रमण और भयप्रद घटनाओं से मन की घबराहट त्रास है। कंप और स्वर भंग आदि इसके लक्षण हैं।

असूया : गर्व, दुष्टता या क्रोध से दूसरे की उन्नति न सह सकना।

अमर्ष : अपमानादि के बदले की उत्कट अभिलाषा।

गर्व : कुल,बल,रूप और वैभव का दंभ या घमण्ड करना। आत्मश्लाघा इसका प्रधान गुण है।

स्मृति : पहिले देखी हुई प्रिय वस्तु की याद आना।

मरण : मूर्छा, अपने आप को मौत के मुख में डालना या मरने का दंभ दिखाना।

मद : मादक पदार्थो के सेवन से होने वाली मस्ती।

स्वप्न : निद्रा में बर्राना, भयंकर स्वप्नों में रोना, चिल्लाना, घिग्घी बंधना, चौंकना तथा उठकर भाग चलना तक देखा जाता है।

निद्रा : चिन्ता, आलस्य और थकावट से इन्द्रियों की क्रियाओं के रूक जाने को निद्रा कहते हैं। जंभाई और अंगड़ाई आना इसके मुख्य लक्षण हैं।

विवोध : नींद टूट जाना। इसमें मनुष्य जंभाई लेता है और आंखें मलता है।

व्रीड़ा : प्रशंसा किये जाने पर या कोई बुरा काम किये जाने पर चंचलता का प्रदर्शन।

अपस्मार : विपत्ति गृहयोग या प्रेतबाधा के कारण शरीर में आया हुआ आवेग। मूर्छा, भू पतन,स्वेद जोर से सांस चलना और मुख से फेन आना इसके लक्षण हैं।

मोह : अपस्मार की दूसरी अवस्था मोह है। चित्त विक्षेप,उछाव, पछाड़ खाना और लड़खड़ाना आदि इसके लक्षण हैं।

मति: शास्त्र वचनों या गुरूजनों के उपदेश द्वारा भ्रम को दूर कर तत्व ज्ञान को देने वाली वुद्धि मति है। सन्तोष और आत्मशांति उसके लक्षण हैं।

आलस्य : थकावट या गर्म होने के कारण काम करने की इच्छा न होना। इसमें जंभाई और अंगड़ाई आती है।

आवेग : मन की घबराहट। इसमें भय,स्तंभ, कम्प, हर्ष या शोक या मोह आदि लक्षण दिखाई देते हैं।

तर्क : मानसिक द्वंद्वों के उपस्थित होने पर विचारों की उलझन में पड़ना बड़बड़ाना और अंगुलियों को नचाना इसके मुख्य कारण हैं।

अवहित्या : लज्जावश अंग के विकार को छिपाना।

व्याधि : वियोग जनित सन्निपात आदि शारीरिक रोग।

उन्माद : बिना विचारे काम करना, जागरण , रोना, गाना हंसना और बकना आदि इसके लक्षण हैं।

विषाद : किसी कार्य में असफलता मिलने पर धीरज खो देना।

औत्सुक्य : प्रिय वस्तु को देखने या प्रियजन से मिलने की आकांक्षा से अपने आपको रोक न सकना, चंचलता और हड़बड़ी इसके प्रधान लक्षण हैं।

चंचलता : राग द्वेष और डाह के कारण स्थिर न रह सकना।

अभिनव भरत ने इनमें से पन्द्रह भाव लेकर शेष सत्रह भाव नये मिलाकर निम्न बत्तीस संचारी भाव माने हैं।

निर्वेद, ग्लानि, शंका, घृति, हर्ष, दैन्य, चिन्ता, त्रास, असूया, अमर्ष, गर्व, व्रीड़ा, आलस्य, विषाद, औत्सुक्य, ईर्ष्या, लालसा, कामना, आसक्ति, कुतूहल, श्रद्धा, विश्वास, विनोद, प्रतिकार, प्रवंचना, आशा, निराशा, मान, उपेक्षा, स्पर्द्धा और विजय।

इनमें से पन्द्रह का विवरण तो ऊपर दिया जा चुका है शेष सत्रह का विवरण निम्नांकित है।

लोभ : अभीष्ट वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा।

ईर्ष्या : किसी सम स्थिति के पुरूष की उन्नति पर डाह तथा अपनी हीनता पर ग्लानि।

लालसा : प्रिय जनों या महापुरूषों से मिलने की या सुंदर स्थान और अनुपम वस्तु को देखने की उत्कट इच्छा का होना।

कामना : आत्मीय जनों के लिये मंगल और अभ्युदय चाहने की भावना।

आसक्ति : किसी व्यक्ति, वस्तु या दृश्य के प्रति इतनी उत्कट ममता हो जाना कि उसके आंखों से ओझल होने पर मनस्ताप होने लगे।

कुतूहल : किसी अद्‌भुत व्यक्ति या वस्तु के देखने के लिये मन में गुदगुदी पैदा होना।

श्रद्धा : आदर्श पुरूषों के प्रति उनके गुण श्रवण या दर्शन करने के कारण मन में पवित्र आदर की भावना होना।

विश्वास : किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को पहिचानकर या किसी घटना को देखकर उसके परिणाम में निश्चयता का भाव होना।

विनोद : किसी की कमजोरी या मूर्खता से लाभ उठाकर दिल बहलाना।

प्रतिकार : भलाई का बदला भलाई से और बुराई का बदला बुराई से देना।

प्रवंचना : सीधे सीधे व्यक्ति को धोखा देने की भावना।

आशा : किसी कार्य या घटना के परिणाम की सफलता में अनिश्चित विश्वास।

निराशा : किसी कार्य या घटना के परिणाम की असफलता में निश्चित विश्वास।

मान : अपने आत्मीयजन के द्वारा अपनी उपेक्षा या अपमान देखकर उससे रूठने की भावना।

उपेक्षा : किसी व्यक्ति वस्तु या कार्य के प्रति अरूचि और उदासीनता की भावना।

स्पर्द्धा : अपने साथी की उन्नति देखकर उसके समकक्ष होने की या उससे आगे बढ़ने की भावना।

विजय : अपूर्व कार्य करने की भावना।

(4) रस :

उपर्युक्त वर्णित विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव के संयोग से स्थायी भाव रस दशा को प्राप्त होता है। रस को काव्य की आत्मा कहा गया है। कविराज विश्वनाथ और पण्डितराज जगन्नाथ जैसे विद्वानों ने भी इसी मत का समर्थन किया है। अग्नि पुराण में वाग्विदग्धता को प्रधान और रस को काव्य का प्राण माना गया है।

वाग्वैदग्ध्यं प्रधानेति रस एवात्र जीवितम।

शौद्धोदनि भी इसी मत को मान्यता देते हैं।

अलंकारस्तु शोभायाम् रसः आत्मा परे मनः।

(समीक्षा शास्त्र)

अर्थात काव्य को शोभित बनाने के लिये अलंकार हैं उसकी आत्मा तो रस ही है। रस की व्युत्पत्ति है - रस्यते इति रसः - जो आनन्द दे वही रस है। अभिनव गुप्त ने रस के आस्वादन को सर्वथा अलौकिक बतलाया है।

भरत मुनि ने रसों की संख्या आठ मानी है तथा मम्मट और विश्वनाथ ने आठवीं संख्या पर विराम देकर शान्त को भी नवां रस मान लेने पर जोर दिया है।

श्रंगार हास्य करूण रौद्र वीर भयानकः।
वीभत्सोऽद्भुत संज्ञो चैत्यष्टौ नाट्येरसाः स्मृताः।
निर्वेद स्थायिभावो हस्ति शान्तोपि नवमोरसः।

(मम्मट)

श्रंगार हास्य करूण रौद्र वीर भयानकाः।
वीभत्सो द्भुत इत्यष्टौ रसाः शान्तस्तया मताः।

मम्मट के उक्त कथन से स्पष्ट है कि नाट्य में श्रंगारादि आठ रस हैं पर शान्त भी नवम रस है और इसका स्थायी भाव निर्वेद है। इसी का सर्म्थन विश्वनाथ ने किया है पर इन्हीं ने अपने रस निरूपण के अंत में 'वत्सल' नाम का एक दसवां रस मान लिया है। 'रूद्रट' ने अपने काव्यलंकार में 'प्रेयान' नाम का दशम रस माना है। काव्य में रस के श्रंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त ये नौ प्रकार के रस सभी मानते हैं। कुछ विद्वान वात्सल्य रस भी मानते हैं। इसलिये इन्हीं दस रसों का परिचय नीचे दिया जा रहा है।

श्रंगार रसः

सभी नौ रसों की गणना करते समय सर्वप्रथम श्रंगार को ही ग्रहण किया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि यह सभी रसों में प्रधान हे। 'भोजराज' ने तो स्पष्ट कहा है कि 'श्रंगारिक रस' अर्थात श्रंगार ही एक सर्वश्रेष्ठ रस है। सभी रसों मे प्रधान होने के कारण ही इसे 'रसराज' कहते हैं।

कामदेव के अंकुरित होने को 'श्रंग' कहते हैं। उसके आगमन का हेतु रूप रस 'श्रंगार' कहा जाता है। इसमे स्त्री पुरूष का पवित्र प्रेम नामक भाव रसत्व को प्राप्त होता है। श्रंगार रस के दो पक्ष होते हैं 1.संयोग (या सम्भोग) और 2.वियोग (या विप्रलम्भ)। संयोग श्रंगार में एक दूसरे से मिलने पर नायक और नायिका के आनन्दप्रद मिलन, वार्तालाप, दर्शन, स्पर्श आदि विविध कार्यो का वर्णन होता है परंतु वियोग श्रंगार में एक दूसरे से अलग रहने पर उनकी दुखपूर्ण दशा का वर्णन होता है। नीचे संयोग और वियोग दोनों प्रकार के श्रंगार के उदाहरण प्रस्तुत हैं।

संयोग:

चितवत चकित चहूं दिसि सीता, कहं गये नृप किशोर मन चीता।

लता ओट तब सखिन लखाये, स्यामल गौर किशोर सुहाये।

देखि रूप लोचन ललचाने, हरषे जनु निज निधि पहिचाने।

थके नयन रघुपति छवि देखे, पलकन्हहू परिहरी निमेखे।

अधिक सनेह देह भई भोरी, सरस ससिहि जनु चितव चकोरी।

लोचन मग रामहिं उर आनी,दीन्हे पलक कपाट सयानी।

(तुलसी- श्रीरामचरित मानस)

यहां (नायिका) सीता जी आश्रय हैं और उनके हृदय में स्थित श्रीराम के प्रति 'प्रेम' नामक भाव स्थायी है। (नायक) राम आलम्बन विभाव हैं। लता मण्डप उद्दीपन हैं।सीता का एकटक देखना तथा देह का शिथिल होना इनमे प्रलय सात्विक अनुभाव है। 'लोचन ललचाने' से अभिलाष 'हरषे' से हर्ष ये संचारी हैं।

इस प्रकार विभाव, अनुभाव और संचारी के संयोग से 'रति' स्थायी श्रंगार रस की सिद्धि करने में समर्थ हुआ।

वियोग:

भूषन बसन विलोकत सिय के,

प्रेम विवश मन, कंप,पुलक तन, नीरज नयन नीर भरे पिय के

सकुचत कहत,सुमिरि उर उमगत, सील सनेह सु-गुनगन तिय के।

(तुलसी-श्री रामचरित मानस)

यहां 'पिय' अर्थात राम आश्रय हैं। सीता के प्रति उनका प्रेम स्थायी भाव है। सीता आलम्बन हैं सीता के भूषण और वस्त्र उद्दीपन हैं। कंप, पुलक (रोमांच) और (नीरज नयन, नीर भरे) में अश्रु सात्विक अनुभाव हैं। 'सकुचत कहत' से व्रीड़ा और 'सुमिरि उर उमगत' से स्मरण संचारी भाव प्रकट होते हैं।

इस तरह विभाव, अनुभाव और संचारी से युक्त 'रति' स्थायी मे रस का परिपाक हुआ। यहां आलम्बन (नायिका) के अपने से अलग हो जाने पर आश्रय (नायक) में यह रस प्रकट हुआ। अतः वियोग श्रृंगार हुआ।

हास्य रसः

किसी व्यक्ति या पदार्थ का (साधारण से भिन्न अनोखा) विकृत (बिगडा हुआ भद्दा या कुरूप) आकार किसी अनोखे ढंग की वेषभूषा , बातचीत, विचित्र प्रकार की चेष्टायें आदि देखकर हृदय में जो विनोद का भाव पैदा हुआ करता है वह 'हास' कहलाता है। यही हास जब विभाव, अनुभाव और संचारी से पुष्ट होता है तब 'हास्य रस' का परिपाक हो जाता है।

हास्य रस का स्थायी भाव 'हास' होता है।

आलम्बन विभाव - विक्रत या असाधारण आकृति वाला व्यक्ति या पदार्थ होता है।

उद्दीपन विभाव- आलम्बन की अनोखी आकृति बातें, चेष्टायें आदि पात्रगत हैं। हास्य मण्डली अनोखी वेषभूषा से सज्जित समाज आदि पात्र के बहिर्गत उद्दीपन हो सकते हें।

अनुभाव- (आश्रय की) मुस्कुराहट, हंसी, अट्टहास, नेत्रों का मिचना, उससे आंसुओं का गिरना आदि हे।

संचारी- हर्ष, आलस्य, चपलता अवहित्थ आदि इस रस की सिद्धि प्रायः केवल आलम्बन का वर्णन करने में हो जाती है। इसमें विभाव आदि की योजना की आवश्यकता नहीं पड़त। एक उदाहरण देखिये।

जेहि समाज बैठे मुनि जाई, हृदय रूप अहमिति अधिकाई।
तहं बैठे महेश गन दोई, करहिं कूट नारदहिं सुनाई।
रीझिहि राजकुंअरि छबि देखी, इनहिं वरिहिं हरि जान बिसेखी।
जदपि सुनहिं मुनि अटपट बानी, समुझि न परै बुद्धि भ्रम सानी।
काहु न लखा सो चरित बिसेखा, सो सरूप नृपकन्या देखा।
मर्कट बदन भयंकर देही, देखत हृदय क्रोध भा तेही।
जेहि दिसि बैठे नारद फूली, सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली।
पुनि-पुनि मुनि उसकहिं अकुलाहीं, देखि दसा हर गन मुसकाहीं।

(तुलसी-श्री रामचरित मानस)

यहां 'हर गन' आश्रय हैं। नारद (मुनि) आलम्बन हैं। उनकी बंदर की सी आकृति, उनका बार बार उचककर राजकन्या को आकृष्ट करने का प्रयास, ये उद्दीपन विभाव हैं। (आश्रय) 'हर गन' का कूट (दोहरे अर्थ वाली बातें) कथन तथा उनका मुस्कुराना - अनुभाव हैं। मुस्कुराहट, हंसी की बातों आदि से सूचित हर्ष संचारी है। अतः यहां विभाव, अनुभाव और संचारी के योग से हास्य रस की पूर्ण सिद्धि हुई।

करूण रस:

प्रिय व्यक्ति या इष्ट वस्तु का नाश और अप्रिय व्यक्ति या अनिष्ट वस्तु की प्राप्ति तथा प्रिय के प्राप्त होने की आशा का अभाव होने से हृदय को जो क्षोभ या क्लेश होता है उस भाव को शोक कहते हैं। यही शोक स्थायी जब रसत्व को प्राप्त हो जाता है तब वह करूण रस कहलाता है।

वियोग (विप्रलम्भ) श्रंगार में भी आश्रय की प्रायः वही दशा होती है जो करूण में होती है किन्तु दोनों में अंतर यह है कि वियोग में आलम्बन के फिर से मिलने की आशा बनी रहती है लेकिन करूण में ऐसा नहीं होता।

करूण रस का स्थायी भाव - शोक है।

आलम्बन विभाग- विनष्ट प्रियतम, बन्धु ऐश्वर्य आदि होते हैं।

उद्दीपन (विभाव)- उनका दाहकर्म, उनसे संबंध रखने वाली वस्तुयें,घर वस्त्र भूषण उनकी कथा इत्यादि हैं।

अनुभाव- दैव निन्दा, भाग्य का कोसना, भूमि पर पछाड़ खाकर गिरना, रोना, उच्छवास, निःश्वास स्तम्भ प्रलाप विवर्णता इत्यादि हैं।

करूण रस का एक उदाहरण देखिये-

कहु कहं तात, कहां सब माता? कहं सिय रामु लखन प्रिय भ्राता।

सुनि सुत बचन सनेहमय, कपट नीर भरि नैन।

भरत श्रवन मन सूलसम पापिनि बोली बैन।

तात वात मैं सकल संवारी, भई मंथरा सहाय विचारी।

कछुक काज विधि बीच बिगारेउ, भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ।

सुनत भरत भय विवस विषादा, जनु सहमेउ करि केहरि नादा।

तात! तात! हा तात! पुकारी, परे भूमि तल व्याकुल भारी।

चलत न देखान पायउं तोही, तात न रामहिं सौं पेहु मोही।

यहां भरत आश्रय हैं।उनके हृदय में अपने पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर 'शोक' स्थायी उत्पन्न हुआ। तात अर्थात दशरथ, आलम्बन विभाव है। 'भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ' इस समाचार की सूचना उद्‌दीपन विभाव है। भरत का तात! तात! हा तात! . पुकारना, व्याकुल होकर भूमि तल पर गिरना एवं यह प्रलाप कि 'चलत न देखान पायउं तोही' और 'तात न रामहिं सौपेहु मोही' ये अनुभाव हैं। 'भूमि तल पर व्याकुल होकर पतित होने' में अपस्मार संचारी, 'भय विवस बिसादा' में विषाद संचारी तथा पिता की मृत्यु का समाचार सुनते ही भरत का तुरंत डर जाना और 'चलत न देखान पायउं तोही, तात न रामहिं सौपेहु मोही' कहना तथा तात! तात! हा तात! कहकर चिल्लाना- इनसे आवेग संचारी प्रकट होता है।

इस अवतरण में प्रिय (पिता) की मृत्यु के कारण उसके फिर से मिलने की पूरी निराशा से उत्पन्न स्थायी भाव 'शोक' विभाव अनुभाव और संचारी की सहायता से करूण रस का परिपाक करने में समर्थ हुआ।

रौद्र रस:

किसी वस्तु, विपक्षी, अहितकारी या अशिष्ट की चेष्टाओं और कार्यो से तथा अपने अपमान अहित एवं बड़ों की निन्दा, अवहेलना आदि के कारण हृदय में क्रोध उत्पन्न होता है। यही क्रोध स्थायी विभावादि से संयुक्त होने पर रौद्र रस संज्ञक होता है।

रौद्र रस का स्थायी भाव - क्रोध होता है।

आलम्बन विभाव - शत्रु, विपक्षी, अविनीत व्यक्ति, जाति, समाज, देश आदि का द्रोही कपटी दुराचारी आदि होता है।

उद्‌दीपन विभाव-उक्त आलम्बनों के किये हुये अपराध, कार्य, घमण्ड से भरे हुये कथन, उनकी धूर्तता कूटनीति आदि हैं।

अनुभाव :नेत्रों का लाल होना, भौहों का तनना, दांत और होठों का चबाना, क्रूर दृष्टि से देखना, नथनों का फड़कना, भुजाओं का चलाना, कड़ी कड़ी बातों का कहना, अपने पुरूषार्थ का उल्लेख, गरजना, तड़पना, रोमांच स्वेद, शस्त्रों का उठाना, उनका प्रहार के लिये तानना आदि हैं।

संचारी : अमर्ष, मोह, मद,उग्रता, स्मृति, क्रूरता, आवेग गर्व, चपलता आदि हैं।

विशेष- रौद्र और वीर रस में मुख्य अंतर यह है कि रौद्र रस में क्रोध उमड़ता है जबकि वीर रस में उत्साह उत्पन्न होता है।

एक उदाहरण देखिये-

तेहि अवसर सुनि सिव धनुभंगा, आये भृगु कुल कमल पतंगा।
देखत भृगुपति बेस कराला, उठे सकल भय विकल भुआला।
पितु समेत कहि निज-निज नामा, लगे करन सब दण्ड प्रनामा।
× × × × × × × ×
बहुरि विलोक विदेह सन, कहहु काह अति भीर।
पूछत जान अजान जिमि, व्यापेउ कोप सरीर।

समाचार कहि जनक सुनाये, जेहि कारन महीप सब आये।
सुनत बचन फिरि अनत निहारे, देखे चापखाण्ड महि डारे।
अति रिस बोले बचन कठोरा, कहु जड़ जनक धनुष केहि तोरा।
बेगि दिखाउ मूढ़ नतु आजू, उलटौं महि जहं लगि तब राजू।

(तुलसी- श्रीरामचरित मानस)

यहां परशुराम जी आश्रय हैं, अपने गुरू के धनुष तोड़े जाने के कारण उनके हृदय में 'क्रोध' स्थायी का संचार हुआ। शिव जी के धनुष को तोड़ने वाला व्यक्ति आलंबन है। धनुष के टूटे हुये खाण्ड जो पृथ्वी पर पड़े हुये थे उद्दीपन विभाव हैं। परशुराम के कठोर वचन अनुभाव हैं। उन वचनों की कठोरता में उग्रता संचारी है। परशुराम जी के इस विचार में कि मैं जनक के राज्य भर की भूमि उलट सकता हूं 'गर्व' संचारी है। राज्य को पलट देने में क्रूरता और 'वेगि दिखाउ न तु आजू, पलटौं महि जहं लगि तब राजू' में चपलता संचारी है।

इस प्रकार यहां क्रोध स्थायी का विभाव, अनुभाव और संचारी से पुष्टि हुई। अतः रौद्र रस की सिद्धि हुई।

वीर रसः

शत्रु का उत्कर्ष, दीनों की दुर्दशा, धर्म की दुर्गति को मिटाने अर्थात किसी विकट या दुष्कर कार्य के करने का जो तीव्र भाव हृदय में उत्पन्न होता है उसे उत्साह कहते हैं। इसी उत्साह नामक स्थायी भाव की पुष्टि होने पर वीर रस की सिद्धि होती है।

दुष्कर कार्य करने वाले सभी वीर होते हैं। अतः सत्यवक्ता , त्यागी, असाधारण कर्मकर्ता, उद्भट विद्वान, वैज्ञानिक तत्ववेत्ता आदि भी वीर ही हैं परंतु साहित्य शास्त्रियों ने (1) युद्धवीर (2)दयावीर (3) दानवीर और (4) धर्मवीर , ये चार प्रकार के वीर माने हैं उन्होंने इनमें ही रसत्व का संचार माना है। वीर रस का स्थायी भाव 'उत्साह' है।

युद्धवीर में शत्रुनाश का, दयावीर में दया पात्र के कष्ट नाश का, दानवीर में त्याग का और धर्मवीर में अधर्म नाश का तथा धर्म संस्थापन का उत्साह होता है।

युद्ध वीर में आलंबन (विभाव) शत्रु या वह होता हे जिसे जीतना हो2

उद्दीपन विभाव- आलंबन की चेष्टायें, गर्जन, तर्जन ललकार आदि एवं सेना जुझारू बाजे, सेना का कोलाहल, शत्रु या विपक्षी के प्रताप, उत्कर्ष आदि का श्रवण आदि हैं।

अनुभाव- बांह का फड़कना, अस्त्र शस्त्र का प्रहार करना, अपने पराक्रम का बखान करना, युद्ध के विविध व्यापार जैसे आक्रमण, भिडन्त आदि हैं।

संचारी - वितर्क, स्मृति , प्रति, रोमांच, हर्ष, गर्व, औत्सुक्य, उग्रता आदि हैं। एक उदाहरण देखिये-

सौमित्र से घननाद का रव अल्प भी न सहा गया।
निज शत्रु को देखे बिना, उनसे तनिक न रहा गया।
रघुवीर का आदेश ले, युद्धार्थ वे सजने लगे।
रणवाद्य का निर्घोष करके धूम से बजने लगे।
सानन्द लड़ने के लिये तैयार जल्दी हो गये।
उठने लगे उनके हृदय में युद्ध भाव नये नये।

यहां सौमित्र -लक्ष्मण आश्रय हैं। उनके हृदय में अपने शत्रु से लड़ने का उत्साह स्थायी भाव है। घननाद (मेघनाद) आलंबन है। मेघनाद का रव (गर्जन) आलंबन गत उद्दीपन विभाव है तथा रणवाद्य का धूम से निर्घोष आलंबन से बहिर्गत उद्दीपन। लक्ष्मण का युद्धार्थ सजना, उनके हृदय में युद्ध भावों का उत्पन्न होना अनुभाव हैं। 'घननाद' का रव अल्प भी न सहना, में 'अमर्ष' युद्धार्थ सजना और जल्दी तैयार होना तथा शत्रु को देखे बिना न रहा जाना, में 'औत्सुक्य' तथा 'सानन्द लडने के लिये तैयार होना' में हर्ष संचारी है। अतः यहां रस सिद्धि की पूरी सामग्री होने से (युद्ध) वीर रस हुआ।

भयानक रसः

किसी भयप्रद वस्तु का वर्णन उससे भयभीत व्यक्ति की चेष्टा आदि का उल्लेख, जिसमें भय की स्थिरता होती है भयानक रस को उत्पन्न करता है।

भयानक रस का स्थायी भाव - भय है।

आलम्बन (विभाव) - कोई भयानक वस्तु, चोर डाकू, बलवान शत्रु आदि हैं।

उद्दीपन (विभाव)- भयंकर दृश्य, जीव आदि की चेष्टायें उनके कार्य उनकी आहट चर्चा आदि। ऊंची उठने वाली लहरें, भयप्रद लपटें, नीरवता तथा जनशून्यता आदि।

अनुभाव- कंप, स्वेद, रोमांच, वैवर्ण्य, स्वर भंग, पलायन, मूर्च्छा, इधर उधर ताकना, भौंचक्का हो जाना आदि।

संचारी- संभ्रम, आवेग, त्रास, शंका, दैन्य , चिन्ता, मृत्यु आदि हैं। एक उदाहरण देखिये-

लंकी की सेना तो कपि के गर्जन रव से कांप गई।
हनूमान के भीषण दर्शन से विनाश ही भांप गई।
उस कंपित शंकित सेना पर, कपि नाहर की मार पड़ी।
त्राहि त्राहि शिव त्राहि त्राहि शिव की सब ओर पुकार पडी।

श्यामनारायण पाण्डेय - जय हनुमान।

यहां भय स्थायी भाव है। लंका की सेना आश्रय एवं हनुमान जी आलंबन हैं। गर्जन रव और भीषण दर्शन उददीपन हैं। कांपना, त्राहि त्राहि पुकारना आदि अनुभाव हैं। शंका, चिन्ता, संत्रास आदि संचारी भाव हैं। इनसे पुष्ट भय स्थायी भाव भयानक रस को प्राप्त हुआ है।

वीभत्स रसः

घृणा उत्पन्न करने वाली वस्तुओं जैसे पीब, हड्डी, चर्बी, मांस इन सबके सड़ने से उत्पन्न दुर्गन्ध आदि के वर्णन से जो ग्लानि होती है उसी से वीभत्स रस का जन्महोता है।

वीभत्स रस का स्थायी भाव - जुगुप्सा या घृणा है जैसे अघोरी, दुर्गन्धयुक्त मुर्दा इत्यादि।

आलम्बन (विभाव) - घृणास्पद सभी वस्तुयें या व्यक्ति हैं।

उद्दीपन (विभाव) - उनकी दुर्गन्ध, चेष्टायें, उनमें कीड़ों का पड़ना , उन पर मक्खियों का भिनभिनाना आदि हैं।

अनुभाव- नाक सिकोड़ना, थूकना, मुंह फेर लेना, आंख मीचना, रोमांच आदि हैं।

संचारी- मूर्च्छा, मोह, आवेग, अपस्मार, व्याधि आदि हैं।

एक उदाहरण देखिये-

कोउ अंतड़िन की पहिरि माल इतरात दिखावत।
कोउ चरबी लै चोप सहित निज अंगनि लावत।
कोउ मुंडनि लै मानि मोद कंदुक लौं डारत।
कोउ संडनि पै बैठि, करेजौ फारि निकारत।

रत्नाकर - हरिश्चंद्र।

उपर्युक्त पद में जुगुप्सा स्थायी भाव है श्मशान का दृश्य आलंबन है। अंतड़ी की माला पहन कर इतराना, चोप सहित शरीर पर चर्बी का पोतना, हाथ में मुण्डों को लेकर गेंद की तरह उछालना आदि उददीपन विभाव हैं। दैन्य, ग्लानि, निर्वेद आदि संचारी भाव हैं। इन सबसे पुष्ट जुगुप्सा स्थायी भाव वीभत्स रस दशा को प्राप्त हुआ है।

अद्भुत रसः

किसी असाधारण वस्तु को देखकर हमारे हृदय में विशेष प्रकार का कुतूहल होता है। हम उसके निर्माता के विषय में सोचते मुग्ध हो जाते हैं यदि यही आश्चर्य का भाव किसी वर्णन में हो तो उसमें अद्भुत रस का संचार होता है।

अद्भुत रस का

स्थायी भाव - विस्मय या आश्चर्य होता है।

आलम्बन (विभाव) -अलौकिक वस्तु, असंभव व्यवहार, असाधारण या लोकोत्तर कार्यकलाप, विचित्र दृश्य, आश्चर्यजनक व्यक्ति आदि होते हैं।

उद्दीपन (विभाव) -उक्त आलम्बनों का देखना या वर्णन सुनना,उनकी महिमा का निरूपण आदि होते हैं।

अनुभाव- मुंह खोलकर रह जाना, दांतों तले अंगुली या दांतों तले जीभ दबाना, रोंगटे खडे हो जाना, आंखें फाडकर देखते रह जाना, स्वर भंग, स्वेद स्तंभ आदि होते हैं।

संचारी- वितर्क, भ्रान्ति, हर्ष, आवेग आदि होते हैं एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है।

इहां उहां दुइ बालक देखा, मति भ्रम मोरि कि आन बिसेखा।
तन पुलकित मुख वचन न आवा, नयन मूंदि चरनन सिर नावा।
(तुलसी- श्रीरामचरित मानस)

यहां विस्मय स्थायी भाव है। माता कौशल्या आश्रय तथा यहां, वहां दो बालक दिखायी देना आलंबन है। 'तन पुलकित मुख वचन न आवा' में रोमांच और स्वरभंग अनुभाव हैं। जड़ता वितर्क आदि संचारी हैं। यहां अदभुत रस है।

शान्त रस:

संसार की असारता, जगत की वस्तुओं की नश्वरता तथा परमात्मा के रूप का ज्ञान होने से चित्त को ऐसी शान्ति मिलती है जो संसार के विविध सुखों के सेवन से भी कभी नहीं मिला करती। इसी प्रकार की शांति का वर्णन पाठक या श्रोता के हृदय में शान्त रस की उत्पत्ति करता है।

शान्त रस का-

स्थायी भाव - निर्वेद या संसार के विषयों से जी का हटना या उदासीनता है।

आलम्बन (विभाव) - परमार्थ होता है।

उद्दीपन (विभाव) - ऋषियों के आश्रम, तीर्थ स्थान, महात्माओं का सत्संग, उनके उपदेश, रमणीय एकान्त स्थान, शास्त्रानुशीलन, शास्त्रों का श्रवण आदि होते हैं।

अनुभाव - रोमांच, पुलक, अश्रु विसर्जन आदि होते है।

संचारी- धृति, मति, हर्ष, निर्वेद, स्मरण, विबोध आदि होते हैं।

एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है-

अबलौं नसानी अब न नसैहों,
राम कृपा भव निशा सिरानी, जागे फिर न डसैहों।
पार्यो नाम चारू चिंतामनि, उर कर तें न खसैहौं।
श्याम रूप सुचि रूचिर कसौटी, चित कंचनहि कसैहौं।
परबस जानि हंस्यो इन इन्द्रिन, निज बस ह्वै न हंसैहौं।
मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहौं।

(तुलसी- विनयपत्रिका)

यहां निर्वेद स्थायी भाव है। सांसारिक असारता और इन्द्रियों द्वारा उपहास उद्दीपन है। स्वतंत्र होने तथा श्री राम के चरणों में रति होने का कथन अनुभाव है। धृति, वितर्क, मति आदि संचारी हैं। इन सबसे पुष्ट निर्वेद शान्त रस को प्राप्त हुआ है।

वात्सल्य रसः

उपर्युक्त नौ रस सभी आचार्यो को मान्य हैं। कुछ लोग इनके अतिरिक्त वात्सल्य रस को भी मानते हैं। छोटे छोटे बच्चों का सौन्दर्य, उनकी तोतली बोली, चेष्टायें, उनके कार्य कलाप आदि को देखकर बरबस मन उनकी ओर खिंच जाता है फलतः हृदय में उनके प्रति जो स्नेह उत्पन्न होता है उसी से वात्सल्य रस की निष्पत्ति होती है।

वात्सल्य रस का -

स्थायी भाव - अपत्य (सन्तान) स्नेह होता है।

आलंबन (विभाव)- बालक , शिशु होता है।

उद्दीपन (विभाव)- उसकी चेष्टायें, जैसे तोतलीबोली, गिरते पडते चलना , हठ करना आदि, उसकी शूरता विद्या , उसकी वस्तुयें उसके कार्य आदि होते हैं।

अनुभाव- हंसना, पुलकित होना, तिनके तोडना, एकटक देखना, चूमना, गोद में लेना, पालने में झुलाना, बातें कराना, खेलाना, रोना, विलाप करना, आह भरना आदि हैं।

संचारी- हर्ष, आवेग, जड़ता, मोह, शंका, चिन्ता, विषाद, गर्व, उन्माद स्मृति, औत्सुक्य आदि हैं।

वात्सल्य रस का एक उदाहरण देखिये-

जसोदा हरि पालने झुलावैं।
हलरावैं दुलराइ मल्हावैं, जोई सोई कछु गावैं।
मेरे लाल को आद री निंदरिया, काहे न आन सुवावैं।
तू काहे नहिं बेगहिं आवै, तोकौं कान्ह बुलावैं।
कबहुं पलक हरि मूंदि लेत हैं, कबहुं अधर फरकावैं।
सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि करि सैन बतावैं।
इहि अन्तर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरै गावैं।
जो सुख 'सूर' अमर मुनि दुर्लभ, सो नंद भामिनि पावैं।

(सूरः सूरसागर)

इसमें वात्सल्य स्थायी भाव है। यशोदा जी आश्रय और श्रीकृष्ण आलंबन हैं। यशोदा का गीत गाना, आदि अनुभाव हैं। इन सबसे पुष्ट वात्सल्य स्थायी भाव वत्सल रस दशा को प्राप्त हुआ है।

जनपद हमीरपुर के कवियों ने भी अपनी रचनाओं में श्रंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शान्त सभी रसों का प्रयोग कुशलता के साथ किया है। अवलोकनार्थ कुछ कवियों की रचनायें नीचे दी जा रही हैं

ख्यातिलब्ध कवि ख्यालीराम जी की श्रंगार रस की ये रचना देखिये - अटा पर एक सुंदरी अंगड़ाई ले रही है उसे देखकर कवि के भाव कविता के रूप में इस प्रकार फूट पड़े -

वरनों कहा छटा दुपटा की, वा ऐंड़ान अटा की,
भुज की उठन अंगूठी दरशन, मारत श्याम पटा की।
मानों चन्द्रकला के ऊपर, भृकुटी घोर घटा की।
करिये कहा सिपारिस पारिस, छलिया छैल डटा की।
ख्यालीराम चितैं रये ऊपर, इकटक जोत गटा की।

श्री सूरश्याम तिवारी की श्रंगार रस की एक रचना प्रस्तुत है जिन्होंने 'चन्द्रसखी' की छाप लगाकर रचनायें की हैं -

राधे संग निरतत गिरधारी, थेई थेई कर दै तारी,
ले गत चलत नागरिन के संग, ऋतु सम सरद निहारी
रये थिर सकल जगत के जे चर, ऐसी तान निकारी
अधर तान मुरली सें काढ़त सखी करें जै कारी
'चन्द्रसखी' लख दरस कृस्न के, इकटक दृग ना टारी।

मौदहा के कवि श्री कामताप्रसाद गुप्त का श्रंगार रस से ओतप्रोत यह सवैया देखिये -

सुंदर श्याम सलोनो सखी,
सुन सुन्दर तान सुनावत है।
मनमोहन मोहन मोह लियो,
मनमोहन मोहन गावत हैं।
ललिता ने कही ललि तान सुनो,
लला तान में तान मिलावत हैं
ग्वालन ग्वालिन संग लिये,
यमुना तट रास रचावत हैं।

मौदहा के ही कवि श्री प्रहलाद गुप्त एडवोकेट की श्रंगार रस से ओत-प्रोत गीत की कुछ पक्तियां देखिये-

प्रेम पूजा कहूं या ऋचा मैं कहूं,
इसका क्या नाम दूं, कौन अन्जाम दूं
बस यही मैं कहूं प्रिय की वन्दगी
तितलियों की महक गीत की जिन्दगी।

राठ के वरिष्ठ कवि श्री मोहनलाल बुधौलिया की प्रकृति से गहरी आत्मीयता है उनकी एक रचना की कुछ पंक्तियां देखिये जिसमें प्रकृति का श्रंगार परक चित्रण है -

मुतियन वाली चूरन रात हुई मैली,
बदल लिया नीला अम्बर कुछ शर्मा कर
बिखरे काले केश सम्भाले ऊषा ने,
अपने महदीले हाथों रोली भर भर कर

फिर उठा लिया धीरे से सिर पर स्वर्ण कलश,

जो डूबा था अब तक कालिन्दी के तट पर।

नयी कविता की उदीयमान कवियित्री कु0 वन्दना सोनी महोबा की एक श्रंगारपरक रचना देखिये -

समर्पण

आई हूं द्वार / हृदय प्रेम पूर्ण / समर्पित आज

तुम्हारे लिये/ अंधेरों से हारे/ प्रार्थना के सहारे

आशा का दीप / तुम्हारे द्वारे / हृदय की कामना

बस यही प्रार्थना / प्यारा समर्पण / बन गई वन्दना

अग्रसर ये मन / तुम्हारे लिये।

ग्राम कुल्हैण्डा (राठ) के कवि भरतू दीक्षित की श्रंगार रस से ओत-प्रोत यह चौकड़िया देखिये -

तोरे मधुर पैजना बाजें, गोरे पग में राजें

प्रातकाल उठ चलीं जरूरी, आई तला सें माजें

लुड़क जात टकनन के खालें, छाँड़ कड़ी आवाजें

भरतू परैं काउ के ऊपर, भादौं कैसी गाजें।

जनपद के प्रसिद्ध गीतकार मंजुल मयंक श्रंगार की बात कुछ इस प्रकार करते हैं -

रहने दो प्रिये नींद के ये झूठे बहाने,

देखो तो अभी चांद सितारे नहीं सोये

है चांदनी की पालना किरनों की है डारी

तारे मचल रहे हैं गगन गा रहा लोरी।

और श्री रामगोपाल दीक्षित जब श्रंगार रस में अपनी लेखनी चलाते हैं तो कितना सजीव एवं भावपूर्ण चित्रण होता है उनकी इस रचना में देखिये -

आंखों में पावस बन छाये, अधरों के मधुमास रंगीले

घिरे गगन में बादर कारे,

बरस पड़े नैना कजरारे

सह न सके खारी बूंदों को मन चातक के पंख चुटीले।

तथा

बार बार हँस प्रीतम बोले।

सुनती रही अधर न खोले

मैं न हंसी सखि कस न सके वे, बने रहे भुज बंधन ढीले।

इस प्रकार श्रंगार परक रस पर कवियों ने बड़ी सुंदर रचनायें की हैं। वियोग रस में भी कुलपहाड़ के कवि पदम सिंह की एक रचना देखिये जो 'रामप्रसाद' के छद्म नाम से लिखातेथे। रजउ के जाने से नायक व्यथित है धन दौलत उसे तुच्छ लगते हैं।

हमखां दरद होत बिछरन को,रजऊ तुम्हारे तन को

हाल धरीं कोउ ऐसो नइयां, तनक भरैया मन को।

भाई बन्द अरू कुटुम्ब कबीला का करिये ई धन को

रामप्रसाद तुम्हारे पीछूं भओ फिरत रन बन को।

हास्य रस में भी काफी संख्या में कवियों द्वारा रचनायें की गई हैं। श्री सूर श्याम तिवारी की हास्य रस की एक रचना देखिये -

मोहन बन आये मनिहारी नवल नार मतवारी

श्री राधा के धाम जाय के दीन दुकान पसारी

छूटा चम्पकली अरू दुलरी, मोतन की लर न्यारी

बेंदा लगा मुकुट में शोभा देखो राजदुलारी

सूर श्याम बृजवाम मुदित मन लखा राधे गिरधारी

डा0 हरगोविन्द सिंह की एक हास्य रचना देखिये जिसमें बारात के लिये बनाये गये जनवासे का चित्रण है-

बस्ती से दूर अलग जनवासो अनवासो,

बारइ से जान परै जैसें कुछ तनातनी।

गोलन की भड़ाभट्ट चकरी की चक्क मक्क,

हातिन की टनाटन्न घोड़न की हिनहिनी।

रब्बी रमतूला संग ढोलन की धमाधम्म,

झांझन की झमाझम्म फरकावै कनी कनी।

मंगल समाज यौ किं पल्टन कौ साज बाज

लरका को ब्याव है कि समधी सें ठनाठनी।

और स्व0 उमाशंकी नगायच 'उमेश' की यह बुढ़ाने पर हास्य रचना कितना सटीक चित्रण है।

आया है वो जमाना सुनते हैं खरी खोटी
मिलती बड़ी मुश्किल से खाने को दाल रोटी
बच्चे पकड़ते बाल कोई खींचते चोटी
नातिन चिढ़ा रही है पांच साल की छोटी।
जर के बगैर हालत दरअसल हुई जिहालत
बच्चे खिला रहे हैं बब्बा को बग्घा गोटी।

मौदहा के कवि स्व0 रामाधार गुप्त 'फटाफट' तो मुख्य रूप से हास्य रस में ही रचनायें लिखाते थे बेरोजगारी से परेशान होकर एक युवक को प्रतीक बनाकर लिखी गयी ये हास्य रचना देखिये-

बेकारी से परेशान
एक मजबूर इंसान
रेल में किया पयान
मिले दरोगा महान
किसी बात पे हुई लड़ाई
उस दरोगा ने कसम खाई
चल थाने भंगी बना दूंगा
उसने कहा
शुक्रिया, नौकरी तो पा लूंगा।

मुंशी तुलसीदास दिनेश की यह हास्य रचना भी कितनी प्रभावी है-

एक नर एक बार गाडी ठीक ठाक कर नाज भर बेचने को गयो तो बजार है
वापिसी में आके एक जगै दीन गाड़ी ढील खावे हेतु रोटी करी रुचि सौं तैयार है।
नैन मूंद ध्यान से लगायो भगवान भोग, श्वान आय रोटी लेय भागो बेकरार है।
खोले नैन खाली थाली देख बार वार कहै खूब लीन्हो भोग भाग राखो न हमार है।

मौदहा के हास्य कवि श्री कामताप्रसाद 'काका' की कवि की दुर्दशा पर से हास्य रचना भी कितनी सटीक है।

पति देवकविराज हो गये धन्धा है ना खेती है।

श्रीमती जी नित्य सबेरे उठ यह ताना देती हैं

मैंने मन ही मन समझाया आखिर किसको किसको झूकें

कविता गायें मौज उड़ायें चाय पियें व सिगरिट फूकें

वह बोली कुछ घर भी देखो बने फिर रहे हिन्दी सेवी

मेरे बच्चे चाय चचोरें दुनिया छाने दही जलेबी।

मच्छर रात रात भर काटें बिन पंखा के नींद न आती।

महलों में वे करें मौज तुम बने निराला जी के नाती

कविता सारी झोंक चूल में मेरी कलम तोड देती है

श्रीमती जी . . . . .

चरखारी के कवि श्री कालका प्रसाद सक्सेना 'मकरंद' की ये रचना हास्य रस का एक अच्छा उदाहरण है-

लल्ला पेहलउँ पेहल भओ करतीं बहुत गुमान

घर बाहर न सेंटतीं चलतीं सीना तान

चलतीं सीना तान संग पप्पू के पापा

गोदी में ले लैंय बैग में भरे पुजापा

पिक्चर में मकरंद देख के होवे हल्ला

पापा जी शरमांय और रो देवें लल्ला।

इस प्रकार हास्य रस का प्रयोग भी जनपद के कवियों ने अपनी रचनाओं में खूब किया है।

वीर रस में भी जनपद के अनेकों कवियों ने काव्य सृजन किया है कुछ कवियों की रचनायें यहां दी जा रही हैं-

महोबा के कवि श्री भारतेन्दु अड़जरिया ने बुन्देली व खड़ी बोली दोनों में ही वीर रस की रचनायें की हैं एक रचना के कुछ अंश देखिये जिसे हम उनके प्रकाशित पत्रक 'महोत्सव नगर' महोबा से उद्धृत कर रहे हैं जिसमें पृथ्वीराज चौहान की महोबा पर चढ़ाई का वर्णन है।

दोउ दल भिर गये छपा छप चलन लगीं तलवारें

महुबे वाले वीर सिपाही बढ़के शीश उतारें

दुश्मन दल खां काट काट के लोथन ढेर लगाये

दिल्ली वाले अब पछताने सोये सिंह जगाये

खुटी कजरिया लाल हो गओ कीरत सागर पानी
वीर भूमि के रजपूतन की जोहर भरी कहानी।

ग्राम इचौली (मौदहा) के श्री सुधाकर प्रसाद त्रिपाठी भी वीर रस के अच्छे कवि हैं उनकी कुछ एक रचना के अंश देखिये -

सांगा लोदी की वैमनस्य,
भावना देश में तरज उठीं
मुगलों के घोड़े दौड़ पड़े
बाबर की तोपें गरज उठीं।

अकबर से पा सम्मान मान
तनकर राणा से यों बोला
कट जॉय बन्धु लुट जाय देश
'प्रतिशोध' सोच फाटक खोला।

फिर वही हुआ जो होना था
रजपूतों की परिपाटी में
प्रतिशोध ईष्या द्वेष फूट
अंकित है हल्दी घाटी में।

बोधन कवि की यह चौकड़िया भी वीर रस का अच्छा उदाहरण है। अभिमन्यु अपने चाचा युधिष्ठिर से कहता है -

अपने सिर पे मुकुट धराउँ चाचा देर न लाऊँ
द्रोण कर्ण की कौन चलावे जातै न गुरराऊँ
ठानो समर कमर कस रण में, कायरपन न दिखलाऊँ
बोधन व्यूह भेद के सांचो, पारथ पूत कहाऊं।

श्रीपति सहाय रावत भी वीर रस के अच्छे कवि थे उनकी प्रकाशित पुस्तक'जौहर जराखार' के कुछ अंश देखिये-

बजे नगाड़े ढोल बजे फिर रमतूला की टीप पड़ी,
जै शंकर जै छत्रसाल की सैना सुनैं अधीर खड़ी
नग्न कृपाणैं चपला कैसी चमक उठीं फिर उसी घड़ी
दिल्ली वाले समझे थे कि पन्ना की है फौज बड़ी।

छोड़ चले हथयार प्राण ले भाग चले दिल्ली की ओर
मारो मारो भाग न पावैं हुआ जराखार से यह शोर
हाथी छोड़े घोड़े दौड़े, तोपें छोड़ गये सब ठौर
विजय श्री पा गया जराखार 'श्रीपति' बात रही सिरमौर।

और मुस्करा (मौदहा) के श्री रामगोपाल दीक्षित तो वीर रस की रचनायें लिखने में सिद्धहस्त हैं। उनकी अप्रकाशित 'हांडा रानी' खण्ड काव्य से उद्धृत कुछ पंक्तियां देखिये -

अपने सुख सुहाग की जिसने स्वयं जलाई होली
रजपूतों की आन बान की तुला प्राण दे तोली
जिसकी अमर प्रेरणा बन गई बलिदानों की गाथा
जिसकी आते याद भक्ति से झुक जाता है माथा।
उसी वीर बाला की सज्जन सुन लो अमर कहानी
पर कारज के लिये मिटा दी जिसने चढ़ी जवानी।
x x x x x
खुली अगारी और पछारी सरजे सुंदर घोड़े
चंचल चपल बछेड़े अनुपम नये दिनन के थोड़े
खोद रहे हैं धरती पल पल मार मार कर टापें
लगा रहे हैं शत्रु शीश पर जनु जमपुर की छापें
जिनकी लखकर के चंचलता सकुची विद्युत रानी
उसी वीर बाला . . . . .

जनपद के अन्य बहुत से कवियों ने भी वीर रस में उत्कृष्ट काव्य सृजन किया है जिनमें श्यामचरन यादव नानी जू, प्रताप साहि, बालेन्दु अड़जरिया, अमर सिंह 'अमरेश' विजय चन्द सिंह चौहान तथा रामखिलावन निरंजन के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। विस्तार भय से इन सभी की रचनायें नहीं दी जा रही हैं चतुर्थ एवं पंचम अध्यायों में इनकी रचनायें दी जा चुकी हैं।

रौद्र रस में भी कई कवियों ने उत्कृष्ट काव्य सृजन किया है उदाहरण के लिये बोधन कवि की ये रचना देखिये-

अभिमन कृपाचार्य दल कट्टत, लुथ्थन वसुधा पट्टत
छुट्टत सरन सिरन कर कुट्टत, नभ पथ गिद्ध चपट्टत
लुट्टत भुवि हय रथ्थत कचरत, मर्द बपुक्खन कुट्टत
'बोधन' द्वार विजय कर पंचम षष्ठम सप्त दपट्टत।

श्री रामगोपाल दीक्षित के अप्रकाशित लघु खण्ड काव्य 'महारानी पद्मिनी का बलिदान' की कुछ पंक्तियां देखिये -

मुठभेड़ हुई दोनों दल में,
मारो पकड़ो का शोर हुआ
उस काल यवन रजपूतों का
विकराल युद्ध घनघोर हुआ।
रजपूत लड़ाके उछल उछल
यवनों पर ऐसे टूट पडे
ज्यों सिंह क्षुधा से व्याकुल हो
मृग झुण्डों पर चट टूट पड़े।
× × × × × × × × ×
चहुं दिशि से दुश्मन घेर घेर
करते थे चोटें डाट डाट
रावल को तुरंग बचाता था
चकरी से चक्कर काट काट।

श्री खेत सिंह यादव की निम्नांकित रचना में वीभत्स रस का उदाहरण देखिये -

अब का खेलें रंग की होली महासभा की टोली
पैलई ही सें देश भरे की सारी खुशी निचोली
ईसुर विनय करत मैं भारी, बापू के तन गोली
खेत सिंह जग भर में सुनले हाय हाय की बोली।

श्री इन्दुप्रकाश अड़जरिया की ये पंक्तियां जो महोत्सव नगर महोबा पत्रक से ली गयी हैं वीभत्स रस का अच्छा उदाहरण हैं -

चौड़ा से भारी सुभट ठहर सके नहिं खेत
मुण्ड कटे रूण्डन लरे, कीरत सर कुरूखेत

उत्तर सों जोगी चढ़े, कर में नगन कृपान
महादेव हर - हर कहत, करत लोथ खलिहान
रूधिर रंगी तरवार कर, केसरिया रनभेष
अनगिनते जोधा हने, भाग चले तब शेष।

मथुराप्रसाद गुप्त की निम्नांकित रचना में भयानक रस का प्रयोग देखिये -

बाजी भारत की रनभेरी, सुन सन् ब्यालिस केरी।
क्रान्तीदल की धूम मची ती बलिया में जिन केरी
इक तें एक हते भट बांके, तरूनई रंग रंगेरी
दहल उठी अंग्रेजी 'मथुरा' देख फौज इन केरी।

भयानक रस की ही एक छन्दयाऊ फाग देखिये -

टेक : गोसा जब रघुबर ने तानें, तब दिग्गज हालानें
संगीत : हरि ने शिव धन डारो टोर, दीपन खण्डन में भओ शोर
हो गओ लोकन लोकन घोर सुन धनु भंजन
लेन लगे दिग्पाल उसासन हाली शेष नाग की आसन
सबरी इन्दर की इन्द्रासन लागी कम्पन।
उड़ान : अकबकान लागे कमठ , आसमान घहराने
डगमगान पृथिवी लगी अरू दिग्गज हालानें।
टेक : भारानें गिर तरवर टूटे, गिर गये बड़े पुराने।

श्री मथुराप्रसाद गुप्त की ही अद्भुत रस की एक रचना देखिये इसमें यह तर्क किया गया है कि एक ही राशि के जब मिलते हैं तभी शत्रु संहार संभव होता है जैसे राम ने रावण का, कृष्ण ने कंस का तथा गांधी ने गौरमेन्ट (ब्रिटिश शासन) का अन्त किया।

जब जब एक राशि मिल राजै, दुश्मन होत पराजै
रामचन्द्र ने रावण मारो, निसचर सहित समाजै
कृस्न चंद ने कंस पछारो द्विज देवन के काजै
गौरमेन्ट से विन असि 'मथुरा' गांधी लेत सुराजै।

प्रत्येक काल में कवियों के द्वारा सबसे अधिक रचनायें शान्त रस में ही लिखी गयी हैं जिसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं-

भरतू कवि की एक चौकड़िया में शान्त रस का प्रयोग देखिये -

रे मन जपो राम के नामें, सुधर जाय सब जामें।

जौ तन खात माल लाखन कौ कपत देख जल घामें।

प्रान निकर गये जौ मानस तन आय न कौनउँ कामें

भरतू कात अकेले जैहो, धर्मराज के धामें।

पं0 बैजनाथ तिवारी 'किंकर' की एक सुंदर रचना देखिये -

हृदय से राम नाम जो गाये।

अपने मन मंदिर में प्रभु की अविचल मूर्ति बैठाये।

पाप पुण्य सब संचित अपने कपट त्याग रख देवें

विनय क्षमा हित करे निरंतर शरण प्रभू की लेवे

प्रभु अब रक्षा कीजे।

महापातकी जन का पातक हर लीजै

करूण पुकार सुनो करूणानिधि कह कह राम रिझाये।

× × × × × × × × × × ×

ग्राम इंगोटा के श्री गया सिंह परिहार की प्रस्तुत रचना भी शान्त रस का एक अच्छा उदाहरण है जो उनकी प्रकाशित पुस्तक 'नूतन पदावली' से उद्धृत है -

प्रभु यह भेंट मेरो तुम लीजै।

तेहि के बदले नहिं कछु मांगौं, जोइ चाहौ सोइ दीजै

नहिं दुराव है तुमसों स्वामी, अर्पण जोइ संजोयो

मोह भार ममता के वस है, वृथा जनम यह खोयो

पाप भार की बांध पोटरी, तुमहि समर्पण कीन्हों

सुमतिन करूआ जोर जुगायो, जोइ राख्यो सोइ दीन्हों।

घरी निमेष पलक करूणानिधि यह मानव तन छीजै।

सुन के दुखद पुकार दयामय, स्वामि शरण गहि लीजै।

श्री खेत सिंह यादव की यह रचना भी पठनीय है। माँ शारदा का जन कल्याण की भावना से आह्वान करते हुये शान्त रस का सुंदर चित्रण है -

करकें हंस सवारी आ जा, शारद जन के काजा।

कर जा काज आज जग जननी, रख जा मोरी लाजा।

कर कमलों से निज वीणा के मंजुल तार बजा जा।

खेत सिंह की पद रचना में अपनो हाथ लगा जा।

काव्य में करूण रस का भी अपना विशेष स्थान है इस रस की एक सुंदर अभिव्यक्ति श्री खेत सिंह यादव की निम्न रचना में देखिये जिसमें लाला हरदौल की मृत्यु पर उनके प्रियजन शोक व्यक्त कर रहे हैं -

दो0 : भौजी को राखो धरम, धन्य तुम्हें हरदौल।

वीर बुन्देला हो गये, तुम रतनन की तौल।

× × × × × × × × × ×

टेक : पर गई राजमहल में कारी, सिर पटकें नर नारी।

छन्द : पटकें शीश धरन नर नार, रानी रोई दै डिड़कार।

लाला लाला रही पुकार न धीर धरो।

मोरे दोइ नैनन के तारे, दइया जबरई आज निकारे।

हर लओ कालकूट हत्यारे ना रहिम करो।

उ0 : रहिम करो न मोरे ऊपर, मार वज्र की मारी।

खाय पछार गिरी है धरनी तन की सुरत बिसारी।

दो0 : लाला के देहान्त कौ , भयो नगर में शोर।

दौर परे नर नारि सुन दुख छायो चहुँ ओर।

× × × × × × × × × × ×

इस प्रकार हम देखते हैं कि जनपद के कवियों ने सभी रसों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। मुख्य रूप से श्रंगार रस, वीर रस एवं शान्त रस का प्रयोग किया गया है।

****

अष्टम अध्याय

काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष

(1) भाषा

(2) शैली

(3) छन्द

(4) अलंकार

(5) गुण, शब्दशक्ति एवं रीतियां

****

(1) भाषा

भाषा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। किसी घटना या स्थान को देखकर जब किसी मानव द्वारा दूसरे के समक्ष उसका वर्णन किया जाता है तो वह भाषा का ही सहारा लेता है। मानव अपने मन के भावों को किसी अन्य के समक्ष भाषा के माध्यम से ही व्यक्त कर सकता है या उसे लिखकर दे सकता है। भाषा का ज्ञान होने से ही मनुष्य संसार के अन्य सभी जीव जंतुओं से विकसित एवं श्रेष्ठ है।

प्राचीन काल में आर्यो की भाषा विशुद्ध या वैदिक संस्कृत थी किंतु जन साधारण की भाषा थी प्राकृत। अशिक्षित जन साधारण के उपयोग से प्राकृत भी दूषित हो गयी और इससे अपभ्रंश का जन्म हुआ। इसे अपभ्रंश इसलिये कहा गया क्योंकि इसमें संस्कृत के शब्दों के अपभ्रष्ट (अत्यन्त भ्रष्ट) रूप ग्रहण किये गये। आगे चलकर प्राकृत की इसी अंतिम अपभ्रंश अवस्था से हिंदी भाषा और साहित्य का आर्विभाव हुआ। अपभ्रंश किसी देश विशेष की भाषा नहीं अपितु मागधी आदि भिन्न भिन्न प्राकृत भाषाओं के बिगड़े रूप वाली मिश्रित भाषा का नाम है। हिंदी साहित्य का जब उदय नहीं हुआ था उस समय भी लोकभाषा होने के कारण इसमें लोक साहित्य की ही रचना होती रही।

कालान्तर में यही साहित्यिक भाषा बनी। इसका साहित्य बहुत विस्तृत और उन्नत था। अपभ्रंश काव्य के अधिकतर विषय नीति, श्रंगार, धर्म और लोकजीवन संबंधी थे। प्रसिद्ध विद्वान महापण्डित राहुल सांस्कृत्यान के अनुसार अपभ्रंश काव्य धारा 7 वीं शती के मध्य से 12 वीं शती तक अबाध गति से प्रवाहित होती रही।

प्रत्येक प्रान्त की विभिन्न प्राकृत भाषाओं के समान ही प्राकृत की अपनी अपभ्रंश भाषायें भी थीं। इनकी संख्या 27 थी किंतु उनमें मुख्य चार हैं ।

(1) नागर: यह गुजरात तथा राजस्थान में प्रचलित थी।

(2) ब्राचड़ : यह सिन्ध में प्रचलित थी।

(3) उपनागर : नागर तथा ब्राचड़ बोले जाने वाले प्रान्तों की मध्य की भाषा।

(4) प्राचीन हिंदी: अवहट्ट या अपभ्रष्ट- यह अपभ्रंश और आधुनिक हिंदी के बीच की श्रेणी की भाषा थी।

अपभ्रंश के बाद आधुनिक भाषा युग का आरंभ होता है हिंदी के दो प्रारंभिक रूप मिलते हैं - (1) पूर्वी हिंदी (2) पश्चिमी हिंदी ।

(1) पूर्वी हिन्दी: पूर्वी हिन्दी की मुख्य बोलियां हैं अवधी,बघेली और छत्तीसगढ़ी ।

(2) पश्चिमी हिंदी- पश्चिमी हिंदी की मुख्य बोलियां हैं खड़ी बोली,ब्रजभाषा,कन्नौजी और बुन्देली।

इनमें साहित्यिक दृष्टि से अवधी, ब्रजभाषा और खड़ी बोली का ही विशेष महत्व है। हॉ! अन्य बोलियों में भी लोकगीतों की रचनायें अवश्य हुई हैं।

जहां तक जनपद हमीरपुर के कवियों द्वारा प्रयुक्त हुई बोली का प्रश्न है हमीरपुर जनपद में प्राचीन कालीन कवियों ने अपनी रचनायें बुन्देली में ही की हैं। बुन्देली लोकभाषा समस्त बुन्देलखण्ड में बोली जाती है एक विस्तृत भू-भाग में बोली जाने के कारण बुन्देली के कई रूप हैं किंतु हम यहां केवल हमीरपुर जनपद के अंतर्गत बोली जाने वाली बुन्देली के विभिन्न रूपों की चर्चा करेंगे।

जनपद हमीरपुर के मध्य भाग की बोली तो ' शुद्ध बुन्देली ' कही जा सकती है किंतु इसके उत्तर पश्चिमी भाग में बुन्देली का लोधान्ती रूप प्रचलित है। इसी प्रकार जनपद के पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्र में बुन्देली का जो रूप प्रचलित है उसे ' कुण्ड्री ' के नाम से जाना जाता है। जनपद के उत्तरी यमुना नदी के तटवर्ती भाग में बुन्देली का जो रूप प्रचलित है उसे ' तिरहारी ' कहा जाता है तथा दक्षिणी और दक्षिणी पश्चिमी भाग में बुन्देली का ' बनाफरी रूप ' बोला जाता है।

स्पष्ट है कि जनपद हमीरपुर के विभिन्न भागों में ही बुन्देली का अलग अलग रूप प्रचलित है। इसका स्पष्ट प्रभाव जनपद के विभिन्न क्षेत्रों के कवियों पर उनकी रचनाओं मे भी दिखायी पड़ता है । कुछ कवियों की रचनाओं में बृज या अवधी मिश्रित बुन्देली का रूप दिखायी पड़ता है। किंतु वर्तमान काल के कवियों ने अपनी रचनाओं में खड़ी बोली का ही प्रयोग किया है कुछ कवियों ने बुन्देली के शुद्ध रूप में भी उत्कृष्ट रचनायें की हैं।

कुछ कवियों की रचनाओं के नमूने अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं। पनवाड़ी (महोबा) के प्रसिद्ध कवि श्री भुजबल सिंह की एक फाग देखिये जिसे उन्होंने बनाफरी बोली में लिखा है यह बोली हमीरपुर के दक्षिण पूर्व में बोली जाती है।

दोहा : सरसुतिया के भवन हर, चोरी कीन्हीं आय।
आय सखी बनफरी की, पेट उरहनो जाय।

टेक : दीदी त्वार पुतौना ख्वाटा ख्वाटा जायौ ढ्वाटा।

सांगीत : ढ्वाटा दीदी त्वार गिधंना फ्वारा माटा का घर
मना लैना म्वार हरौना तॅना है री अस अस
अस इक ख्यालत हतो ट्वाका वार्ने त्वार ललौंना रूवाका।
भीतर जाय बरोठें ढाका पाखौ कस कस।

दोहा : कस कस सुर्ने भाग गा पुतवा डरगा हतौ छुवाटा
छ्वाटा लागत दीदी दिखतन ख्वाटा जायौ ढ्वाटा।

टेक : ढ्वाटा एक अंगनी लइगा अरू कंचन का ल्वाटा।

× × × × × × × ×

इस बोली में ओकार के स्थान पर वाकार का प्रयोग अधिक मिलता है इसी प्रकार गया के स्थान पर ' गा ' में के स्थान पर ' मां ' का प्रयोग करते हैं।

बुन्देली के लोधान्ती रूप की झलक ग्राम जराखार के लोकप्रिय कवि स्व0 खूबचंद की इस रचना में देखिये -

तैने मारे नैन के भाला, विकल करे नन्दलाला।
सुधि न पटकी मोर मुकुट की, नटनागर बेहाला।
ता दिन से नहिं रैन चैन अति बाढ़ो मैन कसाला।
खूबचंद कहें चल जमुना तट लिपटो रहत गुपाला।

और इन्हीं के द्वारा अपनी प्रकाशित पुस्तक ' कृष्ण कुसुमाकर ' में वृज मिश्रित बुन्देली का रूप प्रयोग किया गया है।

निजनिज सदन गये पिय प्यारी (टेक)
विलम जान बड़ जननी बोली अब लग राधा रही कहां री।
बैठत नहीं नेक अपने घर तोह सीख दै मैं पचिहारी।
गई हुती मैं तोह बूझ के गाय दुहावन खरक मझारी।
खूबचंद यो राधा नागरि करि प्रबोध दीन्हीं महतारी।

कुलपहाड़ के कवि खेत सिंह यादव की रचनाओं में बुन्देली का स्पष्ट प्रभाव है।

दोहा : गीध जटायी ने सुनी, जब सीता की टेर।
अरर्कि नभ से गिरो, गिरत न लागी देर।

टेक : नभ से गिरो गीध अर्राकें, भारी क्रोध बढ़ाकें।

सैर : बाढ़ो है क्रोध सुनके आरत पुकार को।
ना देख सका आंखन इस दुराचार को।
रथ छेड़ कहो तो सम पापी अपार को।
चोरी से जात लेंय रघुकुल की नार को।
रघुकुल की नार सीता जगदम्ब चुराई।
क्यों रे निलज्ज तोखां न लज्जा आयी।
धरिये न पांव आगे चाहे तो भलाई।
दसशीश भुजा बीसहुँ नहिं करों सफाई।

× × × × × × × × × × ×

ग्राम अकठौंहा (चरखारी) के ख्यातिलब्ध कवि ख्याली की एक रचना देखिये -

है बड़भाग राधिका तेरो, पुन्न पुरातन केरो।
सिव सनकाद और ब्रह्मादिक, जिनको चहत छहेरो।
सो माधव राधा के उर में, बैठो लेत बसेरो।
ऐसो श्याम रंगीलो कोमल, राधा चित को चेरो।
कवि ख्याली उनकें का कमती, जिनकें श्याम कमेरो।

वर्तमान काल के कवि डा0 हरगोविन्द सिंह की पुस्तक 'सद्विचार सतसई' तो मानो बुन्देली के शुद्ध रूप का प्रतीक बनकर रह गयी है। उक्त पुस्तक के कुछ दोहे देखिये -

कच्चौ बहुत सुहात है, गदरो खूब मिठात।
पको जंभई यौ देहफल, नीम घाईं करवात।
सबसें मिलिये प्रेम सें, दोऊ भुजा पसार।
को जानत कब हाजिरी, साईं के दरवार।
हॉत पसारें जात सब, हाकिम, सेठ मजूर
संगै कौड़िउ न गई, उड़त दिखानी धूर।

एक हते सब आदि में, होत अन्त में एक
भेद गैल में बन गये, लखौ बिचार विवेक।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जनपद के प्राचीन कालीन कवियों ने बुन्देली के ही विभिन्न रूपों का प्रयोग अपना रचनाओं में किया है। जबकि वर्तमान काल के कवि मुख्य रूप से खाड़ी बोली मे ही काव्य सृजन कर रहे हैं। कुछ कवियों ने बुन्देली में भी उत्कृष्ट काव्य सृजन किया है।

(2) शैली

साहित्य के स्पष्ट रूप से दो पक्ष होते हैं जिन्हें हम भाव पक्ष और कला पक्ष के रूप में जानते हैं। भाव पक्ष का संबंध साहित्य के अन्तर्पक्ष या आत्मा से है जबकि कला पक्ष का संबंध उसके बाह्य या अभिव्यक्त पक्ष से है। भावों की अभिव्यक्ति के ढंग को ही शैली कहा जाता है। जिस ढंग से भावों को अभिव्यक्त किया जाता है भाषा का वह माध्यम ही शैली के रूप मे जाना जाता है।

शैली की परिभाषा :

पाश्चात्य आलोचकों और काव्य शास्त्रियों में से जिन्होंने शैली पर विचार किया है उनमें पोप, न्यूमैन तथा कार्लायल आदि प्रमुख हैं। इन विद्वानों में से पोप का विचार है कि शैली विचारों का परिधान है, उन्होंने लिखा है *Style is the dress of thoughts.* जबकि कार्लायल इस विचार के पूर्ण रूप से विरोधी है। वे यह मानते हैं कि शैली लेखक या कवि का परिधान न होकर उसकी त्वचा है। उसके अनुसार *Style is not the coat of writer but skin.* इन विद्वानों में न्यूनैन शैली के संबंध में थोड़ा अलग हटकर विचार प्रस्तुत करते हैं। वे यह मानते हैं कि शैली बोलने या लिखने का अनवरत पद समुच्चय या रीति है - *Style is a constant and continual phrase or tonour of speaking and writing.*

कुछ विद्वान शैली को व्यक्तित्व का सूचक भी मानते हैं। प्रसिद्ध विद्वान आई0ए0 रिचर्ड्स शैली को कवि अथवा लेखक मानते हैं वे कहते हैं- *Style is the man himself.*

पाश्चात्य विद्वानों में शैली की दृष्टि से डा0 जानसन नव्य शास्त्रवादी सिद्धांतों के अधिक निकट हैं। वे यह मानते हैं कि भाषा शैली को अत्यधिक गरिमापूर्ण अलंकृत तथा सुष्ठ एवं पुष्ट होना चाहिये उन्होंने लिखा है - *'The author must recommended them by the superaddition of elegance and imagery, So display the colors of varied diction and pour barth the musice of modulated periods'.*

वस्तुतः डा0 जानसन अलंकृत शैली के पक्षधर हैं और वे यह मानते हैं कि जिस तरह हीरे को तराशा जाता है और फिर पालिश करके उसे उसकी पूर्ण क्षमता के साथ प्रस्तुत किया जाता है उसी प्रकार शब्दों को भी उनकी पूर्ण क्षमता के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिये।

प्रसिद्ध कवि वर्ड्सवर्थ शैली के अंतर्गत विलक्षण दूरारूढ़ कल्पना, आतिशयोक्ति, शाब्दिक चमत्कार तथा अस्पष्टता की कटु आलोचना करते हैं किन्तु उनकी इस आलोचना की भी कालरिज आदि विद्वानों ने आलोचना की है। प्रसिद्ध समीक्षक आर्नाल्ड गद्य और पद्य शैलियों मे पर्याप्त भिन्नता मानते हैं। उनके विचार में गद्य और पद्य की शैलियां ही नहीं उनकी शक्ति और क्षमता भी भिन्न भिन्न हैं। उनके अनुसार गद्य में वह शक्ति और क्षमता कभी नहीं आ सकती जो पद्य में है वे कहते हैं- Prose can not have the power of verse.

आर्नाल्ड कहते हैं कि कविता के निर्माण में आत्मा का महत्वपूर्ण योगदान होता है जबकि गद्य में विशेष रूप से मस्तिष्क कार्यरत रहता है। इस प्रकार उनके अनुसार गद्य और पद्य की शैलियों में पर्याप्त अंतर होना चाहिये। डा0 शान्तिस्वरूप गुप्त के अनुसार उक्ति में कसावट, शुद्धता, स्पष्टता और संगीतात्मकता, काव्य शैली के अनिवार्य गुण हैं और इन्हीं गुणों का समावेश होने के कारण उन्होंने ग्रे की काव्य शैली की प्रशंसा की है। उनके अनुसार गद्य शैली में नियमितता, एकरूपता, सटीकता और संतुलन होना चाहिये। शैली साहित्य का एक महत्वपूर्ण साधन है वह विचारों का बाह्य और प्रत्यक्ष रूप होती है लिखित विचारों को पढ़कर लेखक व कवि के ढंग और अभिव्यक्ति के तरीकों को हम सहज रूप से ही जान लेते हैं जिससे स्पष्ट है कि विचारों के बाह्य पक्ष का सीधा संबंध शैली से है।

विचारों को व्यक्त करने में शैली बहुत अधिक सहायक होती है जिसके कारण विचार और शैली को अलग अलग कर पाना असंभव है। यदि किसी व्यक्ति के पास अपार विचार सम्पदा है किन्तु उसके पास उस विचार सम्पदा को अभिव्यक्त करने के लिये अपेक्षित शैली नहीं है तो वह किसी प्रकार भी अपनी बात जिस रूप से वह सोचता है उसी रूप में श्रोता या पाठक तक प्रेषित करने में समर्थ नहीं हो सकता है किन्तु यदि कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके पास कहने के लिये कुछ भी नहीं है और उसके पास अच्छी शैली है तो वह बड़े ही आकर्षक ढंग से अपनी निरर्थक बात भी कह सकता है। इसीलिये प्रत्येक

समर्थ साहित्यकार सदैव ही अपनी शैली को निखारने का प्रयास करता रहा है, अरस्तू भी इस बात को स्वीकार करते हैं, उनके अनुसार शैली का मूल उद्देश्य श्रोताओं को मुग्ध करना होता है। उन्होंने कहा कि प्रतिपाद्य विषय चाहे कुछ भी हो भाषा साधनों का भी अपना विशेष महत्व है इसीलिये शैली को विचारों से अलग कर पाना असंभव माना जाता है।

प्रसिद्ध आलोचक लोंजाइन्स भी शैली को अत्यधिक महत्व देते हैं, वह मानते हैं कि किसी विषय के समस्त घटक अंगों और अंगभूत प्रसंगों की समष्टि ही विस्तारण है जिससे विषय के विस्तार द्वारा युक्ति में बल आता है। इस प्रकार विचार सम्पदा के अच्छे ढंग से प्रस्तुतीकरण मे लोंजाइन्स भी शैली को अत्यधिक महत्व देते हैं। वे परोक्ष रूप से यह मानते हैं कि शैली और विचार भिन्न-भिन्न रहकर कोई स्वरूप ग्रहण नहीं कर सकते हैं।

प्रसिद्ध विद्वान वाल्टरपेट के अनुसार शैली व्यक्ति है किन्तु वह व्यक्ति नहीं जिसके मन की तरंग मनमानी और अतार्किक, असहज, अकृत्रिम है वरन वह व्यक्ति है जिसकी अनुभूति उस वस्तु के संबंध में पूर्णतः ईमानदारी की है, जो उसके लिये सबसे बड़ा यथार्थ है इस प्रकार वाल्टरपेट के विचार से विचार व शैली में एकात्मयता है। इस प्रकार शैली ही साहित्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है। बिना शैली के साहित्य की सर्जना असंभव है। शैली की विविधता के कारण ही उपन्यास, नाटक, कहानी, एकांकी, रेखाचित्र आदि अनेक साहित्य रूप विधायें विकसित हुई हैं। अनेक प्रकार की लय और अनेक प्रकार के छन्दों का निर्माण हुआ है। प्रत्येक साहित्य रूप के अनेक भेद हुये हैं। इस प्रकार शैली का महत्व निर्विवाद है। शैली की विविधता ही साहित्य की विविधता का कारण है जिसका संबंध साहित्य के बाह्य रूप से है इस प्रकार यह स्पष्ट है कि विचारों के बाह्य और प्रत्यक्ष रूप से शैली का अभिन्न संबंध है।

(3) छन्द

छन्द कविता की स्वाभाविक गति के नियमबद्ध रूप हैं। सामान्यतः जातीय संगीत और भाषावृत्ति के आधार पर निर्मित लयादर्श की आवृत्ति छंद कहलाती है। छंद में निश्चित मात्रा या वर्ण की गणना होती है। संस्कृत में छंद शास्त्र के सबसे पहले रचयिता भगवान के अवतार पिंगलाचार्य माने जाते हैं। उनका बनाया हुआ 'पिंगल छंद शास्त्र' इस विषय का पहला ग्रन्थ है। अतः इस शास्त्र के प्रवर्तक के नाम से इसे 'पिंगल शास्त्र' भी कहते हैं। हमारी भाषा संस्कृत से ही विकसित हुई है।

चरणः

प्रत्येक छंद में चार चरण आवश्यक होते हैं। इन्हें पद या पाद भी कहते हैं। चरण की रचना वर्णों (अक्षरों) या मात्राओं की संख्या और उनके नियमित प्रयोग के अनुसार हुआ करती है। कुछ छंद ऐसे भी होते हैं जिनमें होते तो हैं चार चरण पर लिखाने में वे दो ही पंक्तियों में आ जाते हैं। (जैसे दोहा, सोरठा, बरवै आदि) ऐसे छंदों की प्रत्येक पंक्ति को 'दल' कहते हैं। कुछ छंदों में 6 चरण भी होते हैं जैसे छप्पय तथा कुण्डलिया।

जिस छंद के पदों में वर्णों की संख्या का नियम रहता है उसे वर्णवृत्त कहते हैं और जिसमें मात्राओं का नियम रहता है उसे 'मात्रिक' । मात्रिक छंद का दूसरा नाम जाति है उक्त दोनों प्रकार के छंदों (मात्रिक व वर्ण वृत्त) का वर्णन निम्नलिखित है।

मात्रिक वृत्त — सम (साधारण)

1. तोमरः

तोमर के प्रत्येक चरण में 12 मात्रायें होती हैं अंत में क्रमशः गुरू और लघु वर्ण होते हैं

जैसे - रिपु परम कोपे जानि - 12 मात्रायें अंत में गुरू लघु
प्रभु धनुष सर संधानि - 12 मात्रायें " "
छाँड़ि विपुल नाराच - 12 मात्रायें " "

2. उल्लाला (चन्द्रमणि):

इसके प्रत्येक चरण में 8 और 5 मात्राओं पर यति देकर 13 मात्रायें होती हैं। जैसे -

भजहु सदा राधा रमन - 13 मात्रों 8, 5 पर यति

वृन्दावन वासी बनौ - 13 ' ' '

लहौ नित आनँद घनौ - 13 ' ' '

3. चौपाई :

इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्रायें होती हैं इसमें चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16 मात्रायें होती हैं अंत में जगण और तगण के प्रयोग का निषेध है, जैसे -

निरखि सिद्ध साधक अनुरागे।
सहज सनेहु सराहन लागे।
होत न भूतल भाउ भरत को।
अचर सचर चर अचर करत को।

4. रोला :

रोला के प्रत्येक चरण में 11 और 13 के विश्राम से 24 मात्रायें होती हैं, जैसे -

कोउ पापिह पंचत्व प्राप्त सुनि जमगन धावत।
बनि बनि बावन वीर बढ़त चौचंद मचावत।
पै तकि ताकी लोथ त्रिपथगा के तट लावत।
नौ छै, ग्यारह होत तीन पांचहि बिसरावत।

5. गीतिका:

गीतिका के प्रत्येक चरण में 14, 12 यति से 26 मात्रायें होती हैं। अंत में क्रमशः लघु, गुरू होता है। इस छंद के प्रत्येक चरण में तीसरी, दसवीं, सत्रहवीं और चौबीसवीं मात्रा लघु होनी चाहिये और अंत में रगण। ऐसा होने से यह अत्यंत श्रवण सुखद हो जाता है।

मातृ भू सी मातृ भू है, अन्य से तुलना नहीं।

यत्न से भी ढूंढ़ने पर, मिल नहीं सकती कहीं।

जन्मदात्री मां हमारी, प्रेम में विख्यात है।

किन्तु वह भी मातृ भू के, सामने बस मात है।

6. हरिगीतिकाः

हरिगीतिका के प्रत्येक पद में 16,12 के विराम से 28 मात्रायें होती हैं। अंत में क्रमशः एक लघु और एक गुरू वर्ण होता है। जैसे -

खग वृन्द सोता है अतः कल कल नहीं होता वहां।

बस मंद मारूत का गमन ही मौन है खोता जहां।

इस भांति धीरे से परस्पर कह सजगता की कथा।

यों दीखते हैं वृक्ष ये हों विश्व के प्रहरी यथा।

अर्द्ध-सम

-----

1. बरवाः

इसके प्रथम और तृतीय चरण में 12-12 मात्रायें तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण में 7-7 मात्रायें होती हैं। सम चरणों के अंत में जगण (।S।) होता है। जैसे-

अवधि शिला का उर पर था गुरू भार,

तिल तिल काट रही थी दृग जलधार।

2. दोहाः

इसमें चार चरण होते हैं इसके पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्रायें तथा दूसरे व चौथे चरण में 11-11 मात्रायें होती हैं। विषम के अंत में जगण (।S।) न पड़नाचाहिये किन्तु सम के अंत में लघु (।) होना आवश्यक है जैसे-

लता भवन तें प्रगट भये तेहि अवसर दोउ भाइ।

निकसे जनु जुग विमल विधु, जलद पटल बिलगाइ।

3. सोरठा :

सोरठा के पहले और तीसरे चरणों में 11 और दूसरे व चौथे चरणों में 13 इस प्रकार प्रत्येक दल में 24 मात्रायें होती हैं। यह छंद दोहा का ठीक उल्टा होता है, जैसे -

जेहि सुमिरत सिधि होय, गन नायक करिबर बदन।

करहु अनुग्रह सोय, बुद्धि रासि शुभ गुन सदन।।

विषम

----

1. कुण्डलिया:

इसमें 6 चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24 मात्रायें होती हैं। आदि में एक दोहा और बाद में एक रोला जोड़कर कुण्डलिया छंद बनता है जिस शब्द से इस छंद का प्रारंभ होता है उसी से इसका अंत भी होता है। साथही दोहा का चौथाचरण रोला के पहले चरण का पूर्वाद्ध हुआ करता है।

भूपन ते आदर लयो, दल को भयो सिंगार।

अजहुं तजै न बान गज, सिर पर डारत हार।

सिर पर डारत हार, झूल डारे मखमल की।

चल्यो हठीली चाल, भयो जग सीमा बल की।

बरनै दीनदयाल होत नहिं कछु रूपन तें।

छुटै न वंश सुभाय, पाय आदर भूपन ते।

2. छप्पय:

छप्पय में कुल 6 चरण होते हैं उनमें से पहले चार रोला के 24,24 मात्राओं के (11 और 13की यति से) होते हैं और अंतिम दो उल्लाल के 28, 28 (15, 13 पर यति से) या 26, 26 (13-13 पर यति से) मात्राओं के होते हैं। इस प्रकार उल्लाल के दो प्रकारों के संयोग के कारण छप्पय के भी दो प्रकार होते हैं, जैसे -

(1) नीलाम्बर परिधान । हरित पट पर सुन्दर है।
सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियां प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बन्दीजन खाद वृन्द, शेष कण सिंहासन हैं।
करते अभिषेक पयादे हैं, बलिहारी इस वेष की। 15 + 13
हे मातृ भूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।

(2) उज्जवल हिम का रम्य, रूप तज कर गलती है। 11 + 13
जन्म भूमि को छोड़, शीघ्रता से चलती है।
अचल पिता का सभी, प्रेम पीछे रहता है।
कर के वह पाषाण, हृदय सब कुछ सहता है।
पड़ता जो कुछ मार्ग में, करती मटियामेट है। 13 + 13
किससे करने जा रही, तरंगिणी तू भेंट है।

वर्ण-वृत्त:

(साधारण) 1. इन्द्रवज्रा

यह सम वर्ण वृत्त है। इसके प्रत्येक चरण नें 11 वर्ण दो तगण एक जगण और दो गुरू के क्रम में रहते हैं। जैसे-

मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूं,
भाता मुझे सो नव मित्र सा है।
देखूं उसे मैं नित नेम से ही,
मानो मिला मित्र मुझे पुराना।

2. उपेन्द्रवज्रा

यह सम वर्ण वृत्त है। इसके प्रत्येक चरण नें जगण, तगण, जगण और दो गुरू के क्रम से 11 वर्ण होते हैं। इन्द्रवज्रा का पहला वर्ण लघु (1), यानी तगण का जगण कर देने से उपेन्द्र वज्रा बन जाता है, जैसे

बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजै
परन्तु पूर्वापर सोच लीजै।
बिना विचारे यदि काम होगा

3.वसंत तिलका

यह सम वर्ण वृत्त है। इसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण, दो जगण और दो गुरू के क्रम से चौदह वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण के आठवें वर्ण पर यदि होती है, जैसे-

बातें बड़ी सरस थे, कहते बिहारी।
छोटे बड़े सकल का हित चाहते थे।
अत्यन्त प्यार संग थे, मिलते सबों से।
वे थे सहायक बड़े दुख के दिनों में।

सवैया:
----

22 से लेकर 26 वर्णो तक के वृत्त 'सवैया' कहलाते हैं। कुछ मुख्य सवैया छन्दों का वर्णन निम्न प्रकार है-

1.मदिरा

सात भगण (S।।) और एक गुरू (S) इस प्रकार 22 वर्णो का 'मदिरा' सवैया होता है। जैसे,

राम को काम कहा ? रिपु जीतहिं
कौन कबै रिपु जीत्यो कहां?
बालि बली, छल सों, भृगुनन्दन
गर्व हरो, द्विज दीन महा।
दीन सो क्यों? छिति छत्र हव्यो,
बिन प्राननि हैहयराज कियो
हैहय कौन? वहै विसरयो,
जिन खेलत ही तुम्हें बांधि लियो।

2.चकोर

सात भगण (S।।), एक गुरू और एक लघु (।) अर्यात 23 वर्णो का 'चकोर' सवैया होता है, जैसे-

सावन आय समीप लगो तब, नारि के प्रान बचावन काज

बादर दूत बनावन को कुसलात संदेश पठावन काज

कूटज फूल नये कर लै, मन कल्पित अर्द्ध बनावन काज।

बोल उठ्यो हंसते मुख ह्वै वह मेघ तें प्रीत बढ़ावन काज।

3. मत्तगयंद

सात भगण (S।।) और दो गुरू (SS) अर्थात 23 वर्णो का मत्तगयंद सवैया होता है। इसे मालती और 'इन्दव' भी कहते हैं, जैसे-

प्रात प्रयाण कथा सुनके उसके मुख पंकज का मुरझाना।

और जरा हंस के उसका अपने मन का वह भाव छिपाना।

किन्तु अचानक ही उसके वर लोचन में जल का भर आना।

सम्भव है न कभी मुझको इस जीवन में वह दृश्य भुलाना।

4. सुमुखी

सात जगण (।S।) एक लघु (।) और एक गुरू अर्थात 23 वर्णो का 'सुमुखी' सवैया वृत्त होता है इसे 'मानिनी' और 'मल्लिका' भी कहते हैं , जैसे -

कुमार । के रंग निवास। की हैं अलबेली। नवेली तहां र। मनी।

लसै छबि सोवत में मुख की प्रति एक की ऐसी लुनाई सुनी।

करै कहुं जाहि पै दीठि जहां सोइ लागति सुन्दरि ऐसी घनी।

यहै कहि आवत है मन में सब में यह रत्न अमोल धनी।

5. किरीट

आठ भगण (S।।) अर्थात 24 वर्णो का 'किरीट' सवैया होता है, जैसे -

जाके विलोकत लोकप होत, बिसाके लहैं सुर लीग सुठौरहि,

सो कमला तजि चंचलता करि कोटि कला रिझवै सुरमोरहि।

ताको कहाय, कहै तुलसी तू लजाहि न मांगत कूकुर कौरहि।

जानकी जीवन को जन ह्वै जरि जाहु सो जीह जो जांचत औरहि।

6. दुर्मिल

आठ सगण ⟮।।ऽ⟯ अर्थात 24 वर्णो का दुर्मिल सवैया होता है। इसे चन्द्रकला भी कहते हैं, जैसे -

इसके अनुरूप कहैं किसको, बस कौन सुदेश समुन्नत है।
समझें सुरलोक समान इसे, उनका अनुमान असंगत है।
कवि कोविद वृन्द बखान रहे सबका अनुभूत यही मत है।
उपमान विहीन रचा विधि ने बस भारत के सम भारत है।

7. अरसात

सात भगण ⟮ऽ।।⟯ और एक रगण ⟮ऽ।ऽ⟯ अर्थात 24 वर्णो का अरसात सवैया होता है जैसे -

जा थल कीन्हें बिहार अनेकन,
ता थल कांकरी बैठि चुन्यो करैं।
जा रसना तें करी बहु बातनि,
ता रसना तें चरित्र गुन्यो करैं।
'आलम' जौन से कुंजन में,
करी केलि तहां अब सीस धुन्यो करैं
नैनन में जो सदा बसते तिनकी,
अब कान कहानी सुन्यो करैं।

8. सुंदरी

आठ सगण ⟮।।ऽ⟯ और एक गुरू ⟮ऽ⟯ अर्थात 25 वर्णो का 'सुन्दरी' सवैया छन्द होता है, जैसे-

भुव भारहि संयुत राकस को गन जाय रसातल में अनुराग्यौ
जग में जय शब्द समेतहिं 'केसव' राज विभीषन के सिर जाग्यौ।
मय दानव नंदिनी के सुख्र सों मिलि के सिव के हिय के दुख भाग्यौ
सुर दुंदुभि सीस गजा सर राम को रावन के सिर साथहि लाग्यौ।

प्रत्येक चरण में 26 वर्णों से अधिक वर्ण वाले छन्द 'दंडक' वृत्तों के अंतर्गत होते हैं। उनमें से ऐसे छन्द मुक्तक कहलाते हैं जिनमें वर्णों की संख्या का ही प्रमाण रहता है या कहीं कहीं गुरू लघु का भी नियम रहता है इन्हें मुक्तक इसलिये कहते हैं कि इनको गणों के बंधन से मुक्त रखना होता है। 'मुक्तकों' में कवित्त और 'घनाक्षरी' नामक वृत्त हमारी भाषा में बहुत प्रसिद्ध हैं।

कवित्त या मनहर:

मनहर या कवित्त के प्रत्येक चरण में कुल 31 वर्ण होते हैं जिनमें 16, 15 वर्णों पर यति होती है। इस छन्द में अंतिम वर्ण गुरू होता है जैसे,

मैं निज अलिन्द में खड़ी थी सखि,एक रात
रिमझिम बूंदें पड़ती थीं घटा छाई थी
गमक रहा था केतकी का गन्ध चारों ओर
झिल्ली झनकार यही मेरे मन भाई थी
करने लगी मैं अनुकरण स्व नूपुरों से,
चंचला थी चमकी, घनाली घहराई थी।
चौंक देखा मैने चुप कोने में खड़े थे प्रिय
माई मुख लज्जा उसी छाती में छिपाई थी।

घनाक्षरी:

घनाक्षरी के दो भेद होते हैं, (1) रूप घनाक्षरी, (2) देव घनाक्षरी

रूप घनाक्षरी :

रूप घनाक्षरी में 8, 8, 8, 8 की यति से प्रत्येक चरण में 32 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण के अंत में दो वर्ण गुरू लघु (S।) होते हैं जैसे -

जिसे सुनने को दौड़ती थीं गोपिकायें सब,
निज शिशुओं को छोड़ दूध का कराना पान।
दूब चरना भी भूल गोकुल की गायें, कुल
नित्य सुनती थीं जिसे ध्यान से लगा के कान।

जिसको श्रवण कर नर,पशु, पक्षी सभी,

सुध बुध भूलते थे मंत्र मुग्ध के समान।

प्रार्थना यही है मुझको भी एक बार वही,

मुरली मनोहर सुना दो मुरली की तान।

देव घनाक्षरी:

देव धनाक्षरी के प्रत्येक चरण में 8,8,8,9 के विराम से 33 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण के अंतिम तीन वर्ण लघु होते हैं, जैसे -

झिल्ली झनकारें पिक चातक पुकारें बन,
मोरिन गुहारैं उठें, जुगनू चमकि चमकि
घोर घनकारे भारे धुखा धुरारे धाम
धूमनि मचावैं नाचैं दामिनी दमकि दमकि।
झूकनि बयार बहै लूकनि लगावै अंग
हूकनि भभूकनि की उर में खामकि खामकि।
कैसे करि राखौं प्रान प्यारे 'जसवंत' बिना
नान्ही नान्हीं बूंद झरे, मेघवा झमकि झमकि।

जहां तक छन्दों के प्रयोग किये जाने का प्रश्न है जनपद हमीरपुर के कवियों ने सभी प्रकार के छन्दों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है विशेष रूप से प्राचीन कालीन कवियों की रचनायें इसी रूप में हैं किंतु वर्तमान काल के कवियों में गीत एवं नयी कविता की ओर झुकाव होने के कारण अब छन्दों का प्रयोग कम होने लगा है। कुछ कवियों की रचनायें अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही हैं।

जनपद के कई कवियों ने दोहा व चौपाई छन्द का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है जैसे मौदहा के श्री छोटेलाल नामदेव की पुस्तक 'बजरंग विनय' से उद्धृत ये पंक्तियां देखिये -

चौ0 : देहु मोहि वर मन अनुकूला, शक्ति अमोघ सुमंगल मूला।
दीन्ह राम तुम कहँ वरदाना, तब से सिद्ध साधु हनुमाना।
जब से दीनदयाल कहावा, परमारथ कर जग यश पावा।
रामभक्त को तुमहि समाना, निज मुख गुण बरणत भगवाना।

दो0 : नाथ गरीब निवाज तुम, लखा गरीब की पीर।
अब विलम्ब नहिं करिये प्रभू, कृपा सिन्धु कपि वीर।

राठ नगर के प्रसिद्ध कवि स्व0 डा0 हरगोविन्द सिंह की प्रकाशित पुस्तक 'सद्‌वाक्य मंजरी' चौपाई छन्द में ही रचित है।

बहुत सरल उपदेश सुनाना,
किंतु कठिन करके दिखलाना।
वीर मशाल उठाकर चलते,
निज विक्रम से भाग्य बदलते।
निज सुख औरों तक पहुचायें,
सदा परायी पीर घटायें।
कथनी करनी भिन्न जहां है,
धर्म नहीं पाखण्ड वहां है।

ग्राम धमना (हमीरपुर) के कवि बोधन द्वारा लिखी गयी पुस्तक 'बोधन बोधनी' में दोहा छन्द का ही प्रयोग किया गया है, जैसे -

दोहा : राक्षस मनुज पिशाच पशु, समुझाऊ प्रभू भेव।
किन लक्षण से दैत्य है, किन लक्षण से देव।
अविद्वान को दैत्य कह, अनाचार पी सांच।
विद्वानों को देवता, कहत सुजन जन सांच।
गुण अवगुण संसार में, जो जैसी सो लेव।
अवगुण ग्राहक दैत्य हैं, गुण के ग्राहक देव।
वृद्ध और विद्वान का, जो करता सत्कार।
विद्या,कीरत,उम्र,बल, सदा बढ़त हैं चार।

ग्राम जराखर के कवि श्रीपति सहाय रावत की प्रकाशित पुस्तक 'ग्राम सतसई' भी दोहों में ही है -

(482)

दोहा : सब में ईश्वर एक है,प्रथक प्रथक हैं ढांच।
विजली ऐकै रूप है, रंग बिरंग कॉच।

483

कॉच फूटने पै लखौ, बिजली एक रंग।

द्वेष भेद के त्याग पर, सब मानव इक ढंग।

387

किसी सभा के बीच में, यदि तुम भाषण देव।

बात अनर्गल बहुत कह, व्यर्थ समय नहिं लेव।

660

रूपया बिन शादी रूकी, लड़की दुखी महान।

विष खाया फिर चल बसी, दे दी अपनी जान।

कुलपहाड़ के प्रसिद्ध कवि स्व0 भगवानदास बालेन्दु की पुस्तक 'नवनीत' में भी दोहा छन्द प्रयुक्त हुआ है :-

सत्य पक्ष में जो रहत, पावत प्रभु को सोय ।

वह ही बहुमत में रहत, भले अकेला होय।

मित्र वही सुख दुःख में, सदा लगावे हाथ।

दर्पण की छाया सदृश, हरदम देवे साथ ।

है चरित्र अति सुदृढ़ बल, स्वतः प्रभाव समेत।

संरक्षक पैदा करत, निश्चित धन सुख देत।

महोबा के प्रख्यात कवि बैजनाथ तिवारी 'किंकर' की पुस्तक ' जय शिवा शिव ' में भी दोहा, चौपाइयों का ही प्रयोग हुआ है, एक उदाहरण देखिये -

चौ 0 आत्म प्रशंसक जड़ ईष्यालु। है वह भूत पिशाच दयालु।

सुनी दक्ष शिव निंदक बानी, बोले तब दधीच मुनि ज्ञानी।

सुनहु उपस्थित बचन हमारा, बना यज्ञ यह अयज्ञ सारा।

दो 0 शिव निन्दा सुन यज्ञ में, रहना मुझको पाप।

दुष्ट दक्ष तू नष्ट अब, होगा मेरा श्राप।

यों कह उठकर चल दिये, श्री दधीच ऋषि राय।

अन्य ऋषी भी उठ गये, जो शिव भक्त कहाय।

बुन्देली में लिखी गयी डा0 हरगोविन्द सिंह की पुस्तक 'सदविचार सतसई' तो इस दिशा में एक मील का पत्थर है। कुछ दोहे देखिये -

फिरत रहत हौ रात दिन, लादें सिर पै बोज।
कौन गैल जानें कहां, करी कभउं या खोज।

या धरती घर द्वार यौ बल वैभव विस्तार।
किन - किन के संगै गओ, कर लेव तनक सिहार।

दिखो सिकन्दर सो धनी, हॉत पसारें जात।
तेउ लाद लै जॉय की, दिखी न हौंस बढ़ात।

इस प्रकार जनपद के कई कवियों ने चौपाई व दोहा छन्दों का प्रयोग किया है। कविवर पं0 मनबोधन जी वैद्य का निम्नलिखित कामधेनु छन्द उनकी विद्वत्ता का प्रतीक है।

टेर सुनी	ब्रजराज	सखीन कै	हाथ उठाय
लियो तब	गोधन	फेर फनी	पग साज
कनीज पे	आय जताय	हटे जब	जोहन
देव धनी	दुख भाज	खलीन पै	जाय बनाय
तबै छब	मोहन	प्रेम मनी	महराज
आधीन कै	धाय बचाय	कहैं कब	बोधन

जिस खाने से इसमें छन्द उठाया जाये उसी खाने के पास छन्द बन जाता है।

अपनी पुस्तक 'कृष्ण कुसुमाकर' के मंगलाचरण में श्री रावत खूबचंद द्वारा सुंदर छप्पय का प्रयोग देखिये -

जे पद सेवत नेम सहित चतुरानन सारद।
जे पद सेवत सम्भु सदा सनकादिक नारद।
जे पद सिद्ध मुनीस सेव्यचारण विद्याधर।
मिल वृन्दारक वृन्द इन्द्र सेवै निसि वासर।
कहत रसीले जुग जोरकर, जे पद जन संकटहरण।
ते पद पंकज घनश्याम के, कुसुमाकर मंगलकरण।

राठ के वरिष्ठ कवि नन्दीन भारती का सुंदरी सवैया छंद का उदाहरण देखिये -

विषयें में मती निज ही भ्रमती,कुमती जगती सों नहीं जगती है
जगती जो कहीं लखाती निज को, जगती की नहीं रहती असती है।
रमती निज में भजती निज को, निज का सुख ही बस मोक्ष गती है।
पर मूढ़ मती यह मूढ़ गती, समझी न कबों विषयों में मती है।

इन्हींका रचित एक मनहर छंद देखिये -

नैनें कैसो देह दाग दीजे हैं लगाय श्याम,
रंग माहिं अंग अंग सारे रंग डारे हैं।
नीकी नॉय लागी मोहि होली की ठिठोली तोर,
आवै नाँय नेकु लाज बड़े फगवारे हैं।
अपनें इ सूरत को मुकुर बिलोकौ जाइ,
टेरौ चाहौ धरती पै रैकें नभ तारे हैं।
जैसे चाहे क्रीड़ा काग हंसिनी के संग माहिं,
सोई हमें जान परे लच्छन तुम्हारे हैं।

ग्राम सैना (राठ) के कवि हरीसिंह जी का एकता पर व्यंग करता सुंदर मनहर छन्द देखिये -

देख सकते हैं देव रूप पशु पत्थर में,
किंतु दलितों को कोई आदमी न लेखाता।
चल रहा ये समाज सदियों से ऊंच नीच,
भेद भाव वेदना बैसाखियों को टेकता।
वर्ग और जातियों के हित में लगे हैं लोग,
कोई असमानता समाज की न देखाता।
मानवीय मूल्य लोप देश व समाज बीच,
कैसे बन पायेगी अनेकता में एकता।

इन्हीं का लिखा मत्तगयंद सवैया छंद का एक उदाहरण पढ़िये जिसमें किसान की स्थिति का चित्रण है।

तप्त तपे धरती तल पे, दिन रात तपो तुम हे तपधारी।
पेट औ पेट मिल भये एक, हरो पर औरन को दुख भारी।

कौन ? भागीरथ के तप से, सुख के श्रम से तुम हे श्रम हारी।

कोउ करै सुख भोग फिरौ, सिर पै धर खौं धरती तुम सारी।

राठ के कवि स्व0 उमाशंकर नगायच की निम्नांकित रचना कुण्डलिया छंद का सुंदर उदाहरण है।

मानस के गुण जगत में जगमगात दिन रैन।

गली गली सुन परत हैं तुलसी के मृदु बैन।

तुलसी के मृदु बैन, ऐन बन गये कहाने।

उतरत बिलकुल सत्य, जिन्हें सब कोउ माने।

कहें उमेश तुम जानकार थे कावे नस नस के।

मानस सकृत मराल रचयिता जन मानस के।

समस्या पूर्ति के रूप में लिखी गयी इनकी एक रचना देखिये जिसमें सुंदरी सवैया का प्रयोग हुआ है -

कजरारे

लघु बाल सजे घर सों निकसे,

लघु बाल लसैं सिर पै घुंघरारे।

मृग शावक से बृज बीथिन में,

बिचरें मनमोहन नंद दुलारे।

मुरली अधरान धरें कर सों,

मकराकृत कुण्डल कानन धारे।

उनकी छबि को कवि को बरनै,

बिनु काजर नैन लगें कजरारे।

इन्होंने अपनी रचनाओं में प्रायः सभी प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है -

स्व0 डा0 हरगोविंद सिंह की बुन्देली में सद्बुद्धि पर लिखी गयी रचना देखिये जिसमें रूप घनाक्षरी का प्रयोग हुआ है -

पात्र जहां फूटे धरे, भरबो न बारै जाय,

खूब डारो दूध घृत एक बूंद ना खटात।

जोर जोर धर देव अच्छी खासी सम्पदा पै,

बाराबाटी पूत ईट खपरा लौ बेंच खात।

तनबल,जनबल धनबल, बुझाजात,

बनो करो ताप लेत दुर्व्यसन खुराफात।

रोग व्याधि हैं अनेक, दवा एक सद्विवेक

एई सें तो देवता सें सजी बुद्धि मांगी जात।

इन्हीं की एक रचना में दुर्मिल सवैया का उदाहरण देखिये -

जीवन समिधा

शुभ लेख लखौ जगतीतल में, जस की करनी कुछ तौ न करी।

पढ़बे गुनबे में टिकाउ रहै, लिख पाये न कौनउं चीज खरी।

बस गेह कुटुम्ब सम्हार सजै सब सैंती है कंचन की सुगरी।

जुन आई तो जग्य के लाने इतै सब चूल्हे में फूंक दई नकरी।

प्रख्यात कवि मुंशी तुलसीदास दिनेश ने सभी प्रकार के छन्दों में सुंदर रचनायें की हैं उनकी एक घनाक्षरी छंद को पढ़िये जिसमें एक लघु व एक दीर्घ शब्दों का प्रयोग किया गया है-

न हो सका कलेश दूर और है विशेष क्या उसे न ध्यान आन बान शान साज बाज का

न फूट को हटा सका न दंभि को मिटा सका उसे प्रभाव हो न जाति गान की अवाज का

पुकार नारि वृन्द की न त्राह आह दीन की सुनी न कान में सदा उसे न खौफ लाज का

न नाखुदा जहाज का न ताज है सिपाह का करे भला सुधार क्या गिरी हुई समाज का।

महोबा के कवि श्री पन्नालाल उपाध्याय की एक हास्य कुण्डलिया देखिये जिसे उन्होंने काका हायरसी द्वारा कवि सम्मेलनों में आने के लिए अधिक धनराशि की मांग करने पर लिखा था।

लाला के लल्ला रहे, क्यों काका जी आप

धन बटोरने में स्वयं हो विड़ला के बाप।

हो विड़ला के बाप, शरम नहिं आती भैया

एक रात की मांग आठ सौ एक रुपइया।

छापा वालिन के आका हो तुम तो काका

दिन दुपहर ही डाल रहे हो तुम तो डाका।

ग्राम काकुन (चरखारी) के आशु कवि श्री अमर सिंह अमरेश की एक ओजपूर्ण रचना देखिये जो छप्पय छन्द का उदाहरण है -

मिलकर महा म्लेच्छ मुदित मन मंत्र द्रढ़ायो
साठ लच्छ परमान विकट भटकटक बनायो।
साजि सैन्य चतुरंग यवन अविलंब सिधारे
होकर सुभट तमाम मद्य मद में मतवारे।
कह कवि विचार अमरेश इति आन चढयौ तुर्कान है।
चौहान राज्य रन खेत पर दीन्हें गाड़ निशान है।

हमीरपुर जनपद के प्राचीन कालीन कवियों ने चौकड़िया व छन्दयाऊ फागों की रचनायें भी प्रचुर मात्रा में की हैं चौकड़िया या टहूका की फागों में नरेंद्र छन्द का प्रयोग किया गया है। यह छन्द भारतीय संगीत का मूलाधार है। उसी के चार चरणों से चौकड़िया, पांच से पंचपदी, छः से षटपदी आदि का निर्माण किया गया है। छन्दयाऊ फागों में चौकड़िया फागों की ही टेक रखी जाती है बाद में दोहा और लावनी आदि छन्दों को जोड़कर बीच बीच में टेक के रूप में चौकड़िया के ही चरण रखे जाते हैं। यदि यह चरण अलग कर दिये जायें तो उसका स्वरूप चौकड़िया फाग की तरह हो जायेगा।

चौकड़िया फाग (नरेंद्र छन्द) के कुछ उदाहरण देखिये, कवि ख्यालीराम की यह रचना पठनीय है-

कर्ता करम रेख सों न्यारो, ताकों नहीं बिसारो।
देबी दयावान के घरमां, कहबौ तनक हमारौ।
भागवान के भाग संग में सब कोउ करत गुजारो।
कवि ख्याली कितने के लाने, रूंदत फिरत बयारो।

श्रीनगर के कवि परशुराम की भक्तिपूर्ण यह रचना देखिये -

पहिले गिरजा तनय मनाउँ, पद पंकज सिर नाउँ
अच्छत धूप दीप सब मेवा, सिर सिन्दूर चढ़ाउँ
सिद्ध करन अघनाशक हो प्रभु, मांग बुद्धि वर पाउँ।
परसराम अस्तुत कर गन की, फाग पचासा गाउँ।

कवि खेत सिंह यादव की एक छन्दयाऊ फाग देखिये -

दो0 : व्यूह द्वार पै जहं खड़े, योधा द्रोण महान।
पाण्डव सेना ने करो, धावा मेघ समान।

सो0 : धावा मेघ समान, पाण्डव सेना ने करो।
बरसावे को बान, आन लगी मानो मघा।

सैर : बानन की मघा मानो, सिर लगी लगाने।
प्यासे हैं वीर चातक ना अबै अघाने
ताने हैं नैन रिस में, ना पलक नबाने
जौ लौ निसान बैरी पै धल ना जाने।

टेक योधा बड़े बड़े बलधारी, दौरे दै ललकारी।

इस प्रकार जनपद के प्राचीन कालीन सभी कवियों ने विभिन्न छंदों का प्रयोग कर रचनायें की हैं वर्तमान काल के कवि भी विविध छंदों का प्रयोग कर काव्य सृजन कर रहे हैं। किंतु विस्तार भय से सभी को स्थान दे पाना संभव नहीं है।

(4) अलंकार :

अलंकार का अथ है शोभित, या अलंकृत करने वाला। इसलिये उस सामग्री को अलंकार कहा जाता है जो किसी को सुशोभित करती हो। चांदी, सोना, हीरा, नीलम आदि की बनी हुई वस्तुओं को धारण करने से शरीर की शोभा बढ़ जाती है इस कारण इन गहनों अथवा भूषणों को अलंकार कहते हैं। इसी प्रकार किसी कथन को रमणीय या रोचक ढंग से कहने से उसकी मनोहरता बढ़ जाती है कथन की यही रीति या वर्णन करने की शैली भी अलंकार कहलाती है और यही काव्य को सुंदरता प्रदान करती है।

अलंकार शब्द की व्याख्या करते हुये वामनाचार्य ने कहा है 'अलंकारोतीति अलंकार: ' अर्थात किसी वस्तु को शोभा प्रदान करने वाला अलंकार कहलाता है। आचार्य दण्डी ने अलंकार की व्याख्या निम्न प्रकार से की है।

'काव्यशोभा करान्ध मनिल लंकारान्प्रचक्षते'

अर्थात काव्य के बाह्य सौन्दर्य को बढ़ाने वाले धर्मो को अलंकार कहते हैं। साहित्य दर्पण के रचयिता विश्वनाथ कविराज ने इसे निम्न प्रकार से परिभाषित किया है।

शब्दार्थयोरस्थिरा ये धर्माः शोभाति शायिनः
रसीदनिपु कुर्वन्तो लंकारास्ते . . . .

अर्थात शोभा की वृद्धि करने वाले, इस भाव आदि की उत्कृष्टता को अधिक करने वाले शब्द और उनके अस्थिर धर्म को अलंकार कहते हैं।

यहां यह उल्लेखनीय है कि आचार्यो ने अलंकारों को अस्थिर धर्म बताया है। इसका तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार आभूषणों से रहित सुंदर स्त्री सुन्दरी ही नहीं मानी जायेगी उसी प्रकार सुंन्दर कविता के लिये अलंकारों की योजना अनिवार्य नहीं है। यदि भाव सुंदर हैं तो अलंकारों के बिना भी काव्य सुंदर हो जायेगा। क्योंकि काव्य की आत्मा तो भाव है। अलंकार तो उसके बाह्य रूप से ही संबंध रखाते हैं।यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि जिस प्रकार किसी सुंदरी को यदि बहुत अधिक आभूषणों से लाद दिया जाये तो उसकी सुंदरता बढ़ने के बजाय और भी कम हो जायेगी उसी प्रकार काव्य में भी अलंकारों का आधिक्य उसकी स्वाभाविक कोमलता एवंसौन्दर्य में कमी कर देते हैं।

अलंकार मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं -

1.शब्दालंकार- जिसमें शब्दों अथवा उनके अक्षरों के कारण उक्ति के सौन्दर्य की वृद्धि होती है।

2.अर्थालंकार - जिनमें शब्दों के अर्थ के द्वारा वाक्य का उत्कर्ष अधिक प्रकट होता हो।

3.शब्दार्थालंकार-जिनमें शब्द और अर्थ दोनों पर कथन का सौष्ठव निर्भर रहता है। इन्हें उभयालंकार कहते हैं।

1.शब्दालंकार:

जैसा कि नाम से स्पष्ट है कुछ शब्दों के द्वारा वाक्य की सुन्दरता बढ़ती है ये मुख्य रूप से तीन हैं (1) अनुप्रास (2) यमक (3) श्लेष ।

अनुप्रास:

अनुप्रास अलंकार में किसी वाक्य के एक से अधिक शब्दों में 'स्वर' वर्णों की विषमता रहते हुये भी 'व्यंजन' वर्णों की समानता रहती है अर्थात यदि वाक्य के अंतर्गत कुछ शब्दों में आये हुये व्यंजन समान हों, उनमें लगे हुये स्वर चाहे समान हों या न हों, तो वहां अनुप्रास होगा। जैसे 'कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में क्यारिन में कलिन कलीन किलकंत ै' में 'क' व्यंजन की अनेक शब्दों में कई बार आवृत्ति हुई है यद्यपि सब में एक ही स्वर का संयोग नहीं है फिर भी व्यंजन की समता के कारण यहां अनुप्रास अलंकार है।

यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि व्यंजनों की समता के समान ही स्वरों की समता में अनुप्रास अलंकार नहीं माना जाता। जैसे -अलि अलबेली कलियों पर है आज अजब ढंग से अनुरक्त' में 'अ' की आवृत्ति से अनुप्रास न माना जायेगा।

अनुप्रास अलंकार के पांच भेद होते हैं (1) छेक (2)वृत्ति (3) श्रुति (4) अन्त्य (5)लाट

छेकानुप्रास:

इसमें एक अक्षर अथवा अनेक अक्षरों की शब्दों में बार बार आवृत्ति होती है इस आवृत्ति में वर्ण चाहे शब्दों के आदि में आये चाहे अंत में। जैसे -

इस करूणा कलित हृदय में,
अब विकल रागिनी बजती।

में 'करूणा' और 'कलित' में क की तथा 'विकल' और 'बजती' में ब की आवृत्ति केवल एक बार शब्दों के आदि में हुई है।

2. वृत्यनुप्रास:

वृत्तियों के अनुसार जब शब्दों के आदि अथवा अंत में एक वर्ण अथवा अनेक वर्णों की आवृत्ति कई बार होती है तब व्रत्यनुप्रास होता है इसमे वर्णों का प्रयोग चार प्रकार से होता है।

(1) एक वर्ण की शब्द के आरंभ में कई बार आवृत्ति जैसे -

करूणा कलित कैसी कला कमनीय कोमल कान्ति है' ।

(2) अनेक वर्णो की शब्द के आरंभ में कई बार आवृत्ति जैसे - लहरत लहर लहरिया अजब बहार' में ल ह और र इन तीन वर्णो की आवृत्ति सर्वत्र आरंभ में हुई है।

(3) एक वर्ण की शब्द के अंत में कई बार आवृत्ति जैसे- अवधेस सुरेस रमेस विभो सरनागति मांगत पाहि प्रभो' में स अक्षर तीन शब्दों में सर्वत्र अंत में आया है।

(4) अनेक वर्णो की शब्द के अंत में कई बार आवृत्ति जैसे - ललकति पुलकति,किलकति, थिरकति निरखति बनि ठनि' में क, ति , ये दो वर्ण चार शब्दों में सर्वत्र अंत में आये हैं।

3. श्रव्यनुप्रासः

जहां शब्दों के आदि, मध्य अथवा अंत में ऐसे वर्णो की एक व अनेक बार आवृत्ति होती है जिनका (रूप समान न हो किन्तु) उच्चारण मुख के एक ही स्थान जैसे कण्ठ, तालू आदि से होता हो वहां श्रव्यनुप्रास होता है।

इस अनुप्रास में एक ही प्रकार से उच्चरित होने वाले शब्द आते हैं। उनमें रूप सादृश्य न होने पर भी ध्वनि साम्य होता है इस एक ही स्थान के उच्चारण को लगातार सुनने से कानों को, श्रुति को आनंद मिलता है। इसी से ऐसे वर्णों के बार बार दोहराने से श्रव्यनुप्रास की सुंदरता प्रकट होती है, जैसे-

खिली प्रकृति पटरानी के महलन फुलवारी

यहां 'प, म और क' इन तीन ओष्ठय वर्णो की आवृत्ति होने से श्रव्यनुप्रास है।

इसी प्रकार महत, भूतपति, मूर्ति, हिमालय कोरव बिराजै, में म, भ, प , व ओष्ठय और ह, क कण्ठ्य वर्णो की आवृत्ति हुई है।

4. लाटानुप्रासः

जब वाक्य में कुछ शब्द, शब्दों , वाक्यांशों या वाक्यों की आवृत्ति होती है तब लाटानुप्रास होता है इस आवृत्ति में कुछ विशेषता होती है जिस शब्द या शब्द समूह की आवृत्ति होती है उसका अर्थ

एक सा ही रहता है उन समान अर्थ वाले शब्दों के प्रयुक्त होने पर भी पूरे वाक्य का तात्पर्य, अन्वय के द्वारा अलग अलग स्पष्ट हो जाता है, जैसे - .

तीरथ व्रत साधन कहा, जो निस दिन हरिगान
तीरथ व्रत साधन कहा, बिन निस दिन हरिगान।

इनमें शब्द और अर्थ वही है परंतु अन्वय करने से अर्थ में भिन्नता आ जाने के कारण लाटानुप्रास है।

5. अन्त्यानुप्रासः

पद्य बद्ध रचना में चरणों के अंत में जो शब्द या शब्द समूह आते हैं वे बहुधा एक से होते हैं। इसी चरणान्त के शब्द साम्य में अन्त्यानुप्रास होता है जैसे-

वह मेरे प्रेम विहंसते जागो मेरे मधुवन में,
फिर मधुर भावनाओं का कलरव हो इस जीवन में।

इसमें 'वन में' ये तीन अक्षर दोनों चरणों के अंत में आये हैं इस कारण यहां अन्त्यानुप्रास है।

2. यमकः

जब एक ही रूप के दो या अधिक शब्द अथवा शब्दांश आयें, परंतु उनके अर्थ भिन्न हों तो वहां यमक अलंकार होता है।

कभी कभी दो या अधिक पूर्ण शब्दों की आवृत्तिहोती है। वे अ-भंग रहते हैं ऐसे अवसर पर अभंग पद अथवा सार्थक यमक होता है जैसे-

सारंग ने सारंग गह्यो, सारंग बोल्यो आय।
जो सारंग मुख ते कहे, सारंग निक्स्यो जाय।

यहां सारंग के अर्थ पहली पंक्ति में क्रमशः मोर, सर्प तथा बादल हैं और दूसरी में क्रमशः मोर और सर्प हैं। किंतु जब कभी एक या दोनों शब्द पूर्ण नहीं होते शब्दांश मात्र होते हैं तब भंग पद अथवा निरर्थक यमक होता है, जैसे-

वह नित कलपाता है मुझे कान्त होके,
जिस बिन कल पाता है नहीं प्राण मेरा।

(कलपाता - तड़पाता, कल पाता - चैन पाता)

3. श्लेषः

जहां एक ही पद अथवा पद समूह के दो अथवा अधिक अर्थ निकलते हैं वहां श्लेष अलंकार होता है यह दो प्रकार का होता है (1) अभंग पद श्लेष (2) सभंग पद श्लेष

सभंग पद श्लेषः

अजौं तरयौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक अंग।
नाक बास बेसरि लह्यौ, बसि मुकुटनु के संग।

यहा पर 'तरयौना' पद मे सभंग श्लेष है। एक पक्ष में तो उसका अर्थ कान का आभूषण है तथा दूसरे में उसके दो टुकड़े करने से तरयो + ना अर्थात तरा नहीं यह अर्थ होता है।

अभंग पद श्लेषः

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरैं मोती मानुष चून।

यहा पर पानी पद के विभिन्न अर्थ हैं, जैसे मोती तथा चूना के अर्थ में जल।

4. वक्रोक्तिः

यदि कोई किसी से कुछ कहे और सुनने वाला परिहास आदि के लिये उसके कथन का दूसरा ही अर्थ लेकर कुछ वैसा ही उत्तर दे तो वक्रोक्ति अलंकार होता है ये दो प्रकार की होती है।

श्लेष वक्रोक्तिः

खरी होहु बारी नैकु, कहा हमें खोटी देखी।
सुनौ बैन नैक, सु तौ आन ठां बजाइये।
दे तू मही मोहि सु तौ महीपति दे है कोऊ,
दही देह दही है तौ सीरो कछु खाइये।

इसमें राधा कृष्ण का संवाद है श्रीकृष्ण राधा से कहते हैं कि खड़ी रहो किन्तु राधा शब्द का दूसरा अर्थ (अच्छा होना) लेकर कहती हैं कि मुझमें क्या खोटापन आप देखते हैं। इसी प्रकार वैन सुनो

(हमारी बात सुनो) दूसरे अर्थ में वीणा सुनो है, फिर कृष्ण मही (मट्ठा) मांगते हैं तो राधा मही का अर्थ पृथ्वी लगाती हैं और कहती हैं कि इसे कोई राजा ही दे सकता है।

काकु वक्रोक्ति:

मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू,
तुमहि उचित तप मो कहं भोगू।

यहां पर सुकुमार, बन जोगू, तप भोगू आदि शब्दों के उदाहरण में वक्रोक्ति की ध्वनि मिलती है।

अर्थालंकार

जहां पर अर्थ संबंधी चमत्कार प्राप्त होता है वहां अर्थालंकार होते हैं। अर्थालंकार में शब्दों के रूप पर नहीं किन्तु उनके अर्थ पर ध्यान जाने से उक्ति की रमणीयता प्रकट होती है ये निम्न प्रकार के होते हैं।

उपमा:

रूप रंग गुण काहु को, काहू के अनुसार।
ताकों उपमा कहत हैं, जे सद्बुद्धि आगार।

जहां एक से धर्म, स्वभाव, शोभा तथा दशा वाले दो पदार्थो की तुलना की जाती है वहां उपना अलंकार होता है उपमा के चार अंग होते हैं।

उपमेय: प्रस्तुत अथवा वर्ण्य विपय अर्थात जिसकी किसी अन्य वस्तु से तुलना की जाये।

उपमान : अप्रस्तुत अर्थात जिस वस्तु से समता दी जाय।

समान धर्म: उपमान तथा उपमेय का एक सा गुण।

वाचक : वे शब्द जो समान धर्म को प्रकट करते हैं।

जैसे - हरिपद कोमल कमल से।

उपर्युक्त उदाहरण में - हरिपद : उपमेय
कमल : उपमान
कोमल : समान धर्म
से : वाचक

उपमा के दो भेद होते हैं:-

(1) पूर्णोपमा

(2) लुप्तोपमा

पूर्णोपमा:

जहां पर उपमा के उपर्युक्त चारों अंग वर्तमान रहते हैं वहां पर पूर्णोपमा होती है, जैसे-

नवल सुन्दर श्याम शरीर की।

सजल नीरद सी कल कान्ति थी।

इसमें नवल सुंदर श्याम शरीर उपमेय, सजल नीरद- उपमान, सी-वाचक तथा कलकान्ति - धर्म है।

लुप्तोपमा:

जहां पर उपमा के चारों अंगों उपमेय, उपमान, धर्म तथा वाचक में से एक, दो अथवा तीनों का लोप हो जाये वहां पर लुप्तोपमा होती है, इनका एक एक उदाहरण देखिये-

(1) धर्म लुप्तोपमा:

वचन सुधा सम वे उनके थे।

यहां पर वचन उपमेय, सुधा उपमान तथा सम वाचक तो है परंतु साधारण धर्म माधुर्य आदि नहीं कहा गया है इस कारण यहां धर्म लुप्तोपमा है।

(2) उपमान लुप्तोपमा:

'सुन्दर नन्दकिशोर सो जग में मिलै न और'

यहां पर उपमेय-नंदकिशोर, वाचक-सो तथा साधारण धर्म सुन्दर तो है किन्तु उपमान का अभाव है।

(3) उपमेय लुप्तोपमा:

कल्पलता सी अतिशय कोमल ।

यहा पर उपमान- कल्पलता, वाचक-सी तथा साधारण धर्म कोमल तो है परंतु उपमेय नहीं है इस कारण यहा उपमेय लुप्तोपमा है।

(4) वाचक लुप्तोपमा:

दो बांह नदी के जुगल तीर,

फैले थे कोमल गठित हीर

यहां उपमेय (दो बांह) उपमान (नदी के जुगल तीर) और धर्म (कोमल) है। किंतु उपमेय और उपमान की तुलना सूचक 'समान' या इसका समानार्थक कोई उपमा वाचक नहीं है।

मालोपमा:

जहां पर एक उपमेय के लिये अनेक उपमान लाये जायें वहां पर मालोपमा होती है अर्थात जहां उपमानों की माला सी बना दी जाये। उदाहरण के लिये निम्न छंद देखिये-

इन्द्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभ पर,

रावण सदम्भ पर रघुकुल राज है।

पौन वारिवाह पर शम्भु रतिनाह पर,

ज्यों सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है।

दावा द्रुम झुण्ड पर चीता मृग झुण्ड पर,

भूषण वितुण्ड पर जैसे मृगराज है।

तेज तिमि अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,

त्यों म्लेच्छ वंश पर शेर सिवराज है।

यहां पर उपमेय तो शिवराज है तथा इन्द्र बाड़व रावण आदि उपमानों का 'शेर होना' समान धर्म बताया गया है। अतएव यहां पर मालोपमा है।

(2) प्रतीपः

प्रतीप का अर्थ उल्टा होता है। अतएव जहां उपमेय का कथन उपमान के रूप में तथा उपमान का उपमेय के रूप में कहा जाता है वहा प्रतीप होता है यह पांच प्रकार का होता है।

(क) जहां पर प्रसिद्ध उपमान को उपमेय तथा उपमेय को उपमान बताया जाता है वहां पर प्रथम प्रतीप होता है जैसे ' लोयन से अंबुज बने मुख सो चन्द्र बखानु ' यहां पर कमल को नेत्रों के समान तथा चन्द्रमा को मुख के समान बताया गया है।

(ख) जहां पर उपमेय का तिरस्कार किया जाये वहा पर दूसरा प्रतीप होता है जैसे 'गरब करति मुख को कहा चंदहि नीकै जोई ' यहां पर उपमान चन्द को उपमेय बना कर वर्णनीय उपमेय मुख का अनादर किया गया है।

(ग) जहां पर उपमान का उपमेय द्वारा निरादर किया जाता है वहा पर तीसरा प्रतीप होता है जैसे- 'तीछन नैन कटाच्छ तें मंद काम के बान' यहा पर उपमेय नैन कटाक्षों के द्वारा उपमान काम के वाणों का निरादर किया गया है।

(घ) जहां पर उपमान को उपमेय की उपमा के अयोग्य बताया जाये वहां पर चौथा प्रतीप होता है जैसे- 'अति उत्तम दृग मीन से, कहै कौन विधि जाहिं' अर्थात आंखों की मीन से किस प्रकार उपमा दी जा सकती है यहां पर उपमान मीन को उपमेय आंखों के अयोग्य बताया गया है।

(ङ) जहां उपमेय के आगेउपमान को व्यर्थ बताया जाये वहां पर पंचम प्रतीप होता है जैसे- 'दृग आगे मृग कछु नये' अर्थात कामिनी के नेत्रों के सामने मृग के नेत्र तुच्छ हैं। यहां पर कामिनी के नेत्रों के सामने उपमान मृग के नेत्रों को व्यर्थ बताकर उनका अनादर किया गया है।

(3) रूपक :

उपमा मेंउपमेय तथा उपमान दोनों का अस्तित्व अलग अलग रहता है परंतु रूपक में दोनों में एक रूपता हो जाती है जैसे-

राम कथा सुंदर कर-तारी।
संशय विहंग उड़ावन हारी।

रूपक के दो भेद होते हैं ≬क≬ अभेद रूपक ≬2≬ तद्रूप रूपक

≬1≬ अभेद रूपक:-

जहां पर उपमेय तथा उपमान में कोई भेद न रहे, जैसे-

सखि! नील नभस्सर में निकला।

यह हंस अहा तरता तरता।

यहां नीले आकाश में सरोवर का इस प्रकार आरोप किया गया है कि दोनों में बिलकुल भेद नहीं दिखायी देता।

≬2≬ तद्रूप रूपक:-

जहां पर उपमेय को उपमान का दूसरा रूप कहा जाये वहां पर तद्रूप रूपक होता है जैसे-

दीपति दिपत अति सातों दीप दीपियतु,

दूसरो दिलीप सो सुदक्षिणा को बल है।

यहां पर उपमेय राजा दशरथ को, 'दूसरो' शब्द द्वारा उपमान दिलीप से भिन्न कहते हुये भी दोनों में एकरूपता आरोपित की गई है।

अभेद रूपक तीन प्रकार का कहा जाता है -सावयव अथवा सांग रूपक, विनवयव अथवा निरंग रूपक तथा परंपरित रूपक।

≬4≬ उल्लेख:-

जहां पर एक ही वस्तु का विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अनेक प्रकार से उल्लेख किया जाये वहा पर उल्लेख अलंकार होता हे। यह दो प्रकार का होता है प्रथम उल्लेख तथा द्वितीय उल्लेख।

प्रथम उल्लेख:-

एक ही वस्तु का ज्ञाताओं के भेद के कारण उल्लेख करने को प्रथम उल्लेख कहते हैं

जैसे- जाकी रही भावना जैसी,

प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।

देखहिं भूप महा रन धीरा।

मनहुं वीर रस धरे शरीरा।

डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी।

मनहुं भयानक मूरति भारी।

यहां पर राम को विभिन्न व्यक्तियों ने अपनी अपनी भावना के अनुसार अलग अलग रूपों में देखा है।

द्वितीय उल्लेखः-

जहां पर एक ही वस्तु का विषय भेद से अनेक प्रकार से उल्लेख किया जाये वहां पर द्वितीय उल्लेख होता है, जैसे-

कातर हैं पर दुख में, निज दुख में बिन पीर।

है लोभी यश में सदा, सज्जन जन मत धीर।

यहां पर सज्जनों के विभिन्न गुणों का अनेक प्रकार से उल्लेख किया गया है।

(5) स्मरणः-

जहां पर पूर्व अनुभव किये हुये पदार्थ के समान किसी वस्तु को देखकर उसका स्मरण हो जाये वहां पर स्मरण या स्मृति अलंकार होता है, जैसे - 'उदित चन्द नभ देखि कै, सुधि आवत शिशुचन्द ' उदित हुये चन्द्रमा को देखकर शिशु के चन्द्रमुख का स्मरण हो जाता है।

(6) भ्रान्तिः-

जहां भ्रम के कारण किसी दूसरी वस्तु को अन्य वस्तु मान लिया जाये वहां पर भ्रान्ति अलंकार होता है जैसे- बिल विचार कर नाग शुंड में घुसने लगा विषैला सांप , काली ईख समझ विषधर को उठा लिया हाथी ने आप' भ्रम से हाथी की सूंड को बिल समझकर सांप उसमें घुसने का प्रयास करता है।

(7) सन्देह:

जहां कहीं पर किसी वस्तु को देखकर उसके असली रूप का निश्चय नहीं हो पाता द्विविधा बनी रहती है वहां पर सन्देह अलंकार होता है, जैसे -

की तुम तीनि देव महँ कोउ।

नर-नारायण की तुम दोउ।

इसकी पहिचान कि किवां, या, धौं, किधौं आदि शब्दों से हो जाती है।

(8) अपन्हुति:

अपन्हुति का अर्थ होता है छिपाना। जहां पर एक बात को छिपाकर कोई दूसरी बात कहकर दूसरे व्यक्ति का समाधान कर दिया जाये वहा अपन्हुति अलंकार होता है, जैसे -

मैं जु कहा रघुवीर कृपाला।

बन्धु न होइ मोर यह काला।

अथवा

अरी सखी यह मुख नहीं, यह है विमल मयंक।

(9) उत्प्रेक्षा:

जब उपमेय में उपमान से भिन्नता जानते हुये भी उसकी (अर्थात उपमान की) संभावना की जाती है तब उत्प्रेक्षा अलंकार होता है उत्प्रेक्षा के तीन भेद हैं -

(क) **वस्तूत्प्रेक्षा-** जहां एक वस्तु की दूसरी वस्तु के रूप में संभावना की जाये वहां वस्तूत्प्रेक्षा होती है जैसे-

सोहत ओढ़े पीत पर स्याम सलोने गात।

मनो नीलमनि सैल पर आतप परयौ प्रभात।

(ख) हेतूत्प्रेक्षा: जहां अहेतु में अर्थात जो कारण न हो उसमें हेतु की संभावना की जाती है वहां पर हेतुत्प्रेक्षा होती है जैसे -

पावकमय ससि स्रवत न आगी।

मानहु मोहि जानि हतभागी।

चन्द्रमा में अग्नि नहीं होती परंतु वियोगियों को उसकी शीतलता अग्नि के समान मालूम होती है इस कारण यहां पर सीताजी चन्द्रमा से अग्नि मांगती हैं। यहाँ पर चन्द्रमा में अग्नि की संभावना की गई है।

(ग) फलोत्प्रेक्षाः-

जहां पर अफल में फल की संभावना की जाती है वहा पर फलोत्प्रेक्षा होती है जैसे-

पुहुप सुगन्ध करहिं यह आसा।
भकु हिरकाइ लेइ हम पासा।

पुष्पों में सुगंध स्वाभाविक है परंतु यहां पर जायसी ने इस फल की संभावना की है कि वे सुगंध इसलिये करते हैं कि पद्मावती संभवतः उन्हें अपनी नाक के पास ले जाय।

(10) आतिशयोक्तिः-

जहां पर किसी वस्तु अथवा पदार्थ का वर्णन चातुर्य अथवा चमत्कारपूर्ण ढंग से लोक मर्यादा का उल्लंघन करते हुये किया जाता है वहां पर आतिशयोक्ति अलंकार होता है जैसे -

संधानेउ प्रभु विशिष कराला।
उठी उदधि उर अंतर ज्वाला।

तथा

हनुमान की पूंछ में लगन न पाई आग।
लंका सारी जर गई, गये निसाचर भाग।

आतिशयोक्ति अलंकार के पांच भेद होते हैं - (1) रूपकातिशयोक्ति (2) भेदकातिशयोक्ति (3) संबंधातिशयोक्ति (4) असंबंधातिशयोक्ति (5) कारणातिशयोक्ति ।

(11) दीपकः-

जहां प्रस्तुत (उपमेय) तथा अप्रस्तुत (उपमान) दोनों का एक धर्म कहा जाता है वहां दीपक अलंकार होता है जैसे-

देखें ते मन न भरै, तन की मिटै न भूख।

बिन चाखे रस न मिलै,आम, कामिनी,ऊख।

यहां पर कामिनी उपमेय तथा आम और ऊख उपमान का एकधर्म 'बिन चाखे रस न मिलै' कहा गया है।

(।2) निदर्शना:-

जहां वस्तुओं का परस्पर संबंध संभव अथवा असंभव होकर उनमें विम्ब प्रतिविम्ब भाव सूचित करता है वहां निदर्शना अलंकार होता है परंतु उपमा की कल्पना द्वारा उसकी पूर्ति हो जाती है

जैसे- कहां अल्प मेरी मति, कहां काव्यमत गूढ़।

सागर तरिवो उडुप सौं, चाहत हौं मतिमूढ़।

यहां पर काव्य ग्रन्थ की रचना करना तथा छोटी नाव से सागर पार करना इन दोनों वाक्यों में संबंध दिखाया गया है जो असंभव है अतएव उपमा का सहारा लेकर दोनों में संबंध स्थापित हो जाता है।

(।3) व्यतिरेक:-

जहां उपमान से उपमेय में गुणों की अधिकता का वर्णन किया जाये वहा व्यतिरेक अलंकार होता है। इसमें उपमेय के उत्कर्ष अथवा उपमान के अपकर्ष से उपमेय को असाधारण धर्म वाला बताकर उसे उपमान से अधिक गुण वाला कहा जाता है, जैसे-

विधि ते कवि सब विधि बड़े, यामें संशाय नाहिं।

षटरस विधि की सृष्टि में, नव रस कविता माहिं।

यहां पर कवि उपमेय में विधि उपमान से अधिक गुण बताये गये हैं तथा उसे बड़ा सिद्ध किया गया है।

(।4) सहोक्ति:-

जहां कई बातों का एक साथ होना सरस रीति से कहा जाता है वहां सहोक्ति अलंकार होता है इसमे सह, समेत, साथ, संग आदि शब्दों के द्वारा एक शब्द दो पक्षों में लगता है एक में प्रधान रूप से और दूसरे में अप्रधान रूप से, जैसे-

कीरति अरि कुल संग ही जलनिधि पहुंची जाय।

नाक पिनाकहिं संग सिधाई।

(15) परिकरांकुरः-

जहां पर विशेष अथवा विशेष्यों का अभिप्राय कथन किया जाय वहां पर परिकरांकुर अलंकार होता है, जैसे -

सुनिय विनय मम विटप अशोका।

सत्य नाम करू हरू मम शोका।

यहां पर अशोक शब्द साभिप्राय है इसका अभिप्राय शोक रहित करने वाला है।

(16) अप्रस्तुत प्रशंसाः-

जहां अप्रस्तुत (उपमान) के द्वारा प्रस्तुत उपमेय का वर्णन किया जाये वहां पर अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार होता है जैसे -

दिन दस आदर पाय कै, करि लै आप बखान,

जो लौं काग सराध पख्र तौ लौं तो सनमान।

यहां अप्रस्तुत काग के द्वारा किसी नीच अधिकारी का वर्णन है।

(17) विभावनाः

जहां पर बिना किसी हेतु अथवा कारण के ही कार्य की उत्पत्ति का वर्णन किया जाये वहां पर विभावना अलंकार होता है इसके छः भेद होते हैं, जैसे-

बिन पद चलै सुनै बिन काना,

कर बिन कर्म करै विधि नाना

आनन रहित सकल रस भोगी।

बिनु बानी वक्ता बड़ योगी।

यहां पर पद कर आनन बानी प्रसिद्ध कारणों के बिना ही चलने आदि, कर्म करने, रस भोगने, बोलने आदि कार्यों का वर्णन किया गया है।

(18) असंगति:

जहां कारण कहीं हो और कार्य कहीं दूसरे स्थान पर तब असंगति अलंकार होता है इस अलंकार में कार्य तथा कारण की स्थिति अलग अलग स्थान पर दिखाई जाती है इसके पथम असंगति, द्वितीय असंगति तथा तृतीय असंगति के रूप मे तीन भेद होते हैं, जैसे-

हृदय घाव मेरे पीर रघुबीरै।
पाइ सजीवनि जागि कहत यौं प्रेम पुलकि बिसराय शरीरै।

यहां पर शक्ति का घाव तो लक्ष्मण जी के शरीर में है किंतु पीड़ा होती है रघुवीर को।

(19) यथासंख्य अथवा क्रम:

जहां क्रम के अनुसार पदार्थो का संबंध दिखाया जाता है वहां यथासंख्य अथवा क्रम अलंकार होता है इसमें क्रम से कहे हुये पदों, भावों तथा अर्थो का उसी क्रम से अन्वय होकर संबंध दिखाया जाता है, जैसे -

भुज भुजंग सरोज नयननि, बदन बिधु जिति लरनि।
रहे बिवरन सलिल नभ, उपमा अपर दुरि उरनि।

यहां पर भुजंग, सरोज तथा बिधु का जिस क्रम से वर्णन किया गया है उसी क्रम से विवरन सलिल तथा नभ का वर्णन हुआ है।

(20) परिसंख्या:

जहां किसी वस्तु का दूसरे स्थानों में निषेध कर किसी एक विशेष स्थान पर होना कहा जाय वहां परिसंख्या अलंकार होता है, जैसे -

अति चंचल जहं चलदलै, विधवा बनी न नारि,
मन मोह्यो रिसिराज को अद्भुत नारि निहारि।

यहा पर अवधपुरी में चंचलता केवल पीपल के पत्तों में ही पाई जाती है अन्यत्र नहीं।

(21) अर्थान्तरन्यास:

जब किसी बात को कहकर उसकी पुष्टि किसी दूसरी बात से की जाती है तब वहां अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है इसमें प्रस्तुत अर्थ का समर्थन अप्रस्तुत अन्य अर्थ (अर्थान्तर) को स्थापित

(न्यास) करके किया जाता है।

दान दीन को दीजिये, हरे दरिद्र की पीर।
औषधि ताकों दीजिये, जाके रोग शरीर।

यहा पर दरिद्र को दान देना चाहिये इस सामान्य कथन को रोगी को दवाई देने के विशेष कथन से पुष्ट किया गया है।

(22) दृष्टान्तः-

जहां उपमेय तथा उपमान वाक्यों तथा उनके साधारण धर्म का विम्ब प्रतिविम्ब भाव होता है वहां दृष्टान्त अलंकार होता है। इस अलंकार में दो वाक्य होते हैं उपमान वाक्य तथा उपमेय वाक्य। इन दोनों के धर्म प्रथक होते हैं परंतु फिर भी दोनों में साम्य दिखाई देता है अर्थात दोनों का साधारण अर्थ भिन्न होते हुये भी उनमें समता सी दिखाई देती है, जैसे -

रहिमन अति सुख होत है बढ़त देखि निज गोत।
ज्यों बड़री अंखियां निरखि अंखियन को सुख होत।

उपर्युक्त दोहे के प्रथम व द्वितीय वाक्य में विम्ब प्रतिविम्ब भाव हैं जो वाचक शब्द द्वारा प्रकट नहीं है इस कारण यहां दृष्टान्त अलंकार है।

(23) मुद्राः-

जहां किसी पद के प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त अन्य अर्थ भी सूचित किया जाता है वहां मुद्रा अलंकार होता है इस अलंकार में द्वयर्थक पदों का प्रयोग किया जाता है परंतु वे दूसरे अर्थ के सूचक मात्र ही होते हैं, जैसे -

अली जाइ किन पीउ तहं जहं रसीली वास।

यहां एक अर्थ यह हुआ कि हे भ्रमर, वहां जाकर क्यों नहीं पीते हो जहां रस तथा गन्ध दोनों है। दूसरा अर्थ यह सूचित करता है कि हे सखी मेरे प्रिय वहां मिलेंगे जहां उस रसीली नायिका का निवास स्थान है।

(24) तद्गुणः-

जहां पर एक वस्तु अपना गुण छोड़कर अपने संगी का गुण ग्रहण कर ले वहां पर तद्गुण अलंकार होता है, जैसे -

बेसिर मोती अधर मिलि,
पद्मराग छवि देत।

यहां पर नाक का मोती अधरों के साथ मिलकर पद्मराग मणि की छवि देने लगता है।

(25) अतद्गुणः-

यह तद्गुण का उल्टा है। जहां समीप रहने पर भी एक वस्तु दूसरी वस्तु का गुण ग्रहण न करे अर्थात अपने गुण को न छोड़े वहां पर अतद्गुण अलंकार होता है, जैसे -

प्रिय अनुरागी न भयो, वसि रागी मन माहिं ।

रागी मन में रहते हुये भी प्रिय का अनुरागी न हो सका। इसी प्रकार -

चन्दन विष व्यापे नहीं, लपटे रहत भुजंग।

(26) मीलितः-

जहां समानता के कारण दो वस्तुओं में कोई भेद न दिखायी पड़े वहां पर मीलित अलंकार होता है, जैसे -

सिय तुव अंग रंग मिलि अधिक उदोत।
हार बेलि पहिरावौं चंपक होत।।

यहां पर सीता जी के शरीर का रंग तथा बेला के फूल के हार का रंग एक होने से दोनों में अंतर नहीं दिखायी देता।

(27) उन्मीलितः-

जहां दो वस्तुओं में समानता होते हुये भी किसी एक बात के कारण भेद प्रकट हो जाये वहां उन्मीलित अलंकार होता है, जैसे -

मिलि चंदन बेंदी रही गोरे मुख न लगाइ।

ज्यों ज्यों मद लाली चढ़ै त्यों त्यों उघरत आइ।

यहां पर गोरे मुख पर लगी हुई चन्दन की बेंदी उस समय दिखायी देती है जब नायिका पर मद की लाली चढ़ती है।

उभयालंकार

कवि जब अपनी रचना करता है तो उसमें प्रायः कई अलंकार आ जाया करते हैं -

(1) कभी कभी किसी कथन में कई शब्दालंकार एक साथ आ जाते हैं।

(2) कभी कई अर्थालंकार, और

(3) कभी कुछ शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों।

इसी तरह जब एक ही वाक्य या छन्द में एक से अधिक प्रकार के अलंकार होते हैं तब उसमें उभयालंकार माना जाता है, जैसे -

(1) दीरघ सांस न लेहि दुख, सुख आँईहि न भूल।

दई - दई क्यों करत है, दई - दई सु कबूल।

(दई-दई = हा देव, हा देव, हाय भगवान, दई = दैव, दई = दिया है)

यहां पर छेकानुप्रास तथा यमक इन दो शब्दालंकारों का सम्मिलन है।

(2) बंदउँ गुरू पद पदम परागा।

सुरूचि सुवास सरस अनुरागा।

इसमें वृत्यनुप्रास और परम्परित रूपक ये दो भिन्न भिन्न वर्गो के अलंकार हैं ।

जनपद हमीरपुर के कवियों ने अपनी रचनाओं में विभिन्न अलंकारों का प्रयोग किया है। उल्लेखानीय है कि अलंकारों का प्रयोग प्राचीन कालीन कवियों की रचनाओं में अधिक हुआ है। वर्तमान काल के कवियों ने भावप्रधान रचनाओं पर अधिक ध्यान दिया है अलंकारों के प्रयोग पर नहीं। फिर भी कहीं-कहीं उनका प्रयोग स्वाभाविक रूप से उनकी रचनाओं में हुआ है। कुछ कवियों की रचनायें देते हुये यहां प्रयुक्त अलंकारों की संक्षिप्त जानकारी दी जा रही है क्योंकि इसी अध्याय में अलंकारों का विस्तृत विवेचन किया जा चुका है।

जनपद के प्राचीन कालीन कवियों में स्व0 ख्यालीराम जी के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता, उनकी रचनाओं में माधुर्य एवं लालित्य की जो छटा मिलती है अन्यत्र संभव नहीं है। विभिन्न प्रकार के अलंकारों का कितना सुंदर प्रयोग उन्होंने किया है उनकी रचनाओं के अध्ययन से ही स्पष्ट होता है। निम्नांकित चौकड़िया में रूपक व संबंधातिशयोक्ति की सुंदर छटा देखिये जिसमें नायिका की चितवन तलवार की धार सी पैनी है।

हेरन खड़ग धार सों पैनी, देखत भई बेचैनी।
मीन मलीन दीन गति खंजन, गंजन मद मृगनैनी।
ऐसी दई रूचिरता विधि ने चन्दा रूप न बैनी,
ख्यालीराम पाय ऐसो तन, काए बनत अदैंनी।

लोकप्रिय कवि खूबचंद रावत ने भौंहों को तलवार और नेत्रों को कटार के रूप में बताते हुये कितने सुंदर रूपक का प्रयोग किया है -

तेरी देख भौंह तरवारें, अनगिन परे कल्हारें,
कढ़ गई वीरन हिया चीर कें, नैना नोक कटारें
जिन दृग लई चलाकी इनकी, मर गये पै सब मारें
भृकुटी सुबस भए सुर नर मुन परे रात नित द्वारें
'खूबचंद' मत चितै श्याम तन, जौलों गिर नख धारें।

ख्यालीराम कवि की एक और रचना देखिये जिसमें अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है -

तोरे तिय तुरंग से नैना, लाज लगाम लगै ना।
माया बंद मजबूत से मोहरा, जेर बंद जिमकैना।
चारू-चारू जीना चतुराई, तंग तरूनाई कसैना।
घूंघट घुड़सारन सें काड़ें, फूदन फंदक फुदेना।
कवि 'ख्याली' आली न छोड़ौ गलियन छैल खुदे ना।

नायिका ने भौहों के बीच में गुदना गुदवा लिया है। कवि जब उसे देखता है तो विभिन्न प्रकार से उसकी कल्पनायें करता है ख्यालीराम कवि की नीचे दी जा रही रचना में संदेह अलंकार की छटा देखिये -

गुदना लसत भौंह बिच बांकौ, परत चन्द्र में टांकौ

कै तो परो सेज के ऊपर, सोवै कन्त रमा कौ

गरल कण्ठ लै आन विराजौ, कै तो पती उमा कौ

कै तो गोद लिये ससि बुध खां कै तो नग पन्ना कौ

कवि ख्याली लग जाय नजर ना पट घूंघट लै ढांकौ।

सुंदर पाल का रूपक युक्त ख्यालीराम जी की एक पहेली वाली फाग देखिये-

दोरें लगे पाल दो ठैया, जामें नचत भुमैया,

रस्सी सरद एक नईं लागी नईं लठा न पैया।

झालर अजब लगी एकइ सी, ऐसो सुगर बनैया।

ख्याली उपमा दई पाल की हमें बता दो भैया।

श्रीनगर निवासी पं० परशुराम पटैरिया ने भी अपनी रचनाओं में अलंकारों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया है। नीचे एक रचना दी जा रही है जिसमें लाटानुप्रास का प्रयोग हुआ है क्योंकि यहा पर सारंग शब्द की पुनरूक्ति विभिन्न अर्थो में की गयी है।

दो० : सारंग ले सारंग चली, कर सारंग की ओट

सारंग हीनो जान के, सारंग कर दई चोट ।

चौ० : सारंग सारंग खां कर जोरें, सारंग ठाढ़ी दोरें

सारंग सज के आय गई हैं, सारंग जात निहोरैं

सारंग रंग अनेकन कहिये, सारंग ठाढ़ी छोरैं

परशुराम सारंग के ऊपर,बरसा ऋतु की डोरें।

इसका आशय है कि सारंग (दीपक) को लेकर सारंग (युवती) सारंग (वस्त्र) की आड़ में लेकर चली। सारंग (वस्त्र) फटा होने के कारण सारंग (हवा) ने उसे बुझा दिया। इस प्रकार विभिन्न पंक्तियों में सारंग शब्द का विभिन्न अर्थो में प्रयोग किया गया है। अतः शब्दों की अर्थ भिन्नता के कारण यहां लाटानुप्रास है।

और कुलपहाड़ के कवि खेतसिंह यादव की इस रचना में उल्लेख अलंकार का प्रयोग देखिये जिसमें गांधी जी के बारे में विभिन्न प्रकार से उल्लेख हुआ है।

बापू तुम नैनन के तारे, रहे प्रान से प्यारे,
भारत के थे हिमगिर रक्षक, खम्भा अटल सहारे
निरधन के धन हरिजन के मन, भूतल के उजयारे
खेत सिंह थे हीरा जग में वे अनमोल हमारे।

कविवर खूबचंद की निम्न रचना अपन्हुति अलंकार का एक अच्छा उदाहरण है -

चितवन ना असि करत कटा है, फेरत फिरत पटा है
सारी श्याम न ससि मुख ऊपर घूमत घोर घटा है
गत द्रुत मन्त मतंगन लाजत कुच छबि कोक छटा है
खूबचंद द्रग चंचलताई धीरज देत हटा है।

ग्राम भैंसाय-राठ के कवि मथुरा प्रसाद गुप्त की निम्नांकित रचना में भेदकातिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण देखिये -

दो0 : तरूवाई तन में बसी, नारि अनेक अनूप
पै राधा ब्रजलाल कौ को कह सके सुरूप।

चौ0 : देखी ना बृषभानुसुता सीं अखियां बहुत तलासीं।
नख-सिख सें तन तनक न हीनो, ऐसी सुघर निकासी।
चतुर चपल चंचल ब्रज भीतर उरई चन्द्र कला सी
मन मंदिर मां मथुरा हरदम भई फैरात धुजा सी।

कविवर बोधन की एक रचना देखिये जिसमें अत्यन्तातिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है। अर्जुन जब तक धनुष संभालते हैं , भीष्म ने दस हजार योद्धा मार दिये और विजयसूचक शंख बजाकर राजभवन को चले गये।

गंगासुत रथ कीन्ह अगारे,धनुष हात में धारे
पारथ निज दल रक्षा कीजै, भीषम वचन उचारे
जब लग उनने धनुष संभारो, दस हजार नृप मारे,
बोधन भजत शंख धनु करकें, कुरूपति भवन सिधारे।

कविवर मथुरा प्रसाद गुप्त की एक देखिये जिसमें विभावना अलंकार है इसमें मधुर वाणी बोलने का कारण मुखादि आकार का अभाव है फिर भी अमृत के समान ध्वनि सुनाई देती है।

है बौ निराकार निरवानी, बोलत मधुरी बानी
बरनन करै कौन कवि जाको अमृत धुनी सुनानी।
है सब ठौर ठौर ना कायम समझ लेब गुन ज्ञानी।
मथुरा कात सभा के अंदर है वेदों की बानी।

कवि भरतू की एक सुंदर फाग देखिये जिसमें रूपकातिशयोक्ति के साथ विशेषोक्ति का प्रयोग है -

भौंरा बाग बिरानो की कौ, हमसों नौनों नीको
घर की कली कौन कम फूली ताको रस का फीकौ।
डारन लगेऔर की कुपियां अपनो माल सिसी को
भरतू कात हमें का करनें जौ सब हंसी खुशी कौ।

बोधन कवि की एक उत्कृष्ट रचना देखिये जिसमें विषमयालंकार की छटा है। महाभारत के युद्ध में द्रोणाचार्य द्वारा चक्रव्यूह की रचना हुई उस समय अर्जुन के वहां न होने से कौन चक्रव्यूह भेदन करे?यह समस्या थी। इसी बीच वीर अभिमन्यु चक्रव्यूह तोडने का संकल्प लेकर युद्ध में जाने की अनुमति चाहता है। यह उससे भी विकट समस्या थी। इसी विषमयालंकार का चित्रण देखिये जिसमें युधिष्ठिर अभिमन्यु से कहते हैं -

बेटा प्रान तजे किम जायक, करों तोय ना नायक,
छोटी वयस समर नहिं देख्यौ, लीन कबहुं नहिं सायक
भीषम द्रोण करण कृतवर्मा दुर्योधन के पायक
'बोधन' कहां व्यूह को भेदन कहां सत गोदी लायक

ख्यालीराम जी की एक और रचना देखिये जिसमें प्रतीप अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है -

हेरन खड़ग धार सों पैनी, देखत भई बेचैनी
मीन मलीन दीन गति खंजन गंजन मद मृग नैनी
ऐसी दई रुचिरता विधि ने चन्दा रूप नबैनी
ख्यालीराम पाय ऐसो तन काये बनत अदैनीं।

श्री खूबचन्द रावत की इस रचना में मानवीकरण अलंकार का सुंदर प्रयोग देखिये -

मोती धन्य तोय मुख चूमत, रहत कपोलन झूमत।
दै ठोकर ठोढ़ी के ऊपर, ठसक भरौ नित घूमत।
बेसर बीच बास तैं पायो, चलत हलत लै लूमत,
'खूबचन्द' तैं ही बड़भागी, मुख पर करत हुकूमत।

राठ के कवि मुंशी तुलसीदास दिनेश की निम्नांकित रचना में अनुप्रास का सुंदर प्रयोग देखिये-

शरद वर्णन

सर सरितान मध्य सलिल सुहाने स्वच्छ मग में न दीखौ पंक रेणु जबलेश को,
अमल अकाश गयो खंजन दिखान लगे गाने लगे भ्रम दे दे सरस संदेश को
हेरि के हराने लगे हीरन की ज्योति उड़ु सुधा बरसाने लगी भूमि धार भेष को।
फूलो न समात चित्त चौगुनो उमाह भरो देख रहो एक टक चकोर राकेश को।

श्री जगदीशचंद्र कौशल की एक श्रंगारपरक रचना में रूपक का चित्रण देखिये -

नभ मण्डल सा मुख मण्डल था,
बैंदी चन्द्रज्योति सी छिटकी।
अलकें घन सी आंखें तारे,
दंतावलि दामिनि सी पटकी।
धूमकेतु सी नासा लखकर,
कृष्ण याद करते राधा को,
मथुरा के प्रांगण में बैठे,
लखते नभ को लगा टकटकी।

महोबा के कवि श्री जाहर सिंह की निम्न रचना में स्मरण अलंकार का प्रयोग देखिये -

देखो जमुना कमल कन्हाई, सुधि राधा की आई।
गोपी ग्वाल बाल गो गोरस, मधुबन की परछाई।
बंसीवट वृन्दावन गोकुल, रमण रेत अंगनाई।
केसव कहत बिलख ऊधव सन, यह मन मम बस नाई।

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं कवि स्व0 बालेन्दु अड़जरिया की निम्न रचना में उल्लेख अलंकार का प्रयोग देखिये -

गांधी गौरव

दीनों का परम धन, अधीनों का मुक्त मंत्र,

वन्दनीय विश्व का विशिष्ट मेहमान है

बीसवीं सदी के राजनीति नभ का है इन्दु,

ईश्वर प्रदत्त हिन्द माँ का वरदान है।

शुचिता की मूर्ति, नव स्फूर्ति है स्वतंत्रता की,

सत्यता की बान महागुरूता की खान है।

आन है अहिंसा की, जान असहयोग की है,

गांधी तू निश्चय आज भारत की शान है।

मुनिलाल कवि की निम्न रचना में अनुप्रास अलंकार की सुंदर छटा देखिये जिसे हनुमान जी की वन्दना में लिखा गया है -

धर्म धुर धारी धुन्धरा धर धरनि धीर,

धारन धरम धन धाम में बढ़ा दे तूँ,

चातुरी चलाकी, चैन, चौज चित्त चाही चारु,

चरण सरोज चारु चित्त में चढ़ा [illegible] तूँ।

प्यारे मुनिलाल पिंग लोचन प्रतीत प्रीत,

पूरन पुनीत प्रेम पूरन पढ़ा दे तूँ।

जीत के अजीतन को कुजन कुमीतन को,

सुजन सुमीतन को मंगल मढ़ा दे तूँ।

मौदहा के हास्य रस के कवि श्री कामताप्रसाद गुप्त की नीचे दी गई हास्य रचना में यमक अलंकार का सुंदर प्रयोग देखिये। ससुराल में जीजाजी के साथ होली खेलने का एक चित्रण इस रचना में है

बारी ससुरारी क्या दशा है हमारी,

चढ़ी सारी पे सारी मोहे सारी पहिनाती हैं

सारे के सारे इशारे करें बार बार,

सरहज सर पकर सर पे बेंदी लगाती हैं

नारी इक नारी के नारी ना री कहत कहत,

नारी धर पकर मोंह चुरिया पहनाती हैं

नारी हमारी नर नारी के बीच हंसै,

नारी नर रूप देख सखियां किलकाती हैं।

जनपद के कवियों द्वारा उपर्युक्त कुछ रचनाओं में अलंकारों के सुंदर प्रयोग को दिखाया गया है। विभिन्न अलंकारों का अपनी रचनाओं में प्रयोग करने वाले जनपद के ऐसे कवियों की संख्या काफी अधिक है। सभी रचनाओं को यहां स्थान दिया जाना संभव नहीं है इस प्रकार अलंकारों के प्रयोग की दृष्टि से भी जनपद हमीरपुर के कवियों की रचनायें समृद्ध हैं।

(5) गुण, शब्दशक्ति एवं रीतियां

काव्य का प्रधान उद्देश्य व्यापक जीवन दृष्टि प्रदान करना है। आचार्य शुक्ल ने लिखा है कि कविता शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह का साधन है। वह इस जगत के अनन्त रूपों, अनन्त व्यापारों और अनन्त चेष्टाओं के साथ हमारे मन की भावनाओं को जोड़ने का कार्य करती है। यदि रसात्मक वाक्य को काव्य मान लिया जाये तो वाक्य में अन्तर्भूत शब्दार्थ पद समूह का रूप लेकर अपना ही व्यक्तित्व उपस्थित कर देता है, संभवतः इसी कारण पं० जगन्नाथ ने रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्द को काव्य माना है।

' रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्द काव्यम् '

आचार्य भामह ने काव्य को शब्द और अर्थ की अनिवार्यता के साथ जोड़ा है।

' शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् '

आचार्य रूद्रट के अनुसार काव्य में पूर्णतया अनिवार्य तत्व शब्दार्थ ही है।

' ननु शब्दार्थौ काव्यम् '

आचार्य मम्भट का भी काव्य के संबंध में कुछ ऐसा ही अभिमत है।

' तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृतिः पुनःक्वपि '

इस प्रकार स्पष्ट है कि काव्य शब्दार्थाश्रयी है काव्य में वक्रता को महत्व देने वाले आचार्य कुन्तक भी शब्दार्थ की अनिवार्यता को नहीं त्याग पाते। कालरिज के अनुसार काव्य उत्तम गतिमयता में सर्वोत्तम शब्द विधान है।

इस प्रकार शब्दार्थाश्रयी अभिव्यक्ति जब कल्पना एवं मनोवेग के साथ लोक जीवन का समाख्यान करती है तब अपनी रागात्मकता के कारण कविता या काव्य से अभिहित होती है और लोकरंजन में समर्थ होती है। अग्नि पुराण में अभीष्टार्थ युक्त व्यवच्छिन्न पदावली अलंकार एवं गुणमय तथा निर्दोष संक्षिप्त वाक्य को काव्य कहा गया है।

संक्षेपाद् वाक्य मिष्ठार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली

काव्यं स्फुरदलंकारं गुणवद्दोष वर्जितम

जहां तक काव्य की व्यापकता का प्रश्न है इसमें हमें दो बिंदु मिलते हैं एक के मूल में कवि है- कवेः भावः काव्यम् (कवि का भाव काव्य है) और दूसरे के मूल में भामह का शब्दार्थ - शब्दार्थो सहितौ काव्यम्।

कवि भाव लोक का जीवन्त दृष्टा है आचार्य भट्ट ने इसी कारण - नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा से संपन्न वर्णनानिपुण प्रज्ञ कवि के कर्म को काव्य स्वीकार किया है।

प्रायः काव्य की समस्त परिभाषाओं में शब्दार्थ की उपादानता को स्वीकार किया गया है और निष्कर्षतः रमणीय शब्द और अर्थ को काव्य माना गया है।

गुण

वृत्ति और रीति की तरह ही काव्य रचना में गुणों का भी बड़ा महत्व है गुणों को रस का उत्कर्ष मानने वाला माना गया है। दंडी के मतानुसार गुण काव्य के प्राण हैं। वामन ने गुणों को काव्य में काव्यत्व लाने वाले धर्म कहा है क्योंकि इनसे ही काव्य में काव्यत्व आता है। भोजराज ने अलंकृत काव्य को भी गुणहीन होने के कारण अश्रवणीय कहा है और व्यास जी ने लिखा है कि अलंकारयुक्त काव्य भी गुण रहित होने से आनंदप्रद नहीं होता। गुणों की संख्या के बारे में मतभेद हैं। भरत मुनि के अनुसार गुणों की संख्या दस तथा व्यास जी के अनुसार उन्नीरा है। भामह ने तीन, दण्डी ने दस, वामन ने बीस और भोजराज ने चौबीस गुण माने हैं। परंतु मम्मटाचार्य ने अपने काव्य प्रकाश में गुणों की संख्या तीन ही मानी है तथा शेष सभी गुणों की निस्सारता सिद्ध की है। इस प्रकार प्रमुख रूप से काव्य के तीन ही गुण मान्य हैं (1) माधुर्य, (2) ओज और (3) प्रसाद, जिनका वर्णन हम नीचे करेंगे।

(1) माधुर्य :

इस गुण के कारण अन्तःकरण आनन्द से द्रवीभूत हो जाता है। यह गुण क्रमशः संभोग में, करूण से विप्रलम्भ में और विप्रलम्भ से शान्त रस में अधिकाधिक अनुभूत होता है। उदाहरण के लिये कुछ कवियों की रचनायें देखिये-

जनपद के वरिष्ठ लोकप्रिय गीतकार मंजुल मयंक की निम्नांकित रचना माधुर्य का सुंदर उदाहरण है -

रात ढलने लगी, चांद बुझने लगा,
तुम न आये सितारों को नींद आ गयी।

धूप की पालकी पर किरन की दुल्हन
आ के उतरी खिला हर सुमन हर चमन
देखो बजती है भौरों की शहनाइयां
हर गली दौडकर न्यौत आया पवन।

बस तड़पते रहें सेज के ही सुमन
तुम न आये बहारों को नींद आ गयी।

महोबा के वरिष्ठ कवि श्री उमाशंकर नगायच के प्रकाशित खाण्ड काव्य 'सीता निर्वासन' की एक रचना देखिये-

राम का चित्र

अरे यह क्या / अधरों पर हास
और आंखों में जल/करूणा विषाद के आंसू सच
या व्यंग हास / या पल पल छल
मुझ पर हंसने का कारण क्या / क्या अविवेकी
विक्षिप्त मना ? / तब हंसो खूब
रोते हो क्यों ? / खारे पानी से
कमलासन धोते हो क्यों ?
इस करूण भाव से मत देखो मत मुस्काओ।
सात्विक भावों को राम ! न मेरे पिघलाओ।

मुंशी तुलसीदास 'दिनेश' की नीचे दी गई रचना भी माधुर्य गुण की परिचायक है -

प्रथम लगा के प्रेम दीन्हों बहु भांति चैन अब उन गैल धरी कुब्जा के धाम की।
हमसे छुड़ा के घर बार कुल कानि सभी देके दगा, नाहक ही गोपी बदनाम की।
जल बिन मीन कैसी हालत दिनेश भई तीर सम चीर रही पीर मोहिं काम की।
कैसी करूं कहां जाउँ किन को सुनाऊं व्यथा खूब ही खाली है अनरीति घनश्याम की।

(2) ओजः

इस गुण की रचना को पढ़तेही या सुनते ही चित्त में स्फूर्ति आ जाती है। मन में तेज उत्पन्न हो जाता है और चित्त में एक अपूर्व दीप्ति उत्पन्न हो जाती है। यह ओज गुण क्रमशः वीर से वीभत्स में और वीभत्स से रौद्र में अधिक अनुभूत होता है। उदाहरण के लिये जनपद के कवियों की कुछ रचनायें देखिये -

मुंशी तुलसीदास दिनेश की एक रचना देखिये जिसमें किरणमयी अकबर से कहती है -

सिंहनी सी झपट पटक चढ़ी छाती पर मानो चढ़ी दुर्गा शुम्भ दानव पे हो प्रचण्ड।
बोली ललकार दुष्ट मीना के बजार मिस छीना अबलाओं का सतीत्व अरे हो उदण्ड।
पाले पड़ा पाजी आज वीर राजपूतनी के पल में भुलाती चालबाजी शान औ घमण्ड।
कर ले खुदा की याद भेजती यमालय को देख ये कटारी करने को उठी खण्ड खण्ड।

श्रीपति सहाय रावत की पुस्तक जोहर जराखार की ये पंक्तियां भी ओज का अच्छा उदाहरण हैं -

धंस गये ज्वान फौज के भीतर विकट हाथ फटकारें
कौंधा सी कौंधें तलवारें चार घरी अंधयारें।
दम न लेवैं घरी भरे की, घनी गजी सी फारैं
भुन्टा से कट गिरे मूड़ कोऊ डरे डरे चिग्घारें।

बोधन कवि की छन्दयाऊ फाग के कुछ अंश देखिये जो ओज का सटीकउदाहरण है। अश्वमेध यज्ञ के निमित्त श्रीराम द्वारा छोड़े गये घोड़े को लव-कुश पकड़ लेते हैं तथा युन्द्ध के लिये तत्पर हैं। इस प्रसंग को इस रचना में लिया गया है-

उड़ान : पत्र लिखो सिर अश्व के ताको तुरत छुड़ाये
पढ़ो हाल तब क्रोध से अरूण नयन हो आये।

दो0 : कौन राम कैसो सुभट, जिन छोड़ो यह बाज
मद बाको संग्राम में, हम तोड़ेंगे आज

टेक : दीनों बांध तुरंग इक तरू में, बैठे धनुष चढ़ाये।

छन्द : बैठे कुंवर धनुष को तान तब लग कछु भट पहुंचे आन।
बोले ओ बालक नादान क्यों रार करै

दीजै छोड़ हमारौ बाज, अपने घर को जाओ नाज।
नाहीं युद्ध होय अति आज, बे मौत मरै।
× × × × × ×

(3) प्रसाद :

इस गुण की रचना को पढ़ते ही या सुनते ही वह शीघ्र समझ में आ जाती है क्योंकि प्रसाद गुण वाली रचना में अत्यन्त सरल, सुबोध एवं श्रवण मात्र से अर्थ प्रतीत कराने वाले शब्द रखे जाते हैं। कुछ कवियों की रचनाओं में प्रसाद गुण का उदाहरण देखिये -

कवि ख्यालीराम की एक चौकड़िया पढ़िये जिसमें प्रेम की नैया पार लगाने की बात प्रेमिका से कही गयी है।

जे दिन जात तुम्हें बिन देखें विकल रहत बिन लेखें
दै दै रंग बढ़ाओ तुमखां, करो सयानो सेकें
ऊं का जानें पीर पराई, घाव होत न जेखें
ख्यालीराम नेह की नैया, पार लगा देव खेकें।

स्व0 खेत सिंह यादव की एक चौकड़िया देखिये जिसमें श्री कृष्ण बड़े सरल ढंग से गोपिकाओं से कहते हैं कि हमारी मुरली तो प्रत्येक दिन बजेगी ।

बंशी बजनें रोज हमारी, कहन लगे गिरधारी।
का अनरीत करत हम बोलौ, मुख से सब ब्रज नारी
कान बन्द तुम अपने कर लो, जो खटकत है भारी।
'खेत सिंह' ना इन बातन में, गलनें दाल तुम्हारी।

स्व0 डा0 हरगोविन्द सिंह की बुन्देली में एक छन्द रचना देखिये जिसमें सरल शब्दों में उस लड़की के पिता को पहचानने की सरल विधि बतलाई गई है जो अपनी लड़की के लिये वर की खोज में परेशान है।

फिरै फिपयानौं रोज, बारा मेड़ें भौंड़ रहो,
हुलिया पै हीन भाव जैसें करो पाप है।
गरब गरूर चालबाजी भरी बातें सुन,
पियत कुनैन कैसो घूंट चुपचाप है।

जन्म तिथी, बंस बेल, रूप रंग, कार-बार,

कहाँ कैसो मोलभाव बस एइ जाप है।

जेके ऐसे हालचाल देखौ निज देश बीच,

बिना कहैं जान लेव बिटिया को बाप है।

शब्द शक्ति की परिभाषा :

'शब्दशक्ति ' का तात्पर्य शब्दों में अन्तर्निहित अर्थ को व्यक्त करने वाला 'व्यापार' है लोक व्यवहार में प्रयुक्त शब्द का कुछ न कुछ अभिप्रेम अर्थ होता है। आचार्य मम्भट के अनुसार - 'अभिप्रेत' अर्थ शब्द के जिस गुण (सामर्थ्य व्यापार शक्ति) द्वारा 'संकेतित' लक्षित' या 'व्यंजित' होता है उसे ही 'शब्द शक्ति' कहते हैं। संस्कृत गा हिंदी में विभक्ति या क्रियात्मक प्रत्यय युक्त शब्द 'पद' संज्ञक होते हैं अतः इस पद से यह अर्थ बोधव्य है ऐसा संकेत ही शब्द की शक्ति है।

' अस्मात पदात् अयमर्थो बोधव्य इति संकेतः शब्द शक्तिः '

शब्द के अभिप्रेत अर्थ को ग्रहण करने वाली शक्ति के साधनों का उल्लेख मिलता है।

' शक्तिग्रहं व्याकरणगोपनात् कोषाप्त वाक्याद् व्यवहारतश्च,

सान्निध्यतः सिद्धपदस्य धीरा वाक्यस्य शेष द्विव्रतेर्वदन्ति ' ।

अर्थात विद्वान लोग कहते हैं कि (1) व्याकरण से (2) उपमान पद से (3) कोष से (4) आप्तवाक्य से (5) व्यवहार से (6) सिद्धपद के सान्निध्य से (7) वाक्य कोष से और विकृति (टीका) से (अर्थहेतु) शक्ति (संकेत) (ज्ञान) ग्रहण होता है।

शब्द शक्ति के प्रकारः

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार शब्द की तीन शक्तियां होती हैं - ' तिस्रः शब्दस्य शक्तयः' इस प्रकार शब्द तीन प्रकार के होते हैं (1) वाचक (2) लाक्षणिक (3) व्यंजक । शब्द के ये तीनों प्रकार अपने सामर्थ्य के अनुसार तीन प्रकार के अर्थ के द्योतक होते हैं (1) वाक्यार्थ (अधियार्थ) (2) लक्ष्यार्थ (3) व्यंगार्थ ।

क्रमशः उक्त शब्दों एवं तदनुवर्ती अर्थो के मध्य का व्यापार या सबंध भी तीन प्रकार का होता है और इसी व्यापार या संबंध को शक्ति कहते हैं यथा 1- वाचना (अभिधा) शक्ति 2- लक्षणा शक्ति 3- व्यंजना शक्ति। इनके अतिरिक्त कुछ काव्य शास्त्रियों ने 'तात्पर्याख्यावृत्ति' को भी एक शब्द शक्ति माना है जिससे तात्पर्यार्थ जाना जाता है। किंतु अधिकांश विद्वान इसे व्यंजना की चरम परिणति मानकर ध्वन्यार्थ व्यंजना कहते हैं।

(1) अभिधाः

' काव्य प्रकाश ' कार मम्भट के अनुसार 'साक्षात संकेतित अर्थ के बोधक व्यापार को अभिधा कहते हैं। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार ' मुख्य (संकेतित) अर्थ का बोध कराने वाली प्रथम शक्ति अभिधा है।

' तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाधिधा '

इस अभिधा से तीन प्रकार के वाचक शब्दों का बोध होता है।

(क) रूढ़ शब्द :

रूढ़ शब्द वे हैं जिनको खण्डित न किया जा सके यदि उन्हें खण्डित किया जाये तो उनका अर्थ भी बिखर जाता है। जैसे 'जननी' 'राजा' 'पिता' 'गुरू' यदि इन्हें जन एवं नी, रा एवं जा, पि एवं ता गु एवं रू में खण्डित करे तो इनका कोई अर्थ न रहेगा।

(ख) यौगिक शब्द :

दो सार्थक शब्दों के योग से बनने वाला शब्द यौगिक शब्द कहलाता है और उनके खाण्डों का भी अलग अलग अर्थ ज्ञात होता है। जैसे याचक, इसका अर्थ है याचना करने वाला। इस शब्द को दो खाण्डों में विभाजित कर सकते हैं - याच् (याचना) + अक (करने वाला) ।

(ग) योग रूढ़ शब्द :

ऐसे शब्द जो स्वरूपतः यौगिक होते हैं किंतु उनका अर्थ यौगिक न होकर रूढ़वत होता है योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं जैसे - पंकज (पंक + ज) का यौगिक शब्द होना चाहिये पंक से जन्म लेने वाला किंतु पंकज का अर्थ अब केवल कमल के लिये रूढ़ हो गया है।

(2) लक्षणा :

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार मुख्यार्थ के बाधित होने पर किसी रूढ़ि या प्रयोजन से संबंधित अन्य अभिप्रेत अर्थ का बोध जिस शब्द शक्ति द्वारा होता है उसे लक्षणा कहते हैं।

' मुख्यार्थ बाधे तु तद्योगे न्या र्थ प्रतीयते,
रूढ़े प्रयोजनाद् वाडसौ लक्षण शक्तिरर्पिता।'

और मम्मट के अनुसार :-

मुख्यार्थ बाधे तु तद्योगे रूढ़ितो थ प्रयोजनात्
अन्यो र्थो लक्ष्यते यत सा लक्षणारोपिता क्रियां।

अर्थात जब किसी पद (शब्द) या पद समूह का साक्षात संकेतित अर्थ अभिधा नामक शब्द शक्ति द्वारा स्पष्ट नहीं हो पाता तब वहां एक अन्य अर्थ भी होता है जो मुख्य अर्थ से संबंधित होता है। यह अभिप्रेत अर्थ रूढ़ि या प्रयोजन के कारण अंतर्निहित होता है और जिस शब्द शक्ति द्वारा यह लक्षित होता है उसे ही लक्षणा कहते हैं।

लक्षणा के भेद :

विस्तृत विचार कर काव्यशास्त्रियों ने लक्षणा के निम्न भेद किये हैं।

(क) रूढ़ि (रूढ़िमूला) लक्षणा :

जहां मुख्य अर्थ के बाधित होने पर उससे संबंधित अमुख्य या अभिप्रेत अर्थ रूढ़ि के कारण लक्षित होता है वहां रूढ़िमूला लक्षणा होती है, जैसे ' पाकिस्तान लड़ता है ' यहां पाकिस्तान भूमि खण्ड विशेष है वह कैसे लड़ सकता है इस प्रकार यहां मुख्य अर्थ बाधित है एवं उससे संबंधित अभिप्रेत अर्थ निकलता है कि पाकिस्तान देश के निवासी लड़ते हैं। इस प्रकार यहां पाकिस्तान में पाकिस्तान के निवासी का अर्थ बोध ' रूढ़ि ' जन्य है।

(ख) प्रयोजनवती लक्षणा :

जहां मुख्य अर्थ के बाधित होने पर किसी विशेश प्रयोजन के कारण मुख्यार्थ से संबंधित कोई अन्य अभिप्रेत लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाये वहां प्रयोजनवती लक्षणा होती है इसके भी दो मुख्य भेद होते हैं।

1. गौणी लक्षणा :

इसमें 'सादृश-संबंध' से अर्थात समान गुण व धर्म के आधार पर लक्ष्यार्थ का ग्रहण किया जाता है। इसमें उपमेय गौण हो जाता है और सादृश्य के कारण उपमान प्रधान हो जाता है, जैसे -

उसके मुख शशि कर से सौन्दर्य किरण बरसी'
मन मुकुद खिला हर्षित निश्छल उर की सरसी'।

यहां 'मुख' एवं शशिकार के मध्य अभेद का आरोपण करते हुये 'मन' एवं 'कुमुद' के बीच समान गुण धर्म के आधार पर संबंध स्थापित किया गया है इसका प्रयोजन है रूपसी के मुख्य सौन्दर्य को

चन्द्र की तरह आह्लादक बताना, किन्तु रूपसी को गौण ही रखा गया अतः गौणी लक्षणा है।

(2) शुद्धा लक्षणा :

- - - - - - - - - - -

अबला जीवन ! हाय ! तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी ' ।

यहां 'आंचल में है दूध' का अर्थ अभिधा से ग्राह्य नहीं है अपितु बाधित है। सादृश्य संबंध भी नहीं है अतः भातृत्व भाव के प्रयोजनवश 'सामीप्य संबंध' का आधार लेकर यह ज्ञात होता है कि माता के आंचल और वक्षस्थल में सामीप्य का संबंध है अतः आंचल का लक्ष्यार्थ हुआ वक्षस्थल शुद्धा लक्षणा के पुनः दो भेद होते हैं उपादान लक्षणा तथा लक्षण लक्षणा ।

व्यंजनाः

- - - - -

आचार्य विश्वनाथ का मत है कि अपने अपने अर्थ का बोध कराकर 'अभिधा' एवं 'लक्षणा' नामक शब्द शक्तियों के विरत हो जाने पर जिस शब्द शक्ति द्वारा व्यंग्यार्थ का बोध होता है उसे व्यंजना कहते हैं ।

विरतास्वभिधाधासु पयार्थो बोध्यते परः
सा वृत्तिव्यंजना नाम शब्दस्यार्थादकस्य ।

व्यंजना से जिस व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है उसी को ध्वन्यार्थ, सूच्यार्थ, आक्षेपार्थ, प्रतीयमानार्थ, ख्यादि भी कहते हैं।

व्यंजना के भेदः

- - - - - - - - -

वस्तुतः व्यंजना के कार्य की संपन्नता में अभिधेयार्थ, लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ तीनों का ही योग होता है किन्तु अभिधा एवं लक्षणा का संबंध मात्र 'शब्दों' से होता है और व्यंजना का संबंध 'शब्द' और 'अर्थ' दोनों से होता है। अतः एक व्यंग्यार्थ दूसरे व्यंग्यार्थ की व्यंजना करा सकता है। शब्द एवं अर्थ से संबंध होने के कारण पहले व्यंजना के दो भेद हुये -

(1) शाब्दी व्यंजना (2) आर्थी व्यंजना

शाब्दी व्यंजना के पुनः दो भेद होते हैं (1) अभिधामूला शाब्दी व्यंजना (2) लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना

शाब्दी व्यंजनाः

जो व्यंजना शब्दों पर आधारित है उसे शाब्दी व्यंजना कहते हैं, जैसे ' चिरजीवी जोरी जुरै क्यों न सनेह गम्भीर । को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के वीर ।। यहां वृषभानुजा एवं हलधर में शाब्दी व्यंजना है क्योंकि कवि का परिहासात्मक मन्तव्य इनके पर्याय गाय व बैल से पूर्ण नहीं होता बल्कि वृषभानुजा (राधा) एवं 'हलधर' के वीर (श्रीकृष्ण) के शब्द प्रयोग से ही राधाकृष्ण की मनोवृत्तियां परिवार संबद्धता एवं पशुवत स्वच्छन्दता व्यंजित होती हैं।

(क) अभिधामूला शाब्दी व्यंजनाः

जहां अनेकार्थक शब्दों के प्रकृतोपयोगी एकार्थ का संयोग, वियोग, साहचर्य, विरोध, अर्थ प्रकरण, लिंग, अन्य शब्द सान्निधि, सामर्थ्य, औचित्य, देश, काल, व्यति और स्वर द्वारा निश्चय हो जाने पर अभिप्रेत व्यंजित होता है वहां अभिधामूला शाब्दी व्यंजना होती है। संस्कृत में इस पर प्रकाश डाला गया है।

संयोगी विप्रयोश्च साहचर्य तिरोविता
अर्थः प्रकरणं लिंग शब्दस्यान्यास्य सन्निधिः,
सामर्थ्य मौचिती देशः कालो व्यक्ति स्वरादयः
शब्दार्थ स्यानवच्छेदे विशेष स्मृति हेतवः ।

(ख) लक्षणामूला शाब्दी व्यंजनाः

जहां शब्दों पर आधारित व्यंजना के बोध के लिये लक्षणा का आश्रय लिया जाता है वहां लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना होती है। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार 'जिस प्रयोजन की सिद्धि के लिये लक्षणा का आश्रय लिया जाता है और वह प्रयोजन जिस शक्ति द्वारा प्रतीत है उसे लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना कहते हैं।

लक्षणो पास्यते पस्य कृते ततु प्रयोजनम्
यया प्रव्याय्यते सा स्वाद व्यंजना लक्षणाश्रया।

(2) आर्थी व्यंजनाः

वाक्य के संपूर्ण अर्थ में अन्तर्निहित व्यंग्यार्थ की प्रतीति जिस व्यंजना शक्ति द्वारा वक्ता, श्रोता, वाक्य, अन्य सन्निधि, वक्तव्य, प्रस्ताव, देश, काल, काकु एवं चेष्टा की विशेषताओं के आधार पर होती है उसे आर्थी व्यंजना कहते हैं।

वक्तृ बोधव्य वाक्यानामन्य सन्निधि वाच्ययो।
प्रस्ताव देशकालानां काकोश्चेष्टा दिकस्य च ।
वैशिष्ट यादन्यमर्थ बोधसेत्सार्थ सम्भवा।
व्यंजनेति संबध्यते। (साहित्य दर्पण)

जैसे - जेहि विधि होइहिं परम हित नारद सुनहु तुम्हार
सोइ हम करब न आन कछु, वचन वृथा न हमार।

यहा नारद ने केवल वाच्यार्थ लिया ' मैं वचन देता हूं, नारद कि जिस तरह भी तुम्हारा परम हित होगा मैं वही करूंगा। किंतु विष्णु जी की दृष्टि में यहां व्यंग्यार्थ यह है कि ' यदि मैं तुम्हें अपना रूप दे दूं तो तुम मायाजाल में फंसकर अपना समस्त पुण्य नष्ट कर दोगे अतः मैं ऐसा कुछ करूंगा कि तुम्हारा हित हो सके। इस व्यंग्यार्थ की उपलब्धि में 'वाक्य रचना' की विशेषता निहित है अतः यहां आर्थी व्यंजना है।

वस्तुतः जिस कविता में व्यंजना की बहुलता होती है उसी का महत्त्व अधिक होता है। शब्दों के संयोजन द्वारा ही कविता में नाद-सौन्दर्य भी उत्पन्न होता है, जैसे -

पपीहों की वह पीन पुकार।
निर्झरों की भारी झरझर।
झींगुरों की झीनी झनकार
धनों की गुरू गम्भीर गहर
बिन्दुओं की छनती छनकार

दादुरों के वे दुहरे स्वर
हृदय हरते थे विविध प्रकार
शैल पावस के प्रश्नोत्तर ।

इन पंक्तियों के अनुप्रास, श्लेष, यमक आदि अलंकारों का प्रभाव शब्दों के प्रयोगों पर ही निर्भर है।

हमीरपुर जनपद के कवियों की रचनाओं में शब्द शक्तियों के लगभग सभी भेद-प्रभेदों का प्रयोग किया है। कुछ उदाहरण देकर हम इसे स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे।

अपनी रचनाओं में कवियों ने मुख्य रूप से अभिधा शक्ति का प्रयोग किया है। यह मुख्य अर्थ की बोधक होती है इससे केवल प्रसिद्ध एवं संकेतित अर्थ का बोध होता है, यथा -

श्री रामदत्त अजेय (महोबा) की 'मधुज्वाला' पुस्तक से उद्धृत ये पंक्तियां देखिये -

उतर नशा जब जाता है,
तब पछताता पीने वाला।
फिर अपने मन से कहता है
बड़ी नशीली है हाला।

सड़े गले अंगूरों के रस को
कहते हो हाला
और उसी से भर लेते हो,
तुम पीने को प्याला।

श्रीपति रावत की पुस्तक ग्राम सतसई के कुछ दोहे देखिये -

(1)

आटा गूंधत के समय, स्वच्छ राखिये देह।
आटे में बरषे नहीं, कहीं स्वेद का मेह।

(2)

मैले हाथों से कभी, भोजन नहीं बनाव।
साबुन निर्मल नीर से, धो डालो कर पांव।

(3)

दुह कर आवे दूध तो, फौरन लेव उबाल
पहिले उसको छान लो, पड़े न होवें बाल।

मौदहा के श्री धर्मात्मा प्रसाद गुप्त की यह हास्य क्षणिका देखिये-

हरिजन का पात्र यदि गंगाजल से धुला हो,
तो भी अशुद्ध है
दुर्भावनाओं से, कपट से, छल से भरा शरीर
यदि उच्च वर्ग का है, तो वह शुद्ध है
हमारा वर्ग कितना प्रबुद्ध है।

जहां पर किसी शब्द के मुख्य या प्रसिद्ध अर्थ के अन्वय बोध में बाधा उत्पन्न हो वहां लक्षणा शक्ति होती है, कुछ उदाहरण देखिये -

डा0 हरगोविन्द सिंह की अधोलिखित रचना में रूढ़ि लक्षणा का प्रयोग देखिये-

आदमी में खामियां हैं, यह सभी को ज्ञात है।
कह दिया विज्ञान ने, यह बन्दरों की जात है।
किंतु जब भी पंक से ऊपर उठा कोई कमल
कह उठा कवि का हृदय क्या बात है, क्या बात है।

यहां पंक से ऊपर उठा कोई कमल' का तात्पर्य है निम्न स्थिति से किसी असाधारण व्यक्तित्व का पैदा होना। यहां इसका रूढ़िगत अर्थ हुआ कीचड़ से कमल का ऊपर उठना। किंतु मुख्य अर्थ से किसी न किसी प्रकार संबद्ध है और रूढ़िगत है इस कारण यहां रूढ़ि लक्षणा है।

इनकी एक और रचना देखिये जो रूढ़ि लक्षणा का उदाहरण है -

हो गया यह देश अपने आप पर निर्भर
अब नहीं परमाणु बम की शक्ति का भी डर
पर बचाओ लेखनी पथ भ्रष्ट होने से
अन्यथा हीरोशिमा बन जायेगा हर घर।

श्री रामगोपाल दीक्षित की एक रचना के कुछ अंश देखिये जिसमें चित्तौड़ की रानी पद्मिनी की सुन्दरता का वर्णन किया गया है इसमे प्रयोजनवती लक्षणा का प्रयोग है।

थी विश्वविमोहिनि रूपवती
वह रत्न सिंह की वर बाला
जिसके निवास से महल बना
था कामदेव की रंग शाला।

था नाम यथा वैसी सचमुच
सर्वांग सुंदरी नारी थी
थी कनक लता सी तन्वंगी
वह विधु बदनी सुकुमारी थी।

लम्बे घुंघराले घने केश
शोभित करते थे मुख वर को
काले लहराते नाग यथा
घेरे रक्षार्थ सुधा घर को।

सोयी सर्पों की शैया पर
रजनीश खिली या कंज कली
मंडराती मधु रस पान हेतु
मधु लोलुप बनकर अति अवली।

उक्त पंक्तियों में महल को कामदेव की रंगशाला कहा गया है, उसके शरीर को कनक लता, चन्द्रमा सा मुख बालों को नाग इत्यादि बताया गया है। इससे कवि का प्रयोजन रानी पद्मिनी के बाल, मुख व शरीर के सौन्दर्य वर्णन से है। अतः यहां प्रयोजनवती लक्षणा है।

श्री गिरजादयाल सक्सेना के इस गीत में सारोपा लक्षणा का प्रयोग देखिये-

साधना में निरत हूं मैं किंतु डर है
वन्दना मेरी अधूरी रह न जाये
मैं सदा से ही रहा तेरा पुजारी।
नित नयन के दीपकों से आरती तेरी उतारी
आंसुओं का अर्घ भी देता रहा नित
और मन के मानिकों की माल डारी
है अटल विश्वास तुम पर किंतु डर है
कामना अंतस में घुटकर मर न जाये।

यहां पर कवि ने नयन पर दीपक का, आंसुओं पर अर्घ का तथा मन पर मानिकों का आरोप किया है और इस आरोप द्वारा आरोप्य मान विषयी तथा आरोप का विषय दोनों में एकरूपता स्थापित की है इस कारण यहां सारोपा लक्षणा है।

काव्य की तीसरी शब्द शक्ति व्यंजना का काव्य में विशेष महत्व है। उच्चकोटि के सभी काव्यों में इसी का प्राधान्य रहता है। व्यंजना के कुछ उदाहरण देखिये।

श्री मुंशी तुलसीदास 'दिनेश' की एक रचना देखिये जिसमें अभिधामूला शाब्दी व्यंजना का प्रयोग है-

लुंज तरू पुंजन में आयेंगे नवीन पात झूम झूम बेलें बलि यों से आन भिरिहें।
खिलेंगे प्रसून रंग-रंग के दिनेश मंजु जिन पै उन्मत्त भृंग वृन्द आन घिरि हैं।
होंगे गुलजार धाक विश्व में जमेगी उच्च तिमिर निशा के पयोद सब चिरि हैं।
लेवेंगे सहारा सब आन आन तेरे द्वार कानन तिहारे अब फेरि दिन फिरिहैं।

यहां कवि द्वारा कानन का शब्द राष्ट्र का भी बोधक है , लता, तरू पुंजन में नवीन पत्ते आना तथा रंग रंग के पुष्प खिलना एवं विश्व में धाक जमना राष्ट्र की संपूर्ण प्रगति के बोधक हैं फिर भी इससे अन्य अर्थ की प्रतीति हो रही है अर्थात यह एक उजड़े हुए बाग के पुनः हरे भरे होने का भी बोध करा रहा है इसी कारण यहां अभिधामूला शाब्दी व्यंजना है।

और आर्थी व्यंजना का एक उदाहरण श्री मोहनलाल बुधौलिया की इस रचना में देखिये-

मधु ऋतु आये और कली मुस्काये ना
तो बासंती गीत कहो कवि कैसे गाये
आज डाल की मांग भरी है धूल से
आज रक्त बहता हर घायल फूल से
सिसक रहा कलिका की पलकों में सपना
भूला भटका भ्रमर बिंधा है शूल से
मलयज आये पर सौरभ बरसाये ना
तो बासंती गीत कहो कवि कैसे गाये।

रीतियां

जहां वृत्ति का संबंध वर्णों से होता है वहां रीति का संबंध पदों से होता है, इसी कारण साहित्य दर्पण कार ने पदों के मेल या संगठन को रीति कहा है और बताया है कि जैसे शरीर में अंगों का संगठन होता है वैसे ही काव्य में शब्दों एवं अर्थों का संगठन होता है। काव्य के इस संगठन का कार्य रीतियां करती हैं और वे काव्य के आत्मभूत रस, भाव आदि की उपकारक होती हैं।

पद संघटना रीतिरंगसंस्था विशेषवत् उपकर्त्री रसादीनाम् ।

साहित्यदर्पण 9।।

रीतियों के चार भेद माने गये हैं (1) वैदर्भी (2) पांचाली (3) गौड़ी तथा (4) लाटी। परंतु 'लाटी' भेद को केवल रूद्रट ने ही माना है शेष सभी विद्वान रीतियां तीन ही मानते हैं और काव्य में तीन वृत्ति एवं तीन गुणों की भांति तीन रीतियां ही अधिक प्रचलित हैं। इनका हम अलग अलग विवेचन करेंगे।

(1) वैदर्भी :

इस रीति में माधुर्य गुण व्यंजक सुकुमार वर्ण, असमास या मध्यम समास, सौकुमार्यवती रचना का एकत्र प्रयोग होता है इसके उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं। प्रख्यात कवि मंजुल मयंक की ये रचना वैदर्भी रीति का अच्छा उदाहरण है।

प्यारे लगते चांद सितारे
लेकिन फिर भी सबसे न्यारे
वे तारे जो छूट गये हैं
कितने मधु बसन्त मुखरित हैं मेरे इस मन के मधुवन में
जाग रहे हैं प्रतिपल कितने मादक मोहक स्वप्न नयन में
कितने ही सुख के क्षण लूटे मैंने अपने लघु जीवन में
जिनकी अक्षय अजर अमर छवि अंकित है मन के दर्पन में
लेकिन फिर भी सबसे प्यारे
वे निष्ठुर निर्मम निर्मोही
क्षण जो मुझको लूट गये हैं।

अपनी प्रिय पत्नी के नैहर जाते समय पति के ह्रदय में जो पीड़ा होती है उसे चरखारी के कवि श्री कालका प्रसाद सक्सेना 'मकरंद' ने अपनी कविता में कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है। प्रस्तुत रचना भी वैदर्भी का उदाहरण है।

जा रही नैहर प्रिये! तुम छोड़ पीहर देश अपना।
आज की प्रत्यक्ष घटनायें बना कर एक सपना।
तुम हो जीवन की सुहानी चांदनी की मंद छाया।
पथ प्रदर्शक, नेह बंधित ओ! हमारी योग माया।
धाम धन पहले दिया हिरदय में न कुछ क्लेश था।
दे चुके तन मन तुम्हें अब और क्या कुछ शेष था।
तुम हमारी याद करके भूल कर रोना नहीं।
नेह बंधन में बंधी कुल कानि को खोना नहीं।
पत्र द्वारा भेजना अपने हृदय के प्यार को।
उर लगा हम रोक लेंगे आंसुओं की धार को।
× × × × × × × ×

मौदहा के कवि श्री धर्मात्मा प्रसाद गुप्त का यह गीत भी इस रीति का श्रेष्ठ उदाहरण है -

प्रिय तुम्हारी याद के दीपक जलाये आज कितने
जिंदगी की मधुर राहों पर सजाये साज कितने
किंतु फिर भी तुम मिले ना
फूल खुशियों के खिले ना
जिंदगी में फिर मिलन की
मधुर घड़ियां पा सके ना।
याद को सपने बनाकर हैं छिपाये राज कितने
प्रिय तुम्हारी . . . .

(2) पांचाली:

इस रीति में न तो कठोर पद होते हैं और न सुकुमार,अपितु दोनों के अन्तरालवर्ती पदों की योजना की जाती है। मुख्यतया पंचम वर्णो से युक्त पदों का प्रयोग इस रीति में किया जाता है। जनपद हमीरपुर के कवियों की रचनाओं में इस रीति के उदाहरण अधिक मिलते हैं। कुछ रचनायें देखिये-

खेत सिंह यादव की एक चौकड़िया देखिये जिसमें गोपियां श्री कृष्ण से मुरली बजाने की प्रार्थना करती हैं।

बंशी तनक बजायें जइयो,मनमोहन सुन लइयो।
कब की तुम्हें निहारत ठाढ़ी जियरा ना ललचइयो।
तुम दीपक हम नाथ पतंगा, ऐसो जानें रइयो।
'खेत सिंह' गलियन में मोरी निशि दिन दर्शन दइयो।

मिथिला की फूलवाटिका में सीता जी माँ गिरजा की पूजा करने आती हैं उस समय का सुंदर वर्णन ख्यालीराम जी ने अपनी इस रचना में किया है यह भी पांचाली रीति का एक अच्छा उदाहरण है -

फूली फूलबाग फुलवाई, लखें लखन रघुराई।
टेसू पान तड़ाग तीर के, सोभा बरन न जाई।
क्यारिन में कुंजन की करनी, ज्यों विधि हाथ बनाई।
बेली बेल बितावन ऊपर, ऋतु बसन्त की छाई।
ख्याली जनकसुता जग जननी, गिरजा पूजन आई।

विवाह का रूप दहेज के कारण इतना विकृत हो गया है कि उसे एक सौदे की तरह माना जाने लगा है इसी भाव को डा0 हरगोविंद सिंह ने इस प्रकार व्यक्त किया है।

ब्याह सौदा बन गया है हर कदम पर चालबाजी।
बिन कराये खर्च क्यों हो, बेटियों के बाप राजी।
नाम के समधी मगर दिल में भरे तीखी विषमता।
भेंटते से जान पड़ते खान अफजल औ शिवाजी।

(3) गौड़ी :

इस रीति के अंतर्गत ओज गुण, कठोर वर्ण वाले पद, दीर्घ समास, विकट रचना आदि का एकत्र समावेश होता है। कुछ कवियों की रचनायें उदाहरण के लिये नीचे प्रस्तुत हैं।

खेत सिंह यादव की प्रकाशित पुस्तक 'लंका समर' से उद्धृत एक छन्दयाऊ फाग के कुछ अंश देखिये जिसमें लंका की सेना वानरों से युद्ध कर रही है।

दो0 : समर भूमि आये सुभट, गरजत सिंह समान
देखत दौरे भालु कपि, लै लै कुधर महान।

सैर : लै लै पहाड़ दौरे, कपि सबरे हूके
किट किटा दांत मीसत हैं मस्त मलूके
कायर कपूत जितने हैं, सुन सुन सूके
चुपचाप खड़े कइयक ज्यों होंय बिजूके।

टेक : विकट मार मच गयी समर में भई वीरन की हानी।

ला0 : वीरन हानी होन लगी है भारी रण में मार मची।
मारौ मारौ दोनों दल में कसकें यही पुकार मची।
एक एक को डपटें झपटें ऐसी तार अपार मची।
तोपन के दन्नाटे हो रये गोलन की बौछार मची।

छंद : मुगदर तीर तुबक की मार, भाला बरछी चलै कटार।
हाथी रहे जहां चिग्घार बिटहा से गिरें
ऐसी कसकें भई लड़ाई हारी निशिचर दल ने खाई
रण में रावण हांक लगाई सुन सुन शूर फिरें।

× × × × × × ×

महोबा के शिवशंकर दयाल रिछारिया की निम्नांकित रचना भी गौड़ी रीति का ही उदाहरण है। इसमें पृथ्वीराज चौहान द्वारा महोबा पर चढ़ाई करने का वर्णन है।

पृथ्वीपति चौहान चढ़ गया, खबर हो गयी दावानल सी।
सावन कजली बंद हो गये, बंद हो गयी ध्वनि मंगल की।
जहाँ अभी सावन पावन था, वहां अभी तूफान आ गया।
स्वर्ग लोक की पुण्य भूमि में जैसे इक शमशान आ गया।
कीरत सागर से पठवा तक, कुलपहाड़ से गोरखागिरि तक
गिरि गुखार से विजयनगर तक, विजय नगर से दसरापुर तक
फैला था चोहान शान से ऐसे अपना डेरा डाले।
मानो गीदड़ दल आया हो, मरते सगय सिंह के पाले।

× × × × × × × ×

और श्री रामगोपाल दीक्षित की यह रचना भी कितनी ओजपूर्ण है चित्तौड़ पर अलादीन के प्रथम आक्रमण का वर्णन है। कुछ अंश देखिये -

धां धां कर तोपें छूट चलीं,
लोगों में हा-हा कार मचा
कँप उठीं दुर्ग की दीवारें
गढ़ बीच प्रलय संहार मचा।

होती थी धरती डगर मगर,
सेना के क्रिया कलापों से
रणभूमि धंसी सी जाती थी
खुद कर घोड़ों की टापों से

जब जोश ज्वार में दल पयोधि
बढ़कर गढ़ से टकराता था
तब लघुतम तरणी सदृग दुर्ग
चित्तौर डगमगा जाता था।

इस प्रकार उपर्युक्त रचनाओं से स्पष्ट है कि वैदर्भी, पांचाली तथा गौड़ी तीनों रीतियों का सफल प्रयोग जनपद के कवियों ने अपनी रचनाओं में किया है।

उपसंहार

' **हमीरपुर जनपद की हिन्दी काव्य को देन** ' बुन्देलखण्ड के प्रवेश द्वार जनपद हमीरपुर का आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक तथा साहित्यिक दृष्टि से अपना एक विशेष स्थान है अपने इस शोध कार्य में जहां मैंने साहित्यिक दृष्टि से जनपद के महत्वपूर्ण योगदान पर विस्तृत प्रकाश डाला है वहीं पर जनपद के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं ऐतिहासिक महत्व का भी संक्षिप्त विवेचन किया है। इस शोध प्रबंध में ' हमीरपुर जनपद की हिंदी काव्य को देन ' विषयान्तर्गत जनपद के उन ज्ञात अज्ञात कवियों को स्थान दिया गया है जो अब तक हिंदी साहित्य के लिये अनजान रहे हैं। इस जनपद में मूर्धन्य विद्वानों की एक लंबी श्रंखला है । जनपद की प्रत्येक तहसील में हिंदी के विद्वान कवि हुए और आज भी विद्यमान हैं। इस जनपद के कवियों की यह विशेषता है कि उन्होंने केवल खड़ी बोली में ही काव्य सृजन नहीं किया अपितु जनपद के जन-जन में बोली जाने वाली ' बुन्देली ' में उत्कृष्ट काव्य सृजन करके बुन्देली को साहित्यिक जगत में सम्मानजनक स्थान दिलाया है।

बुन्देली ' में उच्च कोटि का काव्य सृजन करने वाले वर्तमान काल के कवियों में तहसील राठ के स्व0 डा0 हरगोविन्द सिंह, श्री रामखिलावन निरंजन , स्व0 रावत खूबचंद्र व पं0 रामसनेही तिवारी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

डा0 हरगोविन्द सिंह का इस क्षेत्र में किया गया प्रयास अविस्मरणीय है। बुन्देली में लिखीं गयीं इनकी कई पुस्तकें हिंदी काव्य साहित्य की अनमोल धरोहर हैं। सन् 1959 में प्रकाशित ' फाग मंजरी सन् 1966 में घाघ की शैली में रचित छक्का पचीसी, सन् 1980 में प्रकाशित पुष्पांजलि, 1978 में सद्वाक्य मंजरी तथा सन् 1990 में ' सद्विचार सतसई ' कुछ ऐसी काव्य कृतियां हैं जिनसे वर्तमान पीढ़ी के कवि मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। ' बुन्देली शब्दावली ' पर डा0 हरगोविन्द सिंह द्वारा लिखा गया वृहद शोध ग्रन्थ तो बुन्देली साहित्य के लिये एक मील का पत्थर है। डा0 सिंह के अतिरिक्त उपर्युक्त वर्णित अन्य कवियों ने भी महत्वपूर्ण योगदान किया है।

तहसील कुलपहाड़ के स्व0 खेतसिंह यादव, तहसील महोबा के श्री भारतेन्दु अड़जरिया व श्री शिवशंकर दयाल रिछारिया, तहसील चरखारी के स्व0 ख्यालीराम व श्री कालका प्रसाद सक्सेना मकरंद ने भी बुन्देली के काव्य सृजन में महत्वपूर्ण योगदान किया है। प्राचीन कालीन कवियों में से तो लगभग सभी कवियों ने अपने काव्य सृजन में बुन्देली को ही विशेष महत्व दिया है।

काव्य के सभी रसों (श्रंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शान्त) में जनपद के विभिन्न कवियों ने अपनी अभिरूचियों के अनुसार काव्य सृजन किया है। जनपद के विद्वान कवि श्यामचरन यादव, प्रताप साहि, कवि खुमान, ज्ञानी जू, भूरे सिंह चौहान, रामखिलावन निरंजन, विजयचन्द चौहान, रामगोपाल दीक्षित, चन्द्रिका प्रसाद सक्सेना कीर्ति, भारतेन्दु अड़जरिया, शिवशंकर दयाल रिछारिया, राजाराम सिंह परिहार, धनीराम गौर आदि ने जहां वीर रस में ओजपूर्ण कवितायें लिखीं वहीं बहुत से कवियों ने श्रंगार रस की धारा को अपने काव्य में प्रवाहित किया। हास्य रस में भी जनपद के कवि पीछे नहीं है इनमें रामाधार गुप्त फटाफट, जगदीश अड़जरिया 'गुरू' कामताप्रसाद गुप्त काका, नवोदित कवि पीयूष नगायच के नाम विशेश उल्लेखनीय हैं।

अलंकारों की दृष्टि से यदि हम देखें तो जनपद के कवियों की एक लंबी श्रंखला सामने आती है जिन्होंने अलंकारों का प्रचुर मात्रा में उपयोग अपनी रचनाओं में किया है। यद्यपि वर्तमान काल के कवि प्राचीन कालीन कवियों की तुलना में इसमें काफी पीछे हैं। तहसील राठ के प्रख्यात कवि स्व0 मुनिलाल के छन्द की कुछ पंक्तियां देखें जिसमें श्री हनुमान विनय पर अनुप्रास का सुंदर प्रयोग हुआ है।

धर्म धुर धारी धुन्धरा धर धरनि धीर,
धारन धरम धन धाम में बढ़ा दे तूं।
चतुर चलाकी चैन चौज चित्त चाही चारू,
चरण सरोज चापे चित्त में चढ़ा दे तूं।

× × × × × × × × × × × × × × × × ×

प्रसिद्ध कवि खूबचंद ' रसेस ' के निम्न दोहे साहित्यिक दृष्टि से कितने उच्च कोटि के हैं जिसमें ढार (कर्ण) तथा बकरी (हस्त भूषण) का सुंदर वर्णन किया गया है।

अली-अली नहिं भली अस, चली जुतैं नन्द द्वार।
कान द्वार है कान कुल, जब लखि है तुव द्वार।

तथा

बकरी पहरें देखा तुअ, नकरी ह्वै गओ गात।
चकरी लौं झुमके अरी, तुम बखरी ह्वे जात।

इसी प्रकार सुंदर छन्दों का प्रयोग भी कवियों ने अपनी रचनाओं में किया है। पं0 परशुराम पटैरिया की निम्नलिखित मात्राहीन फाग इसका एक अच्छा प्रमाण है।

लचकत नरम कमर जल भरतन, झटपट पग मग परतन।
अरबत गगर नवत सब तन भर पनघट पर पग धरतन।
भटकत चटक मटक कर अटपट दृग सर लगत नजर तन।
कथन फरस धर नर कस ललकत पर धन पर मन करतन।

कवि मनबोधन शर्मा का निम्नलिखित कामधेनु छन्द उनके काव्य कौशल का प्रमाण है जिसमें जिस खाने से छन्द को उठाया जाये उसी खाने के पास एक छन्द बन जाता है।

राजत हैं	रघुनाथ	सिंहासन	गौर लिये
हनुमन्त	[illegible]	गावत हैं	[illegible]
निघासन	खौर दिये	कुुज संत	मुनोदन
छाजत हैं	सब भात	निजासन	गौर पिये
अतअन्त	प्रमोदन	गावत हैं	गुणगाथ
सुभातन	और हिये	कलकंत	सुबोधन

इस प्रकार साहित्यिक दृष्टि से उच्च कोटि का काव्य सृजन जनपद हमीरपुर के कवियों द्वारा किया गया है। लगभग 150 कवियों का जीवन परिचय तथा काव्य कृतियों का विवरण देते हुये उनके काव्य का सम्यक मूल्यांकन करने का प्रयास इस प्रस्तुत शोध प्रबंध द्वारा किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस माध्यम से जनपद के कवियों को हिंदी साहित्य जगत में वह स्थान प्राप्त हो सकेगा जिसके कि वे सच्चे अर्थो में अधिकारी हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

⟮1⟯	अवतरण मौन साधना	: चुन्नी सिंह राजा
⟮2⟯	अमर आल्हा विजय	: चन्द्र कवि
⟮3⟯	अपनी शंका समाधान अपने	: कालका प्रसाद सक्सेना
⟮4⟯	अस्मिता के फूल	: डा0 चन्द्रिका प्रसाद सक्सेना 'कीर्ति'
⟮5⟯	आकांक्षा	: रामदत्त अजेय
⟮6⟯	आल्हा ऊदल के बाद	: बद्रीप्रसाद तिवारी
⟮7⟯	आल्हखण्ड	: खेमराज
⟮8⟯	आधुनिक हिंदी कविता की मुख्य प्रवृत्तियां	: डा0 नगेन्द्र
⟮9⟯	इतिहासे बुन्देलखण्ड	: महाराज सिंह
⟮10⟯	कृष्ण कुसुमाकर	: रावत खूबचंद्र
⟮11⟯	कर्मयोग	: बिहारी लाल विश्वकर्मा
⟮12⟯	कुहरे की कलियां	: उमाशंकर नगायच द्वारा सम्पादित
⟮13⟯	कष्टों की जननी जनसंख्या बढ़ोत्तरी	: बिहारीलाल विश्वकर्मा
⟮14⟯	ख्याल राकेश प्रकाश	: खेत सिंह यादव
⟮15⟯	ख्याल अनमोल	: खेत सिंह यादव
⟮16⟯	ख्याल राकेश प्रकाश	: खेत सिंह यादव
⟮17⟯	ख्याल वीर हरदौल चरित	: खेत सिंह यादव
⟮18⟯	ख्याल राजा भरथरी	: खेत सिंह यादव
⟮19⟯	ख्याल राम जन्मभूमि से लवकुश काण्ड तक	: काशीराम साहू
⟮20⟯	गारी सुमन कली	: खेत सिंह यादव
⟮21⟯	गीत गोविन्द एवं चिन्तन	: पं0 बैजनाथ तिवारी
⟮22⟯	ग्राम सतसई	: श्रीपति सहाय रावत
⟮23⟯	गूढ़ दान लीला	: काशीराम साहू
⟮24⟯	गारी चन्द्रकली श्रीराम विवाह	: काशीराम साहू
⟮25⟯	गारी कमल कली श्रीराम चरित्र	: काशीराम साहू

(26)	गारी हरदौल चरित्र	: काशीराम साहू
(27)	चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास(शोध प्रबंध)	: डा0 अयोध्याप्रसाद पाण्डेय
(28)	चांद का धब्बा	: डा0 चन्द्रिकाप्रसाद सक्सेना कीर्ति
(29)	जय हनुमान	: पं0 बैजनाथ तिवारी
(30)	जौहर जराखार	: श्रीपति सहाय रावत
(31)	जय शिवा-शिव	: बैजनाथ तिवारी 'किंकर'
(32)	जनता ही अजन्ता है	: मंजुल मयंक
(33)	देहली से देहली तक	: सुधाकर प्रसाद तिवारी
(34)	नृत्य पदावली	: गया सिंह परिहार
(35)	नवनीत	: भगवानदास बालेन्दु
(36)	प्रतीक्षा	: रामदत्त 'अजेय'
(37)	प्रहार	: रामदत्त 'अजेय'
(38)	पन्द्रह अगस्त	: बिहारीलाल विश्वकर्मा
(39)	पुष्पांजलि	: डा0 हरगोविन्द सिंह
(40)	पार्वती	: डा0 चन्द्रिकाप्रसाद सक्सेना कीर्ति
(41)	फाग हरदौल चरित	: खेत सिंह यादव
(42)	फाग लंका समर	: खेत सिंह यादव
(43)	फाग जयद्रथ वध	: खेत सिंह यादव
(44)	फाग सिंह दहाड़	: खेत सिंह यादव
(45)	फाग सीता समर	: खेत सिंह यादव
(46)	फाग प्यारा बापू	: खेत सिंह यादव
(47)	फाग राजा हरिश्चंद्र	: खेत सिंह यादव
(48)	फाग लव-कुश समर	: खेत सिंह यादव
(49)	फाग ऊषा अनिरूद्ध	: खेत सिंह यादव
(50)	फाग श्याम बिछरन	: खेत सिंह यादव
(51)	फाग यादव सुमन	: खेत सिंह यादव
(52)	फटाफट के लतीफे	: रामाधार गुप्त
(53)	बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप(शोध प्रबंध)	: डा0 कृष्णलाल हंस

(54) बुन्देली और फाग साहित्य (शोध प्रबंध) : डा0 श्यामसुंदर बादल

(55) बुन्देलखण्डी फड़ साहित्य (शोध प्रबंध) : डा0 गनेशीलाल बुधौलिया

(56) बोधन-बोधनी : मनबोधन वैद्य

(57) बजरंग विनय : छोटेलाल 'दीन'

(58) बाबू बिहारीलाल विश्वकर्मा जीवन परिचय : बिहारीलाल विश्वकर्मा

(59) बुन्देलों का इतिहास : बृजरत्न दास
(नागरी प्रचारिणी पत्रिका-वाल्यूम-3 संवत 1879)

(60) बुन्देलखण्ड का इतिहास : दीवान प्रतिपाल सिंह

(61) बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त परिचय : गोरेलाल तिवारी

(62) बुन्देली लोक काव्य भाग 1,2,3 : बलभद्र तिवारी

(63) बुन्देली वैभव भाग -1 : गौरीशंकर तिवारी

(64) बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य : रामचरण हयारण मित्र

(65) बुन्देलखण्ड का मध्ययुगीन काव्य-एक ऐतिहासिक अनुशीलन: डा0 नर्मदाप्रसाद गुप्त

(66) भगवानदास बालेन्दु का अभिनन्दन ग्रन्थ :

(67) भारतीय संस्कृति के अंश : बिहारीलाल विश्वकर्मा

(68) मंजुल मयंक का अभिनन्दन ग्रन्थ

(69) माटी के भगवान : विजयचन्द सिंह चौहान

(70) मधु ज्वाला : रामदत्त अजेय

(71) मौन साधना : डा0 लक्ष्मीप्रसाद वियोगी

(72) मौन साधना सत्यव्रत गीत : डा0 लक्ष्मीप्रसाद वियोगी

(73) महोबा व हमीरपुर जिले का आदर्श भूगोल : शिवलाल प्रजापति

(74) मां मुझको भगवान बना दो : गया सिंह परिहार

(75) युग सन्धि : बिहारीलाल विश्वकर्मा

(76) राम पुराण : बद्रीप्रसाद तिवारी

(77) रस घोष व अलंकार : प्रो0 अम्बिकाचरण शर्मा

(78). रस अलंकार व पिंगल : प्रो0 रामबहोरी शुक्ल

(79) राष्ट्रीय नेताओ को श्रद्धांजलि : भगवानदास बालेन्दु

(80) रूप रागिनी : मंजुल मयंक

(81) रण निनाद : विजयचन्द सिंह चौहान

(82) वीर अभिमन्यु समर : खोत सिंह यादव

(83) विजय पत्र : गया सिंह परिहार

(84) वीर भूमि महोबा का संक्षिप्त इतिहास : बद्रीप्रसाद तिवारी

(85) विन्ध्य के लोक कवि : श्रीचन्द जैन

(86) संक्षिप्त हिंदी साहित्य : ज्योतिप्रसाद व यज्ञदत्त शर्मा

(87) स्वामी ब्रह्मानन्द का अभिनन्दन ग्रन्थ

(88) स्वामी ब्रह्मानन्द जन्मशती विशेषांक

(89) 'साधना' लक्ष्मीनारायण आनन्द अभिनन्दन ग्रन्थ

(90) स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक झांसी डिवीजन : एस0पी0 भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित

(91) स्वतंत्रता के पूर्व हिंदी संघर्ष का इतिहास : रामगोपाल

(92) साहित्यालोचन एवं हिंदी साहित्य का इतिहास : डा0 अश्वघोस द्वारा सम्पादित

(93) साहित्यिक निबंध : डा0 उमेशचंद्र मिश्र

(94) सद्वाक्य मंजरी : डा0 हरगोविन्द सिंह

(95) साकेत की चाबी एवं शाश्वत सत्य : डा0वियोगी जी

(96) सीता निर्वासन : उमाशंकर नगायच

(97) सत्य दर्शन : डा0 लक्ष्मीप्रसाद वियोगी

(98) सत्यनारायण व्रत की भविष्यवाणी का प्रकटीकरण : डा0 लक्ष्मीप्रसाद वियोगी

(99) समर गाथा : श्रीपति सहाय रावत

(100) साहित्य और सौन्दर्य बोध : डा0 रामशंकर द्विवेदी

(101) स्वतंत्रता का श्रीगणेश : रामसनेही

(102) सद्विचार सतसई : डा0 हरगोविन्द सिंह

(103) साकेत काव्य संस्कृति और दर्शन : डा0 द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

(104) शंकर लहरी : गोरेलाल सैनी 'शंकर'

(105) हिन्दी साहित्य परिचय : रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

(106) हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां : शिवकुमार शर्मा

(107) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डा0 रामकुमार वर्मा

(108) हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचन्द्र शुक्ल

प्राचीन भारतीय ग्रन्थ

(1) आल्हखाण्ड : नरायन प्रसाद सीताराम द्वारा सम्पादित

(2) छत्रप्रकाश : बाबू श्यामसुंदर दास द्वारा प्रकाशित (1916)

(3) प्रबोध चन्द्रोदय : चौखम्भा विद्या भवन बनारस द्वारा प्रकाशित (संवत् 2012)

(4) परमाल रासौ : बाबू श्यामसुंदर राय द्वारा सम्पादित

(5) पृथ्वीराज रासौ : ' ' '

(6) महाभारत : पी0सी0 राय द्वारा सम्पादित कलकत्ता (1882)

(7) स्कन्द पुराण : क्षेमराज श्रीकृष्ण दास द्वारा प्रकाशित (1909)

(8) श्रुति चन्द्रिका :

अंग्रेजी

(1) एनश्येन्ट इण्डिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टालमी - मैक्रिण्डल (अनूदित) लन्दन, 1885

(2) आर्क्योलोजिकल सर्वे रिपोर्ट्स विशेषकर भाग 2,7,9,10 तथा 21

(3) कार्पस इन्सिक्रिप्टिव इण्डिकेरम -फ्लीट द्वारा सम्पादित

(4) क्वायन्स आफ मेडीकल इण्डियन लन्दन, 1983 (सी0एम0आई0) कनिंघम

(5) डायनेस्टिक हिस्ट्री आफ नार्दर्न इण्डियन वाल्यूम-1 (कलकत्ता-1931)
वाल्यूम -2 कलकत्ता, 1936 : एच0सी0 रे

(6) इपीग्रेफिया इण्डिका भाग-1

(7) हमीरपुर गजेटियर 1909 भाग - 22

(8) हिस्ट्री आफ मेडीकल हिन्दू इण्डिया वाल्यूम-2, 1924

(9) नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज गजेटियर भाग-1

(10) आन य्वान च्वांग ट्रेवेल्स इन इण्डिया (सियु की) लन्दन 1904

(11) स्टेटिस्टिकल डिस्क्रिप्टिव हिस्टारिकल एकाउण्ट्स आफ एन0डब्ल्यू0 प्राविन्सेज आफ इण्डिया भाग-1

पत्र - पत्रिकायें

(1) आज

(2) इण्डियन इण्टीक्वेरी

(3) जिला सूचना पत्रिका हमीरपुर 1987

(4) जागरण ज्योति इंगोहटा (हमीरपुर) 1990, भानुप्रकाश द्वारा सम्पादित

(5) जर्नल आफ दि रायल एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल (जे0ए0 एस0बी0)

(6) तुलसीदल : सुरेंद्र कुमार पाण्डेय द्वारा सम्पादित

(7) दैनिक जागरण

(8) बुन्देल साहित्य संगम मौदहा : सुरेंद्र कुमार पाण्डेय द्वारा सम्पादित

(9) बाग गलिदान : श्रीपति सहाय रावत

(10) महोत्सव नगर महोबा : भारतेन्दु अरजरिया ' इन्दु '

(11) मधुकर

(12) वार्तायन

(13) हमीरपुर महोत्सव स्मारिका-94 शिवप्रसाद भारती आदि द्वारा सम्पादित

(14) हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद की पत्रिकायें

अप्रकाशित साहित्य

(1) अनोटिया मांझी नई पतवार : कालका प्रसाद सक्सेना

(2) गीता ज्ञान पीयूष : मातादीन भारती

(3) गीता का पद्यानुवाद : जगदीश चंद्र कौशल

(4) ज्ञान पयोनिधि संहिता : डा0 गणेश दत्त शुक्ला

(5) ताजमहल के आंसू : चन्द्रिकाप्रसाद सक्सेना कीर्ति

(6) बिखरे मुक्ता : मातादीन भारती

(7) महारानी पद्मिनी का बलिदान : रामगोपाल दीक्षित

(8) मधुकलश : कालका प्रसाद सक्सेना

(9) युगान्तर : श्री लखनलाल जोशी

(10) युगान्तर : डा0 अजिर चौबे

(11) रामायण की शंकाओं का समाधान : मातादीन भारती

(12) व्यंग तरंग : कालकाप्रसाद सक्सेना

(13) प्रतिज्ञा पुरूष : रामदास गुप्त 'विकल'

(14) स्वयंप्रभा : नाथूराम पथिक

(15) सीतायण : कालकाप्रसाद सक्सेना

(16) सुभाव के भाव : कालका प्रसाद सक्सेना

(17) सीपियां : डा० अजिर चौबे

(18) हांडा रानी : रामगोपाल दीक्षित

(19) हृदय : सीताराम सिंह विद्रोही

जन पद हमीरपुर
संकेत
प्राचीन कालीन कवि △
वर्तमान काल के कावे □
जनपद सीमा
नदियाँ

जनपद हमीरपुर
मुख्य मार्ग (सड़कें) एवं रेल मार्ग व मुख्य नगर
माप: 1 सें०मी० = 7.5 कि०मी०
संकेत:
रेल मार्ग
जनपद सीमा

जनपद हमीरपुर
प्राकृतिक
उ॰
संकेत:-
पहाड़
नदी/नाला
नहरें
ताल/झील
ज.प. सीमा